क्रम

भूमिका	:	अ
अपनी ओर से	:	आ
बर्मा	:	१
मलयेशिया	:	१२
हांगकांग	:	२२
जापान–१	:	३१
टोकियो	:	४२
जापान–२	:	५२
हवाई	:	५८
कैलिफोर्निया	:	६५
सनफ्रांसिस्को	:	७२
शिकागो	:	८०
नियाग्रा	:	८८
वाशिंगटन	:	९४
न्यूयार्क	:	११३
न्यूयार्क विश्व मेला	:	१३५
ग्रेट ब्रिटेन	:	१४६
लंदन–१	:	१५६
लंदन–२	:	१६८
स्काटलैंड	:	१८४
पेरिस में एक रात	:	१९८
पेरिस	:	२०४
गिरजों का देश बेलजियम	:	२१३

हीरों का देश बेलजियम में	:	२१९
स्विट्जरलैंड	:	२२७
आल्प्स की गोद में	:	२३५
हालैंड	:	२४२
गिरजों गोदोलों के बीच	:	२५०
योरप की अमरपुरी रोम	:	२५६
पाम्पियाई की भस्म समाधि पर	:	२६३
ग्रीस	:	२६८
ताशकन्द	:	२७४
मास्को–१	:	२८४
मास्को–२	:	२९६
मास्को–३	:	३०५
लेनिनग्राद–१		३१४
लेनिनग्राद–२	:	३२६
पिरामिडों के देश में	:	३३५
फिनलैंड	:	३४३
नार्वे	:	३५३
निशा सूर्य के देश स्वीडन्	:	३७०
डेन्मार्क	:	३७७
वियना	:	३८६
जरमनी	:	३९७
बर्लिन	:	४१३
ब्रिमेन हयर्ग	:	४२८
टर्की	:	४४२
बेरुत	:	४५५
पाकिस्तान		४६८
नेपाल	:	४७६

भूमिका

मित्रवर श्री रामेश्वर टांटिया द्वारा प्रस्तुत 'विश्वयात्रा के संस्मरण' के अंश कुछ तो मैं ने सरिता में प्रकाशित लेखमाला में पढ़ लिए थे, बाकी कलकत्ता प्रवास के समय पढ़ने को मिले.

यात्रा मनुष्य का सहज गुण है, ऐसा मुझे प्रतीत होता है. मानव सृष्टि के बाद अनेक जातियां एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर आतीजाती रही हैं. नृतत्त्वशास्त्रियों द्वारा रक्त सम्मिश्रण, एक महाद्वीप के वासियों से दूसरे महाद्वीप के वासियों के साथ होना, सिद्ध हो चुका है; और इतिहास भी इस तथ्य की पुष्टि करता है.

इस अंतरिक्ष यात्रा के युग की ही बात नहीं, मनुष्य के आदि युग में भी जब यातायात के साधन नहीं के बराबर थे, आदमी पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक अपनी इसी प्रवृत्ति से प्रेरित हो कर पहुंच जाता था. स्थल मार्ग यानी पैदल रास्ते ही नहीं, अपितु समुद्र की उत्ताल तरंगों से जूझते हुए भी मनुष्य की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति ने ही बृहत भूखंडों से सुदूर द्वीपों तक मानव आवास बनाया. इस कृति में प्रशांत महासागर स्थित हवाई द्वीपसमूह, ईस्टर द्वीप, भारतीय महासागर स्थित मालाग्यासी (म्याडागास्कर) आकर्षक उदाहरण हैं. हवाई द्वीपसमूह से निकटतम आबादी दो हजार मील से भी अधिक है. इसी प्रकार मालाग्यासी द्वीप अफ्रीका महाद्वीप के निकट होने के बावजूद उस के आदिवासियों का रक्त एशियाई ही नहीं भारतीय आर्यों सा है. साथ ही सभ्यता भी मिलतीजुलती है, यहां तक कि नाम भी. संयुक्त राष्ट्रसंघ में मालाग्यासी के जो स्थायी प्रतिनिधि हैं, उन का पारिवारिक नाम रक्तमाला (रोकोतोमाला) है. गोधन ही उन की समृद्धि का चिह्न है, जैसा किसी युग में आर्यावर्त में प्रचलन था. ईस्टर द्वीप में प्राप्त हस्तलिखित पुस्तक की लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सका है, और उस द्वीप में बृहत पाषाण मूर्तियों की सृष्टि और खड़ा किया जाना, अभी कुछ दिन पहले तक आज के वैज्ञानिक युग में भी आश्चर्य का विषय रहा है. मेरी अपनी राय में मध्य तथा दक्षिण अमरीका की प्रसिद्ध सभ्यताएं मय, इंका तथा आजतेक के रहस्य की कुंजी यही ईस्टर द्वीप है, जिस के मूल निवासी अपनेआप को पश्चिम यानी एशिया की ओर से आया हुआ बताते हैं.

उत्तरी अमरीका के आदिवासी अमरीकी भारतीय भी (जिन्हें पहले रेड

इडियनस कहा जाता था) मूलत मगोल है, और मगोलों का स्थान एशिया ही है नेपाल में वृहत हिमालय श्रेणी के उस पार एक प्रदेश है मुस्तांग, जहां नेपाल के एक करद उपराजा हुआ करते थे यह जब काठमांडू आए थे तो एक अमरीकी नागरिक भी काठमांडू में था दोनों की मुलाकात हो गई अमरीकी नागरिक ने उक्त राजा से कहा कि उस के अपने देश अमरीका में एक प्राचीन घोडे की नस्ल है जिसे मस्ताग (Mustang) कहा जाता है, तो इस पर राजा ने बिना किसी आश्चर्य के उन्हें बताया कि उन के अपने प्रदेश के घोडे भी मशहूर हैं और उन की अपनी लोकश्रुति परपरा में यह उपाख्यान है कि उन के पूर्वजों के कुछ आईवद समाज से बहिष्कृत होने पर अपने कुछ घोडो सहित उत्तरपूर्व की ओर महाचीन से भी आगे निकल गए थे उत्तरी अमरीका के भारतीयों की उत्पत्ति के सबध में प्रबल धारणा है कि वे बेरिंग के रास्ते एशिया से अमरीका में उस समय प्रविष्ट हुए जब यह जलडमरूमध्य कठिन हिम आवरण से जमा हुआ था

इसी प्रकार यूरोपीय जातिया भी पूरब की ओर आई पदरहवीं शताब्दी के दौरान पुर्तगाली, डच, फ्रेंच तथा आग्ल जातियों का एशिया और अफ्रीका में, उपर्युक्त देश सहित स्पेन वासियों द्वारा मध्य तथा दक्षिण अमरीका तथा उत्तरी अमरीका के प्रदेशों में साम्राज्य और उपनिवेश की स्थापना की बातें तो मानव इतिहास में कल की सी बात है लेकिन प्राग ऐतिहासिक काल में भी ग्रीक, रोमन, पार्थियन तथा अन्य जातिया पश्चिम से पूरब की ओर बढी थीं, और हूण, म्याडाल, बर्बर, मूर वगैरह पूरब से पश्चिम की ओर गए थे आज भी ससार में बहुत सी भ्रमणशील जातिया ह, जो एक स्थान पर टिकी नहीं रहतीं यूरोप के जिप्सी, भारतीय उपमहाद्वेश के बनजारे, नट, कोड, गूजर वगैरह इसी के उदाहरण ह

घुमक्कडी प्रवृत्ति मनुष्य की आदि प्रवृत्ति है जिज्ञासा ही मानवीय सभ्यता की प्रेरक शक्ति है और देशातर ज्ञान की खोज भी इसी का अग है भोजन और जीवनवृत्ति की खोज में सामूहिक रूप से जातियों और कबीलों का एक देश से दूसरे देशों में आवागमन तो होता ही था, इस के अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से भी मनुष्य भ्रमण और यात्रा की ओर प्रारभ से ही प्रवृत्त होता रहा है एशिया में हमारे भ्रमणशील आय ऋषि, बौद्धभिक्षु चीन के ह्वेनसाग, फाह्यान जापान के कावागुची, यूरोप के मार्कोपोलो, कोलबस, कुक वगैरह भी इसी प्रवृत्ति की कडी ह

हमारी आय या हिंदू परपरा में तीर्थाटन का, जो यात्रा का ही दूसरा पर्याय है प्रबल धार्मिक महत्त्व है हमारे तीर्थ भी आर्यावत के चारो खूट बिखरे ह प्रसिद्ध चार धामों को ही लें, तो वे हिंदुत्व की चार सीमा रेखाओं को निर्दिष्ट करते हैं हिमाच्छादित उत्तरी छोर पर बदरीनाथ, कन्याकुमारी अतरीप के पास दक्षिणी सागर तट पर रामेश्वरम, पूर्वीय समुद्र तट पर जगन्नाथपुरी तथा पश्चिमी सागर तट पर द्वारिकाधाम इसी प्रकार द्वादश ज्योतिर्लिंगों का भी वितरण है शक्तिपीठों के स्थान भी इसी तरह वितरित हैं इन स्थानों के भ्रमण और दर्शन कर के प्रत्येक हिंदू अपनआप को धन्य समझता ह

आज मनुष्य में जो बाह्य विषमता है उस के मूल में आर्थिक कारण तो ह ही, पर साथ ही आपसी आवागमन का अभाव और एकदूसरी जाति के सामाजिक और

व्यावहारिक रीतिरिवाजों का अज्ञान भी है. मैं ने थोड़ा बहुत जो संसार के विभिन्न देशों का भ्रमण किया है, उस से मैं इसी परिणाम पर पहुंचा हूं कि सारे संसार की आधारभूत परंपराएं एक हैं. सही है, जलवायु जनित वेशभूषा और आहारविहार, राजनीति तथा स्वार्थरूपी क्षार ने मानव आत्मा की अग्नि को ढक रखा है. यदि उस राख को फूंक कर उड़ा दिया जाए तो आत्मा की यह आग सभी जगह समान रूप से जलती मिलेगी, और आत्मा का यह स्पर्श पारस्परिक मेलजोल और एकदूसरे की भावनाओं को समझने के प्रयास से ही स्पंदित हो सकता है.

अब रही सभ्यता की बात, कौन सी विद्यमान सभ्यता ऊंची और विकसित रही है? इतिहास बताता है कि इस के चक्र में सभ्यताएं बनती और मिटती रही हैं. मिस्र के काहिरा स्थित संग्रहालय को देखने के बाद पाश्चात्य सभ्यता के आधुनिकतम आभूषण, अलंकारों तथा परिवेश में कोई नवीनता नहीं लगती. अभीअभी कुछ ही दिन पूर्व एक पाश्चात्य देश के वैज्ञानिक ने शुक्र ग्रह में मानव आवास होने की धारणा व्यक्त की है और उस को सिंधु सभ्यता (मोहनजोदरो) के मानव का उपनिवेश होना बताया है. मैं किसी पूर्वाग्रह के कारण नहीं अपितु सहज ज्ञान के आधार पर यह कहना चाहूंगा कि हमारी अपनी संस्कृति के पुरातन वाङ्मय का वैज्ञानिक विवेचन के साथ अध्ययन और अनुसंधान होना आवश्यक है. अभी तक इस काम को पाश्चात्य जगत के विद्वान ही करते आए थे, जो हमारी मान्यताओं और मूल्यमान से अपरिचित थे. इतना ही नहीं, वे हमारे नाम और शब्दों का सही उच्चारण या हिज्जे भी नहीं कर सकते थे. अतः हमारी अपनी ही संस्कृति का ज्ञान पाश्चात्य जगत की खोज में बासी हो चुका है और उस पर भी उधार लिया हुआ है. आज इसी लिए और आवश्यक है कि हम अपने ही पूर्वजों के ज्ञान का नए संदर्भ और नए प्रकरणों में अध्ययन और अनुसंधान करें.

संसार आज सिमटता जा रहा है. यात्रा के नए साधनों और उपकरणों द्वारा जो यात्रा कल असंभव तथा असाध्य सी लगती थी, आज साध्य हो गई है. स्थल मार्ग द्वारा ही आज बस और मोटरें एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप पहुंचती हैं. जेट वायुयानों की तो बात ही क्या! मेरे अपने घर विराटनगर से धनकुटा पहुंचने के लिए पैदल तीन दिन लग जाते हैं, जब कि फासला लगभग ५४ मील का ही है लेकिन विराटनगर से न्यूयार्क दूसरे दिन चार बजे अपराह्न में ही पहुंच गया. दिशा, दिन की रोशनी और जेट यान ने मिल कर यह संभव किया.

अब तो कुछ ही दिनों में ध्वनि की गति से तीव्रतर यान साधारण सवारी का रूप लेंगे, फिर तो समय का अंतर और भी कम होता चला जाएगा. कालांतर में जितने बजे चलेंगे उतने ही बजे दूसरी जगह पहुंच सकेंगे. अलबत्ता खर्च तो ज्यादा लगेंगे ही, पर विशेष यानों का, जो तीनचारसौ यात्रियों तक वहन कर सकेंगे, अभी परीक्षण काल चल रहा है, जो कुछ ही दिनों में तिजारती रूप ले लेगा, तो खर्च भी अपेक्षाकृत कम पड़ने लगेंगे. पर साहसी घुमक्कड़ पदयात्रा, साइकिल अथवा 'रुको और चलो' (हिच हाइक) पद्धति से काम चला लेते हैं. आज भारत और नेपाल में जो हिप्पियों तथा बीटनिकों की बाढ़ सी आ चली है वे ज्यादातर अंतिम पद्धति ही व्यवहार में लाते हैं.

प्रस्तुत पुस्तक की शैली मनोरंजक है तथा भाषा परिमार्जित. मेरी मित्रता श्री रामेश्वर टांटिया से बहुत पुरानी है, जब न मुझे ही लोग जानते थे और न श्री टांटिया ही प्रसिद्ध थे. किंतु इतने दिनों के संबंध के बावजूद मैं कभी यह भांप नहीं पाया था कि व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाले मेरे मित्र के अंदर एक अच्छा साहित्य सृजक भी विराजता है. मेरे अज्ञान का निरावरण तो संकलित लेखमाला ने कर दिया है. जो लोग देशविदेश घूम नहीं पाए, वे घर बैठे ही पर्यटन का आनद उठा पाएंगे, यही इस पुस्तक की देन है, और यह देन कम महत्व की नहीं. हिंदी साहित्य में पर्यटन संबंधी कम ही ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं, और उन में यह अर्वाचीनतम ही नहीं प्रत्युत साहित्यिक रूप से भी उपादेय सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है.

'मानोड़' —मातृकाप्रसाद कोइराला

विराटनगर, मोरंग (नेपाल)

विजयादशमी, सं. २०२४ वि.

अपनी ओर से

बचपन में जब मैं हाई स्कूल में था, पाठ्य पुस्तको में देशविदेश सबंधी वर्णन पढ़ने को मिला. विदेशो में लोगो की भाषा, रीतिनीति, रहनसहन आदि के बारे में जानने की रुचि होती थी. चाव बढ़ता गया और मैं यात्रा सबंधी जो भी पुस्तकें मिलीं, पढ़ने लगा. ह्वेनसाग और इब्नबतूता की यात्राए मुझे बहुत अच्छी लगीं. ऐसा लगता, मैं भी उन के साथसाथ ही भ्रमण कर रहा हू. इस के बाद स्वामी सत्यदेवजी परिव्राजक और राहुलजी की यात्रा पुस्तकें पढने को मिलीं, दुनिया को समझनेपरखने का एक नया दृष्टिकोण आया. स्वदेश तथा विदेश के तुलनात्मक विवेचन की प्रेरणा भी मिली साथ ही स्वदेश के अलावा दूसरे देशो की यात्रा की प्रबल इच्छा होने लगी.

जिज्ञासा मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है. जानने की प्यास बुझती नहीं. जब बुझ जाती है तो मनुष्य जडवत हो जाता है. उस की चेष्टाए और प्रवृत्तिया कूपमडूकी हो जाती है. भारतीय सस्कृति में इसी कारण जिज्ञासा और जिज्ञासु दोनो को महत्त्व दिया गया है. ज्ञान की प्राप्ति के लिए यात्रा पर अपेक्षित बल भी दिया गया है.

भारतीय जीवन की पूर्णता वानप्रस्थ और सन्यास से मानी जाती थी. इन्हीं दोनो आश्रमों में तीर्थाटन द्वारा सत्य को खोजने और पहचानने का निर्देश था. इसी लिए हमारे मुख्य तीर्थ—बद्रीनाथ, रामेश्वरम, द्वारिका और जगन्नाथपुरी—देश के चार कोनो पर थे इन तीर्थों में जाना हमारे सामाजिक एव राष्ट्रीय धर्म का एक अग माना गया है, यहा तक मान्यता रही है कि बिना चारो धामो की यात्रा के मनुष्य को मोक्ष नहीं मिलता.

भ्रमण और देशाटन के प्रति प्रेम, प्रेरणा और रुचि के फलस्वरूप ससार की भिन्नभिन्न सस्कृति और सभ्यता की विभिन्न सामग्री को मथ कर सास्कृतिक नवनीत बनाने का जितना व्यापक प्रयोग हमारे इतिहास में मिलता है उतना विश्व के किसी भी देश में नहीं.

आज से ढाई हजार वर्ष पहले जब न तो यातायात के सुगम साधन ही थे और न सुरक्षा की उचित व्यवस्था ही थी, उस समय भी सम्राट अशोक की पुत्री सुदूर देशों तक में गई आज भी वही परपरा है, भले ही क्षीण और अन्य रूप में हो.

हजार वर्ष की दासता के फलस्वरूप भारत को इस समय किसी बात की आवश्यकता है तो वह यह है कि स्वयं को जीवित रखने के लिए इस पृथ्वी पर

से उठ खड़े हुए हैं. यह भी देखा कि उन की संस्कृति ने जहां नई दुनिया को कभी प्रभावित किया था, आज उन पर उलटा अमरीका का प्रभाव पड़ रहा है. इन यात्रा लेखों में संस्कृति और इतिहास के साथसाथ आर्थिक विषयों की चर्चा अधिक है.

पर्यटन अथवा देशाटन समय सापेक्ष है. विश्व के बड़ेबड़े शहरों को अच्छी तरह देख पाना और वहां के जनजीवन की गतिविधियों से पूर्ण परिचित होना, थोड़े से समय में संभव नहीं. ऐसी स्थिति में यात्रा से पहले लक्ष्य, उद्देश्य और स्थान निश्चित कर लेने से समय और पैसे—दोनों की बचत होती है.

देशाटन में रुचि रखने वाले मेरे मित्र अक्सर विदेशों के यात्रा संबंधी संभावित खर्च के बारे में मुझ से पूछते हैं. मेरा अनुभव है, व्यय की न तो निर्धारित सीमा है और न कोई मापदंड. यह तो सपूर्ण रूप से अपने मन और साधन पर निर्भर करता है. अतएव मेरी राय में मध्यम मार्ग ही सब से अच्छा है.

विदेशों में होटलों के चार्जों में बहुत अंतर है. डीलक्स होटलों में दैनिक १०० से ४०० रुपए तक तो केवल रहने का ही चार्ज है, भोजन और नाश्ते के खर्च अलग. हमारे देश की तरह वहां धर्मशालाएं नहीं हैं इसलिए आवास की व्यवस्था नितांत आवश्यक है. विदेशों में यदि मध्यम श्रेणी के होटलों में ठहरा जाए और बिना खास जरूरत के टैक्सी की सवारी न की जाए तो कुल मिला कर औसतन ६० रुपए प्रति दिन में आसानी से काम चल सकता है. इकानामिक होटल अथवा यूथ होस्टलों में आवास लेने पर दैनिक खर्च में २० रुपए की बचत हो सकती है. वैसे अलगअलग शहरों में थोड़ाबहुत अंतर रहता ही है.

यह कोई जरूरी नहीं कि विदेशों में शराब पीनी ही पड़ेगी या आमिष भोजन के बगैर चल ही नहीं सकता. निरामिष भोजन प्रायः हर जगह मिलते हैं. थोड़ी सी सावधानी बरतने की जरूरत है क्योंकि वहां अंडे या चरबी को निरामिष भोजन में ही शामिल कर लेते हैं, बल्कि कहींकहीं दूध को सामिष आहार मानते हैं. जो भी हो, बड़ेबड़े शहरों में ऐसे बहुत से रेस्तोरां हैं जहां केवल निरामिष भोजन मिलता है.

वर्णभेद का जिक्र भी कई मित्रों ने किया है. मेरा खयाल है कि यह एक स्थानीय समस्या है जो कम होती जा रही है. मैं ने भी सुना था कि अमरीका में यह काफी जटिल समस्या है पर मैं वहां पश्चिम से पूर्व तक जहां कहीं भी गया, रंगभेद के कारण कोई कठिनाई मेरे सामने नहीं आई. हां मैं ने यह अवश्य देखा कि नीग्रो और श्वेत अमरीकियों के बीच रंगभेद को ले कर कुछ तनाव सा रहता है, जिस के आर्थिक के सिवा दूसरे अन्य कारण भी हैं जिन का वर्णन मेरे कई लेखों में मिलेगा. पर विदेशी पर्यटकों को इस से कोई असुविधा नहीं होती.

विदेशों की यात्रा पर जाने वाले पर्यटकों का ध्यान एक विशेष बात पर आकर्षित करना चाहूंगा. प्रत्येक भारतीय को खयाल रहे कि वह विदेशों में अपने देश का सांस्कृतिक दूत अथवा प्रतिनिधि है, एक पर्यटक मात्र नहीं. हमारे देश के प्रति विदेशों में, खास तौर पर अमरीका और यूरोप में, विशेष जिज्ञासा रहती है. इस का कारण यह है कि हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रति इन महादेशों में आकर्षण है. वहां पादरियों द्वारा फैलाए हुए अनेक प्रकार के रहस्य व भ्रांतियां भी हैं.

साम्यवाद का संबंध मानव समाज की विकसित सभ्यता और संस्कृति से रहा है, युगों से समय-समय पर संसार की महान विभूतियों ने इस भावना का प्रचार किया है इस की उपलब्धि के लिए जनसमाज को अनुप्राणित किया है वेद और उपनिषदों का उल्लेख इस संबंध में हो सकता है अतिरंजित माना जाए फिर भी यह तो सभी स्वीकार करेंगे कि बुद्ध, मूसा, ईसा, मुहम्मद, नानक, विवेकानंद और विनोबा ने अपरिग्रह और समता का ही प्रतिपादन किया है पिछली शताब्दी के अंतिम चरण में यूरोप में औद्योगीकरण की कल्पनातीत प्रगति के साथ मानव समाज का दृष्टिकोण भौतिकवादी हो उठा पार्थिव सुख और साधन की उपलब्धि जीवन का लक्ष्य माना जाने लगा फलतः भोग प्रधान संस्कृति त्याग की भावना पर छा गई स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ी और शोषण एक साधन बन गया संघर्ष होना स्वाभाविक था इसी परिप्रेक्ष में साम्यवाद का प्रतिपादन कार्ल मार्क्स ने जिस रूप में किया है, वह सर्वथा नवीन ही कहा जाएगा

मार्क्स ने साम्यवाद की प्रतिष्ठा के लिए जिस सामाजिक व्यवस्था को निदान माना है, उस में सहिष्णुता के स्थान पर बल प्रयोग और संघर्ष को प्रधानता दी गई है प्राचीन मान्यता रही है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं का शोधन करे और 'आत्मवत सर्वभूतेषु' के तत्त्व को समझे, जब कि मार्क्स के नए विधान के अनुसार साम्यवाद की सिद्धि के लिए व्यक्ति का कोई महत्त्व नहीं यह नई विचारधारा साम्यवाद को बलात समाज और देश पर लादना आवश्यक मानती है इसी को मार्क्सवादी 'क्रांति' की संज्ञा देते हैं इतिहास बताएगा, कौन सा मार्ग सही है साम्यवाद की प्रतिष्ठा के लिए—नया अथवा पुराना?

अमरीका और रूस—दोनों ही देशों में जाने का सुयोग मुझे मिला भारतीय दूतावासों के सहयोग से वहां के विशेष अर्थशास्त्रियों से भी विचारविमर्श का अवसर मिला इन दोनों देशों में व्यक्ति और समाज का जैसा रूप मेरे सामने आया, उसे मैं ने अविकल प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है हो सकता है, मेरे मानस की प्रतिक्रिया पाठकों को प्रत्यक्ष या परोक्ष आलोचना सी लगे, इसे मैं अस्वीकार नहीं करता

मैं साहित्यिक नहीं हूं, हां साहित्यानुरागी अवश्य हूं इस युग के शीर्ष साहित्यकारों के निकट रहने का सौभाग्य रहा है, इसी कारण अपने विचारों को लिपिबद्ध करने की प्रेरणा मिली है

मेरा यह प्रयास कैसा बन पाया है, यह पाठकवर्ग की सम्मति पर निर्भर करता है इतना भर कहना चाहूंगा कि इन लेखों के लिखने में काफी परिश्रम करना पड़ा है टिप्पणियों को तरतीब से जोड़ कर लेख तैयार करने में कभीकभी तो पाच-सात दिन तक लगे फिर इन्हें हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार एवं विद्वान श्री मैथिलीशरण गुप्त, डाक्टर नगेंद्र, श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी आदि को दिखाता रहा और उन से परामर्श भी लेता रहा देश के विशिष्ट नेता, संसद सदस्य श्री गंगाशरण, सरिता के संपादक श्री विश्वनाथ और श्री बालकृष्ण गर्ग के प्रति यदि आभार प्रकट करता हूं तो यह एक औपचारिकता का निर्वाह मात्र होगा, क्योंकि ये मेरे अनन्य मित्रों में हैं मगर यह भी सही है कि इन के प्रोत्साहन के बिना इतने लेख शायद ही लिख पाता अन्य कार्यों में व्यस्त रहने पर भी मुझे इन के

विश्वयात्रा के संस्मरण . . .

बर्मा

चीनी कम्युनिज्म के चक्रव्यूह में

बात कुछ अजीब सी है, पर है सच जो जहा रहता है, वहा की या पासपडोस की चीजो के लिए उस में आकर्षण कम रहता है मुझे दिल्ली में रहते दस वर्ष हो गए मेरे यहा मेहमान आते हैं, कुतुबमीनार, लालकिला, बुद्ध मदिर, हुमायू का मकबरा, ससदभवन तथा अन्यान्य ऐतिहासिक स्थलो को दोतीन दिनो में देख लेते हैं, मुझ से इन के बारे में बातचीत करते है सब तरह के साधन मेरे पास हैं, पर मैं अभी तक दिल्ली की कई ऐतिहासिक इमारतो को नहीं देख पाया हू मेरे मित्र और मेहमानो को सहसा विश्वास नहीं होता, मगर बात सच है इस की वजह है, मैं हमेशा सोचता रहा कि यहीं तो हू, कभी देख लूगा दो बार विदेशो का चक्कर लगा चुका हू सुदूर उत्तरी ध्रुवाचल में मध्यरात्रि का सूर्य देखने नारविक चला गया, स्विट्जरलैण्ड में आल्प्स की हिमानी शैल मालाओ पर चढ़ आया, पर वर्मा अभी तक छूटा हुआ था

मगर इस का यह अर्थ नहीं कि वर्मा देखने की इच्छा नहीं थी बचपन में इस के बारे में बहुत कुछ सुना करता था रगूनी हीरे, बर्मी सोना, बर्मी टीक (सागवान) की बडी तारीफ और कद्र थी *सन १९३७ तक तो वह भारत का ही अग था भारतीयो का अबाध आवागमन और व्यापार यहा था हमारे कई सगेसबधी यहा स्थायी रूप से रहते थे स्कूलो में भारत का नक्शा बनाने पर वर्मा भी उस में रहता था बचपन में जिस विचार अथवा बात का रेखाकन मानस में हो जाता है वह सहज में मिटती नहीं यही वजह है कि आज भी पाकिस्तान, श्रीलका और वर्मा हमारे लिए राजनीतिक कारणो से विदेश भले ही हो गए हो पर मन तो अब भी इन्हें स्वदेश का ही अभिन्न अग समझता है खैर, वह वक्त भी आया जब सन १९६४ को जुलाई में हमारी विश्वयात्रा का प्रथम चरण वर्मा था

कलकत्ते से रगून केवल डेढ घटे की उडान है मानसूनी मौसम के कारण दमदम अड्डे पर हवाई जहाज को रुक जाना पडा मैं एयरपोर्ट में बैठा-बैठा ऊब रहा था, सोच रहा था कि विज्ञान का दावा है प्रकृति पर विजय पाने का, लेकिन जरा बादल घिर आए, जोरो की वर्षा हुई, और वायुयान की उडान बद! विज्ञान असहाय! खुद ही अपने उतावलेपन पर हसी आ गयी एक वह भी समय था जब कलकत्ते और मद्रास से जहाजो में बैठ कर आठदस दिनों का समुद्री

सफर रगून के लिए करते हुए लोग नहीं थकते थे राजस्थान से हमारे ही पूर्वज रगून जाया करते थे जिन्हें पुल मिला पर तीनचार महीने लग जाते थे ज्यादा नहीं, सिर्फ १०० वर्ष पहले की ही तो बात है

मन बहलाने की कोशिश करने लगा भारत और बर्मा के पारस्परिक सबध की मधुर स्मृतिया के पन्ने आखों के सामने से गुजरने लगे कैसी विडबना है! मनुष्य राजनीति को जन्म देता है, फिर उसी की पैनी धार में अपनी गरदन नपवा लेता है ३० वर्षों में इसी राजनीति के कुटिल हास्य ने भारत को खडित कर के बर्मा, पाकिस्तान और श्रीलंका बना दिया कल तक ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जो भारतीय कदम मिला कर सघर्ष करते थे आज वे बर्मी, पाकिस्तानी और सिंहली कहलाते हैं भारत से उन का असहयोग है और भारतीयों से मनमुटाव!

बैठेबैठे मन बोझिल हो रहा था बर्मावासी बहुत से भारतीयो की चिट्ठिया हमें मिली थीं वे सकट में थे बर्मा सरकार उन के प्रति उचित न्याय नहीं कर रही थी, यह उन की शिकायत थी इसी लिए हम ने अपनी यात्रा की पहली मजिल के रूप में रगून को चुना था सूचना मिली, वायुयान छूटने वाला है मन का भार कम हुआ तेजी से कदम बढाता हुआ अपनी सीट पर बैठ गया चद मिनटो में ही दमदम हवाई अड्डा पीछे छूट गया था रगून पहुच कर देखा, हवाई अड्डे पर बडी सख्या में भारतीय हमारे लिए प्रतीक्षा में खडे हैं इन में राजस्थानी स्त्रीपुरुष अधिक थे रामकुमारजी ने धीरे से कहा, ये लोग कितनी आशा और भरोसा लिए आए हैं हम यदि इन के लिए कुछ भी कर पाए तो बहुत बडी सेवा होगी मैं ने कहा, नई दिल्ली में इन के लिए हम ने जो थोडा सा प्रयत्न किया उस के लिए इतना स्नेह और विश्वास इन का हम पाएगे, इस की आशा मुझे नहीं थी कुछ दिनों पहले हम ने बर्मा के प्रवासियो के प्रतिनिधियों की स्वर्गीय प्रधान मत्री श्री शास्त्री और विदेश मत्री से मुलाकात करा दी थी इनकी कठिनाइयो का समाधान कुछ अंशो तक हो सका था

रगून ऐयर पोर्ट काफी अच्छा और बडा है पर दमदम की तरह नहीं उतना व्यस्त भी नहीं यहा हम ने लक्ष्य किया कि लोग प्रेम से जरूर मिले लेकिन सब के चेहरे पर भय और उदासी की छाया थी वे बात करते भी डरते थे, इधर उधर देख लेते थे कि कहीं कोई गुप्तचर तो नहीं है बर्मा में पिछले दो वर्षों से जनरल नविन का शासन है, जो कम्युनिज्म के बहुत ही निकट है बैंक और बीमा व्यवसाय के साथसाथ उद्योगधधे और दुकानें भी सरकार ने ले ली हैं बर्मा में सदैव से विदेशी श्रम और पूजी उद्योग धधे और शिल्प में लगाई जाती रही है आधुनिक बर्मा को तो भारतीय श्रम और पूजी का ही अवदान कहना चाहिए

आम तौर पर बर्मी मस्तमौजी जीव है जिंदगी के उतारचढ़ाव को वहां की औरतें सभालती है, मर्द तो मुह में चुरुट दबाए दीवारो के सहारे ऊघते हैं प्रकृति ने देश का शृ गार कर दिया है धरती अन्नपूर्णा और रत्नगर्भा है विश्व

बेंत की टोकरी बुनते हुए एक बर्मी महिला

है चावल निर्यात करने वाले देशो में बर्मा प्रमुख है यहा के लाल, नीलम, पन्ने और जेड ससार में बेजोड है रबर और सागवान के जगल धन बरसाते हैं यहा की खानों में पेट्रोल, टीन और चादी प्रचुर मात्रा में है आबादी करीब दो करोड है और क्षेत्रफल २,६१,८०० वर्ग मील

इतने नैसर्गिक साधन होते हुए भी बर्मा विश्व के इतिहास में कभी स्थान नहीं बना पाया चिरकाल से ही विदेशियो ने इसे लूटा और शोषण किया कुछ वहा बस भी गए बर्मा के रक्त में मगोलीय धारा प्रमुख है . इन के यहा का इतिहास बताता है कि हजारो वर्ष पूर्व तिब्बती, उर्वशीयम (नेफा) के भाग से यहा के उत्तरी भाग में आ बसे थे इस के बाद उत्तरी सीमा से चीनी बराबर घुसपैठ करते रहे, आज भी उन का यह क्रम जारी है इन्हीं कारणो से उत्तरी बर्मा में करेन, काचिन, काया आदि अनेक उपजातिया हैं भाषा और सस्कार की दृष्टि से इन में भेद है इन में पारस्परिक समन्वय की स्वस्थ प्रक्रिया धीरेधीरे हो रही थी, पर अब शायद यह सिलसिला कम्युनिस्ट विचारधारा के कारण शिथिल हो जाएगा

जो भी हो, भारतीयों के पूर्व यहा बसने वाली जातिया न बर्मा के राष्ट्रीय और आर्थिक विकास के प्रति रुचि नहीं रखी परन्तु भारतीयो ने ऐसा नहीं किया वे यहा यह समझ कर नहीं बसे कि वे विदेश में है अथवा प्रवासी हैं इसी लिए भारतीय श्रम और धन की तेज धारा से बर्मा में वैभव का स्रोत फूट पडा

था. पर, आज वहां पर जो भारतीय हैं, बर्मी उन्हें संदेह की नजर से देखते हैं और उन्हें बर्मा से हटा देना चाहते हैं. अब स्थिति यह है कि बहुत से भारतीय बर्मा से चले गए हैं. कुछ अब भी रह गए हैं, मगर विशेष कारणों से. किसी के संबंधी जेलों में हैं, किसी को क्लियरेंस लाइसेंस नहीं दिया जा रहा है. कामधंधा है नहीं. जो कुछ पुराना बचा है, उसे बेच कर खर्च चला रहे हैं. आर्थिक *दशा यह है कि बर्मा के रुपए का मूल्य भारतीय अनुपात से तिहाई रह गया है.* चीजों के बेचने वाले तो बहुत से हैं पर खरीदने वाले नहीं मिलते.

मैं ने अपने एक मित्र को एक रालेक्स घडी और फ्रांस में बनी गुलाब की रूह खरीदने को कहा. विश्व में सर्वोत्तम आटोमेटिक क्रोनोमीटर रालेक्स घड़ी, जो बहुत ही कम बनती गई थी, मुझे डेढ़ हजार बर्मी रुपयों में यानी भारतीय मुद्रा के चार सौ पचास रुपए में मिली. भारत में इस का मूल्य है बारह सौ से चौदह सौ तक. जिन सज्जन की घडी थी वह कभी लाखों की संपत्ति के मालिक थे. मिल, कारखाने, जमीन, मकान सब कुछ था उन का. कम्युनिस्ट शासन की दृष्टि पडी और बिना मुआवजे के सब कुछ सरकारी हो गया. अब तो उन के रोजमर्रा के खर्च के लाले पड़े हैं. मैं ने उन से पूछा, "कम्युनिस्ट सरकार ने सभी विदेशियों में समता रखी होगी." धीरे से उन्होंने कहा, "नहीं, चीनी अधिक भाग्यवान हैं, अंगरेज व अमरीकी अपनीअपनी सरकार की मजबूती के कारण निरापद हैं क्यों कि उनके प्रति बर्मी सरकार का जोर जुल्म नहीं चला, लेकिन दुर्भाग्य है कि हमारा तो खूटा ही कमजोर निकला."

चलते वक्त उन्होंने गुलाब की एक ओंस रूह मेरे हाथों में दी. मैं इनकार करने लगा तो उन्होंने कहा, "अब हम किस बूते पर और किन कपड़ों पर इतना कीमती इत्र लगाएंगे. फिर यह भी तो है कि कहीं इस की सुगंध किसी गुप्तचर को लगी तो हमें जेल में ही बंद कर दे" भारतीय यात्रियों को बर्मा में ठहरने के लिए सिर्फ २४ घंटे का समय मिलता है इसलिए इच्छा रहते हुए भी मौलमीन, माडले, पेगू आदि स्थानों पर हम नहीं जा सके और सरसरी तौर पर केवल रंगून ही देख पाए. रंगून बर्मा की राजधानी है इसलिए सरकारी दफ्तर और विदेशी दूतावास यहीं हैं. बंदरगाह होने के नाते यह आयातनिर्यात और उद्योगव्यापार का केंद्र है. आबादी है इस की लगभग ८,००,०००. मकान और सडकें व मार्ग बहुत कुछ हमारे मद्रास शहर से मिलतेजुलते हैं.

जुलाई का महीना था, गरमी कलकत्ते जैसी ही लग रही थी. दर्शनीय स्थान बहुत से थे पर समय की कमी के कारण सब देखना संभव न था. इस के अलावा यहां एक दिन ठहरने का हमारा उद्देश्य भारतीयों की समस्याओं का प्रत्यक्ष अध्ययन और उन्हें सांत्वना देना था शहर घूमने के कार्यक्रम में सब से पहले हम श्वेडागन पगोडा (सुवर्ण मंदिर) देखने गए एक पहाडी पर यह बुद्ध मंदिर लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व बनाया गया था समयसमय पर इस में परिवर्तन होते रहे हैं. कई राजाओं ने इस के विभिन्न अंशों को बनवाया है मंदिर में भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष सुरक्षित हैं. इसलिए विश्व के कोनेकोने से बौद्ध इन के दर्शन के लिए आते हैं मंदिर के बाहर सैकडों बर्मी लडकियां नाना

प्रकार के फूल और पुष्प मालाए पूजन के लिए बेच रही थीं हम ने भी तथागत के पूजन के लिए फूल खरीदे

मदिर का प्रागण विस्तृत और विशाल है जिस में हजारो व्यक्ति एक साथ बैठ कर पूजन कर सकते हैं शिखर ३२५ फुट ऊचा है, जो काफी दूर से दिखाई देने लगता है खिलती हुई धूप में मदिर के शिखर का सोना चमक रहा था हमारे यहा अमृतसर के स्वर्ण मदिर और काशी के विश्वनाथ मदिर में भी सोने के कलश और शिखर हैं, लेकिन श्वेडागन के बुद्ध मदिर से उन का कोई मुकाबला नहीं है यहा के सोने की कीमत करोडो रुपयो की है यह भी सुनने में आया कि सैकडो टन चादी इस के स्तभो के नीचे है मदिर की कारीगरी देखता जा रहा था मेरे एक राजस्थानी मित्र बताते जा रहे थे कि मदिर के प्रति लोगो में इतनी श्रद्धा है कि यहा कभी चोरी या डकैती नहीं होती करेनी लुटेरो ने इसे कभी नहीं लूटा और न जापानी सैनिको ने अपने तीन वर्ष के शासन में कभी इस के सोनेचादी या रत्नराशि पर नजर डाली बल्कि वे यहा आ कर श्रद्धानत हो कर पूजन किया करते थे

मैंने कहा, "अब तो कम्युनिस्ट सरकार है चीन ने गिरजों, मसजिदों और मदिरो को नहीं छोडा कहीं पार्टी के दफ्तर बने तो कहीं होटल श्वेडागन के इस वैभव का आकर्षण वे कब तक रोक सकेंगे?" धीरे से उन्होंने मेरी कलाई पर हाथ रख कर चुप रहने का सकेत किया हम से थोडी ही दूर पर एक बर्मी खभो की नक्काशी देख रहा था या हमारी बातें सुन रहा था, समझ नहीं सका हम ने मदिर के कक्ष में प्रवेश करते समय देखा कि वह धीरेधीरे दूसरी ओर चला जा रहा है

हम तथागत की मूर्ति के सामने थे विशाल मूर्ति, भव्य आकृति और उस पर छाया सौम्य भाव एक शात वातावरण की सृष्टि कर रहा था, जिस के परिवेश में मन खो गया बर्मा आने पर जो कुछ भी देखा और समझा इस से मन बडा खिन्न था पर इस मूर्ति के सामने आते ही चित्त हलका हो गया, अवसाद दूर हो गया सभवत हिंदू होने के नाते मेरे संस्कारो के कारण हो लेकिन प्रसिद्ध लेखक नार्मन लेविस ने भी अपनी पुस्तक 'स्वर्ण देश' में स्वीकार किया है कि यहा बुद्ध की प्रतिमा के सम्मुख जाने पर वह भावविभोर हो गए और आधे घटे तक आत्मविस्मृत से रहे, आखो से आसुओ की धार बह निकली

मदिर में बौद्ध, श्रमण, सन्यासी और भिक्षु काफी सख्या में रहते हैं अध्ययन और चिंतन ही इन का प्रमुख कार्य है बर्मा में ईसाई और इसलाम धर्म का भी प्रचारप्रसार है, फिर भी यहा बौद्ध धर्म प्रमुख है बर्मा का वर्तमान कम्युनिस्ट शासन धर्म और दान के आधार पर जीवन बिताने वालो को भविष्य में कितना प्रश्रय देगा, यह तो समय बताएगा

पगोडा देखने के बाद हम रामकृष्ण हाल में गए यहा का पुस्तकालय प्रसिद्ध है अध्यात्म, दर्शन एव भारत के सबध में यहा का सग्रह काफी अच्छा है एक प्रकार से यह पुस्तकालय प्रवासियो के मिलने का स्थान है रामकृष्ण मिशन की ओर से बर्मा में बडा ठोस काम हुआ है अब भी जो

कुछ हो रहा है, प्रशसनीय है लाइब्रेरी देखने के बाद मिशन के स्वामीजी के साथ रामकृष्ण अस्पताल भी देखा अच्छा बडा भवन है, अस्पताल में १२२ शैयाए है बिना भेदभाव के चिकित्सा व शुश्रूषा की व्यवस्था है देखा, रोगी प्राय बर्मी थे

स्वामीजी ने अपनी कठिनाइया बताई कि पहले तो भारत से काफी सहायता आती थी, स्थानीय व्यवसायी और सरकार भी खर्च में मदद पहुचाती थी, पर अब वे सुविधाए नहीं रही हैं मुझे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि स्वामीजी को बर्मा छोडने के लिए कहा जा रहा है मैं सोचने लगा, सुदूर बग भूमि में अपनी माबहन और स्वजनों को छोड कर त्यागी और व्रती सानुन्यासियो पर भी सदेह रखना क्या कम्युनिस्ट प्रथा है? समता और बधुत्व का बुलद नारा लगाने वाला कम्युनिज्म, क्या इसी प्रकार मानवता की सेवा करेगा? अस्पताल देख कर हम भारतीय दूतावास पहुचे साथसाथ बर्मी सरकार के अफसर भी लगे रहे हम चाहते हुए भी आवश्यक जानकारी नहीं पा सके

दोपहर के भोजन का कार्यक्रम कलकत्ते के हमारे मित्र बाबूलाल मुरारका के यहा था कुछ वर्षो पहले बडे उत्साह से इन्होंने यहा नाइलोन की एक बडी फैक्टरी लगाई थी अब उसे सरकार ने ले लिया है मुरारकाजी मैनेजर की हैसियत से सरकारी निर्देशानुसार काम देखते है मुझे जानकारी मिली कि फैक्टरी की उत्पादन क्षमता घट गई है और मुनाफा भी कम हो गया है भोजन पर रगून के प्रमुख व्यवसायी भी आमन्त्रित थे भारत की तरह यहा भी उद्योग व्यवसाय में राजस्थानी ही आगे बढे हुए थे यहा खास बात देखने में आई कि कृषि को भी उद्योग के रूप में भारतीयो ने सगठित किया है यहा विशेष रूप से राजस्थानियो के हाथ में लकडी और चावल की बडीबडी मिलें थीं, कपडे और गल्ले का व्यवसाय था पिछले वर्षों में आयातनिर्यात के क्षेत्र में भी इन का अच्छा दखल हो गया था आज हालत यह है कि सब कुछ बर्मी सरकार ने ले लिया है इन में से कुछ तो जेलों में है और जो बाहर है वे आतकित हैं मुझे बताया गया कि इन के सामने सब से बडी समस्या है कि ये अगर स्वदेश लौटें भी तो यहा करेंगे क्या? इन की हजारों इमारतें है, जिन में से बहुत सी सरकार ने ले ली है जो बची है उन पर सरकार का नियत्रण है, मुआवजा मिलने का तो सवाल ही नहीं उठता सरकारी कानून है कि सपत्ति बेच नहीं सकते न जाते बनता है और न छोडते

मैं ने लक्ष्य किया कि यहा के बहुत से भारतीय इतनी दयनीय अवस्था में होने पर भी बर्मा छोडना नहीं चाहते बर्मा उन की मातृभूमि बन गई है भारत उन्होंने कभी देखा तक नहीं वैधानिक रूप से यहा के नागरिक भी बन चुके है साधारणत राजस्थानी अपनी सस्कृति और परपरा नहीं छोडते, क्योकि इस के प्रति इन्हें बडा मोह होता है लेकिन यहां देखा कि अन्य भारतीयो की तरह इन में से कइयों ने बर्मी तौरतरीके अपना लिए है, भाषा और वेशभूषा भी इन की यहीं की है, कोकार ने बर्मी औरतों से विवाह कर लिए है

इतने पर भी सरकार का विश्वास इन पर नहीं है मै हैरान था कि आखिर बात क्या है? आमतौर भारतीयो से इस विद्वेष का मूल कारण क्या है? यह

सरकारी उद्योग में काम करने वाले सही माने में कितने खुशहाल है, यह तो वही रह कर पता चल सकता है।

निश्चित था कि बर्मा के वाणिज्यउद्योग में भारतीयो का प्रभाव और प्रभुत्व था सन १९५१ को जनगणना के अनुसार बर्मा की २,००,००,००० की आबादी में लगभग १०,००,००० भारतीय थे, जो इस समय केवल ३,००,००० रह गए हैं जिन में अधिक्तर मजदूर हैं दूसरी तरफ चीनियो की सख्या इन वर्षों में दुगुनी-तिगुनी हो गई है आध्र, उत्तर प्रदेश और बिहार से मोटी मजदूरी करने के लिए लोग यहा आए पजाब के लोग सुदक्ष कारीगर थे और ठेकेदारी करते थे. कुछ व्यापार भी करते थे राजस्थानी यहा प्रमुख रूप से उद्योगव्यापार के क्षेत्र में थे बगाली अधिकतर सरकारी नौकरियो में और वकीलडाक्टर थे मद्रास के चेट्टियरो की बडी सख्या यहा थी, जिन का लेनदेन का कारोबार था

बर्मी भारतीयो की इज्जत करते थे बर्मी औरतें तो विशेष रूप से सचेष्ट रहती थीं कि भारतीय उन्हें रख लें या विवाह कर लें, और ऐसा हुआ भी खूब खुल कर मैं ने सडकों पर घूमते हुए चटगाव के मुसलमानो के साथ सुकुमार बर्मी स्त्रियो को देखा बर्मा के अराकान प्रदेश में ये चटगावी मुसलमान भारी सख्या में बस गए और इन से उत्पन्न सताना की तादाद भी तेजी से बढी कुछ वर्ष पूर्व इन मुसलमानो ने अराकान को पाकिस्तान में मिला देने की माग भी उठाई थी तब बर्मी सरकार की नींद टूटी और तभी से रोकथाम और चौकसी की जाने लगी है

बर्मी औरतें अपने मर्द का बडा खयाल रखती हैं मर्द कमाता है या नहीं इस की उन्हे चिंता नहीं, उस का स्वास्थ्य ठीक रहे, यह ज्यादा जरूरी है खुद बडी मेहनत और बच्चो का लालनपालन करते हुए उसे यह शिकायत नहीं होती कि उस की कमाई पर मर्द घर में बैठा अफीम, चडू के नशे में है या गप्पबाजी में मस्त है बर्मी रीतिरिवाज में औरतो को तलाक देने की पूरी छूट है फिर भी बच्चे हो जाने पर वे मातृत्व और ममत्व के कारण जल्दी तलाक नहीं देतीं ऐसी स्थिति में बर्मी आलसी और निकम्मे हो गए नशा करना और समय गुजारने के लिए जुआ खेलना उन का धधा बन गया इस का फायदा मद्रास के चेट्टियरों ने उठाया ऊचे सूद की दर पर उन को रुपया देना, फिर उन की जमीन और सपत्ति बिकवा देना या हडप लेना इन के लिए साधारण सी बात थी बगाल के लोगो ने भी उन के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया शरत बाबू के उपन्यासो में इस का उल्लेख है ये बर्मी औरतो से विवाह कर के मौज उडाते थे बच्चे बढने लगते तो छोडछाड कर चल देते भारतीयो के ऐसे आचरण की स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी, बर्मी लोगों के हृदय में विद्वेष का जग उठना सन १९३७ में भारत से बर्मा के पृथक होने से पहले इस सबध में कोई भी आवाज नहीं उठती थी लेकिन बाद में यह एक जातीय प्रश्न बन गया है और भारतीयो के विरुद्ध भावनामूलक आदोलन बढता गया पिछले महायुद्ध के बाद बर्मा के स्वतन होने पर आदोलन को ज्यादा बल मिला इस में विदेशियो का हाथ था, विशेषत इन वर्षों में चीनियो का

चीन में साम्यवादी व्यवस्था कायम होने पर वहा की सरकार ने बर्मा की स्थिति का अच्छा अध्ययन किया जब कि हमारी सरकार ने उदासीनता का रुख अपनाया चीनियो ने यहा अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए भारतीयों के विरुद्ध आग भडकाई भारत पचशील के गीत ही अलापता रहा भारत को जो काम करना चाहिए था, चीन ने किया उस की स्थिति मजबूत बनी उन के तैयार माल के लिए बाजार मिला और वहा के निवासियो को रोजगार

आज दस लाख चीनी बर्मा में है भारत की तरह पाकिस्तान को भी परेशानी होनी चाहिए थी, पर पाकिस्तान की सरकार सजग रही और उस ने चीनियो की नीति का अनुकरण किया आज उन के प्रति वहा विद्वेष नहीं है, बल्कि उत्तरी बर्मा में वे बडी सख्या में बस गए है यह सख्या इतनी तेजी से बढ़ने लगी कि बर्मा सरकार को प्रतिबध लगाना पडा मगर बर्मा का सबध पाकिस्तान से अच्छा ही रहा, जब कि हमारे साथ उतना अच्छा नहीं कहा जा सकता इतना सब कुछ होने पर भी भारत सरकार ने सन १९५९ में बर्मा को तीस करोड रुपए का ऋण दिया, यू एन ओ में भी उन के साथ बराबर सहानुभूति रखी फिर भी बर्मा सरकार भारतीयों के प्रति अनुचित व्यवहार करने के लिए तैयार है

भोजन के उपरात श्री गोयनका के साथ हम रगून का अमरीकी अस्पताल को देखने गए करोडा की लागत से इसे बनाया गया है मैं देख रहा था और सोच रहा था कि यदि वर्तमान कम्युनिस्ट शासन का कुछ आभास भी अमरीका

को हो जाता तो शायद वहा की सरकार इस में इतना धन न लगाती थी गोयनका ने बर्मी महिला से शादी की और वेशभूषा भी वह बर्मी ही रखते हैं मैं ने उन से पूछा, "आप बर्मी हो गए, पर यह तो बताइए कि बर्मी भोजन अपनाए या नहीं?" उन्होंने हस कर कहा, "भोजन के मामले में मैं अब भी भारतीय हू, क्योंकि बर्मी ज्यादातर मासाहारी होते हैं और चीनियो की तरह मेंढक, साप और कीडे भी इन के सुस्वादु व्यजन हैं" श्री गोयनका से मैं ने जानना चाहा कि क्या सभी बर्मी भारतीयों से असतुष्ट हैं या कम्युनिस्ट विचार धारा के ही? उन्होंने बताया कि भारतीयो के प्रति दुर्भावना का इतना अधिक प्रचार यहा किया गया है कि वह व्यापक हो उठा है परन्तु उन की धारणा है कि यदि भारतीय सरकार प्रयत्नशील हो तो काफी अशो में स्थिति सुधर सकती है

ऐसी बात नहीं कि सारे के सारे बर्मी भारतीयो से घृणा करते हैं और कम्युनिस्ट शासन और सिद्धातों में विश्वास रखते हैं शासन यद्यपि वामपथियो का है फिर भी बहुत से विचारशील व्यक्ति बर्मियो में से ऐसे हैं जो अपने देश की वर्तमान व्यवस्था से सतुष्ट नहीं हैं लेकिन न तो वे किसी मच से बोल सकते हैं और न यहा जनता को भावना को व्यक्त करने के लिए प्रस को ही स्वतत्रता है प्राय सभी कम्युनिस्ट देशो का यही तरीका है बातचीत में काफी समय लग गया मगर हमें यथेष्ट निष्पक्ष जानकारी मिली शाम को चार बजे हमारे जलपान का आयोजन शहर के मारवाडी स्कूल में था सब प्रकार की राजस्थानी मिठाइया थीं और सैकडो राजस्थानी स्त्रीपुरुष एकत्र थे रामकुमारजी ने मुझ से कहा कि इन्हें हम से बहुत बडी आशा है पता नहीं हम कहा तक अपनी सरकार के जरिए इन के लिए कुछ कर सकेंगे!

रूबी जनरल इश्योरेंस के श्री भट्टर ने हमारे होटल में ही रात्रि का भोज आयोजित किया था दरअसल रगून में यही सर्वश्रेष्ठ होटल है पहले तो यहा कई अच्छेअच्छे होटल थे पर अब दोएक ही बचे हैं, क्योंकि इस समय चीनियो के सिवा अन्य विदेशी यहा बहुत ही कम आते हैं भोजन में विभिन्न क्षेत्र के सौसवा सौ भारतीय आए थे, कुछ बर्मी भी थे चहलपहल अच्छी थी, मगर उन्मुक्त वातावरण नहीं था सिवा कुशल समाचार और अन्य औपचारिक बातो के दूसरी कोई चर्चा करने का साहस किसी ने नहीं किया, क्योंकि कुछ जासूस होटल के बैरो के रूप में ही आसपास टहल रहे थे वे अगरेजी के अलावा हिंदी भी समझते थे

दूसरे दिन एक बजे दोपहर को सिंगापुर जाना निश्चित था सुबह नाश्ते पर हम श्री सूग के घर गए वहा आठदस विशिष्ट भारतीय भी निमत्रित थे इन में से कइयो की जानकारी बर्मी राजनीति के बारे में अच्छी थी श्री सूग की किसी समय वकालत की अच्छी प्रैक्टिस थी सैकडो भारतीय इन के मुवक्किल थे भारत और बर्मा के पारस्परिक सबध और चीन की गतिविधि पर बातें हुईं मुझे तो ऐसा लगा कि सभवत भारत की उदार अथवा दुर्बल विदेश नीति के कारण बर्मा पर चीन का प्रभाव अधिक पडा जापानियो के बर्मा से जाने के बाद ऊ आगसान के नेतृत्व में यहा नई सरकार की स्थापना हुई थी लेकिन इन के

मंत्रिमंडल के सात सदस्यो की राजनीतिक आततायियों ने एक साथ गोली मार कर हत्या कर दी. सन १९४८ की ४ जनवरी को बर्मा अंगरेजो द्वारा स्वतंत्र घोषित हुआ. प्रथम प्रधान मंत्री बने ऊ नू. स्वाधीन बर्मा को जितनी कठिनाइया उठानी पड़ीं शायद ही अन्य किसी राष्ट्र के सामने इतनी समस्याएं रही हो. ऊ नू की कार्यकुशलता, निष्ठा और सूझबूझ के कारण धीरेधीरे समस्याएं सुलझ रही थीं. वह स्वयं समाजवादी विचारधारा के थे, पर उन का विरोध न तो निजी क्षेत्र के व्यापारउद्योग से था और न वह कम्युनिज्म के अंधभक्त थे. भारत के पंचशील के सिद्धात में उन का अटूट विश्वास था और वह हमारे स्वर्गीय प्रधान मंत्री पंडित नेहरू के अच्छे मित्रों में थे.

चीन की राष्ट्रीय सरकार की पराजय के बाद वहा कम्युनिस्ट सरकार का गठन हुआ तो विश्व की राजनीति में एक नया दौर शुरू हुआ. दक्षिणपूर्व एशिया के सभी राष्ट्रो पर इस का सीधा प्रभाव पड़ा. चीन के पंजे बढ़ने लगे. कम्युनिस्ट चीन ने बर्मा की राजनीति में अपने चिरपरिचित तरीके को अपनाया. च्यांग की हारी हुई सेना के भेस में पंचमागियो को घुसपैठ हुई. केरेन लुटेरो को उकसाया गया, सरकारी खजानो की लूट, रेल, तार व टेलीफोन को अव्यवस्थित करना और हड़तालें कराना नित्य का क्रम हो गया. भारतीयो के प्रति विद्वेष की आग भड़काई गई. इस तरह शात वातावरण भग हो गया. उद्योगव्यापार ठप्प होने लगे.

इन सब कठिनाइयो के अलावा सन १९५३ में चावल के भावो में बहुत बड़ी मंदी आ गई. चावल बर्मा के लिए सोना है. बहुत परिमाण में इस के निर्यात से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है. मंदी के कारण बर्मा की आर्थिक स्थिति डावाडोल हो गई. बर्मी रुपए की साख बाजार में घट गई. लाल चीन ऐसे ही मौके की ताक में था. उस ने दबाव डालना शुरू किया. फलतः परेशानी को हालत में अन्य उपाय न देख कर दिसबर १९५६ में चीन के साथ बर्मा का समझौता हुआ. चीन को कम्युनिस्ट कूटनीति की यह महत्त्वपूर्ण विजय थी. चीन को बर्मा में प्रत्यक्ष रूप से इंडोनेशिया की तरह हाथपैर फैलाने का अवसर मिल गया. स्थिति धीरेधीरे ऊ नू के नियत्रण से बाहर होती जा रही थी. ऊ नू ऊब गए थे. सन १९५८ में उन्हें जनरल ने विन के पक्ष में त्यागपत्र देना पड़ा. फिर भी वह इतने लोकप्रिय थे कि फरवरी १९६० के आम चुनावों में उन के दल की भारी बहुमत से जीत हुई.

कम्युनिज्म का चुनाव में विश्वास कभी नहीं रहा. लाल चीन प्रबल होता जा रहा था. बर्मा में उस के एजेंट क्रियाशील थे. २ मार्च, १९६२ को जनरल ने विन ने फौजी ताकत से बर्मा विधान सभा पर कब्जा कर लिया. इस तरह वामपंथी फौजी शासन कायम हो गया पहले तो जनता शासन के दोषों के विरुद्ध आवाज उठा सकती थी. अब यह भी बद हो गया. मौन हो कर जुल्म और अनाचार को सहते रहने के सिवा उन के सामने दूसरा रास्ता नहीं है. श्री सुंग ने बताया कि राष्ट्रपिता ऊ नू को जेल में डाल दिया गया, और आज तक वह वहीं है.

उन्होंने बताया कि भारत की तरह बर्मा भी त्योहारों का देश है. खूब शौक

से यहा के स्त्रीपुरुष उत्सव मनाते हैं—विशेषत होली या त्योहार (टेबुला) कई दिनो की तैयारी से मनाया जाता है स्त्रियो और पुरुषो की टोलिया मोटर, व ट्रक पर या पैदल सुगधित जल के छोटेबडे बरतन ले कर निकलती हैं मित्रो के घर पहुच कर एकदूसरे को सराबोर कर देते हैं दूसरे दिन नाचगाने और जलूसो का आयोजन कर के एकदूसरे से मिलते हैं दस बज रहे थे हमें बाजार से कुछ सामान भी खरीदना था श्री सूग से विदा मागी उन्होंने अनुरोध किया कि बर्मा में इन बातो की चर्चा कहीं भी न करें श्री भट्टर हमारे साथ थे उन्होंने हमें हाथी दात और आबनूस की लकडी पर नक्काशी की हुई कुछ चीजें दिखाईं हमें जापान और अमरीका के अपने मित्रो को उपहार देना था करीब १२ बजे हम एयर पोर्ट पहुचे मैं सोच रहा था कि बर्मा सरकार के दिए हुए एक दिन में भले ही बर्मा घूम न पाया, लेकिन जितना देखा और जाना उतने से कम्युनिस्ट देश और सरकार का यथेष्ट परिचय मिल गया एयर पोर्ट पर हमारे स्वागत के लिए जितने लोग आए थे उस से भी अधिक सख्या विदा करने वालो की थी सब की आखा में निराशा थी, सब की आखें नम थीं इन में से कइयो से तो महज एक दिन की पहचान हो पाई थी दुख में घनिष्टता बढ जाती है, सुख में औपचारिकता रहती है मेरी भी आखो में न जाने क्यो और कैसे दो बूदें आ गईं

विदा होने से पूर्व ही हम ने अपने पुनर्वास मत्री (महावीर त्यागी) को वहा के भारतीयों के कष्टो के बारे में लिख दिया था उन का उत्तर भी हमें बाद में जापान में मिला कि उन्होंने प्रधान मत्री (श्री शास्त्री) से इस पर बात की है और जल्दी ही किसी मत्री को बर्मा भेजा जाएगा तथा बर्मा के प्रधान मत्री श्री ने विन की भारत यात्रा के अवसर पर प्रवासी भारतीयो की समस्याओं के बारे में चर्चा कर के समस्याओ का समाधान किया जाएगा . हम ने यह समाचार बर्मा के भारतीय मित्रो को भेज दिया एक बजे हमारा विमान सिंगापुर के लिए उडा मन भारी हो गया ऐसा लग रहा था जैसे बर्मा की यह प्रथम और अतिम यात्रा है खिडकी से नीचे देखा कि नारियल और ताड के झुरमुट से बर्मा की धरती झाक रही है धीरेधीरे वह भी आखो से ओझल हो गई

•

मलयेशिया

जो एशिया में ही नहीं, विश्व में नया प्रयोग कर रहा है . . .

रंगून से चलने के बाद घंटा भर में सिंगापुर आ गया उत्सुकतावश यान की खिड़की से नीचे देखा सागर तट सोने की पट्टी की तरह लग रहा था किनारे से सटेसटे पेड़ हमारे यहां के केरल या कोचीन का सा दृश्य उपस्थित कर रहे थे मलाया प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर पर सिंगापुर का द्वीप है ऊपर से देखने पर ही अंदाज होता है कि घनी बस्ती है और बड़ा बंदरगाह है

एयर पोर्ट बड़ा अच्छा है होना स्वाभाविक भी है क्योंकि सिंगापुर दक्षिण-पूर्व एशिया का संगम स्थल है वायुयान से उतरते हुए हम ने देखा हमारे मित्र श्री सराफ और श्री माहेश्वरी मुसकराते हुए हमारी ओर आ रहे हैं कलकत्ता में चौरंगी पर 'सराफ्स कारपेट' इन का प्रतिष्ठान है यहां भी गलीचों का कारोबार काफी बड़ा है आयातनिर्यात के अच्छे व्यापारी होने के कारण व्यवसाय के क्षेत्र में इन की ऊंची साख है

ट्रैवेल एजेंट ने पहले ही से हमारे आवास की व्यवस्था होटल में कर रखी थी परन्तु सराफजी के आग्रह को हम टाल न सके, उन्हीं के मेहमान बने हम ने उन्हें बताया कि यद्यपि हमारी यात्रा का उद्देश्य विदेशों की आर्थिक व्यवस्था और स्थिति का अध्ययन करना है, किंतु व्यक्तिगत रूप से यहां के जनजीवन को जाननेसमझने के प्रति भी हमारी रुचि है मैं जानता था कि जितना समय हमारे पास है, उस में मलाया के जनजीवन की पूरी जानकारी पाना संभव नहीं सिंगापुर तो मलयेशिया संघ का एक राज्य मात्र है अतएव इस संघ के अन्य राज्यों को देखने के लिए पर्याप्त समय चाहिए श्री माहेश्वरी ने हमें बताया कि संपुट में यहां मलयेशिया के बारे में जाना जा सकता है क्योंकि कलकत्ता की तरह सिंगापुर एक ऐसा नगर है जहां मलयेशिया के सभी राज्यों के निवासी हैं

हवाई अड्डे से जाते हुए शहर देखता जा रहा था जुलाई का महीना था तीसरे पहर की धूप में जैसी परेशानी कलकत्ता में रहती है, वैसी यहां नहीं थी शायद द्वीप होने के कारण हवा नम थी शहर अच्छा लगा, रंगून से कहीं अच्छा सड़कों पर कहींकहीं स्थूलकाय सिख पुलिस की वरदी में बड़े आकर्षक लगे गुरखे सिपाही और भारतीय तो इतने दिखाई पड़े कि कभीकभी तो यह नहीं लगता था कि हम मलयेशिया के किसी शहर से गुजर रहे हैं

सिंगापुर का क्षेत्रफल सिर्फ २९२ वर्ग मील है इसे एक अंगरेज, सर

रैफेल्स ने १८१९ ई० में बसाया था. इस के पहले यह छोटा सा द्वीप, दलदल और जंगलो से भरा था. समुद्री डाकुओ का अड्डा था जो मलक्का से गुजरते हुए जहाजो पर छापा मारते थे. इन में चीनी डाकुओ के गिरोह तो बड़े ही खतरनाक माने जाते थे. मेरा ख्याल है, सिंगापुर का इतिहास निश्चय ही इस से पुराना रहा होगा, क्योकि दक्षिण में जावा, सुमात्रा, बाली आदि द्वीप और उत्तर में जोहोर, पेनांग आदि के सिवा स्याम, कंबोडिया—इन सबो में भारतीय संस्कृति और संस्कार थे—अब भी हैं. स्वयं सिंगापुर का नाम भी बताता है कि यह सिंहपुर रहा होगा.

शहर घना बसा है. प्रायः सभी पूर्वी देशो में इसी ढंग की घनी आबादी होती है, अपने देश में भी ऐसा ही है. फिर भी सिंगापुर को देखने पर यह लगता है कि शहर योजनाबद्ध रूप से बसाया गया है. सड़के साफसुथरी और चौड़ी, दोनो किनारो पर छायादार वृक्षो की कतारें और उन के पीछे मकान. यूं तो आधुनिक सभी बड़े शहर एक से लगते हैं. ट्राम बस, ट्रेन, म्यूजियम, सिनेमा, थियेटर, होटल, रेस्तरां, बाजार या ताप नियंत्रित ऊंचे बड़े मकान, यूरोप, एशिया या अमरीका के सभी शहरो में प्रायः एक से ही हैं. अतएव, शहर का आकर्षण हमारे लिए कोई खास नहीं था.

मैं कुछ और ही जानना चाहता था. मलयेशिया एशिया में ही नहीं, बल्कि विश्व में एक अभिनव प्रयोग कर रहा है. चीनी, मलायी और भारतीय—इन तीन विभिन्न राष्ट्रो या जातियो का समन्वय. स्विट्जरलैंड में जरमन, फ्रेंच और इतालियनों का सफल समन्वय हुआ है. यह सहज था, क्योकि तीनो ही पड़ोसी राष्ट्र रहे हैं, ईसाई हैं और इन में सदियो से पारस्परिक रक्त सम्मिश्रण भी होता रहा है. मलयेशिया की प्रयोगशाला में ठीक इस के विपरीत तत्त्व हैं क्योकि भाषा, संस्कृति, इतिहास, धर्म और रक्त एकदूसरे से पृथक है. देखना यही था कि अनेक को एक बनाने में इन्हे कहा तक सफलता मिली है.

अपने मेजमानो के घर पहुचा. हाथमुंह धो कर ताजा हो लिया. चायनाश्ता करते हुए मैं ने शहर के दर्शनीय स्थानो के बारे में पूछा. अन्य लोग भी हमारे आने का समाचार पा कर आ गए थे. टाइगरबाम गार्डन, रैफेल्स प्लेस, चेंगी समुद्रतट, म्यूजियम, जामा मसजिद, बदरगाह, फोर्ट कैनिंग हिल आदि नाम आए. सलाह यह भी दी गई कि मलाया के अन्य राज्य, विशेष रूप से पेनाग, केडा और जोहोर देख लिए जाए, और कहीं नहीं तो मलयेशिया की राजधानी क्वालालंपुर तो जरूर एक मित्र ने कहा कि जब आप मलयेशिया आए हैं तो यहां के घने दलदली जगल अवश्य देख कर जाइए, आप को अनेक तरह के सांप और बड़ेबड़े अजगर देखने को मिलेंगे उड़ने वाले साप भी शायद देख पाएं.

स्नेहपूर्ण वातावरण था. हम समझ नहीं पा रहे थे कि क्या देखें और क्या नहीं. समय सीमित था. इस के अलावा आर्थिक परिस्थिति के अध्ययन के लिए भी लोगो से मिलनाजुलना जरूरी था श्रीमती सराफ ने कार्यक्रम बनाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए कहा, "पुरुषो को अपने कामकाज से फुरसत कम रहती है, अतएव इन सब बातो में इन का निर्णय सही नहीं रहता. इन्हें क्या पता कि जितना समय है, उस में किन स्थानो को प्राथमिकता देनी चाहिए या

सिंगापुर में किन चीजों की खरीददारी हो यह सब काम तो हम महिलाओं का है" उन्होंने हमारे लिए कार्यक्रम बना दिया दूसरे दिन सुबह से निकलना तय हुआ अब दूसरे साथी विश्राम चाहते थे, पर मेरे लिए विदेश में आ कर घर में बैठे रहना कैद था शाम हो रही थी रात्रि के भोजन के पूर्व वापस आना था चारपांच घंटे का समय मिल गया निकल पड़ा खुद ही शहर घूमने आवागमन के लिए नएपुराने सभी तरह के साधन सिंगापुर में हैं यूरोप के बड़े शहरों की तरह ये महंगे नहीं हैं, बल्कि कलकत्ता की तरह यहां भी सवारियां सस्ती हैं साइकिलरिक्शा और टैक्सी भी बहुत हैं यात्री चाहें तो अपनी गाड़ी खुद ला सकते हैं, किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है वैसे तीसपैंतीस रुपए प्रति दिन में गाड़ियां किराए पर मिल जाती हैं

पैदल ही घूमता हुआ एक चौराहे पर आ गया भाषा के कारण यहां कठिनाई नहीं होती कुलीमजदूर तक चाहे भारतीय, मलायी या चीनी हों, अंगरेजी समझ और बोल लेते हैं चौराहे पर एक टैक्सी में जा बैठा "दी माह ना? (कहां)" मलायी भाषा में टैक्सी ड्राइवर ने कहा मैं ने उसे अंगरेजी में बताया कि भारतीय हूं डिनर टाइम के पहले सिंगापुर का जो हिस्सा चाहो दिखा दो बेचारा कुछ

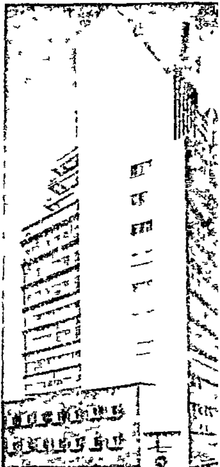

मलयेशिया की राजधानी क्वालालम्पुर का लोयान इंडिया भवन

चकित सा हो गया अपनी घड़ी देखते हुए उस ने कहा, "रफेल म्यूजियम साढ़े पांच बजे बंद हो जाता है, इसी प्रकार दूसरे दर्शनीय स्थान भी हमारा बंदरगाह बहुत बड़ा है और अच्छा भी, चलेंगे?" मेरी रुचि उस ओर न समझ कर उस ने कहा, "चलिए आप को चेंगी का समुद्रतट दिखा लाऊं कुछ दूर तो जरूर है करीब चालीसपैंतालिस मिनट लगते हैं जाने में" मैं ने स्वीकृति दे दी टैक्सी माय ब्रिज रोड से पूर्व की ओर बढ़ने लगी ड्राइवर समझदार था बातचीत से पता चला कि पढ़ालिखा है और आगे पढ़ने की भी इच्छा है बूढ़ा

बीमार बाप हैं, घर के खर्च का बोझ है, इसी लिए टैक्सी चला रहा है. रास्ते में एक देहात सा दिखाई पड़ा. यहा का रहनसहन देखना चाहता था. टैक्सी रुकवा दी. बस्ती सडक से सटी हुई थी, भारतीय गाव जैसी. मगर सफाई ज्यादा लगी. बास की चौडी पट्टियो की दीवारो पर फूस के छाजन. मलाया में मकान जमीन की सतह से कुछ ऊंचे बनाए जाते हैं. प्राय. सभी घरो के पास फूल पौधे लगे थे. नारियल के पेड तो बहुत थे. मैं ने एक हरा नारियल लाने के लिए अहमद (ड्राइवर) से कहा. इस बीच गाव के लडकेलड़कियो ने मेरे इर्दगिर्द घेरा डाल दिया. गाव वालो में कुछ दक्षिण भारत के भी थे, दोएक चीनी परिवार भी. मुखिया भी आ गया. अच्छी आवभगत की. अंगरेजी थोड़ी बहुत समझ लेता था. फिर भी अहमद ने दुभाषिए का काम किया.

उन की आपसी बातचीत में भाषा और शब्दो पर मैं गौर कर रहा था. युग, अनेक, राजा, रस, पुस्तक आदि अनेक शब्द बता रहे थे कि पिछले ५०० वर्षों के इसलामी प्रभाव में भी मलाया की धरती से भारतीय संस्कृति मिटी नहीं. यदि हमारी ओर से, विशेषत. हमारे धार्मिक नेतृवर्ग की ओर से जरा भी चेष्टा रहती तो दक्षिणपूर्वी एशियाई देशो से न केवल हमारा अविच्छिन्न संपर्क रहता, बल्कि इन्हें हम अपने अभिन्न बधु के रूप में पाते. दुर्भाग्य यह रहा है कि हमारे जिन पुराणकार या शास्त्रकारो ने पुराण और शास्त्रो में यह बताया कि भारतीय जलयान द्वीपद्वीपातरो में व्यापार के लिए जाते थे, चक्रवर्ती सम्राट और व्यापारियो का शंखनाद वहा गूजा करता था उन्हीं पुराणकारो के उत्तराधिकारी पडितो और पुरोहितो ने विदेश यात्रा और समुद्र यात्रा को निषिद्ध करार दिया और वह भी इस हद तक कि जातिच्युत करने का विधान कर दिया परिणाम यह हुआ कि हमारी प्रेरणा कुंठित हो गई और उत्साह ठडा पड गया. इन देशो से हमारा व्यापारिक सपर्क टूटा, रक्त सबध क्षीण हुआ और वहा हमारी संस्कृति की छाया तक धूमिल होती गई. मुखिया से बातें करने पर पता चला कि मलयेशिया के मलायियो का धर्म इसलाम है, चीनी बौद्ध हैं और भारतीय हिंदू. धर्म को ले कर इन में आपस में कभी झगडा नहीं होता. उस ने यह भी बताया कि उन के यहा रामायण और महाभारत के नृत्य रूपक भी लोकरजन के लिए होते रहते हैं.

मैं हैरान था. हिंदुस्तान के मुसलमान तो रामायणमहाभारत का नाम तक नहीं लेते. वे अपने को खास अरब, तुर्क, ईरान और मुगलो की औलाद समझते हैं और सुदूरपूर्व के इस मुसलमानी कौम और देश में रामलीला, कर्ण, भीष्म, युधिष्ठिर के चरित्र. इन के नाम भी परमेश्वरी, देवी, कर्ण, सुमित्र आदि. नारियल के दाम चुकाने के लिए पैसे निकाले, लेकिन गाव वालो ने लिए नहीं. समुद्रतट देखने नहीं गया, क्योंकि वहा मेरे लिए कोई नवीनता नहीं थी फिर रात भी हो रही थी. अतएव शहर के विभिन्न अचलों का चक्कर लगाता हुआ घर वापस आ गया.

रात्रि के भोजन पर वहा के कई विशिष्ट भारतीय नागरिक आए. उन से पता चला कि मलयेशिया सघ में व्यापार को सुविधा समान रूप से सभी को है. सिंगापुर में तो बहुत ही अधिक सुविधा उपलब्ध है, क्योंकि हागकाग

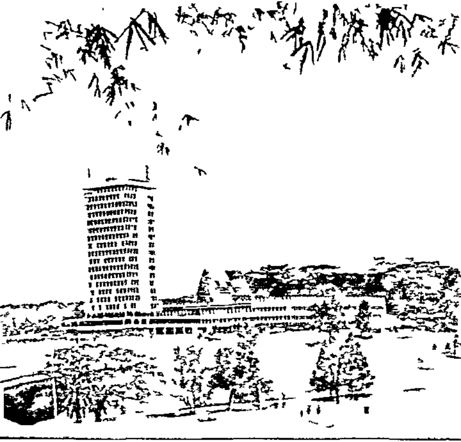

राजनातिक गतिविधिया का कद्र मलयशिया का ससंद भवन

और जिब्राल्टर की तरह यह भी एक मुक्त बदरगाह (फ्री पोट) है आयातनिर्यात पर यहा टक्स नहीं और न विक्रय पर ही कर ह आयकर बहुत ही कम है सब से बडी बात तो यह कि सरकार सब प्रकार से सहयोग दन को तत्पर रहती ह लेकिन उन लागों का लग रहा था कि चानियों के बहुसख्यक होन क कारण सिगापुर अदूर भविष्य में मलाया सघ स सभवत पृथक हो जाएगा बाद में हुआ भी यही

दूसर दिन सुबह साड नौ बज ससद भवन दसन जाना था म खूब सवर उठा अकला ही घूमता हुआ टाइगर बाम गाडन जा पहुचा टाइगर बाम सिरदद का मशहूर दवा ह उसी के नाम पर मालिका न यह सुरम्य और विशाल उद्यान बनाया ह बाग में प्लास्टर का बनी सुदर झाकिया ह गुफाए और फूलों क कुजों स सजावट निखर आई ह टाइगर बाम का एक बगीचा हागकाग में भी हम न बाद म दखा शहर में एक रमणीय स्थान बन जान क साथसाथ उन का दवा का बड रूप में विज्ञापन भी हो जाता ह

साढ़ नौ बज हम ससद भवन पहुच गए उन दिनों सत्र चालू नहीं था लेकिन स्पीकर न दोचार सदस्यों को हम स मिलान क लिए बुलवा लिया था

इन का व्यवहार बहुत सौजन्यपूर्ण था. मैं लक्ष्य कर रहा था कि बर्मा और मलयेशिया में कितना अंतर है. यहा के प्रधान मत्री, तुकु अब्दुल रहमान का स्नेह हमारे देश के प्रति प्रारंभ से ही रहा है. उन के साथियो और देशवासियों को भी हम ने इसी भावना में ओतप्रोत पाया. औपचारिक परिचय और चायपान के उपरात माननीय स्पीकर महोदय से मलयेशिया की राजनीति, अर्थनीति एवं इतिहास इत्यादि पर चर्चा हुई. स्नेहपूर्ण निःसंकोच वातावरण कुछ ऐसे ढग का था कि यह नहीं मालूम हुआ कि हम विदेश में बैठे हैं और विदेशियो से बातें कर रहे हैं.

मलयेशिया अथवा मलाया सघ का इतिहास हमारे यहा से बहुत कुछ मिलता-जुलता है. भारत की तरह यहा भी राजाओ और सुलतानों का शासन रहा है और पृथकपृथक राज्य रहे हैं. इन में आपस में बराबर झगड़े तथा युद्ध होते रहे हैं. अपने प्रभुत्व के लिए राष्ट्रीयता की उपेक्षा कर विदेशियो का सहारा लेने की प्रवृत्ति यहा के सुलतानों में भी थी. फलत. विदेशियो का प्रभाव यहा बढता गया. पहले पुर्तगाली आए, बाद में डच और सब के अत में अंगरेज. अगरेजो की कुशल कूटनीति के सामने पुर्तगाली और डच टिक नहीं पाए. संपूर्ण मलाया में एक सार्वभौम शासन न रहने के कारण अंगरेजो को अपने पैर जमाने में सुविधा हुई. व्यापारी अगरेज शासक बने और जैसे कि गुलाम राष्ट्रो के प्रति होता है, वही हुआ. ब्रिटेन ने शोषण किया. टिन, रबर, नारियल और मसाले के व्यापार से ब्रिटेन को अपरिमित लाभ हुआ.

एशिया की राजनीति के मच पर जापान प्रथम महायुद्ध के बाद आया अपने बढते हुए उद्योगों के लिए उसे कच्चे माल की जरूरत पडने लगी और माल बेचने के लिए बाजार चाहिए था. जापान की दृष्टि दक्षिणी एशिया के देशो पर पड़ी. परतु यहा ब्रिटिश माल के आयात के लिए दूसरे देशो से आयात कर कम था और दूसरी अनेक प्रकार की सुविधाएं भी थीं, इसलिए जापान के पैर पूरी तौर से नहीं जम सके. द्वितीय महायुद्ध छिडने पर सन १९४२ में जापान ने मलाया पर भी हमला किया. जिस मलाया से अरबों का लाभ उठाया, देश को लूटा और चूसा उसे ब्रिटेन ने बिलकुल असहाय छोड दिया जापानियों का अधिकार यहा तीन, साढ़े तीन वर्षों तक ही रहा. किंतु इतने ही दिनो में उन्होंने जो कुछ किया वह वर्णनातीत है. अपने कारखानों के लिए टिन, रबर और कच्चे माल ले जाते रहे उस के सैनिक अपने तनमन की पाशविक भूख मलाया में मिटाते रहे. साम्राज्यवादी सभी एक से हैं चाहे यूरोप के हो या एशिया के.

जापानियो की हार के बाद अगरेज फिर आ गए. मगर जीत के बाद भी अब विश्व में इन की साख घट चुकी थी. इन की गिनती द्वितीय श्रेणी की शक्तियो में हो गई थी. स्वय अगरेज भी अपने जर्जर देश की समस्याओ में उलझे थे चीन में च्याग काई शेक की सरकार को हटा कर कम्युनिस्टो ने लाल चीन बना लिया था. प्रथम महायुद्ध के बाद एशिया के देशो का नेता बना था जापान. द्वितीय महायुद्ध के बाद एशिया और अमरीका के देशों का नेता बनना चाहता था लाल चीन.

लाल चीन के पचगामी सर्वत्र क्रियाशील थे उत्तरी वियतनाम, बर्मा, मलाया और इंदोनेशिया में विशेष रूप से युद्ध जर्जरित ब्रिटेन के लिए साम्राज्य को कायम रखना बोझिल हो रहा था भारत, बर्मा और लका को स्वतन्त्रता मिल चुकी थी परतु अभी भी मलाया इन के अधीन ही था मलाया में कम्युनिस्टो ने गुरिल्ला तरीका अपनाया तोडफोड, हत्या, डकैती करने वालों ने अपने को मुक्ति सेना बतलाया इसी दौरान में अक्तूबर १९५१ के दिन ब्रिटिश हाई कमिश्नर सर हेनरी की हत्या कर दी गई अगरेजो की आखें खुलीं, उन्होने सुरक्षा के साधन मजबूत किए मलाया को स्वाधीनता देने का वादा किया सन १९५५ में आम चुनाव हुआ तुकु अब्दुल रहमान प्रधान मत्री बने विभिन्न राज्यो पर फिर भी ब्रिटेन का फौजी शासन रहा पर साम्यवादी चीन को चैन कहा? मलाया में चीनी काफी सख्या में है किसी न किसी बहाने वे यहा बसने के लिए बडी सख्या में प्रति वर्ष आते ही रहते हैं इसलिए यहा की राजनीति और उद्योगव्यापार पर उन का बहुत प्रभाव है हालत यहा तक है कि मलायी अपने ही देश में विदेशियो की तरह बनते जाते हैं सिंगापुर में तो यह स्थिति विशेष रूप से देखने में आई हमारे देश में कशमीर में छद्मवेशी पाकिस्तानियों के कारण हमें भी बहुत कुछ ऐसी स्थिति का सामना करना पड रहा है लाल चीन के षडयत्रो से लोग तग आ गए थे और उन के आए दिन के कुकृत्यो से मलाया निवासियो के मन में उन के प्रति घृणा हो गई थी

सन १९५६ में साम्यवादी दल के मुख्य सचिव की हत्या यहा के किसी नागरिक ने कर दी यहा के चीनियो ने बडा शोरशराबा मचाया अगरेज चीन के साथ विवाद में नहीं पडना चाहते थे हागकाग उन के हाथ से निकल जाने का भय था इसलिए सन १९५७ में मलाया को पूर्ण स्वाधीन घोषित कर इन्होंने अपना पिंड छुडा लिया त्रेंगानु, कलातन, पेनाग, सेलोगोर, जोहोर और सिंगापुर आदि बारह राज्यो को मिला कर मलयेशिया बना स्वाधीनता के साथसाथ अगरेजो से विरासत में मिली अशाति और अव्यवस्था देश की आर्थिक व्यवस्था जीर्ण और जर्जर थी सौभाग्य की बात थी कि इस नए राष्ट्र को तुकु अब्दुल रहमान जैसा व्यवहारकुशल, 'राजनीतिज्ञ और निपुण शासक मिला

स्वाधीनता के बाद तुकु ने विश्व के राष्ट्रो से मैत्री और सदभावना की नीति अपनाई देश में फैली अराजकता का दमन किया एव मलाया में राष्ट्रीय भावना की चेतना जाग्रत की लाल चीन समझ गया उस की दाल मलयेशिया में नहीं गलेगी मलयेशिया में उस की मुक्ति सेना का नकाब उतर चुका था पडोस के इंदोनेशिया की राजनीति में अपना प्रभाव बढा कर वह उसी के जरिए धमकियां देने लगा उत्पात भी शुरू हुए ठीक पाकिस्तानियों की तरह इंदोनेशिया कहीं घुसपैठिए भेजता तो कहीं सेना उतार देता कभी चीनिया को भडकाता तो कभी मलायियो को इन सब के बावजूद तुकु अब्दुल रहमान ने चीनिया के साथ अपने देश में भेदभाव नहीं रखा उन्हें समान राष्ट्रीय अधिकार दिए इस मुलाकात के बाद हमें हांगकाग बैंक के मैनेजर से मिलना था श्री सराफ के साथ हम उन के यहा गए अपने कार्यालय में वे हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे इन रा

मलयेशिया की राजधानी क्वालालपुर—वहा की प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है

हमें मलयेशिया की आर्थिक स्थिति और उस के क्रमिक विकास पर चर्चा करनी थी सन १९५७ में मलाया स्वाधीन हुआ एव १९६३ में मलयेशिया सघ बना इस छोटी सी अवधि में मलयेशिया ने तुकु के नेतृत्व में जितनी प्रगति की है वह प्रशसनीय है • टिन, रबर, नारियल, चावल, चाय और मसाले उस की सपदा हैं इसी कारण मलयेशिया की आर्थिक अवस्था सुदृढ बन सकी है, अन्यथा एक करोड की आबादी का यह छोटा सा देश इडोनेशिया के सामने कैसे टिकता? इडोनेशिया इस से दस गुना बडा है और उस के पीछे शक्ति रही है दुर्धर्ष लाल चीन की

मलयेशिया १,७०० करोड रुपयो का निर्यात करता है और १,९२० करोड रुपयो का आयात इस प्रकार उसे प्रति वर्ष २२० करोड रुपयो की विदेशी मुद्रा अधिक खर्च करनी पडती है फिर भी जिस तेजी से वहा औद्योगीकरण हो रहा है, आशा है, शीघ्र आत्मनिर्भर हो जाएगा कृषि और खनिज उद्योगो में इस की प्रगति उत्साहवर्धक रही है

मलयेशिया में आयातनिर्यात और विक्रय पर टैक्स नहीं है आयात भी कम है, इसलिए विदेशो के व्यवसायी और उद्योगपति यहा पूजी लगाने के लिए आकर्षित होते हैं नए उद्योगो के लिए सरकारी आयोगो और बैंको से तरहतरह की सुविधा दी जाती है, उचित ब्याज पर ऋण भी सरलता से मिल जाते हैं इस प्रकार विदेशी मुद्रा का स्रोत धीरेधीरे बढ रहा है और इस के साथसाथ देश में उद्योग भी बढ़ते जा रहे हैं सन १९६३ में अकेले सिंगापुर के बदरगाह में ८३० लाख टन का आयातनिर्यात हुआ और यहां ३८ हजार सातसौ जहाज आए इन की तुलना में हमारे देश के प्रमुख बदरगाह कलकत्ता और बबई के आकड़े विचारणीय हैं हमारे इन दोनो बदरगाहो की क्षमता काफी अधिक है और ये बड़े भी बहुत

हैं फिर भी पिछले वर्ष में इन दोनों में केवल चार हजार जहाज ही खाली हुए हैं.

हमारे यहां आएदिन हड़ताल और 'काम कम करो' की नीति से अंतरराष्ट्रीय जहाजरानी में हमारी प्रतिष्ठा को काफी नीचा देखना पड़ा है. विदेशी कंपनियां अपने जहाज भेजने में हिचकती हैं. हमें हर साल करोड़ों रुपए डेमरेज के भरने पड़ते हैं और किराया ज्यादा लगता है, यह अलग. मलयेशिया हम से ४५ गुना छोटा देश है लेकिन इस का निर्यात हम से कहीं ज्यादा है. अब तक जितने देश देख आया, उन में पाकिस्तान को छोड़ कर अन्य सब की स्थिति हम से कहीं अच्छी है.

दोपहर का एक बज रहा था. हम घर वापस आए, भोजन के उपरांत तीन बजे तक विश्राम कर शहर घूमने निकले. रेफेल्स प्लेस वहां का कनाट प्लेस या चौरंगी है. दुनिया के हर कोने की चीजें यहां के स्टोर्स में भरी पड़ी थीं. कीमती जवाहरात, उम्दा कपड़े, टाइपराइटर, कैमरे और घड़ियां. हमारे देश की तुलना में काफी सस्ती और अच्छी थीं. यहां के बाजार में अधिकतर दुकानदार चीनी और मुसलमान हैं. हम ने यहां की बड़ी मसजिद देखी. यह दिल्ली की जामा मसजिद की तरह भव्य नहीं है. चीनी मंदिरों में बुद्ध की बड़ी सुंदर प्रतिमाएं हैं. शिव और हनुमान के मंदिर भी देखे. सुनने में आया कि इसी प्रकार छोटे-छोटे और भी कई मंदिर हैं. लेकिन ऐसा लगा कि हिंदू विदेशों में अपने संस्कार और संस्कृति के प्रति उदासीन से रहते हैं. वैसे आज भी विश्व में भारतीय अथवा हिंदू दर्शन और विचारधारा के प्रति श्रद्धा है. यहां काफी संख्या में भारतीय स्थायी रूप से हैं, सपन्न हैं और प्रतिष्ठित भी. सामूहिक प्रयास से भव्य गिरजे और मसजिदें यदि बन सके तो क्या मलाया के भारतीयों की श्रद्धा और चेष्टा से विशाल मंदिर नहीं बन सकता था!

रात्रि के भोजन पर सिंगापुर के पुलिस कमिश्नर श्री सरदारसिंह, नगर निगम के मेयर तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से भेंट हुई. सरदारसिंह खुशमिजाज लगे. वह भारतीय सिख हैं पर अब यहां के नागरिक हो गए हैं. यह जान कर ताज्जुब हुआ कि मलयेशिया की सेना में भारत के गुरखे, नेपाली और सिख भी हैं. इस से पता चलता है कि भारतीयों के प्रति यहां कितना विश्वास है.

सिंगापुर की शाम के बारे में चर्चा चली. पुलिस की निगरानी कड़ी है. फिर भी हर बड़े शहर और बंदरगाहों की वारदातें यहां भी होती रहती हैं. चीन से काफी संख्या में कम उमर की लड़कियां आ कर बिकती हैं. इस के अधिकांश व्यापारी भी चीनी हैं. ये लड़कियां चकलों या वेश्यालयों में घृणित जीवन बिताती हैं. मुसलमानी आदत और रिवाज के कारण इन में से कुछ हरमों में दाखिल हो जाती हैं. सुनने में आया कि इंडोनेशिया के बाली द्वीप से भी लड़कियां यहां भगा कर लाई जाती हैं. इन लड़कियों से नाचगाने का काम लिया जाता है. होटलों में विदेशियों के तथा विशेष रूप से नाविकों के पास लड़कियां पहुंचाई जाती हैं. कलकत्ता की तरह अवैध व्यापार में यहां भी चीनी और पाकिस्तानी तत्त्व अधिक क्रियाशील हैं.

हमें अगले दिन दो बजे हांगकांग के लिए रवाना होना था. मेहमानों के

साथ अन्य आमंत्रित लोगों ने भी आग्रह किया कि मलाया के रबर की बागवानी और जंगलों की सैर के लिए रुक जाए हम रबर की बागवानी मद्रास में देख चुके थे, अतएव विशेष रुचि इस ओर नहीं थी प्रभुदयालजी ने कहा कि हमारे असम के काजीरंगा के जंगल को देखने के बाद यहा के जंगलो की विशेषता रह नहीं जाती हमें आर्थिक अवस्था और उद्योग विकास की जानकारी लेनी थी, वह मिल गई ऊपर से मिला यहा के लोगो का स्नेह अब जगलो में और दलदलो में भटकने की इच्छा नहीं है

श्री माहेश्वरी क्वाला लपुर जा रहे थे उन्होंने आग्रह करते हुए कहा, 'सिंगापुर तो कलकत्ता, बबई की तरह है, लेकिन जब तक आप वाराणसी या दिल्ली न देख लें तब तक भारत देखना नहीं कहा जा सकता इसी प्रकार यहा के क्वाला लपुर और मलक्का को न देखने पर मलयेशिया का भ्रमण अधूरा माना जाएगा" हम ने उन्हें चार्ट दिखा दिया जिस में अगली यात्रा की सीट तिथिवार सुरक्षित थी फिर भी वादा करना पडा कि अगली यात्रा में मलाया भ्रमण का कार्यक्रम अधिक दिनों का अवश्य रखेंगे

दो बजे दिन को एयर पोर्ट पहुचे विदा करने के लिए कुछ लोग आए उल्लास पूर्ण वातावरण में विदा लेने में जिस आनद का अनुभव हुआ, वह रगून से सर्वथा भिन्न था स्वस्थ एव प्रसन्न मुद्रा में लोग हाथ हिला कर विदाई दे रहे थे और हम धीरेधीरे वायुयान की सीढियो पर चढ रहे थे

हांगकांग

आबादी में कलकत्ता से आधा, पर व्यापार मे ?

बहुत दिनों पहले फोर्ड मोटर का एक विज्ञापन देखा था, 'जब तक फोर्ड न देख लो, अपने पैसे जेब में रखो' हो सकता है उस विज्ञापन में अत्युक्ति हो पर एक बात मैं निश्चयपूर्वक कहूगा कि यदि आप की यात्रा में हागकाग शामिल है तो आप अन्य कहीं भी किसी प्रकार की वस्तु न खरीदें, जब तक हागकाग न पहुच जाए हमारा विश्व भ्रमण पूर्व से शुरू हुआ था, इसलिए सिंगापुर के बाद सीधे हागकाग गए रगून और मलाया में, सयोग से हमें कुछ खर्च नहीं करना पडा क्योकि इन स्थानो पर हम अपने भारतीय मित्रो के अतिथि थे हागकाग में भी ऐसा ही अवसर मिल गया

हम तीनों के पास १३ हजार रुपए के चैक थे और आखो के सामने हागकाग और कौलून की बडीबडी दुकानें थीं, जिन में सभी देशों की सब तरह की छोटीबडी चीजें भरी पडी थीं सस्ती और अच्छी इतनी कि मन यही होता था कि सारे पैसे यहीं खर्च कर दें और सभी चीजो को बटोर कर देश ले चलें, पर अभी तो बहुत से देशो की यात्रा बाकी थी और चालीस दिन बिताने थे

मन को समझाया सतोष कर कुछ फाउटेन पेन, एक दूरबीन, अलार्म वाली एक हाथ घडी और दोचार फुटकर चीजें खरीदीं तेरहचौदह रुपए में माउट ब्लैक, पार्कर और शेफर्स के पेन मिले जो अपने देश में तो साठसत्तर से किसी भी हालत में कम नहीं मिलते हैं विश्व प्रसिद्ध निर्माता जेराड पेरागुआ की अलार्म हाथ घडी की कीमत लगी १६० रुपए, बाद में स्विटजरलैंड में, जहा यह बनती है वहा कपनी की अपनी दुकान में इस की कीमत बताई थी २३० रुपए हम ने हागकाग में इस के मूल्य का उल्लेख किया तो उन्हाने बताया विदेशो में हम निर्यात कम दाम पर करते हैं ताकि देश को विदेशी मुद्रा अधिक से अधिक मिले हागकाग की तो बात ही और है वहा न तो आयातनिर्यात पर कर है और न अन्य किसी प्रकार का प्रतिबंध आयकर भी बहुत कम है, इसलिए अन्य कोई भी देश इस से कम दाम में माल नहीं बेच सकता

यहां कर्मचारियो के लिए काम का समय निर्धारित नहीं है दुकानें सुबह नौ बजे खुल जाती है और रात में बारहएक बजे तक खुली रहती है बाजार घूमते हुए हम ने देखा कि एक मोहल्ले में लगभग सौ दुकानें तो केवल जवाहरात की है जिन में खूबसूरत और कीमती भातिभाति के जडाऊ जेवर सजे हैं इसी

प्रकार कपड़, बिजली के सामान और नाना प्रकार की शौक की और रोजमर्रे की चीजें, जो शायद भारत, ब्रिटेन, फ्रांस या अमेरिका में भले ही न मिलें, हांगकांग में जरूर और आसानी से मिलेंगी. बेईमानी और ठगी यहां भी है. जापान के सिवा प्रायः सभी पूर्वीय देशों में यह रोग व्याप्त है. हमें बताया गया कि यहां के बहुत से चीनी दुकानदार प्रसिद्ध वस्तुओं के नाम और डिजाइन की नकल कर उन्हें बेचा करते हैं. हांगकांग में हमारे आवास की व्यवस्था थी इंपीरियल होटल में. इस के मालिक भारतीय करोड़पति श्री हीरालाल सिंधी हैं जो यहां बस गए हैं. उन के यहां कई बड़ेबड़े स्टोर्स हैं. इन्हीं में हम दोनों ने अपने सूट सिलाए. पूरा सूट ६ घंटों में तैयार. टेरेलीन का कपड़ा और सिलाई, कुल मिला कर केवल १८० रुपए प्रति सूट.

ग्राहक और दुकानदार में मोलभाव इटली से ही शुरू हो जाते हैं. वहां की अपनी यात्रा के संस्मरण में मैं ने इस का उल्लेख किया है. पर ज्योंज्यों हम पूरब की ओर बढ़ते हैं, मोलभाव भी बढ़ता जाता है. अपने देश में भी हमें इस का अनुभव है. चीनी दुकानदारों से भी कलकत्ता में चीजें खरीदने का अवसर बहुतों को मिला होगा. ये इस कला में बहुत प्रवीण होते हैं. हांगकांग में अधिकांश दुकानदार चीनी हैं. इन से मोलभाव करने में बड़ा मजा आता है. १०० रुपए की चीज का दाम आप ४० रुपए से शुरू कर सकते हैं. कई बार वह कान पर हथेलियों को रख कर सिर हिलाएगा, सामान अंदर रख देगा. आप भी कई बार दुकान की सीढ़ियों से उतरेंगे. अंत में वह महज इसलिए आप के हाथ सामान बेच देगा कि आप को चीज की पहचान है, आप विदेशी हैं, कहीं आप को दूसरा विक्रेता कोई खराब चीज न बेच दे.

हांगकांग का क्षेत्रफल है करीब ३९१ वर्ग मील. यानी हावड़ा से डायमंड हार्बर और सियालदह से श्रीरामपुर तक का विस्तार. आबादी है ३३ लाख, कलकत्ता से लगभग आधी जिन में ३२,५०,००० चीनी हैं और शेष ५०,००० दूसरे देशों के हैं. भारतीय कम संख्या में जरूर हैं, पर व्यापार और अन्यान्य क्षेत्रों में इन का अच्छा प्रभाव है. सड़कों पर सिख और गुरखा पुलिस भी दिख जाती है. व्यवसाय के क्षेत्र में सिंधी अधिक हैं. उस के बाद क्रमशः पंजाबी, गुजराती और राजस्थानी. बंदरगाह और व्यवसायी नगर होने के कारण यहां का जीवन बहुत व्यस्त रहता है.

आज के युग की विचित्र नगरी है हांगकांग. चीन में है पर चीन की नहीं. आबादी चीनियों की है पर शासन चीनी नहीं, ब्रिटेन का है. इस का एक भाग कौलून चीनी महादेश से सटा हुआ है और दूसरा अंश विक्टोरिया सागर के बीच है. चीन का प्रसिद्ध बंदरगाह कैंटन यहां से ९० मील है और चीन की सीमा केवल ३० मील. आज चीन बाहर वालों के लिए लौह दीवार है फिर भी हांगकांग वह खिड़की है जिस से चीन की झांकी मिल जाती है. पेकिंग की तरह हांगकांग ऐतिहासिक नगरी कभी नहीं रही. इस के बारे में केवल इतना उल्लेख मिलता है कि समुद्री डाकुओं का यह अड्डा था और वे इस की पहाड़ियों में बेखटके बसेरा बनाए रखते थे. सन १८४१ के अफीम युद्ध के बाद इस उजाड़ पहाड़ी

क्षेत्र को ब्रिटेन ने सन १९९९ तक के लिए पट्टे पर चीन से लिया चीनियों ने समझा चलो, विदेशियों का पैर अपने यहां से उखाड़ दिया पर वास्तविकता यह रही है कि घर की ड्योढ़ी पर ब्रिटेन का अधिकार जम गया ब्रिटेन को प्राकृतिक बंदरगाह मिला और सामरिक महत्वपूर्ण स्थान यही कारण था कि जब तक ब्रिटेन की प्रथम या द्वितीय शक्ति रही उस ने चीन सागर और इस में संपूर्ण क्षेत्र पर अपना नियन्त्रण रखा यहां शुरू से ही एक ब्रिटिश गवर्नर के द्वारा शासन संचालित होता रहा है

जो भी हो, आज ब्रिटेन के पंजे ढीले हैं प्रशांत और भारत महासागर के उस के उपनिवेश स्वाधीन हो चुके हैं. लाल चीन रक्त चक्षुओं से चारों ओर देख रहा है और अपने नखों को बढ़ा रहा है उस की शक्ति का परिचय भी तिब्बत, कोरिया और वियतनाम में मिल चुका है, पर हांगकांग आज भी अछूता है आश्चर्य तो जरूर होता है कि मगरमच्छ की दाढ़ों में आखिर छोटी चिरैया कैसे बैठी है! स्वार्थ दोनों का है मगरमच्छ दांत साफ कराता है चिड़िया के लिए सुरक्षित स्थान है चीन के लिए इस पर कब्जा करने में शायद दो घंटे ही लगें पर उन्हें भी अपने इतने विशाल देश के आयातनिर्यात का एक सधा हुआ माध्यम चाहिए आज विश्व में प्रभाव है रूस और अमेरिका का चीन साम्यवादी है पर रूसी गुट में नहीं है विश्व के व्यापार पर प्रभाव है अमेरिका का, जो चीनी साम्यवाद का जानी दुश्मन है संयुक्त राज्य परिषद भी फारमोसा के चीन को मान्यता देता है, लाल चीन को नहीं इसलिए अमेरिका का उस के साथ व्यापार करने का तो सवाल ही नहीं रहता

दूसरी तरफ ब्रिटेन सदियों से ही व्यापारी पहले रहा है—दूसरा कुछ पीछे उस का व्यापार बढ़ता है तो सब सिद्धांतों को ताक पर रख देता है हांगकांग का यह ब्रिटिश उपनिवेश चीन के लिए सारे प्रतिबंधों का बंधन खोल देता है हांगकांग की आढ़त दोनों के स्वार्थ की पूर्ति करती है चीन में विदेशियों के प्रवेश पर बड़ी बंदिशें हैं वहां जाना नामुमकिन है पर हांगकांग के चीनी इच्छानुसार जब चाहे वहां आतेजाते रहते हैं

हांगकांग ऐतिहासिक नगरी तो नहीं है, पर इस के विकास की पृष्ठभूमि में अपनी एक कहानी है जो आज नहीं तो कल के इतिहास में जरूर शामिल की जाएगी प्रारंभ में यह चीन को अफीम भेजने का एक अड्डा था डाकू, चोरउचक्कों का बसेरा भी था आस्ट्रेलिया और कैलिफोर्निया में सोने का पता लगते ही वहां की खानों के लिए चीनी कुलियों के निर्यात का कारबार यहां खुल गया भारत से भी तो उस समय अंगरेजों ने और फ्रांसीसियों ने फिजी, मारिशश, गिनी और पूर्वी अफ्रीका में परमिट पर लाखों भारतीयों को भेजा था सन १९४१ में जापान ने जब इस पर अधिकार जमाया उस समय तक विश्व के बड़े बंदरगाह और व्यापार केंद्र के रूप में यह प्रतिष्ठित हो चुका था उन दिनों यहां प्रति वर्ष चार करोड़ टन माल केवल समुद्री मार्ग से आता था हालैंड और बंबई की तरह यहां भी समुद्र से जमीन ली गई है हमारे विमान जिस कैटेक हवाई अड्डे पर उतरा, वह समुद्र से ली गई एक सकरी पट्टी पर बना था

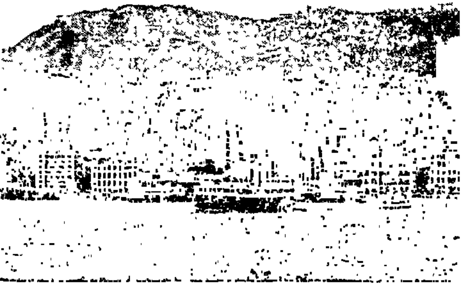

जहा कभी समुद्री लुटेरा का अड्डा था वहा आज बडेबडे व्यापारियो की गगनचुबी इमारते हैं

हम ने बर्मा और मलाया में सुना था कि पिछले महायुद्ध में जापानी जहा भी गए, खूब लूट मचाई और जब हारने लगे तो बरबादी की यही कारण था कि इन देशा की जनता ने भी बाद में जापानियो का विरोध कर उन्हें खूब परेशान किया लेकिन हागकाग इस का अपवाद है जापानियो के अधिकार में यह करीब पौने चार वर्ष तक रहा है वे चाहते तो हागकाग को भी अन्य स्थानो की तरह तहसनहस कर सकते थे, पर वहा की मौज, मस्ती और ऐयाशी ने इस को बचा लिया जापानी सैनिकों और अफसरो को वहा सुदरियो की बाहे और शराब से छलकते प्याले मिले अपने को वे इन्हीं में डुबो बैठे और हागकाग नष्ट होने से बच गया

चीन में जब साम्यवादी शासन हुआ तो वहा से दस लाख से भी अधिक नागरिक शरणार्थी के रूप में हागकाग आ गए जहा भी जगह मिली बस गए आज हालत यह है कि इस का विकास योजनाबद्ध न हो पाया एक ओर विक्टोरियन शैली की इमारतें हैं तो दूसरी ओर पहाड की ढाल पर झोपडी और झुग्गिया हैं इन में कहीं गत्तों की छत है तो कहीं जग लगे टूटे कनस्तरो की दीवाल और छाजन है चींटियो की तरह भरे हैं चीनी इन में गरीबी, तगी और बीमारी इन के जीवन के साथ है, जैसे सबकुछ इन्हे बरदाश्त हो गया हो न पानी की व्यवस्था है न सफाई की झोपडिया ऐसी आडी ढलान पर हैं कि दग रह जाना पडता है, जरा सा पैर फिसले तो जान पर आफत हागकाग तूफान के क्षेत्र में है, जब बडा तूफान आता है इन में रहने वालो को जान को शामत आ जाती है इस की झाकी 'दी वल्ड आफ सूइजविग' नाम की फिल्म में देखने को मिली थी हम अपने देश को

आर्थिक विषमता अत्यधिक समझते थे, पर यहां जो रूप देखा उस से यही कहूंगा कि विश्व में शायद ही किसी एक स्थान पर अमीरी और गरीबी का ऐसा रूप और अंतर एक साथ दिखाई पड़े

हालीवुड स्ट्रीट यहां की प्रसिद्ध सड़क है इस महल्ले में जमीन का मूल्य है पचीस हजार रुपए प्रति गज तक यानी एक सौ पचहत्तर रुपए प्रति इंच और मासिक किराया है पचीस रुपए प्रति फुट न्यूयार्क और शिकागो में भी जगह इतनी महंगी नहीं किराया नियंत्रण कानून यहां नहीं है इसलिए जब मन चाहा, किराया बढ़ा लिया जाता है हमें यहां के यू को बैंक के मैनेजर ने बताया कि उन के आफिस का मासिक किराया आठ हजार रुपए हैं, पर अब मकान मालिक चालीस हजार रुपए मांगता है

छोटे से व्यापारिक बंदरगाह का बजट देख कर आश्चर्य होता है सन १९६०-६१ में यहां के खर्च का बजट करीब साढ़े सोलह करोड़ अमरीकन डालर (सवा सौ करोड़ रुपए) का था यानी हमारे बजट का ५ प्रति शत, जब कि आबादी केवल दो तिहाई प्रति शत ही है यहां के आयातनिर्यात के आंकड़े देख कर भी चकित रह जाना स्वाभाविक है इस छोटी सी जगह का सन १९६० में आयातनिर्यात था, एक हजार दो सौ पचास करोड़ अर्थात हमारे यहां से करीब आधा इसी से यहां की समृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है

हांगकांग की और भी उन्नति संभव थी, यदि यहां स्थानाभाव न होता उद्योगधंधे बढ़ सकते थे इस के अलावा जब जोरों का तूफान आ जाता है तो इस से बहुत बड़ी हानि पहुंचती है १९०६ के तूफान में बंदरगाह में खड़े ६० बड़ेबड़े जहाज और लगभग २४०० छोटछोटे बोट डूबे या ध्वस्त हो गए इस तूफान में १० हजार आदमियों की जानें गईं फिर सन १९२३ में १३० मील की गति का एक तूफान आया चूंकि, इस बार लोग पहले से सचेत थे इसलिए जनहानि तो नहीं हुई पर माली नुकसान काफी पहुंचा अब तो विज्ञान के साधनों के कारण सूचना समय पर मिल जाती है और, यथासाध्य पहले ही से सावधानी बरती जाती है

यहां चीनियों की अपने ढंग की छोटीछोटी दुकानें, बड़ेबड़े स्टोर्स से भिन्न हैं इन के महल्ले भी एक तरह से अलग हैं इन में गया और जो कुछ नजारा देखा, चक्कर आ गया रास्ते में दुकानें लगी हैं ऊपर से नीचे कपड़े के साइन-बोर्ड टंगे हैं जिन में चीनी अक्षरों में जाने क्याक्या लिखा है बच्चे सड़कों पर दौड़ रहे हैं लोग जोरजोर से बोल रहे हैं औरतें काला कुरता और घुटने से कुछ नीचा पाजामा पहने, काठ की चप्पलें लगाए चल रही हैं फुटपाथ कहीं है, कहीं नहीं दुकानें सड़कों के बीच तक फैली हैं भीड़ के बीच से कहीं साइकिलें निकल रही हैं तो कहीं रिक्शे मोटर आ गई तो दुकानें सिमटायी जाने लगीं खानेपीने के खोमचे लगे हैं और कहीं कड़ाइयों में घोंघे, मेंढक, और कहीं जीवजंतु तिलचट्टे से ले कर सांप तक तले जा रहे थे सड़कें क्या थीं मानो भानमती का पिटारा हो बच्चेबूढ़े, औरतमर्द सभी सड़कों पर बैठे बातचीत में मशगूल दुकानदारों और दरदस्तूरा का शोर इन सब ने एक अजीबोगरीब हालत बना

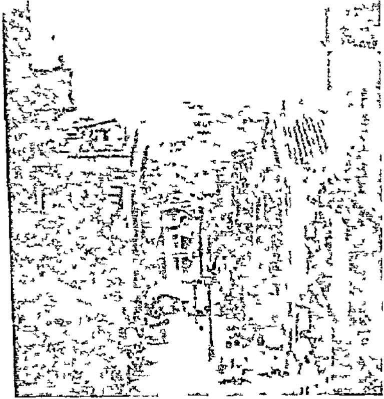

हागकाग के हारबर की एक चीनी बस्ती

रही थी मैं ने मन ही मन सोचा इस से तो कलकत्ता की चीनी बस्ती कहीं साफ और दुरुस्त है बचपन में हम ने रोजर्स के विलायती चाकू देखे थे बहुत ही तेज बेहतरीन मगर यहा मैं ने जो चाकू चौदह आने में खरीदा वैसा अब तक कहीं नहीं देखने में आया जिलेट की ब्लेड की तरह तेज और चमक इतनी कि शक्ल साफ दिखाई पडे यहा की यह सौगात शायद अब तक प्रभुदयालजी के पास है

हमारे एक मित्र श्री सुदर झुनझुनवाला ने रात के भोज का आयोजन हिल्टन होटल में किया आयोजन में स्थानीय प्रमुख भारतीय व्यापारियों के अलावा अन्य व्यवसायी और बैंकर भी सम्मिलित हुए भारतीय राजदूत श्री सिह भी आए थे काठियावाड के किसी छोटी रियासत के राजा थे अच्छे मिलनसार और हसमुख लगे भोज के तीन घटे के आयोजन में यहा की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चर्चा चलती रही

मैं ने यह अनुभव किया कि स्थानीय चीनी न तो ब्रिटिश शासन पसद करते हैं और न च्यागकाई शेक की सरकार पर ही उन्हें विश्वास था चीन से भाग कर वे आए, फिर भी प्राय आतेजाते हैं, क्योंकि उन के सगेसबधी अभी भी वहा हैं और उन का व्यापारिक सबध भी वहा से बडी तादाद में है वैसे चीन की लाल सरकार पर भी उन का भरोसा नहीं है, इसलिए सपत्ति सब यहीं जमा रखते हैं ब्रिटिश सरकार अच्छी तरह जानती है कि लाल आखें देखने पर उन्हें

अपनी चादर समेटने में देर नहीं लगेगी यह भी सही है कि उस की प्रतिक्रिया से शायद विश्वयुद्ध की चिनगारी धधक उठे, पर ब्रिटेन यह मौका आने नहीं देना चाहता, क्योंकि तब उसे यहां के बहुत बड़े व्यापार से हाथ धोना पड़ेगा लाल चीन नाराज न हो जाए, इसलिए यहां की अंगरेज सरकार च्यांग के शड, जासूस और प्रचार को प्रोत्साहन नहीं देती

च्यांगकाई शेक के कमजोर शासन ने लोगों को इतना परेशान कर दिया था कि उस पर से चीनियों का विश्वास उठ गया था पर साम्यवादी शासन के बाद सपन्न जमींदार और व्यापारी कम्युनिस्टों की लूटखसोट से खत्म हो गए और साधारण जनता भी इसलिए परेशान है कि वहां जबरदस्ती काम लिया जाता है पार्टी के अधिकारियों को तो खाना मिल जाता है, पर दूसरे लोगों को नाना प्रकार के बहाने बता कर या कम काम करने की सजा के बतौर खाना कम दिया जाता है व्यक्ति स्वाधीनता है नहीं, इसलिए अपनी इच्छानुसार जीवन बिताना सभव नहीं, उन्नति और विकास की बात तो दूर रही, जन्म, जीवन और मृत्यु तक पर सरकार का नियत्रण है चीन में सपन्न से दरिद्र तो बनाया जाता है, पर दरिद्र से सपन्न नहीं, सुखी भी नहीं उस की छूट हागकाग में है इसलिए बहुत बडी सख्या में लोग यहा आ कर बस गए सब तरह की सुविधाओ के बावजूद यहा के सम्भ्रात चीनी ब्रिटिश शासन से प्रसन्न नहीं दिखाई दिए

मैं ने वहा उपस्थित एक चीनी व्यवसायी से इस के बारे में पूछा तो उस का उत्तर था कि च्यागकाई शक के शासन में ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार फल गया था जनता अभाव से कराह रही थी, जब कि शासक वर्ग और उस के सबधी अनापशनाप खर्च करने के बावजूद विदेशों में करोडो रुपए जमा करा रहे थे उस के बाद आया माऊत्से तुग का साम्यवादी शासन शुरूशुरू में तो लोगो ने इस रद्दोबदल का स्वागत किया पर जब वैयक्तिक स्वतत्रता नाम मात्र की भी नहीं रही और सदियो से चली आती सस्कृति को सपूर्ण रूप से नष्ट किया जाने लगा तो जनता ने विरोध करना शुरू किया . नतीजा यह हुआ कि लाखो व्यक्ति गोली से उडा दिए गए, क्योंकि उन सब को जेलो में रख कर खानाकपडा देना सभव नहीं था लाखो परिवार सब कुछ वहीं छोड कर हागकाग भाग आए जिन के पास सपत्ति थी, उन्होंने यहा आ कर कारबार शुरू कर दिया और बाकी पहाडो की ढलान की गदी बस्तियो में रह कर मजदूरी करने लगे फिर भी यहा के चीनी समझते ह कि वे पराधीन तो ह ही अपनी भूमि पर विदेशी अधिकार से आत्मसम्मान को धक्का पहुचता है मैं ने पूछा, "क्या चाग की कुओ, मिंग ताग का शासन चीन भूखड पर पुन स्थापित होने की आशा है?" उत्तर मिला, 'कहा नहीं जा सकता पर इतना जरूर है कि च्याग स्वय तो वहा शायद ही कभी जा पाएगा" उस की बातो से प्रवासी चीनियो के मन की कुछ झाकी मिली

हागकांग में एक बात हमें अखरी कि यहा पाकिस्तानी नागरिक जितने सगठित ह, उतने भारतीय नहीं भाषा और प्रादेशिकता का असर जिस रूप में वहां अपने लोगो में है, उसे स्वस्थ नहीं कहा जा सकता विदेशो में चीनी इतने अधिक सगठित रहते हैं कि वहा उन का प्रभाव रहता है सिंगापुर इस का स्पष्ट

जहा मोलभाव या बाजार गर्म हो वहा विज्ञापनों की भरमार क्यों न हो !

प्रमाण है मलाया में रहते हुए उन्होंने अपनी सरकार बना ली और अब वह एक पृथक राज्य है हम है कि मारिशस, फीजी, त्रिनिदाद और ड्गिनी में अधिक होते हुए भी उपेक्षित है

सुना था कि कैंटन का आधा शहर पानी पर है • कैंटन जाना सभव नहीं था चीन के प्रतिबंध की ऊची दीवार थी, पर इस की झाकी हागकाग में मिल गई यहा के राजस्थानी बधुओं ने हमें एक स्टीमर पार्टी में रात के समय आमन्त्रित किया था पार्टी अच्छी रही, काफी स्त्रीपुरुष आए थे भारतीय राजदूत भी शामिल हुए थे कार्यक्रम एक बजे रात को समाप्त हुआ स्टीमर से ही हम यहा की नौका नगरी गए मैं निकल पडा इसे देखने छोटेबडे बोट और समदान बदरगाह के किनारे समुद्र पर काफी दूर तक थे

लगभग दो लाख की आबादी इन्हीं नौकाओ और बोटो में रहती है मकान, दुकान, स्कूल, अस्पताल, रेस्तरा सब कुछ यहां है वेनिस और श्रीनगर में भी लोग नावो पर रहते है पर यहां उन का उद्देश्य स्थायी

आवास नहीं, केवल विहार मात्र है यहा तो शहर ही लहरों पर नाच रहा है पहुचते ही शोर मचा चीनो, अगरेजी, "कम हियर, बेस्ट ड्रिंक, फाइन गर्ल, मग गर्ल" अदाज हो गया कि नावों पर फ्रेंच रिवेरा और बदरगाहो के बदनाम महल्ले भी हैं धीरेधीरे खिसकती नावो पर एक दूसरी को पार करता हुआ अपने चीनी साथी ली के साथ नौका नगरी का चक्कर लगा आया टिम टिमाती रोशनी में गरीबी की लहरों से जूझते हुए चीनियों के पीले चेहरे पर स्पष्ट अवसाद की छाया दिख रही थी एक छोटा सा चीनी बालक बड़े गौर से बत्ती के चारो ओर चक्कर लगाते पतिंगे को देख रहा था बादामी आखों की काली पुतलिया हल्की रोशनी में चमक रही थीं उस की आखो में जिज्ञासा थी मेरे मन में बारबार एक ही प्रश्न था, नया चीन कैसा बनेगा?

ली ने कहा, "क्यो, बच्चा बहुत अच्छा लगा? ले आइए, यहा तो बिकते भी हैं, पर चोरीचुपके कम उमर की लडकियों का तो यहा से अब भी चालान होता है, मलाया और इडोनेशिया में" श्री ली नौका स्कूल के अध्यापक थे अपनी नौका के घर ले जाते हुए उन्होने कहा, "गरीबी और जरूरत इनसानियत के तकाजे को नहीं मानती" उन की आवाज में करुणा थी

हम सब जिस समय कौलून के मुख्य घाट पर पहुचे, रात के दो बज रहे थे होटल पहुचकर बिस्तर पर लेट गया शरीर मन दोना थके से थे बार-बार नौका नगरी के मुख्य दृश्य याद आते थे सोचने लगा कि कुछ वर्षों पूर्व ये भी तो चीन महादेश के नागरिक थे, साम्यवाद के थपेडो से घबरा कर उन्होंने स्वय ही देश निकाला स्वीकार कर लिया

दूसरे दिन सुबह नौ बजे टेलीफोन की घटी ने जगाया हमारे मेजबान रिसेप्शन रूम में प्रतीक्षा कर रहे थे जल्दी ही तैयार होकर उन के साथ कार से ओसाका जाने के लिए एयर पोर्ट के लिए रवाना हुए

जापान १

एशिया का सब से उन्नत देश

बचपन में सुनते थे, 'छोटे' से देश जापान ने अपने से सौ गुने बडे रूस को पछाड दिया। जापान एशियाई राष्ट्र था इसलिए यह सुन कर हमारे मन में एक प्रकार का हर्ष और गर्व होता था बाजारो में या बडेबूढो से जापान की चर्चा हम बडे चाव से सुना करते थे यह देश लगभग १९०० वर्ष तक दुनिया से अलग ही रहा १९वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में यह दूसरे देशो के सपर्क में आया इस की कुशाग्र बुद्धि ने उन देशो के कौशल को पहचाना, परखा और अपनाया बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में रूस की पराजय को देख कर दुनिया को पता चला कि जापान कितना सबल और प्रबल है ससार के राष्ट्रो की प्रथम पक्ति में जापान को जगह मिली प्रथम महायुद्ध में जापान मित्र राष्ट्रो के गुट में शामिल हुआ और बटवारे में उसे भी हिस्सा मिला यहीं से जापान के साम्राज्य का विस्तार हुआ और प्रभाव क्षेत्र भी बढ गया

इस के बाद जापान अपनी औद्योगिक उन्नति में लग गया औद्योगिक विकास के इतिहास में उस की सफलता अद्वितीय और अनुकरणीय है सन् १९३०-३२ में सारा ससार मदी की चपेट में तबाह हो रहा था ब्रिटेन, फ्रास और अमरीका उत्पादन घटाने के लिए बाध्य हो रहे थे उन के कलकारखानो के बद होने तक की नौबत आ गई थी, उस समय भी जापानी माल विश्व के कोने-कोने में बिक रहा था उस की डबल घोडे छाप की बोस्की (सिल्क का कपडा) नौ आने गज में भारत के बाजारो में बिक रही थी . आज भी उस के टिकाऊपन और मुलायमी की प्रशसा करते हुए लोग याद करते हैं आश्चर्य की बात यह है कि इन दामो में जहाज भाडा, आयात शुल्क, आढतदारी आदि सभी खर्च शामिल थे बहुतो को याद होगा कि ऐसी पेंसिलें जापान से आती थीं जिन में लकडी नहीं होती थी कागज की पतली पट्टियो की परतें होती थीं न चाकू से छीलने की जरूरत न साचे से बनाने की बस परतें उतारी, पेंसिल तैयार गाढे काले रग की लेड, खूब लिखते बनता था दाम सिर्फ दो पैसे

जापान की औद्योगिक सफलता ने पश्चिमी राष्ट्रो को चौकन्ना कर दिया उन की यह चेष्टा रहने लगी कि उन के देश और साम्राज्य के बाजारों में जापानी माल के प्रवेश को यथासाध्य बाधा पहुचाई जाए प्रतियोगिता में जापान टिक न पाए इसलिए नाना प्रकार के बधन, जापानी माल पर लगाए गए भारत में

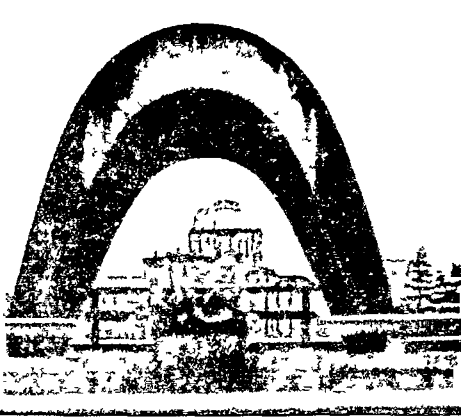

संसार के पहले अणु बम का शिकार हिरोशिमा का युद्ध स्मारक

जहा मनचेस्टर के कपडो पर दस प्रतिशत आयात कर था जापानी कपडो पर २० से २५ प्रतिशत फिर भी जापान के मुकाबले में इन्हें हार खानी पडी

औद्योगिक विजय और वैभव ने सभवत जापान की लालसा बढा दी जापान का उत्पादन बढ रहा था उन्हें माल खपाने के लिए नई मडियो की खोज थी पास ही विशाल चीन था जो आलस प्रमाद और आपसी लडाई के कारण असगठित और पिछडा हुआ था जापान उस पर झपट पडा युद्ध लबा चला जीत जापान के लिए महगी पडी वह खुद भी जर्जर हो गया अपनी साम्राज्यवादी हरकतो के कारण उस ने पश्चिमी देशों के सिवाए एशिया की सहानुभूति भी खो दी

सन १९४१ म जापान जरमनी और इटली के धुरी राष्ट्र गुट में जा मिला और अमरीका तथा मित्र राष्ट्रो के विरुद्ध युद्ध म उतर पडा अमरीका के बहुत बडे और सुसज्जित पर्ल हार्बर में जगी जहाजों के बेडे पर अचानक हमला कर जापानी हवाबाजो ने जिस साहस और कौशल का परिचय दिया वह अपूर्व रहा है गोलाबारूद लिए हुए जापानी छतरीबाज जहाजो के मस्तूलो म कूद पडे स्वय वीरगति को प्राप्त हुए लेकिन प्रशात महासागर की महान अमरीकी सामरिक नौ शक्ति को उन्होंने पगु कर दिया इस तरह का देशभक्ति और वीरता हाल

के भारतपाक संघर्ष में हमारे जवान ही प्रस्तुत कर सके हैं सीने पर बम बांध कर शत्रु के दैत्याकार पैटन टैंको के नीचे लेट जाना, छोटेछोटे नेट प्लेनो सहित विश्व में बेजोड गिने जाने वाले सेबर जेट विमानो से टकरा जाना, बलिदान, साहस और शौर्य की पराकाष्ठा हैं

पर्ल हार्बर में जापान की सफलता ने मित्र राष्ट्रो में आतक पैदा कर दिया एशिया में उन के साम्राज्यो के बहुत से देशो में जापान के प्रति आदर का भाव जग उठा जापान ने अवसर का पूरा लाभ उठाया उमडते बादल की तरह उस के सैनिक हिंद चीन, स्याम, हिंदेशिया, सिंगापुर, मलाया और बर्मा में छा गए सिंगापुर में जापानी हवाबाजो ने इगलैंड के 'प्रिंस आफ वेल्स' और रिपल्स जैसे प्रसिद्ध जगी जहाजो के मस्तूलो में बम सहित घुस कर उन्हे उडा दिया कलकत्ते पर आए दिन उन के हवाई जहाज मडराने लगे जापान अकेला ही पूर्व में मित्र शक्ति से मुकाबला कर रहा था

सन १९४३ में जरमनी और इटली लबे युद्ध के कारण थकने लगे उन का बल शेष हो गया और उन्होने सन् ४५ में घुटने टेक दिए अब मित्र राष्ट्रो ने पश्चिम से निश्चित हो कर जापान के विरुद्ध पूरी शक्ति लगा दी इस समय तक अमरीका अणुबम तैयार कर चुका था ६ अगस्त १९४५ को उस ने हिरोशिमा में अणुबम गिराया तीन दिन बाद, ९ अगस्त को नागासाकी पर दूसरा अणुबम गिराया गया असख्य धनजन की हानि हुई जापान के विचारको और सम्राट ने राष्ट्र को विनाश से बचाने के लिए सधि का प्रस्ताव रखा

इस के बाद सात वर्षो तक जापान पर अमरीका का नियत्रण रहा जापान सम्राट कायम रहे लेकिन शासन अमरीका का रहा जनरल मैकआर्थर बने सर्वोच्च अधिकारी एव शासक जापान की मूल भूमि को छोड कर उस के साम्राज्य के सारे देश छीन लिए गए इन सात वर्षो में अमरीकी सैनिको ने जापान में जो व्यवहार और आचरण किया वह किसी भी सभ्य देश के लिए लज्जा और ग्लानि की बात है जापानियो ने सब कुछ धैर्य और अनुशासन के साथ सहा उत्तेजित हो कर कभी भी ऐसा मौका नहीं दिया कि शासक को अत्याचार का बहाना मिल जाए परिणाम यह हुआ कि अमरीका का जनमत स्वत" प्रभावित हुआ जापान के प्रति मैत्री और उदारता का दबाव बढने लगा १९५१ में सेनफ्रासिस्को में जापान और अमरीका के बीच शाति सधि हुई वह फिर से पूर्णत्र स्वतत्र हुआ जापान के राष्ट्र प्रेम, निष्ठा और अनुशासन की ऐसी सफलता विश्व में बेजोड कही जा सकती है

बमबाजी से उस के शहर ध्वस्त हो चुके थे व्यापारवाणिज्य और उद्योग नष्ट हो चुके थे युद्ध के बाबत ५५ अरब रुपयो का उसे हरजाना देना पडा साम्राज्य छीना जा चुका था दूरदूर से भाग कर जापानी अपनी मूलभूमि में लाखो की सख्या में आ रहे थे अमरीकी सैनिक शासन ने नाना प्रकार की सामाजिक बुराइयां पैदा कर दी थीं खाद्य समस्या सुरसा की तरह मुह बाए खडी थी हिरोशिमा और नागासाकी के अणु पीडित विकलाग नागरिक और उन की भावी सतति की भयावह समस्या थी ही विश्व में उस की प्रतिष्ठा नाम मात्र को रह गई थी राजनीति के नाम पर दलबदी का घुन घर कर चुका था

पड़ोस में चीन साम्यवादी बन कर पुराना बदला लेने की ताक लगाए था. यह हालत थी आज से १४ वर्ष पूर्व जापान की, जब वह स्वतंत्र हुआ.

और आज? आज वह विश्व के अग्रणी राष्ट्रों में से एक है. उद्योग व्यापार में पहले से कहीं अधिक संपन्न और समृद्ध. विश्व के पिछड़े राष्ट्रों को आर्थिक सहायता दे रहा है. अमरीका और इंगलैंड में उस के माल निर्यात हो रहे हैं. विदेशों में उस की मदद से उद्योग स्थापित किए जा रहे हैं. जापान मुसकरा रहा है.

हम हैरत में हैं. १८ वर्ष हो गए, हमें स्वतंत्र हुए. हमारे पास खनिज पदार्थ और कच्चे माल की कमी नहीं. जगह की कमी नहीं. फिर भी हम क्यों नहीं आगे बढ़ पा रहे हैं? इन्हीं सब बातों को समझने के लिए मेरे मन में जापान को देखने की प्रबल इच्छा थी.

कार्यक्रम के अनुसार पूर्वी देशों में बर्मा, मलाया, सिंगापुर, हांगकांग और जापान की यात्रा और तब अमरीका होते हुए यूरोप के रास्ते वापसी. मेरे मित्र श्री रामकुमार भुवालका घुमक्कड़ वृत्ति के हैं. वह कई बार योरोप और अमरीका हो आए थे. इस बार उन्होंने विश्व भ्रमण का कार्यक्रम श्री हिम्मतसिंहका और मेरे साथ बनाया.

हम ने बर्मा, मलाया, सिंगापुर और हांगकांग की यात्रा पूरी कर ली. हमारे पास टूरिस्ट क्लास का टिक्ट था. जापान एयरलाइंस के अधिकारियों को कहीं से पता चला कि हम भारतीय संसद के सदस्य हैं और उन के देश में वाणिज्य और उद्योग के विकास की जानकारी के लिए जा रहे हैं, वे बहुत प्रसन्न हुए. उन्होंने बिना किसी अतिरिक्त व्यय के 'डीलक्स' क्लास में हमें जगह दी. हम मना करते रहे लेकिन उन का एक ही अनुरोध था, 'हमारा इतना सा आतिथ्य स्वीकार कर हमें अनुग्रहीत करें'. स्नेह और शालीनता के सामने हम विवश हो गए.

डीलक्स क्लास की सीटें बहुत आरामदेह होती हैं. चौड़ी होने के कारण यात्रियों को काफी सुविधा रहती है. इस क्लास की एक और विशेषता —है कि शराब पीने की मनचाही छूट रहती है. हम तीनो दूधलस्सी पीने वाले विशुद्ध निरामिष यात्री, इस का फायदा न उठा सके. हां, एयर होस्टेस के व्यवहार में जापानी नारी की सुंदरता और शालीनता की झांकी हमें जापान पहुंचने के पूर्व ही मिल गई. जेट हांगकांग एयर पोर्ट से उठा मैं बेहद खुश था. वर्षों से पली हुई अभिलाषा पूरी होगी. 'सूर्योदय का देश निपान' देख सकूंगा सोचने लगा, 'चीनी और जापानी एक ही शक्लसूरत के हैं. संस्कृति में भी साम्य है. दोनो का लक्ष्य है, राष्ट्र की उन्नति और समृद्धि. गत महायुद्ध के बाद दोनो के जीवन में नवीन अध्याय शुरू हुआ. दोनो जर्जरित थे, बल्कि जापान पर तो अमरीकी शासन रहा है. फिर भी छोटा सा जापान विश्व के व्यापार, उद्योग और राजनीति में चीन से अधिक सफल और प्रतिष्ठासंपन्न है. लेकिन राष्ट्र की, राष्ट्र के नागरिकों की समृद्धि और सुख के लिए सर्वाधिक हितों का दम भरने वाला साम्यवादी सिद्धांतों वाला विशाल चीन सुखी और स्वावलंबी नहीं बन पाया. क्या राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यक्ति और व्यक्तित्व का उन्मुक्त विकास ही अधिक महत्त्वपूर्ण है.'

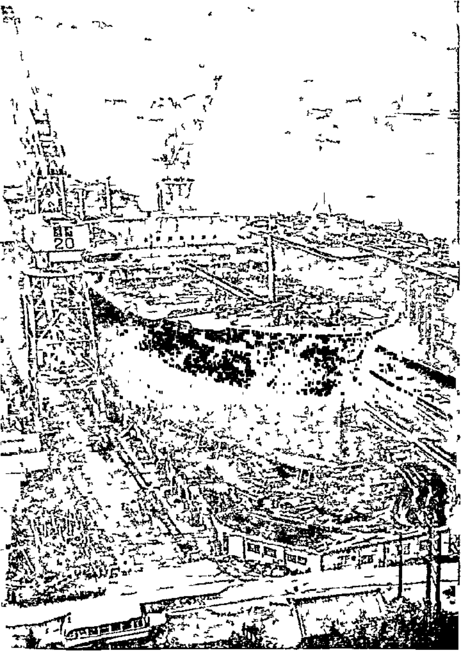

संसार का सब से बड़ा जहाज बनाने वाला सब से छोटा देश

हमें सूचना मिली कि हम जापान पहुंच रहे हैं मेरी उत्सुकता बढ़ी मैं ने नीचे की ओर खिड़की से झांक कर देखा जापान के द्वीपपुंज एशिया महाद्वीप के पूर्व में अर्धवृत्त भाग में धुंधले दिखाई पड़े एयर होस्टेस ने मुसकरा कर अपनी दूरबीन मुझे दे दी मैं ने देखा फूलों से सजी, धानी रंग की चुनरी ओढ़े जापान की धरती के चरण सागर छू रहा है

ओसाका के एयर पोर्ट पर भारतीय दूतावास के सचिव हमें लेने आए उन के साथ मलाया और हांगकांग के हमारे मेजबानो के मैनेजर श्री खेमका और श्री सोढानी भी थे एयर पोर्ट पश्चिमी देशों की तरह व्यस्त और साफ सुथरा देखा विदेशियों को, विशेषत यात्रियो को, किसी भी देश के निवासियों के आचार या व्यवहार का परिचय कस्टम से गुजरने पर सहज ही में मिल जाता है ओसाका एयरपोर्ट में कस्टम के अधिकारियों की तत्परता और भद्रता ने हमें बहुत ही प्रभावित किया हमारे ठहरने की व्यवस्था होटल ओसाका में थी रास्ते में हम ने जापानियो की स्वच्छता और परिमार्जित रुचि को लक्ष्य किया सडके साफ, सडकों पर चलने वाले स्वच्छ सब कुछ जैसे स्वाभाविक अनुशासन में हो

हम होटल पहुचे हलका नाश्ता करते हुए आपस में ओसाका के कार्यक्रम पर विचार करने लगे होटल पश्चिमी ढग का था श्री खेमका ने हमें बताया कि इस ढग के होटल जापानी ढग के होटलों से महगे जरूर पडते है लेकिन हम लोगो के लिए अधिक आरामदायक हैं आमतौर से पश्चिमी ढग के होटलो में दो आदमियो के आवास के कमरे पचासपचपन रुपए प्रति दिन पर मिल जाते हैं लच पर लगभग आठ और रात्रि के भोजन पर दस रुपए प्रति व्यक्ति लग जाता है जापानी ढग के होटल जिन्हें 'इस' (सराय) कहते हैं काफी सस्ते होते हैं आवास और भोजन पर प्रति व्यक्ति अधिक से अधिक बारह पदरह रुपए का खर्च आता है लेकिन शाकाहारियो के लिए निरामिष भोजन वहां ठीक से नहीं मिलता एक कठिनाई भाषा की भी है इन के कर्मचारियों का अगरेजी न जानना हमारे लिए तो बडी समस्या है पश्चिमी होटलों में अगरेजी के माध्यम से हम काम चला सकते है एक और भी विचित्र बात इस के बारे में हमारे जानने में आई जापानी तरीके के अनुसार इस में स्नानगृह अलगअलग नहीं ह स्त्रीपुरुष सभी एक साथ एक ही गुसलखाने में नहाते हैं हम ऐसी रीति के अभ्यस्त नहीं, हमारे यहा तो नदियों में भी स्त्री और पुरुष के घाट अलगअलग है

टोकियो के बाद जापान का दूसरा बडा नगर ओसाका है इसे नगर नहीं महानगर कहना अधिक उचित होगा यह शहर योदो नदी के मुहाने पर बसा हुआ है और टोकियो से लगभग तीन सौ पचीस मील दूरी पर है आबादी बहुत ही घनी है, करीब तीस लाख फिर भी न तो गदगी है और न जगह की तगी दिखाई देती है ओसाका जापान का वेनिस सा लगा शहर नदी के दोनो किनारो पर है और नदी के बीच टापू पर भी वेनिस की तरह यहा भी शहर के बीच नहरों का जाल सा बिछा है लगभग एक हजार पुलो से इस के विभिन्न भाग एक दूसरे से सबद्ध है ओसाका जापान के व्यापार, वाणिज्य और उद्योग का सब से बडा केंद्र है यहा विभिन्न प्रकार के धातुओ के एव रासायनिक पदार्थों के कारखाने तथा रेशम, कपडे और चीनी इत्यादि की बडीबडी मिलें हैं सपूर्ण जापान के कुल २१०० अरब येन के निर्यात का आधे से अधिक का श्रेय ओसाका को है यहां समुद्री जहाज बनाने के कारखाने है पहले ओसाका का बदरगाह बहुत उन्नत नहीं था युद्ध के बाद जापान ने जब नए सिरे से अपने उद्योग एव वाणिज्य का पुनगठन किया तब

इस के बंदरगाह का नवनिर्माण शुरू हुआ समुद्र से लगभग बारह सौ एकड जमीन निकाली गई बडेबडे जहाजो की मरम्मत एव ठहरने के लिए आधुनिक साधनो से सपन्न डेक बनाए गए

जापानी उद्योग क्षेत्र में एक विशेष बात देखने में आई कि यहा भी हमारे देश की तरह बडेबडे उद्योग कुछ परिवारो के नियत्रण में ह जिस तरह हमारे यहा टाटा, बिरला, मफतलाल, बाजोरिया आदि के प्रतिष्ठान ह उसी प्रकार उद्योग वाणिज्य में वहा भी मित्सुबिशी, मित्सुई, नीशी, मात्सु आदि के समृद्ध और सुसगठित प्रतिष्ठान ह हम जहाज बनाने का एक बडा कारखाना देखने गए हम ने देखा कि दो विशाल समुद्री जहाज निर्मित हो रहे हैं कारखाने के मैनेजर ने हमें बडे चाव से सारी बातें समझाई बडा आश्चर्य हुआ हमें, जब यह पता चला कि इगलैंड की किसी एक कपनी के लिए भी जहाज बन रहा है कभी इगलैंड विश्व में सब से बडा जहाज निर्माता माना जाता था उसी इगलैंड के लिए जापान जहाज बना रहा है आज विश्व में जहाज निर्माण में जापान सब से आगे है उस का व्यापारिक बेडा अमरीका, ब्रिटेन दोनो से टक्कर ले रहा है हमारे लिए यह भी

ध्यान देने की बात थी कि ओसाका का केवल एक जहाज निर्माता प्रतिष्ठान जितना काम करता है उस का आधा भी हम आज तक अपने विशाखापत्तनम में नहीं कर पाए सूती कपड़े की मिल भी हम ने देखी करघों पर औरतें ही थीं हमारे यहा भी पाट, सूती या रेशम के करघों पर औरतें मिलों में काम करती हैं लेकिन दोनों के काम में कितना अतर है २४ करघों पर एक औरत को तेजी से काम करते देख चकित हो जाना पड़ा

ओसाका के बारे में कहा जाता है कि जापान के शहरों में पर्यटकों के लिए आकर्षण की वस्तुए यहां सब से कम हैं सभवत यह बात अमरीकन पर्यटकों के लिए सही हो लेकिन हमारे जैसों के लिए तो यहा दर्शनीय स्थलों की कमी नहा है दोपहर का खाना खाने के बाद हम शहर में घूमने निकले जुलाई का महीना था लेकिन समुद्र के किनारे होने के कारण गरमी बहुत नहीं थी जापान का मौसम समशीतोष्ण है ओसाका में बहुत ऊचे और बडे‌बडे मकान अधिक नहीं हैं भूकप के प्रकोपो के कारण लकड़ियों के मकान बनाने की परपरा रही है अब आधुनिक ढग के भी तेजी से बन रहे हैं

शहर में कमर्शियल म्यूजियम, कला और विज्ञान के सग्रहालय, चिड़िया खाना और बोटेनिकल गार्डेन भी हैं लेकिन पेरिस के लूव्रे और लदन के म्यूजियम देखने के बाद इन को देखने के लिए हमारे मन में कोई उत्साह नहीं था यों तो यहां के सभी पार्क अच्छे हैं क्योंकि जापानी प्रकृति के पुजारी और फूलों के शौकीन होते हैं, फिर भी तेन्नोजी पार्क सब से अधिक सुदर लगा

शहर की एक नहर से गुजरते हुए हम वहां के बुद्ध मदिर में गए बुद्ध की प्रतिमा के सामने धूपबत्तियां जल रहीं थीं तथागत के सौम्य, शात, तेजोमय मुखमडल को देख चित्त प्रसन्न हो गया मदिर छठवीं शताब्दी का है जापानी वास्तुकला का शुद्ध निखार इस में मिला शात वातावरण और स्वच्छता देख कर एक बार मन में प्रश्न उठा, हमारा देश भी तो मदिरों का देश है लेकिन कितना अतर है दोनो में? भिखारियो और पुजारियो का शोरगुल साथ ही मितली लाने वाली गदगी । एक भाग में हम ने हिदेयोशी का दुर्ग देखा खडहर सा हो रहा है फिर भी है रोबदार जापान की १६वीं शताब्दी की सामतशाही की यादगार है गाइड ने हमें बताया कि किस प्रकार अपनी देशभक्ति और वीरता के कारण हिदेयोशी ने जापान के अधिकाश भाग को जीत कर एक सूत्र में बाधा उस समय जापान में भी विदेशी पादरी लोगों को क्रिस्तान बना रहे थे उस ने जसुइट पादरियों को अपने जीवन काल में किसी भी तरह जमने नहीं दिया उस का विश्वास था कि विदेशी धर्म के साथसाथ विदेशी सस्कृति कुसस्कार के रूप में घर कर लेती है हिदेयोशी के कारण ही ओसाका का महत्त्व बढा पहले तो यह एक गाव सा था और इस का नाम था नानीवारा (लहरों की प्रेयसी)

दूसरे दिन शाम को हम ओसाका के बदरगाह पर घूमने गए ससार के विभिन्न भागो के जहाज माल लादनेउतारने में लगे थे भारत का भी एक जहाज देखा रद्दी लोहा (स्क्रेप आयरन) उतारा जा रहा था जिसे हम रद्दी के भाव बेचते हैं, जापान उसे काम में ले कर और उस की स्टेनलेस स्टील की चद्दरें बना कर

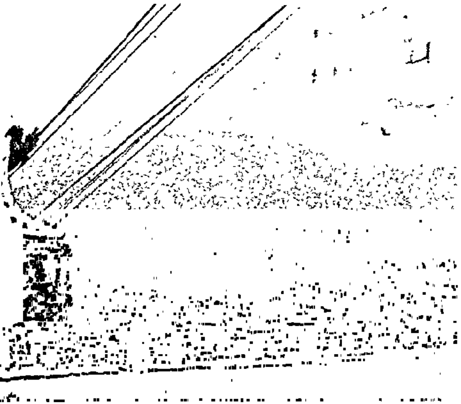

बक्सनुमा पिंजरे (हैंगिंग केबिन) से चारों तरफ का दृश्य देखते ही बनता है.

संसार के बाजारों से धन बटोरता है.

लौटते समय हम ने रात का खाना ओसाका के एक गुजराती रेस्तरां में खाया. एक गुजराती दंपति इस होटल को खुद चलाते हैं. पत्नी रसोई बना देती है और पति खाना परोसते हैं तथा अन्य कामकाज संभालते हैं. ओसाका में कुछ भारतीय स्थायी तौर पर रहते हैं. व्यापार का केंद्र होने के कारण आतेजाते भी हैं. इस से इन की अच्छी आय है. हमें भोजन खूब रुचा. आत्मीयता के वातावरण से थकान मिट गई और मन तृप्त हो गया.

ओसाका में सिनेमा, थियेटर और नाइट क्लब काफी संख्या में हैं. लेकिन ओसाका का 'बुनराकू' कठपुतली का नाटक सब से अधिक विख्यात है. यों तो सारे जापान में बुनराकू के कई रंगमंच हैं फिर भी यहां की बुनराकू नाट्यशाला प्रतिष्ठित मानी जाती है. हमारे मेजबान हमें यहां ले आए. मेरी धारणा थी कि संभवतः हमारे राजस्थान के कठपुतली के नाच की तरह कुछ होगा. लेकिन हम ने इसे भिन्न पाया. कठपुतलियां बड़े आकार की थीं, अत्यंत कलापूर्ण. इन का आकार औसत मानव शरीर से आधा था. और, इन का संचालन तीन कठपुतली चालक कर रहे थे. पार्श्व संगीत के साथसाथ घटनाओं का उतारचढ़ाव काफी प्रभावशाली लगा. भाषा न समझने के कारण पूरा आनंद तो न ले सका पर इतना समझ पाया कि मध्ययुगीन किसी घटना पर कथावस्तु है.

यहा देखा कि दर्शक आनद विभोर हो कर न तो शोर मचाते हैं और न अनुशासन भग करते हैं

ओसाका से हम कोबे गए यह एक प्रकार से ओसाका का पूरक अग कहा जा सकता है. यह करीब बीस मील दूर है और समुद्र के किनारे है. जलवायु ओसाका से अच्छी है इसलिए साधनसपन्न लोग यहीं रहते हैं और कारबार या दफ्तर के लिए ओसाका जाते हैं

यहा करीब तीन साढ़ेतीन सौ घर भारतीयो के हैं जापान में सब से अधिक वे यहीं है, जिन में गुजरातियो की सख्या अधिक है ये मोतियों का तथा अन्य जापानी वस्तुओ के निर्यात का काम करते हैं हमारे साथी श्री दुर्गाप्रसाद के बहनोई और बहन यहा रहते हैं इस से हमारी यात्रा और भी सुविधाजनक हो गई हमें उन के यहा भारतीय भोजन तो दोतीन बार मिला ही साथ ही ताश खेला उन के साथ हम 'फेनिक्युलर' के पास की एक पहाडी पर गए मोटे रस्से के सहारे लटकते हुए बक्सनुमा पिंजरे में बैठ कर यात्री आयाजाया करते हैं यहा से कोबे का दृश्य बडा सुदर लगा ओसाका की अपेक्षा कलकारखाने कम होने के कारण यहा की प्राकृतिक शोभा अधिक आकर्षक लगी

ओसाका में जहा व्यस्त जीवन का वातावरण है वहीं कोबे में कुछ रईसी और मौजमस्ती देखने में आई हम ने यहा ठेठ जापानी ढग के मकान देखे जापान में भूकप प्राय आया करते हैं इसलिए यहा अन्य देशो की भाति विशाल मकान या भवन बनाने की परिपाटी नहीं रही है जापानी मकान की अपनी मौलिकता और विशेषता है कि ये हलके होते हैं और कम से कम स्थान पर लकडियो के बनते हैं प्रत्येक मकान में एक छोटा सा बाग होता है काफी सुदर और सुरुचिपूर्ण कमरों में दीवारें चिकों की या बास की पतली खपचियों पर कागज लगा कर बनती ह, जो आवश्यकतानुसार हटाई जा सकती हैं फर्नीचर अथवा सामान वे सिर्फ जरूरत भर के लिए रखते हैं और वह भी हलके और छोटे में एक जापानी घर में गया अपने यहा हम जिस तरह घर के अदर जूते नहीं ले जाते उसी तरह जापानी घरो में जूते बाहर ही खोलने पडते हैं जूते उतार कर कैनवास की चप्पलें पहन हम अदर गए साफ फर्श, दीवारों पर चित्रकारी, खिडकियों पर परदे और गुलदस्ते सजावट में भडकीलापन नहीं बल्कि सादगी और सुरुचि देखी गृहपत्नी और उन के बच्चों ने जापानी तरीके से प्रणाम किया अभिवादन का उन का तरीका बहुत कुछ भारतीयों जैसा है पर ये हाथ जोड कर झुके हुए पीछे हटते हैं

जापानी कमरे के बीच एक नीची सी टबल रहती है इसी के चारो ओर बैठ कर लोग भोजन करते हैं हमारे घरो की तरह जापान में भी पारिवारिक जीवन में बडेछोटो के बीच मानमर्यादा का बहुत ध्यान रखा जाता है लौटते समय हम फलों के बाजार से गुजरे अच्छे से अच्छे फल हम ने देखे दाम हमारे यहां से कम खरबूजे भी देखने में आए हम ने खरीदा बहुत ही स्वादिष्ट था हमें पता चला कि सिवाए आम के प्राय सभी फल जापान में होते हैं

छोटा मकान व छोटा बाग जापानियों की अपनी अलग परंपरा

जापानी अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत सजग रहते हैं और विदेशों से ऐसे फल या खाद्य सामग्री नहीं आने देते जिस से उन के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़े आम इस वर्ग में कैसे आया इस का आश्चर्य है शाम को शहर घूमने निकले होटल, रेस्तरां, नाइट क्लब, थियेटर और सिनेमा बहुत से हैं

कोबे बिजली के प्रकाश में मानो सारी रात झूमतानाचता है एक मुहल्ले से हम गुजर रहे थे, देखा कि लंदन के सोहो और पेरिस के मोमार्त्र की तरह यहां भी लड़कियां मेकअप किए गलियों में चक्कर लगा रही हैं राह चलते को अर्थ भरी नजरों से देख रही हैं समझने में देर न लगी कि कोबे भी आखिर बंदरगाह है महीनों समुद्र में गुजार देने का साधन हर बंदरगाह पर होता है चाहे वह पश्चिम का हामबुर्ग और मार्सलीज हो या पूर्व का सिंगापुर और हांगकांग

टोकियो

संसार का बेजोड़ शहर

ओसाका से टोकियो जा रहा था ट्रेन का सफर था पर अनुभव नया हो रहा था ट्रेन की रफ्तार १०० मील प्रति घंटे की थी जापान की ट्रेनों के अनुसार यह बहुत तेज नहीं थी, क्योंकि वहां तो अब १३० मील की गति से चलने वाली ट्रेनें भी हैं ट्रेन में काच के बने कक्ष थे और यात्रियों के बैठने के लिए आरामदेह सोफे लगे हुए थे चारों ओर के दृश्य इस में बैठ कर आसानी से देखे जा सकते हैं स्वीडन, स्विट्जरलैण्ड और ब्रिटेन की ट्रेनों की तरह जापान में भी यात्रियों के आराम का बहुत खयाल रखा जाता है खाने पीने के साधन, दवा, चिकित्सा की व्यवस्था आदि रहती है हम जिस कक्ष में यात्रा कर रहे थे उसे 'आवजरवेटरी कार' कहा जाता है इस के साथ एक और डब्बा रहता है जो चारो ओर से खुला रहता है, केवल ऊपर छत रहती है एक बरामदा भी इस में रहता है मैं बरामदे में जा कर खडा हो गया नदीनाले, पहाड, गाव सभी मानो क्षण मात्र के लिए सामने आने और मुसकरा कर ओझल हो जाते थे देख रहा था, चप्पाचप्पा जमीन काम में लाई गई है धान की सुन हरी बालिया जापानी जीवन में साना बिखेरने के लिए झूम रही हैं जापान छोटा सा देश है, इस का तीनचौथाई भाग पहाडी है जगह कम है और आबादी घनी फिर भी खाद्यान्न में जापानी स्वावलंबी है आएदिन जलूस निकाल कर शासन की व्यवस्था को बिगाडते नहीं

यह बात नहीं कि जापान में दलबंदी नहीं है है, और खूब जोरो से, पर उन में वह उत्तेजना नहीं है जो हमारे यहा है दक्षिण पथी और वाम पथी हमारे देश की तरह वहा भी हैं कम्युनिस्टों ने बडे जोडतोड लगाए, तोडफोड की कोशिशें कीं, पर जनता ने जब उन्हें पहचाना तो वे कहीं के न रहे जापानी ससद में उन का प्रतिनिधित्व करने वाला अब केवल एक व्यक्ति रह गया है दक्षिण पथी परपरावादी है, ब्रिटेन की कजर्वेटिव पार्टी की तरह वाम पथी में समाजवादी हैं इन के अलावा एक दल जनतत्री समाजवादी विचारो का है जिन्हें मध्यममार्गी कह सकते है ये अतिवादी विचारों के विरुद्ध हैं, चाहे वह दक्षिण पथी हों या वाम पथी सरकार की नीति को अपनी तरफ मोड देने के लिए हरेक का दबाव रहता है लेकिन सभी शातिपूर्ण तौरतरीके में विश्वास करते हैं सभी की मान्यता है कि शिल्पोद्योग की उन्नति हो, निर्यात बढ़े, विदेशों से अच्छे

सबध रहें, राष्ट्र की प्रतिष्ठा और शक्ति बढे तो अन्न और आबादी की समस्या अपनेआप हल हो जाएगी

दूर से फूजी यामा दिखाई पडा बर्फ की चादर ओढे मानो कोई व्यक्ति मौन तपस्या में लीन है यह जापान का सुप्त ज्वालामुखी है, करीब २५० वर्षों से शात है इस की ऊचाई करीब १२, २५० फीट है जापान में इतनी ऊची चोटी और किसी पवत की नहीं है॰ हमारे यहा के पर्वतो की तुलना में जापान के पहाड बहुत छोटे हैं फिर भी फूजी जापान का नगराज है और उस का प्रतीक भी इसे देखने के लिए दूरदूर से लोग आया करते हैं

टोकियो पास आता जा रहा था ट्रेन राजमार्गों को॰ आडेतिरछे पार करती जा रही थी पक्के, ऊचे मकान और कारखान मिलने लगे ट्रेन शहर के बीच स गुजरती हुई सेंट्रल स्टेशन आ पहुंची किसी भी पाश्चात्य रेलवे स्टेशन की तुलना में यह कम नहीं लगा यह जापान का सब से बडा और अत्यत व्यस्त रेलवे स्टेशन है यहा भी प्रति दिन जापान के विभिन्न भागों में दूर सफर को लगभग १५० ट्रेनें छूटती है स्टेशन देख कर मैं बडा प्रभावित हुआ पूछने पर पता चला कि १३० मील प्रति घटे की गति वाली १८ ट्रेनें ओसाका और टोकियो के बीच शीघ्र ही चलेंगी

हमें लेने के लिए स्टेशन पर दूतावास के प्रतिनिधि आए थ आम तौर से जापानी मझोले कद के होते ह भारतीयों से छोटे और हलके इसलिए स्टेशन पर काफी भीड रहते हुए भी हम ने उन्हें देख लिया उन की लबाई काफी अच्छी थी सिर पर साफा और बडीबडी दाढ़ीमूछा वाली शानदार शक्ल को पहचानने में दिक्कत नहीं हुई

दूतावास ने हमारे लिए गिंजा होटल की व्यवस्था कर दी थी कार्यक्रम भी उन्हीं की सलाह से तय था यहा भी कलकारखाने देखने थे पर उतने अधिक नहीं जितने कि ओसाका में उद्योगव्यापार के सचिवालय और विभिन्न सस्थानो से मिल कर आवश्यक जानकारी भी लेनी थी

मेरा खयाल है कि टोकियो अपनेआप में ससार का बेजोड शहर है हो सकता है न्यूयार्क और लदन विस्तार में टोकियो से अधिक बडे हो, लेकिन जनसख्या और जीवन की मुसकान जो टोकियो में है, वह दूसरी जगह नहीं लदन में तो रास्ते चलने वालो या ट्रेन, बस में बैठे लोगो के सजीदे चेहरो को देख कर ऐसा लगता है कि या तो गर्म है या किसी से लड कर आए है

टोकियो बहुत ही व्यस्त नगर है राजधानी भी है और व्यापारउद्योग का प्रमुख केंद्र भी एक करोड से अधिक आबादी वाले इस शहर की सफाई और सुव्यवस्था देख कर हम चकित रह गए न्यूयाक, मास्को और लदन की बात होती तो हमें आश्चर्य नहीं होता कारण, कि वे पाश्चात्य शहर है पर टोकियो? यह तो एशियाई है, हमारा पडोसी है कलकत्ता, दिल्ली और बबई की तो इस की आधी आबादी ही है जहा हमारो व्यवस्था अनियन्त्रित हो जाती है कहीं पानी है तो बिजली नहीं बिजली आई तो गैस गायब सडको पर कूडे के ढेर रात में पटरियो पर सोते हुए लोगो की कतारें टोकियो में यह नहीं दिखता हमारे यहा के नगरनिगम के सदस्य और कर्मचारी आपस में आए-दिन के झगडों को छोड कर नगर की सुगम व्यवस्था की जानकारी के लिए यदि टोकियो, ओसाका और सेनफ्रासिस्को जा कर देखें तो अधिक लाभ होगा

शहर घूमने के लिए टोकियो में हमारे राजदूत श्री लालजी मेहरोत्रा ने हमारी सब प्रकार की व्यवस्था कर दी, इसी लिए हम थोडे समय में बहुत कुछ देख सके भारतीय पर्यटकों को चाहिए कि जहा कहीं भी जाए, अपने देश के दूतावास में जा कर उन की सलाह ले लें इस प्रकार वे अनावश्यक धन और समय के खर्च से बच सकते है

दूसरे बडे शहरो की तरह टोकियो घूमने के लिए यात्रीबस सब से उत्तम साधन है यह आरामदेह है और खर्च भी कम पडता है गाइड से सब जगहो का और जापानी जीवन का परिचय भी मिलता रहता है अब तो अपने यहां भी बडेबडे शहरों में इस प्रकार की व्यवस्था पयटक विभाग की ओर से की गई है शहर के विभिन्न स्थानों से हमारी बस गुजर रही थी हम पांच साथी थे प्रभुदयालजी और रामकुमारजी तो साथ ही दिल्ली से चले थे और दुर्गा प्रसादजी व प्यारेलालजी हांगकांग से साथ हुए ओसाका में ये हमारे मेजबान थे बाहर जुलाई की गरमी थी पर बस ताप नियंत्रित थी, इसलिए परेशानी नहीं रही

गाइड एक महिला थी बडी विनम्र और मृदुभाषी अगरेजी में समझाती जा रही थी मैं ने देखा कि उस का यह प्रयास था कि जापान के बारे में विदेशी अच्छी जानकारी पा सकें इसलिए जापानी समाज, राजनीति, इतिहास, सस्कृति और उद्योगधधा के बारे में बताती जा रही थी इस प्रसग में मैं यह बताना चाहूगा कि हमारे देश के गाइडों को अभी बहुत कुछ सीखना है

बाएं जापान के जहाज निर्माण केंद्र का एक भाग दाएं टोकियो का मारूनोची डिस्ट्रिक्ट हाउस जापान का एक बड़ा व्यापारिक केंद्र

•

मैं ने स्वयं इस बात को कलकत्ता और बनारस में देखा है कि हमारे गाइड विदेशियों को कुछ ऐसे स्थानों पर भी ले जाते हैं जो हमारी सरकार, समाज और देश के लिए शोभनीय नहीं हैं दशाश्वमेध घाट पर मैं ने विदेशियों को वहां के भूखेनंगे भिखमगों का फोटो लेते देखा है वे अपने देश में इन का प्रचार करते हैं हमारी सरकार को इस दिशा में विशेष ध्यान रखना चाहिए

टोकियो २३ भागों में विभक्त है शहर के बीच से सुमिदा गावा नदी बहती है और कई नहरें हैं जिन पर खूबसूरत पुल बने हुए हैं शहर का क्षेत्रफल लगभग ८०० वर्गमील है दक्षिण की ओर खाड़ी में सात छोटेछोटे द्वीप भी हैं

जापान में प्रति वर्ष लगभग ५० बार भूकंप का धक्का आता है, लेकिन यहां की आधुनिक और शानदार इमारतों को देख कर इस का आभास नहीं होता

गत महायुद्ध में बमबारी और अग्निकाड से शहर के करीब ९ लाख घर जले या नष्ट हुए आज उस का चिन्ह तक नहीं मिलता जो नए घर बने हैं वे पहले से मजबूत और सुदर हैं गाइड बता रही थी कि यद्यपि हम परिवार नियोजन पर पूरा ध्यान रखते हैं फिर भी हर चौथे मिनट में एक बच्चा पैदा होता है और बारहवें मिनट पर एक व्यक्ति मरता है, वर्ष में तीन साढेतीन लाख की आबादी बढती जाती है

टोकियो दिल्ली, रोम और लदन की तरह प्राचीन नहीं है फिर भी जापान के गौरवमय इतिहास से सबधित है प्राचीन काल में इस का नाम ईदो था तोकुगावा शोगुनों (राज्यपाल) ने इसे १६०३ ई० में अपनी राजधानी बनाया तभी से ईदो का महत्त्व बढा और एक नई सस्कृति का विकास हुआ जो पुरानी राजधानी क्योतो से भिन्न थी मेइजी शासनकाल में १८६४ में ईदो में स्थायी रूप से जापान की राजधानी प्रतिष्ठित हुई

शहर के बीच में राजप्रासाद है नहरों से घिरे करीब २५० एकड के क्षेत्र-फल पर नाना प्रकार के सुदर बागबगीचो के बीच कई महल और भवन ह इतने व्यस्त व्यावसायिक और औद्योगिक केंद्र के बीच होते हुए भी यहा का वातावरण अत्यत शात और सौम्य है घनी आबादी और जगह की कमी के बावजूद शहर के बीच इतने बडे क्षेत्र को महज एक परिवार के लिए छोड रखना सिद्ध करता है कि जापानी अपने सम्राट को व्यक्ति नहीं, देवता मानते हैं और उस के प्रति आतरिक स्नेह और श्रद्धा रखते ह परपरा के अनुसार वे अपने सम्राट को मिकाडो कहते हैं और उसे सूय का पुत्र समझते हैं विश्व में शायद ही कोई सम्राट आज के युग में अपनी प्रजा द्वारा इतना समादृत है

जापानी तौरतरीको से हमें प्रत्यक्ष परिचित कराने के उद्देश्य से हमारी गाइड ने एक जापानी परिवार में हमारे भोजन का कायक्रम बनाया हम सभी यात्री वहा गए जापानी तरीके से भोजन बनते और परोसते देखा शिष्टाचार में भारतीय सस्कृति की छाप निश्चित रूप से लगी है पता नहीं तेल या कि चर्बी, जिस में मछली तली जा रही थी उस की गध से हम पाचों शाकाहारी बधु घबरा गए हमारे अलावा दूसरे अमरीकन और यूरोपीय बडे गौर से पाक कला की बारीकियो को समझने लगे चावल के साथ कुछ घोंघे की तरकारी और छोटी कच्ची मछलियो का समन्वय हमारी रुचि के अनुकल नहीं था

हम न कोकाइन का ज्यूदो हाल देखा ऊचा और बडा सा कमरा था, साजसामान कुछ भी नहीं देखा, जमीन पर तातामी (चटाइयां) बिछी हुई ह जूदो के छात्र एकदूसरे से गुथे हुए ह, जसे अखाडे में पहलवान भिडते हैं जूदो को ज्युज्युत्सु भी कहते हैं यह जापान की अपनी विद्या है अब तो विश्व के विभिन्न देशा में इस के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा रही है क्योंकि बिना हथियार के कवल दाव के इशारे से अपने से कहीं बलवान प्रतिपक्षी पर काबू पा लेना बहुत बडी बात ह इस में शारीरिक बल का महत्त्व नहीं, बल्कि दांवपेंच स्फूर्ति और बुद्धिमानी की जरूरत पडती है

हम यहां का विश्वविद्यालय भी देखन गए सौ एकड जमीन पर यह

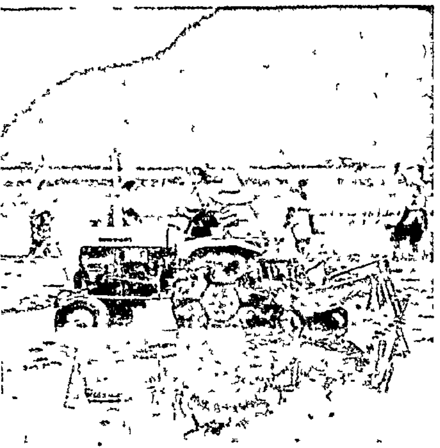

जापान के फार्मों में मशीनों की सख्या बढती जा रही है

स्थित है अनुशासन, शिष्टता और शिक्षा जापान की राष्ट्रीय विशेषता रही है किसी समय हमारे यहां भी यह बातें थीं, इसी लिए जीवन सयम और परिश्रम के कारण आनदमय था आज हमारी शिक्षा पद्धति लडखडा रही है और हमारे छात्रों में नैतिकता और अनुशासन का अभाव हो गया है जापान ने अपनी शिक्षा पद्धति में पाश्चात्य तरीकों को इस ढग से अपनाया है कि राष्ट्र की मौलिकता जरा भी प्रभावित नहीं हुई है विश्व में जापान सर्वाधिक शिक्षित देश है साक्षर नहीं, बल्कि ९८ प्रति शत शिक्षित वहा मिलेंगे जापानी शिक्षा की आधारभूत विधि में लिखा है "हम व्यक्ति की गरिमा का आदर करेंगे तथा सत्य और शाति से प्रेम रखने वाले नागरिक तैयार करेंगे जापान में स्त्रीपुरुष सब को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है"

टोकियो के विश्वविद्यालय में इजीनियरिंग, कानून, अर्थशास्त्र, समाज विज्ञान, कृषि, डाक्टरी एव विज्ञान की ऊची से ऊची पढाई होती है विश्व विद्यालय का फाटक काठ का बना है पुराना तो जरूर है, पर लगता है सुदर अहाते में खेलने का मैदान, जिमनाशियम, तैरने का तालाब और क्लब भी है टोकियो में विद्यार्थी बहुत बडी सख्या में रहते है सरकारी विश्व-

विद्यालय के अलावा सरकारी और अर्ध सरकारी शिक्षा के अन्य केंद्र भी हैं

कलकत्ता के बड़ाबाजार अचल की तरह यहां का व्यावसायिक और अन्य व्यापारिक केंद्र मारूनोची है टोकियो का मुख्य रेलवे स्टेशन, बैंक-इन्स्योरेंस एव व्यावसायिक सस्थाओं के बड़ेबड़े भवन इसी अचल में हैं शहर घूमते हुए हम ने देखा कि लदन की तरह यहां भी भूगर्भ ट्रेनें हैं जो शहर के विभिन्न भागों को एकदूसरे से मिलाती हैं टैक्सियों की कतार तो सड़कों पर चलती ही रहती है हम ने तीन तरह की टैक्सियां यहां देखीं—बड़ी, मझोली और छोटी इन के किराए की दर भी अलगअलग है पता चला कि इन टैक्सी चालकों का व्यवहार बहुत ही शिष्ट होता है मिस्र, रोम या भारत के टैक्सी वालों से बिलकुल अलग

यात्रीबस टोक्यो के युइनो पार्क में रुकी यों तो टोक्यो में बहुत से पार्क हैं अधिकाश स्मारक और मंदिरों के साथ छोटेछोटे उद्यान हैं लेकिन युइनो पार्क इन सब से भिन्न है यह बाग करीब २०० एकड़ जमीन पर बनाया गया है इस में सग्रहालय, पुस्तकालय, साइंस, म्यूजियम और चित्रशाला हैं टोकियो का प्रसिद्ध चिड़ियाघर भी यहीं हैं इन के अलावा तोशुगू का सुदर पैगोडा भी यहीं है

शाम हो चुकी थी हमारी बस हमें गिजा ले आई पेरिस का साएलेजा, लदन की पिकाडिली और न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू की तरह टोक्यो के गिजा की शाम और शान मशहूर है आधुनिक शैली की ऊचीऊची इमारतों को देख कर सहसा भ्रम हो जाता है कि अमरीका के किसी शहर में आ गए हों प्रकाश में नहाती हुई सजी दुकानें और सड़कें, मुसकराते नागरिक, मकानों पर बिजली के तरहतरह के निओन साइन के बड़ेबड़े विज्ञापन सभी एक समां बाध देते हैं तरहतरह की रोशनियों से लगता है कि कोई जादूगर छिप कर इद्रधनुष के खेल दिखा रहा है

जापानियों ने यात्रियों के आकर्षण के लिए पेरिस और हवाई द्वीप की तरह गिजा को सजाया है विदेशियों के लिए जापान की गीशा विशेष सम्मोहन रखती हैं लेकिन केवल इन पर भरोसा न कर यात्रियों के लिए नाइटक्लब और कैबरे आदि भी बड़ेबड़े शहरों में खोल दिए गए हैं हम यात्रीबस के गाइड के साथ थे, इसलिए यह पता नहीं चल पाया कि यहां भी पेरिस और रोम की तरह ठगे जाने का डर है या नहीं

दूसरी शाम को हम पांचों साथियों ने यात्रीबस से ही टोकियो की रात्रि का कार्यक्रम निश्चित किया एक साथ बीसपचीस पर्यटक, यात्रीबस से सैर कर सकते हैं प्रति व्यक्ति ५० रुपए लगे, जिस में रात्रि का भोजन भी शामिल था बस हमें सर्वप्रथम एक जापानी परिवार में ले गई जहां विशुद्ध जापानी तरीके से चाय बना कर दी गई जापान में अदबकायदे से चाय बना कर पिलाना बड़ा महत्त्व रखता है इस से परिवार की कुलीनता की परख होती है चाय की रस्म को चानोयू कहते हैं इस रस्म और कला की शिक्षा के लिए कई शिक्षण केंद्र सारे जापान में है चाहे घर हो या बाग, शात वातावरण हो, चाव से चाय

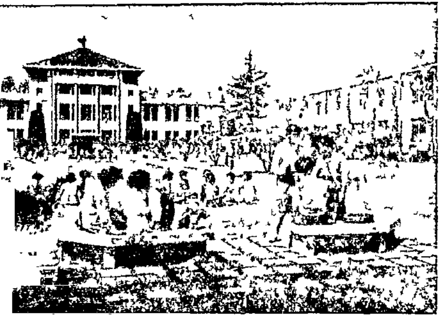

टोकियो विश्वविद्यालय के सामने छात्रछात्राए

बनाई जाए, पी जाए और पिलाई जाए, फिर आनद क्यो न आए, यही इस रस्म की मूल भावना है फिर हम एक कमरे में गए आधुनिक ढग का वातावरण था पाश्चात्य ढग का नृत्य चल रहा था हम पाचो भारतीय साथियो को छोड बाकी सभी विदेशी साथी अपनेअपने लिए जोडी चुन कर नाच में शामिल हो गए हम करते भी क्या? नाचना तो हमें आता नहीं था

हमारे गाइड ने बताया, 'निपोन (जापान) सूर्य का देश है, यहा रात होती ही नहीं रात उन के लिए है जो सोना चाहते हैं" हस कर उस ने कहा,"और जो सोता है वह खोता है दो हजार से भी अधिक नाइटक्लबो में एक लाख से ऊपर सुदरियों के मजमे में आप स्वर्ग को पा सकते हैं" प्रभुदयालजी ने हस कर गाइड से कहा, "हा, भाई, मेरा खयाल है बहुत जल्द ही" हम पाचो हस पडे पर दूसरे यात्री इसे शायद समझ ही न पाए

तीसरा कार्यक्रम था नाइटक्लब का यहा प्रत्येक के लिए एक सुदरी पास आ कर बैठ गई उमडता यौवन, आखो में मादकता और प्याले में छलकती मदिरा! सुगध से पूर्ण वातावरण! हम लोगो के लिए पेचीदा मामला था सुन रखा था कि गीशाए सभ्य और शालीन मनोरजन परपरा में पटु होती हैं पर यहा तो कुछ और ही दिखाई पडा कुछ देर तो हम मौन रहे लडकिया थोडीबहुत अगरेजी जानती थीं फिर प्रभुदयालजी ने इधरउधर की चर्चा छेड दी बेचारी लडकिया हैरान थीं उन से पिता का सा व्यवहार पा कर लडकिया झेंप सी गईं, क्योंकि वे तो अतिथियों को किसी दूसरे ही तरीके से खुश करने की अभ्यस्त थीं और इसी के लिए उन की नौकरी थी हम ने यह विशेष रूप से

पाया कि सभी देशों में नाइटक्लबों में रोशनी बहुत धीमी रहती है ताकि थोड़ी दूर पर बैठे हुए लोग एकदूसरे को पूरी तरह न देख सकें और पहचान भी न पाएं कि ये कौन हैं. गाइड ने हमें बताया कि पिछले महायुद्ध के बाद अमरीकनों के प्रभाव से यहां नाइटक्लबों की बाढ़ सी आ गई है. कभीकदास एकदो अशोभनीय घटनाएं भी होती रहती हैं, हालांकि सरकार की ओर से काफी नियंत्रण रखा जाता है.

नाइटक्लब की लड़कियों को देख कर हमारे मन में गीशाओं के प्रति जो भावना थी उस में कुछ शंका सी होने लगी. हम ने गाइड से अपनी बात कही. पता चला कि ये लड़कियां गीशाओं की मूल परंपरा में नहीं आतीं. अंतर क्या है? गीशा गृह में जाने पर स्वयं अनुभव हो जाएगा

गीशाओं के बारे में हम ने बहुत कुछ सुना था और पढ़ा भी था जापानी सामाजिक जीवन में प्राचीन काल से इन का महत्त्व पूरी तरह रहा है. कला, संस्कृति और सभ्यता के विकास में ये सदैव प्रेरक शक्ति रही हैं. हमारे इतिहास में गुप्तकालीन नगरवधू की तरह उन्हें राज्य और जनता दोनों के द्वारा सम्मान मिलता रहा है. सपन्न और कुलीन परिवारों की कन्याएं भी सगीत एव कला सीखने के लिए इन्हीं के पास भेजी जाती थीं. शिष्टाचार और बातचीत के तौरतरीके की बारीकियां गीशाएं सिखाती थीं

आज भी यह परपरा जारी है. सामुराई (सामंत) युग गीशाओं के प्रभाव और समृद्धि का समय था. आधुनिक काल में भी जापान के धनिक व्यापारी, व्यवसायी एवं उद्योगपति गीशाओं से सबध रखते हैं. समाज में इसे बुरा नहीं माना जाता और न उन की पत्नियों को ही इस में आपत्ति रहती है. वास्तविकता यह है कि गीशा को स्वस्थ मनोरजन का सजीव साधन माना जाता है. हम गीशा गृह पहुचे. किमोनो में सजी गीशाएं गुड़ियों जैसी लग रही थीं. हम बीसपचीस यात्री थे और वे थीं सातआठ, सभी किशोरावस्था की युवतियां थीं, केवल एक प्रौढ़ा थी जो गृह सचालिका थी रात के बारह बज रहे थे. हवा में ठडक थी नाइटक्लब के वातावरण से जो घुटन महसूस हुई थी वह यहां आ कर दूर हो गई. मखमल की सी मुलायम चटाइयों पर तीनचार की टोली में बैठ गए गीशाएं हमारे पास बैठीं. हम ने देखा गृह सचालिका का अनुशासन बहुत ही सधा हुआ था. लड़कियां बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ हमारी खातिरदारी करने में लगी हुई थीं. चायनाश्ता के साथ तरहतरह की चर्चा हुई. माध्यम टूटीफूटी अगरेजी ही थी. प्रत्येक गीशा जापानी के अलावा एकदो विदेशी भाषा जानती है. हम ने जानबूझ कर सवाल किया, "हिंदी नहीं बोल पातीं?" बड़ी ही नम्रता से उत्तर मिला, "नमस्ते—जयहिंद." शायद उन की हिंदी की जानकारी इन्हीं दो शब्दों तक थी.

गीशा गृह में ही मुझे पता चला कि जापान में कई लिपियां हैं जिन में हीराकानी और काटाकानी अधिक प्रचलित हैं. फिर भी भाषा की अभिव्यजना के लिए जापानी लिपियां पर्याप्त नहीं हैं. मैं सोचने लगा कि हिंदी की देवनागरी लिपि में भी कई प्रकार के सुधारों की आवश्यकता है जितनी सामग्री

अगरेजी लिपि में टाइप की जाती है उतनी अगर हिंदी में की जाए तो ज्यादा देर लगती है यदि इस के लिए हिंदी प्रेमी कुछ सुधार कर सकें तो एक महत्त्व-पूर्ण सेवा होगी

नाश्ते के बाद आधा घटा जापानी और अगरेजी गाने हुए शिष्टता के नाते हम सिर हिलाहिला कर दाद तो दे रहे थे, पर समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था भारतीय गायन की तुलना में ये मुझे हलके ही लगे गायन के बाद नृत्य शुरू हुआ गीशाए हाथ में पख ले कर दाएबाए थोडा झुकती थीं और ताल के साथसाथ मुड जाती थीं इस के बाद एक और नाच हुआ जो हमारे यहा के घूमर से बहुत कुछ मिलताजुलता लगा रात के दो बजे यात्री बस से हम अपने होटल गिजा लौटे

कमरे में आ कर हाथमुह धोए पाच घटे के सफर से थकावट होनी स्वाभाविक थी टोकियो की खाडी से आती हुई हवा ताजगी दे रही थी खिडकी से बाहर गिजा उस समय भी नियोन साइन की अनेक रगो की रोशनी में जगमगा रहा था

जापान २

क्या कोई एशियाई देश जापान को पछाड सकता है?

एक बार लदन में मेरे एक मित्र ने पाश्चात्य पार्थिव सफलता की चर्चा करते हुए कहा था, 'पूर्व और पश्चिम, दोनों का सगम कभी नहीं हो सकता' बात जची नहीं थी किन्तु मेरे पास उस समय ठोस उत्तर नहीं था जापान के पर्यटन ने मेरी इस समस्या का समाधान कर दिया जापानी जनजीवन का गहराई से अध्ययन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि पाश्चात्य भौतिकवाद और प्राच्य के अध्यात्मवाद का सतुलित समन्वय यहा है

अब तक ओसाका, कोबे और टोकियो देख पाया था टोकियो का हमारा निश्चित कार्यक्रम तो अब तक पूरा भी नहीं हो पाया था ज्योंज्यों जापानी जीवन के विभिन्न पक्षो को समझ रहा था त्योंत्यों इच्छा होती थी कि और अधिक जानकारी प्राप्त करू ताकि स्वदेश जा कर इस सबध में अपने विचार रख सकू समय और विदेशी मुद्रा की कमी रुकावट डाल ही रही थी—साथ ही हमारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम भी कुछ ऐसा बना था कि उस में ज्यादा परिवर्तन करना सभव नहीं था किन्तु हमारे भारतीय दूतावास ने जो कार्यक्रम हमारे पर्यटन के लिए बनाया था उस से काफी सुविधा रही

टोकियो में हमारा कार्यक्रम ओसाका से अधिक व्यस्त रहा जापानी समय के बडे पाबद होते हैं न खुद का समय नष्ट करते हैं और न औरों का, इसलिए हमारा समय कहीं भी व्यर्थ नहीं गया हमारे दूतावास ने ससद देखने का कार्यक्रम बना दिया था सुबह ही हम प्रथम सचिव के साथ भवन देखने गए हालांकि उन दिनो जापान की ससद की बैठके नहीं हो रही थीं फिर भी वहा के स्पीकर और कई सदस्य जो हमारे लिए पहले ही से भवन में उपस्थित थे, बडे स्नेहपूर्वक मिले

ससद को जापान में 'डायेट' कहते हैं ससद भवन अच्छा था पर हमारे ससद की तरह विशाल और भव्य नहीं वाशिंगटन में अमरीकी ससद को छोड कर विश्व का कोई भी ससद भवन हमारे टक्कर का नहीं देखने में आया स्पीकर ने हमारा सत्कार किया और चायजलपान पर बैठे हम ने परस्पर सविधान सबधी जानकारी प्राप्त की

जापानी सविधान का इतिहास हमारे देश की तरह प्राचीन नहीं है हमारे यहा वैदिक काल से राज्य, शासन और नागरिक के अधिकार और आचार के

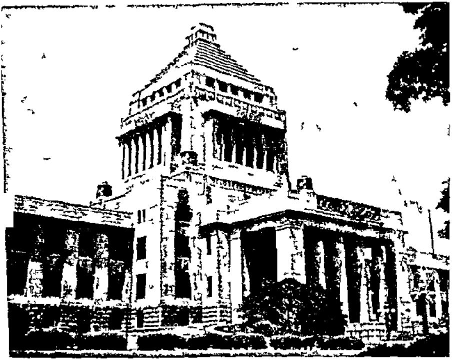

राष्ट्रीय डायेट की इमारत जिस में दोनों सदनों की बैठक होती है

नियम मिलते हैं मनु और कौटिल्य तो इस संबंध में बहुत ही ठोस और स्पष्ट हैं हमारे देश में धीरे-धीरे इसे धार्मिक जामा पहना दिया गया इसलिए नागरिक जीवन में यह न तो स्पष्ट हो पाया और न लोगों की रुचि ही इस के प्रति हुई देश के स्वाधीन होने के बावजूद आज औसत भारतीय स्वदेश के संविधान के प्रति पूर्ववत उदासीन मिलते हैं, परंतु जापान में ऐसी बात नहीं है जापानी संविधान के मनु हैं—सम्राट मइजी सन १८६८ में उन्होंने जापान के संविधान को संपादित कराया और उसे मौलिक रूप दिया गत महायुद्ध (१९३९–४५) के बाद सम्राट हिरोहितो की प्रेरणा से इस में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए इस प्रकार सामंतशाही से इस का रूप जनतांत्रिक हो गया

संविधान के आमुख में लिखा है कि 'हम जापानी चिरस्थायी शांति की भावना की कामना करते हैं स्थितिशील शांति की प्रतिष्ठा के हेतु एवं अत्याचार, दासता, दमन तथा असहिष्णुता को विश्व से सदैव के लिए उन्मूलित करने के निमित्त हम अंतरराष्ट्रीय समाज में प्रतिष्ठित स्थान चाहते हैं" नए संविधान के अनुसार सम्राट को राष्ट्र और जनता का प्रतीक माना गया है भारतीय मान्यता की तरह उस में भी हम ने देखा कि 'मौलिक मानव अधिकार सार्वकालिक और अपरिहार्य हैं'

जापानी संसद में प्रतिनिधि सदन और सलाहकार परिषद हमारी लोक सभा एवं राज्य सभा की तरह हैं शासनाधिकार मंत्री मंडल के हाथों में है और इस के लिए वह संपूर्ण रूप से 'डायेट' के प्रति उत्तरदायी है जापान में सम्राट

की इज्जत तो बहुत है, पर शासन सबधी अधिकार उसे हमारे राष्ट्रपति से कम है प्रधान मंत्री डायेट के द्वारा और सर्वोच्च न्यायाधीश मंत्री मंडल द्वारा मनोनीत किया जाता है. सम्राट केवल नियम एव संधियों पर अपनी स्वीकृति देता है, संसद को आवाहन करने तथा मन्त्रियों की नियुक्ति की औपचारिकता का निर्वाह करता है

स्पीकर तथा सदस्यो से बातें कर हमें बडी प्रसन्नता हुई. वे देश के प्रतिनिधि थे इसलिए उन से बातें करने पर जनसाधारण की प्रकृति एवं रुचि का भी आभास हमें मिल सका. मैं ने यह लक्ष्य किया कि जापानी भले ही पाश्चात्य पोशाक अथवा परिवेश में हों, अपनी मौलिकता, संस्कृति और भाषा को वे भूलते नहीं और न छोडते हैं हमारे यहा ऐसा है कि पाश्चात्य पोशाक और परिवेश में आते ही औसत व्यक्ति तो क्या अच्छे शिक्षित राजनीतिक व्यक्ति भी भारतीय सस्कार और अपनी भाषा के प्रति उदासीन रहते हैं.

संसद देख कर हम अपने होटल नहीं आए. समय कम था अतएव बाहर ही कहीं भोजन कर लेना तय पाया. यूरोप के अन्यान्य देशों की तरह यहा शाकाहारी रेस्तरां सरलता से नहीं मिलते. हम ने सुना था कि टोकियो में एक भारतीय रेस्तरां है. हम वहीं गए. रेस्तरा साधारण और साफ था. वातावरण में भारतीयता थी. भारतीयो के सिवाए कुछ विदेशी भी चाव से इडली, दोसे और सांभर का स्वाद ले रहे थे. रेस्तरा के मालिक श्री नायर वयोवृद्ध हैं और अच्छे व्यवहार-कुशल भी. उन्होंने बताया कि भारतीय मेनू को अपने रेस्तरा में इसलिए रखा है कि टोकियो में रहने वाले भारतीय व्यवसायियो और पर्यटको को सुविधा रहे वैसे, विदेशी भी अच्छी सख्या में उन के यहा आते रहते हैं. रेस्तरां में हिंदी फिल्मी रेकार्ड बज रहा था अपने देश की धुन सुन कर और अपनी रुचि का भोजन पा कर तबीयत में ताजगी आ गई. विदेश में स्वदेश ज्यादा प्यारा लगता है

भारत की तरह जापान में भी कुछ बडेबडे परिवारों के नियत्रण में उद्योग-व्यवसाय हैं. अतर यह है कि ये परिवार सामतशाही व्यवस्था के कारण पहले ही से प्रभावशाली रहे हैं और उस व्यवस्था के अवसान के बाद उन्होने व्यवसाय और उद्योग क्षेत्र को अपना लिया था. हमारे यहा मुख्यत व्यवसायी परिवार ही उद्योगव्यापार का सचालन करते हैं सामतशाही परिवार के लोग रजवाडो के अत के बाद अब भले ही व्यापारव्यवसाय में दोएक आए हो

टोकियो में हम सुप्रसिद्ध मित्सु परिवार द्वारा सचालित रेडियो का कारखाना देखने गए यहीं विश्वविख्यात नेशनल रेडियो और ट्रांजिस्टर बनते हैं. कारखाना अत्यत ही व्यवस्थित था काम स्फूर्ति से हो रहा था और शोरगुल बिलकुल ही नहीं चेहरे पर ताजगी और मुसकराहट लिए आठ हजार लडकियों को हम ने दत्तचित्त काम करते देखा एक बहुत बडे हाल में टेबल की ऊचाई पर सरकती पटरियों (कनवेयर बेल्ट) पर ट्रांजिस्टर एक सिरे से दूसरे सिरे तक बढते जा रहे थे पहले सिरे पर ट्रांजिस्टर के सिर्फ ढांचे रखे जा रहे थे लडकियां कतारों में बैठी थीं. उन के सामने ट्रांजिस्टर ज्यों ही आता वे पुरजे बैठा देती थीं. इस प्रकार एक के बाद दूसरे पुरजे और सूक्ष्म यत्र बैठाए जाते थे. दूसरे सिरे पर ट्रांजिस्टर जब पहुचता था तब पूरा तैयार हो जाता था श्रम और समय की मितव्ययिता

हर मौसम में हराभरा केगोन जलप्रपात और चूजनजी झील

के साथ उपयोग तथा उन की काय दक्षता हमारे लिए नि सदह अनुकरणीय है हमारे दूतावास के साथी ने बताया कि जापान में मजदूरी सस्ती है और कारीगरो की कार्यक्षमता अनुपातत बहुत ही अधिक है इसलिए अन्य देशो की अपेक्षा जापान में काफी कम लागत में चीजें तैयार होती हैं रेडियो की तरह दूरबीन, माइक्रोस्कोप और कैमरे जैसे आवश्यक सूक्ष्म यन्त्रादि भी अन्य देशो की अपेक्षा जापान में काफी सस्ते बनते ह जरमनी प्रसिद्ध 'लाइका' कैमरे को जापानी 'केनोन' की प्रतियोगिता का सामना करना पड रहा है केनोन गुण में लाइका से कम नहीं

हैं और दाम उसके आधे से भी कम हाथघड़ियां भी जापान ने बड़े पैमाने पर बनानी शुरू की हैं, पर इस क्षेत्र में स्विस का मुकाबला अब तक कोई भी देश नहीं कर पाया है

हम ने प्रश्न किया, "क्या अब भी जापानी माल दूसरे देशों की अपेक्षा हलका बनता है?" उत्तर मिला, "युद्ध के पहले हमारी नीति दूसरी ही थी पर अब हमें अपनी साख की फिकर है यही कारण है कि अमरीका जैसे देशों में जहा केवल सस्तेपन का महत्त्व नहीं के बराबर है, जापानी माल की खपत बढ़ती जा रही है"

टोकियो के उत्तर में करीब ९० मील की दूरी पर निक्को और चूजनजी झील जापान का विशेष आकर्षण है जापान में यह बहुत ही रम्य स्थल माने जाते हैं अपने यहा एक कहावत है, 'गढ तो चित्तौडगढ़ और सब गढ़ैया' कुछ इसी प्रकार जापानी कहावत है, 'केक्को (सुदर) मत कहो जब तक नेक्को न देखो' मतलब यह कि सुदर क्या है इस का पता तो नेक्को देखने पर ही हो सकता है पर स्विट्जरलैंड की लेक जिनेवा या काश्मीर की डल झील से नेक्को का मुकाबला नहीं है

जापान में आवागमन के अच्छे से अच्छे साधन है अत ९० मील की दूरी हमें अखरी नहीं ६० मील की रफ्तार से ट्रेन हमें ग्राम्याचल के बीच से लिए जा रही थी ओसाका से टोकियो तक के सफर में हमने देखा था कि खेती पर जापानी विशेष ध्यान देते हैं और अपनी जमीन को जरा भी परती नहीं छोडते इस यात्रा में देखा कि खेती के साथ सब्जी और फलो की बागवानी को भी जापानी किसानों ने उद्योग के रूप में अपना लिया है हमारा देश कृषि प्रधान रहा है किंतु खेती को उद्योग के रूप में आज भी हमारे यहां गभीरतापूर्वक नहीं अपनाया गया है इसलिए हमें विदेशों के अनाज और खाद पर निर्भर रहना पड़ता है

नेक्को का मदिर दो सौ एकड के एक सुरम्य उद्यान के बीच है जापान में हम ने कई मदिर देखे पर अपने यहां के मदिरो की तरह प्रभावपूर्ण नहीं लगे किंतु नेक्को का मदिर वहां के मदिरो में सचमुच सुदर लगा यह लगभग ५०० वर्ष पुराना है पता चला कि इयोयासु की स्मृति में उन के पुत्र ने यह बुद्ध मदिर बनवाया था इयोयासु का नाम जापान में बडी श्रद्धा से लिया जाता है नेक्को के मदिर की ऊचाई ज्यादा नहीं है किंतु कलापूर्ण कारीगरी और दीवारों के आकर्षक रगों की चित्रकारी दर्शनीय है परतु रोम के सेटपीटर और वेटिकेन के सिस्टन चपल आदि देख लेने के बाद इस में दर्शको को खास आकर्षण नहीं रहता हा, चेरी के फूलों से झुके वृक्षों की हरियाली के बीच घूमते देख हृदय नैसर्गिक सौंदय से विभोर हो जाता है

यहां से बहुत पास ही चूजन की बडी झील है टोकियो से लोग यहा छुट्टियां मनाने आया करते हैं मोटर बोट, नाव और डोंगियों की दौड़ें भी यहां खूब होती ह हम भी एक मोटर बोट में बैठे झील के पानी को चीरती हुई हमारी बोट लहरो पर उछलती हुई इतनी तजी से आगे बढ़ने लगी कि मुझे ऐसा लगा कि कहीं कोई दुघटना न हो जाए किंतु यहां के बोट चालक इतने प्रवीण होते हैं कि शायद ही इस प्रकार के मौके आते हो

झील के पास ही हम ने केगान का जल प्रपात देखा. इसे नीचे से देखने के लिए पहाड़ में करीब चार सौ फीट की सुरंग काट कर रास्ता बनाया गया है. लिफ्ट से उतरना पड़ता है. एक बड़ा चबूतरा सा बना है, जहां से ऊंचाई से गिरते हुए प्रपात को बखूबी देखा जा सकता है. यहीं से पास ही एक पहाड़ी की चोटी तक रोपवे लगाया गया है लोग इसी रोपवे से चोटी पर जा कर दूर से प्रपात के सुंदर दृश्य को देखते हैं. हम भी वहां गए. सध्या का समय था. ढलते सूर्य के प्रकाश में लग रहा था प्रकृति केसरिया रंग प्रपात में घोल कर सूर्य को विदाई की अंजलि दे रही है.

हमारे राजदूत श्री लालजी मेहरोत्रा ने दूतावास भवन में रात्रिभोज का आयोजन किया था. दूतावास में आवास के साथ पीछे की ओर एक सुंदर बाग भी है. आमन्त्रित लोगों में स्थानीय कई एक प्रमुख व्यक्ति थे. भारतीय वातावरण में अपनी रुचि के भोजन को पा कर भूख खुली. लालजी से बातचीत में आनद आया. उन्हें जापान के व्यापारी पक्ष का बहुत अच्छा अनुभव है राजदूत नियुक्त किए जाने के पूर्व वे भारतीय वाणिज्य परिषद् के अध्यक्ष भी रह चुके थे उन के सहयोग से भारतीयों को व्यापार में वहा काफी सहूलियतें मिलती रही हैं

भोजन के दौरान में जापान के शिल्पोद्योग के विस्तार की चर्चा के प्रसंग में श्री मेहरोत्रा ने बताया कि बड़ेबड़े उद्योगो के साथसाथ कुटीर शिल्प एव दस्तकारी को भी जापान में प्रोत्साहन दिया जाता है इसी कारण यहां बेकारी की समस्या नहीं है. ग्राम्यांचलो में भी कुटीर शिल्प और उद्योगो के कारण कृषक परिवारो को खाली नहीं बैठना पड़ता है. जीवन का स्तर हमारे यहा से काफी उन्नत है और अपराध भी कम होते हैं देहातो में भी मकानों में टेलीविजन सेट हैं. किसानो के घर के अहाते में मोटरसाइकिल और कपड़े धोने की मशीनें भी हैं.

जापान और भारत दोनो की तुलना करते हुए मैं यह सोच रहा था कि हम कहते तो हैं, 'सही विश्वास, ज्ञान और चरित्र मोक्ष मार्ग हैं' पर इस के अनुसार आचरण नहीं करते आज के युग के साथ सही दिशा में यदि हम बढ़ें तो प्रकृति ने जितना हमें दिया है, उस का उपयोग कर हम भी विश्व में जापान की भाति प्रतिष्ठित हो सकते हैं. भोजन के उपरात हम होटल लौटे–रात हो चुकी थी. गिजा रगबिरगी बत्तियो के प्रकाश में अभी अपनी शाम की शुरुआत की तैयारी कर रहा था सडको पर घूमते हुए लोग हसतेमुसकराते चले जा रहे थे लगता था सभी पर एक ही रग है 'आसु अरि सोइयु नाकारे' कल की बात मत करो

दूसरे दिन हम हवाई द्वीप के लिए रवाना हो गए. बहुत इच्छा होने पर भी नेताजी सुभाष बोस की समाधि और नगराज फ्युजियामा को नहीं देख सके पहले से ही यात्रा का कार्यक्रम बना लेने से जहा अनेक सुविधाएं हैं वहा कभीकभी निराशा भी कम नहीं होती. क्योंकि बहुत से दर्शनीय स्थान छूट जाते हैं. राहुलजी के अनुसार यात्रा का असली आनद तो घुमक्कड़ वृत्ति में है. जहा समय, स्थान और साथी किसी का बंधन नहीं होता. फिर भी ७ दिनो की दौड़धूप में जापान को जितना देख और समझ सके, उस से स्वदेश के लिए हमें एक अनमोल संदेश मिला कि 'श्रम ही जीवन है और आलस्य मृत्यु.'

घने जंगल और सूखे पहाड़ों के प्रति आकर्षण ही क्या होता कि जहाज चालक लंगर डालते यदि कभी कोई उन तक पहुंच भी गया तो फिर वह उन्हीं का हो गया, लौट कर स्वदेश नहीं पहुंचा

जो भी हो, कैप्टेन कुक की परिक्रमा के पूर्व तक आधुनिक संसार हवाई द्वीप से परिचित नहीं था इन की लोक कथाओं में इन की उत्पत्ति का इतिहास हमारे यहां के वनवासियों—संथाल, भील और मुंडा—से साम्य रखता है इन की संस्कृति और सभ्यता भी बहुत कुछ मिलतीजुलती है हां, रूपरंग और शारीरिक गठन में अंतर अवश्य है रहनसहन और जीवनस्तर में तो कोई समता ही नहीं है यह जान कर तो आश्चर्य चकित हो जाना पड़ता है कि ६,४०० वर्ग मील के क्षेत्रफल का यह छोटा सा द्वीपसमूह, जो हमारे यहां के मणिपुर प्रदेश का केवल दो तिहाई ही होगा, आज विश्व के सब से समृद्ध और संपन्न अंचलों में से एक है दुनिया से दूर गहरे प्रशांत की ऊंची लहरों के बीच बसे इन टापुओं में प्रति व्यक्ति की औसत आय संसार में सर्वाधिक है—कैलिफोर्निया से भी अधिक

विमान की खिड़की से झांक कर नीचे देखा—बादलों की एक बड़ी चादर के ऊपर से वह उड़ रहा था हम हवाई द्वीप के करीब पहुंच रहे थे दूर पर नील सागर की गोद में भूरीभूरी धुंधली सी छाया स्पष्ट होती जा रही थी यही है हवाई द्वीप समूह का एकमात्र शहर—होनोलूलू नीले सागर की गोद में हरी सी चादर ओढ़े होनोलूलू मुसकरा रहा था

टोकियो से होनोलूलू की तीन हजार मील की यात्रा में जेट से पांच घंटे लगते हैं लेकिन हम जिस दिन चले थे, उस से एक दिन पहले ही पहुंच गए, यानी ३० जुलाई को चले और पहुंचे २९ जुलाई को बात अटपटी सी जरूर लगती होगी, पर है सही शायद विद्यार्थी जीवन में आप ने भी पढ़ा होगा कि पश्चिम से पूर्व की ओर मध्यांतर रेखा पार करने पर २४ घंटे का बचाव हो जाता है मन ही मन सोचने लगा कि काल के चक्र से अपनी आयु में एक दिन बढ़वा लिया स्वयं अपनी ही कल्पना पर मुसकरा उठा इसी बीच विमान जमीन छू चुका था

वायुयान की सीढ़ियों से उतरते हुए देखा कि सामने सुंदरियों की टोलियां स्वागत के लिए खड़ी हैं गले में ताजे, लाललाल फूलों की माला और होंठों की लाली मानो आपस में ही होड़ कर रही हों हाथ के गिलासों में छलकता अनन्नास का रस, आंखों में तैरती मादकता और स्नेह भरा अभिवादन लगा कि प्रशांत की लहरों पर से नाचती हुई हवा की एक लहर कानों में कह गई, 'हवाई है, हवा नहीं लग जाए, ध्यान रखना!'

नाना रूपरंगों की युवतियां थीं—गौर वर्णा, ताम्र वर्णा और कृष्ण वर्णा मंगोली आंखें हैं तो आर्य नाक और रंग ताम्र का है बड़ीबड़ी आंखें हैं, गौर वर्ण है तो होंठ उभरे हुए और मोटे से हैं मतलब यह कि सांचे में ढले अंग हैं—स्वस्थ, सुंदर और सुडौल, आधे दिखाई देते उभरे उरोज और पुष्ट शरीर हों भी क्यों न! कहा जाता है कि यहां ३६ जातियों की मिश्रित संतानें हैं दारासिंह से लगते पुरुषों की भी यहां कमी नहीं इन का चौड़ा सीना और हवाई कमीजों से कसरती बांहों की झांकती मछलियां बरबस इन की ओर ध्यान खींच लेती थीं

हवाई की विशेष 'लाओ' दावत का एक दृश्य

और विस्तृत समुद्र होने के कारण न तो यहां कभी ज्यादा गरमी पड़ती है और न सर्दी ऋतुराज का साम्राज्य वर्ष भर अखंड रहता है, इसी लिए ताप नियंत्रण की आवश्यकता रहती ही नहीं

सुबह का नाश्ता कर हम अपने अगले कार्यक्रम पर विचार कर रहे थे भारतीय विदेश मंत्रालय ने हमारी प्रस्तावित यात्रा की सूचना पहले ही से दे रखी थी इसी बीच वहां की भारतीय अवैतनिक काउंसिलर श्रीमती वाटूमल का फोन आया कि वह आ रही हैं थोड़ी देर में वह पहुंच गईं श्रीमती वाटूमल अमरीकन हैं उन्होंने प्रसिद्ध धनकुबेर श्री वाटूमल के छोटे भाई, जिन का देहांत हो चुका है, से विवाह किया था अपनी शानदार बड़ी शेव कार को स्वयं ड्राइव कर रही थीं और होनोलूलू के बारे में बताती भी जा रही थीं हमें वहां के सब से बड़े बैंक के अर्थशास्त्री श्री जानसन से मिलना था

उन से बातचीत के दौरान मालूम हुआ कि हवाई द्वीप की आमदनी का सब से बड़ा जरिया गन्ने की खेती है इस के बाद क्रम है यात्री व्यवसाय और विदेशी प्रतिष्ठानों के विज्ञापनों का और तब अनन्नास की खेती का अमरीका के

जल और स्थल सेना के प्रशिक्षण केंद्र भी यहां हैं और ये भी इन की आय के अच्छे स्रोत हैं इस प्रकार आठ लाख की आबादी के इस द्वीप समूह की प्रति व्यक्ति औसत आय विश्व में सर्वाधिक है

श्री जानसन से बात करने के बाद हम होनोलूलू के 'डौल' कारखाने में गए अनन्नास का यह विश्व में सब से बडा कारखाना है इस में करीब आठ हजार लडकियां काम करती हैं अनन्नास के इस के अपने खेत हैं यहां वैज्ञानिक तरीके से फसल होती है प्रवेश शुल्क बहुत साधारण लगा हम ने कारखाने के विभागों को गाइड के साथ देखा जहां कहीं भी जाते, अनन्नास का रस गिलासों में भर कर दिया जाता था हम ने जितना शुल्क दिया था उस से कहीं अधिक का तो रस ही पी गए कारखाने की व्यवस्था का सचालन भी एक महिला करती हैं उन से उत्पादन और सगठन सबधी जानकारी प्राप्त की बातचीत के दौरान उन्हें जब पता चला कि हम अपने देश के ससद सदस्य हैं तो उन्होंने बहुत मना करने के बावजूद प्रवेश शुल्क वापस लौटा दिया

यहां के कारखाने की व्यवस्था और सगठन ने हमें बहुत ही प्रभावित किया बाहर आ कर हम ने एक मजे की बात देखी कि कारखाने के ऊपर अनन्नास का एक बहुत बडा माडल है जिस की ऊंचाई ५० फीट और घेरा भी प्राय उतना ही है दिन भर घूमने के बाद शाम को हम अपने होटल पहुचे आपस में विचारविनिमय करने लगे कि आठ लाख की आबादी वाले इस देश में केवल विदेशी यात्रियों से उन्हें सौ करोड रुपए प्राप्त होते हैं मोटे तौर पर प्रति व्यक्ति की औसत आय यात्री व्यवसाय से ही तेरह सौ रुपए वार्षिक है, जब कि हमारे देश में, जहां ऐतिहासिक वैभवों से पूर्ण आकर्षण के स्थल है, इस व्यवसाय से प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक आय केवल आठ आने ही है कारण स्पष्ट है कि यात्रियों के लिए जो सुख और साधन यहां उपलब्ध हैं, वे हमारे देश में कल्पनातीत हैं हमारी सभ्यता, सस्कृति और आचारविचार की कसौटी पर इन की चर्चा तक करना सभव नहीं है जो भी हो, विदेशों से, खास कर जापान, अमरीका और यूरोप से, यात्रियों का ताता यहां वर्ष भर बधा रहता है

अरब के धनकुबेर शेख भी होनोलूलू की शोखियों पर करोडों रुपए न्योछावर करते रहते हैं अमरीकनों की सख्या सब से अधिक है कारण भी है इस के पीछे आज अमरीका का जीवन इतना अधिक यांत्रिक हो गया है कि अमरीकनों को अपने देश में न तो अवसर है, न अवकाश प्रकृति से दूर, अस्वाभाविक जीवन व्यस्त भागदौड, इस की प्रतिक्रिया का प्रभाव शरीर और मन पर पडना स्वाभाविक है उन में से अधिकाश के पास साधन हैं, इसलिए वे कुछ समय के लिए भाग निकलते है और हवाई के मौज तथा बेफिक्री के वातावरण में आ कर कुछ दिनों में ही देह और मन को पा जाते हैं यहां पर हर कौम को हर काम की छूट है, लोग अपने पद, मानसम्मान, मर्यादा, सभी का बधन तोड कर बिलकुल बजारी जीवन बिताने लगते है हम ने देखा कि समुद्रतट के अलावा बाजार और दुकानों तक में अमरीकन तरुणियां बिकनी (केवल छोटा सा कटिवस्त्र और चोली) पहने निस्सकोच घूम रही है

होनोलूलू में प्रकृति का आकर्षण है तो देह का उस से भी ज्यादा पेरिस और वेनिस दोनों यहा मिलते हैं धनी पुरुष आते हैं, नारी के सुडोल शरीर और रूप पर मोहित हो कर और ससार के धनकुबेरो की पत्निया, तरुणिया और प्रौढा विधवाए आती हैं, पुरुष के सुगठित, मासल, बलिष्ठ और भीमकाय देह के आकर्षण पर यही कारण है कि यहा जातियो का अपूव मिश्रण हुआ है आश्चर्य तो यह है कि इस के बावजूद हवाई की परिवार व्यवस्था, जीवन प्रवाह और वहा के लोगों की शारीरिक क्षमता में विशेष अतर नहीं आया है

इस का कारण यह लगता है कि सेक्स को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मान कर वहा के स्त्रीपुरुष दोनो ने ही उसे सहज भाव से ग्रहण कर लिया है दूसरा कारण शायद यह भी है कि आज के कृत्रिम जीवन से ऊबे हुए लोगो की थकी देह और मुरझाए मन को यहा वाले केवल अतिरिक्त आय के साधन और थोडे समय के मनोरजन के रूप में लेते हैं सैलानियों के साथ उन का कोई भावात्मक या स्थाई सबध नहीं बन पाता अरबो और हबशियो के अलावा दूसरे औसत व्यक्ति इन के पौरुष और बल के मुकाबले में बहुत ही हलके ठहरते हैं शाम को विश्व प्रसिद्ध वाइकिकी समुद्रतट पर टहलने गए वहा हजारों जोडे विविध प्रकार के आमोदप्रमोद में सलग्न थे इन में से अधिकाश तो हमारी सभ्यता की लक्ष्मण रेखा से बहुत दूर निकल गए थे अगर आप को सकोच हो तो आप यहा से भले ही हट जाए, उन को तो आप की उपस्थिति का ध्यान शायद ही हो पाता हो

होनोलूलू की बडी आमदनी यात्रिक व्यवसाय से है, इसलिए इस के अनुरूप ही इस को सजाया गया है एक जगह सात तल्ला जलपानगृह देखा जिस के ऊपर का तल्ला घूम रहा था आप एक जगह बैठ कर नाश्ता करते हुए चारों तरफ का दृश्य देख सकते हैं साफसुथरी चौडी सडकें, करीने से लगाए

हुए बाग, बडेबडे स्टोर्स, होटल, मोटरबोट, नाइट क्लब आदि यही तो होनोलूलू हैं अमरीका और यूरोप के बडे से बडे उद्योगपतियों को यहा मशालों की मद रोशनी में होलू नाच करते देखा जा सकता है.

दूसरे दिन हम श्री वाटूमल से मिलने गए सतहत्तर वर्ष की उमर में भी उन में युवकों का सा उत्साह है और अपने २६ स्टोरों की यह स्वय देखभाल करते हैं पद्रह वर्ष की अल्पावस्था में यह भारत से साधारण नौकरी पर फिलीपाइन आए थे कुछ वर्षों बाद यहा आ कर उन्होंने अपना छोटा सा स्टोर कर लिया आज विश्व के प्रमुख धनियो में उन को गणना है उन की व्यापारिक शाखाए दूसरे अनेक देशो में हैं और भारत के सैकडों युवक उन के स्टोरो औ शाखाओं में काम करते हैं विश्व प्रसिद्ध 'वाटूमल ट्रस्ट' के यह सस्थापक हैं इस ट्रस्ट के द्वारा अनेक विद्यार्थियों को विभिन्न देशो में उच्च शिक्षा मिलती है उन्होंने बडे प्रेम से हमारा स्वागत किया और भारत की विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चा करते रहे यह अपने घर भोजन के लिए आग्रह करते रहे पर हमारे पास समय का अभाव था इसलिए नहीं जा सके

बडेबडे होटलों, क्लबो और विद्युत प्रकाश के रहते हुए भी कृत्रिम स्वाभाविकता की तलाश में यहा लकडी और पत्तो के झोपडे बना कर उन में तेल की मशालो की धीमो रोशनी में लोग खाते और नाचते रहते हैं एक जगह देखा कि लोग समूचे सूअर को लबी लोहे की सींक में पिरो कर भून रहे थे हमें तो यह दृश्य बहुत ही बीभत्स लगा पर दूसरे यात्री चाव के साथ उस के चारो तरफ खडे थे इन सब बातो को देख कर ऐसा लगा कि सभ्यता की चोटी पर पहुच कर भी मनुष्य अपने आदिम स्वभाव को नहीं भूल पाता है

तीसरे दिन हमें वहा से कैलिफोर्निया के प्रसिद्ध शहर लौस ऐंजेलस जाना था हवाई अड्डे पर आते हुए पर्ल हारबर को भी देखने गए जापान, चीन और पूर्व एशिया पर नियत्रण रखने के लिए अमरीका ने इसे बहुत से बडबडे युद्धपोतो से सुसज्जित किया था और विश्व में यह अजेय माना जाता था, पर १९४१ में एक दिन अचानक ही जापानी हवाई जहाजो ने इस पर हमला कर के बहुत से जहाजो को डूबा दिया बची हुई कुछ सामग्री आज भी वहा के म्यूजियम में रखी हुई हैं इस समय फिर से अमरीका ने यहा बडा नौशिक्षण केंद्र स्थापित किया है जहा हजारो नाविक शिक्षा पा रहे है

तीन दिन में होनोलूलू में जो कुछ देखासुना, उस को मन पर विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएं होनी स्वाभाविक ही थीं ऐसा लगा कि हमारे देश की ब्रह्मचर्य, सयम, त्याग और तपस्या की मान्यताओं को ये लोग अनियत्रण, भोग और विलास में लीन रह कर एक प्रकार से चुनौती सी दे रहे है

इन के व्यक्तिगत सामाजिक जीवन को निकट से देखने और समझने की बडी इच्छा थी पर उस के लिए हमारे पास साधन और सुविधा का अभाव था हवाई जहाज में बैठा हुआ सोचने लगा कि क्या वास्तव में ये सुखी है? सब प्रकार से साधन सपन्न होने के बावजूद न तो ये कोई विवेकानद या रवींद्र ही दे पाए है, न आइस्टाइन या रसल ही

कैलिफोर्निया

हालीवुड की चमचमाहट : डिजनीलैंड का वचपन

होनोलूलू से जेट विमान हमें लौस ऐंजेल्स लिए जा रहा था २३०० मील की यात्रा थी पान अमरीकी एयरवेज के हवाई जहाज यों ही काफी आरामदायक होते हैं, फिर हवाई द्वीप आनेजाने वाले तो और भी आकर्षक लगते हैं क्योंकि छुट्टियां मनाने वाले यात्री ही अधिकाशत इन में सफर करते हैं

साथ के प्राय सभी यात्री होनोलूलू में छुट्टिया बिता कर तरोताजा और प्रसन्न थे मुझे भी बडी प्रसन्नता थी कि इस बार की विश्वयात्रा में अभिनव देशो और संस्कृतियो को देखने का सुअवसर मिल पाया नीचे प्रशात की लहरो की तरह मन आनद में हिलोरें ले रहा था जेट विमान हमें कैलिफोर्निया ले जा रहा है यह विश्व के समृद्धतम देश समुक्त राज्य अमरीका का सर्वाधिक विकसित और उन्नत अचल है सुना और पढा भी था कि इस वीरान मरुस्थल और पहाडी अचल को श्रम से सवार कर नदन वन बना दिया गया है मैं सोच रहा था, क्या हमारा राजस्थान भी श्रम और लगन से दूसरा कैलिफोर्निया नहीं बन पाएगा? इस का प्रचलित व लोकप्रिय नाम स्वर्ण प्रदेश (गोल्डन स्टेट) है आज से करीब १५० वर्ष पूर्व रेगिस्तान, पत्थर, काटो के जगल और दलदल की इस भूमि को कौन जानता था कि वह हिरण्यगर्भा है! •

कहते हैं कि भगवान जब देता है तो दोनो हाथो से देता है कैलिफोर्निया के लिए यह बात सही रूप से लागू हुई भटकते हुए राहगीरो को एक दिन यहा पीले चमकते पत्थर बडी सख्या में दिखाई पड़े कनक को पहचानने में देर न लगी और इस की खनक प्रशात से सुदूर अटलाटिक महासागर के किनारों तक पहुची फिर तो अमरीका और यूरोप के कोनेकोने से स्वर्ण सचय के लोभ में कैलिफोर्निया की वीरान काटेदार मरुभूमि में लोगो के आने का ताता बध गया जिधर देखो, लोग जमीन खरीद रहे हैं और फावडे व कुदाली चला रहे ह कुछ ही समय के अदर वहा की जमीन का मूल्य दस डालर प्रति एकड से बढ़ कर १००० डालर प्रति एकड़ हो गया इतिहास में यह घटना *'Gold Rush'* 'सोने की दौड़' के नाम से विख्यात है

प्रकृति उसे ही देती है जो पान का अधिकारी है नाना प्रकार के कष्ट, बाधाए और विपदाए सह कर लोगो ने कैलिफोर्निया को आबाद किया और थोडे समय में ही यह अच्छाखासा व्यवसाय और वाणिज्य केंद्र बन गया शायद

प्रकृति इन्हें और भी पारितोषिक देना चाहती थी एक दिन अनायास ही उस में अपने भूगर्भ तेल का सधान बता दिया फिर तो तेजी से बडेबडे उद्योगपति और व्यवसायी देशविदेश से कैलिफोर्निया में आ जुटे. दिन दूने और रात चौगुने तेल के कुए खोदे जाने लगे प्रचुर माता में अशेष तैलस्रोत मिले फिर एक बार जमीन खरीदने की होड लग गई और दाम फिर १०० गुने बढ गए सुदूर प्रांतों से लोग अपना घरद्वार, मकानव्यवसाय, सब बेचखोचकर पूजी के लिए कैलिफोर्निया में जमीन और तेल के कुए खरीदने दौड पडे

अमरीकी इतिहास और साहित्य में इस घटना के मनोरजक वर्णन भरे पडे हैं उस समय कैलिफोर्निया के प्रति लोगों के झुकाव का सहज अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि कुछ समय में ही १०० रुपए की जमीन १० लाख में बिकने लगी प्रसिद्ध अमरीकी उपन्यासकार अप्टन सिक्लेयर ने अपनी 'तेल' रचना में इस का बडा ही रोचक वर्णन किया है

मेरे बगल में एक भारीभरकम अमरीकी बैठे थे होनोलूलू का खुमार अब भी उन पर था हवाई पोशाक पहने हवाई सुदरियों के चित्रों से मन बहला रहे थे एकाएक उन्होंने झाक कर खिडकी के बाहर देखा और मुसकरा कर कहने लगे, "स्वप्न लोक गया, अब तो अपना देश .." कहते हुए एक हवाई लडकी के चित्र को बडी हिफाजत से एक किताब के जैकेट में रखा और उसी किताब से अपनी बीवी की तसवीर निकाल कर वालेट में लगा ली

मैं मुसकरा उठा, कहने लगा, "भाई, स्वप्नलोक की बातें यहीं रहने दें क्योंकि अगर हमारी और आप की बीविया उन्हें जान पाए तो नींद हराम कर देंगी" हम दोनो हस पडे

उतरने के पहले हम दोनों ने एकदूसरे को अपनेअपने घर आने का निमत्रण दिया मिस्टर वीवर ने कहा, "आप का न्यौता स्वीकार है मगर समय का वादा नहीं कर सकता, लेकिन आप से तो वादा ले सकता हू क्योंकि आप तो हमारे शहर ही जा रहे हैं" मैं ने वचन दिया और हम वायुयान के दरवाजे से बाहर निकले

मैं ससार के कई आधुनिक देशों में जा चुका था यूरोप और जापान के विभिन्न शहरों में स्वचालित सीढियों पर तो कई बार चढनेउतरने का मौका लगा था पर लौस ऐंजेलस में तो हवाई जहाज से बाहर जो पैर रखा तो देखा कि यहा सीढी नहीं, रास्ता ही चल रहा है, मैं खुद क्या चलू? यही व्यवस्था अमरीका के बडेबडे हवाईअड्डों पर मिली यहा हवाई जहाज एयर टर्मिनल के बराबर लग जाते हैं और यात्री स्वचालित रास्ते द्वारा कार तक अनायास ही पहुच जाते हैं

लौस ऐंजेलस कैलिफोर्निया के दक्षिणी छोर पर बसा हुआ यहां का सब से बडा शहर है इस के एक ओर प्रशात महासागर की लहरें टकराती हैं और दूसरी ओर राकी पर्वतमाला की शृखला है शुरू में यह शहर लौस ऐंजेलस नदी के किनारे प्यूवलो नाम के चौक के आसपास बसा धीरेधीरे इस का विकास चौतरफा होता गया और इस प्रकार कई उपनगर बसते गए जिन में पासातेना सब से बडा है अब तो कलकत्ते की तरह यह कई नगरों का समूह है फर्क यह है कि कलकत्ता के सूतानटी, गोविंदपुर, चितपुर और चिगरीहट्टा इत्यादि एक होकर इस तरह घुलमिल गए हैं कि इन का नाम मुहल्लों के बतौर रह गया है जब कि लौस

लौस ऐंजेल्स का एक व्यस्त मार्ग

ऐंजेल्स के हालीवुड, वेलिंगटन, लांगबीच, सेंट मोनिका और बेवरली आदि एक होने पर भी अपना अलग अस्तित्व रखते हैं. इस प्रकार यहां के नगरनिगम की कुल जनसंख्या लगभग ३० लाख है.

होनोलूलू से ही लौस ऐंजेल्स में अपने आवास के लिए हम ने व्यवस्था कर ली थी. अतएव एयरपोर्ट से उतरते ही सीधे पूर्वनिश्चित होटल के लिए रवाना हुए. होटल लगभग १३ मील की दूरी पर था. एक खास बात यह देखने में आई कि यहां आवागमन के लिए दो प्रकार की सड़कें हैं : एक थोड़ी दूर के सफर की और दूसरी लंबे सफर की, जिस पर साठसत्तर मील प्रति घंटे की रफ्तार से कम गाड़ी नहीं चला सकते. सड़कों पर मोटरों का जमघट और विभिन्न प्रकार की बनावटें देख कर चकित और मोहित सा हो जाना पड़ा. हमारे देश में आम तौर पर तीनचार तरह की ही कारें हैं लेकिन यहां तो सैकड़ों तरह की छोटीबड़ी विभिन्न आकारप्रकार की मोटरें बहुत बड़ी संख्या में देखने में आईं. साधारणतया अमरीका में सभी चीजें अन्य देशों की तुलना में महंगी हैं लेकिन जहां तक मोटरों और पेट्रोल का सवाल है, ये चीजें और देशों से सस्ती, भारत की अपेक्षा तो कहीं अधिक सस्ती हैं. हमारे देश में नई इंपाला कार १० लाख रुपए में मुश्किल से ही मिलेगी जब कि अमरीका में इस मजबूत तेज और आकर्षक गाड़ी का मूल्य केवल १३००० के करीब है. दो वर्ष की चली हुई गाड़ी तो बड़ी आसानी से ढाईतीन हजार तक अच्छी हालत में मिल जाती है. यही कारण है कि औसतन यहां प्रति २.५ व्यक्ति पर एक कार है,

जब कि हमारे देश में प्रति ३५०० व्यक्ति पर एक बात और ध्यान देने की है कि अमरीका में धनी व्यक्ति ड्राइवर नहीं रखते क्योंकि ड्राइवरों के काम के घंटे निर्धारित होते हैं और वेतन है कम से कम २००० रुपए प्रति मास।

इस बार अब तक की यात्रा में विदेशी मुद्रा की कमी के कारण हम द्वितीय श्रेणी के होटलों में ठहरते आए लेकिन अमरीका में निजी संपर्क के कारण हम ने प्रथम श्रेणी के होटलों में ही अपने आवास सुरक्षित कराए— लौस एंजेल्स में हम सुविख्यात शेरेटन होटल में ठहरे होटल क्या था, सुख और आराम का प्रतीक दरवाजे के अंदर पैर रखते ही मुलायम गलीचे का फर्श, हर कदम पर जैसे धंसे जाते हों संपूर्ण होटल में इसी प्रकार मुलायम रोएदार गलीचे का फर्श बिछा था कमरों में उत्तम कोटि के फर्नीचर, टेलीफोन के अलावा टेलीविजन सेट भी थे कर्मचारियों की शालीनता विनयशीलता और तत्परता के कारण यात्रियों को इस बात का अनुभव ही नहीं हो पाता कि वे विदेश में हैं सुख-सुविधा और साधनों की प्रचुरता के कारण ऊंचा खर्च अखरता भी नहीं हम ने यहां यह भी देखा कि दो होटलों किंग हिल्टन और शेरेटन में इस बात की होड़ रहती है कि यात्रियों को अधिक से अधिक सुविधा कौन दे सकता है

स्नान के लिए गुसलखाने में गया आदमकद शीशा, मोटे रोएदार बड़ेबड़े तौलिए दूध से सफेद साथ ही देखा, वजन का एक छोटा सा यंत्र भी रखा था मैं मुसकरा उठा, भला इस इंद्रपुरी में वजन किस का घटेगा? शायद अमरीकी अपने स्वास्थ्य के प्रति इतने चौकस होते हैं कि शरीर के घटते या बढ़ते वजन पर नियंत्रण रखना आवश्यक समझते हैं नहा कर मन प्रफुल्लित हो गया खिड़की के पास खड़ा हो कर धीरेधीरे काफी पी रहा था कि टेबल पर रखे होटल के संस्थापक मिस्टर शेरेटन की जीवनी पर नजर पड़ी उस से पता चला कि अत्यंत साधारण से व्यक्ति शेरेटन ने किस प्रकार ४० करोड़ रुपए कमाए, इतने विशाल होटल के मालिक बने और नाना प्रकार के सामाजिक कार्यों में सहायता दी सहज प्रश्न उठा कि अमरीका पूंजीवादी देश है और पूंजीवाद का महान पोषक भी है

इस प्रकार के उदाहरण यहां एक नहीं अनेक मिलते हैं मैं मन में सोचने लगा कि साम्यवादी देशों में वहां के विधान के अनुसार इनसान चाहे कितना ही योग्य और परिश्रमी हो धनवान और संपन्न तो नहीं बन पाता लेकिन जब कि वहां की सरकार स्वयं प्रत्येक व्यक्ति की सुखसमृद्धि की जिम्मेदारी लेती है तब भी उन का जीवन स्तर यहां के औसत से इतना नीचा क्यों है? क्या वास्तव में व्यक्ति का स्वतंत्र अस्तित्व उस के विचारों और सर्वांगीण उन्नति के लिए अधिक प्रेरक है? दूसरे दिन शहर घूमने का कार्यक्रम था खूब तड़के उठा जुलाई का महीना था वहां जैसा मौसम इन दिनों हुआ करता है उस की अपेक्षा अधिक गरमी महसूस हुई जल्द तैयार हो कर मैंने सुबह का नाश्ता किया और यात्री बस पर जा बैठा

अमरीका नया देश है इसी लिए संसार के अन्य देशों की तरह प्राचीन ऐतिहासिक वस्तुएं और वास्तुकला की विविधता यहां नहीं के बराबर है फिर भी पर्यटकों के लिए यहां का रहनसहन और शिल्पोद्योग के स्थल बहुत आकर्षक हैं लौस एंजेल्स के म्यूजियमों का वर्णन विशुद्ध रूप से देने की आवश्यकता नहीं क्योंकि पेरिस

फिल्मलोक हालीवुड मे एक फिल्म की शूटिंग का दृश्य

थे लुवे, लदन के ब्रिटिश म्यूजियम और लेनिनग्राद के म्यूजियम जैसे ये नहीं है रेस्तरा, दुकानें और क्लब दूसरे अन्य देशो की तरह ही सजेसजाए इन्हें देख कर यह धारणा सहज ही में बन जाती है कि अमरीका और अमरीकन आम तौर से चरम भोगवादी है

शहर में एक खास बाजार देखा इसे 'किसानो का बाजार' कहते है यहा दैनिक आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु एक ही जगह मिल जाती है कैलिफोर्निया प्रदेश में अच्छे किस्म के फल बहुतायत से पैदा होते है कुछ तो जलवायु अनुकूल है और कुछ बडे पैमाने पर नाना प्रकार के प्रयोग कर के फलों की उपज और किस्म बढ़ा ली जाती है लौस ऐंजेल्स तो फलो के व्यवसाय का केंद्र ही है अखरोट, अगूर, बादाम, खुबानी, सतरे, अजीर इत्यादि नाना प्रकार के फल यहा से बाहर भेजे जाते है फलो के बागवानो ने यहा एक सहकारी समिति गठित कर रखी है जिस के कारण बाजार का सतुलन बना रहता है यहा हमारे साथी श्री भुवालकाजी ने एक खजूर का डब्बा खरीदा जिस में तीन इच लबे खजूर थे उन के स्वाद का तो कहना ही क्या?

लौस ऐंजेलस में घूमते समय कलकत्ता और लदन की झाकी मिल जाती है यहा भी एशियाई एव अफ्रीकी प्रवासी है आम तौर पर इन के महल्ले भी अलग-अलग है अपने होटल और रेस्तरा है घर पर रहनसहन का ढग इन्होने अपना मौलिक ही रखा है प्रवासियो में सब से ज्यादा सख्या चीनियो की है जो पीढियो से यहा रहते आ रहे है अपने घर पर अपनी निजी भाषा, सस्कृति और आचारविचार रखते है लेकिन बाहर वालो से अगरेजी भाषा और तौरतरीके से मिलते है जापानी

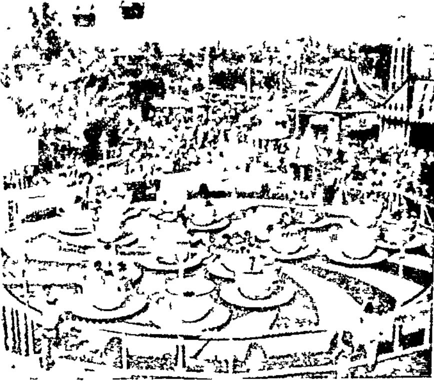

डिजनीलैंड जहा पर सभी बच्चे बन जाते है !

इन से कुछ भिन्न हैं इन्होने अपने को पाश्चात्य सभ्यता के अनुरूप बना लिया है इसलिए ये अमरीकी समाज में अपेक्षाकृत अधिक घुलेमिले पाए जाते हैं

अमरीका में मेरा प्रथम चरण लौस ऐंजेलस था सब से पहले म ने यहा प्रत्यक्ष रूप से नीग्रो समस्या का अनुभव किया यो तो पक्षविपक्ष में काफी पढने और सुनने को मिल चुका था फिर भी यहा तथा अमरीका व अन्य शहरो में जो भी रूप इस समस्या का देखन में आया, उसे म जटिल ही कहूगा

यद्यपि राज्य और सरकार की ओर से उन्हें समान अधिकार दिए गए हैं लेकिन स्पष्टत व्यवहार में एसा नहीं होता गोरे और काले का वण भेद आज भी है हमार देश की वण व्यवस्था से इस की तुलना नहीं हो सकेगी क्योकि भारत में शरीर के रग को ले कर छुआछूत की भावना नहीं रही बल्कि समाज के वग और कम का आधार ही बाधक रहा है इसलिए, रूढिवाद को उखाड कर फेंकने के साथ ही हमारे यहा से छुआछूत का भद स्वत हटता जा रहा ह आश्चय है कि आधुनिक सभ्यता, समता और भ्रातृत्व का आवाहन करने वाले अमरीका में वर्ण भद आज भी पारस्परिक द्वेषाग्नि को धधकाता जा रहा है और इसी कारण मानवप्रेमी राष्ट्रपति केनेडी की निमम हत्या भी हुई

'निगर,' 'नीग्रो' शब्द वहा एक प्रकार से अपमानजनक समझा जाता ह इस में सदेह नहीं कि नीग्रो शिक्षा और आचारविचार में पिछडे ह और इस के प्रति कुछ अशो में इन में रुचि का भी अभाव है साधारणतया ये मोटी मजदूरी का ही काम करते ह शरीर से तगडे होने के कारण इस ढग के काम के लिए हिचकते

नहीं. नई चेतना की लहर ने उन्हें जगाया है और अब इन में भी शिक्षा का प्रसार हो रहा है. नीग्रो समाज ने अच्छे चिंतक और कलाकार दिए हैं. पाल राबसन के संगीत ने पश्चिम को जहां मोह लिया है वहीं मार्टिन लूथर किंग श्रेष्ठ विचारकों में गिने जाते हैं. प्रसिद्ध मुक्केबाज लुई और केसियस तो विश्व में बेजोड़ माने जाते हैं.

हालीवुड लौस एंजेलस का ही उपनगर है. सरकारी तौर पर यह भी देखा. सिनेमा देखने में जितना आकर्षक लगता है उतना स्टूडियो नहीं. वैसे कलकत्ता और बंबई में स्टूडियो देखे थे. यहां स्टूडियो देखने के लिए पहले से मंजूरी लेनी पडती है लेकिन इस तरफ हम तीनों साथियों की खास रुचि नहीं थी इसलिए हम यहां किसी स्टूडियो को नहीं देख पाए. हमें बताया गया कि अमरीकी कलाकार और टेक्नीशियन हमारे यहां से अधिक परिश्रमी और अनुशासन मानने वाले हैं. कहा जाता है कि चोटी के निर्माता और अभिनेत्री ग्रेगरी पेक, आवा गार्डनर या एलिजाबेथ टेलर की वार्षिक आय दोतीन करोड़ तक है. वैसे हमारे यहां भी राजकपूर, दिलीपकुमार और वैजयंतीमाला की वार्षिक आय पचरहबीस लाख की बताई जाती है.

हालीवुड के बाद डिजनीलैंड देखा. एक नई दुनिया में ही पहुंच गया था मैं. वाल्टर डिजनी की कल्पना और सर्जनाशक्ति अद्‌भुत थी. मिकी माउस की कल्पना के साथ एक अभिनवनगरी को बना देना साधारण सी बात नहीं. हजारों की संख्या में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी डिजनीलैंड जाते हैं इस स्थान से बच्चों को विशेष लगाव है

डिजनीलैंड पहुंच कर कहीं आप १०० वर्ष पुराने महल्ले में घूमते नजर आएंगे तो कहीं ऐसी जगह पहुंचगे जहां भविष्य की दुनिया बनेगी वहीं पर आल्प्स की बर्फानी चोटी का आनंद लीजिए तो समुद्र के गर्भ में पहुंच कर वहां के दानवी जीवों को देख लीजिए यहां छुट्टियों में बडी भीड रहती है. हम भी डिजनीलैंड में जा कर अपने को बिलकुल भूल गए बच्चों के कहकहों के बीच एक बार तो मेरा बचपन मुझे मिल गया, यह क्या कम सौभाग्य रहा!

सेनफ्रांसिस्को

अमेरिका का पश्चिमी स्वर्ण द्वार

तीन दिन लौस ऐंजेल्स में रह कर हम चौथे दिन हवाई जहाज से सेनफ्रांसिस्को पहुचे अमरीका में ट्रेन और बसों की यात्रा बडी सुखद रहती है हम लोगो की इच्छा भी हो रही थी कि भूमि का मार्ग ही अपनाया जाए ताकि ग्राम्य अचल की झाकी देखने को मिले मगर यह सभव न था क्योंकि हम ने हवाई जहाज की पृथ्वी परिक्रमा की टिकट पहले ही से बुक करा ली थी जिस से बिना अतिरिक्त व्यय के सैकडो शहर देख जा सकते है इस प्रकार ट्रेन या बसो की यात्राओं का खर्च बच जाता था और समय की भी बचत हो जाती थी

सेनफ्रांसिस्को अमरीका के स्वर्ण प्रदश का 'स्वर्णद्वार' के नाम से विख्यात है वास्तव में है भी अमरीका विश्व का सर्वाधिक धनी, समृद्ध और उन्नतिशील राष्ट्र है, जिस में कैलिफोर्निया का अचल सर्वोपरि है इस महानगर की महत्ता का एक और भी कारण है विश्व का सर्वोत्तम बदरगाह होने के कारण अमरीका के पश्चिमी तट पर यह आयात और निर्यात का बहुत बडा केद्र है समुद्रगामी सैकडो जहाज यहा एक कतार में आसानी से महीनो तक रुक सकते है इसलिये जहाज निर्माण का उद्योग भी यहा काफी उन्नत और विकसित है

लौस ऐंजल्स की तरह यह जगह भी पहले वीरान थी आदिवासियो की बस्तिया कहींकहीं थीं प्रसिद्ध भूपयटक सर फ्रासिस ड्रक १५७९ ई० में यहा आए थे उन के जहाज ने यहा से जरा और उत्तर की ओर लगर डाला था आज भी वह स्थान ड्रक की खाडी कहलाती ह उन के नाविको न जिस स्थान पर नए देश की खोज में खुशी मनाई थी और प्रकृति का आभार माना था वह शहर की एक पहाडी पर है और बडा ही रमणीय स्थल है यहा पर ४० फोट का एक क्रास उस घटना की यादगार में बनाया गया है इसी क्रास के नीचे से दोनों तरफ बहते झरने बहुत मनोरम लगते है

पाश्चात्य दशो में यात्रियो की सुविधा और आराम का हर प्रकार ध्यान रखा जाता है औसत अमरीकी की यह इच्छा रहती है कि उस के देश को विदेशी यात्री जानने और समझने की कोशिश करें इसी लिए जब भी जरूरत पडती है वह आगे बढ कर सहयोग दन को प्रस्तुत रहता है अमरीका जाने के पूव हमारे लिए बिरला प्रतिष्ठान ने आकलड के विश्व प्रसिद्ध कैजर फर्म को सूचना भज दी थी कजर विश्व में अल्युमिनियम किंग माने जाते ह भारत में बिरला

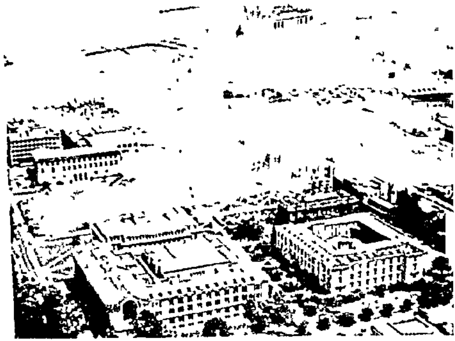

सागर तट पर स्थित बर्कले हिल पर निर्मित सेनफ्रांसिस्को का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय

प्रतिष्ठान के साझे में इन्होंने रेणुकूट में अल्युमिनियम का एक बहुत बड़ा कारखाना स्थापित किया है.

लौस ऐंजेल्स की तरह सेनफ्रांसिस्को भी कई द्वीप और पहाड़ियों का नगर है. शहर प्रमुख रूप से आकलेंड और सेनफ्रांसिस्को की बस्ती में अर्धचंद्राकार रूप में बसा है. इस महानगर का क्षेत्रफल लगभग ४६ वर्ग मील है. पहाड़ियां, खाड़ी, झील, झरने, कुंज और बागबगीचे की प्राकृतिक शोभा ने इसे संसार के बड़ेबड़े शहरों से निराला बना दिया है.

मुसीबतों से मजबूती मिलती है और जिंदगी में ताजगी रहती है. सेनफ्रांसिस्को में कई बार अग्निकांड, भूकंप,लूटमार और आक्रमण हुए. एक के बाद एक आपदा आती ही रही, जिन्हें इस नगर ने झेलीं, मगर विचलित न हुआ. आज इस के चौड़े राजमार्गों पर गगनस्पर्शी प्रासाद इस की दृढ़ता, वैभव और शान का परिचय दे रहे हैं. नागरिकों पर भी इन घटनाओं का प्रभाव रहा है. इसलिए वे भी साहसी, उद्यमी और प्रसन्न हैं. यहां का वातावरण लंदन, लिवरपूल, हेग, हामबुर्ग और पेरिस से अधिक आकर्षक और सर्वथा भिन्न लगता है.

हमारा सब से पहला कार्यक्रम कैंजर प्रतिष्ठान देखने का था. हिम्मतसिंहका, भुवालका और मैं—तीनों वहां गए. कार्यालय आकलेंड में ३२ मंजिल के विशाल भवन में है. लेकिन वहां हमें बहुत ही थोड़े कर्मचारी काम करते दिखाई पड़े. मिस्टर कैंजर उस दिन कहीं बाहर गए थे इसलिए हम उन के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट से मिले. उन्होंने हमारा सहर्ष स्वागत किया और जलपान कराया. हमारे देश के बारे में पूछते रहे. वे दो बार भारत आ चुके थे. रेणुकूट में

कारखाने की स्थापना के अवसर पर उन्हें यहां के ग्राम्य अचलों को देखने का भी मौका मिला था

दूसरे दिन निश्चित कार्यक्रम के अनुसार कैंजर प्रतिष्ठान के मिस्टर विलियम की कार से हम घूमने निकले उन्होंने हमें आकलेंड, सेनफ्रासिस्को का उद्योग-क्षेत्र बडी अच्छी तरह समझाते हुए दिखाया या तो यहां प्राय सभी प्रकार के उद्योग हैं, कलकारखाने भी बहुत हैं कलकत्ते, बबई, कानपुर या हमारे देश के अन्य बड़े शहरों की तरह कारखाने आवासक्षेत्र में नहीं बल्कि शहर से हट कर हैं यहां के प्रमुख उद्योगो में पेट्रोल रिफाइनिंग, सूखे फल, डब्बे बद सब्जिया, फल और मास, रोटी-बिस्कुट, टिन और उस के डब्बे, लोहेइस्पात, रगरोगन, प्रेस और प्रेस मशीन, शराब तथा जहाज निर्माण उल्लेखनीय हैं

इस के बाद हम ने प्रमुख शिक्षण केद्रो को देखा शिल्पोद्योग का केंद्र और प्रचुर साधन उपलब्ध होने के कारण यहां नाना प्रकार की शिक्षण सस्थाए हैं आधुनिक ज्ञानविज्ञान के अध्ययन के लिए कलकत्ता, बबई, बनारस और दिल्ली की तरह यह महानगर अमरीका में प्रसिद्ध हैं यहा के कालिज सेनफ्रासिस्को विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं, जिन में कई मेडिकल कालिज, ला कालिज और अध्यापको के कालिज हैं शहर के शोरगुल और भीड से दूर सागर तट पर बर्कले हिल्स की गोद में सेनफ्रासिस्को का विश्वविद्यालय अत्यत मनोहर परिवेश में है महामना मालवीयजी के काशी हिंदू विश्वविद्यालय में गोधूलि के बाद जैसा शात और सौम्य वातावरण यहा मिला माइनिंग के शिक्षण और अपने पुस्तकालय के ग्रथ सग्रह के लिए यह विश्वविद्यालय बेजोड समझा जाता है यहां का स्टेडियम भी कम आकर्षण नहीं रखता प्राचीन रोमन परपरा का आधुनिकीकरण इस की वास्तुकला में बडी सफलता से किया गया है स्टेडियम में लगभग ७२,००० लोग आसानी से बैठ सकते हैं कार्यक्रम खत्म होने पर दसबारह मिनट में ही स्टेडियम खाली हो सकता है अतरराष्ट्रीय महानगर होने के कारण विश्वविद्यालय में विदेशों के छात्र भी अच्छी सख्या में है

इसी प्रकार आकलड की पहाडी पर मिल्स कालिज है यहा केवल महिलाए विविध विषयों की शिक्षा प्राप्त करती हैं पावोआल्टो में स्टानफोर्ड विश्वविद्यालय तथा आक्लड क पास सट मेरी विश्वविद्यालय है सेनफ्रासिस्को का गोल्डन गट ब्रिज विश्वविख्यात है आकलेंड से सेनफ्रासिस्को को यह पुल जोडता है लगभग ४,२०० फीट लबा है इसी के नीचे से बडे-बडे जहाज गुजरते हैं पुल के ऊपर से शहर बडा सुदर और सजीला लगता है

शहर में आवागमन के अच्छे साधन हैं फिर भी पुराने ढग की ट्रामो को चलती देख हमें आश्चर्य हुआ हमारे यहा इन्हे बबई और दिल्ली से हटा दिया गया लेकिन यहा के नागरिक अपनी पुरानी ट्रामो की बडे शौक से सवारी करते हैं पर्यटक तो इन में बैठ कर शहर घूमना अधिक पसद करते हैं क्योंकि इस प्रकार वे नगर का काफी हिस्सा कम खर्च में आसानी से देख पाते ह हमें बताया गया कि ससार में सब से पहले ट्राम यहीं चली थी अतएव पुरानी होने पर भी इन्हें वे 'सुवेनियर' क बतौर कायम रखना चाहते हैं

हम घूमते हुए कँचे महल्ले में पहुचे यह यहा का चाइना टाउन है

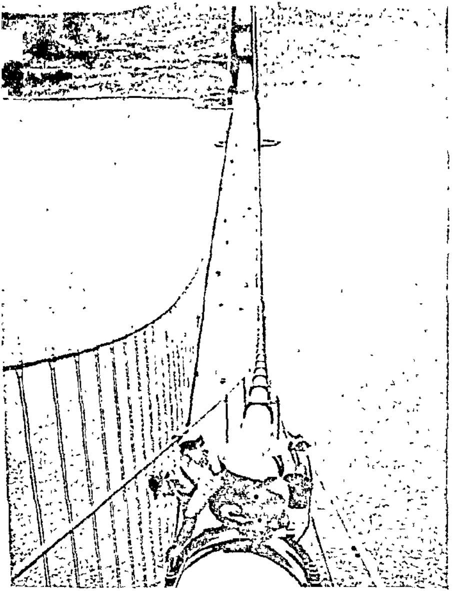

सेनफ्रांसिस्को की खाड़ी और पृष्ठभूमि को जोड़ता हुआ गोल्डन गेट ब्रिज

कलकत्ते के चाइना टाउन से कहीं अधिक बसा हुआ और साफ है. इन के अपने स्कूल, चर्च, दुकानें, रेस्तरां और होटल हैं. चीनी ढंग के भोजन और मनोरंजन में रुचि रखने वाले लोग यहां आते हैं. पूछने पर पता चला कि पीढ़ी दर पीढ़ी ये यहां बस गए हैं. अब चीन से इस का कोई संबंध नहीं. यह भी पता चला कि मादाम सूंग जो तायवान के मार्शल च्यांग काइ शेक की पत्नी हैं, यहीं की हैं. लगभग १५० वर्ष पहले जब सेनफ्रांसिस्को में यूरोपियन बसना प्रारंभ कर रहे थे, इन चीनियों के पूर्वज खेतीमजदूरी के लिए ठेके पर लाए गए थे. शुरू के दिनों में इन की पुरानी आदत और संस्कार के अनुसार जुए, अफीम

तस्कर व्यापार, मारपीट की वारदातें इन महल्लों में होती रहती थी पर अब तो ये घटनाएं नहीं के बराबर हैं. अच्छे डाक्टर, होटलों के मालिक, व्यापारी और शिक्षक इन में से हैं कलकत्ता और यहा के चीनियों में अतर लगा. यहां के चीनी अमरीकी राष्ट्र और समाज के अग जिस रूप में बन गए हैं, हमारे यहां के उतने नहीं बन पाए हैं कलकत्ता के चीनी न हिंदी अच्छी तरह बोल पाते हैं और न बगला ही वे स्थानीय जीवन और समाज से अलग से रहते है.

अमरीकी जनसख्या में नीग्रो लोगों का अनुपात अच्छाखासा है. सेनफ्रांसिस्को में भी ये काफी सख्या में हैं. इन का महल्ला अलग ही है. पूर्वी लदन के स्लम्स सा अथवा बहुत कुछ कलकत्ते के वेलेजली अचल से इन के महल्ले लगे इन के जीवन स्तर और सामाजिक दशा के अपेक्षाकृत अतर के सबध में हम ने अपने मित्र मिस्टर विलियम से प्रश्न किया उन्होंने बताया कि ये भी हमारी ही तरह अमरीकी हैं. गुलामी प्रथा के अनुसार तीनचार सदी तक अमरीका के विभिन्न प्रदेशों से नीग्रो आते रहे. उन्हीं की ये सतान हैं गुलामी प्रथा का दमन और अत हमारे यहा इस शताब्दी के आरभ तक कर दिया गया था हम चाहते हैं कि ये हमारी ही तरह उन्नत हों फिर भी ऐसा हो नहीं पा रहा है सस्कारगत इन की प्रवृत्तिया कुछ विचित्र और रूखी हैं आपस में लडनाझगडना तो मामूली बात है बलात्कार की इन की प्रवृत्ति ही इन्हें हमारे समाज से दूर रखती है. किसी भी गोरी महिला को हम अकेले इन के साथ निरापद नहीं समझते

लौस एंजेल्स में हम ने सुना था कि कुछ चोटी की अमरीकी अभिनेत्रिया अपने साथी के रूप में बलिष्ठ नीग्रो रखती हैं शराब के नशे में वे कभीकभी इन्हें पीटते भी हैं फिर भी इन का साथ वे नहीं छोडतीं लाखों रुपए वर्ष में इन की सुखसुविधा के लिए खर्च करती हैं अमरीकी नीग्रो में कई जातिया हैं विशालकाय, बलिष्ठ और मोटेमोटे होंठों के नीग्रो को देखने पर एक प्रकार का आतक सा अनुभव हो उठता है आम तौर से अमरीकी नीग्रो का रग अफ्रीका के नीग्रो से काफी हलका होता है इन में कई तो ऐसे भी होते हैं कि लगता है कि भारत के हैं

तीसरे दिन सेनफ्रांसिस्को के इडियन ट्रेड कौंसिल में हम गए बहुत दिनों बाद हमारे देश के विभिन्न समाचारपत्र यहा देखने को मिले ट्रेड कौंसिल हमारे देश के वाणिज्यव्यापार के हित एव सवर्धन के निमित्त विदेशों के बडेबडे व्यापार केंद्रों में स्थापित किये गये हैं यहा के कौंसिल ने हमें समुद्रतट के एक प्रसिद्ध रेस्तरा में लच दिया रेस्तरा एक बडे बोट पर था बातचीत के सिलसिले में भारतीय निर्यात की अमरीका में स्थिति और भारत के प्रति अमरीकी सरकार के रुख इत्यादि की चर्चा हुई इस में कोई सदेह नहीं कि हम शिल्पोद्योग में अभी अमरीका से वर्षों पीछे हैं फिर भी यहा के बाजारों में हमारी दस्तकारी की काफी इज्जत और माग है इसलिए हमारी चीजों के लिए अच्छा बाजार है लेकिन जो शिकायत हम ने अन्य स्थानों में सुनी वही यहा भी कि हम स्तर ठीक नहीं रखते, पैकिंग भी हमारा दोषपूर्ण होता है जिस से माल खराब हो जाते हैं या टूट जाते हैं.

लच में हमारे सामने जब कतरे फलों के साथ उबले अडे की दो फांकों पर

सेनफ्रांसिस्को की 'मुवेनियर' ट्राम को घुमाते हुए यात्री व चालक

सजा कर पेश किया गया तो भुवालकाजी और हिम्मतसिंहकाजी ने अर्थभरी दृष्टि से देखा मैं स्वयं ही इसी संकट में था कि कैसे बताऊं कि अंडे के स्पर्श से ही ये सुस्वाद सब्जी अब हमारे लिए ग्रहणीय नहीं रही ऐसी ही एक घटना पेरिस में हुई थी. उस की याद आ गई मैं ने हंसते हुए कहा कि अब हमारे जयपुर के सरकारी दूध वितरण केंद्रों में भी निरामिष अंडे मिल रहे हैं लेकिन हम तीनों अभी तक उस स्तर के निरामिष भोजी नहीं हो पाए हैं पश्चिम में अंडे को दूध के स्तर का निरामिष समझते हैं सही है, लेकिन अभी तक हम इस बात को नहीं अपना सके हैं मेरी अटपटी सी बात पर सब हंस पड़े और हमारे लिए दूसरी सब्जियां फौरन मंगाई गईं

भारतीय व्यापार सचिव से हम ने स्थानीय भारतीय प्रवासियों के बारे में जानकारी प्राप्त की इस शताब्दी के शुरू में पंजाब से कुछ सिख पश्चिमी अमरीका में कनाडा तथा कैलिफोर्निया के अंचल में आ कर बस गए थे बढ़ईगीरी और खेती के मजदूरी के काम ये करते रहे और अपने मितव्ययी स्वभाव और मेहनत के कारण इन के पास कुछ पूंजी भी जमा हो गई अब तो इन में से कई संपन्न और धनाढ्य हैं कितनों के पास तो सैकड़ों एकड़ जमीन है, जहां यांत्रिक खेती होती है बच्चे और इन की संतान अब अमरीकी नागरिक हैं इन्हीं प्रवासियों में एक तो अमरीकी सीनेट में भी हैं लेकिन अब भारतीयों के आगमन पर पहले जैसी छूट नहीं है उन के लिए एक कोटे के अनुसार नए आने वालों की संख्या निश्चित कर दी गई है आम तौर से वैवाहिक संबंध इन में आपस में ही होते

है लेकिन कभीकभी अमरीकियो से भी हो जाते हैं हमारी इच्छा थी कि हम इन के बीच जा कर नजदीक से इन से परिचित हो लेकिन शहर के बाहर देहातो में जाना पडता और कार्यक्रम के अनुसार इस के लिए समय नहीं था

भारत से प्रति वर्ष काफी सख्या में विद्यार्थी सयुक्त राज्य अमरीका के विभिन्न शहरो में अध्ययन के लिए जाया करते हैं सेनफ्रासिस्को में हम ने ऐसे विद्यार्थियों को देखा इन में लडकिया भी हैं हमें यह जान कर बडी खुशी हुई कि ये पढते हैं और फुरसत के समय काम भी करते हैं शहर के ताज आफ इंडिया में भारतीय ढग के भोजन के लिए गए थे यहा एक भारतीय महिला को काम करते देखा साडी पहने हुए थी मैं ने पूछा कि आप किस प्रात से आई है? अपनी भाषा सुन कर लगा कि वह प्रसन्न हुई अधिकारी से चद मिनटों की छुट्टी ले कर पास आ गई उस ने बताया कि उत्तर प्रदेश की हैं और अपने पति के साथ यहा आई हैं पति माइनिंग पढ़ रहे हैं और वह स्नातकोत्तर समाज विज्ञान पति पत्नी दोनो काम भी करते हैं इस प्रकार प्रत्येक को ६० रुपए की आय प्रति दिन हो जाती है कई भारतीय छात्रछात्राए इस तरह पढ़ती और काम करती हैं आश्चर्य हुआ कि अपने देश के हो है ये फिर कलकत्ता, बबई, दिल्ली और मद्रास में ऐसा नहीं दिखाई देता, क्यों? शायद हमारे यहा का वातावरण अभी श्रम की मर्यादा के अनुकूल बन नहीं पाया है

सेनफ्रासिस्को का विकास योजना के अनुसार हुआ है इसलिए सडके और मकान करीने से बने हैं पेरिस की तरह यहा भी चौडी सडके हैं दोनो ओर की चौडी पट्टियो पर लगे ऊचेऊचे पेड, अपने पीछे आकाश को छूते हुए भवनो को देख कर, पत्तिया हिला कर पूछते से लगते हैं कि हमें प्रकृति ने इतना ऊचा बनाया पर तुम्हे किस ने? सडक के बीचोबीच चौडी सीधी पट्टी एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाती है इन में हरी दूब के गलीचे पर रगबिरगे मौसमी फूलों के पौधे तो मानो सौंदर्य की छटा बिखेरते हैं

यह शहर मुझे लौस ऐंजेल्स से ज्यादा शानदार लगा यहा प्रकृति हसती है, लोग हसते हैं यों तो यहा के सिविक सटर में बहुत से दर्शनीय स्थल हैं जिन में सिटी हाल, पब्लिक लाइब्रेरी, स्टेट बिल्डिंग और ओपेरा प्रसिद्ध हैं म्यूजियम आफ एथ्रोपोलोजी और स्टीनहार्ट एक्वेरियम मुझे अच्छे लगे इस ढग के म्यूजियम हमारे देश में भी बनें तो बडे उपयोगी सिद्ध होगे म्यूजियम आफ एथ्रोपोलोजी प्राक् ऐतिहासिक युग से आज तक के सभी जीव विज्ञान से सबधित है जीवों के माडल उन के स्वाभाविक और प्राकृतिक परिवेश के बीच रखे गए हैं इन के सबध में आवश्यक जानकारी और साहित्य भी उपलब्ध है एक्वेरियम में बबई के तारापोरेवाला के सग्रह से कहीं अधिक सामुद्रिक जीवजन्तु देखने में आए

सेनफ्रासिस्को अपने बागबगीचो के लिए अमरीका में प्रसिद्ध है शहर में ५४ बागबगीचे हैं जिन का कुल क्षेत्रफल ४,६३५ एकड है इन में सब से प्रसिद्ध गोल्डन गेट पार्क है तीन मील लबे और डेढ मील चौडे इस पार्क का क्षेत्रफल १,०१८ एकड है पार्क में कई सग्रहालय, स्मारक, पक्षीगृह, मत्स्यशाला, सगीत गृह और शिशु उद्यान हैं इस के अलावा स्टेडियम, टेनिसकोर्ट, फुटबाल और क्रिकेट ग्राउड तो हैं ही! पार्क के स्टेडियम में एक साथ एक लाख दर्शक बैठ

सकते हैं. यह स्टेडियम सभी अंतरराष्ट्रीय खेलों के लिए है जिस में मोटर दौड़ भी हुआ करती है. सागर तट के इस पार्क की हरियाली और विस्तार दुनिया में बेजोड़ है.

किसी ऊंचे मकान की छत से सेनफ्रांसिस्को को देखना चाहता था. स्टेट बिल्डिंग के सब से ऊपर की मंजिल से सेनफ्रांसिस्को देखने का सौभाग्य हुआ. शाम हो चुकी थी. बत्तियां जगमगा रही थीं. नियोन साइन के तरहतरह के विज्ञापन रंग बिखेर रहे थे. नीचे देखा, गाड़ियां खिलौने से छोटी. आदमी की तो बात ही क्या? अमरीकी नीग्रो, रेड इंडियन, चीनी किसी की भी पहचान नहीं. दूर पर देखा, स्वर्णद्वार का सेतु दीपों की माला पहने दूर उस पार क्षितिज में अदृश्य हो रहा है.

शिकागो

मोटर की तरह दौडता मोटर सिटी

लौस एंजेल्स और सेनफ्रासिस्को के अनुभव ने स्पष्ट कर दिया था कि अमरीका वास्तव में नई दुनिया है प्राच्य, मध्यपूर्व अथवा पाश्चात्य देशो की तरह अमरीका में ऐतिहासिक एव सास्कृतिक पृष्ठभूमि और गहराई नहीं के बराबर है इतिहास यहा बन रहा है, सस्कृति पनप रही है, साहित्य मज रहा है अमरीका इन तीनो की एक विशाल प्रयोगशाला है आने वाला समय इस के बारे में बता सकेगा अभी कुछ कहना या निर्णय पर पहुचना कठिन है

इसी भावना से मैंने अमरीका को देखा वैसे हमारी इस यात्रा का उद्देश्य था, वहा के औद्योगिक विकास का अध्ययन हमारा वायुयान तेजी से पश्चिम से पूर्व की ओर बढ रहा था प्लेन में बैठा मैं अमरीका का साहित्य पढ़ रहा था तेल, अल्युमीनियम और सिने उद्योग में अग्रणी कैलिफोर्निया की यात्रिक व्यवस्था के सिवा केमिकल उद्योग में बढ़ाचढा नियाग्रा डेट्रियोट मोटर निर्माण में माहिर, वाशिंगटन विश्व की राजनीति का सचालक, न्यूयाक विश्व की शाति और सुरक्षा के लिए सयुक्त राष्ट्र सघ के रूप में राष्ट्रो की सम्मिलित चेष्टा का केन्द्र और शिकागो? शिकागो सभी प्रकार के उद्योगव्यापार के लिए प्रसिद्ध है वैसे अडे, मास, गल्ले और पशुओ की तो विश्व में सब से बडी मडी है

हम यहा के ओडहियर हवाई अडडे पर उतरे हमारे लिए तो लौस एंजलस और सेनफ्रासिस्को के मकान ही काफी ऊचे थे यहा तो कुछ और ही नजारा नजर आया ऐसा लगा कि मानो ऊचाई की होड लगा कर मकान बनाए गए हैं सडको पर गाडिया इतनी बेशुमार ह कि समय बचाने के लिए लोग आमतौर पर हेलीकाप्टर से एयर पोर्ट पर आतेजाते ह

शिकागो में हमारे व्यावसायिक सबध थ इसलिये ठहरने की और घूमने की अच्छी व्यवस्था हो गई हम तीनो साथी कोनाड हिल्टन होटल में ठहरे यह विश्व का सब से बडा होटल है होटल क्या है एक अच्छाखासा शहर कहिए हमारे यहा के अशोक, ग्राड, ग्रट ईस्टन की इस से तुलना ही नहीं की जा सकती १७ मजिलो का विशाल और प्रशस्त प्रासाद, प्रत्यक मजिल पर दो सौ कक्ष कुल मिला कर तीन हजार कमरे और कक्ष ह जिन में सुखसुविधा के सभी साधन सहज उपलब्ध थे कहीं दावतें हो रही ह तो कहीं देशविदशों की एक नहीं अनेक कान्फ्रेंसें चल रही हैं फिर भी व्यवस्था और प्रबध में कहीं भी शिथिलता नहीं हम ने देखा

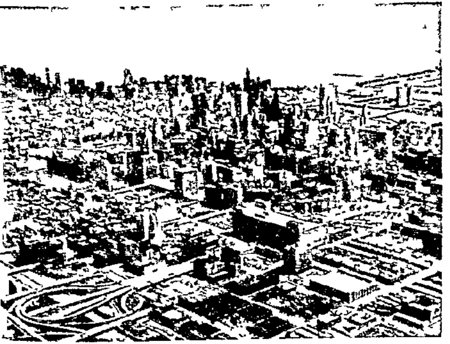

शिकागो शहर का एक विहगम दृश्य

कि अस्थि विशेषज्ञो की एक कान्फ्रेंस चल रही है विभिन्न देशों के चिकित्सक आमत्रित थे उन का विषय हमारी समझ के बाहर था लेकिन उन की लगाई गई प्रदर्शनी ने हमें अवश्य आकृष्ट किया कृत्रिम हाथपैर और अगुलिया लगा कर विकलांग मनुष्य को काफी हद तक सुविधा हो जाती है 'पगु गिरि लघे' आश्चर्य की बात नहीं लगती

साधारण व्यक्ति के लिए हमारा होटल एक प्रकार से आधुनिक भूलभुलैया ही था अलगअलग हिस्सों के लिए अलगअलग लिफ्टें थीं मैं एक बार यो ही कौतूहलवश एक लिफ्ट पर चढ गया पड गया चक्कर में कहीं दूसरी ओर ही जा पहुचा वहा से काफी देर बाद अपने कमरे में आ सका परेशानी की हालत में चद्रकाता उपन्यास के अय्यारी महलों की याद आ गई

यो तो पाश्चात्य में होटल व्यवसाय काफी उन्नत है लेकिन अमरीका में इसे चरमोर्क्षत कहना अत्युक्ति नहीं होगा यहा होटलों में विभिन्न प्रकार की दुकानें हैं हजामत बना लीजिए, हमाम में गुसल कर लीजिए, चाहें तो बैले, सिनेमा देख लीजिए, नाचने की इच्छा हो तो नाच लीजिए नभ, जल, थल किसी भी यात्रा के लिए टिकटें मिल जाएगी विश्व के किसी भी कोने से टलीफोन से बात कर लीजिए सारी सुविधाए हैं रेडियो तो पुरानी बात है, टलीविजन हर कमरे में उपलब्ध है अगर कुछ चाहिए तो अगुली से बटन छू दीजिए, पल भर में आप की ख्वाहिश पूरी

शहर घूमने निकला मकानो की ऊचाई इतनी है कि देखने से गरदन

बढ़ने लगेगी बीसपचीस मंजिलों के मकान तो यहां आमतौर पर हैं ही पचाससाठ मंजिल के भी कुछ हैं हम ने पूछा कि आखिर यह ऊंचाई की होड क्यों? उत्तर मिला कि शहर में विस्तार की गुंजाइश कम है जमीन की कीमत बहुत है आबादी तेजी से बढ़ रही है उस अनुपात में आवास की आवश्यकता है इसी लिए आसमान की ओर बढ़ने के सिवा दूसरा रास्ता नहीं है मैं ने मन ही मन सोचा कि यही रोग तो हमारे कलकत्ते को लगा है और शौकिया छूत दिल्ली को भी

हम ने मिशिगन एवेन्यू पर पायोनियर भवन को बनते देखा १७ करोड रुपए की लागत से बन रहा था काम इतनी तेजी से चल रहा था कि देख कर दग रह जाना पडा सोचने लगा कि अमरीकन जीवन में गति का महत्त्व बहुत है यूनाइटेड अमरीका और प्रुडेंशियल बिल्डिंग को देखने के बाद हम मेरीना सिटी नाम के दो भवनों को देखने गए ६५ मंजिलो के इन वृत्ताकार भवनो में प्रत्येक मंजिल पर मोटरो के लिए गैरेजें भी बनी हैं आप ने ६५ वीं मंजिल पर अपने कमरे से घंटी बजाई, गाडी आप के कक्ष के सामने हाजिर आप बैठ जाइए, गाडी लिफ्ट से सडक पर आ जाएगी और इसी प्रकार ऊपर भी चली जाएगी सच मानिए अमरीका तंत्र मंत्र नहीं, यंत्र का बडा भक्त है

राह चलते हुए मैं ने देखा कि कहींकहीं किसी भवन में गाडियो का आवागमन बहुत अधिक हो रहा है कारण पूछने पर पता चला कि शहर में पंदरहबीस मंजिलो के गैरेज न हों तो सडकों पर गाडियों के पार्किंग के लिए जगह कहां मिलेगी? कलकत्ते में भी मुझे एक भरी दोपहर में क्लाईवस्ट्रीट में पार्किंग के लिए कई फेरे लगाने पडे थे फिर यह तो अमरीका का प्रसिद्ध नगर शिकागो है!

शहर में कोई खास पुरानी चीज नहीं देखेंगे एक पानी की टंकी जरूर देखी जो ९० वर्ष पहले पूरे शहर को पानी देने के लिए बनाई गई थी उस समय से शिकागो की आबादी कितनी तेजी से बढ़ी है, इस का अनुमान इस टंकी के आकार को देखने से लग जाता है

शिकागो, मिशिगन झील की देन है, क्योंकि इसी के कारण यहां कृषि का अच्छा विकास हुआ फलस्वरूप पशुपालन का व्यवसाय बढ चला आज तो शिकागो गल्ले, मांस, मुर्गी और अंडो के व्यवसाय का विश्व में सब से बडा केंद्र है अमरीका में सब से बडे और सब से आगे बढ़ने की होड है यहां के हाईकोर्ट ने एक मुकदमे में एक कंपनी पर १४ करोड रुपया जुर्माना किया था जो अब तक की जुर्माने की राशि में सब से अधिक मानी जाती है सारी रकम की अदायगी समय पर कर दी गई! इस बात का भी शिकागो वाले बडप्पन के साथ उल्लेख करते हैं

होनोलूलू की तरह यहां भी विभिन्न जातियो का अपूर्व मिश्रण हुआ है स्पेन, पुर्तगाल, इंगलैंड, फ्रांस, इटली, जरमनी, यहां तक कि रूस से भी लोग व्यवसाय के लिए शिकागो में आ कर बस गए आज यहां का नागरिक अपने में योरोप की किस जाति का रक्त कितने अंश में है, यह शायद ही बता पाएगा

एक ऐसा भी जमाना शिकागो का था जब कि उस की शोहरत अपराध के केंद्र के रूप में थी दिनदहाडे राहजनी, खूनखराबी, जुए और नशाखोरी के

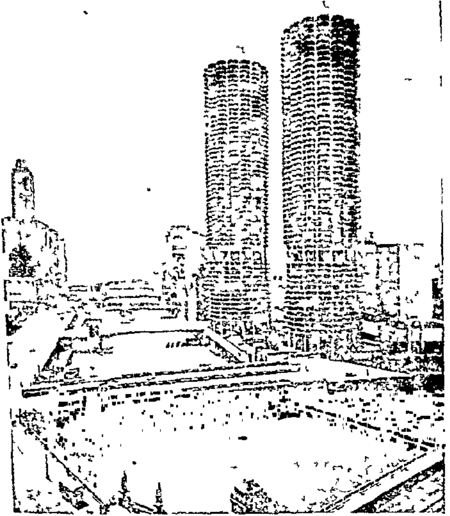

आकाश को छूने वाली ये इमारतें शिकागो की उन्नति की कहानी कहती प्रतीत होती हैं

डर से शिकागो के बहुत से महल्लों में भला आदमी जाने का साहस नहीं करता था लेकिन यह सब अतीत की बातें हैं आज ये दृश्य केवल सिनेमा में देखने में आते हैं या किताबों में

नीग्रो बस्ती यहां भी है शायद समस्या भी उतनी ही जटिल है जितनी कि कैलिफोर्निया में बल्कि इस अंचल के नीग्रो जहां अधिक जागृत लगे वहां उग्र भी इन के अलग महल्ले हैं और रात्रि में आमतौर पर गोरे लोग खासतौर से औरतें, वहां नहीं जातीं

कच्चे माल की सहज उपलब्धि शिकागो के औद्योगिक विकास की पृष्ठभूमि रही है सस्ती मजदूरी पर नीग्रो श्रम भी प्रचुर मात्रा में यहां मिलता रहा है इस के अलावा मिशिगन झील के कारण देशविदेश के विभिन्न अंचलों से माल के आवागमन में सुविधा रही है आज यहां प्रायः सभी प्रकार के कलकारखाने हैं इन में से कई का उत्पादन तो हमारे देश के संपूर्ण उत्पादन से कहीं अधिक

है यहां की एमस्टइन नाम की फर्म का अकेले का जितना उत्पादन इस्पात ढलाई में है, उस का आधा भी सारे भारतवर्ष में नहीं होता इस ढग के विभिन्न वस्तुओं के कारखाने यहां एक नहीं अनेक हैं

अब तक हम ने भारत में, पाश्चात्य देशों में, जापान में जो म्यूजियम देखे थे उन से यहां के भिन्न लगे नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम और इडस्ट्री एड साइंस म्यूजियम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम जीव के विकास-क्रम पर है आदि काल से अब तक विभिन्न प्रकार के जीव अपनेअपने समय के वातावरण में कैसे रहते थे, वे किस प्रकार के थे, इन सबों ये माडल बडे ही स्वाभाविक ढग से बना कर दिखाए गए हैं प्रागैतिहासिक युग के विशालकाय, दैत्याकार, दिनोंसरों की प्राप्त अस्थियों पर मूल आकारप्रकार में उन के माडल जहा आश्चर्यक और भयानक हैं वहा ज्ञानवर्धन के लिए अत्यत सहायक भी

उद्योग विज्ञान सग्रहालय भी अन्य देशों से भिन्न देखा कोयले की खान कैसी होती है, उस से कोयला कैसे निकलता है, जानने के लिए दर्शक का बनाई गई खान में उतार कर भूगर्भ में ले जाते हैं आल्पस की चोटियों के वायुमडल का दबाव और वहां के शीत का अनुभव कागजों और माडलों से नहीं, स्वय कर लीजिए मोटर, रेल और हवाई जहाज कैसे चलाए जाते हैं यह आप को उन में बैठा कर समझाया जाता है इसी प्रकार सागर के गर्भ में रहने वाले यूबोट के कलपुरजो का परिचय प्राप्त कीजिए और राकेट के सिद्धात का भी अमरीका में गाइड *बहुत महगे हैं, यहा के गाइड मशीन होते हैं आप को जो बातें जाननी हो, उन* के लिए निर्देशक बटन दबा दीजिए मशीन सारी बातें समझा देगी

टोकियो में हम ने डिपार्टमेंटल स्टोर देखा था मेरा अनुमान था कि यहा भी बहुत कुछ उसी ढग के होंगे या उन से कुछ बडे लेकिन यहा तो सब कुछ कल्पनातीत है हम 'मार्शल फील्ड'–स्टोर देखने गए तीन सड़कों तक इस का विस्तार है इन का दावा है कि सूई से ले कर हाथी तक इन के यहा मिल सकता है अनगिनत प्रकार की वस्तुए विभागश काउटरों पर सजी हैं सचमुच, पशुपक्षी भी है *मुझे यहां हाथी नहीं दिखा उस समय तो मैं पूछना भूल गया* मगर मेरा विश्वास है कि दुकान पर भले ही हाथी न हो पर इस की उपलब्धि की व्यवस्था जरूर होगी केवल पशुपक्षी विभाग में बेचने वाले थे, शेष अन्य विभागों में शायद ही कोई हो कई मजिलों का स्टोर, करोडा का माल, जो जी में आए उठाते चलो और झोले में डालते चलो दाम सब का लिखा है दरवाजे पर आ कर झोला रख दीजिए दाम देख कर मशीन पर अपनेआप जोड लग कर बिल बन जाएगे

इस का मतलब यह नहीं कि अमरीका में चोरी या अपराध नहीं है चोरिया होती हैं छोटी नहीं, बहुत बडी जेब नहीं कटती, बैंकों पर डाके पडते हैं, थप्पड मार कर घडी या गले की सिकडी नहीं छीनते बल्कि किसी करोडपति के लड़के को छिपा कर मावाप से बडी रकम ऐंठते हैं स्टोर देख कर निकलते समय *मुझे अपने यहा के एक मित्र की याद आ गई जिन्होंने कलकत्ते में इसी ढग का एक* स्टोर खोला था कुछ ही दिनों बाद बडा नुकसान उठा कर उसे बद कर देना पडा क्योंकि ज्यादातर माल बिना दाम दिए ही लोग ले गए

हर प्रकार की सुख सुविधा का सामान एक मजदूर के घर में भी देखा जा सकता है

मैं सोचने लगा कि हमारी संस्कृति प्राचीन है और त्यागप्रधान भी. अमरीकी संस्कृति आधुनिक और भोगप्रधान है. फिर क्या कारण है कि हमारा नैतिक स्तर उन के मुकाबले में काफी नीचा है. मुझे लगा कि इस की जड़ में अभाव, गरीबी और अशिक्षा प्रधान रूप से है. आज राष्ट्र को एक बार फिर से आर्थिक दशा और शिक्षा पर सोचने की जरूरत है.

शिकागो विश्व में मांस का सब से बड़ा बाजार है. यहां का कसाईखाना बेजोड़ है. कतार की कतार में खड़े किए हजारों पशुओं के सिर बटन दबाते ही अलग हो जाते हैं. यह दैनिक क्रम कम से कम पिछले ५०-६० वर्षों से चला आ रहा है. फिर भी पशु वहां घटते नहीं, बढ़ते ही जा रहे हैं. वहां पुष्ट, स्वस्थ और मांसल गाएं मनों दूध देती हैं. • और हमारे यहां मातृवत पूज्या गायों की कैसी दशा है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है.

मैं वहां के व्यापारिक संबंध के फर्म के बड़े साहब से मिलने गया. बड़े प्रेमपूर्वक मिले. शहर से २५ मील दूर रहते थे इसलिए उन के भोजन का निमंत्रण स्वीकार न कर सका लेकिन कारखाना देखना मंजूर कर लिया. अगले दिन दो बजे उन के आफिस में मिला, वह प्रतीक्षा कर रहे थे. सचिव को बुला कर उन्होंने आवश्यक निर्देश दिए और कहा कि वे दिन भर के लिए बाहर जा रहे हैं, दूसरे दिन आएंगे. अमरीकन बड़े बेतकल्लुफ होते हैं इसलिए उन से मिलने पर संकोच या झिझक नहीं रहती. हम दोनों आधे मील चल कर हर्टज गैरेज में गए और एक बड़ी कार ली. बातचीत में मुझे यह जान कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि इतनी बड़ी फर्म के मालिक प्रतिदिन घर से २५ मील शिकागो का सफर रेल से करते हैं. मिस्टर लेंगी ने बताया कि सड़कों पर गाड़ियों की भीड़ के कारण देर बहुत लगती है, दूसरे, शहर में पार्किंग की जगह नहीं मिलती. विश्व के संपन्न उद्योगपति साधारण वर्कर्स के साथ ट्रेन में रोज मुसाफिरी करने में संकोच नहीं

करते हमारे यहा के उद्योगपतियो के लिए यह एक अच्छा दृष्टात है

जब हम कारखाने पहुचे तो उस समय चार बज चुके थे पहली पाली के मजदूर जा रहे थे मैं ने लक्ष्य किया कि साफसुथरे इसतरी किए हुए कपडे, तरोताजा शक्लें, स्वास्थ्य और मौज का वातावरण मजदूर अपनीअपनी कारों पर बैठे हुए 'हैलो, लेगी,' 'ओ, हाउ,' इत्यादि अभिनंदन करते हुए बेफिक्री से जा रहे थे पहले तो गाडियों की कतार देख कर मैं ने सोचा था कि कोई कांफ्रेंस समाप्त हुई है और प्रतिनिधि अपनीअपनी कारों में वापस जा रहे हैं मुझे आश्चर्य हुआ कि मिस्टर लेगी के इतने दोस्त उन के आते ही केवल 'हैलो लेगी' कह कर चले गए मैंने उन से कहा, "आप बडे खुश किस्मत है, आप के इतने सारे दोस्त हैं पर वे शायद जल्दी में हैं" उन्होंने उत्तर दिया, "हा, भाई, बात यह है कि दिन भर कारखाने में काम करने के बाद दोस्तो को घर की दोस्ती भी तो निभानी पडती है"

बात समझ में आ गई कारखाने के अदर गया अभी भी कुछ मजदूर फव्वारो के नीचे नहा रहे थे कुछ नहाधो कर काफी पी रहे थे यहा भी 'हैलो लेगी' का जोर मिस्टर लेगी भी कभी किसी से हैलो कह देते या मुसकरा कर आगे बढ जाते

मैं यह सारे नजारे देख कर हैरत में था कि 'वसुधैव कुटुबकम्' का मत्रोच्चारण करने वाले हमारे देश के उद्योगपति और सरकारी अफसर अपने कारखाना के मजदूरो को तथा आफिसो के क्लर्कों को कुटुबी का पद देना तो दूर रहा, उन के साथ थोडी सी सहानुभूति का भी बरताव करने लगें तो बडी बात होगी आए-दिन की हडतालें और तोडफोड कम हो कर देश में उत्पादन की वृद्धि हो जाए

कारखाने के मैनेजर ने मजदूरो के विषय में जानकारी दी कि वे प्रति दिन आठ घटे और सप्ताह में पाच दिन काम करते हैं प्रति घटे की मजदूरी कम से कम दस रुपए और दक्षता के अनुसार २२ रुपए तक है यानी कम से कम २००० रुपए से ले कर ४००० रुपए तक प्रति मजदूर की प्रति मास की आय है प्राय: सब के पास अपना मकान, कार और टेलीविजन है पतिपत्नी दोनो काम करते हैं पति कारखाने का मजदूर है तो पत्नी आफिस क्लर्क, टाइपिस्ट या स्कूल में अध्यापिका है परिवार नियोजन के महत्व को ये समझते हैं इसलिए बच्चे बहुत कम हैं यही कारण है कि स्वास्थ्य उन का अच्छा है

सब कुछ देख रहा था और सुन रहा था मेरा मन बारबार अपने देश के कारखानों और कोयले की खानों में काम करने वाले पीले चेहरों को देख रहा था मैले चिथडो में लिपटे बीमार बच्चो को छाती से चिपटाए हुए, टूटे छप्पर के नीचे बैठी हुई शकलें भी सामने आ जाती थीं

उसी शाम को मिस्टर लेगी ने हमें शिकागो के प्रसिद्ध पामर्स हाउस रेस्तरां में डिनर का निमत्रण दे रखा था पामर्स हाउस शिकागो का सब से महगा रेस्तरा है एक बार के भोजन में कम से कम तीनचार घटे लग जाते है और चार्ज भी सत्तरअस्सी रुपए प्रति व्यक्ति, क्योंकि भोजन के साथ चोटी के कलाकारो के नृत्य, सगीत, वाद्य आदि के कार्यक्रम चलते रहते हैं मुझे उन के गाने बजाने में कोई विशेष आनद नहीं आया पर बैले की भावमुद्राए अच्छी तरह समझ

सका—पाश्चात्य के अन्य देशो की तरह यही निराश प्रेमियो का नृत्य या फिर मिलन नृत्य

इन देशो में बडीबडी राजनीतिक या व्यापारिक उलझी समस्याए भोजन की टेबलो पर खातेपीते सुलझा ली जाती है शायद हमारे लिए पहले से ही निरामिष भोजन की तैयारी के लिए सूचित कर दिया गया था इसलिए, हमारे सामने भांतिभांति की मिठाइयों, फलो और आइसक्रीम की तश्तरियां रखी जाने लगीं खाने का ढेर सा सामान जब आने लगा तो श्री हिम्मतसिहका ने धीरे से मिस्टर लेगी से कहा, "इन्हें बहुत कम करा दीजिए" उन्होंने मुसकरा कर कहा, "जितना चाहें, खा लें बाकी को नष्ट कर दिया जाएगा आधिक्य हमारी समस्या है" मैं ने कहा, "एक ओर तो आप करोडो मन गल्ला और रुई जला देते हैं दूसरी ओर इन के बिना बहुत से लोग भूखे और नगे हैं फिर क्यों नहीं आप यह बचा हुआ सामान उन देशो को दे देते हैं?"

मिस्टर लेगी कुछ सजीदगी से कहने लगे, "वैसे तो अमरीका प्राय सभी अभावग्रस्त देशों को किसी न किसी रूप में सहायता या उधार देता रहता है पर इस के साथ ही हमारा एक कटु अनुभव भी हमें कुछ सोचने के लिए बाध्य कर देता है जब भी हम ने किसी देश को बहुत ज्यादा दिया कि वह हमारे विरोधी विचार वालो के हाथ में चला गया जैसे चीन, इडोनेशिया और बर्मा आदि हमारे देश में इस की प्रतिक्रिया हुई इसलिए हमारी सरकार को जनता तथा समाचार-पत्रो की राय को मान कर ही चलना पडता है विश्व के बाजार का सतुलन रखने के लिए बची हुई चीजो को कभीकभी नष्ट कर देना पडता है"

राजनीति या अर्थशास्त्र के आज के सिद्धांतो के आधार पर सभव है उन की बातें सही हो, पर मुझे जची नहीं क्योंकि चिरकाल से अपने धर्मग्रंथों और सतों की वाणी में पढ़ता आ रहा हू कि मानवता की सेवा ही सब से बडा धर्म है. 'सर्वेन सुखिन सतु, सर्वे सतु निरामया' आदि. रात्रि के १२ बज चुके थे, नींद आ रही थी इसलिए ज्यादा बहस में न पड कर होटल को रवाना हुए

नियाग्रा

मानव के पौरुष को चुनौती ?

अमरीका क्षेत्रफल में भारत से तिगुना बडा है, जब कि जनसख्या में ४० प्रति शत इस के विपरीत वहां का औद्योगिक उत्पादन हमारे यहा से बहुत ज्यादा है, इसलिए वहां मजदूर बहुत महगे हैं और ज्यादातर काम मशीनो द्वारा होता है शिकागो के एक कारखाने में हम ने देखा कि एक बडेबडे हाथो वाली मशीन छोटीबडी चीजों को चुन कर के अलगअलग रख रही थी. सुदक्ष कारीगरो से गलती होनी सभव है, पर इन मशीनो से नहीं रेलवे, थियेटर और सिनेमा के टिकट बेचना, अगर आप के पास खुले पैसे नहीं है तो बाकी चेंज वापस देना आदि सब काम मशीनों के ही जिम्मे हैं

शिकागो विश्व का प्रसिद्ध औद्योगिक शहर है और इसे देखने को बहुत समय चाहिए था परतु ५० दिनो में पृथ्वी प्रदिक्षण करने के सकल्प से हम रवाना हुए थे इसलिए तीन दिनो में जो कुछ भी सभव था, सरसरी तौर पर देख लिया वहा के गगनचुबी भवन, हजारो कारखानो की हुकार और जनजीवन की व्यस्तता से हम प्रभावित तो बहुत हुए लेकिन मन अब और कहीं चलने को मचल रहा था

नियाग्रा प्रपात का नाम बहुत दिनो से सुन रखा था कई बार राची के गौतमधारा और शिलाग के एलीफेंटा झरनो के नीचे स्नान भी कर चुका था सुना था कि नियाग्रा इन सब से बडा है, इसलिए मन में उत्सुकता थी कि उस के नीचे स्नान करने में शायद और भी ज्यादा आनद आता होगा वहा जाने का प्रोग्राम पहले से बना हुआ था ही और बफैलो में रासायनिक कारखानो और स्टील प्लाट देखने का भी

शिकागो से हवाई जहाज द्वारा हम बफैलो पहुचे वहा कारखानो को देखा, उन की उत्पादन क्षमता और कार्यप्रणाली के बारे में आवश्यक जानकारी ली वहा के अधिकाश कारखाने नियाग्रा से प्राप्त की गई सस्ती बिजली से चलते है उन में से कई कारखानो का उत्पादन तो हमारे देश के कुल उत्पादन से भी ज्यादा है

हम एक खाद के कारखाने में गए वहा महाकाय मशीनें तो बहुत सी थीं, पर मजदूर बहुत कम दिखाई दिए हमें लगा कि शायद कारखाना बद है और सफाई आदि हो रही है पूछने पर पता चला कि कारखाना पूरी क्षमता से चालू है और आधुनिकतम यत्रों से सुसज्जित है वहां २,००,००,००,००० रुपए का वार्षिक उत्पादन होने पर भी मजदूर सिर्फ २,२०० ही है हमारे यहां इतने बडे कारखाने

में चौसपचीस हजार मजदूर से कम नहीं होते, इसी लिए यहां मजदूरों को ज्यादा मजदूरी दी जाती है. वैसे यहां भी मजदूरी भिन्नभिन्न उद्योगों में कमज्यादा है, रासायनिक और लोहे के कारखानों में दूसरों की अपेक्षा अधिक है. जिस कारखाने में हम गए थे वहां न्यूनतम ३,००० रुपए और अधिकतम ४,५०० रुपए वेतन २२ दिनों के काम पर था. आठ घंटे प्रति दिन से ज्यादा या शनिवार के काम पर वहां मजदूरों को दोगुनी मजदूरी देनी पड़ती है. हाल में दो वर्षों में मजदूरी की दरों में दस से १५ प्रति शत की वृद्धि और हो गई है.

बफेलो वैसे एक आधुनिक शहर है लेकिन शहर घूमने की हम लोगों की कोई इच्छा नहीं थी. दरअसल बफेलो का सारा महत्त्व बहुत अंशों में नियाग्रा के कारण ही है. प्रपात यहां से केवल ११ मील की दूरी पर है. साधारणतः व्यस्त पर्यटक बफेलो में ही ठहरते हैं. हवाई जहाज से आए, कार से नियाग्रा पहुंचे, शाम तक प्रपात देखा, रात को लौटे और हवाई जहाज से दूसरे दिन वापस. हम नियाग्रा को इस तूफानी तरीके से नहीं देखना चाहते थे. हमें पता चला कि नियाग्रा में रहने के लिए अच्छे होटल हैं. यात्रियों के लिए उन में सुखसुविधा की व्यवस्था भी है. अतः हम तीनों साथियों ने वहीं ठहरने का निश्चय किया.

कार द्वारा नियाग्रा के लिए हम रवाना हो गए. पास पहुंचने पर प्रपात का गर्जन स्पष्ट होता जा रहा था. सागर और प्रपात की आवाज में अंतर होता है. सागर के घोष में एक प्रकार का ताल और स्वर सा रहता है, जिस में उतार और चढ़ाव होता है, लेकिन प्रपात मानों अनवरत हर... हर... हर... के रव से वंदना करता हुआ सा लगता है.

प्रपात के पास ही हम लोग एक होटल में ठहर गए. हम ने सामान रखा और हलकी काफी पी. शाम हो चुकी थी. दिन भर की थकान के बाद हम विश्राम भी चाहते थे. पर शिकारी और पर्यटक दोनों का नशा अजीब होता है. उन्हें चैन और आराम कहां? थोड़ी देर बाद ही हम होटल से बाहर निकल पड़े. बाहर की ताजी हवा ने हमारी थकान मिटा दी. हम टहलते हुए पुल पर पहुंचे. प्रपात यहां से करीब दोतीन फर्लांग की दूरी पर है. प्रथम दर्शन ने ही हमें वहां विमुग्ध और आत्मविभोर कर दिया. एक समतल छोटे गहरे गर्त में पठार से अपार जलराशि नीचे गिर रही थी. जल के अगणित सूक्ष्म कण हवा में उड़ कर कुहासे की सृष्टि कर रहे थे. रात के अंधकार में बिजली का प्रकाश सतरंगी इंद्रधनुष बना रहा था.

देशविदेश घूमता रहा हूं. धरती की मुसकान, प्रकृति का विविध शृंगार भारत, यूरोप और अफ्रीका में देखने का संयोग मुझे कई बार मिला. विभिन्न देशों के भ्रमण में मैं ने यह भी लक्ष्य किया कि मनुष्य की चेष्टा चिरकाल से नैसर्गिक वैभव से होड़ लेने की रही है. भारत का ताज, मिस्र के पिरामिड, पेरिस का लूव्रे, वरसाई और लेनिनग्राद के राजप्रासाद, वेटिकन में पोप की राजधानी, न्यूयार्क में मनहटन के गगनचुंबी भवन—ये सभी मनुष्य के ज्ञानविज्ञान के विकास के पुष्ट प्रमाण हैं. फिर भी ये वैभव नैसर्गिक सौंदर्य की तुलना में अत्यंत नगण्य हैं.

ध्रुवांचल में मध्य रात्रि का सूर्य और अमरनाथ के पथ पर शेषनाग में

के ब्रह्मा, विष्णु, महेश नामक हिमालय के हिमशिखरों की तरह नियाग्रा को देख कर मनुष्य प्रकृति की शोभा और शक्ति का साक्षात परिचय पाता है. मुझे याद आती है एक घटना :

अमरनाथ के रास्ते में शेषनाग में ११,००० फुट की ऊंचाई पर कड़ाके की सर्दी भूल कर हिमशिखरों को मंत्रमुग्ध की तरह बहुत रात हो जाने पर भी मैं देखता ही रह गया था. ऐसा लगता था कि हिमालय के वे धवल पुत्र मुझे जादू से सम्मोहित कर के अपने पास बुला रहे हैं. इसी प्रकार नार्वे में मध्य रात्रि के सूर्य को देख कर चकित सा रह गया था कि परम रहस्यमय प्रकृति की कैसी माया है कि प्रचंड मार्तंड प्रखर किरणें न बिखेर कर पूनम का चांद बन कर मुसकरा रहा है. मैं सोचने लगा था कि उसे दिवाकर कहूं, निशाकर कहूं या प्रभाकर.

नियाग्रा प्रपात का अपना बेजोड़ आकर्षण है. सैलानी और पर्यटक वर्ष भर यहां आते रहते हैं. इसी कारण नियाग्रा में काफी भीड़ रहती है. ऊंचाई से गिरती हुई अजस्र जलधारा मानव के समर्थ पौरुष को चुनौती देती जान पड़ती है. सैकड़ों व्यक्तियों ने मौत की परवा न कर के प्रपात की जलधारा के साथ ऊंचाई से कूदने का दुस्साहस किया है.

यह कहना गलत होगा कि ऐसे प्रयासों के पीछे शत प्रति शत नाम कमाने की भावना ही रही होगी. पाश्चात्य लोगों में इस प्रकार की धुन के अगणित उदाहरण देखने में आते हैं. हिमालय के दुर्गम शिखरों पर चढ़ना, आल्प्स की बर्फानी चोटियों को लांघ जाना और सहारा की आग उगलती मरुभूमि को पैदल ही पार करने के ऐसे अनेक दृष्टांत हैं. हमारे यहां पांडवों के महाप्रस्थान और अशोक की पुत्री संघमित्रा की धर्मयात्रा मनुष्य की आंतरिक सात्विक प्रवृत्ति और साहस के उदाहरण हैं.

नियाग्रा प्रपात अपने ही नाम की नदी से बना है. यह नदी कुछ ही दूरी पर ३२५ फुट नीचे आ जाती है. इसलिए जहां झरना है वहां अत्यंत वेग से नीचे गिरती है. नियाग्रा की विशेषता उस की ऊंचाई नहीं है, क्योंकि इस से भी अधिक ऊंचाई से गिरने वाले प्रपातों की संख्या विश्व में बहुत है. इस की विशेषता तो इस के विस्तार, दीर्घता और जल के घनत्व में है. अनुमान है कि अमरीका की ओर ६०,००,००० गैलन प्रति मिनट और कनाडा की ओर ११,५०,००,००० गैलन प्रति मिनट पानी गिरता है—यानी एक घंटे में ८०,००,००,००० मन पानी!

नियाग्रा के इस प्रपात की शक्ति को व्यर्थ नहीं जाने दिया गया है. इस से बिजली पैदा कर के आसपास के अंचल के नाना प्रकार के उद्योगधंधों को चलाया जाता है. इस प्रकार रासायनिक, इस्पात, अल्युमिनियम, कपड़े, मशीनरी आदि के करीब १,४०० कलकारखाने इस प्रपात की शक्ति से चलते हैं. इन कारखानों में २,५०,००० से अधिक व्यक्ति काम करते हैं.

अमरीका ही नहीं, सभी पाश्चात्य देशों का एक ही लक्ष्य है कि उन की सुरम्यस्थली या महत्त्वपूर्ण स्थानों पर अधिक से अधिक सैलानी और पर्यटक भ्रमण के लिए आएं. इसलिए वहां यात्रियों की सुखसुविधा और स्थान को ज्यादा से ज्यादा आकर्षक बनाने का ध्यान रखा जाता है. नियाग्रा को भी यात्रियों के लिए पूरे तौर पर सजाया गया है. रात में विभिन्न रंगों के प्रकाश से झरने की सुंदरता में चार

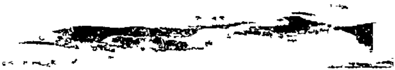

ऊंचाई से गिरती हुई अजस्र जलधारा दर्शकों का मन मोह लेती है

चाद लग जाते हैं बिजली के २४ विशाल प्लाट इस के लिए रोशनी फेंकते हैं, जिन में १,३२,००,००,००० दीपालोक (कैंडल पावर) की क्षमता है आप स्वय अनुमान करें, २०० दीपालोक के एक बल्ब से साधारणतया हमारी आखो में चकाचौंध पैदा हो जाती है फिर यहा तो रगबिरगे १,३२,००,००,००० दीपालोक झरने की दुग्ध जैसी धवल जलधार पर नाचते हुए कितना सुदर दृश्य उपस्थित करते होगे

नियाग्रा का प्रपात सयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा को विभाजित करता है कनाडा की ओर इस की शक्ल बहुत कुछ घोडे के नाल की तरह है यहां इस की लबाई २,५०० फुट है नियाग्रा से लगातार गिरने वाले पानी की तेज धार के कारण नीचे की कठोर चट्टान ३० फुट घिस गई है प्रपात के दोनो ओर अत्यत मनोरम उद्यान हैं सैलानियो की भीड लगी ही रहती है अमरीका मोटरो का देश है इसलिए यहा एक साथ २०,००० कारो की पार्किंग की व्यवस्था रखी गई है सैकडो प्रकार की कारों के अलावा यहा सजी हुई फिटन गाडियां भी काफी देखने में आई. इन का किराया मोटरो से चौगुना है, क्योंकि हमेशा मोटरो में चढने वालो को इस सवारी में एक नए मजे का अनुभव होता है हमें पता चला, नियाग्रा के प्रपात को देखने के लिए प्रति वर्ष लगभग २०,००,००० यात्री आते हैं यदि प्रति व्यक्ति का औसत खर्च ३०० रुपए भी आका जाए तो अकेले नियाग्रा की वार्षिक आय यात्रियो से ६०,००,००,००० से कम न होगी, जो सपूर्ण भारत के यात्रिक व्यवसाय से दोगुनी है

यहा प्राय सभी प्रकार के और रुचि के यात्री अमरीका तथा विश्व के विभिन्न भागो से आते रहते है, लेकिन नवविवाहितो के लिए तो यह मानो तीर्थ-

स्थली है मधुमय दापत्य जीवन की कामना से मधुयामिनी (हनीमून) बिताने के लिए सैंकड़ो युगल प्रेमालाप करते यहां नजर आते हैं उन की उद्दाम लालसायुक्त गरम निश्वासों को नियाग्रा अपने प्रपात के जलकण बिखेर कर रगीन शीतलता देता रहता है.

नियाग्रा नदी की धार झरने के नीचे बड़ी तेज है और वहा खतरा भी जबर्दस्त है, फिर भी लोग उस के पास जाते हैं उन की साहसिक अभिलाषा की पूर्ति के लिए यहां दो शक्तिशाली मोटरबोट हैं जिन का नाम 'कुहासे की किन्नरी' है ये किन्नरियां यात्रियों को बड़ी सफाई से झरने के पास तक ले जाती हैं ऊंचाई से करोड़ो मन पानी मोटी धारों में गिरता है और असख्य जलकण हवा में कुहासे की तरह बिखर जाते हैं

यात्रियो के लिए यहा एक और भी आकर्षण है दो बड़ीबड़ी लिफ्टें उन्हें झरने के नीचे के उस भाग में ले जाती हैं जहां से वे अपने ही ऊपर से झरने की अपार जलराशि को गिरता हुआ देखते हैं हम भी पाच रुपए प्रति व्यक्ति का शुल्क दे कर, मोटे रबर के वस्त्र पहन कर लिफ्ट से नीचे गए

यह देख कर ताज्जुब होता है कि कितनी जोखिम ले कर उस स्थान को बनाया गया है ऊपर और अगलबगल पानी की तेज अनवरत धाराएं मोटे शीशे की दीवार पर पड़ती रहती हैं यात्री उसी के बीच से मायामयी प्रकृति के इंद्रजाल से अभिभूत हो उठते हैं

हमें बताया गया कि पिछले १२० वर्षों में कई प्रकार की साजसज्जा से लैस हो कर अनेक व्यक्तियों ने झरने की ऊंचाई से कूदने का दुस्साहस किया है कोई लोहे के ड्रम में बैठ कर कूदा तो कोई मोटे रबर के थैले में या कार्क की बनी पेटी में इन में बहुतों की जानें गईं, हाथपैर टूटने की बात तो साधारण सी है नियाग्रा के म्यूजियम में इन के चित्र और सामान को देख कर विचार उठा कि जानबूझ कर मौत से खेलना एक सनक है या दुस्साहस!

एक घटना हम ने यहां भी सुनी कि एक सात वर्ष का लड़का नियाग्रा नदी में पाचछः मील ऊपर एक छोटी सी नाव में जा रहा था अचानक तेज धार की चपेट में आ गया उस ने लाख हाथपैर पटके मगर धार से नाव निकल न पाई नियाग्रा के दोनो किनारों पर खड़े हजारो लोगों की आखों के सामने तीर की तरह सनसनाती हुई उस की नाव प्रपात के किनारे की ओर बढ़ी अगले ही क्षण में लोगो ने देखा कि किश्ती पानी की धारा के साथ नीचे गिरी बचाने का उपाय भी क्या था? लेकिन लोगो ने देखा कि लड़का सहीसलामत झरने के दायरे से बाहर नदी की धार में अपनी नाव पर बैठा है कोई युक्तिसगत तर्क इस रहस्य को आज तक सुलझा नहीं पाया है

एक फ्रांसीसी मोशिए ब्लाडिन के बारे में सुना कि उन्होने सन १८६० में नियाग्रा के दोनो किनारों पर मोटे तार का रस्सा बाध कर हाथ में एक लबी लग्गी लिए उस तार पर चल कर प्रपात को पार किया पहली सफलता से उत्साहित हो कर दूसरी बार वह फिर कधे पर अपने मैनेजर को बैठा कर नियाग्रा पार हुए

गाइड से इन घटनाओ को सुन कर मैं ने प्रश्न किया "इस प्रकार के दुस्साहसिक कृत्यों में मृत्यु निश्चित जान कर भी जान पर खेल जाना क्या अर्थ रखता है?'

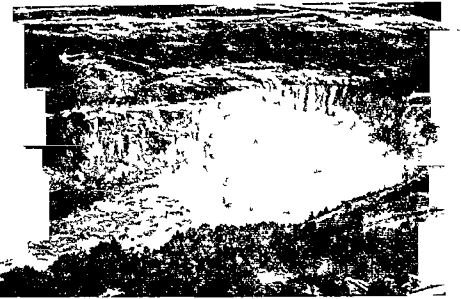

नियाग्रा से गिरने वाले पानी की तेज धारा से कड़ी चट्टान ३० फुट घिस गई है

गाइड बोला, "जनाब, मृत्यु ध्रुव है और सत्य है, फिर क्यों न यश पा कर ही दुनिया से विदा हों"

मुझे चित्तौड़ के गोरा और बादल की याद आ गई वे भी तो केसरिया बाना पहन कर शत्रुओं की तूफानी लहरों में मौत के साथ खलने ही गए थ हाडी रानी की भी मुझे याद आ गई, जिस ने विवाह के दिन ही अपने पति चूडावत सरदार को शीश की भेंट दे कर रणक्षेत्र में मृत्यु वरण के लिए भेज दिया था

हम दिन भर खूब घूमे, शाम को काफी थक चुके थे इसलिए सीधे होटल लौटे मैं भोजन के बाद विश्राम करना चाहता था बिस्तर पर जाने की तैयारी ही थी कि प्रभुदयालजी ने कहा "चलिए, कुहासे की किरणें हमें बुला रही हैं कल तो जाना ही है इसलिए आज जीभर इन का सान्निध्य प्राप्त कर लें" हम होटल से निकले और प्रपात के पास एक बाग में जा बैठे सतरंगी रोशनी पानी से खेलती हुई इंद्रधनुष सजा रही थी ऊपर आकाश में तारे मुसकरा रहे थे-

एकाएक मैं ने नजर घुमाई तो जरा झेंप सा गया लंदन के हाइड पार्क, होनोलूलू के समुद्री किनारे या वेनिस के गोंदोलों का नजारा बाग में जगहजगह पर था प्रथम पहर बीतने पर होटल लौटते समय ऐसा लगा जैसे सचमुच नियाग्रा मुझे 'हर हर हर ' कह कर फिर से बुला रहा है

वाशिंगटन

अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र

अंगरेजी में एक कहावत है कि 'सभी सडके रोम को जाती हैं' रोमन साम्राज्य की प्रसिद्धि से सभी परिचित हैं यूरोप, अफ्रीका और अरब पर उन का शासन सदियो तक रहा साहित्य, कला, राजनीति और यहां तक कि इन देशो की सस्कृति पर भी रोमन प्रभाव पडा है साम्राज्य का केंद्र था रोम यहा सभी को आना ही पडता था इसी सदर्भ में उक्त कहावत चल पडी

जमाना करवटें बदलता है रोम से पहले बेबीलोन, मिस्र और भारतीय साम्राज्य और सभ्यता के उत्कर्ष इतिहास के पृष्ठो में पढने में आते हैं और देखने में आते हैं खडहरों में अभी पिछले महायुद्ध तक विश्व की राजनीति का सचालन लदन से होता था अब वह स्थान अमरीका का है

आज विश्व राजनीति के सूत्र लदन, पेरिस या बर्लिन के हाथो में नहीं, मास्को और वाशिंगटन के हाथो में हैं वास्तव में अब ससार की राजनीति के ये दो सूत्रधार हैं

सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में मेरी रुचि होने के कारण अमरीका के अभ्युदय को समझने की बहुत इच्छा थी लास एजेलस और शिकागो में अमरीका के वैभव, उस के उन्नत शिल्पोद्योग और व्यापारिक सगठनो का अदाज मिला वहा के जनजीवन की विविध धाराओ का भी परिचय मिला परतु दिल्ली और कलकत्ता देखे बिना जैसे भारत की जानकारी अधूरी रह जाती है उसी तरह वाशिंगटन और न्यूयार्क के बिना अमरीका को जानना सभव नहीं

नियाग्रा में हमें सूचना मिली कि हमारे राजदूत श्री के नेहरू आवश्यक काम से दौरे पर जाने वाले हैं इसलिए उन्होने पहले हमें वाशिंगटन बुलाया है अतएव न्यूयार्क के लिए रिजर्वेशन रद्द करा कर हम सीधे वाशिंगटन पहुचे दूतावास ने हमारे लिए होटल मेफ्लावर में आवास की व्यवस्था कर दी थी

भारत यदि मदिरो का देश और इटली व बेलजियम गिरजो का देश कहा जाता है तो अमरीका को होटलो का देश कहना चाहिये वहा एक से एक बढ़ कर होटल और मोटल हैं, और अब तो टोटल भी हैं भारत में होटल तो हैं पर मोटल और टोटल शायद ही हो मोटल में यात्रियो के लिए आवास और भोजन की व्यवस्था के अलावा मोटर रखने एव उस की आवश्यक मरम्मत की

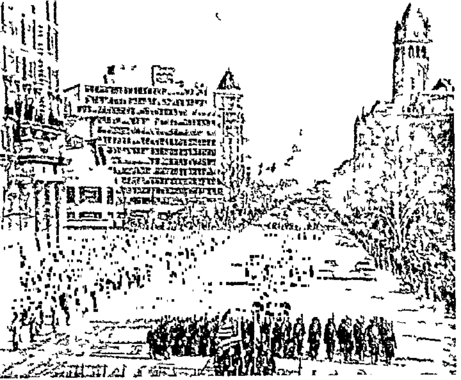

वारसाई की तरह चौडी व खुली सडक जिनका वैभव अनूठा है

भी सुविधा रहती है आजकल मोटरो में पर्यटन करने वाले मोटलो में ही ठहरने हैं टोटल एक नई व्यवस्था है इन्हें चलताफिरता होटल कहना चाहिए बडे-बडे ट्रेलर शक्तिशाली मोटरो से जुडे रहते है इन में खाने, पीने, सोने की व्यवस्था रहती है अच्छे सुसज्जित बाथरूम भी इन में होते हैं सफर का सफर, रहने का रहना, साथ ही समय और खर्च में बचत लोगो ने इसे खूब पसद किया है

अमरीकी होटलो और रेस्तराओ में विदेशियों को भाषा के कारण कठिनाई नहीं होती अधिकाश कर्मचारी द्विभाषी होते हैं मैनेजर और क्लर्क वगैरह तो चार या पाच भाषाए आसानी से बोल लेते है फ्रेंच, इटालियन, स्पेनिश, जरमन, रूसी इत्यादि किसी भी यूरोपीय भाषाभाषी को वहा दिक्कत नहीं होती एशियाई भाषाओं में अरबी, तुर्की और जापानी भाषाओ को जानने वाले भी मिल जाते है हिंदी या अन्य भारतीय भाषा की जानकारी शायद ही किसी को हो यह उन की उपेक्षा नहीं बल्कि हमारी कमजोरी है, क्योकि विदेशो में हम आपस में भी अगरेजी बोलते है यही नहीं, स्वदेश में भी हिंदी जानने वाले आपसी व्यवहार में, सफर में या ससद में अगरेजी में ही बोलना पसद करते है नतीजा यह होता है कि विश्व की एक बडी और इतने बडे देश की राजभाषा होते हुए भी हिंदी का महत्त्व बाहर वाले नहीं समझते और इसी लिए मानते नहीं

होटलो के सचालकों में आपस में होड सी रहती है कि कौन कितनी सुविधा यात्रियो को देता है जहां किसी होटल या मोटल की लोकप्रियता बढी कि फौरन पता कराते हैं कि इस के पीछे कारण क्या है इस के बाद वे भी अपने प्रतिष्ठानो

को उन से भी अधिक सुविधाजनक और सुसज्जित करने में प्रयत्नशील हो जाते हैं वहां खर्च की तो किसी को परवाह ही नहीं है

जिस समय हम होटल में पहुचे, रात के दस बज चुके थे सामान रख कर खिडकी के पास खडे हो कर देखा, दूर दिखाई दे रहे गुबदो पर चादनी फिसल रही है वाशिंगटन की सडकें बिजली की रगबिरगी रोशनी में नहा रही हैं कुबेरो का देश है अमरीका यहां की हर रात दीवाली की रात है

वाशिंगटन के प्रति तरह-तरह की कल्पनाए और भावनाए मेरे घुमक्कड मन में थीं सोचा, 'इस समय के लिए निश्चित कार्यक्रम न भी हो, बारहएक बजे तक शहर घूम कर लो आ हो सकता हू ' जल्दीजल्दी हाथमुह धो कर हलकी चाय ली प्रभुदयालजी कहते ही रह गए कि थकान बढ़ेगी, आराम करना चाहिए मैं कोट ले कर कमरे के बाहर निकल पडा

कमरे से निकल कर सब से पहले मैं ने अपने होटल का मुआयना किया लास एजेल्स से नियाग्रा तक हम जिन होटलों में ठहरे थे, उन से यह भिन्न था इस की कलात्मक सजावट बेजोड मानी जाती है अमरीका के कई राष्ट्रपति और राजनीतिज्ञ इस में ठहरते रहे हैं विदेशो से आए कई सम्माननीय एव उच्च पदस्थ राजन्य और राजनीतिज्ञों को अपने यहां ठहराने का गौरव मेफ्लावर को अनेक बार मिला है

वाशिंगटन विस्तृत है और योजनानुसार बना है फिर भी अमरीका के अन्य शहरों से भिन्न लगा कई मजिलों के ऊचे मकान यहा है पर सेनफ्रांसिस्को और शिकागो की तरह आसमान को छूने की होड करने वाले नहीं मौजमस्ती और तडकभडक भी उतनी नहीं दिखाई पडी राजधानी होने के कारण यहा का मुख्य उद्योग है सरकार और शासन फैक्टरी, मिल या व्यापार से वाशिंगटन का इतना ही सरोकार है कि उन के मालिक या प्रतिनिधि यहा अपनेअपने काम से आते रहते हैं २०,००,००० की आबादी की इस महानगरी में ७,००,००० व्यक्ति ऐसे हैं जो स्थानीय सरकारी दफ्तरो में काम करते हैं ससार के प्राय सभी राष्ट्रो के दूतावास यहा हैं प्रत्येक के अपनेअपने स्टाफ हैं इस प्रकार विदेशियो की भी सख्या यहां कम नहीं है इस के अलावा अमरीका के ५० प्रदेशो से निर्वाचित एव मनोनीत ससद सदस्य तथा उन के सहकारी भी यहा रहते हैं तात्पर्य यह है कि उद्योगव्यापार का वातावरण जैसा व्यस्त और भागदौड का बन जाता है वाशिंगटन में वैसा देखने में नहीं आया

भूख लगी थी एक रेस्त्रा में गया डबलरोटी ली इतालियन रेस्त्रा था दो लडकिया चुटकी बजावजा कर गा रही थीं और झुक कर पास बैठे लोगों के कानो तक स्वर खींच कर हट जाती थीं कभीकभी थोडी देर के लिए दर्शकों की गोद में बैठ जाती थीं सैक्सोफोन जोरजोर से बज रहा था वहा अमरीकी अधिक थे कुछ नीग्रो थे इन के अलावा अन्य देशो के लोग भी साज और आवाज का मजा लेते हुए लोग सिर हिला रहे थे लेकिन गानाबजाना मेरी समझ में आ नहीं रहा था बीचबीच में सामने बैठे अरब के एक शेख साहब को देख कर आनद ले रहा था लडकी कमर लचकाती हुई जिधरजिधर जाती थी, शेख साहब की

दाढ़ी की नोक चुंबक की सूई की तरह उधर ही घूम जाती थी. उन्हें देख कर मुझे जोश मलीहाबादी की एक कविता की पंक्तियां 'हिलने लगीं शयूख के सीने पै दाढ़िया, नजरें नमाजियों की उसी ओर फिर गईं' याद आईं. लड़की लाल रंग का रूमाल हिलाती हुई शेख साहब के पास आई और दाढ़ी को दाएंबाएं हिला कर चूमने लगी. उन का शराब का गिलास उठा कर उस में से एक सिप ले कर शेख के मुह से लगा दिया. जूठी शराब वह विभोर हो कर पीने लगे, जैसे बच्चा बोतल से दूध पीने लगता है. दूसरे लोगों के साथसाथ मुझे भी हंसी आ गई. पल भर में लड़की मेरे सामने हाजिर और गातेगाते सिसकारी भरते मेरे दूध के गिलास को उठा कर ऐसा कुछ कह गई कि सभी हंसने लगे.

बाहर निकला और बस पकड़ी. मेरा खयाल था कि यूरोप तथा अमरीका के अन्य शहरों की तरह यहां भी नाइट क्लब होंगे. पर वाशिंगटन में न नाइटक्लब हैं और न जुए के साथ कुंवरे ही—एक खास बात यह भी देखने में आई कि अन्य आधुनिक शहरों की तरह लड़कियां या महिलाएं यहां रात में अकेली घूमती नहीं मिलीं. कारण बाद में मालूम हुआ कि आम तौर से रात को दस बजे तक लड़कियां अपने घरों में वापस आ जाती हैं. मन बहलाने के लिए टेलिविजन और पुस्तकें हैं. यहां का जीवन अमरीका के अन्य शहरों की अपेक्षा शिष्ट और संयत है.

बस से घूम कर शहर का जितना भी हिस्सा देखा, अच्छा लगा. फ्रांस के वरसाई की तरह यहां चौड़ी और सीधी सड़कें हैं, जो एक वृत्त के पास आ कर मिलती हैं और फिर वृत्त के चारों ओर सड़कें निकलती जाती हैं. नई दिल्ली का भी नक्शा कुछ इसी प्रकार है. यहां की सड़कों के बीच हरियाली की पट्टी हैं, जिन में फूलों की क्यारियां हैं. सड़कों के दोनों किनारों पर ऊंचे वृक्षों की कतारें हैं.

बस में मेरे बगल में एक नीग्रो बैठा था. मेरी आंखें खिड़की के बाहर भागते दृश्यों को पकड़ रही थीं. वह शायद समझ गया कि शहर घूमने निकला हूं. संजीदगी से उस ने पूछा, "कैसा लग रहा है?" मैं ने उत्तर दिया "अभी तो शुरू ही किया है." ढलती उमर के उस नीग्रो ने बताया कि अभी तो वाशिंगटन बन कर तैयार ही नहीं हो पाया है. नित्य नए मकान बन रहे हैं, पुराने गिराए जा रहे हैं. फिर उस ने पूछा, "आप भारत के हैं, या मिस्र के?"

मैं ने उत्तर दिया, "भारत का हूं." अपने प्रधान मन्त्री के स्वास्थ्य के बारे में उस के प्रश्न से मुझे प्रतीत हुआ कि अमेरिकन नीग्रो भी गांधीजी और नेहरूजी से स्नेह रखते हैं.

हमारे होटल के करीब बस आ गई थी. घड़ी देखी, सवा १२ बज रहे थे. जल्दीजल्दी बस से उतर कर मैं कमरे में पहुंचा. देखा, प्रभुदयालजी जाग रहे थे. नई जगह और आधी रात हो गई थी, इसलिए उन को चिंता होनी स्वाभाविक ही थी. "परेशानी तो नहीं रही?" उन के स्नेह भरे शब्दों से मैं झेंप गया. इस के बाद बिस्तर पर लेटते ही सो गया

दूसरे दिन सुबह श्री बी. के. नेहरू ने हमें चायनाश्ते पर आमंत्रित किया था. श्री नेहरू का निवास बहुत ही करीने से सजा हुआ था. उन के बगीचे को

देख कर सुरुचि का परिचय मिलता है. नई दिल्ली की तरह अमरीका में भी दूतावासों को सुविधापूर्ण शर्तों पर काफी जमीनें वहां की सरकार द्वारा दी जाती हैं.

श्री नेहरू बड़ी ही आत्मीयता से मिले. भारत और अमरीका के उद्योगव्यापार और राजनीति के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत हुई. वह अमरीका के अच्छे मित्रों में माने जाते हैं और उन को जानकारी भी काफी है. उन के व्यक्तिगत विचार थे कि हमारे यहां कुछ नेता और अखबारों को जिम्मेदारी की गहराई में जाना चाहिए और सोचसमझ कर अमरीका की आलोचना करनी चाहिए. खेद है कि ऐसा नहीं हो पा रहा है अन्यथा अन्य देशों की अपेक्षा हमें कहीं अधिक मदद अमरीका से मिल सकती है. अमरीकी सरकार और जनता दोनों भारत के प्रति स्नेह रखती है, पर हमारी अप्रासंगिक आलोचना से भ्रम फैलता है और उन की भावनाओं को ठेस पहुचती है.

अमरीका में ड्राइवर, नौकर या रसोइया रखना बहुत ही महगा पड़ता है. यही नहीं, हमारे यहा की तरह ३० दिन और १५ घटे की ड्यूटी बजाने की तो वहा कोई कल्पना भी नहीं कर सकता. साधारण लोगों की बात ही क्या, अच्छे संपन्न व्यक्ति भी नौकर नहीं रखते. फिर भी दूतावासों को उन्हें रखना ही पड़ता है क्योंकि उन के यहां आए दिन मेहमान आते रहते हैं, जिन की आवभगत करनी पड़ती है. हमारे दूतावास में भी अमरीकन खानसामा और ड्राइवर थे लेकिन श्रीमती नेहरू ने स्नेहपूर्वक हमें स्वय ही भारतीय नाश्ता कराया. हलवे के साथ मटर की कचौड़ियां बड़ी ही स्वादिष्ट बनी थीं. बहुत दिनों बाद इस ढंग की चीजें सामने आईं. मैं ने तो निस्संकोच तीसरी बार माग कर खाया मेरा विश्वास है कि खाने के मामले में तकल्लुफ बरत कर भूखा रहना किसी प्रकार से भी उचित नहीं है.

श्री नेहरू को अगले दिन वाशिंगटन से बाहर जाना था. अतएव हमारे लिए उन्होंने प्रयोजनीय व्यवस्था का निर्देश अपने सचिव को दे दिया. कम समय में शहर को अच्छे ढग से देखने के लिए अपने सुझाव भी उन्होंने हमें बताए.

शहर देखने के लिए टूरिस्ट बसें हैं. इन के साथ अनुभवी गाइड रहते हैं. चीजों के समझने में आसानी रहती है और समय की बचत भी होती है.

वैसे टैक्सिया काफी हैं, पर उन का किराया बहुत अधिक है और ऊपर से उन पर टिप कितना लगेगा यह एक और समस्या है! टिप का अखड एकाधिपत्य आप को यूरोप और अमरीका में मिलेगा रेस्त्रा, होटल, टैक्सी जहा कहीं भी बिल चुकाया कि टिप साथ लगी रहती है. दस प्रति शत से २५ प्रति शत तक टिप लग जाता है. बिलों में टिप जोड़ दिया जाता है, फिर भी कुछ न कुछ अलग से और देना पड़ता है हमारे देश में चूकि टिप (बख्शीश) देना जरूरी नहीं है, इसलिए हमें अजीब सा लगता

हम ने टूरिस्ट बस का टिकट खरीद लिया. गाइड को अपने विषय की अच्छी जानकारी थी और वह खुशमिजाज भी था. शहर के बारे में वह जानकारी देता जा रहा था वाशिंगटन का निर्माण योजनानुसार हुआ है. उत्तर

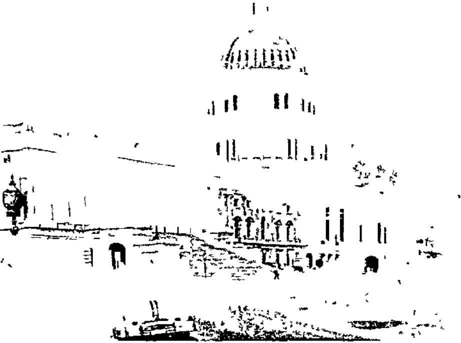

वाशिंगटन में अमरीकी कांग्रेस और सरकार का प्रधान कार्यालय

पश्चिम, दक्षिणपश्चिम, उत्तरपूर्व और दक्षिणपूर्व—ये चार अवल हैं. सभी में सीधी चौडी सडकें हैं. दिल्ली, रोम, एथेंस की तरह यहा प्राचीन खडहर नहीं मिलेंगे लदन, पेरिस और वेनिस की तरह मध्ययुगीन अवशेष भी आप यहा नहीं पाएंगे हस कर उस ने कहा, "हम अतीत के वैभव और गौरव का दावा नहीं कर सकते, क्योंकि हमारा इतिहास ही लेदे कर कुल ३०० वर्ष का है. फिर भी हमारी करुण कहानी आप लाइब्रेरी आफ कांग्रेस में पढ़ सकते है, या शहर की अगणित आर्ट गैलरियों और म्यूजियमो में देख सकते हैं."

हम जानते थे कि गाइड अपना पांडित्य प्रदर्शन करने में चूकते नहीं. सभी देशों में ऐसा होता है. ऐसा न हो तो पर्यटक ऊब जाए और थकान भी महसूस करने लगें.

प्रसग बदलने के खयाल से मैं ने पूछा, "वाशिंगटन को ही क्यों राजधानी के लिए चुना, जब कि बोस्टन, फिलाडेल्फिया न्यूयार्क आदि शहर इस से पहले ही बस गए थे इन में से किसी को भी राजधानी बनाया जा सकता था?"

गाइड ने मुसकराते हुए कहा, "आप जानते हैं, पुरानी दुनिया को छोड कर हमारे पूर्वज नई दुनिया में नई जिंदगी की खोज में आए थे इसलिए नयापन के प्रति हमारे स्वभाव में रुचि है मगर इतिहास बताता है कि जब अमरीकन गणराज्य सगठित हो गया तो सभी शहर राजधानी के लिए अपनाअपना दावा पेश करने लगे आपसी मतभेद न बढ़े, इस खयाल से प्रथम राष्ट्रपति जार्ज

वाशिंगटन ने सुझाव दिया कि राजधानी नई जगह बने सब ने इसे मजूर किया"

गाइड ने बताया कि आज से लगभग २०० वर्ष पहले यहा दलदल थी जगली घास की झाडियां और ऊबडखाबड जमीन को देखकर कौन कल्पना कर सकता था कि विश्व की सब से बडी राजधानी इसी दलदली जमीन पर बनेगी

मार्च १७९१ में प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन ने इस जगह शहर बसाने का काम प्रसिद्ध फ्रेंच वास्तुशिल्पी पीयरे को सौंपा उस की देखरेख में शहर का एक हिस्सा बन गया कुछ राजनीतिक कारणो से लोग उस से नाराज हो गए और बाकी काम पूरा करने का भार अमरीकन इजीनियर एलकोट को दे दिया

आज वाशिंगटन की बनावट दो प्रकार की देखने को मिलती है मेजर पीयरे का हिस्सा वरसाई की तरह है, जिस में बागबगीचे, चौडी सडकें और मध्ययुगीन यूरोपीय भवन हैं जब कि एलकोट के वाशिंगटन में ससद भवन, काग्रेस पुस्तकालय, उच्च न्यायालय और पेंटागन जैसी विशालकाय इमारतें हैं

हम ससद भवन देखने गए वास्तुशिल्प, सौंदर्य और सौष्ठव की दृष्टि से हमारे ससद भवन का अपना विशिष्ट स्थान हैं लेकिन जहा तक विशालता का सवाल है, अमरीकी ससद विश्व में अद्वितीय हैं ६० एकड के क्षेत्रफल में सुसज्जित उद्यान और कुजों के बीच ससद भवन बडा ही शानदार लगता है इस के विशाल गुबद के ऊपर स्वतत्रता की मूर्ति खडी हैं गुबद का वृत्त १३५ फुट और ऊचाई २८५ फुट है

अमरीकियो की भाषा अगरेजी ह पर वे शब्दों में खींचखींच कर अनुनासिक स्वर लगा देते ह और जल्दीजल्दी बोलते हैं, इसलिए दिक्कत हो जाती हैं हमारे गाइड ने हमेशा इस बात का खयाल रखा कि वह अमरीकी अगरेजी नहीं, सही अगरेजी बोले

उस ने ससद भवन के इतिहास की चर्चा करते हुए बताया कि यह स्थान एक पहाडी पर है और पास की पोटेमिक नदी से यहां की ऊचाई लगभग १०० फुट है मेरी ओर देखते हुए उस ने कहा, 'सज्जनो विश्व में ताजमहल बजोड और लाजवाब है तो हमारा यह कैपिटल भी आज के युग में अद्वितीय है उस बनाया मुगल सम्राट शाहजहा ने अपनी प्रयसी की स्मृति में तो इसे बनाया अमरीकी जनता ने स्वाधीनता और जनतत्र की मर्यादा के लिए"

सभी यात्री मेरी ओर देखने लगे कि भारत का नाम आया है, शायद म कुछ बोलू, पर म गाइड का मीठा व्यग्य समझ गया मैं ने कहा, "ताजमहल और कैपिटोल दोनों ही अपनीअपनी जगह महान हैं वह है प्रेयसी के प्रति प्रेम का प्रतीक और यह है जनमानस की राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति भावना दोना में है, दोनों ही अपनीअपनी दृष्टि से पवित्र ह"

ससद भवन अमरीकी विधानमडल का केंद्र ह राष्ट्र के विधान और कानून यहीं बनते हैं सन १८०० में ससद में ३२ सीनेटर एव १०५ प्रतिनिधि थे जब कि आज १०० सीनेटर और ४३५ प्रतिनिधि अमरीका के ५० प्रदेशों और

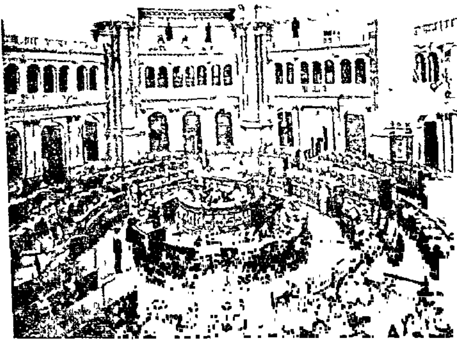

कांग्रेस पुस्तकालय जो विश्व में अपनी किस्म का अकेला है

१९,००,००,००० की जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं.

अमरीका विभिन्न प्रदेशों का संयुक्त संघ राज्य है. शासन की क्षमता प्रेसीडेंट, कांग्रेस के दोनो सदनो और सुप्रीम कोर्ट में इस ढंग से विभाजित है कि संतुलन न बिगडे, फिर भी यह मानना पडेगा कि अमरीका के राष्ट्रपति को शासन संबंधी जितने अधिकार दिए गए हैं, विश्व में शायद ही किसी जनतान्त्रिक राष्ट्रपति के हाथ में इतने अधिकार हों अमरीका के प्रत्येक स्थानीय मामलो में स्वतंत्र व्यवस्था रखते हैं किंतु वाशिंगटन के इस गुबंद के नीचे जो भी नीति निर्धारित होती है उसी को सार्वदेशिक रूप में मानना पडता है. सेना एवं परराष्ट्र नीति पर केंद्र का नियंत्रण है, पर हमारे देश की तरह वहां भी पुलिस, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि प्रादेशिक शासन के नियंत्रण में हैं. हमारी दिल्ली की तरह वाशिंगटन भी किसी प्रदेश के अंतर्गत नहीं है. इस के शासन संचालन का अधिकार राष्ट्रपति के हाथ में है. प्रत्येक चौथे वर्ष जनता द्वारा उस का निर्वाचन होता है. इस प्रकार अमरीका का सर्वोच्च शासक जनता के प्रत्यक्ष समर्थन से शासन करता है. अमरीकी जनता अपने प्रेसीडेंट के प्रति जो आदरभाव रखती है, वह हमारे लिए तो निस्संदेह अनुकरणीय है. विदेशों में मैंने देखा कि स्थानीय नागरिक विदेशियो से बातचीत में बहुत ही सावधान रहते हैं शासन और शासक की आलोचना को सफाई से टाल देते हैं.

संसद सदस्य होने के कारण अमरीकी संसद के प्रति हमारी विशेष रुचि थी. हम इसे अच्छी तरह से देखना और समझना चाहते थे और इस के लिए सब प्रकार की सुव्यवस्था भी थी, परंतु हमारे पास समय कम था इसलिए हम ने यहां एक प्रकार से भागते दौडते ही सारी चीजें देखीं

संसद के गुंबद की भीतरी दीवारों पर विश्व के शीर्ष कलाकारों ने जो चित्र बनाए हैं, वे देखते बनते हैं अमरीकी इतिहास से संबंधित ये चित्र इतने सजीव हैं कि देखने वाले सैकड़ों वर्ष पीछे चले जाते हैं अधिकांश चित्र इतालवी कलाकार कोंस्तांतिनो के बनाए हुए हैं ७० वर्ष की उमर में ३०० फुट की वृत्ताकार नौ फुट ऊंची दीवार पर अंकित ये चित्र उस की प्रतिभा एवं दक्षता का परिचय देते हैं

कोलंबस द्वारा अमरीका की खोज से ले कर स्वतंत्रता के युद्ध तक के सारे दृश्य देखते समय अमरीका का इतिहास चलचित्र की तरह आंखों के सामने आ जाता है यहाँ अमरीका के राष्ट्रपतियों की प्रस्तर मूर्तियां भी हम ने देखीं वाशिंगटन, लिंकन, विल्सन, रूजवेल्ट, जेफर्सन आदि की मूर्तियां बड़ी स्वाभाविक मुद्रा में हैं

हम ने सीनेट और प्रतिनिधि कक्ष (हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्ज) देखा हमारे संसद की राज्य सभा और लोक सभा के कक्ष की तरह इन में अधवृत्ताकार रूप में सदस्यों के बैठने के लिए व्यवस्था की गई है अमरीकी संसद सदस्यों को, चाहे वे सरकारी दल के हों या विरोधी, सरकार की ओर से बड़ी सुविधाएं दी जाती हैं

प्रत्येक सदस्य को करीब २,३२,५०० रुपए सालाना भत्ते के मिलते हैं अन्य आवश्यक खर्चों के लिए पृथक रूप से सभी प्रकार की व्यवस्था है हमारे यहां संसद सदस्यों को मिलते हैं सिर्फ १०,००० रुपए वहां के प्रत्येक संसद सदस्य के पास निजी सचिव, स्टेनो और सहकारी होते ह अपने निर्वाचन क्षेत्र के दौरे के लिए किसीकिसी के पास तो हेलिकोप्टर भी रहते हैं

संसद भवन के पास ही हमने प्रसिद्ध कांग्रेस पुस्तकालय देखा यह विश्व का सब से बड़ा पुस्तकालय है यहां ४,२५,००,००० से भी अधिक पुस्तकें हैं दुर्लभ ग्रंथ और हस्तलिखित पुस्तकों का विभाग अलग है अमरीका के ऐतिहासिक दस्तावेजों को बहुत ही संभाल कर रखा गया है यों तो इस पुस्तकालय से छात्र, संसद सदस्य, अध्यापक वैज्ञानिक सभी लाभ उठाते ह लेकिन यह जान कर आश्चर्य हुआ कि अंधे भी यहां पुस्तकें पढ़त हैं उन के लिए उभरे अक्षरों की पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं यही नहीं विभिन्न विषयों पर लिखी अच्छी से अच्छी पुस्तकों की टेप रिकार्डिंग करा ली गई है कहते हैं कि इस पुस्तकालय की अलमारियों को एक लाइन में खड़ा किया जाए तो ४०० मील लंबी कतार हो जाएगी

घूमतेघूमते हम थक गए थे आराम करन की जरूरत थी भूख भी लग रही थी हमें रेस्त्रां खोजने में कठिनाई नहीं हुई संसद में सभी कुछ है हम न रेस्त्रां में जा कर पहले पेट की मांग पूर्ति करने की व्यवस्था की और तब आगे का कार्यक्रम निश्चित करने लग निश्चित यह किया गया कि वाशिंगटन में हमारा अगला कदम व्हाइट हाउस (राष्ट्रपति भवन) और पेंटागन (सुरक्षा भवन) का होगा

लाइब्रेरी में शीर्ष कलाकारों के संगीत की रिकार्डिंग कर उन्हें भी संग्रहीत

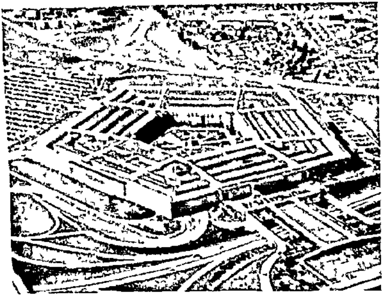

शहर के अदर पेंटागन की अलग ही दुनिया है

किया गया है. महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय एव अंतरराष्ट्रीय घटनाओ के फोटो भी संग्रहीत है.

लाइब्रेरी के कूलिज आडिटोरियम में ५२५ सीटें है. अत. देशविदेशो के चोटी के साहित्यकारो एव वैज्ञानिको के कार्यक्रम यहा समयसमय पर होते रहते हैं.

आप अपने मनचाहे कलाकार का सगीत सुनना चाहते है? अपने प्रिय कवि की कविता उस से ही सुनना पसद करेंगे? अपने श्रद्धेय वैज्ञानिक की गवेषणा उन्हीं की जबानी सुनेंगे? एक पत्र डाल दीजिए, उत्तर मिल जाएगा कि प्रोग्राम कब है. सीट रिजर्व करा लीजिए, केवल २५ सेंट का खर्च है. अमीरों के मुल्क में किफायत में इतनी सुविधा मेरी कल्पना के बाहर की बात थी. हमारी राष्ट्रीय सरकार भी इस प्रकार की सुविधा कर दे तो शिक्षा में पिछडे और गरीब देश के जन साधारण का बडा उपकार हो सकता है.

हमारी तरह अन्य कई विदेशी पर्यटक भी वहा थे. एक भारतीय दपति को भी रेस्तरा में देखा. वे दोनो भी हमारी तरफ देख रहे थे. हम ने परस्पर परिचय प्राप्त किया. युवक दिल्ली का था. हमारे विदेश मत्रालय की ओर से फारेन सर्विस की शिक्षा पाने के लिए यहां आया था. साथ में पत्नी को भी ले आया था. एक बात ध्यान देने की है कि अपने देश में हम उत्तर, दक्षिण, महाराष्ट्र, बगाल और पजाब की भले ही सोचते हों, पर विदेशों में स्वत: ही हमारी ये भावनाए मिट जाती है. पतिपत्नी दोनों हम से मिलकर बहुत खुश हुए. देश के बारे में जानकारी दी. हमें अपने घर भोजन पर आमत्रित किया कमातेखाते सुखी भारतीय दपति को देख कर बडा सतोष हुआ.

वाशिंगटन की जिंदगी में गभीरता की छाप है. ससार के सब से अधिक

संपन्न और शक्तिशाली राष्ट्र की राजधानी होने के कारण सड़कों, होटलों, और सरकारी दफ्तरों में विदेशियों को अपनी राष्ट्रीय पोशाक में देख पाना साधारण सी बात लगती है. यों तो दिल्ली की चाणक्यपुरी में भी विदेशियों को देखा जा सकता है, पर उतने नहीं जितने कि यहां.

अमरीकी सैलानी तबीयत के होते हैं. मौजबहार और जिंदादिली उन की विशेषता है. होनोलूलू, नियाग्रा, मियामी और फ्लोरिडा में जो उन्हें मिल सकता है वह वाशिंगटन में नहीं, फिर भी अपनी राजधानी के प्रति उन्हें एक प्रकार का मोह है. वे अपने पर्यटन के प्रोग्राम में वाशिंगटन घूमना जरूर शामिल कर लेते हैं. हम ने अमरीकी संसद भवन देखते हुए इसे लक्ष्य किया कि देश के विभिन्न भागों से आए हुए अमरीकी नागरिक भी चाव से घूम रहे थे.

नवीन राष्ट्र होने के बावजूद जीवन की गहराइयों के प्रति आम तौर से अमरीकी भी हमारी तरह सोचते हैं, पर बातचीत में वे गंभीर कम दीखते हैं. यह उन की विशेषता है.

दूसरे दिन हम पेंटागन देखने गए. यह अमरीकी सुरक्षा का केंद्रीय दफ्तर है. इस की विशालता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि विश्व के सब से बड़े अमरीकी संसद भवन जैसे पांचछ: तो इस में आसानी से समा जाएंगे; तब भी जगह बचेगी न्यूयार्क की एंपायर स्टेट बिल्डिंग विश्व की सब से बड़ी इमारत है. उस में जितने कमरे हैं उस के तिगुने पेंटागन में हैं. लगभग तीस हजार सैनिक और नागरिक कर्मचारी प्रति दिन यहां काम करने आते हैं. ६०० कर्मचारी तो केवल इस की सफाई के लिए नियुक्त हैं.

शहर के अंदर पेंटागन की अलग ही दुनिया है यहां हेलीकाप्टर के उतरने का ग्राउंड है और रेलवे स्टेशन भी है. बसें लगभग ९०० बार आवागमन करती हैं पार्किंग की जगह इतनी काफी है जिस में यहां के कर्मचारियों की ८३०० मोटरें एक साथ ठहर सकती हैं पर्यटकों की गाड़ियों के लिए स्थान अलग है.

हम यहां के सूचना विभाग में गए, वहां हमें पेंटागन का नक्शा मिला और गाइड भी यदि ये नहीं मिलें तो यहां के गोरख धंधे में फंस जाना मामूली सी बात है. इस के बारे में बड़े मजेदार किस्से प्रचलित हैं किसी सर्कस से एक शेर भाग निकला. रात के अंधेरे में उस ने यहां पनाह ली बड़ी खोज हुई उस की, पर वह मिला ही नहीं कई महीने बाद कहीं से भागा हुआ एक दूसरा शेर भी पेंटागन के दफ्तरों में पहुंचा पुराने शेर ने उस का स्वागत किया. नए शेर ने पूछा, "कहो भाई, भोजनपानी का यहां कैसा इंतजाम है, कहीं भूखे दिन न गुजारने पड़ते हों?" पुराने शेर ने कहा, "अरे, नहीं रे दोस्त, मुझे देखो न, कैसा मोटाताजा हूं बड़ा आराम है, जब भी भूख लगी किसी कर्नल या जनरल को दबोच लिया इतने हैं यहां कि कोई इन की गिनती ही नहीं करता"

इसी तरह एक दूसरा किस्सा भी है. एक पत्नी अपने पतिदेव को ढूंढने यहां आई उसे यहीं बच्चा हो गया लोगों ने कहा, "आप ऐसी दशा में यहां

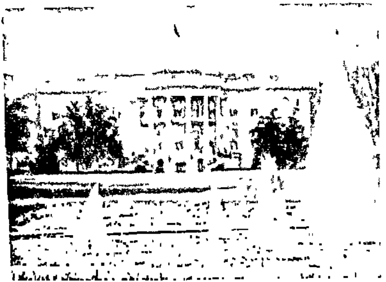

अमेरिका में राष्ट्रपति का निवास व्हाईट हाउस

क्यो आई?" युवती ने बताया कि मैं इस हालत में नहीं थी तीन महीनो से ढूढ रही हू लेकिन मेरे पति नहीं मिले, तब तक प्रसव का समय पूरा हो गया मेरी लाचारी थी

सत्य है, अजीब भूलभुलैया है पेंटागन भीतर ही भीतर मीलों का चक्कर दफ्तरो का है लिफ्ट, सीढिया, एस्केलेटर, दालान, कमरे, दरवाजे सभी मायापुरी से हैं* इन्हें पार करते हुए हम तीसरी मंजिल पर रक्षा सचिव के दफ्तर के सामने से गुजरे बडा ही शानदार लगा इस के पास ही एस्केलेटर से हम चौथी मजिल पर पहुचे वहा स्थल सेना के अचल में विभिन्न प्रकार के शस्त्रास्त्र, टैंक इत्यादि के माडल देखे युद्ध संबधी विविध चित्र भी थे इसी प्रकार नौसेना और वायु सेना के अचलो में हम ने विभिन्न प्रकार के जहाजो और वायुयानो के माडल देखे जो प्राचीनकाल से अब तक युद्धो में काम आते रहे हैं पेंटागन से ही अमरीकी सुरक्षा विभाग का सचालन होता है जिस का वार्षिक बजट ३४००० करोड रुपए है अर्थात प्रति व्यक्ति औसत १८०० रुपए, जब कि हमारे भारत का वार्षिक सुरक्षा बजट ८५० करोड है जो करीब १८ रुपए प्रति व्यक्ति होता है

युद्ध हमारी रुचि का विषय नहीं है इसलिए इस की बारीकियां समझ में नहीं आई मगर इतना जरूर लगा कि इस विषय के विद्यार्थियो के लिए यह स्थान ज्ञानपीठ है

पेंटागन का सैनिकी दफ्तर देखने से हो सकता है कि हमारे जैसो का जी उचटने लगे अमरीकी सैनिक विभाग शायद अपनी इस कमी को समझता है यहां छ काफेटेरिया है, जिन में प्रति दिन ३०,००० लोग भोजन करते हैं दो बडे रेस्तरां हैं और नौ बार हैं, जहां थके दिमाग और सूखते कठ को तर करने को

सुविधा है. इस के अलावा, हजामत बनाने और कपड़े धुलवाने से ले कर आप को साजसज्जा के लिए जवाहरात की दुकानें भी हैं. पुस्तकें, फूल तथा अन्य हर प्रकार की, अपनी पसंद की दुकानें यहां मिल जाएंगी. यही नहीं, रेलवे और हवाई जहाज की बुकिंग भी यहां करा सकते हैं. पोस्ट आफिस, बैंक, बीमा कंपनियों के दफ्तर आदि तो मामूली बात है.

चौथाई पेंटागन देखने में ही हमें बहुत समय लग गया. थक भी गए, पर साथियों की राय थी कि धनकुबेरों के देश की टकसाल को तो देख ही लिया जाए. एक बज चुका था, दो बजे तक खुली रहती है. अतएव ब्यूरो आफ एंग्रेविंग एंड प्रिंटेज जा पहुंचे. अमरीका बृहद देश है. सब कुछ यहां बृहद पैमाने पर होता है. दुकान, मकान, दान, मान, शान सभी बृहद! ब्यूरो में हम ने अमरीकी नोटों के छपने का जो सिलसिला देखा तो चकित रह गए. हफ्ते में पांच दिन काम होता है. रोजाना तीन करोड़ डालर (चौदह करोड़ रुपए) के नोट तैयार हो कर निकलते हैं. इन में दो तिहाई तो एक डालर वाले नोट होते हैं. शेष अन्य जिन में १०,००० डालर वाले नोट भी हैं. दक्षता इतनी है कि छपे हुए नोटों में मुश्किल से एक प्रति शत रद्द किए जाते हैं. इस में एक म्यूजियम भी है जहां हम ने १८६१ से अब तक के सरकारी बांड और स्टेंप देखे. सन १९३५ का छपा एक लाख डालर का एक नोट भी देखा.

नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम देखने की मेरी बड़ी इच्छा थी. इसे नेशनल म्यूजियम भी कहते हैं. कला और उद्योग संबंधी नाना प्रकार की चीजें यहां रखी हुई हैं. शिकागो में हम इस प्रकार का म्यूजियम देख चुके थे, लेकिन वाशिंगटन का म्यूजियम उस से बहुत बड़ा है.

इस संग्रहालय में लगभग दो करोड़ नमूने संग्रहीत हैं. नाना प्रकार के पशुओं, पक्षिओं, और जलचरों की खालों में भूसे भर कर स्वाभाविक वातावरण में रखा गया है. प्रागैतिहासिक युग के जीव भी अनुमानित आकार में रखे हुए हैं. दैत्याकार डिना सूर के माडलों को देख कर भय और कंपकंपी सी आ जाती है. बहुत दिनों पहले राहुलजी की पुस्तक 'विस्मृति के गर्भ में' इन के बारे में पढ़ा था—उस समय ऐसा लगा था कि यह केवल किंवदंती है. लेकिन आज बहुत वर्षों बाद इन का संभावित आकार और रूप प्रत्यक्ष देखने का मौका मिला. हमारे यहां के हाथी और ऊंट तो इन के सामने बहुत ही छोटे हैं. जीव या प्राणी का विकास विभिन्न स्तरों पर किस प्रकार होता रहा है, उस के क्रम का बड़ा अच्छा दिग्दर्शन यहां होता है.

खनिज और जवाहरातों का कक्ष भी हम ने देखा. फ्रांसीसी राजघराने की शान विश्व प्रसिद्ध हीरा 'ब्लूहोप' रखा हुआ है. नाना प्रकार के नीलम, पन्ने, पुखराज और हीरे छोटेबड़े सभी आकारप्रकार के रखे थे. ये कहां से मिले, कैसे मिले, क्या वजन है, कितनी कीमत लगी और क्या इतिहास है, सभी विवरण लिखे हुए हैं.

अमरीकी आदिवासियों के कक्ष में हम ने अमरीका के इतिहास की लगभग १०,००० वर्ष पुरानी झांकी देखी. अमरीका के इन आदिवासियों को आज भी

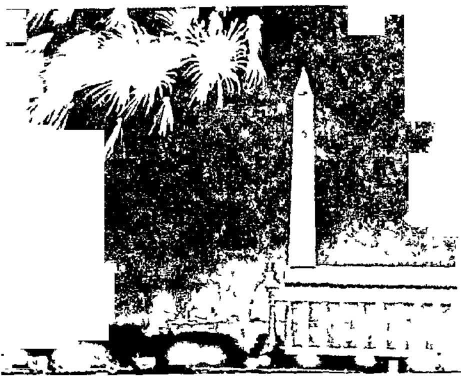

वाशिंगटन मोनूमेंट, लिंकन स्मारक व कैपीटल हाल स्वतन्त्रता दिवस पर जगमगाता हुआ

कोलंबस के भ्रम के कारण भारतीय कहा जाता है जो भी हो इन के जीवन के तौरतरीकों में भारतीय छाया मुझे लगी. यह एक गवेषणा का विषय है. कोलंबस ने अमरीका की धरती पर पैर रखा और लाल भारतीय जब उस से मिलने आए उस समय का दृश्य माडल के रूप में यहां रखा है. इसी प्रकार उस समय ये कैसे रहते थे, उन की स्वाभाविक व्यवस्था और रीतियां कैसी थीं, इस के भी माडल यहां हैं.

इन्हें देख कर यह लगता है कि यूरोप के विभिन्न देशों से शांति के दूत महात्मा ईसा का पवित्र संदेश पहुंचाने के नाम पर धर्म प्रचारकों ने पिछली तीन शताब्दियों में जो कुछ भी यहां किया वह बहुत ही जघन्य और घृणित था. इस सिलसिले में मुझे अपने देश का प्राचीन इतिहास याद आया. हमारे यहां भी भील और किरात रहे हैं. अगस्त्य और राम ने सभ्यता और संस्कृति के नाम पर उन्हें लूटा नहीं था, उन्हें उखाड़ नहीं फेंका था. वानर, भालू और जटायु आदि वनवासी जातियों का सहयोग उन्हें तलवार की नोक से नहीं, हृदय की विशालता और उदारता से ही मिला था. आज भी हमारे देश में नागा, मिजो और संथालों में जिस रूप में मिशनरियों द्वारा धर्मप्रचार हो रहा है उसे केवल परोपकार की भावना नहीं कहा जा सकता.

लंदन, पेरिस और वाशिंगटन में इतने बड़ेबड़े म्यूजियम और आर्ट गैले-

रोज है कि अगर उन को ध्यान से देखा जाए तो महीनों लग जाएगे हम ने वहा यह भी देखा कि किसीकिसी तसवीर या मूर्ति को तन्मय हो कर लोग घटों देखते रहते है लेकिन, ये कलाकारो की बातें है हमारे जैसे पर्यटक तो एक साधारण सा चक्कर सब कमरो का लगा लेते है यहां तक कि विश्व प्रसिद्ध कृति *'मोनालीसा' या 'अंतिम भोज' को भी कुछ समय तक* इसलिए देखते रहे कि उन का मूल्य एकडेढ करोड सुन रखा था वाशिंगटन की नेशनल आर्ट गैलेरी भी विश्व की गिनीचुनी सस्थाओ में है आप इस की विशालता का अनुमान इस से ही लगा सकते है कि यह डेढ लाख फीट के क्षेत्रफल में है और इस में २७,००० तसवीरें या मूर्तियां है, जिन में से कुछ तो दुष्प्राप्य और इतनी कीमती है कि सिवा राज्य सरकारों के सर्वसाधारण उन को खरीदने की सोच भी नहीं सकते हम ने *यहां नाना प्रकार के पत्थर और ब्रोंज की पुरानी भारतीय* मूर्तिया के अलावा १७ वी और १८ वीं शताब्दी के मुगल और राजपूत कला के चित्र भी काफी तादाद में देखे

यों तो वाशिंगटन में बहुत से स्मारक है, लेकिन जार्ज वाशिंगटन एव अब्राहम लिंकन के स्मारक सब से अधिक जनप्रिय एव प्रसिद्ध है वाशिंगटन स्मारक सुबह नौ बजे से शाम को पाच बजे तक और लिंकन स्मारक रात को नौ बजे तक खुला रहता है हम लिंकन का स्मारक देखने गए

शहर के दक्षिण में बहती हुई पोटोमेक नदी के किनारे लिंकन का स्मारक बहुत ही सौम्य है यहां की अन्य इमारतो की तरह यह बहुत बडा नहीं है ३६ खभो पर इस की छत है स्मारक के चारो ओर सुदर उद्यान है मुख्य कक्ष में पहुचने के लिए ५६ सीढ़ियां है लिंकन के समय में सयुक्त राज्य अमरीका में ३६ राज्य थे, इसलिए इस के ३६ खभे है इसी प्रकार लिंकन की ५६ वर्ष की आयु के प्रत्येक वर्ष के लिए सीढ़ी का एकएक कदम है

हम सीढ़ियो पर से स्मारक के अदर कक्ष में गए, लिंकन की तसवीरें पहले भी देखी थीं लेकिन उन की मूर्ति इतनी सजीव होगी इस की आशा न थी *मानवता से कलक दास प्रथा को अमरीका से मिटा देने का प्रयास ही उन* का काल बना गोली मार कर उन की हत्या कर दी गई हमारे यहा गाधीजी की हत्या भी तो ऐसे ही एक कारण से हुई थी अमरीकन नीग्रो को समान अधिकार दिलाने के प्रयास में अभी हाल ही में राष्ट्रपति कैनेडी को भी अपने प्राणो की आहुति देनी पडी *मैं सीढियों से उतरता हुआ सोच रहा था,* 'मानवता को सही मार्ग दिखाने के लिए अभी और कितने लिंकन, गाधी और कैनेडी को आहुतिया देनी होगी'

वाशिंगटन के अखबारों में ससद की जितनी जैसी चर्चा होती है उसे देख कर *लगता है कि यहा की आम जनता का आकर्षण राजनीति के प्रति* अधिक नहीं है

दैनिक समाचार पत्र बडे साइज के १६ से १०० पेज तक के होते है, जिन में तीन चौथाई में तो विज्ञापन और सिनेमाथिएटर आदि के प्रोग्राम रहते है— बाकी चौथाई में *स्थानीय समाचार तथा अन्य आवश्यक बातें* भारत के बारे

प्राकृतिक सौंदर्य से घिरा, संगमरमर का बना जैफर्सन स्मारक

में चर्चा तो बहुत ही कम देखने को मिलती है

यहा के गिरजों में जैसी भीड हुआ करती है, उसे देख कर ताज्जुब होता है कि मौजबहारों में विश्वास करने वाले अमरीकन धर्मप्राण भी होते हैं. राजधानी में ५०० से भी अधिक गिरजे हैं, जिन में ६० विभिन्न पथो के ईसाई नियमित रूप से आते रहते हैं. इन के अलावा यहूदियों के उपासना गृह भी कई हैं इन गिरजों में से कई के पास बहुत बडी सपत्ति है, जिस में से अरबों रुपए सालाना विश्व के विभिन्न भागों में ईसाई धर्म के प्रचारप्रसार के लिए खर्च होते हैं

यहा एक मसजिद भी है. इस की तारीफ हम ने सुन रखी थी. अतएव देखने गए. हमारे यहा की मसजिदो से यह बिलकुल ही दूसरे ढग की है. न मेहराबदार बुलद दरवाजे हैं और न गुंबद. हा, एक मीनार जरूर है राजधानी की यह मसजिद तमाम अमरीकन मुस्लिमों का उपासना गृह है मुसलमानी धर्म और सस्कृति का अध्ययन केंद्र भी.

विदेशो के बारे में भ्रात धारणाए तभी टूटती हैं जब वहा जा कर वस्तुस्थिति से साक्षात्कार हो विदेशी, सिवा अगरेजो के, हमारे देश के बारे में यह धारणा किए बैठे हैं कि भारत में केवल हिंदू ही हैं, मुसलमान स्वय चले गए और जो थे, उन्हें हटा दिया गया है. ठीक इसी तरह हम भी साधारणत. यह समझते हैं कि यूरोप और अमरीका में केवल ईसाई हैं, अन्य मतावलबी शायद ही हो. मगर बात ऐसी नहीं है. यूरोप में खास तौर से बलगारिया, अलबानिया, यूनान, यूगोस्लाविया आदि बलकान राज्यों में तुर्की और दक्षिणी रूस में मुस्लिम काफी सख्या में हैं. अमरीका में भी इस्लाम का प्रसार बढ रहा है. काले अमरीकन विशेष रूप से इस्लाम की ओर आकर्षित हो रहे हैं

एक नीग्रो अमरीकन ने मुझे शायद मिस्र का समझ लिया बडे शाइस्ता ढग से अभिवादन किया, 'अस्सलाम अलैकुम'. बडी साफ जुबान और आवाज थी

नेचुरल हिस्ट्री म्युजियम में तरह तरह के पशु की खाला में भूसा भर कर स्वाभाविक वातावरण में रखा गया है

"वालैकुम अस्लाम," कह कर मैं मुसकराया उस ने मुझे मित्र का समझा था, पर मैं ने बता दिया कि भारत से आया हूं आगे न उस ने पूछा और न मुझे बताने का मौका ही मिला कि मैं किस धर्म को मानता हू. युवक ने बडे स्नेह और जिज्ञासा से भारतीय मुस्लिमो के प्रति सहानुभूति प्रकट की उस की बातचीत से पता चला कि या तो पाकिस्तानी प्रचार के कारण या हमारी सरकार के प्रचार विभाग की शिथिलता के कारण हमारे देश की धर्म निरपेक्ष नीति और मुसलमानों की सही स्थिति का परिचय साधारण अमरीकी जनता तक नहीं पहुच पाया है

लास एजेल्स और शिकागो में मैं ने ब्लैक मुस्लिम आंदोलन के बारे में सुना था यहा मेरा कौतूहल जाग उठा मैं ने पूछा "यहा आप लोगो की कितनी सख्या होगी?" उस ने बडे गौर से मुझे देखते हुए कह "ठीक नहीं बता सकता, पर यह जानता हू कि हमारी जमायत बढ रही है और अब रगीन (नीग्रो) अमरीकन यह महसूस कर रहे हैं कि पाक रसूल के दामन के सहारे ही हम अमरीका में हक और इज्जत पा सकते हैं अगर इसराइल और पाकिस्तान बन सकते हैं तो क्या करोडो की तादाद में यहा बसने वाली हमारी कौम अपने लिए अलग एक मुल्क नहीं कायम कर सकेगी?"

उस की आखें चमक उठीं मैं स्तब्ध था हिंदुस्तान को भी इसी मनोवृत्ति ने गहरी चोट पहुचाई है सोचने लगा एक जमाना था जब नीग्रो को गोरे जरा सी गलती पर जीतेजी जला देते थे सूली पर चढा देते थे, नाना प्रकार की यातनाए देते थे कहीं उसी कु क्लक्स क्लान आदोलन को प्रतिक्रिया

'ब्लेक मुस्लिम' सप्रदाय तो नहीं है

उस ने मुझे मसजिद का भीतरी हिस्सा बड़े चाव से दिखाया भारतीय मसजिदो में जो बारीक कारीगरी है, वह यहा नहीं है, मगर तुर्की, ईरानी शैली काफी सफाई से उभरी नजर आती है ससार के विभिन्न मुस्लिम देशो से भेजी गई खूबसूरत, नायाब चीजें बड़े करीने से रखी हुई थीं छतो से लटकते ईरानी झाड़फानूस, मिस्र से भेजे गए गलीचे और ईरानी कालीन, दीवालो पर बैठाए गए तुर्की टाइल बडे आकर्षक लग रहे थे

नमाज का वक्त था अजान सुनाई पडी, पर मुअज्जिन नजर नहीं आया टेप रिकार्ड से यह काम चला लिया जाता है कुछ ताज्जुब सा हुआ कि खुदा की राह पर चलने के लिए इनसान नहीं, मशीन आवाज लगाती है

सुना था कि यहां एक बौद्ध विहार भी है पता नहीं चला, गाइड बुक में या नक्शे में इस का कोई उल्लेख नहीं मिला एक बात पर विचार गया कि बातबात में धर्म की चर्चा करने वाले हिंदुओ का एक छोटा सा मदिर तक यहा नहीं है लदन में बिडला परिवार के प्रयास से यह कमी दूर हो गई है आज वहां शाति और स्वच्छदता से हिंदू अपने ढग से उपासना कर सकते है ताज्जुब इस बात का है कि हमारे देश में टीकाचदन या रेशमी गेरुवाधारी बडेबडे मठाधीश-महन्त यह नहीं सोचते कि उन्हें उत्तराधिकार में अतुल धनराशि इसलिए नहीं मिली है कि वे केवल अपनी मौजशौक में ही उसे खर्च करें, बल्कि उनका तो वास्तविक दायित्व है उस शिक्षा और सस्कृति के प्रचारप्रसार का जिसे भारत के ऋषि-मुनि, या मनीषियों और आचार्यों ने मानव कल्याण के लिए स्थापित किया था हम स्वामी विवेकानद का सिर्फ हवाला देते हैं, खुद उस मार्ग पर चलते तो शायद विश्व के कोनेकोने में भारतीय सस्कृति के प्रतीक के रूप में अनेको मदिर बन जाते और ये हमारे सास्कृतिक केन्द्र होते

हमारी यह कमी वाशिंगटन में बहुत खटकी मुझे बडी ग्लानि हुई कि म्लेच्छ समझे जाने वाले अमरीकनो के धन से बेलूर में रामकृष्ण का मदिर बना भक्ष्याभक्ष्य का विचार न रखने वाले जापानियों ने काशी में बौद्ध विहार और मदिर बनवा दिए, पर धर्म के नाम पर ध्वजा उठाने वालो का एक भी मदिर न टोकियो में मिला न वाशिंगटन में सैकडो की सख्या में भारतीय इन जगहो पर जाते है, व्यापार-व्यवसाय बढाते है, पर किसी ने यह नहीं सोचा कि उपासना का एक स्थान तो बने यहा

सगमरमर के बने तीन स्मारकों के लिए वाशिंगटन विख्यात है तीनों ही अमरीका के तीन महान राष्ट्रपतियों वाशिंगटन, लिंकन और जैफर्सन की स्मृति में बनाए गए ह लिंकन स्मारक के पूर्व की ओर वाशिंगटन मोनूमेंट है दिल्ली के लिए लाल किला, जामा मस्जिद, कुतुब मीनार और बनारस के लिए जैसे घाट प्रतीक है उसी प्रकार यह स्मारक राजधानी का प्रतीक है

वाशिंगटन मोनूमेंट मीनार जैसा है, पर इस में कुतुब की तरह मजिलों के बरामदे बाहर निकले नहीं है सिरे पर यह तिकोना नुकीला सा है दूर से बहुत कुछ चौकोर चिकनी पेंसिल जैसी शक्ल का लगता है हरियाली के बीच सगमरमर

का बना यह मीनार बहुत सुदर लगता है इस की ऊचाई ५५५ फीट हैं सिर पर खिडकिया ह ऊपर चढने के लिए ९०० सीढ़िया हैं और एलीवेटर भी है नीचे दीवार १५ फुट मोटी है और ज्योज्यों ऊपर उठती है, पतली होती जाती है बिलकुल ऊपर तो केवल १५ इच ही की रह जाती है मीनार के ऊपर खिडकियों से राजधानी का दृश्य बडा मनोरम लगता है

सुबह का समय था वाशिगटन पर धूप खेल रही थी शहर को देखता हुआ मै बारबार यही सोचता था कि यदि वाशिगटन न होता तो आज का अमरीका कहा होता स्वय ही उत्तर मिला कि वाशिगटन केवल व्यक्ति विशेष नहीं था, बल्कि वीरता, कर्मठता और धैर्य का प्रतीक था

न्यूयार्क विश्वमेला

चकाचौंध कर देने वाली वैज्ञानिक प्रगति

जिन दिनो हम न्यूयार्क में थे, वहां विश्व मेला चल रहा था. हम ने केवल मेला देखने के लिए दो दिन का समय रखा. वैसे तो इसे पूरी तौर से देखने के लिए एक महीने का समय भी कम था. हम ने मेले के बारे में जानकारी ली और तय किया कि केवल खासखास कक्ष देख लिए जाए. हमारे दूतावास के सचिव हमारे साथ थे, इसलिए चीजो के देखनेसमझने में सुविधा रही और समय कम लगा. बडे एव मशहूर स्टालो को देखने के लिए लबी कतारें थीं, मगर हमें हर जगह प्राथमिकता मिलती रही.

यो तो मेले दुनिया में और जगहो पर भी होने रहते हैं, जिन में जरमनी और मिलान के मेले प्रसिद्ध हैं. अपने देश में १९४८ में कलकत्ते की और १९६१ की दिल्ली प्रदर्शनी को भी काफी शोहरत मिली थी

सयुक्त राज्य अमरीका में विश्व मेला सर्वप्रथम न्यूयार्क में १९३९ में आयोजित किया गया था यह इतना लोकप्रिय रहा कि इस में लगभग साढ़े चार करोड दर्शक आए. इस प्रकार की प्रदर्शनियो का आयोजन उन्नत राष्ट्रो के लिए आवश्यक हैं, क्योकि इन से देश के औद्योगिक विकास तथा ज्ञानविज्ञान की प्रगति का परिचय मिल जाता है. १९३९ के मेले का और इस का तुलनात्मक विवरण दिया गया था, जिस से पता चलता था कि इन २५ वर्षों में अमरीका ने हर दिशा में कितनी उन्नति की है.

वह डकोटा का युग था, जब कि आज हम सुपर सोनिक जेट के युग से गुजर रहे हैं. उन दिनो हालाकि रेडियो बन चुके थे, लेकिन लोग टेलीविजन का अदाज भी नहीं कर पाए थे और चद्रमा की यात्रा तो स्वप्नलोक की बात थी.

न्यूयार्क के विश्व मेले की तैयारी में ढाई वर्ष लगे. अमरीका के प्रसिद्ध वास्तुकार रावर्ट मोजेज को इस के निर्माण और सजावट का भार दिया गया. विश्व मेले का आयोजन था, देशविदेश से दुनिया के हर कोने से व्यापारी, उद्योगपति एवं पर्यटको का आलम उमडेगा, अतरराष्ट्रीय ख्याति के नेता एवं वैज्ञानिक भी प्रदर्शनी में आएगे. स्वाभाविक बात थी, न्यूयार्क नहीं, बल्कि अमरीका की प्रतिष्ठा का प्रश्न था श्री मोजेज ने ६५,००० रुपए मासिक वेतन पर काम करना स्वीकार कर लिया.

वास्तव में विश्व के सभी राष्ट्रो ने बडे उत्साह से न्यूयार्क के इस वृहद आयोजन में भाग लिया और अपनेअपने कक्ष बनवाए. केवल कुछ वैधानिक कारणो से रूस, ब्रिटेन और कम्युनिस्ट देशो ने इस का बायकाट किया. दुनिया के प्रायः सभी

राष्ट्रो के उद्योग एव व्यापारी प्रतिष्ठानो ने इतने बडे पैमाने पर स्थान सुरक्षित कराया कि आयोजको को दिल खोल कर खर्च करने की सुविधा हो गई विश्व मेला कमेटी ने केवल ७५० करोड रुपए का बजट खर्च के लिए बनाया था, पर अन्यान्य देशो और प्रतिष्ठानों ने जो खर्च किया उस का अनुमान इसी से लग सकता है कि अमरीका के जनरल मोटर्स, फोर्ड, ड्यूपोंट और जनरल इलेक्ट्रिक कपनी के केवल चार कक्षों में ३७० करोड रुपए लगे भारतीय कक्ष में तीन करोड और पाकिस्तानी कक्ष में ८० लाख रुपए

विश्व मेले का बहुत बडा विस्तार था पैदल घूमना सभव न था मगर इच्छा थी कि कम से कम एक चक्कर लगा कर के सतोष कर लिया जाए हम ने मेले की ट्रेन में बैठ कर सारे मेले का एक चक्कर लगा लिया इस के बाद फोर्ड मोटर कपनी के पैवीलियन में गए विद्युत चालित पटरियो पर पचासो बडीबडी नई मोटरें धीमी चाल से चल रही थीं एक गाडी में हम लोग भी बैठ गए मोटर हमें एक अधेरी गुफा में ले गई

यहा प्रागैतिहासिक युग के महाकाय दिनासुर और ब्राटासुर जानवर अपने सहज भाव से विचर रहे थे, जिन की लबाई सत्तरअस्सी फीट की थी हमारे यहा के हाथी और गैंडों को तो इन के मुकाबले में बच्चो के खिलौने कहा जा सकता है २०वीं शताब्दी के जानवरो से सर्वथा भिन्न इन दैत्याकार जीवो की लपलपाती जीभ, लाल अगारे जैसी आखें और बडेबडे चमकते दातो को देख कर रोमाचित हो जाना स्वाभाविक था अगर यह पता न रहे कि ये जतु वाल्ट डिजनी द्वारा बनाए गए प्लास्टिक माडल हैं तो कमजोर दिल वालों की तो शामत ही समझिए

लाखों वर्ष पूर्व के आदि मानव को देखा गिरि कदराओ में रहने वाला, सुपुष्ट लबी भुजाए, कधों के नीचे तक झूलती केश राशि चौडे सीने पर खेल रही थी किसी प्रकार के परिधान का तो उस समय तक आविष्कार ही नहीं हुआ था मैं आश्चर्य से देखने लगा मुझे उस की आखो में ऐसा लगा कि मानो मुझ से पूछ रहा है कि मुझे पहचानते नहीं? मैं तुम्हारा पूर्वज हू तुम जेट युग में भले ही हो, पर दुख है कि तुम खुद बहुत कमजोर हो तुम्हारा मन और साहस तुम से भी कमजोर है इतने में ही मोटर सरकती हुई आगे बढ गई दूसरे कक्षों में दिखाया गया था कि सभ्यता का विकास गुफाओं से एपायर स्टेट बिल्डिंग के ताप नियत्रित कक्षों तक किस प्रकार क्रमानुसार हुआ है इतने सजीव माडल बने थे कि स्वाभाविकता में सदेह की गुजाइश नहीं थी पत्थर के चक्कों की गाडियो से ले कर हवा से होड लेने वाली आज की मोटरो के निर्माण का क्रम बडी कुशलता से दिखाया गया था

फोर्ड ने पुरानी बातें दिखाईं और हमें युगों पहले ले गया तो जनरल मोटर्स कारपोरेशन ने आज से ४० या ५० वर्ष बाद की झांकी दिखाई

यहां हम एक विशेष प्रकार के यान में बैठे और हजारों फीट नीचे समुद्रतल में पहुचे हम ने देखा, वहां एक खूबसूरत रेस्तरां है लोग खापी रहे हैं, गप्पें लडा रहे हैं कभीकभी खिडकियों से शार्क या ह्वेल झांक कर चली जा रही ह

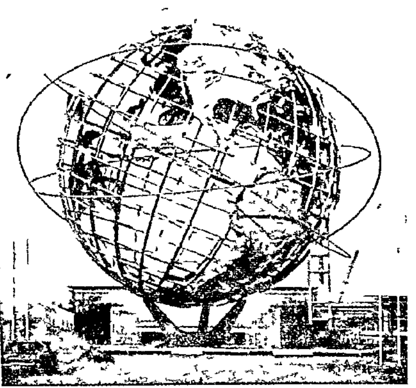

युनाइटेड स्टील द्वारा बनाई गई लोहे की पृथ्वी

झुंड की झुंड मछलियां, रंगबिरंगी किरणें बिखेरती चली जा रही हैं बड़ा सुहावना लगा इतने में देखा एक ह्वेल मुंह खोले खड़ी है लगा, टेबलकुरसियों समेत हमें निगल जाएगी गनीमत थी कि खिड़कियों पर मोटे शीशे थे

समुद्रतल से बाहर आ कर हम एक जगह और ले जाए गए हरियाली की लहरें खेतों में दौड़ रही थीं चारों तरफ फलों और फूलों के बगीचे थे मैंने पूछा, "यह कौन सी जगह है?" उत्तर मिला, "पचास वर्ष पहले आप जिसे सहारा का रेगिस्तान कहते थे"

यहां यह लिख देना जरूरी है कि हम ने जिन चीजों को देखा, वे असली नहीं थीं आने वाले ५० वर्षों में विज्ञान के बल पर मनुष्य कितना साधन संपन्न हो जाएगा इस की कल्पना मात्र थी पर इस प्रकार की व्यवस्था की गई थी, जैसे कि वास्तव में ही हम समुद्र के गर्त्त में उतर रहे हैं आज एक देश से दूसरे देश में जिस आसानी से हम जातेआते हैं उसी प्रकार ग्रहउपग्रहों की यात्रा संभव हो जाएगी आज की तरह हमें सड़कों पर ट्रैफिक की दिक्कत न होगी मोटरें मकान की छतों पर से ही उड़ेंगी

ये सारी बातें कल्पना भले ही हों, पर इतना स्वाभाविक वातावरण बना दिया गया था और इस ढंग से प्रस्तुत किया गया था कि वास्तविकता का बोध

होता था मैं ने प्रभुदयालजी से कहा, "काश, हम चालीसपचास वर्ष बाद जन्म लेते और इन सुविधाओ का उपभोग कर पाते!"

"ऐसी भी क्या बात है," उन्होने हस कर कहा "विज्ञान जिस गति से बढ़ रहा है, पदरहबीस वर्षों में भी ये बातें सभव हो सकती हैं और तब हम भी चद्रमा की सैर कर लेंगे"

इन दोनों कक्षों को देखने के बाद हम तीसरे में गए यह ड्यूपोंट कारपोरेशन का था ड्यूपोंट विश्व के प्रथम १५ प्रतिष्ठानो में है, जिन का वार्षिक उत्पादन ५,००० करोड का है—अर्थात सारे भारत के कारखानो से ज्यादा नाइलन आदि रासायनिक रेशो के आविष्कारक होने का उन्हें गौरव प्राप्त है इन के पेवीलियन में हम ने विभिन्न प्रकार की आवश्यक वस्तुओ की निर्माण विधि और क्रियाए देखी इस के अलावा एक कौमिक ड्रामा भी देखा अभिनेताओं या अभिनेत्रियों में कौन वास्तविक है और कौन प्लास्टिक का माडल है, पहचानना मुश्किल था इस ढग से हावभाव का प्रदर्शन और बातें करते थे कि जब तक यह बताया न गया कि अमुक पात्र प्लास्टिक का बना है, हम उसे असली ही समझ बैठे थे पिछले दोनो कक्षों के अद्भुत और भयावह दृश्यो के कारण ड्यूपोंट के इस चमत्कारिक कलात्मक प्रदर्शन ने मन को मोह लिया वास्तव में उन का उद्देश्य भी यही था कि दर्शको के मन से बहुत दिनो तक उन का नाम न हटे विज्ञापन और प्रचार की यही सफलता है

जनरल इलेक्ट्रिक कपनी के पेवीलियन में बिजली के आविष्कार से शुरू कर आज तक इस के कितने विभिन्न ढग के उपयोग होते रहे हैं, इस का प्रदर्शन बडे आकर्षक तरीके से किया गया था बिजली क्या है, उस की शक्ति कितनी है—यह सब बहुत ही सुदर तरीके से दिखाया गया था एक अधेरा कमरा था, वहा जाने पर ऐसा लगता था कि सारा कक्ष जोरो से हिल रहा हो, आसमान में बिजली की चमक और कडक—साथ ही जोरों की वर्षा एक दूसरे कक्ष में दिखाया गया था, जब बिजली न थी, मनुष्य भोजन कैसे बनाता था बेचारी गृहिणी की आखें चूल्हा फूकतेफूकते लाल हो गई थीं शायद लकडिया गीली थीं और आग नहीं जल रही थी, उधर पति को शिकार में जाने की जल्दी थी उस का शिकारी कुत्ता पास में खडा पूछ हिला रहा था प्लास्टिक के सारे माडल आदमकद थे और बडे ही स्वाभाविक बनाए गए थे

इन चारों कक्षों को देखने में दोढाई घटे लग गए और अभी भी सैकडो बाकी थे इसलिए कुछ और देख लेना तय किया जनरल सिगरेट कारपोरेशन के कक्ष में गए इन के प्रचार का तरीका भी कम मजेदार नहीं था बच्चे बूढ़े, जवान, औरत, मर्द सभी आनद ले रहे थे एक प्रकार का मैजिक शो था—भारतीय रस्सी की जादुई करामात पर एक महिला खडी रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ती जाती है और वहा गायब हो जाती है वह तो फिर दिखाई नहीं देती, मगर अधेरे में कुछ पशी सिगरेट पीते दिखाई देते हैं इस दृश्य को ऐसे ढग से प्रस्तुत किया गया था कि सभी हस रहे थे बच्चे तो बेहद खुश, हटने का नाम नहीं लेते थे

डेढ़ बज चुके थे भूख जोर से लग रही थी शहर जा कर मेले में वापस

कमजोर दिल वालो की शामत के लिए महाकाय दिनासुर व ब्रांटासुर

आने के बजाए यहीं भारतीय गेलार्ड रेस्तरां में खाने का निश्चय हुआ. विभि
देशों के रेस्तरां अपनेअपने राष्ट्रीय व्यंजनों की विशेषताओं के साथ मेले में खोले
थे. भारतीय रेस्तरां काफी जनप्रिय साबित हुआ. शमी कबाब, मुर्ग मुस
मुर्ग तंदूरी, आदि नाना प्रकार के भारतीय व्यंजन मांसाहारियों के लिए दिन
तीनों साथी शाकाहारी थे. जलेबियां और खीर बनी थी. हमारे ागरों
भारतीय मीनू बहुत अच्छा रहा, स्वादिष्ट था, डट कर खाया. कि मजदूर
कुछ अखरा जरूर. चार व्यक्तियों के लिए करीब १८० रुपए लगे। दैनिक
बख्शीश के अलग. केशरिया खीर और जलेबी बहुत महंगी पड़ी ढाई लाख

खुले स्थान में कुछ आराम करने के बाद तीन बजे से हम ने १८० लाख
भारतीय पेवीलियन में आए. अपने देश की बनी चीजें बड़े आ के अलावा
देख चित्त प्रसन्न हो उठा. भारतीय वेशभूषा में दसबारह युवक लिए गए
हर चीज की जानकारी दे रही थीं. इन में से एक सो आसा ी इसे देखने
हमारे मित्र पी. सी. बरुआ की पुत्रवधू थीं. हम अपने देश को'
से बहुत प्रभावित हुए. बातचीत और हावभाव में भ के पूर्व ही हम ने

सब से पहले हम पेप्सीकोला के कक्ष में गए इस का पेय मशहूर है इन की वार्षिक बिक्री २०० करोड़ रुपए की है इन के कक्ष में भी डिजनी द्वारा बनाई गई ३५ बडीबडी गुडियो को देखा, पानी में नाव चला रही हैं, गाना गा रही है, ईरान की कालीन पर बैठ आसमान की सैर कर रही है बच्चो की भीड जमी थी कौतूहल भरी सरल आखें और हसते चेहरा में हम भी अपना बुढापा भूल गए

बेलजियम के कक्ष में हम ने देखा, आज से २०० वर्ष पूर्व का एक गाव मकान, दुकान, रहनसहन, पहनावा सभी उस जमाने का वातावरण बिलकुल ऐसा लगा कि मानो कहीं हम १८ वीं सदी में हो दुकानदार, खरीदार और वस्तुए सभी उस जमाने की सडको पर चूल्हे रख कर तेल में पकौडिए तली जा रही थीं तो कहीं सडक के किनारे ही बैठ कर लोग ताश और शतरज खेल रहे थे

विश्व विख्यात काइसलर मोटर के कक्ष में दस मजिला एक राकेट दिखाया गया था और हरेक मजिल पर मशीनों से बना आदमी इस के अलावा एक काइसलर कार भी थी, जो दुनिया की सब से बडी मोटर बनाई गई थी

स्पेन और वेटिकन (पोप) के कक्ष में वे अमूल्य चित्र देखने में आए, जिन्हें कभी भी अपने स्थान से अलग नहीं हटाया गया था माइकल एजलो, गोया, पिकासो, एलग्रेबो आदि की सर्वोत्तम कृतिया एक ही स्थान पर देखने को मिलीं 'अतिम भोज', 'माता और शिशु' तथा 'ईशु और सत पीटर' के अनेक चित्र यहा सजे थे, जिन में कइयो की कीमत ५० लाख से दो करोड तक की थी

विश्व विख्यात पेय कोकाकोला का पेवीलियन भी हम ने देखा पप्सीकोला की वार्षिक बिक्री २०० करोड की है तो इन की ६६० करोड रुपए अर्थात हमारे यहा के टाटा और बिडला दोनों के सारे कारखानों से भी अधिक इन के स्टाल में हम ने एक प्रकार का रेडियो देखा इसे ट्रासफार्मर और रिसीवर का सम्मिलित रूप कहा जा सकता है इस के द्वारा दुनिया के किसी भी कोने से आपस में बात की जा सकती है, बशर्ते कि दोनों के पास इसी प्रकार के सेट हो यह यत्र जनसाधारण के व्यवहार के लिए नहीं है केवल सरकारी तौर पर इस का उपयोग सीमित रखा गया है और अभी प्रारभिक अवस्था में है

कोडक ने अपने कक्ष में एक रगीन तसवीर दिखाई थी आकार था, ३६ × ३० फुट उन का दावा था कि इस आकार का फोटोग्राफ अब तक बन नहीं पाया है इन के कक्ष में ससार के सर्वोत्तम फोटोग्राफ देखने को मिले

सभी देशा ने अपनेअपने राष्ट्रीय जीवन और उद्योगधर्मो का प्रदर्शन किया था अफ्रीका के देशा के कक्षो में उन का सस्कृति, कला, प्राकृतिक दृश्य और वन्य पशु कम आकर्षक नहीं लगे उन्हें अच्छी तरह देखन से एक प्रकार स विश्व भ्रमण हो जाता है

अफ्रीकी देशों में हमें सयुक्त अरब राज्य (मिस्र) का कक्ष अधिक आकर्षक लगा हमारी तरह इन की भी सस्कृति प्राचीन है पाश्चात्य क विद्वाना की तो मान्यता रही है कि मानव सभ्यता का विकास नील घाटी स प्रारभ हुआ, पर हमारे मनीषी लोकमान्य तिलक ने अपनी 'वैदिक सभ्यता' में एसी धारणाओं को

टारपीडो नुमा 'टाइम कैपसूल' जो ५००० वर्ष बाद भी आज की याद दिलाएगा

भ्रमपूर्ण सिद्ध करते हुए बताया है कि वैदिक सभ्यता ही प्राचीनतम है

ईसा पूर्व ५,००० वर्ष से ईसा पूर्व, २००० वर्षों तक विभिन्न काल में प्रयोग में आने वाले लोहे, सोने और चांदी के गहने, पोशाकें, बरतन आदि इस कक्ष में देखने में आए सम्राट तूतनखामेन का सुवर्ण मंडित शव भी वहा देखा मिस्र की अपनी पिछली यात्रा में इन वस्तुओ को काहिरा के म्यूजियम में देखने का अवसर मिला था

इस के बाद हम ने इसराइल का कक्ष देखा इस ने हमें बहुत प्रभावित किया यहा १६ वर्ष के इसराइल के निर्माण का इतिहास चित्रो के माध्यम से दिखाया गया था यह यहूदियो का एक मात्र नया राज्य है हिटलर ने यहूदियो पर अमानुषिक अत्याचार किए जिस से विश्व की सहानुभूति उन के प्रति हो गई

द्वितीय महायुद्ध में यहूदियो ने मित्र राज्यो को तनमनधन से सहायता भी पहुचाई इसी कारण ब्रिटेन को बाध्य हो कर फिलस्तीन में यहूदियो के राज्य की माग स्वीकार करनी पडी राज्य बना, पर मिली बजर भूमि और साथसाथ पडोसी अरब राज्यो से भी युद्ध छिडा बीचबचाव के कारण संधि हो गई, पर मनमुटाव और तनाव अब भी है सीमात पर मिस्र, सीरिया, ईराक और जोरडन के अरब राज्य पैंतरे कसे हुए हैं इसराइली किसान कधे पर बदूक लादे खेती और बागवानी करते जा रहे हैं इन पदरहसोलह वर्षों में इसराइल ने हर क्षेत्र में विकास और उन्नति की है जिन वीरान जगहो में धरती फटी थी और रेत की आंधियां चलती थीं, आज वहा साकपानी, अंगूर और माल्टा के

बागबगीचे हैं संसार के सभी देशों में इसराइल अपने माल्टा और अंगूर का निर्यात कर विदेशी धन कमा रहा है इसराइल की इन्हीं झांकियों को देख कर हमें अपने देश के राजस्थान का खयाल हो आया हम भी तो राजस्थान की मरुभूमि को उपजाऊ बना सकते हैं यदि हमारी सरकार इसराइल में अपने विशेषज्ञ भेज कर आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करे तो निश्चय ही हमें भी सफलता मिलेगी

इसराइल का कक्ष बहुत बड़ा तो नहीं था, फिर भी था करीने से लगाया हुआ फिलस्तीन में ईसामसीह का आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले जन्म हुआ था उस समय की सड़कें, गांव, रहनसहन के तौरतरीके इतने स्वाभाविक ढंग से प्रदर्शित थे कि हम उसी युग में पहुंच गए

स्विट्जरलैंड के कक्ष में देखा आल्पस पहाड़ की गोद में बसा हुआ एक छोटा सा सुंदर गांव यहां घड़ियों के पुर्जे बन रहे थे स्विट्जरलैंड घड़ियों का देश है और दुनिया में इस के लिए उस की साख बेजोड़ है अमरीका और रूस भले ही अंतरिक्ष यान को बनाने में सफल हुए हों पर जहां घड़ियों का सवाल है, स्विस स्तर के बारीक पुर्जे वे अब तक नहीं बना पाए स्विट्जरलैंड में यह उद्योग इतना अधिक उन्नत है कि विश्व प्रसिद्ध ओमेगा और रोलेक्स के अलगअलग पुर्जे गृह-उद्योग के रूप में घरों में बनते हैं कारीगर निर्भर योग्य हैं और मेहनती भी खुशहाल स्विस गांवों को देख कर मन में यह स्वाभाविक जिज्ञासा उठती है कि हम कब ऐसे सुखी हो पाएंगे

यू० एस० रबर कंपनी ने ८० फीट के घेरे का एक विशाल टायर बनाया था, इस में कुरसियों पर बैठा कर लोगों को चक्कर लगाते देखा एक तो नौ रुपए शुल्क था, दूसरे चक्कर आने का भय हम ने तो दूसरों को घूमते हुए देख कर ही संतोष कर लिया

अंत में लिंकन कक्ष को देख कर हम ने मेले का कार्यक्रम समाप्त किया हमारे देश में महात्मा गांधी का जो स्थान है, वह अमरीका में जार्ज वाशिंगटन का है और अब्राहम लिंकन के प्रति वहां की जनता में हमारे स्वर्गीय नेहरूजी की तरह श्रद्धा है

लिंकन वकालत करते हुए राजनीति में आए और अमरीका के प्रेसीडेंट निर्वाचित हुए अमरीकन नीग्रो के हित एवं अधिकार के समर्थन के कारण एक गोरे आततायी ने उन्हें गोली मार दी थी

लिंकन कक्ष में उस समय की साजसज्जा के साथ व्हाइट हाउस का लिंकन का कमरा दिखाया गया था हम ने देखा, लिंकन अपने दैनिक काम में व्यस्त हैं, विदेशों के प्रतिनिधि इकट्ठे हैं और उन के बीच लिंकन वह घोषणापत्र पढ़ कर सुना रहे हैं, जिस में नीग्रो नागरिकों को दासता से मुक्ति दे कर स्वाधीनता का अधिकार दिया गया था वाल्टर डिजनी द्वारा प्लास्टर या मोम की बनी लिंकन की प्रतिमा देख कर कृत्रिम होने का आभास तक न होता था बिलकुल स्वाभाविक रूप से लिंकन का अंग संचालन एवं होंठों का हिलना कम आश्चर्यजनक नहीं था सब से बड़ी बात तो यह थी कि यह प्रतिमा निरंतर थी और

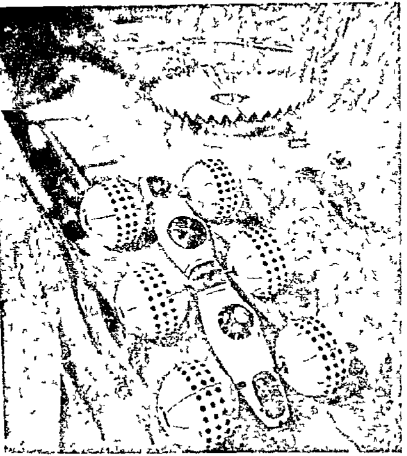

जनरल मोटर्स की चाद पर चलने वाली गाडी का एक नमूना

बोलती भी थी.

कौतूहल हम दबा न सके और हम ने कक्ष के प्रबधक से इस के बारे में पूछा पता चला कि इस बात की गहरी गवेषणा की गई कि इस आकृति के मानव की आवाज कैसी होगी, जिस प्रदेश के और जिस समय के लिंकन थे उस स्थान और समय की भाषा कैसी थी? इसी प्रकार वैज्ञानिक आधारों पर टेप रेकार्डिंग कर यत्र को प्रतिमा के अदर बैठा दिया गया है अग सचालन का नियत्रण अलग से किया जा रहा है. विज्ञान जो न करे!

विश्व मेला देख कर हम लौट रहे थे मैं यही सोच रहा था कि आज के युग में उद्योगव्यापार और राष्ट्र की गतिविधि के लिए प्रचार कितना अनिवार्य हो उठा है. इसी प्रकार के मेलो से विश्व के विभिन्न देशो के नागरिक जीवन, शिल्पउद्योग की स्थिति और प्रगति के बारे में अच्छी तरह से जानकारी हो जाती है. भारत आ कर अपने मित्रों एव परिवार वालो को मैं ने केवल न्यूयार्क के विश्व मेले को देखने के लिए ही अमरीका जाने की सलाह दी मेला इतना लोकप्रिय एव सफल रहा कि इसे सन १९६५ में भी चालू रखा गया

ग्रेट ब्रिटेन

दुनिया की समस्या सुलझाने वाला, खुद उलझा हुआ

अंगरेज अपने छोटे से देश को सिर्फ ब्रिटेन ही नहीं कहते बल्कि ग्रेट ब्रिटेन भी कहते हैं

ब्रिटेन अब भले ही ग्रेट न रह गया हो पर था एक जमाना इस का भी सपूर्ण पृथ्वी पर जगहजगह फैले हुए इस के विस्तृत साम्राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था इस की सेना पृथ्वी के पाचों महाद्वीपों में सीना फुलाए, सगीनें ताने खडी रहती थी इस के जगी जहाजो के बेडे सागर की लहरों पर शान से बेरोकटोक घूमते थे इस के व्यापारी जहाज देशविदेशो से सोनाचादी जवाहरात, धातु और कच्चा माल ला कर ब्रिटेन को दौलतमद बनाते थे वास्तव में ब्रिटेन महान था, ग्रेट था, उस का लोहा सभी मानते थे

सन १९३० तक औसत भारतीय अगरेज को देख कर भयभीत सा हो जाता था यही कारण था कि तैंतीस करोड भारतीयो पर अगरेजो ने अपनी एक लाख ब्रिटिश फौजों से लबे समय तक शासन किया

मैकाले के समय से ही शिक्षा के पाठ्यक्रमो में अगरजों की बडाई, उन के धर्म और सस्कृति की श्रेष्ठता आदि का इस ढग से समावेश किया गया कि भारतीय विद्यार्थी अगरेज, अगरेजी और अगरेजियत के अधभक्त बनते गए लोगो में यह धारणा बन गई कि रेल, डाकतार, पक्की सडके, नहरें, बिजली आदि अपने देश में अगरेजो की बदौलत ही हम देख पाए स्मिथ और मार्सडन का इतिहास पढ कर हम टीपू सुलतान, सिराजुद्दौला, चेतसिंह, महाराज नदकुमार आदि सब को कुचक्री, विलासी और डरपोक मानने लगे जब कि क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्स और डलहौजी का असली रूप हमारे सामने कभी भी नहीं आ पाया

जो भी हो, सन १९२० से १९४७ तक गाधीजी के नेतृत्व में जो स्वराज्य आदोलन चला, उस से देश में राजनीतिक चेतना जाग उठी जनसाधारण यह समझने लगा कि अगरेजो की मशा भारत की सेवा करना नहीं, बल्कि शासन और शोषण करने की है

दो महायुद्धों के कारण ब्रिटेन कमजोर हो गया और उस का खोखलापन सामने आ गया इसी कारण अपनी रक्षा के लिए अगरेजो को सिमटने के लिए बाध्य होना पडा एकएक कर के भारत, लका, बर्मा, मलाया आदि सब अधीन देशों को उसे स्वतत्रता देनी पडी ग्रेट ब्रिटेन नाममात्र को ग्रेट रह गया

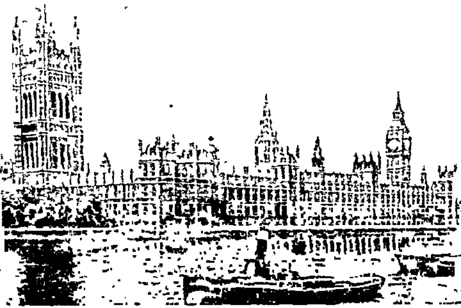

ब्रिटिश पार्लियामेंट और टेम्स नदी : खामोशी के बीच

बचपन से ही जिज्ञासा थी कि अगरेज इतने बड़े कैसे? महाभारत की कथाओ में हम ने पढ़ा था कि भारत भी कभी ससार में श्रेष्ठ माना जाता था. अश्वमेध यज्ञ में हस्तिनापुर और इद्रप्रस्थ में विश्व के कोनेकोने से प्रतिनिधि आए थे, साथ में भेंट उपहार भी लाए थे. उस समय के बाद हमारा पतन हमारी आपसी लडाई के कारण हुआ उस के बहुत बाद तक भी छोटीछोटी बातो को ले कर कभी राठौर और बुदेलो में, तो कभी सिसोदियो और तवरो में लड़ाइया होती रहतीं. इतना ही नहीं बल्कि वे एकदूसरे को नीचा दिखाने के लिए मुगलो और पठानों से भी मिल जाते. लेकिन ठीक इस के विपरीत अगरेज अपने देश में स्काट, नार्मन, डेन, रोमन आदि को मिलाते गए और वे सब ब्रिटिश बन गए जब कि हम एक रक्त तो क्या, एक स्वर भी नहीं हो सके. इसी के चलते ब्रिटेन की सर्वांगीण उन्नति अ हमारी गुलामी का इतिहास बना

ब्रिटेन के भूगोल को पढने से पता चलता है कि इस की धरती की कोख में खनिज पदार्थों का प्राचुर्य तो है—पर अन्न कम है. खाद्यान्नो के लिए इसे सदैव विदेशो पर निर्भर रहना पडा है. छोटा सा द्वीपपुंज है, चारों ओर सागर की जलराशि से घिरा हुआ है. खाद्यान्न लाने के लिए जहाजो की जरूरत इसे हमेशा से रही है. स्वरक्षा और सुरक्षा के लिए भी जहाजी बेड़े को तैयार रखना पडता था. इन्हीं कारणो से यह अपनी नौसेना को हर तरह से साधन-संपन्न और सुसज्जित रखता आया है.

ब्रिटेन द्वारा साम्राज्य का विस्तार भी उस की एक आवश्यकता की प्रतिक्रिया थी. अपनी दलदली जमीन, बढती हुई आबादी और खाद्यान्नो की कमी के कारण इस का विदेशो में फैलना स्वाभाविक था यूरोप में यह सहज और संभव नहीं था क्योंकि वहा पहले ही से फ्रास, आस्ट्रिया, जरमनी, स्पेन आदि पासपड़ोस में थे जिन

की ताकत इस से कम नहीं थी इसलिए अगरेजों ने दूर के देशों में पैर फैलाने शुरू किए यों तो फ्रांस, हालैंड, स्पेन और पुर्तगाल भी इस के प्रतिद्वद्वी हो कर पहले से ही यहा जमे हुए थे मगर अगरेजों की कूटनीति और धूर्तता के कारण वे पिछड गए अगरेजो का शासन यथार्थ रूप से सागर की लहरो पर हो गया अगरेज बडे गर्व से लिखते और कहते कि बरतानिया लहरो पर राज्य करता है

भारत में आए थे व्यापारी बन कर जहांगीर के दरबार में सर टामस रो ने घुटने टेक कर, दस्तबस्ता हो कर व्यापार के लिए कुछ सुविधाओ की अर्जी मजूर करवाई थी, पर थोडे समय बाद ही जब पैर जमने लगे तो भारतीयों की आपस में एकदूसरे से भिडा कर हेस्टिग्स की रवानगी तक देश के बहुत से हिस्सों पर इन्होने अपना आधिपत्य जमा लिया

१७८२ में इन्हें अमरीका में जार्ज वाशिंगटन से करारी हार खानी पडी तब से इन का सारा ध्यान भारत की ओर हो गया, क्योकि कच्चा माल यहां से यथेष्ट मिल सकता था महा का धनवैभव आखो में चमक पैदा कर रहा था अमरीका में योजना विफल हो गई थी कनाडा और अफरीका के देश उस समय तक अविकसित थे भारत पारस्परिक फूट में बिखर रहा था इसलिए भारत ने ब्रिटेन को सर्वाधिक आकर्षित किया

मुगल साम्राज्य लडखडा रहा था उस के प्रांतीय गवर्नर या सूबेदार अथवा निजाम स्वतत्र थे, जो आपस में लडतेभिडते और सधि करते थे राजस्व मिल नहीं रहा था केंद्रीय शासन चलता कैसे? शहशाहे हिंदुस्तान शाहआलम का शासन लालकिले से पालम तक रह गया था अगरेज मौकेबेमौके किसी न किसी बहाने, कभी एक का और कभी दूसरे का पक्ष ले कर राजेनवाबों को आपस में लडाते रहते थे इस प्रकार भारतीय राजनीति में इन का प्रवेश हो गया पलासी के युद्ध में इसी तरह की कूटनीति से इन को आशातीत सफलता मिली मराठों के साथ भी इन्होंने यही नीति अपनाई परिणामस्वरूप इन्हें अपार धनराशि हाथ लगने लगी अगरेजी जहाज सोनाचादी और जवाहरात के सदूको को लादलाद कर लदन पहुचाने लगे

राबर्ट क्लाइव और वारेन हेस्टिग्स ने तो भारत में ऐसे अत्याचार किए और लूट मचाई कि शरीफ अगरेज आज भी इन का नाम सुन कर शर्मिन्दा हो जाता है इसी प्रकार अगरेजो ने एशिया और अफ्रीका के पिछडे देशो चीन, स्याम, मलाया, ईरान, ईराक व मिस्र को भी न छोडा, यहा तक कि चीन को जबरन अफीम खिलाने के लिए युद्ध छेड दिया इस तरह फटेहाल ब्रिटेन खुशहाल बन गया

सन १९१४ के प्रथम महायुद्ध तक ब्रिटेन का दबदबा विश्व के सभी देश मानते थे आज जिस प्रकार अतर्राष्ट्रीय व्यापार में डालर को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है और लेनदेन भी ज्यादातर इसी के माध्यम से होता है, उसी प्रकार प्रथम महायुद्ध तक ब्रिटिश पाउड को विश्व के बाजारों में मान्यता मिली हुई थी उन दिनो अमरीका को अपने खनिज पदार्थों के अपार वैभव का पता तो चल गया था पर सैनिक शक्ति में वह ब्रिटेन, जरमनी और फ्रास से पिछडा हुआ था इसलिए विश्व के रगमच पर प्रथम श्रेणी में नहीं था

युद्ध साढे चार साल तक चला ब्रिटेन की भौगोलिक स्थिति और ब्रिटिश

मैनचेस्टर में बमबारी से ध्वस्त मकानों का निरीक्षण करते हुए श्री चर्चिल

जनता के त्याग, बलिदान, साहस और देशप्रेम ने जरमनों की बड़ी शक्ति को धैर्यपूर्वक रोका बहुत बड़ी संख्या में भारत के बहादुर जवान युद्ध में शहीद हुए युद्धऋण और सहायता के नाम पर खरबों रुपए का सामान और सोना भारत से जबरन ब्रिटेन ले जाया गया अजय जरमनों को केवल भारतीय सेना और अमरीकी साधन ही रोक सके थे, वरना यूरोपीय फौजें तो घुटने टेक चुकी थीं ब्रिटेन ने वादा किया कि युद्ध समाप्त होने पर वह भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देगा

युद्ध समाप्त हुआ भारत को पुरस्कार मिला—जलियांवाला बाग का हत्याकांड और रौलट ऐक्ट शोषण और दमन की चक्की जोरों से चल पड़ी भारतीय जनता अपमान, दुख और क्षोभ से विकल हो उठी दरअसल यहीं से अंगरेजों की राजनीति और कूटनीति के कारण उन के प्रति भारतीयों के मन में संदेह बढ़ता गया और पारस्परिक संबंध बिगड़ते गए

जो भी हो, अंगरेजों में एक सब से बड़ा गुण रहा है उन का स्वदेश प्रेम दूसरे देशों के प्रति जहां अवसरवादिता और वादाखिलाफी की नीति उन्होंने बरती, वहीं अपने देश के प्रति ऊंची वफादारी और त्याग की भावना उन में सदैव रही है ब्रिटिश, चाहे स्काट हों या इंगलिश, रोमन कैथोलिक हों या प्रोटेस्टेंट, हमारी तरह भाषा प्रदेश या धर्म के कारण कभी भी बिखरे नहीं यही वजह है कि विश्व में प्रजातंत्र की व्यवस्था यहां सर्वाधिक सफल रही है ब्रिटिश संसद के प्रति इन की श्रद्धा और अनुशासन को दूसरे देशों में उदाहरणस्वरूप माना जाता है

अगरेजों से मेरा १९२५ से ही घनिष्ठ सबध रहा है मैं ने यह महसूस किया कि राजनीतिक दावपेंच में वे भले ही दूसरे देशों के प्रति कुटिल हों, पर व्यापारिक व्यवहार में वे अन्य देशो की अपेक्षा कहीं अधिक निभर योग्य हैं घटिया माल दे कर ग्राहक को धोखा देने की बात शायद ही कोई ब्रिटिश फर्म सोचेगी इस ढग के व्यवहार से राष्ट्र की प्रतिष्ठा में बट्टा लगता है, इस का उन्हें बडा ध्यान रहता है

सन १९३५ तक हमारे यहा महीन कपडे ज्यादातर ब्रिटेन के मैनचेस्टर से या लकाशायर से आते थे इन के अर्ज, माप और किस्म में किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं आया भारत में जो अगरेजी फर्में आयात का व्यापार करती थीं, वे अपने लाभ में से बैनियन, दलाल, मुकादम और दुकानदार को भी हिस्सा देती थीं इसलिए इन के प्रतिष्ठानो के प्रति सैकडो व्यक्तियों की शुभकामनाए रहती थीं और उन को हर प्रकार का सहयोग इन से मिलता था जब से भारतीयों के हाथ में कारोबार आया, उन्होंने इन सब को हटा कर सब काम स्वय करना शुरू कर दिया

मैं ऐसे कई अगरेजों को नजदीक से जानता हू जिन्होंने अवकाश ग्रहण कर भारत से स्वदेश जाते समय कारोबार का अपना हिस्सा अपने भारतीय सहयोगियो को अत्यत उदार शर्तों पर बेच दिया एक लबी अवधि तक ब्रिटिश फम में काम करने के कारण बहुत से अगरेज मेरे मित्र हो गए थे वे बराबर लदन आने के लिए मुझे निमत्रण देते अपन देश का वणन करते समय उन के चेहरे पर एक प्रकार की चमक आ जाती थी उन के स्वर में गव की मधुर गूज भी रहती थी

मेरी घुमक्कडी की वृत्ति शुरू से ही रही है, इसलिए इच्छा होती थी कि यूरोप देख लू पर सन १९३८ तक यह सभव न हो सका इस के बाद द्वितीय महायुद्ध छिड गया और सारी सभावनाए समाप्त हो गईं

इस समय तक ब्रिटेन और हमारे पारस्परिक सबध न केवल बिगडते ही गए बल्कि उन में कटुता भी बढ़ती गई अपनी इच्छा के खिलाफ हमें ब्रिटेन के पक्ष में द्वितीय महायुद्ध के दौरान अपनी फौजें और प्रचुर युद्धसामग्री भेजनी पडी दिल से हम ब्रिटेन की हार की मनौतिया मानत थ प्रत्येक रात्रि हम लोग बर्लिन रेडियो पर ब्रिटन की हार और जरमनी की जीत की खबरें सुनत और अपने मित्रो और परिवार में उस की चर्चा बडे उत्साह से करत थ देश के अधिकाश लोग हिटलर को भारत का हितषी, चरित्रवान और बहादुर समझत थ शत्रु का शत्रु सदैव मित्र हो जाता है

अगरेजो की कूटनीति और हिटलर के दभ के कारण इस बार भी अमरीका व रूस ब्रिटन के पक्ष में युद्ध में उतर पडे अमरीका के पास अटूट साधन और सामान था, उस की फौजें भी ताजादम थीं उधर जरमनी थक गया था इस लिए लब समय तक जरमन टिक न पाए सन १९४५ में उन की फौजों ने हथियार डाल दिए मित्रशक्तियो की जीत हुई ब्रिटन विजयी हुआ पर जीत उसे महगी पडी वह जजर हो गया जीत कर भी हार गया विश्व राजनीति में प्रथम शक्ति का पद अब मिला अमरीका व रूस को महाजन ब्रिटन, अमरीका और भारत का कजदार बन गया सन १९४७ में उस पर हमारा चौदह अरब रुपयो

का कर्ज था.

सन १९४६ से १९५० तक सकट और अभाव में रह कर ब्रिटेन ने जिस प्रकार अपना पुनर्गठन किया, वह सभी देशो के लिए और खासतौर से हमारे लिए अनुकरणीय है स्वय अपने को अभाव में रख कर विदेशो में माल निर्यात कर उन्होंने न केवल कर्ज चुकाया बल्कि आज बहुत से देश उन के कर्जदार है अपने अधीन भारत से उन्होने कर्ज लिया, स्वाधीन भारत का कर्ज चुकाया और उसे फिर कर्ज दिया

उन्होंने महीने में चार औंस मक्खन, छ औंस चीनी, १५ अडे और अपेक्षित खुराक से कम चावल और आटे के राशन पर शाति और धैर्य से वर्षों गुजार दिए किसी ने सरकार से न शिकवाशिकायत की और न इस कठोर व्यवस्था की आलोचना ही अनुशासन और समता की भावना का इसी से अदाजा लग जाता है कि किसी धनी व्यक्ति ने अधिक मूल्य दे कर दूसरे के हिस्से को हथियाने की कोशिश नहीं की यही वजह है कि यूरोप के सभी देशो में जब काले बाजार की कालिमा छाई हुई थी, ब्रिटेन में उस का नामोनिशान तक न था

मुझे सन १९५० में पहली बार लदन जाने का मौका मिला उस समय मैंने देखा कि लदन के अधिकाश हिस्से खडहर से हो रहे थे जरमनो की बमबारी से मकान, अस्पताल गिरजे सभी ध्वस्त हो गए थे अगरेज गभीर था पर उस के चेहरे पर उदासी के साथ दृढता भी थी उन दिनो वहा विदेशियो को तो पूरी खुराक मिलती थी पर अगरेज नागरिक आशिक खुराक पर ही सतुष्ट थे मकान, गिरजे और दुकानें अभी भी टूटीफूटी थीं पाच वर्षों के लवे समय में भी इन की मरम्मत नहीं हो सकी, यह मेरे लिए आश्चर्य का विषय था पूछने पर उत्तर मिला "इन पर बाद में ध्यान दिया जाएगा सब से पहले हम निर्यात को सगठित करना चाहते हैं इसलिए कारखानो और जहाजो पर ध्यान दिया जा रहा है"

उन दिनो लदन की सडको पर स्वस्थ और जवान अगरेज बहुत ही कम दिखाई पडते थे ज्यादातर युद्ध में काम आ चुके थे या घायल हो कर बेकाम हो गए थे पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो की सख्या काफी अधिक थी

पेट और शरीर की भूख मिटाने के लिए माताए अपनी जवान बेटियो के लिए साथियो की तलाश में रहती थीं कभीकभी तो समाचारपत्रो में इस ढग के विज्ञापन भी पढने को मिलते थे कि सुदरी युवती को धनी विदेशी यात्रियो की सेवा के लिए गाइड अथवा निजी सचिव के रूप में काम चाहिए, जो उन के साथ विदेशो की यात्रा के लिए भी राजी है पर यह सब कुछ था व्यक्तिगत सीमा तक राष्ट्रीय मर्यादा और सघर्ष में सब एक से थे कहीं भी चूके नहीं थे

विदेश यात्रा का पहला मौका था स्विटजरलैंड से सीधे लदन गया स्विटजरलैंड का जीवन व्यवस्थित और शात देखा युद्ध से वह बिगडा नहीं था, बल्कि दूसरे देशो को ऊचे दामो में वस्तुए बेच कर समृद्ध हुआ था जब लदन पहुचा तो वहां का वातावरण ही बदला हुआ नजर आया लगा, लोग चलते नहीं बल्कि दौडते थे किसी को बात करने या सुनने का समय नहीं सब से ज्यादा मुझे वहां की यातायात और परिवहन की व्यवस्था ने प्रभावित किया हजारों

दोतल्ले की बसों के अतिरिक्त शहर में भूगर्भ ट्रेनों का जाल सा बिछा है. कार्यकाल के समय प्रति मिनट ट्रेनों का आवागमन, सवारियों का अनुशासन और समय की पाबंदी ने मुझे विस्मय में डाल दिया. अस्सी लाख की आबादी के घने बसे शहर में लोगों को अपनी व्यक्तिगत सुविधा के लिए कहीं भी अनुशासन भंग करते नहीं देखा. सभी कुछ मानो यंत्रवत चल रहा हो.

अभाव से स्वभाव बिगड़ता है, सभी देशों और व्यक्तियों पर यह बात लागू होती है, मात्रा में कमीबेशी का अंतर भले ही हो. रूस में पिछले पचास वर्षों से साम्यवादी व्यवस्था होने के बावजूद अभी तक काला बाजार है. इसी तरह किसी देश में वेश्यावृत्ति, कहीं पाकेटमारी और गुंडागर्दी है तो कहीं ठगी. यूरोप में स्कैंडिनेविया के देशों—डेनमार्क, फिनलैंड, स्वीडन, नार्वे और स्विट्जरलैंड को छोड़ कर बाकी सभी देशों में समाजविरोधी तत्त्व न्यूनाधिक मात्रा में हैं. ब्रिटेन भी इस से मुक्त नहीं. गुंडागर्दी और पाकेटमारी यहां है पर और देशों से कम. दक्षिणी यूरोप में, जहां विदेशियों को बेहिसाब ठगा जाता है, वहां ब्रिटेन में अंगरेज विदेशियों के प्रति सदैव सतर्क रहते हैं ताकि उन के राष्ट्र का चित्र दागी न हो जाए.

लंदन के पुलिस वालों को देख कर पता चलता है कि इनके पुलिस वाले दडधारी यमदूत नहीं बल्कि नागरिकों के सच्चे साथी हैं. हमारे यहां के पुलिस वालों में और उन में जमीनआसमान का अंतर है. अपने यहां के कानून के रक्षक किस ढंग से और किस हद तक गैरकानूनी कारवाई करते हैं, इस का परिचय हमें प्रेमचंद से ले कर अब तक के साहित्य में मिलता है.

लंदन में कांस्टेबल दिखाई पड़े सबल व स्वस्थ छः फुटे जवान, जो बड़े ही विनम्र, प्रशिक्षित और कर्त्तव्यनिष्ठ थे. विदेशियों की हर तरह की सहायता देने को वे हमेशा तत्पर रहते. बच्चों के-तो वे खास दोस्त कहे जा सकते हैं. सड़क, मुहल्ले, प्रसिद्ध मकान और व्यक्तियों की जानकारी के लिए वे चलती-फिरती डायरेक्टरी हैं.

मैं किसी सड़क को खोजता इधरउधर जा रहा था पास आ कर भद्रतापूर्वक एक कांस्टेबल ने अभिवादन किया और कहा, "क्या मैं आप की कुछ सहायता करूं?"

मैं ने सड़क का नाम और मकान का नंबर बताया. उस ने बड़े शाइस्ता ढंग से मुझे सही और आसान रास्ता बता दिया.

चूंकि यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी, अतः व्यक्तिगत अनुभव तो कुछ था नहीं. देश से चलते समय मित्रों ने सलाह दी थी कि कम कपड़े साथ रखे जाएं ताकि सफर हलका रहे. सलाह ठीक थी पर व्यावहारिक नहीं हो सकी, क्योंकि लंदन का मौसम दिन में कई बार बदलता है और हल्की बूंदाबांदी होती ही रहती है.

मैं कुछ कमीजें और एक हैट खरीदने के लिए सेल्फ्रिज के प्रसिद्ध स्टोर में गया. यह आक्सफोर्ड स्ट्रीट पर स्थित है. सुई से लेकर हाथी तक बेचने वाली दुकानों में इस की गिनती है. खानेपीने, विश्राम, किताब पढ़ने, रेडियो और टेलीविजन सुननेदेखने की सारी सुविधाएं यहां सहज उपलब्ध हैं. हजारों आदमी इस स्टोर के विभिन्न विभागों में घूमते रहते हैं. स्टोर कई मंजिलों का है. मैंने सभी मंजिलों में घूम कर पूरी दुकान का चक्कर लगा दिया. रेडिमेड कपड़ों के

श्री चर्चिल जर्मनो द्वारा ध्वस्त की गई 'हाउस आफ कामन्स' में

दाम हमारे यहा से अधिक नहीं थे ब्रिटन में चीजो पर सेलटैक्स अवश्य बहुत ज्यादा है पर विदेशियो को पासपोर्ट दिखाने पर इस की छूट है

भूख लग आई थी इसलिए वहीं रस्तरां में नाश्ता कर लिया ऐसे डिपार्टमेंटल स्टोरो में रेस्तरा के चार्ज अपेक्षाकृत कम रहते है इसलिए बहुत से लोग केवल जलपान करने के लिए यहा आ जाते है यहा पहली बार स्वचालित सीढियो पर चढने का मुझे मौका मिला मेरे लिए यह एक नया अनुभव था अब तो हमारे देश में भी दिल्ली के रेलवे स्टेशन और कलकत्ता के रिजर्व बैंक के भवन में ऐसी व्यवस्था हो गई है

मुझे एक अगरेज मित्र से मिलना था, कलकत्ता से ही उन से पुराना परिचय था वह रिटायर हो कर कई वर्षों से लदन में काम कर रहे थे वह बडे प्रेम से मिले भारत में जो अभिमान की झलक उन में पायी थी, उस का यहा सर्वथा अभाव था भारत के पुराने मित्रो के बारे में वह विस्तारपूर्वक पूछने लगे मनुष्य को अतीत की स्मृतियो की परतें खोलने में बडा ही रस आता है दूसरे दिन उन्होने नाश्ते पर मुझे अपने घर आमन्त्रित किया

शहर से लगभग आठ मील दूर उन का छोटा सा फ्लैट था उन के पास न कोई नौकर था, न आया सब काम पतिपत्नी स्वय अपने हाथों कर रहे

थे. कलकत्ता में कई बार उन के यहां जाने का मौका मिला था. वहां उन के पास पांचछः नौकर थे. यहां घरेलू काम सब हाथ से करने पड़ते हैं. दूसरे कई परिचित अंगरेजो के बारे में पूछने पर पता चला कि कोई सूअरों व अंडों का काम कर रहा है तो कोई ट्रक चला रहा है.

पता ले कर दूसरे दिन सुबह ट्रेन से मिस्टर जॉन के गांव पहुंचा. उन का असली नाम न दे कर अंगरेजो में बहुप्रचलित नाम जॉन दे रहा हूं. पतिपत्नी दोनों मजदूरों से मैले कपड़े पहने मुर्गियों के बाड़े को साफ कर रहे थे, अंडे सहेज कर बिक्री के लिए टोकरी में रख रहे थे. मुझे अप्रत्याशित रूप से देख कर बड़े ही प्रसन्न हुए. पास में ही छोटा सा पर साफसुथरा घर था. वे मुझे यहा ले गए और बहुत अच्छा खाना खिलाया. शाम को उन्होंने अपनी मोटर से स्टेशन पहुंचा कर मुझे छोड़ा. मैं जॉन के साथ बहुत दिनों तक कलकत्ता में काम कर चुका था पर इस समय यह जॉन नहीं था जो गुस्सा होने पर मुझे धमका देता था.

शिष्टता के नाते यहा बड़ेबड़े दुकानदार, होटल वाले या पुलिस वाले विदेशियो को 'सर' कह कर संबोधित करते हैं. जब अंगरेजों के द्वारा मुझे 'सर' कह कर संबोधित किया गया तो मेरे अदर एक गुदगुदी सी होने लगी. आश्चर्य से नजर घुमा कर देखा. पराधीन भारत में हम अंगरेजो को बातबात में 'सर' कहने के आदी हो गए थे. हालत यहा तक थी कि मेरे कई भारतीय मित्र अपने जूट के काम की देखभाल के लिए नियुक्त अगरेज कर्मचारियो को भी स्वभाववश 'सर' कह कर संबोधित करते थे.

दूसरे दिन सुबह नाश्ते के बाद शहर का नक्शा और गाइडबुक जेब में रख घूमने निकल पड़ा.

लंदन का सेंट पाल कैथेड्रल विश्वप्रसिद्ध है यो तो इसे लगभग सन ६०० में बनाया गया था पर कई बार आग लग जाने के कारण इस का पुनर्निर्माण होता रहा है प्रोटेस्टेंट ईसाइयों का यह सब से बडा केंद्र माना जाता है. ईसाइयो के इस संप्रदाय की स्थापना प्रसिद्ध जरमन चिंतक मार्टिन लूथर ने की. प्राचीनपंथी कैथोलिकों के गुरुडम और आडबर के विरोध में उस ने नवीन विचारो और संस्कारो को प्रस्तुत किया था. जरमनो के लिए यह नाज की बात है. मगर युद्ध की ज्वाला में धार्मिक या ऐतिहासिक मान्यताओं की गुजाइश कहां! प्रोटेस्टेंट जरमनो की बमबारी से सन १९४१ में इस विशाल गिरजे का बहुत सा भाग ध्वस्त हो गया था.

ब्रिटेन में राष्ट्रीय मान के लोगो को यहा समाधिस्थ कर गौरव प्रदान किया जाता है. यहा कई सम्राट, मनीषी, साहित्यकार और राजनीतिज्ञों की समाधियां है. ऊपर के गुंबद से लदन का बहुत बडा भाग साफ दिखाई देता है. इस की ऊंचाई ३२५ फुट है, अर्थात कुतुबमीनार से १०० फुट अधिक

रविवार के कारण हजारो स्त्रीपुरुष प्रार्थना के लिए आ रहे थे. मुझे ऐसा लगा कि हमारे यहा भी महज दिखावे के लिए या व्यक्तिगत मेलमिलाप के लिए जिस प्रकार आज कल लोग मंदिरो में जाते है, वैसा ही कुछ ढग यहा का भी है. महिलाओं के साथ उन की जवान बेटियां भी थीं, जिन्हें शायद इसलिए सजा कर

लंदन-१

सर्वाधिक सम्मान केवल सम्राटों को !

संसार के सभी बड़े शहरों की अपनीअपनी विशेषता होती है कोई ऐतिहासिक है तो कोई आधुनिक किसी का धार्मिक महत्त्व है तो कहीं चहलपहल और चुहल है लंदन में इन सभी बातों का समावेश है मुझे ऐसा लगा मानो इसका अपना एक निजी सौष्ठव है जो न मास्को में देखने में आया और न पेरिस में सेंट पाल्स केथेड्रल कल देख चुका था आज ब्रिटेन का दूसरा बड़ा गिरजा और मठ वेस्टमिंस्टर एबे देखने गया हजारों वर्ष पहले मठ या विहार के रूप में यह बना था बाद में इसमें परिवर्तन होते गए फिर भी लंदन की सबसे पुरानी इमारतों में यह है

ईसाइयों में अपने एबे के प्रति बड़ी श्रद्धा रहती है दरअसल हमारे यहां के मठ या बौद्ध विहारों की ही तरह यह भी साधुओं का आवास है अंतर केवल इतना है कि हमारे मठ या विहार ईसाइयों के एबे की तरह भव्य नहीं होते एबे के बडेबड़े ऊंचे कक्ष और यहां के ईसाई संन्यासियों या साधुओं के पहनावे और चाल में हमें वह सहज और सरल भाव नहीं लगा जिस का होना वैरागियों या त्यागियों के लिए अपेक्षित है फिर भी लगन, निष्ठा और कठोर अनुशासन-प्रियता के कारण इन की मान्यता इस वैज्ञानिक युग के जनसमाज में भी है

वेस्टमिंस्टर एबे का प्रभुत्व इंगलैंड के इतिहास और उस की राजनीति पर मध्य युग तक रहा है शासकों को सदैव यहां के प्रधान धर्मयाजक की स्वीकृति ले कर शासन अथवा संविधान में परिवर्तन करना पड़ता था उन के व्यक्तिगत जीवन और वैवाहिक संबंधों पर भी यदि एबे के कार्डिनल की सहमति नहीं मिलती थी तो स्थिति बड़ी समस्यापूर्ण हो जाती थी जनता की दृष्टि में कार्डिनल देश के सर्वोच्च धर्माधिकारी थे उधर सम्राट देश के शासक थे सत्ता के लिए आपस में इन के संघर्ष होते रहते थे हेनरी अष्टम के राज्यकाल में दोनों के आपसी संबंध बहुत कटु हो गए थे पर उस ने तलवार के सहारे समस्या सुलझा ली कार्डिनल वॅन्सेन्ट की गर्दन उतरवादी गई थी

यूरोप में गाइड बहुत महंगे पड़ते हैं इसलिए यात्री टोलियों में दर्शनीय स्थानों को देखने जाते हैं मैं अकेला था इसलिए गाइड साथ नहीं लिया फिर भी मुझे असुविधा नहीं हुई क्योंकि यहां के सहायक पादरी सब प्रकार की जानकारी दे रहे थे प्राचीन गोथिक शैली पर बना हुआ यह भवन बहुत ही भव्य है इस के प्रति

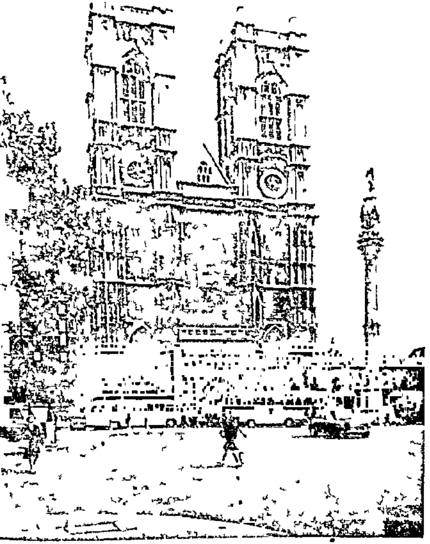

वस्टमिस्टर एवे, जिस का प्रभुत्व इगलैंड पर मध्य युग तक रहा

ब्रिटन के लोगों में इतनी श्रद्धा है कि सेट पाल गिरजे की तरह यहा भी राष्ट्र के प्रमुख व्यक्तियो को समाधि दे कर उन की स्मृति को गौरवान्वित किया जाता है पिछले ६०० वर्षों में सैकडो की सख्या में ब्रिटन के सम्राट, सेनापति, वैज्ञानिक यहा दफनाए गए है यहीं म ने हार्डी लिटन, थेकरे, विलियम स्काट आदि प्रसिद्ध लेखको की कब्रें देखीं कवियो में किपलिंग ब्राउनिंग, टनिसन भी चिरनिद्रा में यहां सोए हुए है मुझे पढने का शौक वर्षों से रहा है जिन प्रिय लेखको को इतने समय से पढ़तासुनता आ रहा था, उन सबों को समाधि एक ही स्थान पर देख कर मन नाना प्रकार की भावनाओं से भर गया श्रद्धानत हो कर उन की समाधियो पर अपन साथ लाए फूल चढाए

मेरा खयाल था कि ब्रिटेन में सर्वाधिक मान सम्राटो के बाद राजनीतिज्ञो को

मिलता रहा है वेस्टमिंस्टर एबे देखने पर इस भ्रम का निवारण हुआ राजनीतिक नेताओं से भी कहीं अधिक प्यार और इज्जत ब्रिटेन में लेखकों, कवियो और सैनिकों को दी जाती रही है यही कारण है कि वहा की धरती ने जहा शेक्सपीयर, बर्नार्ड शा जैसे साहित्यिक पैदा किए वहीं वैलिंग्टन और नेलसन जैसे रणबाकुरे भी

पालियामेंट हाउस वेस्टमिंस्टर के पास ही है उन दिनो सत्र चल नहीं रहा था इसलिए यहा बैठक देखने की इच्छा दबी रह गई बहरहाल, इस पर लगी विश्वविख्यात विशाल घडी 'बिगबेन' को देख कर ही संतोष कर लेना पडा पार्लियामेंट भवन भी गोथिक वास्तु शैली पर बना है आकर्षक और प्रभावपूर्ण लगता है पर हमारे भारतीय ससद भवन की तरह बडा और शानदार नहीं

दोपहर हो आई थी लच के लिए इंडिया हाउस चला गया यों तो लदन में भारतीय ढग का निरामिष भोजन कई जगह मिल जाता है, पर सस्ते और बढिया भोजन की व्यवस्था इडिया हाउस (भारतीय दूतावास) में ही है लच के समय भारतीय यहा काफी सख्या में मिल जाते हैं इन की सख्या इतनी अधिक है कि मिलने पर एकदूसरे के प्रति उतने आकृष्ट नहीं होते जितने कि विदेशों में दूसरी जगह

इन दिनो उत्तर भारत में जिस तरह इडली, डोसे के प्रति लोगो की रुचि बढ़ती जा रही है उसी तरह यहा भी दक्षिण भारतीय इडली, डोसे को मैं ने प्रचलित पाया भारतीयों के अलावा यूरोपीय भी स्वाद बदलने के लिए यहा आते हैं मिरचों के झाल से उन का 'शीशी' करना देखते ही बनता है साभर और रसम के साथ मैं ने कई दिनो बाद पेट भर खाया बिल बना लगभग दस रुपए का स्वदेश के हिसाब से यह ऊचा जरूर था मगर यहा के कोहेनूर, ताज आदि रेस्टोरेंटो के मुकाबले बहुत कम था

लदन में तीन दिन रहने का प्रोग्राम था अतएव इस छोटी सी अवधि में इस महानगरी के दर्शनीय स्थान देखना चाहता था खाना खा कर टेम्स के किनारे ७०० वर्ष पहले बने हुए टावर आफ लदन को देखने गया टेम्स का नाम स्कूली जीवन से ही सुनता आ रहा था अगरेज मित्रो से भी इस की चर्चा सुनी थी गगा, गोदावरी या यमुना के प्रति हमारी जो भक्ति भावना है, भले ही उस प्रकार की भक्ति टेम्स के प्रति अगरजो में न हो फिर भी उसमें पजाबियो के दिल का जैसा वही प्यार है जो झिलम के जल में मुसकराता है यू औसत भारतीय इसे देख कर जरूर कह देगा, 'नाम बडे, दर्शन छोटे!' हमारी गगा से इस की लबाई तो बहुत कम है ही, चौडाई भी चौथाई से अधिक न होगी शायद गहराई ज्यादा है क्योंकि सकडों छोटेबडे जहाज इस में चल रहे थे

टावर आफ लदन के बारे में ब्रिटिश इतिहास तथा उपन्यासो में इतनी बार जिक्र आ चुका था कि देखने पर कुछ नयापन नहीं लगा फिर भी टेढ़ेमेढ़े पत्थरों की बनी मोटी दीवारें, जग खाए लोहे से जड लकडी के बडेबडे फाटकों मे अदर गुजरते समय ऐसा लगता है कि बीते इतिहास की कहानी कहने के लिए ये दोनों ओर खडे है अदर के सीलनभरे कमरों से मानो हुई हवा कानों में न जाने कितनी आह, चीत्कार भरने लग जाती है इसी एक स्थान पर ब्रिटेन के सैकड़ों बडेबडे सामतों के सर काटे गए सर टामस मूर, सम्राट अष्टम हेनरी की

चेलसी का बाजार किंग्स रोड, जो कभी कलाकारो का मुख्य केन्द्र था

दो रानिया, महारानी एलिजाबेथ के प्रेमी एसेक्स के अर्ल, न जाने और भी कितने ही राजद्रोह और देशद्रोह के अपराधी दंडित हो तो कारण समझ में आ सकता है पर आज जो राजारानी का कृपाभाजन है वही कल कोपभाजन बन कर सूली पर चढ़ा दिया जाए तो उन की कृपा से दूर रहने में ही कल्याण है शाही मुहब्बत की कीमत बहुत ही महगी पडी है, हर देश और हर समय में, जनता की निंदा की बिना परवा किए जिस सिर को गोद में रख कर न जाने कितनी रातें महारानी एलिजाबेथ ने गुजारी थीं, उसी लार्ड एसेक्स के सिर को प्रेयसी रानी ने कुल्हाडी से कटवा दिया वही कुल्हाडी और सिर रखने की अर्ध चद्राकार लकडी की वेदी कितनी जानें ले कर भी वहा निर्जीव पडी है न जाने क्यो मुझे भय और कपकपी सी हो आई मैं उस स्थान से हट आया

यहा दूसरे बहुत सारे तरहतरह के औजार भी देखे जिन से अपराधियो को दड दिया जाता था बहुत सी कालकोठरिया भी देखीं, जिन में कैदी न तो बैठ सकता है और न लेट ही सकता है यहा तक कि सीधे खडा होना भी सभव नहीं इन्हें देख कर रोमाच हो आता है मै यही सोचने लगा कि ससार के सामने आखिर किस बूते पर अगरेज अपने को सभ्य कहते रहे है बडा ताज्जुब इस बात पर होता है कि अपने आराध्य ईसा मसीह को वे सूली पर बिंधा हुआ पूजते रहे है शारीरिक यातना देना बहुत बडा पाप है, इस का बडीबडी तसवीरो, साहित्य और रगमच द्वारा हजारो वर्षों से ये प्रचार करते आ रहे है फिर भास से भी कहीं अधिक यत्रणादायक इन अस्त्रो का वे भला किस प्रकार प्रयोग करते होगे!

उन अधेरी, सडी कोठरियों से बाहर आया पास ही एक स्टाल पर जल्दी

से जा कर एक लेमनेड लिया यहीं के एक बुर्जनुमा कक्ष में ब्रिटेन के सम्राटों के राजमुकुट, आभूषण और जवाहरात सग्रहीत हैं इन्हे देख कर अदाजा लगाया जा सकता है कि सदियो तक ब्रिटेन किस तरह भारत, एशिया और अफ्रीका से बेशुमार धनदौलत लूटता रहा है जिस ग्रेट ब्रिटेन की जमीन अपने बेटों के मुह में भरपेट दाना तक देने में असमर्थ है, वहा यह बेशुमार दौलत कैसे आई होगी? इस का अदाज तो भारत, बर्मा और अफ्रीका के देशों की कराहती जजर काया से ही लग सकता है

ब्रिटिश ताज में लगाया गया विश्व का सब से बडा और वजनी हीरा 'स्टार आफ अफ्रीका' देखा इस का वजन ५१६ कैरेट है इस के पास ही हमारा चिरपरिचित कोहेनूर भी दमक रहा था जिस की चमक के सामने दूसरे होगे की आबरू फीकी पड रही थी वहां तरहतरह के छोटेबडे मुकुट रखे थे जिन में नाना प्रकार के अनमोल रत्न लगे थे मगर कोहेनूर देखते ही मेरा मन अपने देश की १५० वर्ष पहले की बातों पर चला गया

पजाबकेसरी महाराजा रणजीतसिंह की सद्य विधवा रानी झिंदा और उस के मासूम बच्चे दिलीपसिंह की तसवीर आखों के सामने आ गई बेबसी की हालत में इन से जबरन कोहेनूर छीना गया था महाराजा रणजीतसिंह ने ईस्ट इडिया कपनी को उस के बुरे दिनो में सहायता दी थी इस उपकार का उत्तर दिया गया उन का राज्य हडप कर, कोहेनूर लूट कर और उन के अबोध बच्चे को लदन ले जा कर शिक्षित करने के बहाने ईसाई बना कर

बाहर निकल आया और टावर ब्रिज पर खडा हो कर टेम्स का दृश्य देखन लगा पुल के नीचे मालवाही छोटेछोटे बोट खडे थे इन में मैले कपडे पहने हुए मल्लाह शोरबे, मछलियां और मांस के बडबडे टुकडों के साथ मोटीमोटी रोटियां खा रहे थे मैं मन ही मन इस विडबना पर मुसकरा उठा कि पास ही टावर आफ लदन में बेशुमार दौलत को कैद कर-अगरेज अपने गौरव को बढाने की कोशिश कर रहे हैं जबकि करीब में उन्हीं के देशवासी इस अभावपूर्ण जिंदगी के लिए मजबूर हैं विषमता सारे ससार में है, भ्रातृत्व और समता का दम तो जमाने के फैशन के मुताबिक भरा जाता है इस के झूठे प्रकार की होड में जो जीतता है वही सबसे अधिक सभ्य, उदार या समाजवादी समझा जाता है

दिन भर पैदल घूमता रहा पैर दुखन लगे टावर देखने पर मन कुछ खिन्न हो गया सोचा, 'भारत में अगरेजी फिल्में तो आती रहती हैं, क्यो न यहां का रगमच देख लिया जाए' गाइड बुक में देख कर एक थियेटर के साढे छ' बजे वाले शो में जा बैठा

कामिक ड्रामा था काफी चुहलबाजी थी, जिसे हमारी भारतीय दृष्टि से अश्लील कहा जाएगा दर्शक मजा ले रहे थे, तालियां बज रही थीं, पहले अक का दृश्य सामने आया पत्नी के प्रेमी को पति ने सदूक में छिपा पकड़ा है और उसे पीट रहा है पत्नी पास में सहमी सी खडी है अधिकांश दर्शक महिलाए उस प्रेमी के पक्ष में आहें भरने लगीं उन में से कुछ के पति उनके पास ही बैठे चुपचाप देख रहे थे मैं लक्ष्य कर रहा था कि आज के यूरोपीय समाज में स्वच्छदता किस हद तक जा पहुची है अभिनय, रगमच की सज्जा और आरकेस्ट्रा

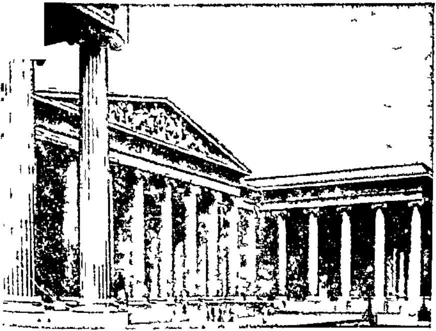

लंदन म्यूजियम   इसे अच्छी तरह देखने समझने के लिए महीना का समय चाहिए

का स्तर अच्छा था, इस में संदेह नहीं

दूसरा दिन लंदन के म्यूजियम देखने के लिए सुरक्षित रखा   यहां बहुत से संग्रहालय हैं   इसलिए सुबह जल्दी ही नाश्ता कर सब से पहले ब्रिटिश म्यूजियम गया   यह विश्व के चार बड़े संग्रहालयों में माना जाता है   प्राचीन काल से अब तक के इतिहास के नाना प्रकार के साक्षी यहां बहुत ही करीने से रखे गए हैं   सर हैंस संलोने नाम के एक करोडपति डाक्टर का सन १७५३ में देहांत हुआ   मृत्यु से पूर्व उस ने अपनी सारी चलअचल संपत्ति, ऐतिहासिक संग्रह और पचास हजार पुस्तकों को, देश को इस शर्त पर दे दिया कि एक बड़ा म्यूजियम स्थापित किया जाए

अपनी संतान के भरणपोषण के लिए उस ने केवल दो लाख रुपए सरकार से लिए   यहीं से ब्रिटिश म्यूजियम की नींव पड़ी है   आगे चल कर यह विश्व का सर्वमान्य संग्रहालय बन गया   यहां हजारों व्यक्ति प्रति दिन शिक्षा और ज्ञानवर्धन के लिए आते रहते हैं   पृथ्वी के प्रागैतिहासिक युग से आज तक मानव ने किस प्रकार अपना विकास किया है, इस का सिलसिलेवार दिग्दर्शन मूर्तियों और यंत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है

जिज्ञासुओं व अन्वेषकों की तो यह एक प्रकार से तीर्थस्थली है   दिन के साढ़े ग्यारह बजे से तीन बजे तक विद्वान प्रोफेसरों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रति दिन व्याख्यान होते हैं   इसे अच्छी तरह देखने के लिए महीनों का समय चाहिए मेरे पास समय कम था, फिर भी दोएक घंटे में जो कुछ देख पाया उस से मुझे कुछ जानकारी मिली

प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम) में कीटपतंग पशुपक्षी आदि को उन के आकार का बना कर स्वाभाविक परिवेश में रखा गया है प्रागैतिहासिक युग के विशालकाय डिनोसोरस, ब्रांटोसोरस नाना प्रकार के प्राणी यहां देखने में आए उसी काल के वृक्ष और पौधे भी देखे कितना परिश्रम और धैर्य इन के अन्वेषण में लगा होगा! इस में संदेह नहीं कि परिश्रम अंगरेजों का जातीय गुण है आज अमरीका या रूस अथवा विश्व के अन्य देश भले ही ब्रिटेन से शक्ति और क्षमता में आगे बढ़ जाए, फिर भी यह मानना पड़ेगा कि ज्ञानवर्धन की प्रेरणा उन्हें बहुत अंशों में अंगरेजों से ही मिली है पृथ्वी के प्रागैतिहासिक युग का, गिरिकंदराओं का आदिमानव किस प्रकार आत्मरक्षा और संघर्ष करता हुआ आज टेलिविजन सेट के सामने बैठ सका है, इस का सिलसिलेवार दिग्दर्शन यंत्रों और मूर्तियों के माध्यम से कराया गया है राहुलजी की 'विस्मृति के गर्भ में' पुस्तक में दैत्याकार डिनोसोरसों के बारे में पढ़ा था, आज उन के कंकालों को यहां प्रत्यक्ष देखा

विक्टोरिया अलबर्ट म्यूजियम में विश्व के सारे देशों की तरहतरह की पोशाकें, बरतन, गहने आदि रखे हैं यहां मैंने भारतीय मुगल बादशाहों, नवाबों और बेगमों की शाही पोशाकें व आभूषण देखे औरंगजेब के हाथों से स्वर्णाक्षरों में लिखी कुरान देखी कहना न होगा ये सब यहां कैसे पहुंचे होंगे, कीमत तो इंगलैंड ने शायद ही अदा की होगी वारेन हेस्टिंग्स और क्लाइव की लूट ऐतिहासिक प्रमाण है रहीसही कसर लार्ड कर्जन ने पूरी कर दी

भूगर्भ ट्रेन से डाटी स्ट्रीट पर आया मुझे प्रसिद्ध उपन्यासकार चार्ल्स डिकेंस का मकान देखना था इसे उस की स्मृति में संग्रहालय बना दिया गया है अब तक जिन बड़ेबड़े म्यूजियमों को देख कर आ रहा था, उन की तुलना में यह बहुत ही छोटा है फिर भी इस का अपना आकर्षण और महत्त्व है इस महान लेखक ने अपनी कलम से लोगों के दिल को छुआ था उस के पाठकों में अंगरेज ही नहीं बल्कि विभिन्न देशों के लोग हैं आज भी शरत और प्रेमचंद की तरह चार्ल्स डिकेंस यूरोपीय जनसमाज की श्रद्धा और स्नेह का पात्र है इसी लिए यह छोटा सा भवन साहित्यिकों का तीर्थ बन गया है शेक्सपीयर के स्टाफर्ड एवेन के स्मारक के बाद विदेशी पर्यटक और साहित्यिक इसे निश्चित रूप से देखते हैं यहां डिकेंस कुछ काल तक रहा था उस के उपन्यासों की पांडुलिपियां भी यहां रखी हैं

मुझे ख्याल आ गया 'डेविड कापरफील्ड' पढ़ते समय मेरी आंखें भीग गई थीं किसी मित्र ने कहा कि ऐसी किताबें क्यों पढ़ी जाएं जिन से मन में दुख हो पर आज भी जब दूसरे कामों में मन नहीं लगता तो शरत की 'शेष प्रश्न' अथवा डिकेंस की 'डेविड कापरफील्ड' पढ़ने लग जाता हूं वे मुझे हमेशा नई लगती हैं दिल की गहराई को वे छू लेती हैं गजब का जादू है डिकेंस की कलम में खड़ा हुआ उस की पांडुलिपि देख रहा था, एकएक कर के डेविड, मर्डस्टोन, एमिली, मिकावर आदि चरित्र जैसे सामने आ कर मेरे परिचित वाक्य बोलते से लगे

सोचने लगा, हमारे यहां भी तो वाल्मीकि, कालिदास, तुलसी, भूषण आदि महान कवि हो गए हैं हम ने उन के स्मारक क्यों नहीं बनाए? शायद पठन पाठन से ही उन की स्मृति बनाए रखने की परंपरा हमारे यहां रही हो या नश्वरता

ब्रिटिश सैनिको का अनुशासन ससार में अद्वितीय है एक सैनिक के गिर पडने पर भी किसी का उसकी ओर ध्यान नही

के प्रति हम सदैव उदासीन रहे हैं इसी कारण से ब्रिटिश काल के पूर्व तक के व्यक्तियों के स्मारक नहीं बनाए गए मुगल बादशाहों या नवाबो और फकीरपीरो की कब्रो या किलो के रूप में जरूर कुछ स्मारक मिल जाते हैं जो भी हो, स्मारको का भी अपना महत्त्व कम नहीं है

दोपहर का भोजन किया भारतीय विद्यार्थी क्लब में ब्रिटेन में हजारो की सख्या में भारतीय विद्यार्थी पढ रहे हैं अपनी सुविधा के लिए इन्होने लदन में कोआपरेटिव के तौर पर यह कैंटीन चला रखी है चीजें अच्छी मिलती हैं और दाम बहुत ही कम भीड इतनी रहती है कि बैठने की जगह आसानी से नहीं मिलती

भोजन के बाद ट्राफल्गर स्क्वायर की नेशनल आर्ट गैलरी देखने गया बहुत विशाल भवन है इस में पिछले ५०० वर्षों के बडेछोटे चित्रो का सुदर सग्रह है ये चित्र विश्व के प्रसिद्ध चित्रकारो के द्वारा बनाए हुए हैं चित्रो के सकलन का शौक सभी देशो को है इस के लिए बडीबडी धनराशिया खर्च की जाती हैं रोम के वेटिकन और फ्रास के लूव्रे के सग्रह के बाद बाकी बचे हुए नामी चित्रो के लिए विश्व के देशो में होड सी लगी रहती है इस दिशा में अमरीका से टक्कर लेना कठिन है

फिर भी, ब्रिटेन के धनी और सपन्न व्यक्ति उदारतापूर्वक अलभ्य चित्रो को खरीदते रहते हैं और अपने अमूल्य सग्रह इस गैलरी को भेंट कर देते हैं यही कारण है कि यह विश्व की चुनी हुई आर्ट गैलरियों में मानी जाती है

ब्रिटेन में मृत्यु कर की दर बहुत अधिक है, पर कला की वस्तुओं पर छूट है. इसलिए यहां के धनी मरने से पहले अपनी संपत्ति से दुर्लभ चित्रों को खरीद लेते हैं. समय पा कर उन के उत्तराधिकारियों द्वारा ये चित्र इस गैलरी को भेंट कर दिए जाते हैं इस से उन की स्मृति बनी रहती है और राष्ट्र का गौरव भी बढ़ता है.

इस गैलरी के एक कक्ष में भारत के कांगड़ा, किशनगढ़, राजपूत, मुगल और पटना शैली के अलभ्य चित्र देखे मैं चित्रकला का पारखी तो नहीं हू, पर देखने में ये मुझे बहुत ही बेहतरीन लगे अन्य देशों से इन में बारीकी और रंगों के संतुलन का सम्मिश्रण अधिक स्पष्ट लगा अधिकांश चित्र कृष्ण और राधा की पौराणिक कथाओं पर आधारित हैं ऋतु और रागमालाओं के चित्रों का भी अच्छा संग्रह है क्यूरेटर से बातें करने पर पता चला कि भारतीय तूलिका के संबंध में उन को यथेष्ट ज्ञान है उन से यह भी पता चला कि बहुत से चित्र भारत से खरीद कर मगाए गए हैं कुछ भेंट स्वरूप भी आए हैं

मैंने सुना था कि बहुत से चित्र तो हमारे राजेमहाराजों ने बहुत सस्ते दामो पर बेच दिए थे या फिर अगरेजो को खुश करने के लिए भेंट में दिए थे अपने देश के गौरव की वृद्धि के प्रति हमारे यहां की उदासीन मनोवृत्ति का परिचय पा कर ग्लानि सी हुई आज भी बहुत से चित्र मंदिरों में पड़े हैं या रईसो, राजेरजवाड़ों के पास बेकार पड़े हैं उन्हें यदि काशी विश्वविद्यालय के भारत कला भवन या दिल्ली की नेशनल गैलरी को दे दिया जाए तो भारतीय चित्रकला के प्रति बहुत बड़ा उपकार हो सकता है

गैलरी देख कर फाटक के बाहर आया सामने ही एडमिरल लार्ड नेलसन की बहुत ही बड़ी मूर्ति ऊंचे चबूतरे पर खड़ी है सन १७९२ से १८०५ ईसवी तक सारा यूरोप नेपोलियन के युद्धों से आतंकित हो उठा था उस की सेनाएं यूरोप के प्राय सभी देशों को रौंद चुकी थीं केवल ब्रिटेन अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण बचा हुआ था नेपोलियन ने बड़ी जबरदस्त तैयारी से ब्रिटेन की चौतरफा नाकेबंदी की सन १८०५ में एक बहुत बड़े जहाजी बेड़े को ले कर उस ने ट्राफलगर की खाड़ी में ब्रिटेन की नौशक्ति को खत्म करने के लिए हमला कर दिया ब्रिटेन का जहाजी बेड़ा छोटा था, पर नेलसन की निपुण रणचातुरी के कारण फ्रांस की अजेय सेना को हार खानी पड़ी उस की हिम्मत पूरी तौर से पस्त हो गई

इतिहासकारो का कहना है कि इतनी बड़ी समुद्री लड़ाई पहले कभी नहीं हुई थी इस युद्ध में ब्रिटेन जीता जरूर मगर उसे नेलसन को खोना पड़ा नेलसन के मुह से मृत्यु के समय निकले ये शब्द अमर हो गए ह 'हे प्रभु, तुम्हारी कृपा से अपने कर्तव्य का पालन पूरी तौर पर कर सका' इसी युद्ध का परिणाम था कि पिछले महायुद्ध तक ब्रिटेन की नौशक्ति का लोहा दुनिया में सभी मानते थे

कलकत्ता की तरह लदन में टैक्सियो की कमी नहीं है फिर भी यहा आम तौर पर लोग बसो या भूगर्भ ट्रेनों से यात्रा करते हैं यहा के टैक्सी ड्राइवर मुझे रूखे से लगे किराए के अलावा टिप देने की परिपाटी यहा है इस वजह से विदेशियो को बड़ी परेशानी होती है क्योंकि उन्हें मालूम नहीं रहता कि किस हिसाब से देना चाहिए अधिकांश टैक्सी वाले ऐसी स्थिति में रूखा सा

फ्लीट स्ट्रीट   लदन का प्रकाशन केंद्र

सुविधा है सैकडो वर्षों से यह दुकान यहा है ब्रिटेन के बडेबडे कवि और लेखकों ने यहा बठ कर अपनी पुस्तकें लिखी है किताबो का शौक मुझे भी है बडेबडे शहरो में बहुत सी दुकानें भी देखी है मगर, ऐसी दुकान और विभिन्न विषयो पर इतनी तरह की पुस्तकें मैं ने एक ही जगह उपलब्ध कहीं नहीं देखी थी इसलिए किताबों के देखने में काफी समय लग गया यहा से प्राकृतिक चिकित्सा की कुछ पुस्तकें जसीडीह के अपने मित्र महावीरप्रसाद पोद्दार के लिए खरीदीं

दोपहर का भोजन लायज कारनर में किया लायज की सैकडो रेस्तरा लदन में है इन में आमिष और निरामिष दोनो प्रकार के भोजन बहुत कम खर्च में मिल जाते है इस के अलावा, केक, पेस्ट्री, चाकलेट आदि की भी बहुत बडी बिक्री ह इन जलपानगृहो मे मुनाफे के कारण लायज के मालिक की गिनती ब्रिटेन के प्रमुख धनिकों में है

भोजन कर के फ्लीट स्ट्रीट गया अखबारो का महल्ला है, पत्रकारो की दुनिया है ब्रिटेन में प्रति व्यक्ति ससार के अन्य देशो से औसतन ज्यादा अखबार पढे जाते है यहा भी अधिकाश समाचारपत्रो पर हमारे देश की तरह, कुछ धनी व्यक्तियों का अधिकार है सैकडो अखबार तो केवल लदन से ही प्रकाशित होते ह इन में से किसीकिसी की चालीस पचास लाख प्रतिया छपती है रविवार अथवा छुट्टी के दिनो में दैनिक पत्रो की पृष्ठ सख्या पचाससाठ तक पहुच जाती ह यदि रद्दी के भाव भी इन अखबारो को बचा जाए तो इन के दाम वसूल हो जाते है

दैनिको के अलावा, अलगअलग विषयो पर साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र भी बहुत बडी सख्या में निकलते है बालक, किशोर, युवक, वृद्ध और इसी तरह भिन्न भिन्न आयु की महिलाओ के लिए अलगअलग पत्र प्रकाशित होते ह टाइम्स, गार्जियन और न्यू स्टटसमैन जैसे गभीर पत्र तो दसबीस ही होंगे अधिकाश पत्र बडेबडे हैडिंग दे कर सनसनीखेज समाचार देते है जैसे मिस कीलर

के मुकद्दमे का प्रमुख गवाह आज दोपहर में हाल्बोर्न की बस से ईस्ट चीप की तरफ जा रहा था, बकरी के बच्चे ने कुत्ते के पिल्ले का कान चबा लिया, आदि

इन हेडलाइनों को मोटेमोटे अक्षरों में कार्ड बोर्डों पर छपवा कर अखबार के एजेंटों को अपनीअपनी दुकानों या स्टालों पर टांगने के लिए दे दिए जाते हैं लोगों की निगाह पड़ी कि दौड़े खबर पढ़ने मेरी समझ में नहीं आ रहा कि कीलर का गवाह किस बस से कहां गया और कुत्ते के पिल्ले का कान बकरी के बच्चे ने काट लिया तो इस में पाठकों के काम की कौन सी बात है मगर यहां ऐसे ही पत्र ज्यादा बिकते हैं नंगी तसवीरों के तथा कामोद्दीपक विषयों के मासिक या साप्ताहिक पत्रों के ग्राहक बहुत बड़ी संख्या में हैं

प्रमुख पत्रों के संवाददाताओं की बड़ी इज्जत है और वे मेहनत भी खूब करते हैं समाचारपत्र अपने संवाददाताओं को खतरे की जगहों पर भी भेजते हैं, ताकि आंखों देखा सच्चा हाल पाठकों तक पहुंचाया जा सके पत्रकार भी बड़े साहसिक होते हैं युद्ध के मोर्चों पर जा कर वहां की गतिविधि का विवरण भेजना कम खतरे का काम नहीं कभीकभी कइयों को जान से हाथ धोने पड़े हैं विशिष्ट संवाददाताओं के पास तो अपने निजी हेलिकोप्टर या छोटे हवाई जहाज रहते हैं, जिस से घटनास्थल पर शीघ्र ही पहुंचने में सुविधा रहे

यहां परिवार के सदस्य अपनीअपनी रुचि के अनुसार अखबार खरीदते हैं यदि घर में छ व्यक्ति हैं तो छ पत्र रोजाना आएंगे ही, कई अखबारों के तो दिन में छ सात संस्करण तक निकलते हैं इन में से किसीकिसी को करोड़ों रुपए की वार्षिक आय केवल विज्ञापनों से होती है

आज हालांकि ब्रिटेन दुनिया में पहली श्रेणी का राष्ट्र नहीं रहा, फिर भी अखबारी दुनिया में फ्लीट स्ट्रीट और उस के संवाददाता प्रथम श्रेणी में आते हैं भाषा की चटक, कार्टून और पत्रकारिता में अब भी ब्रिटेन से फ्रांस, अमरीका और मास्को को बहुत कुछ सीखना है और हमें भी

फ्लीट स्ट्रीट से हम ब्रिटिश पार्लियामेंट (संसद भवन) देखने गए हम अपने देश के संसद सदस्य थे, इसलिए वहां के अधिकारियों ने हमारी अच्छी खातिर की, बैठने के लिए विशेष स्थान दिया पार्लियामेंट आज जिस जगह पर है, वहां पहले वेस्टमिंस्टर पैलेस नामक प्रासाद था वर्तमान संसद भवन १५ वीं शताब्दी के अंत में बना था बीचबीच में कई बार इस में आग लगी फलत कुछ न कुछ रद्दोबदल होते रहे अंगरेज जमाने के साथ बदलते जरूर हैं, मगर अपनी संस्कृति के कट्टर प्रेमी होते हैं अपने संसद भवन की मरम्मत और सुधार में उन्होंने इस बात का ख्याल रखा कि उस की मौलिकता नष्ट न हो इसलिए आज भी संसद भवन पहले के रंगढंग में है

यों तो हम ने पुस्तकों में ब्रिटिश पार्लियामेंट भवन के चित्र पहले ही देखे थे, किंतु यहां इसे प्रत्यक्ष देख कर बीते हुए जमाने की बातें एक बार दिमाग में घूम गईं इन्हीं में से किसी एक कुरसी पर राबर्ट क्लाइव और वारेन हेस्टिंग्स ने बैठ कर भारत में अपने किए गए कुकृत्यों पर बहस सुनी होगी सन १८५८ में इसी भवन में कानून बना कर भारत को ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया की पूर्ण अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया था भारत के शिल्पोद्योग

रीजेंट स्ट्रीट   फैशन की दुकानो के लिए लदन भर में प्रसिद्ध

को कुठित करने के लिए नाना कार के कानूनकायदे इसी ससद ने बनाए और अगरेजी व्यापार को भारत में अनेक तरह के सरक्षण मिले

जो भी हो, ब्रिटिश पार्लियामेंट का इतिहास अपने में अनोखा है फ्रास में इस से भी पहले ससद की स्थापना हो चुकी थी, किंतु वहा के राजाओ ने उस की सत्ता को सर्वोच्च नहीं माना ब्रिटेन में राजाओ ने समयसमय पर ससद के अधिकारो का अतिक्रमण करने के प्रयत्न किए थे, लेकिन जनमत के सामने उन्हें भी सिर झुकाना पडा

१६४९ में अपने सम्राट चार्ल्स प्रथम के शिरच्छेद का आदेश ससद ने दिया सन १९३६ में एक वर्ष के अदर ही सम्राट अष्टम एडवर्ड को राजमुकुट त्यागने के लिए बाध्य किया गया एडवर्ड साधारण धराने की एक तलाकशुदा महिला से विवाह करना चाहते थे ब्रिटिश पार्लियामेंट ने स्वीकृति नहीं दी एडवर्ड के सामने सिंपसन या सिंहासन दोनो में से एक को चुनना था

यद्यपि विधानत: ब्रिटिश सम्राट ही सार्वभौम सत्ता का अधिकारी है, फिर भी परपरा का पालन ब्रिटेन के शासक करते आए हैं ससद के बनाए कानूनकायदे और उस के निर्णय को वे सदैव मानते आए हैं

हम जिन दिनो वहा थे, उन दिनो अनुदार दल की सरकार थी प्रधान मत्री थे लार्ड मैकमिलन ब्रिटेन में हमारे यहा की तरह अनेक राजनीतिक दल नहीं हैं अनुदार दल और श्रमिक दल ये दो ही मुख्य हैं श्रमिक दल है जरूर, पर यह साम्यवादी या मार्क्सवादी नहीं है विदेशों से निर्देश और प्रेरणा प्राप्त करने वाले व्यक्ति या दल को वहा जनता प्रश्रय नहीं देती, भले ही वह क्यो न भूलोक में स्वर्ग उतार लाने का पट्टा लिख दे.

विरोधी दल को भी शासक दल और जनता, दोनों के द्वारा मान्यता और प्रतिष्ठा मिलती है, क्योकि उन के द्वारा स्वस्थ विरोध एव आलोचना होती है

हम जिस दिन संसद गए, वहां प्रोफ्यूमो कांड पर बहस हो रही थी स्तर काफी ऊंचा था ऐसा लगता था कि प्रत्येक सदस्य पूरी जानकारी कर के आता है विरोधी सदस्य इस कांड की सारी जिम्मेदारी पूरे मंत्रीमंडल पर थोपना चाहते थे, जब कि सरकारी दल के सदस्य मंत्रीमंडल को इस से मुक्त रखना चाहते थे उन का कहना था कि एक व्यक्ति की कमजोरी के लिए सारे के सारे दोषी क्यों ठहराए जाए?

संसद भवन देख कर हम लोग बस से लंदन के उस अंचल को देखने गए, जो 'ईस्ट एंड' के नाम से मशहूर है यह गरीबों की बस्ती है इस के बारे में पहले भी सुन चुका था, किंतु प्रत्यक्ष जो कुछ भी देखा वह उस से कहीं ज्यादा था और विचारोत्तेजक भी यहां से करीब पौन मील की दूरी पर ही डोर चेस्टर और पार्कलेन जैसे महंगे होटल, बकिंघम पैलेस, रिजेंट स्ट्रीट व बौंड स्ट्रीट की महंगी दुकानें हैं लगता है जैसे ईस्ट एंड कोई अभिशाप्त स्थान है लंदन बदला पर यह नहीं बदल सका

यहां हैं कीचड और गंदगी भरे रास्ते, मैलेफटे वस्त्र पहने मुरझाए पीले चेहरे के साथ जिंदगी के बोझ ढोते हुए स्त्रीपुरुष, बच्चे, पुरानी सस्ती चीजों की दुकानें, तन का सौदा करती चलतीफिरती स्त्रियां खूबसूरत मासूम बच्चे और किशोर अपनी माबहनों के लिए ग्राहक ढूंढने को तैयार, गांजा, अफीम, चडू, चरस आदि अवैध नशों की पुडिया पहुंचाने को तत्पर महज इसलिए कि पैसे मिलेंगे पैसे चाहिए जीने के लिए

अजीब सी घुटन थी विचित्र दृश्य था इस से तो सोहो कहीं बेहतर था यहां की एक दुकान में देखा, कुछ लोग अपने सामान बधक रख कर रुपए ले रहे थे सामान में पुराने कोट, पतलून और कमीजें तक थी

ईस्ट एंड बंदरगाह के नजदीक है यही इस का सब से बडा अभिशाप है सभी बंदरगाहों के आसपास ऐसी बस्तियां होती हैं महीनों घर से दूर समुद्र में बिताने के बाद मल्लाह और नाविक हर जगह जुटते हैं हमारे देश कलकत्ता में भी खिदिरपुर इसी प्रकार का महल्ला है, किंतु वहां ऐसी छूट और सुविधा नहीं है यहां देखा विदेशी मल्लाह और नाविक भांतिभांति की पोशाकों में चक्कर लगा रहे हैं शराब की दुकानों में लडकियों को लिए बैठे हैं और चिल्ला रहे हैं नशे में यहां झगडे और मारपीट होते रहना मामूली बात है, दैनिक वारदातें हैं

ऐसी जगह पर चीनियों की बन आती है कलकत्ता के चीनी महल्ले के बारे में हम ने सुना था, यहां भी देखा चीनी चोरी के कारबार में दक्ष होते हैं चडू और चरस के अड्डे यहां भी उन्हीं के चलते हैं सैकडों वर्षों से हर देश में उन का यही धंधा रहा है हमें पहले ही से सावधान कर दिया गया था, इसलिए इन अड्डों पर मैं नहीं गया इच्छा तो बहुत थी कि खुद जा कर नजारा देखूं, मगर सूत्र न था और अकेले जाने में खतरा, इसलिए मन की मन में रह गई

रात दस बजे हम होटल वापस लौटे अंतिम दोतीन घंटों में जो कुछ देखा, उस से बहुत आश्चर्य नहीं हुआ ब्रिटेन से कहीं ज्यादा संपन्न देश है अमरीका वहां न्यूयार्क के हारलेम महल्ले का भी नजारा ईस्ट एंड जैसा था फर्क केवल यही था कि इतनी गरीबी और गंदगी वहां नहीं थी

चहलपहल थी. लंबे चोगे पहने अरब काफी संख्या में इधरउधर आजा रहे थे. पता चला, कुवैत के कोई शेख वहां ठहरे हैं. उन्होंने इस महंगे होटल का एक पूरा तल्ला ले रखा है, क्योंकि इन के मुसाहिबों और बेगमों की एक पूरी टोली इन के साथ आई है. मुझे पचीस वर्ष पहले के भारतीय राजाओं की याद आ गई. वे भी तो यहां आ कर इस तरह बेशुमार दौलत लुटाते थे. ऐश और मौज में गरीब भारत के करोड़ों रुपए खर्च कर डालते थे. कभीकभी तो लाखों रुपए के कुत्ते ही खरीद लेते थे और इन की संभाल के नाम पर सुंदर लड़कियां भी ले जाते थे. सोचने लगा, 'बिना मेहनत की कमाई पर मोह कैसा? चाहे वह गरीब प्रजा से ली गई हो या तेल की रायल्टी से मिली हो.'

रविवार का दिन था. श्री ब्रजमोहन बिड़ला ने समुद्र तट के सुंदर शहर ब्राइटन में पिकनिक का आयोजन कर रखा था. हम आठदस व्यक्ति रहे होंगे. तीन बड़ी हंबर सिडनी मोटरें थीं. उन में से दो की ड्राइवर स्वस्थ और सुंदर युवतियां थीं. लंदन से बाहर आते ही सड़क के दोनों बाजुओं पर करीने से बने सैकड़ों एक सरीखे मकान दिखाई पड़े. बीचबीच में हरियाली. लंदन की घुटन से मानो राहत मिली.

बिड़लाजी के लंदन आफिस के मैनेजर श्री गम्बे ने बताया कि ये सारे मकान पिछले पंदरह वर्षों में बने हैं जिन में अधिकांश मध्यम वर्ग के लोगों के हैं. आवास की समस्या को हल करने के लिए सरकार अत्यंत उदार शर्तों पर ऋण देती है.

आबादी धीरेधीरे पीछे छूटती गई और हम खुली जगह पर आ गए. हमारी कारों में तेज रफ्तार की होड़ लग गई. लड़कियां भला क्यों हार मानतीं. सुई ८० मील पर जा पहुंची. प्रभुदयालजी ने बहुतेरा समझाने का प्रयत्न किया पर हमारी ड्राइवर केवल मुसकराती रही और गाड़ी की चाल तेज करती गई. आखिर, हम लोगों ने आंखें बंद कर लीं. किसी तरह ब्राइटन पहुंचे. यहां के एक प्रसिद्ध होटल में लंच लिया. निरामिष भोजन के लिए उन्हें लंदन से पूर्व सूचना दी जा चुकी थी. शायद बिड़लाजी की टिप के बारे में होटल के कर्मचारियों को पहले से पता था, इसी लिए खातिरदारी भी उसी तरह जम कर हुई.

लंच ले कर जब हम समुद्र के किनारे आए तो ऐसा लगा कि लंदन उठ कर यहां आ गया हो. किनारे पर तीनचार लंबे डेक बने हुए थे, जिन पर दुकानों के सिवा कार्निवल सा लगा था. तरहतरह के खेल और जुए चल रहे थे. हम लोगों ने भी किस्मत की आजमाइश करनी चाही. मैं ने दस रुपए की गेंदें खरीदीं. इन्हें सामने खड़े राक्षस के मुंह में डालना था. मुंह काफी खुला था, होठों का फासला भी बहुत था, पर एक भी गेंद भीतर न जा सकी. शायद बनावट की खूबी हो, वैसे निशाने अच्छे साधे थे. प्रभुदयालजी तथा अन्य साथियों ने भी कुछ न कुछ अलगअलग खेलों पर खर्च किया. लगभग एक सौ रुपए खर्च कर के इनाम में मिली दो कागज की टोपियां और अन्य दोतीन मामूली चीजें. स्टालों में बहुत सी कीमती चीजें सजा कर रखी गई थीं, लेकिन वे सब दिखावे के लिए ही थीं, क्योंकि दूसरे लोग भी हमारी तरह अपने इनाम देखदेख कर हंस रहे थे. एक वृद्धा तो बुरी तरह चिढ़ गई. वह दुकानदारों को ठग बता कर बुराभला कह रही थी.

शाम हो रही थी हम समुद्र के किनारे घूमने निकले कई मील लबा समुद्र तट है जूह, गोपालपुर या पुरी से कहीं अधिक विस्तार है सैलानी शनिवार को ही मनपसद जगह रोक लेते हैं खानेपीने का सामान साथ ले आते हैं यहा आ कर अपनी व्यावसायिक अथवा नौकरी की सारी परेशानिया और दिक्कतें भूल जाते हैं किसी के साथ उस की स्त्री और बच्चे है, तो कोई प्रेयसी के साथ है सभी जोडे में मिलेंगे

यूरोप में स्त्रियो के समक्ष पुरुषो को पूरे कपडो में रहना ही शिष्टता है पर इन स्थानो पर इस की छूट है इसलिए पुरुष केवल जाघिया पहने मिलेंगे और बिकनी पहने स्त्रिया सभी बालू पर धूप सेंक कर बदन को सावला बनाने की कोशिश करते रहते हैं होनोलूलू की तरह तो यहा नजारे नहीं दिखाई दिए, पर जितना भी देखा वह भारतीय मर्यादा की लक्ष्मण रेखा से कहीं बाहर था

एक जगह बहुत शोर शराबा हो रहा था काफी भीड लगी थी और पुलिस वाले भी इकट्ठे हो गए थे पूछने पर पता चला कि छात्रों के दो दलों में मारपीट हो गई अनेक के सिर फटे है, किसी की कलाई टूटी है तो किसी की टाग आश्चर्य की बात यह थी कि लडने वाला में लडकिया भी थीं खूब जम कर हाकीस्टिक चला रही थीं हमें बताया गया कि यहा 'राकेट' और 'माड' नाम के दो दल विद्यार्थियों के हैं, जो एकदूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश में रहते हैं इसलिए जहा कहीं ये इकट्ठे हुए कि झगडा और मारपीट हो जाती है

मैं तो समझता था कि हमारे देश में ही उच्छृखलता का रोग छात्र समाज में है, पर यहा आ कर देखा कि इस की हवा यहा कहीं अधिक है

वापस जब लदन आए, रात हो चुकी थी दिन में इतनी ज्यादा आइसक्रीम खा चुका था कि डिनर लेने की तबीयत नहीं थी इस के अलावा, ऐसे मौका पर प्रभुदयालजी याद दिला देते थे कि 'खाए कि न खाए तो न खाए भला,' अर्थात कम भूखा रहने पर नहीं खाना ही अच्छा रहता है, इस से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पडता

लदन में हमारे इतने परिचित मित्र थे कि होटल या रेस्तरां में खाने का कम ही मौका लगा दूसरे दिन दोपहर में श्री जी डी बिन्नानी के लदन कार्यालय व्यवस्थापक श्री बागडी के यहा गए वे यहा एक फ्लैट ले कर सपत्नी रहते हैं बहुत ही सुस्वादु भारतीय भोजन मिला हलुवे के साथ बीकानेरी भुजिए भी थे बहुत दिनों बाद लता मगेशकर और मुकेश की सुरीली आवाज में रिकार्डों पर हिंदी गाने भी सुनने को मिले

रात के भोजन का निमत्रण था—रामकुमारजी के मित्र श्री हून के यहां बहुत ही सम्रात मह्ल्ले में श्री हून का अपना मकान है १५ वर्ष पहले साधारण स्थिति में यहां आए थे अब तो यहां के विशिष्ट व्यापारियों में इन की गणना है टनर मोरिसन नामक प्रसिद्ध फर्म के अध्यक्ष हैं उन्होंने हमारे सिवा और भी दसपदरह मित्रों को बुलाया था भोजन के साथसाथ विविध चर्चाएं—विशेषत भारतीय अर्थनीति और राजनीति पर चलती रहीं पता ही नहीं चला कि रात के बारह बज गए हैं बहुत मना करने पर भी श्रीमती हून हमें अपनी कार से होटल तक पहुचा ही गईं

लंदन के मध्यमवर्गीय परिवारों के मकानों का समूह

दो दिन बाद हमें लंदन से विएना जाना था. इसलिए अगले दिन को मैं ने अपने साथियों से छुट्टी ली. नाश्ता कर सुबह की व्येरिंग क्रास से ट्रेन में बैठ कर लंदन से लगभग तीन मील दूर अपने एक पुराने मित्र से मिलने चला गया. १५ वर्षों के लंबे अर्से के बाद हमारी मुलाकात हुई. मैं ने महसूस किया कि मुझे देख कर वह कुछ झेंप सा रहा था. मैं कारण ठीक समझ नहीं पाया. प्राविजन स्टोर्स की अपनी छोटी सी दुकान पर बैठा था. कुशलमंगल पूछने के बाद भीतर से आती हुई एक प्रौढ़ा से परिचय कराया—वह इस की पत्नी थी. भारत से आने के बाद मित्र ने इस से विवाह कर लिया था. पति की मृत्यु के बाद महिला को दुकान और खेती संभालने के लिए एक साथी की जरूरत थी. मेरे मित्र को लंदन के व्यस्त जीवन और नौकरी की झंझटों से कहीं अच्छा यह काम और स्थान जंच गया. एक परिचित के माध्यम से परस्पर जानपहचान हो गई और दोनों विवाह सूत्र में बंध गए. अब मुझे उस की झेंप का कारण समझ में आ गया.

पत्नी उमर में मेरे मित्र से करीब दसबारह साल बड़ी थी. फिर भी मैं ने उसे हर काम को तत्परता और उत्साह से करते हुए पाया. उस दिन की दोपहर का भोजन मुझे आज तक याद है. थोड़ी ही देर में खीर, रोटी, फलों के मुरब्बे और न जाने कितने तरह के सुस्वादु व्यंजन बने थे. मैं ने यह भी लक्ष्य किया कि इतनी खातिरखिदमत और मेहनत करने पर भी वह अपने पति का काफी अदब करती थी, शायद डरती भी थी. आम तौर पर पश्चिमी देशों की पत्नियों में

ऐसा कम ही होता है मुझे अपने यहा के वृद्ध पतियो की याद आई जो जवान बीवियो से झिडकियां खा कर भी दात निपोरते रहते हैं शायद आयु के अधिक अतर से मन में हीनता की भावना का सचार होना स्वाभाविक है

पूरे दिन उन्होंने मुझे अपने यहां रोके रखा मुझे भी यहा बडी शाति मिली लदन की भीड और व्यस्त जीवन ने दिमाग को बोझिल बना दिया था पुराने दिनों की याद कर हम दोनो कभी खूब हसते तो कभी उन्हीं में डूब जाते थे हम दोनो ने ढाका, नारायणगज और खुलना आदि पटसन के केंद्रों की बहुत बार एक साथ यात्रा की थी बडी आरजू के बाद पतिपत्नी दोनों ने छ बजे शाम को नाश्ता कराने के बाद लदन वापस आने दिया स्टेशन तक अपनी कार से पहुचाने आए

लदन पहुचा, उस समय आठ बज चुके थे जोरों की बारिश हो रही थी अपने एक भारतीय मित्र के पुत्र के विशेष आग्रह पर आठ बजे उस के घर पर भोजन करना स्वीकार कर लिया था वह यहां पढने के लिए भारत से आया था किंतु एक स्पेनिश विधवा से विवाह कर यहीं बस गया था उस का घर स्टेशन से करीब बारहचौदह मील पर था जोरों की वर्षा, और मेरे पास छाता नहीं दूसरे ही दिन मुझे लदन छोड देना था अतएव, एक दुकान से बरसाती और बच्चों के लिए कुछ उपहार खरीद कर जब उस के घर पहुचा तो रात के नौ बज चुके थे मैं ने देखा पतिपत्नी दोनो उस वर्षा और ठड में मेरी प्रतीक्षा में सडक पर खडे थे उन्हें भय था कि मुझे शायद उन का फ्लेट खोजने में दिक्कत हो देर के कारण अपने ऊपर झल्लाहट सी हो रही थी, उन्हें इस हालत में देख कर झेंप सा गया यदि न आता तो न जाने कितनी देर तक भीगते रहते

दोनो बडे खुश हुए छोटा सा, दो कमरो का फ्लेट था पत्नी की मां और पहले पति द्वारा एक बच्ची भी साथ रहती थी पतिपत्नी दोनों काम कर जीवन निर्वाह कर रहे थे रहनसहन का स्तर बुरा नहीं था लडके की इच्छा देश जा कर पिता से मिलने की थी पर सुयोग नहीं बन पा रहा था

लडके ने बताया कि इस मुहल्ले में और भी सैकडो भारतीय परिवार हैं, जिन में पजाबी अधिक हैं सिक्खो की सख्या भी काफी है ये नौकरी, दुकानदारी और मजदूरी करते हैं इन में से बहुतो ने तो भारत से अपने स्त्रीबच्चो को भी यहीं बुला लिया है और स्थायी रूप से बसते जा रहे हैं इन में शादीविवाह, रीतिरस्म अभी तक भारतीय हैं कभीकभी तो इन अवसरों पर ढोलक पर गीत वगैरह भी होते रहते हैं

मौसम बहुत खराब था और रात भी ज्यादा हो गई थी इच्छा होते हुए भी यहां के भारतीयों से मिल नहीं सका उन्हें मेरे आने की सूचना पहले ही दे दी थी, उन में से कुछ मिलना चाहते थे भागरा नृत्य और गीत का प्रोग्राम भी रखना चाहते थे, पर पहले से प्रोग्राम तय नहीं हो सका था

रात बारह बजे होटल पहुचा दबे पांव कमरे में घुस रहा था देखा कि प्रभुदयालजी जाग रहे हैं सनसनाती ठडी हवा और जोरों की वर्षा में मुझे बाहर से लौटा न देख कर परेशान हो रहे थे और मेरी राह देख रहे थे सुबह आठ बजे ही उन के पास से चला गया था

बिस्तर पर पड़ते ही नींद आ गई.

दूसरे दिन सुबह हमें वियना के लिए रवाना होना था. जल्दी ही उठ कर नाश्ता इत्यादि कर तैयार हो गए. नौ बजे कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई. देखा, श्रीमती हून ने अपने पुत्र को एयरपोर्ट तक पहुंचाने के लिए भेजा था. हमारे मना करने पर भी स्वयं ड्राइव कर हमें अपनी गाड़ी से उस ने एयरपोर्ट पर पहुंचा दिया. एक डब्बा हाथ में देते हुए उस ने कहा, "आप लोगों के लिए माताजी ने मिठाइयां भेजी हैं."

बहुत वर्षों से श्रीमती हून भारत नहीं जा सकी थीं. शायद इसी लिए अपने देश के लोगों के प्रति स्नेह और ममता उड़ेल कर उस की पूर्ति कर रही थीं. वैसे इतने व्यस्त नगर में इतनी फुरसत कहां और किसे है? जब कि साधारण सी औपचारिकता निबाहनी मुश्किल हो उठती है.

मुझे लगा श्रीमती हून की मिठाइयों ने भारतीय तरीके से विदाई को मधुर बना दिया.

स्काटलैंड

इगलेंड से कितना अलग ?

स्काटलेंड, ब्रिटेन का उत्तरी भाग है सरसरी तौर पर वेल्स, आयरलैंड, इगलैंड और स्काटलैंड में विशेष अतर नहीं दिखाई देता फिर भी, गौर से देखा जाए तो इन राज्यों की सस्कृति और यहा के निवासियों के रहनसहन, चालढाल, पहनावे, यहा तक कि बोली में भी स्पष्ट अतर दिखेगा इगलैंड और स्काटलैंड के प्राकृतिक दृश्यों और भौगोलिक बनावट में भी काफी अतर है स्काट और अगरेजों के शारीरिक गठन में भी भिन्नता है स्काट लबे कद और चौडी हड्डी वाले तथा अपेक्षाकृत कष्टसहिष्णु होते हैं

ब्रिटेन का इतिहास बताता है कि इगलैंड और स्काटलैंड में एक अरसे तक लडाइया होती रही हैं दोना पृथक्पृथक राज्यों के रूप में थे कभी इगलैंड का अधिकार स्काटलैंड पर हो जाता था तो कभी स्काट शासक इगलड पर आधिपत्य जमा लेते दोनों राज्यों की जनता में आपस में विवाह होते थे पर ये बहुप्रचलित नहीं थे आखिर सन १७०७ में दोनों राज्य एक हो कर ग्रेट ब्रिटेन बने लेकिन आज भी दोनों के बीच भावात्मक एकता पूर्ण रूप से पैदा नहीं हो पाई है स्काट लोगों को शिकायत है कि ब्रिटिश पार्लियामेंट में उन का प्रतिनिधित्व कम है और अगरेज उन पर प्रभुत्व सा जमाए रखना चाहते हैं जो भी हो यह उन का पारस्परिक या घरेलू विवाद है विदेशों में जहां कहीं भी वे गए, ब्रिटिश बने रहे दोना के दृष्टिकोण में कोई भी अतर नहीं आया निस्सदेह यह एक स्वस्थ राष्ट्रीय गुण है भारत में हम इन्हें अगरज नाम से ही जानते थे और इसी नाम से इन का उल्लेख सब जगह होता था

कलकत्ता में जूट की जिस व्यापारी फर्म में मैं लबे अरसे तक काम करता रहा वहां स्काटिश लोगों की ही प्रधानता थी उन दिनों वे पटसन के काम में विश्व में सब से अधिक जानकार माने जाते थे वहां काम करने वाले अगरेजों को हर तीन वर्ष बाद एक साथ छ महीने की छुट्टी अपने देश जाने के लिए दी जाती छुट्टी की अवधि ज्योंज्यों नजदीक आती, वे 'होम . स्वीट होम' (घर प्यारा घर) अलापने लगते अपने देश के पर्वतों नदियों, झीलों, चरागाहों की तारीफ करते समय उन के चेहरों पर एक उल्लासपूर्ण आभा सी दिखाई देती थी अपने काम के दौरान मेरी उन से घनिष्ठता हो गई थी मैं उन से पूछता, "आप 'स्वीट होम' कहते है, उसी तरह हमें भी अपना घर प्यारा लगता है

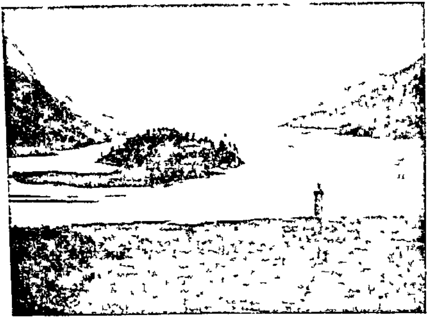

१७४५ की क्रांति के नेता प्रिंस चार्ल्स एडवर्ड की एक यादगार

फिर क्यों 'वंदेमातरम्' या 'भारत प्यारा देश हमारा' कहने पर आप लोग इसे गुनाह मानते है?"

उत्तर में वे या तो चुप रहते या कह देते कि यह राजनीतिक विवाद का प्रश्न है, हमें इस में नहीं पड़ना है

जो भी हो, अंगरेजो से और खास तौर से स्काट लोगो से, उन के देश का जो वर्णन सुनने को मिला, उस से उसे जानने की और देखने की इच्छा पैदा हो गई अंगरेजी साहित्य में भी हमारे यहा की तरह वीर गाथाए ज्यादातर स्काटलैंड के वीरो पर ही लिखी गई है बचपन में रावर्ट ब्रूस की कहानी पढ़ी थी उस के बाद स्काट की रचनाए पढ़ कर इच्छा होती थी कि देखू हमारे राजस्थान से स्काटलैंड की क्या समता है इगलैंड पहुचने पर अपनी उस इच्छा की पूर्ति का अवसर मिला

एक दिन अचानक ही लदन से ट्रेन में बैठ कर स्काटलैंड के औद्योगिक नगर डडी जा पहुचा रात थी इसलिए सफर में रास्ते के दृश्य देख नहीं पाया सवेरे जब नींद खुली, खिडकी से देखने में आया कि बरफ की चादर से ऊचीनीची जमीन ढकी हुई है वृक्ष और मकानो की छतें भी बरफ से ढकी पडी थीं

ट्रेन के डब्बे से बाहर निकलते ही बरफानी तूफान और बौछारों ने कपकपी पैदा कर दी कडाके की सर्दी थी उस समय तक मं उत्तरी ध्रुवावलीय देशो की यात्रा नहीं कर पाया था इसलिए यहा की सर्दी असह्य मालूम पडी अपनी आदत के कारण किसी को पूर्व सूचना नहीं दी थी कडाके की सर्दी, और एकदम नई जगह अनजानअपरिचित मं अपन इस स्वभाव पर खुद ही पछता उठा बहरहाल, एक टैक्सी वाले से किसी होटल में ले चलने को कहा

उन दिनों वहा बरफ के खेलो के कई एक टूर्नामेंट चल रहे थे, ठहरने के लिए स्थान का अभाव था खैर, तीनचार होटलों के चक्कर लगाने के बाद एक में जगह मिल ही गई नाश्ता करने के बाद टेलीफोन डायरेक्टरी उठा कर अपने मित्र मिस्टर बैंक का पता ढूढ निकाला और उन्हे फोन किया वह अपनी खेती देखने गए थे एक दूसरे मित्र जोन स्मिथ का नाम ढूढने लगा तो आश्चर्य में पड गया हमारे यहा के राम, श्याम और गोपाल की तरह वहा स्मिथ बहुप्रचलित नाम है एक बार तो सोचा कि जितने जोन स्मिथ हैं, सब को फोन करू पर अपने इस खयाल पर खुद ही हसी आ गई सोचा कि रविवार का दिन है लोगो को अकारण ही परेशान करने से क्या लाभ?

आखिर तीनचार गरम कपडे पहन, छाता ले, होटल से बाहर निकला और ड्यूटी पर खडे पुलिस सार्जेंट की सहायता ली वह बडी तत्परता से पास की एक पुलिस चौकी पर मुझे ले गया अपनी जगह उस ने एक अन्य सार्जेंट को ड्यूटी पर भेज दिया वहा से उस ने दोतीन 'जोन स्मिथों' को फोन भी किए पर काम बना नहीं मेरे पास अपने मित्र स्मिथ के आफिस का पता था लेकिन यह तो रविवार का दिन था सारे दफ्तर बद थे सार्जेंट ने अनुमान लगाया कि केयरटेकर आफिस के ऊपर की मजिल में रहता होगा

उस ने विचार प्रकट किया कि आफिस चल कर केयरटेकर से मिला जाए और मिस्टर स्मिथ के घर का पता मालूम किया जाए मैं हिचकिचा रहा था कि इसे नाहक परेशानी होगी पर सार्जेंट कब रुकने वाला था बरफीली हवा और बौछार में मेरे साथ हो लिया लगभग एक मील पैदल चल कर हम स्मिथ के दफ्तर पहुचे केयरटेकर बाजार गया हुआ था पर उस की पत्नी घर पर थी

मिस्टर स्मिथ का फोन नबर मिल गया केयरटेकर की पत्नी ने आफिस का कमरा भी खोल दिया हम ने फोन किया, स्मिथ घर पर ही था उस का घर वहा से सातआठ मील दूर रहा होगा उसे मेरे लदन आने का समाचार तो मिल चुका था पर डडी आने के प्रोग्राम का पता नहीं था होता भी कैसे, प्रोग्राम अचानक ही तो बना था! बडा प्रसन्न हुआ और खुद ही चद मिनटों में बडी सी हबर कार ले कर आ पहुचा सार्जेंट विदा लेते समय मुझे ही धन्यवाद देने लगा कि इतने समय तक मेरा साथ रहा मैं उस के सहज, शिष्टतापूर्ण व्यवहार पर चकित था मन ही मन सोचता रहा अपने यहां के दभी पुलिस विभाग के अफसरों के बारे में

बारह वर्ष की लबी अवधि के बाद अपने मित्र से मिल रहा था मैं ने देखा, वह पहले से भी अधिक स्वस्थ और प्रसन्न था सिर्फ उस के बालों में कुछ सफेदी आ गई थी

उस का बगला एक छोटी सी पहाडी की टेकरी पर था बहुत ही सुदर और सुरम्य स्थान लगा चारो तरफ हरियाली और बीचबीच में फूल खिले थे थोडीबहुत बरफ अब भी थी मगर उस से प्राकृतिक सौंदर्य में और भी निखार आ गया था हम जैसे ही घर पहुचे, एक निहायत खूबसूरत युवती ने मुसकराते हुए स्वागत किया स्मिथ ने परिचय कराया, "मेरी पत्नी डोरा "

डोरा ने बताया, 'मेरे पति अक्सर आप की चर्चा करते रहे हैं"

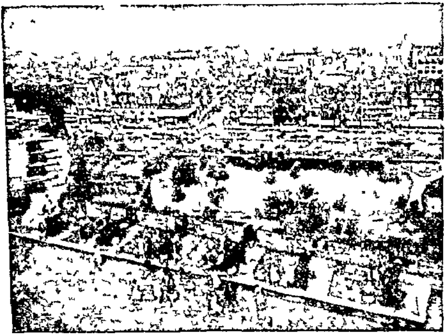

एडिनबरा के किले में उछलते-कूदते स्कूली बच्चे और पीछे है एक खूबसूरत पार्क

खाने की व्यवस्था इतनी देर में हो चुकी थी भूख मुझे भी लग आई थी बहुत ही जायकेदार निरामिष भोजन मिला मिसेज स्मिथ ने बड़े स्नेह और आग्रह के साथ भोजन कराया उस का व्यवहार कुछ ऐसे ढग का था मानो वर्षों का परिचय हो मैं भोजन कर रहा था और सोचता जाता था कि इन दोनो की उमर में लगभग पचीस वर्ष का फर्क है द्वितीय पत्नी और वह भी सुदरी, फिर भी परस्पर इतना स्नेह और विश्वास! हमारे देश में गरीब माबाप की बेटिया ही वृद्धों को दी जाती है पर ऐसी स्थिति में पत्निया पति पर शासन करती है और उन पर सदेह भी

स्मिथ ने मुझे मौन देख कर पूछा, "क्या सोचने लगे?"

मैं ने मुसकरा कर कहा, "अब मालूम हुआ कि आप जवान कैसे बन गए!" दोनो की जिज्ञासाभरी दृष्टि मुझ पर थी मैं कहने लगा, "हमारे यहा कामशास्त्र के आचार्य महर्षि वात्स्यायन ने लिखा है कि युवा, स्वस्थ, मधुरभाषिणी और सुदरी स्त्री के साथ अच्छा भोजन और सेवा मिले तो वृद्ध भी जवान हो जाता है अब समझ जाइए कि आप पर उमर का असर क्यों नहीं हुआ"

दोनो हसने लगे

स्त्रियो को अपनी प्रशसा अच्छी लगती है, चाहे वे किसी भी देश की हो मेरी बात से डोरा बहुत खुश हुई खातिरदारी और अधिक हो गई उस ने विशेष अनुरोध किया कि वात्स्यायन के कामविज्ञान का अग्रेजी अनुवाद अवश्य भेज दें मैं ने वादा किया कि भेज दूगा

यूरोप के विद्वानो में भारतीय सस्कृति और दर्शन के प्रति बड़ा आदर है

पर जनसाधारण भारतीय ज्योतिष में विश्वास रखते हैं मैं इस बात को पहले से जानता था इसलिए विदेश यात्रा के पूर्व मैं ने हस्तरेखा के संबंध में दोचार पुस्तकें पढ़ कर हलकी सी जानकारी ले ली थी किताबें साथ रखता था अकसर मित्रमंडली या परिचितों में लोग अपनीअपनी किस्मत के राज पूछ बैठते थे मैं ने कुछ गोलमोल बातें याद कर लीं दस में सातआठ तो सब पर सही बैठ ही जाती थीं भविष्य जानने की इच्छा मंत्री से चपरासी और राजा से रंक तक सब में रहती है. मेरे नुसखे से मुझे बड़ी मदद मिल जाती ट्रेन, बस, रेस्तरां और क्लबों में रंग जम जाता

डोरा का हाथ भी मैं ने देखा बताया, "बचपन संघर्षमय वातावरण से गुजरा है, पर जवानी और बुढ़ापा आनंद से कटेगा प्रसिद्धि भी है भाग्य में समाजसेवा के प्रति रुचि होनी चाहिए क्योंकि दया और करुणा के लक्षण हैं संतान दो होनी चाहिए"

इतनी ही देर में डोरा के चेहरे पर लाली आ गई थी वह खुश नजर आई कहने लगी, "देखा, जोन, मिस्टर टाटिया कहते हैं कि हमें दो बच्चे होंगे मैं ने तो तुम से पहले ही कह दिया था"

मैं सोचने लगा, चाहे पूरब की हो या पश्चिम की, नारी मातृत्व का गौरव पाए बिना अपने को पूर्ण नहीं मानती प्रकृति का यह विधान चिरकाल से सर्वत्र एक सा रहा है

दोनों ने वादा किया कि पहला बच्चा होने के बाद वे भारत आएंगे और मेरे साथ ताजमहल और कश्मीर देखने जाएंगे

थोड़ी देर विश्राम करने के बाद स्मिथ दंपति मुझे आसपास के गांवों में घुमाने ले गए डोरा कार चला रही थी मैं उस के पास बैठा था, स्मिथ पीछे की सीट पर उस दिन हम ने शायद सौसवासौ मील का चक्कर लगाया होगा वर्षा कम हो गई थी और हलकी धूप निकल आई थी खेतों में अनाज की बालियां झूम रही थीं कहींकहीं खेत कट भी चुके थे काफी बड़े पैमाने पर यांत्रिक खेती यहां होती है जगहजगह नाज के ढेर लगे हुए थे मोटी-मोटी गायों, भेड़ें और सुअरों को चरते देखा बातचीत में पता चला कि गायों से औसतन दैनिक तीसपैंतीस सेर दूध मिलता है सांडों की कीमत यहां पचास हजार से पांच लाख तक है। यहां से ब्राजील और मेक्सिको तक सांड भेजे जाते हैं

एक किसान के बंगले पर गए वह स्मिथ का परिचित था

ताप नियंत्रित छोटा सा मकान, टेलिविजन, टेलीफोन, लाइब्रेरी और सारी आधुनिक सुविधाएं करीब आधा सेर ताजी क्रीम के साथ बेरों का नाश्ता हम सभी के सामने रख दिया गया बहुत कहने पर भी वह किसान नाश्ता कम करने पर राजी न हुआ हमारे गांवों की तरह यहां भी जबरन परोसने का रिवाज है

देहातों को देख कर जब हम घर लौटे तो रात के नौ बज गए थे देखा, चारपांच स्त्रीपुरुष हमारी राह देख रहे हैं शायद उन्हें किसी ने बता दिया था कि भारत से एक अच्छे ज्योतिषी आए हैं वे सब अपनाअपना भाग्य जानने की उत्सुकता ले कर तीनचार घंटों से धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा में बैठे थे थकावट

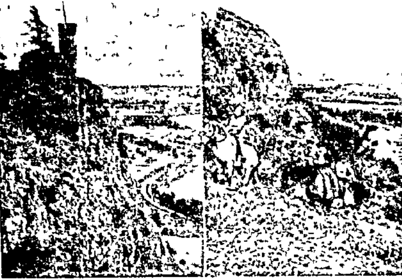

टे घाटियो की सामोशियो के बीच किनोल का किला व इवरनेस के देहात में टट्टुओ की सवारी

का बहाना करना उचित नहीं लगा. एकएक कर सब को हस्तरेखाओं को एक कागज पर उतारा और सब को अलगअलग ढग से अलगअलग बातें बताईं. कुल मिला कर साराश था: उपकार का बदला अपकार से मिलता है, घरवालो से सहयोग और प्रेरणा कम मिलती है, बचपन में दोतीन बार बीमारी ने घेरा, तीन-चार वर्ष बाद अच्छे दिन आ रहे है आदि. मैं ने सदा ध्यान में रखा है कि निराशाजनक बातें न कहना ही अच्छा रहता है. कभीकभी इस से मानसिक धक्का पहुंचने का अंदेशा रहता है. आश्चर्य है, मेरी भविष्यवाणी से सबों को संतोष हुआ और वे धन्यवाद देते हुए चले गए. रह गई केवल एक किशोरी. वह एकांत में कुछ बातें करना चाहती थी. मैं ने उसे अगले दिन सुबह आने के लिए कहा.

स्मिथ दंपति के साथ भोजन की टेबल पर बैठा. गांव में किसान के घर क्रीम और चेरी बहुत खा चुका था इसलिए भूख थी नहीं. फिर भी आग्रहवश कुछ ले लिया. डोरा से मालूम हुआ कि लड़की का नाम जेन है. एक लड़के से प्रेम हो गया और लड़के ने विवाह का वादा किया था. पिछले साल लड़का न्यूजीलैंड चला गया और वहां शायद किसी दूसरी लड़की के प्यार में फंस गया. यह है, जो उस की प्रतीक्षा में बैठी है, नहीं तो बीसियों युवक इस से शादी करने को तैयार हैं. धनवान पिता की इकलौती बेटी है, कालिज तक की शिक्षा पाई है.

यही सब बातें तो मैं जानना चाहता था. भोजन कर के जब मैं अपने कमरे में गया, रात के १२ बज रहे थे. मिसेज स्मिथ एक बार कमरे में फिर आईं और मेरे लिए की गई व्यवस्था खुद देख कर चली गईं. शायद कुछ देर और बातें करतीं पर मुझे जोरो की नींद आ रही थी.

दूसरे दिन सुबह डोरा बहुत ही प्रसन्न दिखाई दी. वही फुर्तीलापन और चुहल. कहने लगी, "यदि आप भी जवानी का नुसखा आजमाना चाहते हैं तो

जेन या किसी दूसरी लडकी से बात चलाऊ   स्काट लडकियां अच्छी पत्नियां साबित होती हैं   हमारे यहां एक भारतीय डाक्टर है, वह अपनी स्काट पत्नी से बहुत खुश है. सुस्वादु भोजन बनाने की कला और खुशमिजाजी जितनी हम में आप पाएंगे उस की चौथाई भी अंगरेज स्त्रियों में नहीं"

मैं ने हंसते हुए धन्यवाद दिया और कहा, "क्षमा करें, मेरी स्वस्थ और सुंदर पत्नी भारत में मौजूद है"

इसी बीच जेन पहुंच गई   बहुत ही सुंदर कपडों में, सुमधुर सुगंध लगाए हुए उपहारस्वरूप एक गुलदस्ता और फल उस के साथ थे   मैं उसे एक एकांत कमरे में ले गया   चारपांच मिनट तक हाथ उलटपलट कर देखे, फिर बताया, "सच्चा प्यार धैर्य मांगता है   प्रेमी पूर्व दिशा में कहीं है, वह जल्द ही आएगा   परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए"

जेन के चेहरे पर खुशी की लहरें नाच उठीं   उस की पलकें भीग गई थीं पूछने लगी, "महोदय, कितने दिन में मेरा रोबी आ जाएगा? उस का स्वास्थ्य तो ठीक है?"

वह मुझे अपनी शादी में आमंत्रित करना चाहती थी   मैं ने उसे अपना कार्ड दे दिया

डंडी की जूट मिलें और डोक्स देखने में मेरी दिलचस्पी नहीं थी इसलिए हम लोगों ने ५० मील दूर स्काटलैंड की राजधानी और बडा शहर एडिनबरा देखने का प्रोग्राम बनाया   दोपहर के खाने के लिए वहां के एक होटल में सूचना दे दी

एडिनबरा की आबादी करीब पांच लाख है   इसे यूरोप के उत्तर पश्चिम का भाग एथेंस भी कहते हैं क्योंकि शहर का एक भाग पुराना है और दूसरा भाग नया   बाजार, दुकानें, होटल और क्लब यूरोप के सभी शहरों में लगभग एक जैसे हैं   फिर भी मैं शहर या देश विशेष की कोई खास कलात्मक अथवा कारीगरी की चीज अवश्य संग्रह कर लेता था   एडिनबरा की ऊनी ट्वीड मशहूर है   गरम कपडों में आज भी इस का मुकाबला नहीं कलकत्ते में डी.सी एल आई या हाइलैंडर्स टीम के फुटबाल खिलाडियों को या ईडन गार्डन के बैंड बजाने वालों को मोटी धारीदार ऊनी ट्वीड के ऊंचे घाघरे पहने कई बार देखा था   एक स्टोर से मैं ने कुछ कपडे खरीदे   बहुत मना करने पर भी स्मिथ ने खुद ही दाम दे दिए   इच्छा थी, कुछ और भी चीजें खरीदूं, पर फिर संकोचवश विचार बदलना पडा

होटल में निरामिष भोजन के लिए हिदायत दी गई थी पर खाना खाने के बाद पता चला कि आलू चर्बी में तले गए थे   मन में बडी ग्लानि हुई, पर कहता क्या! होटल वाला यह सुन कर चकित रह गया कि निरामिष भोजन में चर्बी का उपयोग करना भी हमारे यहां वर्जित है

लंच के बाद हम एडिनबरा कैसल देखने गए   यह ऐतिहासिक दुर्ग ४५० फीट ऊंची पहाडी पर है   प्राचीन काल में सुरक्षा की दृष्टि से किले पहाडियों पर ही बनाए जाते थे   ऊपर से तीर और गोलों के अलावा शत्रुओं पर पत्थर और गरम तेल भी फेंके जाते थे   इस का वास्तविक इतिहास सातवीं शताब्दी

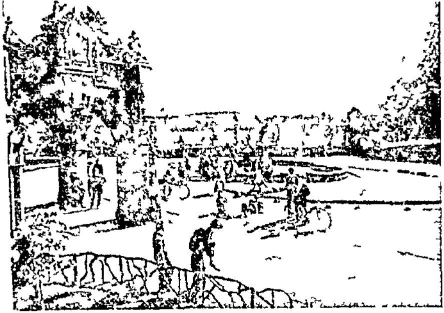

लोच लामाड का यूथ होस्टल   जहा दुनिया भर के युवक-युवतिया आ कर ठहरते हैं

से मिलता है   बताते है, राजा एडविन न इसे बनवाया   अट्ठारहवीं शताब्दी तक यानी ११०० वर्षों में इस को यूरोप के महत्वपूर्ण दुर्गों में गिनती की जाती थी इस को चर्चा और उल्लेख इतिहास और साहित्य में भी मिलता है

शेक्सपीयर के मैकबेथ का मालकम ग्यारहवीं शताब्दी में यहा रहता था ब्रिटेन के इतिहास में प्रसिद्ध मेरी क्वीन आफ स्काटस भी कुछ दिन तक इस में रही थी   २० इच के मुह की १५० मन वजनदार पदरहवीं शताब्दी की एक तोप भी यहा रखी है   शायद यह अपने जमाने में यूरोप की सब से बडी तोप थी इस कैसल ने बडीबडी लडाइया देखी है   सर वाल्टर स्काट ने इस की पृष्ठभूमि पर अपने कई प्रसिद्ध उपन्यास लिखे है

किले को देख कर मुझे चित्तौड और रणथभौर के गढों की याद आ गई शौर्य और साहस का परिचय यहा भी रहा है पर त्याग, बलिदान और मान के लिए मर मिटने का अद्वितीय जौहरव्रत भारत के सिवा और किस देश के इतिहास में देखने को मिलता है? सिर पर केसरिया पगडी बाध शत्रुओ के उमडते सागर में नगी तल्वार लिए वीरो का कूद पडना, स्वय चिता बना कर सतीत्व रक्षा के लिए हजारो रमणियो द्वारा बच्चो को गोद में लिए मृत्यु का आलिगन कर लने का गौरव पूर्ण अध्याय हमारे अलावा किस देश के इतिहास में है? मैं ने डोरा को यह सब बताया तो वह सन्न रह गई   कहने लगी "भला अबोध बच्चो को भारतीय नारिया किस प्रकार जला देती थीं?"

मेरा जवाब था, 'यह बात आप लोगो को समझ में आने को नहीं है"

किले के विभिन्न कक्षो में बादशाहों के हथियार, पोशाक और गहने रखे थ डोरा सब के बारे में बता रही थी   इस ढग के सग्रह इगलैड और यूरोप के विभिन्न नगरो में इतनी बार देख चुका था कि अब उन के प्रति विशेष आकर्षण नहीं रह

गया था

मेरी क्वीन आफ स्काट्स के बारे में इगलैंड के इतिहास में पढ़ चुका था   स्काटो की यह रानी इगलैंड की प्रसिद्ध एलिजाबेथ प्रथम की समकालीन थी   इस ढग की महिलाए सदियो में एकाध ही हुआ करती हैं   भारत में भी लगभग १५० वर्ष पहले सरधना की बेगम समरू में अत्यधिक कामुक प्रवृत्ति के साथसाथ राजनीतिक षड्यन्त्र और साहस का परिचय मेरी की तरह ही मिलता है

रानी मेरी का महल होलीरूड देखने गया   यह ८०० वर्ष पुराना है   ऊबड़-खाबड पत्थरों के बेडौल कमरो, पुराने राजाओ की दिनरात के काम में आने वाली चीजो को देख कर ऐसा लगता था कि वास्तव में ३०० वर्ष पहले तक ब्रिटेन हमारे मुकाबले में असभ्य और जगली देश रहा होगा, जहा या तो समुद्री लुटेरों की या फिर स्काट के उपन्यासो में वर्णित ड्यूक अथवा लार्ड नामक सामत जमींदारो की प्रधानता रही होगी   इन की क्रूरता और शोषण के तरीको को पढ कर रोए खडे हो जाते हैं

जिस कक्ष में मेरी रहती थी, उसे आज भी पूर्ववत रखा गया है   यहा तक कि ४०० वर्ष पहले के फर्नीचर, बरतन, कपडे और अन्य वस्तुए भी पहले की तरह रखी हैं   रानी मेरी के प्रेमी रोजियो की, उस के द्वितीय पति डार्नले ने जिस कमरे में हत्या की थी, वहा पीतल की एक तख्ती भी लगी देखी   समझ में नहीं आया कि कौन सी बहादुरी, त्याग या बलिदान के स्मारक के रूप में इसे लगाया गया है

यहा दो प्रसिद्ध गिरजे भी देखे   एक रोमन कैथोलिक है, दूसरा प्रोटेस्टेंट   दोनो ही ईसाई धर्म के दो अलगअलग पथो के हैं   धर्मांधता के कारण दोनों के अनुयायियों ने एकदूसरे के गिरजे को कई बार नष्ट किया और आग लगाई   मैं ने डोरा से कहा, "यदि असभ्य और बर्बर लोग ऐसा जघन्य काम करते तो बात समझ में आ सकती थी पर ब्रिटेन तो ससार में सभ्य कहलाने का दावा करता था   दया, क्षमा, प्रेम की अमर वाणी के प्रचारक यीशु के मंदिरो को ईसाइयो द्वारा नष्ट किया जाना, अन्य धर्म वालो या अल्प विकसित लोगों के सामने ब्रिटेन का क्या स्वरूप उपस्थित करता होगा?"

डोरा चुप रही मगर स्मिथ ने कहा, "पाशविकता मनुष्य की सब से बडी कमजोरी है   वह किसी भी आड में उभर सकती है   उस के लिए धर्म को दोषी नहीं ठहराया जा सकता   भारत में भी तो उस के उदाहरण हैं"

डोरा ने प्रश्न भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा   मैं ने कहा, "ठीक है, भारत में उदाहरण हैं पर वह भारतीयों के नहीं   भारत में अरब, तुर्क और ईरानी आए, अपने साथ इसलाम लाए   उसी परपरा में धर्मांधता ने तोड़फोड़ मचाई, मंदिरों और पुस्तकालयो को नष्ट किया गया   लेकिन मुसलमानों ने एकदूसरे की मसजिदों को कभी नहीं तोडा"

शाम हो रही थी   अभी तक हम सर वाल्टर स्काट का निवासस्थान नहीं देख सके थे   स्काट की कलम में गजब का जादू था   इस एक कवि और उपन्यासकार ने स्काटलैंड जैसे छोटे से प्रदेश को दुनिया में मशहूर कर दिया   अगरेजी पढ़ा हुआ शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा जिस ने स्काट को नहीं पढ़ा होगा   स्काट ने जितना लिखा है, उतना विश्व के कमपांच ही लेखक लिख

स्काटलैंड की राजधानी : कैलटन की पहाड़ियों से लिया गया एक चित्र

पाए होंगे. हमारे यहां रवींद्र की तुलना उस से की जा सकती है.

स्काटलैंड के रमणीक स्थानों का वर्णन, उस के वीरों की गाथाएं, स्काट ने अपनी रचनाओं में लिपिबद्ध की हैं उस के उपन्यासों में 'दि एवोट एंड केविलवर्य' नामक रचना मैं ने दोदो बार पढ़ी थी, इसलिए जब होलीरूड महल देखा तो कुछ नवीनता नहीं लगी एडिनबरा की प्रिंसेस स्ट्रीट में उस की स्मृति में गोथिक शैली का एक भव्य स्मारक बना कर स्काटलैंड की जनता ने वाल्टर स्काट के प्रति स्नेह और कृतज्ञता व्यक्त की है यहां स्काट और उस के प्रिय कुत्ते की बड़ी सजीव मूर्ति प्रसिद्ध मूर्तिकार सर जान स्टील द्वारा निर्मित है

डंडी वापस पहुंचतेपहुंचते रात के दस बज गए थकान कुछ इतनी हो गई थी कि अपने कमरे में लौटते ही मुझे गहरी नींद आ गई.

स्काटलैंड तीसहजार वर्ग मील का छोटा सा देश है हमारे यहां के राजस्थान राज्य की जनसंख्या की चौथाई आबादी है, केवल बावन लाख इस का उत्तरी भाग पहाड़ी है और वहां आबादी भी बहुत कम है शिल्प, उद्योगधंधे आदि ज्यादातर दक्षिणी भाग में ही केंद्रित हैं यहां का सब से बड़ा उद्योग है, जहाज निर्माण कोनार्ड लाइन्स के विश्व विख्यात जहाज 'क्वीन मेरी' और 'क्वीन एलिजाबेथ' इस अंचल के ग्लासगो नगर में बने थे पटसन की बहुत सी मिलें और कारखाने भी स्काटलैंड में हैं शीशे और स्टील के कारखाने भी इस प्रदेश में काफी हैं स्काटलैंड की सब से बड़ी खूबी है इस की बेहतरीन व्हिस्की यह फ्रेंच और इतालियन शराबों को मात देती है वे दोनों उम्दा किस्म के अंगूरों के देश होने पर भी, लाख कोशिशों के बावजूद स्काच व्हिस्की की क्वालिटी नहीं बना पाए

स्काटलैंड का सब से बड़ा शहर है ग्लासगो. बड़े शहरों में हर जगह एक सा वातावरण रहता है एक जैसे होटलक्लब, म्यूजियम, नाइट क्लब आदि

इन में मुझ जैसों के लिए न तो कोई नवीनता थी और न आकर्षण इसलिए हमारे कुल्लू या मनाली की तरह के उत्तरी स्काटलैंड, जिसे हाइलैंड कहते हैं, देख कर स्काटलैंड की यात्रा समाप्त करने का स्मिथ से अनुरोध किया उसे दफ्तर में जरूरी काम भी था शायद डायरेक्टरों की मीटिंग बुलाई गई थी उस की फर्म काफी बडी थी और वह उस का अध्यक्ष था इसलिए मीटिंग में उस की उपस्थिति आवश्यक थी अपनी विवशता के लिए वह बडा संकोच अनुभव कर रहा था बडे प्यार भरे शब्दों में डोरा से उस ने मेरा साथ देने के लिए अनुरोध किया मैं सोच रहा था कि इतना सपन्न व्यक्ति है, पर जरा भी अभिमान नहीं अपनी सुदर युवती पत्नी को मेरे साथ ऐसी बीहड यात्रा पर दो दिनों के लिए अकेले छोड दे रहा है हमारे यहा शायद कोई साधारण व्यक्ति भी ऐसा न करे, धनिकों की बात तो दूर रही इन को एकदूसरे पर कितना गहरा विश्वास है

डोरा खुशीखुशी राजी हो गई जेनी भी वहीं बैठी थी, वह भी साथ चलने को तैयार थी हम तीनों नाश्ता कर मिस्टर स्मिथ की बडी हबर कार में पश्चिम उत्तर के पर्वतीय अचल को देखने निकल पडे रात में वहीं एक होटल में ठहरने की व्यवस्था की

यात्रा लबी थी रास्ता भी बहुत उतारचढाव वाला था इसलिए शोफर को साथ ले लिया लेकिन कार बारीबारी से वे दोनों चला रही थीं शायद इतनी मेहनत न भी करतीं पर मैं ने डोरा के दो बच्चे और जेनी को उस का मनचाहा पति जो दे दिया था

स्काटलैंड के जिस हिस्से से हम जा रहे थे वह पहाडों, नदियों और झीलों का प्रदेश है यद्यपि रास्ता चढावउतार वाला है, फिर भी खेत सभी जगह दिखाई दी हमारे यहा के पहाडी प्रदेशों की तरह कटावदार खेत बन हुए थे

लच हमें इवरनेस में लेना था यह स्काटलैंड के पर्वतीय उत्तरी अचल की राजधानी है १२५ मील लबा सफर था मगर हसी दिल्लगी और बातचीत में रास्ता आसानी से कट गया समय और थकान का अनुभव भी न हुआ चाकलेट, बिस्कुट के अलावा फ्लास्क में काफी भी रख ली गई थी

रास्ते में थोडी देर के लिए माधुहेराग नाम के एक पहाडी कसबे के क्लब में कुछ देर के लिए ठहरे चारों ओर पहाड और हरियाली थी इन की ऊचाई हमारे यहां के पहाडों की सी नहीं थी फिर भी उत्तरी ध्रुवाचल के निकट होने के कारण यहां सर्दी बहुत थी

माधुहेराग अच्छा रमणीक स्थान है देवप्रयाग, बदरीनाथ के मार्ग में भी एस पहाड है, पर यहां के पर्वत सीधे दीवार की भांति खडे हैं इन्हें अगरेजी में 'क्लिफ' कहते है इन ऊंचे कगारों से नीचे बहुत नीचे रुपहली नागिन सी बहती नदी, कुडली मारे सप की तरह घुमावदार सडकें और घनी हरियाली, आंखों को कहीं और देखने नहीं देती

हम जहां चाय पी रहे थे, वह स्थान एक ऊंचे स्थान पर था नीचे गहराई इतनी कि देखते ही कपकपी आ जाए डोरा न बताया कि इस से भी कहीं अधिक ऊंचे और भयावह 'क्लिफ' देखने के लिए हम लोग चल रहे हैं

इवरनेस पहुंचे दिन के एक बजे का समय था देखा, हम दोनों के

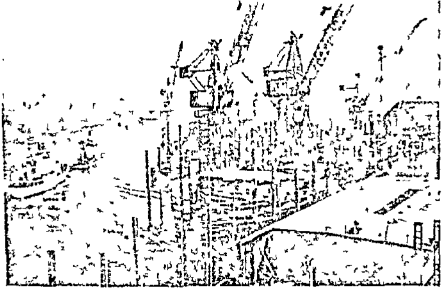

जहाजरानी उद्योग की प्रगति की झांकी प्रस्तुत करता हुआ, क्लाइड नदी के किनारे गोवन बंदरगाह

लिए निरामिष भोजन की व्यवस्था की गई है मैं ने डोरा से उस की असुविधा की चर्चा की तो उस ने हंस कर कहा, "मेहमान जब निरामिष में रुचि रखे तो मेजबान को यही करना चाहिए यों कभीकभी जायका बदलने के लिए भी यह जरूरी है."

मैं ने भी हंसते हुए तुरंत कहा, "वर्ष में छ महीने घूमता रहता हूं, सब जगह आप सरीखे मेजबान तो मिलते नहीं, खाना तो होटलों में ही पड़ता है कोशिश रहती है कि निरामिष रहूं पर कहींकहीं अपवाद हो जाता है आपने देखा, कल एडिनबरा में चर्बी में तले आलू खा लिए"

वेटर कहने पर भी बिल नहीं ला रहा था मैं ने कारण जानना चाहा डोरा ने बताया कि स्मिथ चूंकि डाइनर्स क्लब का सदस्य है इसलिए बिल क्लब की मारफत बाद में भेज दिया जायगा

इवरनेस तीस हजार की आबादी वाला पुराना शहर है समुद्र से थोड़ा हट कर मोरे नदी के किनारे बसा हुआ है पर बड़ेबड़े जहाज यहां साल भर आया करते हैं ऊनी कपड़े, मशीनें, लोहे का सामान और जहाज बनाने के कारखाने भी यहां हैं कलकत्ता की जूट मिलों के कैलेडोनियन, चिवियट और फोर्ट विलियम आदि परिचित नाम यहां सुनने में आए हमारे यहां की मिलों के नाम हिंद, बंगाल या कलकत्ता पर नहीं दे कर विदेशी नामकरण करना उचित तो नहीं था पर गुलामी हमारी थी और राज्य इन का, इसलिए इन की मरजी को कौन चुनौती देता!

स्थानीय बाजार और नदी किनारे का चक्कर लगा कर हम आगे जाने की तैयारी करने लगे जेनी ने कहा, "यहां से लगभग एक मील पर नेस नाम का एक छोटा सा द्वीप है यहां के मनोरम प्राकृतिक दृश्यों को देख कर मनुष्य अपनी

सारी परेशानियां भूल जाता हूं. मधुयामिनी मनाने के लिए यहां सैकड़ों जोड़े आया करते हैं. क्या आप वहां जाना पसंद करेंगे?"

हंसते हुए मैं ने उत्तर दिया, "रीवो के विदेश से आ जाने के बाद तुम उस स्थान को अपने लिए सुरक्षित रखो. जब मेरी शादी हुई, उस समय तक न तो हमारे यहां मधुयामिनी की प्रथा चली थी और न इस की सुविधा ही थी. वैसे इस के लिए हमारे यहां भी एक से एक रमणीक स्थल हैं."

करीब पांच बजे हम इंवरनेस से सिलमेन के लिए रवाना हुए. यह स्काटलैंड के सब से उत्तरी छोर पर है. रास्ता बीहड़ और सुनसान होता जा रहा था. शाम होने के कारण हवा में ठंडक आ गई थी. डोरा और जैनी बीचबीच में थोड़ी सी व्हिस्की ले कर आदत के अनुसार शरीर को गरम रखने की कोशिश कर रही थीं. मुझ से भी उन्होंने बहुतेरा कहा पर मैं अलर्जी का बहाना बता कर टाल गया. पश्चिमी देशों में यदि कोई महिला साथ पीने या नाचने के लिए अनुरोध करे तो उसे धन्यवाद दे कर मंजूर कर लेने का रिवाज है. इनकार करने पर वे बुरा मान जाती हैं.

इंवरनेस से सिलमेन की दूरी लगभग सौ मील है. इस रास्ते में मैं ने जो दृश्य देखे उन्हें आज भी नहीं भूल पाया हूं. हमारे यहां नदियां पहाड़ों से निकलती हैं और समुद्र में गिरती हैं पर इन उत्तर यूरोपीय देशों में उलटी बात है. समुद्र से पानी रास्ता काट कर बड़े जोरों से भूभाग में सैकड़ों मील बढ़ जाता है. यहां इन्हें फियर्ड, फर्थ या लोच कहते हैं. पानी के कटाव से रास्ते में कच्ची चट्टानें टूट या कट जाती हैं, पक्के पत्थर बच जाते हैं. इस प्रकार फर्थ या फियर्ड के दोनों ओर के पहाड़ ऊंची दीवार या कगार से बन जाते हैं जिन्हें यहां क्लिफ कहते हैं. ऐसे दृश्य हमारे यहां देखने को नहीं मिलते. सैकड़ों फीट नीचे सागर का जल धरती की गोद में लोटने के लिए बढ़ता जाता है. किनारों पर के ऊंचे कगारों से देखने पर रोमांच हो आता है.

एक जगह देखा, शायद एक हजार फीट से भी ऊंचा क्लिफ होगा. यहां खूंटी गाड़ कर रस्से के सहारे कुछ युवक उतर रहे थे. जरा भी पैर फिसला कि मृत्यु निश्चित. दोनों ओर की पहाड़ियों पर एक मजबूत मोटा रस्सा बांध रखा था. वे लोग इस के सहारे लटकते हुए पार जा रहे थे. मैं सोच रहा था कि खेल या कौतुक जरूर है पर है बड़ा दुस्साहसिक. डोरा से पूछा, "आखिर अकारण इस तरह का खतरा मोल लेने से क्या लाभ? कहीं चक्कर आ गया, मामूली चूक हो गई तो हजारों फीट नीचे गहरे पानी में गिर कर मौत की लपेट में आ जाना निश्चित है."

डोरा का जवाब था, "अगर आप ही की बात मान ली जाए तो फिर न तो उत्तरी ध्रुव में स्काट जाता और न तेनसिंह और हिलेरी ही एवरेस्ट पर चढ़ते."

सिलमेन पहुंचे तो रात के नौ बज गए थे. हलकी वर्षा हो रही थी. सर्द हवा कंपा देने वाली थी. जोरों से 'सांयसांय' की आवाज आ रही थी मानो कोई अजगर फुफकार रहा हो.

होटल की बुकिंग पहले से करा रखी थी. इसलिए कार से उतरते ही दौड़ कर भीतर चले गए. ताप नियंत्रित हाल में पहुंच कर बड़ी राहत मिली. रास्ते

भर कुछ न कुछ खाते हुए आए थे. पर इन उत्तरी ठंडे देशों में भूख जोरों की लगती है. ओट्स का दलिया, क्रीम मिला दूध और कई तरह की मिठाइयां परोसी गईं. भोजन कर के उठे, तब दस बजे थे.

डोरा ने अनुरोध किया, "बाहर निकल कर जरा प्रकृति के दृश्य देखे जाएं. इस ढंग की हवा और मौसम उत्तरी अंचल की अपनी विशेषता है, इस का अनुभव आप को जरूर कर लेना चाहिए."

उस झंझावात में बाहर जाने का मन तो कतई नहीं था. मगर डोरा के अनुनयविनय को टाल न सका. मतवाले हाथी की तरह वेग से चलते प्रभंजन की चाल देखने हम निकल पड़े.

इस अंचल में अमरीका तथा अन्य यूरोपीय देशों से यात्री काफी संख्या में आया करते हैं. इसलिए रात के एकडेढ़ बजे नाचगाने, ताश और तरह तरह के खेल होते रहते हैं. पर्वतीय स्काटलैंड का जीवन बहुत ही अबाध रहा है. जलवायु और प्रकृति ने यहां के लोगों को सदियों से कष्टसहिष्णु और परिश्रमी बनाया है. इसी लिए उन्मुक्त जीवन और अबाध गति इन के स्वभाव की विशेषता है.

नाच और गाने का समां बंधा था. लोक नृत्य की ताल पर सभी मस्त थे. सब ने पी रखी थी, इतनी कि मतवाले से हो रहे थे फिर भी देखा, अभद्रता और अशिष्टता कहीं भी नहीं है. डोरा और जेनी, दोनों ने मुझे नाच में साथ देने के लिए कहा. भला मैं उस हाइलेंडरी उछलकूद में कहां साथ देता! थकावट आदि का बहाना बना कर टालमटोल कर ही रहा था कि उन्हें वो साथी खींच ले गए. दोनों खूब नाचीं. अच्छी लग रही थीं. नाचतेनाचते जब थक जातीं तो आ कर दो घूंट गले के नीचे उतार लेतीं.

डेढ़ बज रहे थे. मैं ने उन्हें इशारे से बुला कर कहा कि कल हमें २०० मील का सफर करना है, अब सोना चाहिए. दोनों मुसकराने लगीं और नाच के गोल से निकल आईं.

उस दिन की याद आज भी आ जाती है. • शरत बाबू के 'शेष प्रश्न' के कमल की उक्ति भी इस तरह की है कि जीवन के कुछ क्षणों में सुख का भी यथेष्ट मूल्य है.

दूसरे दिन वापस डंडी के लिए रवाना हुए. रास्ते भर दोनों ज्योतिष, दर्शन, साहित्य, भारतीय स्त्रियों, वैवाहिक जीवन आदि पर तरहतरह के प्रश्न करती रहीं. शाम को डंडी पहुंच गए स्मिथ राह देख रहा था. इन लोगों ने इस ढंग की यात्रा न जाने कितनी बार की होगी, फिर भी मुझे खुश करने के लिए कहने लगीं कि इस बार की तरह आनंद शायद ही कभी मिला हो हमारी बातचीत स्मिथ को सुनाने लगीं. स्मिथ कह रहा था, "साथ न जा सका" अतिथि सत्कार की यह मधुरता बरबस स्नेह में बांध देती है.

अगले दिन सुबह उन सब को भारत आने का निमंत्रण दे कर लंदन के लिए रवाना हो गया. स्टेशन पर स्मिथ, डोरा और जेन के अलावा और कई परिचित आए थे. ट्रेन बहुत दूर निकल गई. तब भी दूर, बहुत दूर डोरा और जेनी के हिलते हुए रूमाल स्नेह बिखेर रहे थे

पेरिस में एक रात

राजनीति, शासक बदलते रहे, लेकिन पेरिस की परियां?

लंदन से पेरिस वायुयान द्वारा सिर्फ घंटे भर का सफर है दृष्टि खिडकी से बाहर थी कहीं-कहीं रूई जैसे बादलों के ढेर दिखलाई पड रहे थे लेकिन मन की दृष्टि पेरिस पर थी

पेरिस! फ्रांस की राजधानी! फ्रांस! वह देश जो आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा का प्रवर्तक है,— वाल्तेयर, विक्टर ह्यूगो, अनातोले फ्रांस, रोमारोला और बाल्जाक का देश फ्रांस! पश्चिम को समता, बंधुत्व और स्वाधीनता का पाठ पढा कर साहित्य, संस्कृति और राजनीति को एक नई दिशा देने वाला फ्रांस! और पेरिस! फ्रांसीसी लोग उसे 'पारी' कहते हैं लेकिन पारी नहीं, वह परी है—सजीली, छबीली, चिरयौवना! सीन नदी के दर्पण में वह अपना सौंदर्य देखती है, मुसकराती है और इठलाती है राजनीति बदलती रही, सत्ता हस्तांतरित होती रही, पर परी मुसकराती ही रही

सोचने लगा, 'रोम और एथेंस के वैभव काल को विजित न कर सका, लेकिन पेरिस? इस को तो निराली ही जन्मघुट्टी मिली है तीन-तीन बार जर्मन तोपें गरजीं, इस के सीने से टकराई, पर इस की मुसकान बंद न कर सकीं यह हसती ही रही और आज भी हस रही है, इठला रही है'

पेरिस की मीनारें दिखलाई देने लगीं वायुयान की परिचारिका की आवाज आई, "हम पेरिस पहुच रहे हैं." और कुछ ही क्षणों में वायुयान पख तोलता हुआ पेरिस की धरती चूमने लगा कौतूहल बल्लियां उछल रहा था वायुयान एक हलकी सी उछाल के बाद स्थिर हो गया

सीढ़ियों से उतरने लगा शाम की ठंडी हवा के एक झोंके ने कहा, 'यह पेरिस है! कदम जरा संभाल कर रखना'

पूर्वनिश्चित होटल में पहुच कर यात्रा की क्लांति दूर की इस यात्रा में मेरे पास पेरिस घूमने के लिए समय कम था लदन में ही तय हो गया था कि सब से पहले पेरिस की रात देखी जाए भोजन आदि से निवृत्त हो कर घूमने निकला चौडी सडकें, दोनों ओर वृक्षों की कतारों के पीछे बादलों को छेडती हुई मीनारें, गुंबदों की चोटियां बिजली के प्रकाश में मानो परी की सजधज से आखें चौंधिया रही थीं स्त्री-पुरुष मौज में चले जा रहे थे दुकानें तो मानो सजी हुई प्रदर्शनी ही हों चीजें इस कदर आकर्षक ढग से सजी थीं कि आंखें देखती ही रह जातीं

द्वारपाल सामंत युग के प्रहरी से लगते थे. भड़कीली पोशाकें, ऊंचे कालर, उठी हुई गरदनें और तना सीना, कोई ताज्जुब नहीं यदि इन दुकानों से गुजरते हुए आदमी को अपनी उम्दा से उम्दा पोशाक में भी कुछ नुक्स दिखलाई पड़ जाए. 'साए लेजां' नाम की विश्वविख्यात सड़क की दुकानों को देखता हुआ आगे बढ़ रहा था. संसार की सब से प्रसिद्ध दुकानें और सब से चतुर तथा व्यवहारकुशल दुकानदार यहीं देखने में आते हैं.

रात के दस बज रहे थे. पर पेरिस की शाम की अभी शुरुआत ही हुई थी. पेरिस की शाम मशहूर है. जहां कहीं जाओ मौज के सभी साधन मौजूद हैं. कानून की मानो कोई पाबंदी नहीं. आपेरा, थियेटर, सिनेमा तो सभी शहरों में हैं. लेकिन 'रात्रि क्लब' और 'कैसेनो' इस इंद्रपुरी की अपनी विशेषताएं हैं. ऐसे क्लबों की संख्या काफी है. आप की जेब भारी होनी चाहिए, फिर जैसी इच्छा हो वैसा क्लब चुन लीजिए रात हंसतेखेलते, आमोदप्रमोद में गुजर जाएगी.

मैं इसी तरह का एक रात्रि क्लब देखने जा रहा था कि अचानक किसी ने पीछे से आ कर पूछा, "महाशय, कैसा लगा पेरिस?"

"अभी तो देख रहा हूं," मैं ने उत्तर दिया.

उस ने तुरंत ही कहा, "क्या आप पेरिस की कलात्मक चीजें भी देखना पसंद करेंगे?"

"अवश्य, लेकिन, मुझे जोरों की प्यास लगी है."

उस भले आदमी ने एक भेदभरी मुसकान के साथ मेरी ओर देखा और पास ही के रेस्तरां में ले गया. मुझ से पूछा, "कौन सी शराब पसंद करेंगे?"

मैं ने उसे बताया, "मैं शराब नहीं पीता, अलबत्ता दूध या चाय पी लूंगा."

पेरिस के उस देवदूत ने बड़े तपाक से मेरे लिए दूध का आदेश देते हुए अपने लिए शराब की फरमाइश कर दी कहना नहीं होगा कि मुझे ही दोनों का बिल चुका कर अपनी जेब कुछ हलकी करनी पड़ी • शराब पीते हुए, उस ने अपनी जेब से कई तरह की अश्लील तसवीरों का एक लिफाफा निकाला लेकिन मेरी बेरुखी देख कर बेचारा चुप रह गया. पर उस ने हिम्मत नहीं हारी कहने लगा, "महाशय, पेरिस है और जीवन है. दुनिया के किसी भी कोने के आनंद प्राप्ति के दुर्लभ साधन भी यहां मनुष्य को सहज प्राप्त हैं. लोग पेरिस आते ही इसी लिए हैं यहां मनुष्य तो क्या, पत्थर की प्रतिमाएं भी बोलती हैं."

इसी दौरान उस लिफाफे से एक मस्ती भरी नवयौवना की तसवीर निकाल कर दिखाते हुए वह कहने लगा, "इसे देखिए. यह मेरी भतीजी है. इस का भारत तथा उस के निवासियों के प्रति बड़ा रुझान है बहुत अच्छा रहे कि जब तक आप पेरिस में हैं, इस के साथ कुछ समय बिताएं."

परंतु मैं पेरिस के ऐसे बिना पहचाने हुए मित्रों से पहले से ही सावधान था, इसी लिए, मोशिए को धन्यवाद देता हुआ रात्रि क्लब के लिए आगे बढ़ गया

पेरिस के रात्रि क्लबों में लोग लुकछिप कर नहीं जाते. एक ही क्लब में भाईबहन, पितापुत्र और मांबेटी निस्संकोच भाव से पीते या नाचते हुए मिल जाते हैं यहां बड़ेबड़े राजनीतिज्ञों, कलाकारों, लेखकों और विचारकों को देख कर भी आप को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. पतिपत्नी को भी आप यहां पाएंगे, लेकिन अलग-

यहा जिंदगी में प्यार ही प्यार है, इसी का नाम जिंदादिली है

अलग जोड़ों में नाचते हुए

मध्यम स्तर के एक क्लब के फाटक पर पहुचा सुसज्जित द्वारपाल वरदी पहने खड़ा था मुझे देख कर, उस ने बड़े अदब के साथ दरवाजा खोला और जरा झुका मैं अदर चला गया पास ही काउटर पर बैठी एक षोडशी ने मदभरी मुसकान के साथ ओवरकोट और टोपी रख देने के लिए कहा ओवरकोट की जरूरत थी भी नहीं कारण, बाहर जैसी सर्दी अदर न थी इमारत ताप नियंत्रित थी

क्लब का प्रवेश शुल्क भारतीय मुद्रा के हिसाब से सोलह रुपए चुका कर ऊपर हाल में गया . फर्श पर मोटे रोएदार नरम गलीचे छतों से लटकती हुई वेनिस के कीमती बिल्लोरी शीशों की बड़ीबड़ी फानूसें तथा दीवारों पर कीमती चित्रों और आदमकद आईनों वाला हाल ऐसा लगता था मानो मध्य युग का कोई भव्य राजप्रासाद हो फर्क केवल इतना ही था कि जहां उस समय के राजप्रासादों में केवल एक ही देश के लोग दिखलाई पड सकते थे, वहां बीसवीं सदी के इस राजप्रासाद में विभिन्न देशों के लोग आनद ले रहे थे

सामने से एक वेटर आया उस ने झुक कर सलाम करने के बाद एक खाली कुरसी की ओर बैठने का सकेत किया मेरे मस्तिष्क में नाना प्रकार के प्रश्न चक्कर काट रहे थे रात का सूर्य देखा लेपलैंड में, मदन कानन की छटा देखी स्विटजरलैंड में और अब साक्षात इंद्र का दरबार देख रहा हू पेरिस में सब के सामने टेबल पर मदिरा के अधभरे प्याले थे और आंखों में थी खुमारी, मानो सारा वातावरण ही मदिरामय हो सामने ही एक बड़ा मच था जिस पर संगीत की हर तान पर पुरुष और अपनग्न युवतियां थिरकती हुई नाच रही थीं लखनऊ

नृत्य और प्यार चलता रहा नजर बहकती रही ..

के अतिम नवाब वाजिदअली शाह की विलासिता का हाल पढ़ा था. वह इद्रसभा रचाता था पर जो मैं यहा देख रहा हू, इस के सामने वह इद्रसभा एक खिलवाड़ ही रही होगी!

विचारो में गोते लगा रहा था कि वो सुदरिया बगल में आ बैठीं, ऐसे निस्सकोच भाव से जैसे मेरी और उन की वर्षो पुरानी जानपहचान रही हो वेटर ने भी बडे तपाक से शराबो की एक लबी फेहरिस्त पेश की ऊपर से नीचे तक कई तरह की शराबो के नाम और दाम लिखे हुए थे कीमत बाजार से छ गुना अधिक थी

जब मै ने वेटर से कहा कि मैं शराब नहीं पीता तो उस ने बड़े आश्चर्य से मुझे देखा और तुरत ही हेडवेटर को बुला लाया

उस ने बडे ही नम्र भाव से कहा, "कोई बात नहीं सुरा न सही, सुदरिया तो है सुरापान वे करेंगी, मनोरजन आप का होगा"

लेकिन इस बात पर भी मेरे राजी न होने पर उस ने अपने निचले होठ को जरा बिचका कर दोनों कधो को ऊपर की ओर सिकोड लिया फिर उसी सकोच और विनम्रता के साथ कहा, "महाशय, सुरापान न करने वालो के लिए वह सामने की गैलरी है जहां से खड़े हो कर नाच देखा जा सकता है" पच मकार के भैरवी चक्र से बचे रहने के लिए मैं ने गैलरी में खड़े रहने में ही अपनी और अपने बटुए की भलाई समझी

प्राय घटे भर गैलरी में रहा एक लैमनेड पिया दाम चुकाए दस रुपए यहां से सारे हाल की रगरेलियो का दृश्य बखूबी देखा जा सकता था सभी यौवन

पेरिस की हसीन रात जिसकी रंगीनियों में दिल मचल उठते हैं

और मदिरा के नशे में झूमते हुए आनंद ले रहे थे। सभी जिंदगी के इस पार की ही फिक्र में थे। उस पार की बात सोचने की फुरसत भला किसे थी!

चित्त एकाएक ऊब गया और होटल की ओर लौट पड़ा। मध्य रात्रि का

काश, यह घडी सदिया बनी रहे

समय था सडको पर भीड नहीं थी, पर लोग चलफिर रहे थ रास्ते में भी कई महिलाओ ने अभिवादन किया क्यो? मन में आया कि यह प्रश्न पूछें, पर फ्रेंच नहीं जानता था. मैं ने एक स्त्री को तो अगरेजी में जवाब भी दिया 'मेरे पास पैसे नहीं हैं, आप को निराशा होगी"

उस का जवाब था कितने हैं?" .

म तेजी से कदम बढ़ाता हुआ आगे निकल गया

होटल पहुच कर कपडे बदल और बिस्तर पर लेट गया बडी शांति अनुभव की इतने अल्प समय में परियो के पेरिस का जो दृश्य सामने आया, उस ने मस्तिष्क को सोचने के लिए काफी सामग्री दी यही वह नगरी पेरिस है जहां सऊदी अरब के अमीर और ईरान के पाशा तेल की रायल्टी से प्राप्त धन को पानी की तरह बहाने के लिए आते रहते हैं। अपने देश की बातें याद आ गईं राजेमहाराजे, रईस और जमींदार भी कभी इस पेरिस में गरीब प्रजा की गाढ़ी कमाई को दोनों हाथ लुटाते थे कभीकभी तो पेरिस के किसी विख्यात क्लब में एक ही रात्रि का उन का बिल लाखो रुपए तक पहुच जाता था

यही कारण है कि आज भी भारतीयो के पीछ परिस की सुदरिया दौडती रहती हैं उन बचारियो को क्या मालूम कि अब न वे राजमहाराजे रहे और न रजवाड सामतशाही के अवसान से नरेशो को तो खद हुआ ही पर यहां की परियो और दुकानदारो को भी कम दुख न हुआ होगा

पेरिस

कला और संस्कृति का केंद्र

रात्रि क्लबों का माहौल पेरिस का इकतरफा पहलू है. फ्रांस और पेरिस को केवल ऐय्याशी, मौज और शौक की जगह समझना भारी भूल होगी

पेरिस में दूसरा दिन तडके ही उठा नाश्तापानी किया आज पेरिस का एक और रूप देखना था यह नगरी सिर्फ परी ही नहीं है बल्कि फ्रांसीसी संस्कृति, सभ्यता और चेतना का उद्गम है आज उस पेरिस को देखना था जिस ने बडेबडे विचारक, कलाकार, लेखक और शिल्पी पैदा किए हैं, जिस के विश्वविद्यालय में दीक्षित होने वाले आज भी हजारों विद्यार्थी विदेशों से आते रहते हैं, जिस ने नेपोलियन और फॉश जैसे वीर, जोन ऑफ आर्क जैसी वीरांगना, राब्सपिअर जैसे राजनीतिज्ञ ससार को दिए हैं

इस उद्देश्य से टामस कुक की पेसेंजर-बस का एक टिकट २५ रुपए में लिया इस में सब से बडी सुविधा यह थी कि अंगरेजी में सब बातें समझाने वाला एक गाइड भी साथ था इस बस में चालीसपचास यात्री आराम से बैठ सकते हैं सुबह नौ से बारह बजे दोपहर तक, और फिर दो से छ बजे शाम तक बस पेरिस के मुख्यमुख्य दर्शनीय स्थानों को दिखा देती है इस में स्थानों को अपनी इच्छानुसार देखने का सिलसिला तो नहीं बन पाता और न किसी स्थान विशेष को अधिक समय तक देखने का अवसर ही मिल पाता है, फिर भी बहुत कम खर्च में इतने सारे स्थान एक ही बार में देख लेने की बडी सहूलियत हो जाती है इस के अलावा कई यात्रियों से परिचय लाभ का भी अच्छा अवसर मिल जाता है हां, यदि किसी स्थान को विशेष रूप से देखने की इच्छा हो तो उसे दूसरी बार अलग से जा कर देखा जा सकता है

सब से पहले इतोले पहुचा यहां से १२ सडकें निकलती हैं ठीक चौचोंबीच शाएं लेजा का एक वृत्ताकार उद्यान है इसी उद्यान के केंद्र में विजय-तोरण है जिसे सम्राट नेपोलियन ने अपनी विजय के स्मारक स्वरूप बनवाया था १६४ फीट ऊंचा फ्रांस का यह स्मारक अपने देश के गौरवमय इतिहास के उस पृष्ठ की याद दिलाता है जब साधारण परिवार में उत्पन्न होने वाले एक असाधारण वीर ने यूरोप के बडेबडे सम्राटों का दर्प चूर कर दिया था फ्रांस के लोग विलास-प्रिय हैं लेकिन वे तलवार के धनी भी हैं वे अपने देश के लिए, भारत के राजपूतों की तरह, जान हथेली पर रख कर मृत्यु से खेलना भी जानते हैं इस विजय-

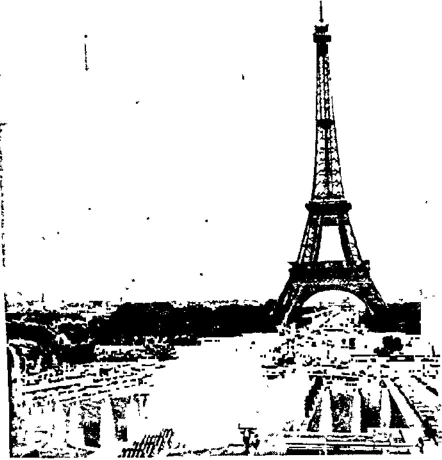

दुनिया का प्रसिद्ध 'एफिल टावर'

तोरण के चारों कोनो पर चमकीली धातु से बनी चार भव्य मूर्तियां हैं जिन में कलाकारो ने रण प्रयाण, विजय, शांति और प्रतिरोध की भावनाओ को अपनी कल्पना के अनुसार मूर्त रूप दिया है.

इन मूर्तियों की कारीगरी और कला को देख कर फ्रांस की १८वीं शती की कला का उत्कर्ष प्रत्यक्ष सामने आ जाता है.

संसार प्रसिद्ध साएं लेजां नाम की सड़क यहीं से निकलती है, जो संसार भर में अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है. मैं ने यूरोप के प्रायः सभी देशो का भ्रमण किया है. ज्यूरिच, स्टाकहोम, कोपेनहेगन, हेग और ब्रूशेल्स आदि सुंदर से सुंदर शहरों को देखा, लेकिन इतनी सुंदर सुविस्तृत सडक कहीं भी देखने में नहीं आई. बीच में सवारियो के लिए बहुत चौड़ा रास्ता, दोनो तरफ वृक्षों की कतारें, उस के बाद पैदल चलने वालो के लिए रास्ते, और फिर बड़ीबड़ी दुकानें, जिन में सुई से ले कर हीरेजवाहरात तक खरीदे जा सकते हैं. सड़क की सफाई और चमक तो इतनी ज्यादा है कि बहुत से विदेशियों को तो इस के रबर की बनी हुई होने का भ्रम हो जाता है. हमारे देश में तो यह मशहूर भी है कि पेरिस में रबड की सडके हैं

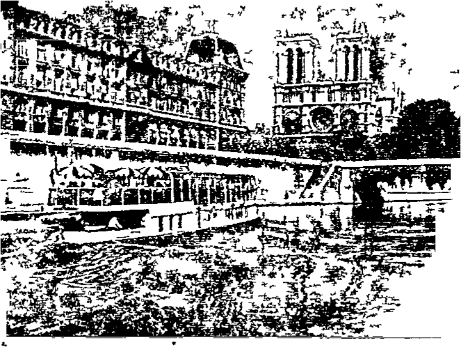

फ्रांस के सौंदर्य का प्रतीक सीन नदी के किनारे बसा नात्रेदम

इस के बाद प्लेस द ला कंकर्ड देखा फ्रेंच सम्राट लुई १५वें ने इस स्मारक को अपनी विजय के उपलक्ष में बनवाया था लेकिन इसी स्मारक के नीचे जनता ने उस के उत्तराधिकारी १६वें लुई को गरदन फरसे से काट दी थी वास्तुशिल्प और कला की दृष्टि से निःसंदेह १५वें लुई का यह स्मारक संसार में एक विशिष्ट स्थान रखता है मिस्र की विजय के बाद नेपोलियन वहां से ७५।। फुट ऊंचा एक स्तंभ लाया था २३० टन के पत्थर का यह स्तंभ अनुमानतः ३,३०० वर्ष पुराना है और इस पर प्राचीन मिस्री लिपि में कुछ लेख खुदे हुए हैं इस स्तंभ को स्मारक के ऊपर खड़ा किया गया है

इस के बाद हम विश्व का सब से विशाल और प्रशस्त राजप्रासाद देखने गए जिसे लूब्रे कहते हैं इस का निर्माण १२०० ई में प्रारंभ हुआ और १८७० ई में यह बन कर तयार हुआ था इस के बनाने में लगभग ७०० वर्ष लगे थे पहले यह एक किला था, बाद में फ्रांस के राजाओं ने इसे महल के रूप में परिवर्तित कर दिया अब इस के एक भाग में फ्रांस का वित्तमंत्रालय है और शेष भागों में सात बडेबडे संग्रहालय जिन में विश्व की बहुमूल्य कलात्मक वस्तुओं का संग्रह है मोना लिसा का प्रख्यात चित्र मै देखता ही रह गया उस के मुख की रहस्यमयी मुसकान आज भी स्मृति में ताजा है इस चित्र को बेचा जाए तो वाशिंगटन तथा ब्रिटिश म्यूजियम कई करोड़ रुपए तक दे सकते है

फ्रांस के विभिन्न नरेशों के जवाहरात यहां देखे राजाओं के पतन के कारण प्रायः सभी देशों में एक से ही रहे हैं—सत्ता का दुरुपयोग और विलासिता हमारे यहां मुगल सम्राट और लखनऊ के नवाब भी इसी कारण गए लेकिन फ्रांस

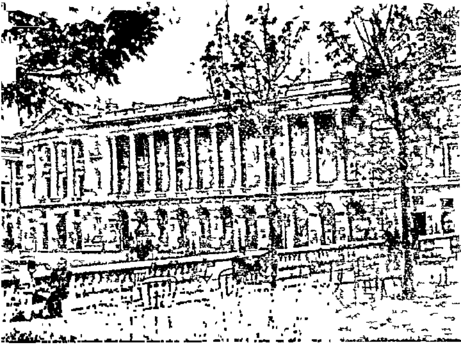

सम्राट लुई १५वें का बनवाया हुआ स्मारक प्लेस दला ककर्ड

के राजाओं की अपेक्षा उन की किस्मत अच्छी रही क्योंकि जनता ने उन्हें केवल तख्त से ही ढकेला फरसे से उन की गरदन नहीं उडाई

लूव्रे के बाद विश्वविख्यात नात्रेदम का प्राचीन गिरजा देखने गया छोटी सी पहाडी पर बना यह गिरजा दूर से भी प्रभावशाली लगता है पेरिस के इतिहास में इसका स्थान बडा महत्वपूर्ण है. नेपोलियन का राज्याभिषेक इसी गिरजे में हुआ था इस गिरज की वेदी फ्रास के अनेको राजाओ और राजकुमारो के विवाहो की साक्षी है नात्रेदम फ्रास की सात्विक भावना का जीवित प्रतीक लगता है

इस गिरज की दीवारो पर माता मरियम, ईसा और अनेक सतो के चित्र अकित है खिडकियो में रगबिरगे पारदर्शी शीशो के टुकडों से अत्यत सुदर चित्र बनाए गए है यह यूरोप की एक अनूठी कला है, इस गिरजे में उस के बहुत सुदर नमूने है

नपोलियन की कब्र देख कर उस की स्मृति ताजी हो उठी फ्रास का यह साधारण व्यक्ति अपने अदम्य उत्साह, साहस और वीरता से यूरोप की राजनीति का श्रेष्ठ नायक बन गया उस ने फ्रास की नालियो में लुढकते हुए राजमुकुट को तलवार की नोक से उठा कर, अपने सिर पर रख लिया

एक समय ऐसा भी था जब इगलैंड में माताए अपने बच्चो को नेपोलियन के नाम से डरा कर सुलाती थीं, फिर एक जमाना ऐसा भी आया जब वह अगरेजो का कैदी बन गया अपने देश से बहुत दूर, सेंट हेलेना के निर्जन टापू पर कैद में उस की मृत्यु रहस्यमय ढग से हुई अपनी मृत्यु के पूर्व उस ने इच्छा प्रकट की थी,

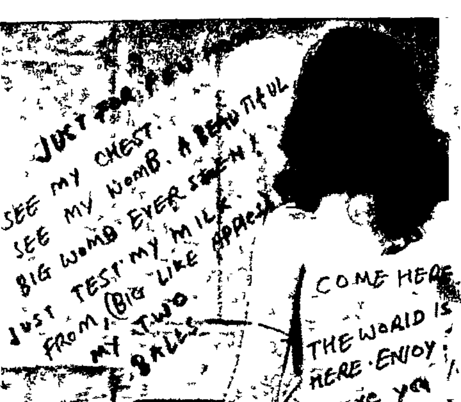

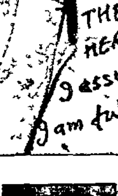

परिस नाइट कल्बा के अतिरिक्त फैशन व आट में भी बहुत प्रसिद्ध है

बाए युवती माडेलिंग की तैयारी में

ऊपर माडेलिंग करते हुए कला के कुछ छात्र दाए पृष्ठ पर माडल का चित्र बनाते हुए चित्रकार

'मेरी लाश सीन नदी के किनारे फ्रासीसियो के बीच दफनाई जाए, जिन्हे मैं ने आजीवन प्यार किया हैं'

यह स्पष्ट है कि नेपोलियन के विजय अभियानो से फ्रास का गौरव बढा था उस के प्रताप के आगे सारा यूरोप झुक गया था फ्रासीसियो ने अपने इस राष्ट्रीय वीर की कब्र को जी भर कर सजाया है और इस के प्रति श्रद्धा और स्नेह प्रदर्शित किया है जिस जगह नेपोलियन की कब्र है वहा एक बडा सग्रहालय भी है प्रसिद्ध बादशाह लुई १४वें ने घायल सिपाहियो के रहने के लिए इसे बनवाया था इसी कारण इस का नाम 'घायलों का स्थान' है यहीं 'चर्च आफ इनवालिद्स' है जिस के गुबद में सोने के ३,५०,००० पत्र लगे हैं

दिल्ली की कुतुबमीनार, कलकत्ते का विक्टोरिया मेमोरियल, लदन का टावर आफ लदन, रोम का सेंट पीटर का गिरजा, जिस तरह अपनेअपने नगर के प्रतीक हो गए हैं, उसी तरह पेरिस का प्रतीक है— एफिल टावर १५,००० टन लोहे की मीनार के इस ढाचे को खडा करने में दो वर्ष का समय लगा था इस की ऊचाई ९८४ फुट है इस पर चढ कर सारा पेरिस बखूबी देखा जा सकता है

लिफ्ट से ऊपर चढ़ा ऊपर एक छोटा सा रेस्तरा है ऊपर से देखने पर पेरिस खिलौने सी लगी पिछले महायुद्ध में विजेता जर्मनो ने इस के लोहे को युद्ध के कार्यो में लगाने की बात एक बार सोची थी लेकिन आने वाली पीढिया उन का

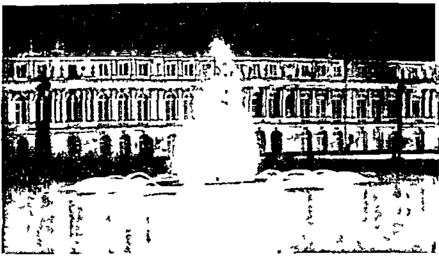

अपने ढग का अकेला वरसाई का प्रसिद्ध राजमहल

नाम किस प्रकार स्मरण करेंगी, यह सोच कर उन्होने अपना विचार त्याग दिया था

जैसे लदन का केद्रस्थल पिकाडली सर्कस है, इसी तरह पेरिस के सामाजिक जीवन का केद्र ओपेरा है यहा कई तरफ से प्रधान सडके आ कर मिलती है बीचोबीच में विश्वविख्यात ओपेरा है यह ससार का सब से बडा थियेटर है, जिस को बनाने में उस समय भी ढाई करोड रुपए लगे थे

इस के साथ ही कलाकारों की ज्ञानवृद्धि के लिए एक उत्तम सग्रहालय भी है, जिस में नाट्यशाला सबधी चालीस हजार पुस्तके और साठ हजार चित्र है सपूर्ण भवन सगमरमर से बना है इस में २,२०० आदमियो के बैठने की जगह है विश्व के बडे से बडे कलाकार की भी यह इच्छा रहती है कि उसे इस के रगमच पर एक बार अभिनय करने का अवसर प्राप्त हो

वरसाई पेरिस से बारह मील दूर है इतिहास ने यहा कई करवटें बदली है यहा का राजमहल ससार के प्रसिद्ध राजमहलो में से एक है, बल्कि यो कहिए कि यह अपने ढग का निराला ही है लुई १३वें ने इसे सन १६२९ ई में बनवाना प्रारभ किया था इस के बाद उस के जितने भी उत्तराधिकारी हुए, सभी ने इस के निर्माण में अरबो रुपए लगाए लाखो लोगों से बेगार ली गई

राजप्रासाद तैयार हुआ फ्रांस का सरकारी केंद्र पेरिस से हट कर वरसाई के महलों में आ गया जिस में राजकाज के उत्तरदायी दस हजार अमीर-उमरावो के रहने की व्यवस्था थी उस समय वरसाई के राजप्रासाद के उद्यान विश्व में अपनी सुदरता का सानी नहीं रखते थे इन की हरियाली कायम रखने के लिए सीन नदी से नहर लाने में करोडो रुपए खर्च हो गए थे

इस महल के पश्चिमी भाग की लबाई १,८०० फुट है ३७५ खिडकियां महल के कक्षों को सूर्य के प्रकाश से आलोकित करने के लिए बनाई गई है महल में देखने लायक जगह है—लुई १४वें का शयनागार और उस से लगा

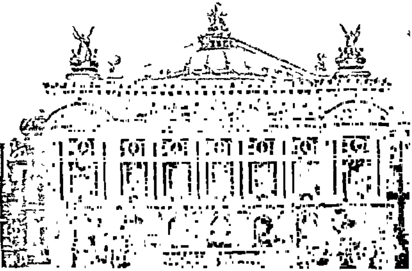

पेरिस के सामाजिक जीवन का केंद्र ओपेरा हाउस

हुआ शीशमहल

यह सम्राट लुई १६वें की प्रियतमा महारानी मेरी अतोनिता का नृत्यकक्ष था ससार के इतिहास में इस की बहुत चर्चा हुई है शीशमहल सचमुच अपूर्व कल्पना और रुचि का द्योतक है बहुमूल्य शीशो के झाड टगे है, बिल्लौरी कटाई के अगणित शीशे कमरो की दीवारो में ऊपर से नीचे तक जडे हुए है जहा प्रकाश की एक ही किरण लाखों में बदल जाए, वहा रोशनी जलाने पर कैसी अपूर्व छटा होती होगी, इस का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है इस को देख कर यही अनुभव होता है कि लुई १६वें और मेरी अतोनिता ने वैभव, विलासिता और ऐश्वर्य की हद पार कर दी थी तभी तो भगीभूखी प्रजा ने उन को महलो से बाहर निकाल कर पेरिस की सडको पर खडा कर, उन के सिर धड से अलग कर दिए थे

कलकत्ते में जैसे चाइना टाउन, बनारस में ठठेरी बाजार और दिल्ली में दरीबा के आसपास की गलिया है, पेरिस में इसी से मिलताजुलता है लेटिन क्वार्टर यहां पर आज से १,७०० वर्ष पहले रोमन विजेता रहते थे उस के बाद पेरिस का रूप बदलता गया लेकिन यह जगह आज भी उसी रूप में है रूस के महान शासक लेनिन ने यहा की छोटीछोटी चाय की दुकानो में बैठ कर अपने निष्कासन के दिन बिताए थे उस ने यहीं पर रूसी क्रांति की योजना तैयार की थी पेरिस के वैभव के सायसाय इस को भी देखना जरूरी है

पेरिस कई सदियो से शिक्षा का केंद्र रहा है और आज भी यहा दुनिया के हर कोने से हजारों की सख्या में विद्यार्थी आ कर शिक्षा ग्रहण करते हैं

वैसे तो इस इद्रपुरी में जितना भी खर्च किया जाए, कम है, लेकिन साधारण ढग से एक व्यक्ति का निवास और भोजनादि का खर्च चालीस-पैंतालीस रुपए प्रति दिन पड जाता है

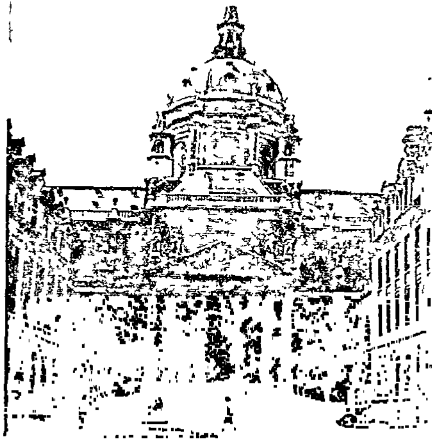

लेतिन क्वार्टर में स्थित सारबोन यूनिवर्सिटी

फ्रांस में पेरिस और वरसाई के अलावा और भी अनेक दर्शनीय स्थान हैं, लेकिन केवल उन विदेशियों के लिए, जिन की जेब में पर्याप्त धन है और मन में अतृप्त आकांक्षाएं हैं समुद्र के किनारे बसे हुए मांते कार्लो, नीस और केन आदि प्रसिद्ध शहरों में कंचन और कामिनी के आकर्षण की होड़ सी लगी रहती है शराब के प्याले होंठों से लगा कर जुए के एकएक दांव पर करोड़ों का वारान्यारा होता रहता है मांते कार्लो की तो सारी आय ही उस जुएखाने से है स्वर्गीय आगा खां का स्थायी निवास स्थान यहीं पर था

फ्रांस और विशेषत पेरिस को देखने पर सिर्फ एक ही प्रश्न उठता है, 'क्या यहां के लोग सचमुच सुखी हैं?'

शारीरिक तृप्ति की तो कोई सीमा नहीं इस के साथ तो सदा 'अत पर'—इस के बाद क्या?—लगा ही रहता है क्या उन के भी मन में यह प्रश्न उठा करता है

'तुम दे कर मदिरा के प्याले,
मेरा मन बहला देती हो
उस पार मुझे बहलाने का,
उपचार न जाने क्या होगा?'

गिरजों का देश बेलजियम

विदेशी आक्रमणों के वाद भी संपन्न

लंदन में रहते कई दिन हो गए थे मन कुछ ऊब सा गया था सोचा, 'पश्चिमी यूरोपीय देशों को क्यों न देख लिया जाए' इन देशों के लिए विसा लेने में दोतीन दिन लग गए यह काम जरूरी था, क्योंकि विदेशों में विसा और पासपोर्ट का दुरुस्त रहना आवश्यक है

बेलजियम यूरोप के उत्तरपश्चिम में हालेंड, फ्रांस और जर्मनी से घिरा हुआ एक छोटा सा देश है जिस का क्षेत्रफल केवल ११,७०० वर्ग मील है यह भारत से ११० गुना छोटा है और यहां की आबादी ११० लाख है दुनिया के घने बसे हुए देशों में इस की गणना है जितनी विपदाएं इस राष्ट्र पर आई हैं, उतनी शायद ही अन्य किसी पर कभी पड़ोसी देश हालेंड इसे उदरस्थ कर लेता था तो कभी फ्रांस आस्ट्रिया और जर्मनी छीनाझपटी में इस के हिस्से दबा लेते थे ताज्जुब यह है कि सुदूर दक्षिण का स्पेन भी इस होड़ में शामिल था फिर भी बेलजियम जीवित रहा पिछले दो महायुद्धों के भयकर जर्मन आक्रमण और बमबारी में इस की काफी बरबादी हुई लेकिन जिस धैर्य और परिश्रम से इस ने अपने को सभाला वह अनुकरणीय है

यूरोप आया था वायुयान से समुद्रयात्रा का अवसर मिला न था, इसलिए निश्चय किया कि बेलजियम जल मार्ग से जाऊंगा लदन के विक्टोरिया स्टेशन से ट्रेन में बैठ कर डोवर पहुचा यहा एक छोटे से यात्रीवाही जहाज में बैठ कर बेलजियम के बदरगाह ऑस्टेंड के लिए रवाना हुआ डोवर से इस की दूरी ६५ मील है जहाज से करीब तीनसाढेतीन घटे लगते हैं यात्रा लबी न सही, पर है तो समुद्र यात्रा, यह सोच कर मन में प्रसन्नता हो रही थी कभी पढ़ा था कि प्रथम बार समुद्र यात्रा में सिर चक्कर खाता है, मिचली आती है, इत्यादि लेकिन मुझे ऐसा कोई कष्ट नहीं हुआ वैसे यह तो महज इगलिश चैनल की यात्रा थी प्रशात या अटलांटिक सागर की नहीं

जहाज में बहुत से यात्री थे कुछ आपस में बातें कर रहे थे, कुछ पत्रपत्रिकाएं पढ़ रहे थे और कुछ चुपचाप दृश्य देख रहे थे शोरगुल का नाम नहीं, सभी प्रसन्न थे जहाज में साफसुथरा रेस्तरां था और साधारण घरेलू खेल के लिए अलग कमरा भी था यात्री खानेपीने और खेलने में लगे थे अपने यहां कलकत्ता से गगासागर जाने वाले जहाज और यात्रियों का दृश्य याद आ गया

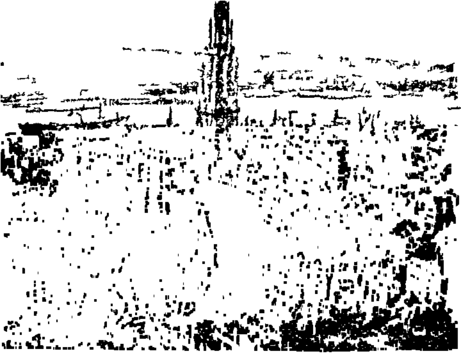

योरुप के अन्य देशों के मुकाबले के गिरजे यहाँ भी हैं

कितनी गंदगी और बसन्नी का वातावरण रहता है उन में!

जहाज के डेक पर आ कर रेलिंग के सहारे खड़ा हो गया यूरोप का किनारा दिखाई देने लगा मछली पकड़ने की आधुनिक नावें भी समुद्र में दिखाई पड़ीं पास के लाइट हाउसों के पीछे से गिरजों की ऊंची मीनारें बहुत अच्छी लग रही थीं

लगभग ढाई बजे जहाज ऑस्टेंड बंदरगाह पर पहुंचा बेलजियम का यह तीसरा प्रमुख बंदरगाह है युद्ध के बाद इसकी और भी उन्नति हुई है यहां से ब्रुसल्स कोलोन और बर्लिन को सीधी ट्रेनें जाती हैं ब्रुज और घेंट तक नहरें भी गई हैं जिन से माल के परिवहन में सुविधा रहती है

यहां का मछली का व्यवसाय अच्छा बढ़ाचढ़ा है पता चला कि बेलजियम में मत्स्य उद्योग का यह केंद्र माना जाता है शहर घूम कर देखा अच्छा लगा बंदरगाहों में आम तौर से गंदगी रहती है पर यहां वैसा वातावरण नहीं था यहां का समुद्रतट सुंदर और मनोरम है इस लिए बेलजियम के अलावा यूरोप के अन्य भागों से भी लोग यहां छुट्टियां मनाने आते हैं शहर में मत्स्य उद्योग प्रशिक्षण केंद्र तथा नौविद्यालय देखा इन उद्योगों के कारण आस्टेंड की शोभा बढ़ गई है यहां का अधिकांश व्यापार इंगलैंड से होता है अतएव अंगरेजी समझने वाले मिल जाते हैं

यहां से बेलजियम के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर ब्रुज गया ब्रुज का अर्थ फ्लेमिश में होता है—पुल अथवा वह स्थान जहां पुल हों यह नहरों का नगर है यहां सड़कों की तरह नहरें हैं इन पर ८२ पुल हैं शायद इसी लिए इस का नाम ब्रुज पड़ा मध्य युग में यह उत्तर यूरोप का पेरिस था आज से पांच सौ वर्ष

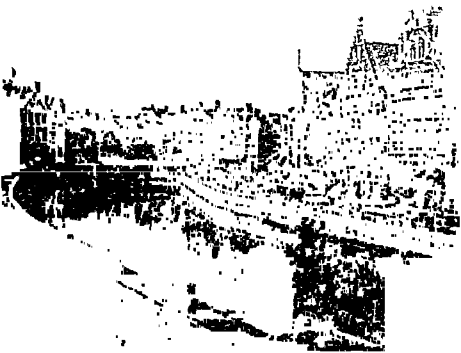

ब्रुजे नहरों और पुलों का नगर

पहले इस के किनारे तक समुद्र था संसार के बड़ेबड़े जहाज देशदेशांतर से माल ले कर इस के बंदरगाह में पहुंचते थे व्यापार का बड़ा केंद्र होने के कारण जहाजों की भीड़ लगी रहती थी यहां के भाव से यूरोप के भाव घटतेबढ़ते थे सभी देशों के प्रतिनिधि तथा व्यापारी यहां रहते थे

लेकिन सब दिन एक से नहीं होते ब्रुजे से समुद्र दूर हटने लगा और बंदरगाह में रेत भरने लगी इसलिए जहाजों का आना भी बंद हो गया धीरेधीरे समुद्र यहां से छ मील दूर हट गया बाहरी दुनिया से इस का संपर्क टूट सा गया अब, यह केवल १५वीं शताब्दी का एक श्रीहीन नगर मात्र रह गया है

शहर देखने से ऐसा लगता था कि मध्ययुगीन यूरोप में पहुंच गया हूं जिधर दृष्टि जाती थी, चिमनी लगे, ढलुवा छतों वाले दोमंजिले तिमंजिले मकान, शीशेदार लंबी खिड़कियां, दीवारों से निकली छड़ों के सहारे लटकते वर्गाकार झंडे, जिन पर धार्मिक कथानक तथा 'क्रोड' के रंगबिरंगे चित्र बने हुए थे नहरों में झांकते हुए ये मकान हलके प्रकाश में बड़े सुंदर लग रहे थे

पेरिस की तरह यहां भी सड़कों की पटरियों पर काफे और रेस्तरां हैं नागरिक यहां बैठे गप्पें लड़ाते हैं, शतरंज खेलते हैं मैं एक रेस्तरां में गया शाकाहारी भोजन यहां आसानी से मिल गया ! भोजन अच्छा बना था इंगलैंड से यहां पैसे भी कम लगे

शहर के अंतिम छोर पर 'प्रेम सरोवर' देखने गया कलकत्ता की लेक की तरह लोग यहां टहलने आते हैं मनोरंजन के लिए क्लब भी हैं. जगह साफ और खुली है. नावों की दौड़, तैराकी और अन्यान्य खेलकूद भी होते रहते हैं

विश्राम के लिए एक बेंच पर बैठ गया थोडी देर बाद मुझ से पूछ कर एक प्रौ
सज्जन बेंच की दूसरी ओर बैठ गए आपसी परिचय के बाद बात ही बात
में ने पूछा, "ब्रुजे के जीवन में आधुनिकता है पर मकानो में नहीं ऐसा क्यो?"

उन्होने बताया कि यहा के पौरनिगम की ओर से शहर की विशेषता बनाए रखने के लिए मकानो में मध्ययुगीन परपरा के कायम रखने की हिदायत है

दूसरे दिन घूमते हुए देखा कि मध्ययुगीन पोशाक में बडीबडी प्रतिमाए एक जुलूस में निकाली जा रही है छोटे बच्चे इन्हें देख कर बहुत खुश हो रहे थे अपने यहा दशहरे में कुभकर्ण तथा रावण की कागज और कर्मचियो की प्रतिमाओ का खयाल आ गया पूछने पर पता चला कि इन प्रतिमाओ को पास ही किसी मेले में ले जाया जा रहा है

ब्रुजे के गिरजो में 'पवित्र रक्त', सेंट साव्यूर और नात्रेदाम प्रसिद्ध है यहा का नात्रेदाम १४वीं शताब्दी का है यह उतना बडा नहीं है जितना कि पेरिस का माइकेल एजेलो की एक उत्तम कलाकृति 'माता और शिशु' ब्रुजे के नात्रेदाम में देखी यह एक पत्थर की मूर्ति है माता मरियम की गोद में बालक यीशु है सरलता और वात्सल्य की बडी स्वाभाविक अभिव्यजना इस में दिखाई पडी

सेंट साव्यूर का गिरजा १३वीं या १४वीं शताब्दी का है इस की दीवारो और खिडकियों पर बने चित्र देख रहा था कि तभी एक वृद्ध पादरी आए पूछने पर उन्होने चित्रो के भाव समझाए चित्र बाइबिल की विभिन्न कथाओ से सबधित थे

मेरे मन में एक प्रश्न बारबार उठता था बेलजियम के लोग उद्यमी और धार्मिक प्रवृत्ति के है और हर प्रकार से साधन सपन्न भी अफ्रीका में इन का उपनिवेश, बेलजियम कागो, इन के अपने देश से ९० गुना बडा था हीरा, तांबा, लोहा और रेडियम वहा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे फिर भी बेलजियम की उतनी उन्नति नहीं हुई जितनी होनी चाहिए

वृद्ध पादरी महोदय से मैं ने पूछा, "बारबार बेलजियम में ही युद्ध, अग्निकाड आदि क्यो होते है जिस से देश की प्रगति रुक जाती है?"

'महाशय, शोषण और अत्याचार पाप है इस का फल हमारा देश भोगता है"

"लेकिन मैं ने कभी इसे दूसरे राष्ट्र पर हमला करते नहीं सुना, बल्कि इस के विपरीत दूसरे राष्ट्र ही इस की स्वाधीनता का हरण करते रहे है," आश्चर्य से मैं ने कहा

"यह तो ठीक है और आप जहां कहीं भी जाएगे, बेलजियम सभ्य, शिष्ट और स्नेहशील मिलेंगे, लेकिन इन्ह बेलजियम कांगो में आप क्रूर और अशिष्ट पाएगे और हमारी सरकार भी इस विषय में चुप रह कर शोषण को बढावा देती रही है," पादरी ने कहा

"इस का कारण!"

"हीन मनोवृत्ति के लोग उपनिवेश में प्रारभ से ही जाते रहे ह सामाजिक अपराध, चोरी, व्यभिचार, हत्या आदि के मामले में दडित होने पर सरकार इन्हें वहां भेजती रही है इस प्रकार एसे लोग वहां इकट्ठे होत गए ये ही शोषण

और गंदगी का वातावरण फैला रहे हैं. . . हमें प्रभु ईसा ने क्षमा, दया और प्रेम की सीख दी है. कयामत के दिन भगवान प्रत्येक से हिसाब लेंगे. और प्रभु की कृपा से हम बच भी जाएंगे पर यीशु की बात मानें तब तो! . . .कयामत तक के लिए ईश्वर दंड को टाल थोड़े ही देंगे."

इसे सुन कर मुझे अपने देश में डलहौजी, क्लाइव और वारेन हेस्टिंग्ज के कुकृत्य तथा गोरों के अत्याचार की बातें याद आ गई.

'पवित्र रक्त' का गिरजा, ब्रुजे में सब से अधिक प्रतिष्ठित है. यह बहुत बड़ा नहीं है पर महात्मा ईसा के रक्त की कुछ बूंदें यहां सुरक्षित है, इसलिए इस गिरजे के प्रति विश्व में बड़ी श्रद्धा है. गिरजा दोमंजिला है और १२वीं शताब्दी का बना हुआ है. पवित्र रक्त कैसे प्राप्त हुआ और किस प्रकार यहां पहुंचा, यह मेरे लिए कौतूहल का विषय था. पूछने पर पता चला कि सन ११५० में फ्लैंडर्स के काउंट मुसलमानों से येरूशलम को बचाने के लिए क्रूसेड (धर्मयुद्ध) में शामिल हुए. उन की अपूर्व वीरता और साहस के कारण ईसा मसीह का जन्मस्थान बच गया. इसलिए येरूशलम के राजा ने प्रसन्न हो कर महात्मा ईसा के रक्त की ये बूंदें एक बंद तावीज में काउंट को भेंट दीं. महात्मा ईसा को जब सूली पर चढ़ाया गया तो रक्त की बूंदें उन के एक शिष्य ने इकट्ठी कर ली थीं. अब आठ सौ वर्षों से यह तावीज बड़ी सावधानी से इस गिरजे में सुरक्षित है. १४ वीं शताब्दी से यह परंपरा है कि वर्ष में एक बार पवित्र रक्त को बड़े धूमधाम से जुलूस में ले कर सारे शहर में घुमाया जाता है. जुलूस में सरकारी अफसर और नगर के प्रतिष्ठित मध्ययुगीन पोशाकों में सम्मिलित होते हैं

सन १९३८ में यहां के एक पादरी ने पवित्र रक्त के इतिहास के आधार पर नाटक लिखा था. शहर के घंटाघर के खुले स्थान पर यह अभिनीत हुआ. लगभग २,५०० व्यक्तियों ने इस में भाग लिया, जिस में बच्चेबूढ़े, मर्दऔरत सभी नागरिक शामिल थे. यह नाटक इतना सफल रहा कि बाद में कई बार खेला गया. लाखों लोगों ने इसे देखा, जिस में यूरोप के अन्यान्य देशों के अलावा अमरीका से भी दर्शक आए थे. इसे आज भी हर पांचवें साल खेला जाता है.

ब्रुजे का सब से प्रसिद्ध स्थान है मार्केट स्क्वायर. पास ही १३वीं शताब्दी का बना घंटाघर है. पहले इस के सब से नीचे के भाग में गोदाम थे जिन में जहाजों से उतार कर माल रखा जाता था.

आवश्यक अनुमति ले कर इस की वर्गाकार मीनार की ऊपरी मंजिल में पहुंचा जहां छोटेबड़े ४७ घंटे लगे हुए हैं. ये प्रत्येक १५ मिनट पर, निश्चित राग में, बजाए जाते हैं. मीनार के सब से ऊंचे हिस्से में एक विशाल घंटा था. मध्य युग में इसी मीनार पर खड़े हो कर पहरेदार चारों ओर नजर रखते थे. आग लगने पर अथवा शत्रुओं के आक्रमण के समय घंटे बजा कर लोगों को सावधान करते थे. मध्ययुगीन यूरोप में नगरों को स्वायत्तशासन के अधिकार प्राप्त थे. ब्रुजे के इन अधिकारों के कागजात बड़ी सावधानी से आज भी यहां सुरक्षित हैं.

ब्रुजे से ट्रेन में बैठ कर एक घंटे में घेंट पहुंचा शहर पुराना जरूर है, पर ब्रुजे जैसा नहीं है. दो छोटीछोटी नदियां घेंट के बीच से हो कर बहती हैं और कई नहरें भी हैं जिन से यहां के महल्ले छोटेछोटे द्वीपों जैसे लगते हैं. पहले यह एक प्रसिद्ध

बदरगाह था लेकिन एंटवप की उन्नति के कारण इस का महत्त्व अब कम हो गया है यहा दसवीं शताब्दी में बना सेंट बेवो का गिरजा देखा वैसे सेंट निकोलस का गिरजा यहा सब से पुराना है शहर के बीच एक घंटाघर है इस की वर्गाकार मीनार ३०० फीट ऊची है

यहा एक विश्वविद्यालय है जिस में शिल्पोद्योग, इजीनियरिंग और कला की शिक्षा दी जाती है इस के पुस्तकालय में तीन लाख से अधिक पुस्तके और दो हजार से अधिक हस्तलिखित ग्रथ है

व्यापार की दृष्टि से बेलजियम के प्रमुख शहरो में यह एक है यहा रुई और पटसन के सूती कपडों की रगाई के तथा चमडे और चीनी के कारखाने है इन के अलावा लोहे और ताबे की ढलाई के तथा मशीनें, कलपुर्जे और शराब बनाने के कारखाने भी है

घेंट को पिछले दो महायुद्धो से बहुत नुकसान उठाना पडा था उद्योग धधे बरबाद हो गए थे लेकिन अब यह प्रगति कर रहा ह

हीरों के देश बेलजियम में

आधुनिक व प्राचीन योरुप की मिलीजुली झलक

घेंट से ब्रुशल्स पहुचा ट्रेन में एक अमरीकन यात्री ने बताया था कि आधुनिक और प्राचीन यूरोप को बेलजियम में पा सकते हैं और बेलजियम को ब्रुशल्स में बात कुछ उलझी सी लगी थी पर निकली सही ब्रुशल्स यूरोप में अपने ढग का एक ही शहर है यहा, जहा शताब्दियो पुराने मकान है वहा आधुनिक ढग के बने भव्य भवन भी है बेलजियम यो गिरजों का देश है इसी से ब्रुजे और घेंट की तरह यहा भी विशाल और ऊचे गिरजे देखने को मिले

बेलजियम के इतिहास में ब्रुशल्स का महत्वपूर्ण स्थान रहा है इसी की सडको पर डच सेनाओ को परास्त कर स्वाधीन बेलजियम की नींव पडी सन १८३० में यह शहर बेलजियम की राजधानी बना आज भी ब्रुशल्स के नागरिक बडी शान से इसे 'ला कपिताल' कहते हैं

उद्योगधधो में ब्रुशल्स सदियो से बढाचढा रहा है यूरोप के अन्य उन्नत देशो में ज्योज्यो औद्योगिक विकास होता गया, ब्रुशल्स भी इस दौड में उन से पीछे नहीं रहा हीरों के लिए एटवर्प प्रसिद्ध है तो शीशे के सामान के लिए ब्रुशल्स यूरोप के प्राय सभी बडे शहरो से रेलो और सडको द्वारा सीधा सबध जुडा होने के कारण यह एक बडा व्यापारिक केंद्र है यही कारण है कि यहा की सडको पर प्राय सभी देशों की बोली सुनने को मिल जाती है

ब्रुशल्स को दूसरा पेरिस भी कहते हैं बडेबडे होटल, नाइट क्लब, रेस्तरा और काफे आधुनिक जीवन के प्राय सभी आकर्षण यहा मौजूद है लेकिन फिर भी पेरिस की सी उच्छृखलता और नग्नता का प्रदर्शन यहा अपेक्षाकृत कम है

शहर देखने के लिए ट्राम अच्छा साधन लगा अन्य सवारियो के मुकाबले ट्राम कहीं अधिक सस्ती और सुविधाजनक है पाच फ्रंक यानी आठ आने के टिकट से एक यात्रा कर सकते है दो बार में यदि ट्राम बदलनी है तो सात फ्रंक का एक टिकट मिलता है ६० फ्रंक के टिकट से बीस बार यात्रा की जा सकती है नवागतुक को यहा कठिनाई नहीं होती क्योंकि स्टेशनरी और पुस्तकों की दुकानों पर शहर का नक्शा मिल जाता है ट्रामो पर सडको के नबर लिखे रहते है इसी से नक्शा देख कर सही स्थान पर आसानी से पहुचा जा सकता है

शहर घूमते हुए मैं ने देखा कि यहा का ग्राड पलेस अपने शहरो के चौक जैसा है. बेलजियम के अन्य शहरों में भी इसी प्रकार के ग्राडपलेस है ब्रुसल्स का टाउनहाल

भी यहीं हैं इस के मुकाबले की इमारत बेलजियम में दूसरी नहीं. इस के बीच की मीनार ३६० फुट ऊंची है जो दिल्ली की कुतुबमीनार से भी १२० फुट अधिक ऊंची है टाउनहाल भवन में सुप्रसिद्ध चित्रकारों तथा मूर्तिकारों की कलाकृतियां हैं

ग्रांड पैलेस के चारों ओर पुराने ढंग के मकान हैं जिन में व्यापारिक कोठियां हैं चौक में प्रातः बाजार लगता है जहां शहर के आसपास से किसान आदि अपनाअपना माल थोक व्यापार के लिए ले जाते हैं बड़ी जल्दी क्रयविक्रय समाप्त हो जाता है. दिन निकल आने पर जरा भी अनुमान नहीं होता कि यहां बाजार लगा था

रविवार की सुबह यहां तरहतरह की चिड़ियां बिकती हैं मुझे पता चला कि बेलजियम में कबूतरबाजी का बड़ा शौक है . इन की उड़ानें स्पेन और उत्तरी अफ्रीका तक होती हैं रेडियो में प्रति रविवार को प्रसिद्ध उड़ानों की सूचनाएं प्रसारित की जाती हैं यहां के लोगों को मुर्गे लड़ाने का शौक भी है, पर इसे रुचिसंपन्न लोग कम पसंद करते हैं.

ब्रुसल्स भी दिल्ली और नई दिल्ली की तरह दो भागों में बटा हुआ है शहर के पुराने भाग से नए में जाते हुए सेंट गुडले का गिरजा बहुत आकर्षक लगा प्लेस रायल पर शहर के नए भाग की प्रायः सभी बड़ी सड़कें आ कर मिलती हैं पास 'पार्क ब्रुसल्स' है, जहां सन १८३० में बेलजियनों ने डच सेना को पराजित किया था

यहां के न्यायालय का विशाल और शानदार भवन खुली चौकोर जगह में बना हुआ है पास ही ब्रुसल्स का प्रसिद्ध पुस्तकालय बिब्लियोथिक रायल देला यहां की पुस्तकों का संग्रह न केवल बेलजियम में बल्कि सारे यूरोप में महत्वपूर्ण माना जाता है हस्तलिखित ग्रंथों के आधार पर यूरोप की मध्ययुगीन संस्कृति, कला, धर्म तथा इतिहास का अध्ययन करने के लिए बहुत से विद्यार्थी दूरदूर से यहां आया करते हैं

एक जमाना था जब ब्रुसल्स के चारों ओर दिल्ली की तरह दीवारें थीं, इस का परिचय 'पोर्ट द,हाल' से मिलता है यहां प्रवेश द्वार पर किले के अनुरूप एक इमारत है आजकल यहां प्राचीन अस्त्रशस्त्रों का एक संग्रहालय है

बेलजियम में उत्सव खूब मनाए जाते हैं। मेले यहां अकसर होते रहते हैं शहर के अनेक पार्कों में कोई न कोई कार्निवल या मेला लगा ही रहता है यहां प्रति वर्ष जुलाई और अगस्त मास में एक बड़ा मेला लगता है इस मेले में देश के विभिन्न स्थानों के निवासी परस्पर मिल कर उत्सव मनाते हैं

ब्रुसल्स बेलजियम की दिल्ली है तो एंटवर्प कलकत्ता या बंबई कला एवं संस्कृति के साथ ही यह व्यापार का एक प्रमुख केंद्र है, इसलिए यहां के नागरिक इसे 'ला मेत्रोपाले' कह कर फूले नहीं समाते

एंटवर्प में पटसन के हमारे एक बड़े एजेंट मिस्टर विलियम रहते थे यद्यपि अब तक उन से साक्षात्कार नहीं हुआ था, फिर भी व्यापारिक संबंध होने के कारण हम आपस में अच्छी तरह परिचित थे मैं इन के आफिस पहुंचा मैं ने अपना विजिटिंग कार्ड भेजा, कुछ क्षण बाद ही एक वयोवृद्ध किंतु स्वस्थ और प्रसन्न

ग्राड पैलेस के सामने लोक नृत्य करते हुए

व्यक्ति कमरे से बाहर आए उन्होंने बडे स्नेह और आत्मीयता के साथ हाथ मिला कर पूछा, "कब आए? आप के आने की सूचना हमें नहीं मिली"

मैं ने उन्हे बताया कि मैं ब्रुसल्स से सीधा यहा आ रहा हू दोएक दिन आप के शहर को देख कर फिर राटरडम जाऊगा।

"ठहरे कहा है?"

"क्वींस होटल में"

मिस्टर विलियम ने हसते हुए कहा, "आप बेलजियम घूमने आए हैं तो हमारे देश के घरेलू जीवन की झाकी भी आप को देखनी चाहिए होटलो में भला यह सब कहा मिलेगा!" अपने कमरे में बैठाते हुए उन्होंने कहा, "होटल से सामान लाने के लिए फोन कर दीजिए"

मेरे बहुत समझाने पर भी वह न माने मुझे होटल फोन करना ही पडा वह घर साथ ले जाने लगे, पर मैं ने कहा, 'पता दे दीजिए, मैं शाम को पहुच जाऊगा, तब तक शहर घूम लू" उन्होंने पता देने के बदले अपनी मोटर दे दी

ड्राइवर होशियार था शहर देखने में सुविधा रही बेलजियम के अन्य शहरों की अपेक्षा यहा पुराने ढग के मकान कम है ब्रुजे के बदरगाह में रेत भर जाने के कारण एटवर्प ने पिछले दो सौ वर्षों में बहुत उन्नति की है यहां १५वीं शताब्दी तक के गिरजे और इमारतें हैं जो पहले सरकारी दफ्तर, सैनिक कार्यालय, ड्यूको अथवा काउटो के आवास थे नात्रेदाम का गिरजा यहा भी देखा यहां के म्यूजियम और गिरजों में बेलजियम की कला और सस्कृति की

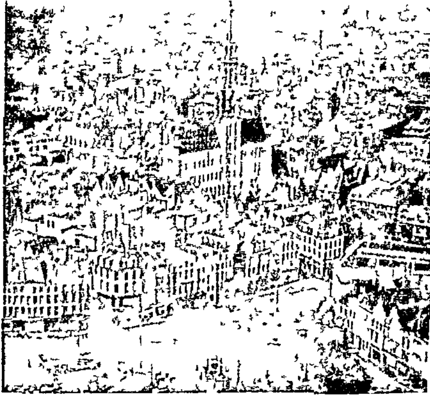

ब्रुसल्स शहर का एक विहगम दृश्य

महत्त्वपूर्ण निधियां सुरक्षित हैं चित्रों के समृद्ध सकलन में फ्लेमिश, डच, जर्मन तथा फ्रेंच शैली के अतिरिक्त आधुनिक ढग की यूरोपीय कृतियां भी देखने को मिलीं

बागबगीचे ब्रुसल्स की भांति यहां भी काफी संख्या में हैं शहर की १८ लाख जनसंख्या है, फिर भी शहर खुला और साफ है यहां के चिड़ियाघर की बहुत तारीफ सुनी थी यहां पशुपक्षियों को स्वाभाविक वातावरण में रखा जाता है दर्शक भी इन्हें छेड़ते नहीं, इसलिए यहां के पशुपक्षी परेशान नहीं लगे

शाम हो रही थी बाजार में रंगबिरंगे फूल बिक रहे थे डचों की तरह बेलजियन भी फूल बहुत पसंद करते हैं आपसी व्यवहार में अपना स्नेह और सौजन्य प्रदर्शित करने के लिए उपहारस्वरूप फूलों का गुच्छा देते हैं श्रीमती विलियम को भेंट देने के लिए मैं ने भी कुछ फूल लिए मिस्टर विलियम के घर पहुंचा उन्होंने अपनी पत्नी और पुत्र से मेरा परिचय कराया लुई अपने पिता के साथ ही व्यापार की देखभाल करता है उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, "ये शाकाहारी हैं, भोजन निरामिष बनाना"

नौकर के होते हुए भी अतिथि के लिए खाना स्वयं घर की मालकिन ही बनाती है यूरोप में कई जगह यह बात देखी

श्रीमती विलियम भोजन की तैयारी के लिए चली गईं, हम तीनों में बातों का सिलसिला जारी हुआ इसी सिलसिले में मुझे ज्ञात हुआ कि पिछले महायुद्ध

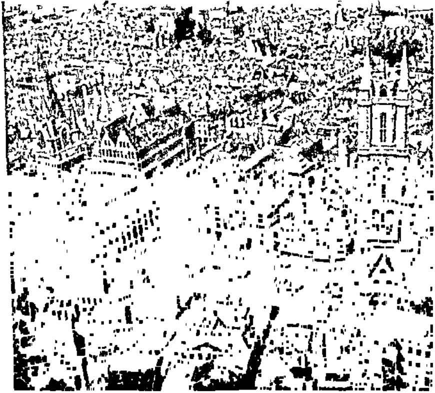

बेलजियम की प्राचीन संस्कृति का प्रतीक शहर घेंट

में एंटवर्प को भीषण क्षति उठानी पड़ी. बमों की मार से शहर के २० हजार मकान बरबाद हुए और तीन हजार नागरिकों के प्राण गए. मैं आश्चर्यचकित था कि युद्ध की समाप्ति के बाद बेलजियम ने कितनी उन्नति कर ली है. तभी लुई ने प्रश्न किया, "कैसा लगा हमारा देश?"

मैं ने कहा, "सरसरी तौर पर देखने से हम पूर्व के लोगों के लिए पश्चिम के सभी देशों की सभ्यता और संस्कृति एक सी जान पड़ती है. इन देशों में लोग रूढ़ियों को उखाड़ते हैं. पर स्वस्थ परंपरा को भी संजो कर रखते हैं. इस से संस्कृति निखर उठती है. मुझे आप की बातें विशेष पसंद आईं.

भोजन तैयार हो कर आ गया था. हम चारों भोजन करने बैठ गए. तभी मिस्टर विलियम ने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए कहा, "लुई को जूट की पूरी जानकारी के लिए भारत भेजना चाहता हूं, पर ये जाने नहीं देतीं."

मैं ने पूछा, "क्यों?"

महिला ने सिर हिला कर कहा, "ना. . .ना. . .मैं ने सुना है और अखबारों में पढ़ा है कि हिंदुस्तान में लोग दिनदहाड़े एकदूसरे को छुरा भोंक देते हैं."

मैं यह सुन कर मन में झेंपा. लेकिन बात को संभालते हुए मैं ने कहा, "देश के विभाजन के बाद राजनीति के विषैले प्रभाव और धर्मांधता की वजह से कुछ इस तरह की दुर्घटनाएं हो जाती हैं. आप विश्वास करें आम तौर पर ऐसी वारदातें नहीं होतीं."

मिस्टर विलियम ने बात जारी रखते हुए कहा, "ये भूल जाते हैं कि मध्ययुगीन यूरोप में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट एकदसरे की जान के किस कदर दुश्मन हो गए थे"

मैं ने मुसकराते हुए कहा, "मिस्टर विलियम, यह मा का दिल है"

भोजन बहुत स्वादिष्ट लगा पर मिस्टर विलियम को सतोष न था, कहने लगे, "मैं बडाई तो नहीं करता लेकिन भोजन के मामले में हम लोग इटालियनो की तरह बनाने, खाने और खिलाने के लिए प्रसिद्ध हैं भ्रमण और भोजन के आनद के लिए विदेशी यहा आते हैं क्या बताऊ, आप शाकाहारी है "

मैं ने कहा, "इस में यह और जोड दीजिए कि बेलजियन निरामिष भोजन भी अत्यत स्वादिष्ट बनाते हैं"

हम लोग हस पडे भोजन के बाद कॉफी पीते हुए अगले दिन का कार्यक्रम बना मेरे बारबार मना करने पर भी लुई को आफिस से छुट्टी दे कर उन्होने मेरा गाइड बना दिया

सुबह नाश्ता कर घूमने निकले पिछले दिन क्या-क्या देख लिया था, वह लुई को बता दिया हम एटवर्प के चौक ग्राड पैलेस पहुचे यहा का टाउनहाल बुसल्स जैसा पुराना नहीं है आसपास के मकान भी नए ढग के हैं लुई ने चौक के बीच का फव्वारा दिखाते हुए कहा, "यह बेबी का फव्वारा है"

पास जा कर देखा कि विजय गर्व से खडे एक पुरुष के पास झुकी हुई असुर की सी आकृति की कटी बाह में से पानी की धार निकल रही है लुई ने बताया, "इस मूर्ति में शहर के नाम का रहस्य है लोक कथा है कि रोमन शासनकाल में ड्रुआन एतिगान नाम का एक असुर यहा रहता था पास बहती शेल्ड नदी से गुजरने वाली नावों से यह कर वसूल करता था कर न अदा करने पर मल्लाहों का दाहिना हाथ काट कर नदी में फेंक देता था हाथ काट कर फेंकने को हमारी फ्लेमिश भाषा में हेंडवर्पन कहते है, जो कालातर में एटवर्प हो गया"

वीर पुरुष की आकृति की ओर इगित कर उस ने बताया, "इन का नाम सेलिवियस बेबी है इन्होने असुर को पराजित किया और उस के हाथ काट दिए"

प्रोटस्टेंट होने पर भी भारत और ग्रीस की तरह बेलजियम में भी पौराणिक कथाओ पर विश्वास किया जाता है, इन्हीं के आधार पर प्रतिमाए बनाने में इन की रुचि है यहा के गिरजो में भी पौराणिक कथाओं के चित्र और प्रतिमाए बहुत हैं

एटवर्प को हीरो की नगरी भी कहते हैं विश्व में राटरडाम और एटवर्प हीरे की उम्दा तराशी के लिए प्रसिद्ध हैं

यहा के इस उद्योग ने बेलजियम की आर्थिक उन्नति में बहुत महत्वपूर्ण योग दिया है पिछले महायुद्ध में इस क्षेत्र को बहुत क्षति पहुची, लेकिन मेहनतकश कारीगरों और व्यवसायियों ने बिगडी हुई स्थिति को फिर से सभाल लिया बेलजियम को इस व्यापार से विदेशों से अच्छी आय हो जाती है पेलिकान स्ट्रीट हीरे का प्रमुख बाजार है

लुई मुझे अपने एक परिचित व्यापारी के यहां ले गया तराशी की सफाई और कारीगरी को देख कर तबियत खुश हो गई छोटेबडे सभी आकार के हीरे थे लाल, नीली, पीली और हरी आभाओं के हीरे पहलेपहल यहां देखे दाम

भी सस्ते थ, भारत से आये बल्कि उस से भी कम.

व्यापारी ने आग्रह किया, "अपनी पसंद के चुन लीजिए."

मैं ने बताया, "हमारी सरकार ने इस के आयात पर प्रतिबंध लगा रखा है."

उस ने हंस कर कहा, "इस बाजार में प्रति दिन विश्व के कोनेकोने से न जाने कितने हीरे किस राह आते हैं और चले जाते हैं. भारत से तो कई व्यापारी साल में कई बार आ कर काफी माल उठा ले जाते हैं."

मैं ने कहा, "यह सभव है, क्योंकि तस्कर व्यापार की रोकथाम बडी मुश्किल से हो पाती है. फिर भी हमारी सरकार इस दिशा में काफी प्रयत्नशील है."

पता चला है कि बेलजियम की सरकार भी अब इस दिशा में सख्ती करने जा रही है ताकि आनेजाने वाले समस्त रत्नो का ब्योरा व्यापारियो से ले कर वसूल करने में सुविधा रहे.

वैसे तो शहर में कई अच्छे बाजार हैं किंतु इन में मेईर अपनी सजावट और विविधता के लिए लोकप्रिय है. लखनऊ की तरह यहा भी चिकन की जैसी कढ़ाई होती है. बहुत ही आकर्षक बेलबूटे यहां की महिलाएं हाथ से काढ़ती हैं. मुझे यह बहुत पसद आए, कुछ मैं ने भी खरीदे. एक सिरे पर २४ मंजिली इमारत दिखाते हुए लुई ने कहा, "तोरेन जे बो पर से आप को सारा शहर एक नजर में दिखा दू."

कलकत्ते में १५ मंजिली इमारतो पर तो चढ़ा था पर इतनी ऊंची इमारत पर अब तक चढ कर नहीं देखा था. शहर के बाहर हरेभरे खेतों की हरियाली के बीच शेल्ड नदी का जल हीरो की पक्ति की तरह चमक रहा था. गिरजों के ऊंचे बुर्जों पर तथा क्रासो पर सूर्य की सुनहली किरणें फिसल रही थीं.

वहा से उतर कर नदी के किनारे स्टीन देखने गए. पहले यह एक दुर्ग था लेकिन अब यहा एक नौसग्रहालय है. यहा समुद्र और जहाजरानी की सभी आवश्यक वस्तुओं का अच्छा सग्रह है. मुझे इस संबंध में थोड़ीबहुत जानकारी मिली. मुझे आश्चर्य हो रहा था कि कितना छोटा सा देश है बेलजियम, सिर्फ ४० मील का समुद्रतट इस के पास है, फिर भी हालैंड और नार्वे की तरह इस ने कितनी प्रगति इस दिशा में कर ली है. हम हजारो वर्षों से वरुण देव की पूजा जरूर करते रहे हैं, पर इतना विस्तृत समुद्रतट होते हुए भी इस दिशा में हम कितने पिछड़े हुए हैं!

लुई का साथ मेरे लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ बेलजियन जीवन की बहुत सी बाते उस ने बताईं. एक मजे की बात यह भी सुनी कि हमारी तरह उन के यहा भी घरो की दीवार, जमीन या चूल्हो के पीछे से वक्त जरूरत खासी रकम निकल आती है. डेनमार्क की तरह साइकिल दौड यहा का प्रमुख राष्ट्रीय खेल है. भारतीयो की तरह फुटबाल के खेल में भी इन्हें बहुत दिलचस्पी है.

स्टीन के पास से ही एंटवर्प का बदरगाह शुरू हो जाता है. यह यूरोप के बड़े बदरगाहो में से एक है. विदेशो से कई जहाज यहा माल लेने और उतारने आते हैं क्योंकि हेमवर्ग की तरह मध्य यूरोप के देशो के माल का आवागमन इसी मार्ग से होता है. जहाजो की मरम्मत की व्यवस्था भी यहा अच्छी है. माल की लदाई और निकासी इतनी तत्परता और कुशलता से की जाती है कि आए हुए

जहाजों को ज्यादा प्रतीक्षा नहीं करनी पडती

एटवर्प का पटसन उद्योग डडी की तरह काफी उन्नत है भारत और पाकिस्तान से पाट यहा की मिलों के लिए आता है यहा की जूट मिलें देखना चाहता था, लुई ने टेलीफोन से पहले ही प्रबध कर लिया था जूट मिलें बडी तो नहीं है, मगर बहुत साफ और यात्रिक दृष्टि से हमारे यहा से काफी उन्नत इन में केवल बोरे और चट ही नहीं बनाए जाते बल्कि तरह्तरह की अन्य वस्तुए, जैसे गलीचे, कबल, दरिया आदि भी बनती हैं

मजदूरी हमारे यहा से छ गुनी अधिक है लेकिन प्रति मजदूर उत्पादन भी इसी अनुपात में अधिक है यही कारण है कि जूट पैदा करने वाले देश भारत की टक्कर में विश्व के बाजारो में यह टिका हुआ है

शहर देख कर हम शाम को घर लौटे मिस्टर विलियम पहले ही आ गए थे हम ने साथ ही भोजन किया

रोटरडम जाने के लिए विदा लेते समय मैं ने श्रीमती विल्यिम से कहा, "लुई को अकेला आप नहीं छोडना चाहतीं तो आप चारों भारत आइए"

श्रीमती विलियम ने आश्चर्य से पूछा, "चौथा कौन?"

मैं ने कहा, "आप की होने वाली पुत्रवधू!"

सभी हसने लगे

हाथ में फूलो का गुच्छा देते हुए उन्होंने दो छोटेछोटे पैकेट दिए एक में हाथ की बुनी सूत की जालिया थीं और दूसरे में रोटरडम तक के लिए केक और बिस्कुटो का नाश्ता था

स्विट्ज़रलैंड

भूलोक का एकमात्र नंदनकानन?

भूलोक का नंदनकानन कहने से भारतीयों को सहज ही कश्मीर का ध्यान आता है लेकिन संसार का कोई देश यदि वास्तव में इस नाम का अधिकारी है तो वह स्विटजरलैंड है. प्रकृति का सौंदर्य कश्मीर में भी अनुपम है और निस्संदेह प्रकृति अपना रूप वहां पलपल संवारती रहती है, लेकिन मानव के हाथ उसे नहीं संवारते. इसलिए स्वच्छता की कमी उस के रूप को निखरने नहीं देती.

इस के विपरीत स्विस लोगों ने अपने देश में जहां भी कहीं सुरम्य स्थल पाया, उस की शोभा बढ़ाई है, उसे सजाया और संवारा है. उन्होंने विज्ञान की उन्नति के दंभ में अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के खयाल से प्रकृति के रूप को वैज्ञानिक अस्त्रों से बिगाड़ा नहीं, बल्कि विज्ञान की सहायता से अपने देश के सुंदर स्थानों को पर्यटकों के लिए सुगम, सुविधापूर्ण और सुरक्षित बना लिया है.

वैसे तो हमारे देश में भी सुंदर स्थानों और प्राकृतिक छटा का अभाव नहीं है पर इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि हम ने उसे सजानेसवारने की कभी कोशिश नहीं की. आज स्वाधीन होने के बाद भी इस ओर हमारा ध्यान बहुत कम ही गया है.

स्विटजरलैंड में मैं ने ऊंचीऊंची दुर्गम पहाड़ियों की चोटियों पर लोगों को तार की मजबूत रस्सियों के सहारे झूलते हुए देखा है. कहीं कोई पहाड़ी नदी उर्वशी की भांति धरती पर उतर रही है तो कहीं कोई पहाड़ी नदी हजारों फीट ऊंचे पर्वतों की घनी वनाली के बीच लुकछिप कर मुसकान बिखेरती भाग रही है. ऐसे अवसरों पर मन में बराबर यही बात आई कि स्वदेश लौटने पर प्रकृति को कुरूप बनाने की चेष्टाओं में यदि कुछ भी रोकथाम कर सका तो अपने को धन्य मानूंगा.

डेवोस के पहाड़ों के पास एक सुंदर झरने के किनारे नाश्ता करने बैठा तो मुझे अपनी बद्रीनाथ यात्रा का स्मरण हो आया. मैं ने वहां भी हनुमान चट्टी से आगे कलकल करते एक झरने के किनारे सुस्ता कर कुछ चनाचबेना करने का विचार किया था, लेकिन कहीं से दुर्गंध का एक झोंका आया और मैं ने सिर घुमा कर जो दृश्य देखा, उस से भूख का भाग जाना स्वाभाविक ही था.

मन में बड़ी ग्लानि हुई. कुछ तीर्थयात्री झरने के किनारे बैठे शौच कर रहे थे. मैं ने दो गेरुआ वस्त्रधारी साधुओं को रोका तो वे झगड़ें पर उतारू हो गए. दूसरे भक्तों ने भी मुझे ही बुराभला कहा. मुझे चुप हो जाना पड़ा.

दूसरी ओर स्विट्जरलैंड के लोगों को सफाई का इतना अधिक ध्यान रहता

ह कि यदि कहीं कूड का टब न हो तो वे छिलके वगरह अपनी जबो में डाल लेंग और स्थान को गदा करन का विचार तक भी मन म नहीं लाएग

स्विटजरलड की प्राकृतिक छवि म अपनी अलग विलक्षणता ह सारा देश ही सुदर ह पर युग्न-यगफ्राऊ की छटा न सब से अधिक प्रभावित किया आज भी वे दृश्य मानसपटल पर ज्यों के त्यों अंकित ह यगफ्राऊ का अथ ह नवयुवती म न स्विटजरलड म सभी के मुह से इस स्थान के अप्रतिम सौंदय की चर्चा सुनी थी इसी लिए म यगफ्राऊ के आकषण में बधा हुआ इतरलाकेन जा पहुचा

इतरलाकेन का अथ ह दो झीलो के बीच की भूमि नाम साथक ह यह ब्रायेंज और थून नामक दो झीलों के बीच बसा छोटा सा कस्बा ह चारो ओर के पहाड नीलों के जलदपण में अपनी शोभा दख कर झूमन से लगत ह कभी कभी लगता ह कि बादल अपना रूप निरखन के लिए झीलो की सतह पर झुकत चले आ रहे ह

इस की अपनी आबादी करीब तीनचार हजार ही होगी लेकिन गरमियों में बफ पिघलन और शीत का प्रकोप कम होन पर यहा पयटकों का अच्छाखासा जमाव हो जाता ह इसी कारण इतना छोटा सा कस्बा होन पर भी यहा चौंसठ होटल ह, जिन में पाच हजार यात्री ठहर सकते ह

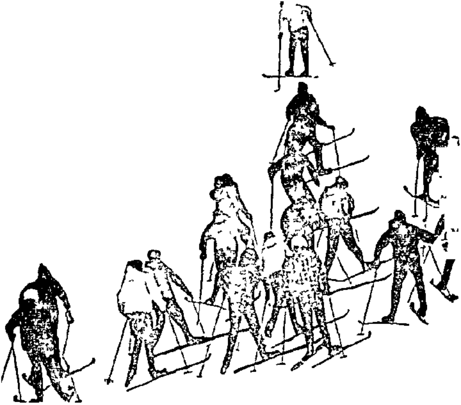

यहा के कस्बो और बाजारो में पर्वतारोहण तथा अन्य कई प्रकार के खेलकूद की सारी सामग्री मिल जाती है. पर्यटक लोग अपने साथ अनुभवी तथा कुशल गाइड ले कर पर्वतारोहण के लिए निकल पड़ते हैं.

स्विट्जरलैंड के गाइड और दुकानदार पर्यटकों से अधिक पैसा लेने के चक्कर में नहीं रहते. वे उतना ही पैसा मागते हैं जितना उचित होता है. साथ ही ग्राहक को शिष्टाचार और स्नेह भी देते हैं. यही वजह है कि यहां खर्च करना खलता नहीं.

यहा जर्मन भाषा बोली जाती है भावताव में दुकानदारों को अपनी बात समझाने में असमर्थ होने पर मैं उन के सामने पैसे रख देता और वे खुद ही अपने वाजिब दाम उठा लेते थे. ऐसा कभी नही लगा कि मैं ठगा गया हू. दुकानों में सामान बेचने वाली प्राय सुदर और स्वस्थ युवतियां ही होती हैं, जो सामान दिखाने के साथ ही साथ शिष्ट मुसकान भी बिखेरती रहती हैं.

मैं ने एक बार एक दुकान में कई चीजें देखने पर भी कुछ नहीं खरीदा, फिर भी वहा की सेल्स गर्ल मुझे फाटक तक पहुचाने आई और वापस जाते हुए कहती गई, "थैंक्यू सर!" मुझे बरबस ही कलकत्ता की एक घटना याद आ गई. मैं एक दुकान में पेन खरीदने गया था. दोतीन मिनट तक तो दुकानदार ने बात ही नहीं की, फिर जब मैं ने खुद ही पेन के चुनाव करने की सोची तो उस ने इस तरह घूरना शुरू किया जैसे मैं पेन उठा कर भागने वाला हू. मैं ने जब उस से वाटरमैन या स्वान पेन दिखाने को कहा तो वह झल्ला कर बोला, "क्यों शोर मचाता! हमारा भी टाइम वेस्ट करता और अपना भी तुम को पेनवेन कुछ नहीं खरीदना,

स्की के लिए 'इलैक्टिक राप' के द्वारा जाते हुए

जाओ!" जरा देखिए, कितना अंतर है दोनों में

पश्चिम के लोगों में मैं ने एक विशेषता पाई कि उन के खेलकूद और मनोरंजन में साहस और सजीवता का पुट रहता है वहां प्रत्येक सबल, स्वस्थ और समय नागरिक जिस ढंग से अपने अवकाश का उपभोग करता है, वैसा साधारणतया हमारे यहां नहीं पाया जाता

मार्च का महीना बीत रहा था लेकिन ठंडक कम नहीं हुई थी इस के बावजूद इंतरलाकेन में पर्यटकों का आगमन शुरू हो गया था क्लबों और होटलों में चहलपहल बढ़ रही थी नृत्यशालाओं और रेस्तराओं में खिलखिलाहट गूंजने लगी थी लोग हंसी और नाच के साथ अपने अवकाश का लाभ उठा रहे थे कोई स्केटिंग की तैयारी कर रहा था तो कोई स्की की ओर कोई रस्सियों के सहारे दुर्गम पहाड़ियों पर चढ़ कर उन के शिखर को चूमने के प्रयास में लगा था

स्की भी कितने जीवट का खेल है दोनों पैरों के तलवों में आगे की ओर उठी हुई लकड़ी की दो चिकनी पटरियां बांध कर बर्फ पर फिसलना मैं ने भी पांच सवारों में अपना नाम लिखाना चाहा, पर बिल्कुल निकम्मा साबित हुआ दसबीस फीट फिसलने पर ही या तो आसमान देखता या जमीन सूंघने लगता कई बार कोशिश की पर सब बेकार रहा लिहाजा स्की को दंडवत प्रणाम किया

जरमिट शहर में घोड़ा स्लेज

और अन्य लोगों को स्की करते देख कर ही दिल का अरमान पूरा कर लिया स्की की पटरियां बांधे हजारों फीट की ऊंचाई से बर्फ पर तेजी से फिसलते और छलांगें भरते लोगों को देख कर दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है

स्विटजरलैंड का यह राष्ट्रीय खेल है इस के अलावा विदेशों से प्रति वर्ष हजारों खिलाड़ी यहां अपना करतब दिखाने आते हैं स्की के लिए वास्तव में अभ्यास के साथ ही बल और एकाग्रता भी चाहिए मेरे पास उत्साह, बल और कुशल गाइड, सब थे लेकिन मेरा बल स्की के मामले में बल खा गया क्योंकि प्रिंस अलीखां की तरह अपना पैर तुड़वाना मुझे ठीक नहीं जंचा

इंटरलाकेन और उस के आसपास खूब घूमा दृश्य बड़े ही सुंदर थे उन को देख कर जब मुझ जैसे साधारण मनुष्य का हृदय भी खुशी से भर उठा तो पश्चिम के बड़ेबड़े कलाकारों और साहित्यकारों का भावविभोर हो जाना स्वाभाविक ही है महाकवि गेटे, शैली, कीटस और महान विचारक तथा साहित्यकार थैकरे, रस्किन, लांगफैलो, मार्कट्वेन आदि की कृतियों में इंटरलाकेन के मनोरम दृश्यों की नैसर्गिक छाया स्पष्ट दिखाई देती है अंगरेजी के रोमांटिक कवि बायरन ने अपनी विश्व प्रसिद्ध कृति 'मैनफ्रेड बजनज' यहीं लिखी थी

लेकिन इंटरलाकेन मुझे रोक न सका युंगफ्राऊ का आकर्षण अपनी ओर खींच रहा था मैं उसी ओर बढ़ चला कई पर्यटक साथ थे उन में से अधिकांश विदेशी थे और बड़े हंसमुख थे यूरोप में, इंगलैंड को छोड़ कर, साधारणतया

यात्रा नीरस नहीं होती   वहा के लोग विदेशियो और विशेष कर हम भारत वासियो से तो जानपहचान कर ही लेते हैं

मैं ट्रेन में बैठा बाहर के दृश्य देख रहा था   पास ही दो युवतिया बैठी थीं वे अपनी भाषा में बातचीत कर रही थीं   कभीकभी नजर बचा कर मेरी ओर भी देख लेती थीं.   लगा जैसे वे मेरे ही बारे में बातें कर रही हैं   मैं ने उन की ओर मुड कर देखा तो उन में से एक अगरेजी में पूछ ही बैठी, "क्षमा कीजिएगा, क्या आप भारतीय हैं?"

"जी, हा, आप का अनुमान सही है," मैं ने कहा

"देखिए न, मेरी बहन कहती है कि आप भारतीय नहीं हो सकते   भारतीय इतने स्वस्थ नहीं होते"

मुझे हसी आ गई   मैं ने कहा, "दुबलेमोटे और लबेनाटे मनुष्य तो हर देश में होते हैं"

दोनों हस पडीं   परिचय होने पर पता चला कि वे रईस घर की हैं और छुट्टिया मनाने निकली हैं   विचारविनिमय का सिलसिला चला   गाधी, नेहरू और रवीन्द्र से ले कर हमारी सास्कृतिक तथा सामाजिक व्यवस्था ही नहीं, स्त्रियो के अधिकार, विवाह, भारत की बढती हुई जनसख्या और यहा तक कि परिवार नियोजन आदि पर चर्चा हुई   उन के साथ जिस तरह बिना किसी झिझक के खुल कर बातें हुईं, उस तरह बातें करना हमारे देश में सभव नहीं   मैं शुरू में कुछ हिचक रहा था   स्वाभाविक भी था क्योंकि महिलाओ के साथ इन विषयो पर विचारविनिमय करने का पहले कभी मौका नहीं पडा था   लेकिन उन यूरोपीय बहनो के सहज, मुक्त भाव ने मेरी हिचक मिटा दी

उस घटना की याद आते ही मन में विचार उठता है कि हम अपने यहां यथार्थ पर जो परदा डालते हैं, उसे पश्चिम में बुरा माना जाता है   वैसे यह बात काफी हद तक सही भी है क्योंकि हमारी वर्तमान सस्कृति में शिष्टाचार के नाम पर दकियानूसी खयालो का समावेश हो गया है और आचारभ्रष्ट होते हुए भी सदाचार का दिखावा किया जाता है

विद्युत चालित हमारी ट्रेन पहाड की ऊचाई पर क्रमश बढ़ती जा रही थी स्विट्जरलैंड में सभी ट्रेनें बिजली से चलती हैं   लेकिन हमारी यह यात्रा पूरी तरह से भिन्न थी   हमारे देश के दार्जिलिंग और शिमला की भांति यहां यगफ्राउ की चोटी पर चढ़ने के लिए पहाड की ढलान को काटछांट कर रास्ता नहीं बनाया गया है   स्विस इजीनियरों ने पहाड़ के भीतर ही सुरगें काट दी हैं   ट्रेन उन में से गुजरती हुई चोटी की ओर बढ़ती जाती है   यात्रियो को पता तक नहीं चलता कि वे प्रति पल समतल भूमि से कितने ऊपर उठते जा रहे हैं   जहा पहाड काट कर बाहर का दृश्य देखने के लिए जगह बनाई गई है, वहां ट्रेन बीचबीच में कुछ देर के लिए रुकती भी है   यात्री वहां उतर कर पहाड की ऊचाई से शोर मचा कर गिरते हुए झरने, इठलाती हुई पहाडी नदियां और स्वच्छ बर्फ पर तैरते हुए बादल देखते हैं

हमारी ट्रेन बेनजेन में कुछ देर रुकी   सुन रखा था कि यहां से सूर्यास्त का बड़ा

ही अनुपम दृश्य दिखाई देता है. लौटते समय बेनजेन पहुंचा तो सूर्यास्त का ही समय था. अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहता था बाहर की ओर आया. देखा कि सूर्य पश्चिम की पहाड़ियों के पीछे जा रहा है और सन्ध्या बर्फीले शिखरों तथा घाटियों पर केसरिया रंग कर के सूर्य को बिदा दे रही है.

बेनजेन के बाद हमारी ट्रेन फिर सुरंगों में खो गई. ट्रेन के प्रकाश में पहाड़ी चट्टानों के अलावा कुछ नहीं सूझता था. हम कुछ ही देर में शेईडेग पहुंच गए यहां से युंगफ्राऊ के लिए ट्रेन बदलनी पड़ती है. युंगफ्राऊ की खास यात्रा यहीं से शुरू होती है. ट्रेन फिर पर्वत के गर्भ में समा गई और चक्कर काटती हुई आइजमीयर (हिम सागर) पहुंची. यह स्थान १०,३६८ फीट की ऊंचाई पर पर्वत की विशाल ठोस चट्टानों को काट कर बनाया गया है और स्विस इंजीनियरिंग कौशल का एक उत्तम नमूना है आइजमीयर जैसा नाम है, वैसा ही उसे पाया गरम कपड़े पहन रखे थे, फिर भी ठंड महसूस होने लगी. यहां से हमारी यात्रा का अंतिम चरण आरंभ हुआ.

आखिर ट्रेन युंगफ्राऊ पहुंच ही गई. यह संसार का सब से ऊंचा रेलवे स्टेशन है. मैं ने यहीं पर यूरोप के सब से ऊंचे होटल 'बर्ग हाऊस' में नाश्ता किया इस होटल में यात्रियों के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं. स्की से हाथपैर टूटने पर प्राथमिक चिकित्सा की भी व्यवस्था है रहने के लिए गरम और आरामदेह जगह तथा भोजन की सुव्यवस्था देख कर मन खुश हो गया.

लिफ्ट के सहारे युंगफ्राऊ की ऊंची चोटी पर जा पहुंचा इस चोटी पर एक विशालकाय दूरबीन लगी हुई है जिस से समीपवर्ती देश देखे जा सकते हैं. यह सब देख कर चारों ओर बचपन में पढ़ी परियों की कहानी जैसी विचित्रता नजर आई. यहां बर्फ का एक मकान है जिस में बर्फ की ही मेजें, कुरसियां और मोटर मौजूद हैं. पैंसठ वर्षों से यह मकान और इस की सभी वस्तुएं आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई हैं सर्दी की वजह से यहां बर्फ पिघल नहीं पाती.

युंगफ्राऊ १२,००० फीट ऊंचा है. यद्यपि इस की ऊंचाई हिमालय की चोटियों से कम है, फिर भी इस की अपनी एक विशेषता है और अपना एक आकर्षण है इस के पार्श्व में पहुंचना उतना कठिन नहीं. विज्ञान ने सब कुछ सुलभ बना दिया है. यहां प्रकृति की मुक्त छवि के विभिन्न रूपरंगों का आनंद जिस सरलता से लिया जा सकता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है.

यह देख कर तो दांतों तले उंगली दबानी पड़ी कि इतनी खतरनाक ऊंचाई पर भी लोग स्की करते हैं. जरा भी चूके कि जान गई. हालैंडवासी जिस प्रकार समुद्र के चप्पेचप्पे की पूरी जानकारी रखते हैं, उसी प्रकार स्विस लोगों को अपने पर्वतों की जानकारी है. उन का साहस और उत्साह असीम है. यहां तक पहुंचना कभी असंभव रहा होगा, लेकिन स्विस इंजीनियरिंग कौशल ने युंगफ्राऊ का प्राकृतिक सौंदर्य संसार के लिए सुलभ बना दिया है.

मैं जिस समय युंगफ्राऊ के शिखर पर पहुंचा, वहां दोपहर थी. सूर्य के प्रकाश में बर्फ चांदी की तरह चमक रही थी. चारों ओर कुहासा था उस शांत वातावरण में मानस पटल पर स्विट्जरलैंड की सारी यात्रा के चित्र एकएक कर उभर आए. सोचा, 'आखिर यह भी मर्त्यलोक है, यहां भी कभी अभाव और

आवश्यकता रही होगी. लेकिन अब यहा गरीबी का दानव क्यो नहीं दिखलाई पडता?' मुझे लगा, मेरा स्विस गाइड मुझे देख कर मुसकरा रहा है मुझे यहीं अनुभव हुआ कि श्रम का सही अर्थ समझने पर मनुष्य देवत्व पा सकता है

गाइड ने पूछा, "सर्दी अधिक तो नहीं लग रही है? नीचे उतरेंगे?"

"स्वर्ग से नीचे उतरने को क्यों कहते है!" मैं ने उत्तर दिया

हम दोनो हस पडे

स्विट्जरलैंड जैसे एक छोटे से देश के जिन कुशल इजीनियरो को विश्व की सब से ऊची रेलवे लाइन बिछाने का यश प्राप्त है, उन्हीं को यूरोप के हिमालय आल्प्स को काट कर भूतल की सब से लबी सुरग बनाने का भी श्रेय है

वैसे तो उन्होने १७७८ में ही मोटकेनिस नामक आठ मील लबी सुरग बना ली थी लेकिन सिपलन सुरग का तो अपना अलग ही महत्त्व है इस सुरग के बनाने का काम १८९८ में शुरू हुआ था और १९०५ में पूरा हुआ

इस कठिन कार्य को १,००० मजदूरों ने रातदिन तीन पाली में काम कर के साढेछ वर्षों में पूरा किया सवाबारह मील लबी इस सुरग को कहींकहीं तो सात हजार फीट ऊचे पहाडों का बोझ सहना पडता है. अधिक चौडी सुरग बनाने से ऊपर के पहाडो के धसकने का भय था, इसलिए ५६ फीट की दूरी पर दो समानातर सुरगें बनाई गई है और हर छ सौ फीट के बाद दोनो के बीच आनेजाने का मार्ग बना दिया गया है इस तरकीब से काम भी शीघ्र समाप्त हो गया और सुरगो के भीतर हवा के प्रवेश में भी आसानी हो गई

ढाई मील तक सुरग बन जाने पर एकदम ठडे बर्फीले जल की धारा प्रबल वेग से निकल आई, जिस का बहाव प्रति मिनट साढ़ेदस हजार गैलन और दबाव प्रति इच छःसौ पौंड था इस आकस्मिक विपत्ति से वे घबराए तो, लेकिन उन्होने साहस नहीं छोडा काम चलता रहा प्रकृति का कमाल देखिए, कुछ ही आगे बढ़ने पर गरम पानी की धारा निकल आई दोनो के मिलने से तापमान सतुलित हो गया सिपलन सुरग बन कर तैयार हो गई इस सुरग को देखने आज भी दुनिया के हर कोने से लाखों पर्यटक आते है और मनुष्य की इस रचना को देख कर विस्मित हो उठते है

विश्व विजयी वीर नेपालियन को आल्प्स के ऊपर अपनी सेना ले जाने में हजारों सैनिको तथा अपरिमित युद्ध सामग्री से हाथ धोना पड़ा था उसी आल्प्स पर अब मुट्ठी भर इजीनियरो ने काबू पा लिया है अब इस समय लोग रात में जेनेवा से चल कर ट्रेन में आराम से सोते हुए सुबह इटली के मिलान नगर पहुच जाते है.

आल्प्स की गोद में

पश्चिमी योरुपियन संस्कृतियों का मेल?

मैं दो तीन बार स्विट्ज़रलैंड हो आया हू—पहले १९५० और फिर १९६२ और १९६४ में. पहली बार मुझे दो महीने रहने का अवसर मिला था. सारा देश घूमने के लिए पर्याप्त अवकाश था. प्राकृतिक सौंदर्य देखने के साथसाथ मुझे स्विस जनता के निकट संपर्क में आने और उस का जीवन देखनेसमझने का भी मौका मिला. प्राकृतिक छवि तो आकर्षक थी ही परंतु मैं वहा के सामाजिक जीवन से कहीं अधिक प्रभावित हुआ. कर्मठ जीवन उस देश की बहुमुखी उन्नति का एकमात्र कारण है. कश्मीर में केवल प्रकृति मुसकराती है पर स्विट्ज़रलैंड में प्रकृति और स्विस जनता दोनो ही मुसकराते मिलते हैं.

आल्प्स की गोद में बसा हुआ वह एक छोटा सा देश है. उस की आबादी केवल ५६ लाख है, लेकिन वहा इतनी सी आबादी के लिए भी न पर्याप्त अन्न पैदा हो पाता है और न उस के पास खनिज पदार्थों का कोई भंडार ही है जिस से वहा की जनता अपने लिए खाद्य सामग्री तथा जीवन के अन्य आवश्यक साधन जुटा सके

वहा परिवार नियोजन द्वारा जनसख्या की वृद्धि पर नियत्रण रखा जाता है इसी का फल है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान ससार के दूसरे देशों की जनसख्या में साठसत्तर प्रति शत तक वृद्धि हो गई है पर स्विटजरलैंड की जनसख्या उस अनुपात में नहीं बढ पाई.

खाद्य सामग्री तथा जीवन के दूसरे आवश्यक साधन जुटाने के लिए स्विट्ज़रलैंड के निवासियों ने निर्यात का मार्ग अपनाया है. उन्होंने अपने सभी शिल्पोद्योगों का यही एक उद्देश्य बना रखा है. वे विदेशों से कच्चा माल, जैसे लोहा, कोयला तथा अन्य आवश्यक खनिज पदार्थ मगा कर अपने यहा तैयार किया हुआ माल, मशीनें, घडिया, दवाएं, बिजली का सामान आदि विदेशों को भेजते हैं. शिल्पोद्योगों की इस नीति के कारण स्विट्ज़रलैंड को विदेशों से काफी धन मिल जाता है. इस धन का कुछ भाग खाद्य सामग्री जुटाने में, कुछ कच्चे माल के आयात में और शेष राष्ट्र की उन्नति के लिए व्यय किया जाता है.

स्विस सामाजिक जीवन की रीढ शिल्पोद्योग ही है. इसी लिए वहा की जनसख्या का ४२ प्रति शत भाग किसी न किसी रूप में शिल्प से सबधित है. हर व्यक्ति की कार्यकुशलता तथा उस की क्षमता का वहा ध्यान रखा जाता है स्विसों को सदा इस बात की चिंता बनी रहती है कि उन की वस्तुए दूसरे देशों की

वस्तुओं के मुकाबले ऊंची किस्म की और टिकाऊ सिद्ध हो यही कारण है कि ससार भर में स्विट्जरलैंड में बने डीजल और मरीन के बडेबडे इजनों से ले कर छोटीछोटी घडियों तक की माग सब से अधिक रहती है. अमरीका, फ्रास और जर्मनी जैसे औद्योगिक राष्ट्रों के बीच भी स्विट्जरलैंड का अपना एक विशिष्ट तथा गौरवपूर्ण स्थान है

इस का एक दूसरा कारण यह है कि उन्होंने अपने उद्योगधधो को अन्य देशो की भाति पूरी तरह मशीनों के हवाले नहीं किया है इसी लिए उन की बारीकी और उन के टिकाऊपन का मुकाबला करना कठिन होता है यहा कुटीर, शिल्प और बृहद् उद्योग में बडा सुदर समन्वय हुआ है उदाहरण के लिए, एक घडी में १२६ से २०० तक पुरजे लगते हैं और सामान्यत हम समझते है कि इन के लिए वहा बडेबडे कारखाने खडे होगे लेकिन मैं ने ज्यूरा अचल में हजारों कारीगरों को अपनेअपने घरो में ही इन पुरजों को तैयार करते देखा है हर कारीगर घडी का एक न एक पुरजा तैयार करने में सिद्धहस्त होता है इसी लिए अमरीका और ब्रिटेन की घडिया लाख कोशिश के बावजूद स्विट्जरलैंड की ओमेगा और रोलेक्स के आगे ठहर नहीं पातीं

शिल्पोद्योग की यह नीति इतनी सफल हुई है कि आज स्विट्जरलैंड की आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ हो गई है. पिछले वर्षों के दौरान बडेबडे राष्ट्रों के सिक्कों की कीमतों में काफी उतारचढाव आए, लेकिन स्विस सिक्के की कीमत स्थिर ही रही इतना ही नहीं, स्विस सरकार को अपनी अर्थ व्यवस्था की दृढता पर इतना भरोसा है कि वहा आप बैंकों में किसी भी देश की मुद्रा बदल सकते हैं उन को इस बात का भय नहीं कि उन की मुद्रा बाहर चली जाएगी.

द्वितीय महायुद्ध के फलस्वरूप सन १९५० में सारा यूरोप महगाई के बोझ से दिनोदिन दबता जा रहा था, लेकिन स्विट्जरलैंड में महगाई अपना पैर ज्यादा नहीं पसार पाई उन दिनों वहा अधिक आवश्यक वस्तुओं के दाम भी सामान्य थे—दूध आठ आने सेर था, दही बारह आने सेर, आटा एक रुपए सेर और सेब तीन आने का एक था

चौदह वर्ष बाद यानी सन १९६४ में जब मैं तीसरी बार वहा गया तो मूल्यों में पचास प्रति शत वृद्धि तो अवश्य हो गई थी लेकिन औसत आय के हिसाब से वे मूल्य भारत के मुकाबले बहुत कम थे

वहा मजदूरी के काम की इतनी अधिक गुजाइश है कि पडोस के देशो से भी लोग आ कर मजे में जीविकोपार्जन करते हैं इटली और ग्रीस के लोग काफी सख्या में आते हैं कहींकहीं तो भारतीय डाक्टर भी बसे हुए ह उन की प्रैक्टिस भी अच्छी चलती ह

एक स्विस परिवार में आम तौर से चार व्यक्ति होते ह प्रति व्यक्ति हजार-बारह सौ रुपए मासिक आय के हिसाब से पूरे परिवार की औसत आय तीनचार हजार रुपए तक बैठती ह हमारे देश जैसी आर्थिक असमानता भी वहां नहीं दिखाई देती है कि एक ओर तो असख्य परिवारों को एक वक्त खाना भी मुअस्सर नहीं और दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं जिन की मासिक आय कई लाख रुपए तक पहुचती है सपन्न से सपन्न स्विस परिवार की मासिक

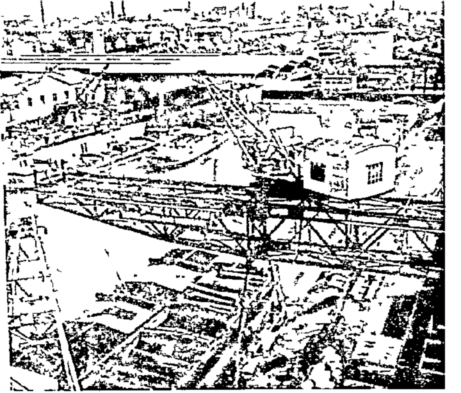

स्विट्जरलैंड का प्रमुख व्यापारिक केंद्र बेजल

आय, आय कर देने के बाद, पचीस तीस हजार रुपए से अधिक नहीं बैठती. यही वजह है कि अधिक असमानता न होने के कारण जनजीवन में विषमता नहीं दिखाई पड़ती.

उन का आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण भी इतना स्पष्ट और स्वस्थ है कि आज वे साम्यवाद को खुली चुनौती दे रहे हैं उन का मत है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति के श्रम का जबरन राष्ट्रीयकरण कर के उसे मनुष्य से मशीन का पुरजा बना दिया जाए स्विट्जरलैंड के सारे उद्योगधंधे गैर सरकारी क्षेत्र में हैं. केवल डाकतार, टेलीफोन और रेलवे सरकारी क्षेत्र में हैं

उन्होंने इसी तरह अपनी राजनीतिक समस्या भी हल कर ली है. सारा देश २२ छोटेछोटे कैंटनों (स्वतंत्र राज्य सरकारों) का एक संघ है. प्रत्येक कैंटन स्वतंत्र है. उस के अपने अलग नियम और कानून बने हुए हैं. ये कैंटन कभी भी एकदूसरे के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते. यहां तक कि केंद्र भी इन के मामलों में दखल नहीं देता.

स्विट्जरलैंड की सीमा जर्मनी, फ्रांस और इटली से मिली हुई है इन देशों के लोग सदियों पहले यहां आ कर बस गए थे. इसलिए यहां आज भी इन तीनों देशों की भाषाएं बोली जाती हैं इन तीनों राष्ट्रों में अनेक बार भयानक युद्ध हो चुके हैं, रक्तपात हो चुका है पर स्विस राष्ट्रीयता के संगम पर जर्मन, फ्रेंच और

इतात्यिन सास्कृतिक धाराए अपना वैमनस्य भुलाकर त्रिवेणी बन गई है

उत्तरपूव में जर्मनभाषी, पश्चिम में फ्रेंचभाषी और दक्षिण में इतात्यिनभाषी स्विस नागरिकों के शरीर में जर्मन, फ्रेंच और इतालियन पूर्वजों का रक्त भले ही बहता हो, अपने व्यक्तिगत जीवन में उन को अपनी भाषा और सस्कृति पर कितना भी नाज क्यों न हो, लेकिन राष्ट्र का सवाल उठने पर वे सभी एक हो जाते हैं वे केवल इतना जानते हैं कि वे स्विस हैं और स्विट्जरलैंड उन का अपना देश है काश, हम भारतीयों में भी यह भावना इतनी ही गहरी होती!

स्विट्जरलैंड में जहा भी जाइए, सभी जगह कर्त्तव्य और नैतिकता की भावना दिखाई पडती है लोग शातिप्रिय हैं 'जियो और जीने दो,' के सिद्धात का प्रभाव उन के जीवन और उन की विचारधारा में स्पष्ट झलकता है चोरी और उचक्केपन का कहीं नाम नहीं है पेरिस और काहिरा की तरह वहा परदेसियो, बच्चों, बूढ़ो और स्त्रियों के ठगे जाने का भय भी नहीं है पुलिस का काम शाति बनाए रखना और लोगों की सहायता करना है विदेशियो के निरतर आवागमन के कारण उन की सहायता के लिए पुलिस विभाग का रहना जरूरी है

मैं ने इस का प्रत्यक्ष अनुभव भी किया है एक बार मेरा पासपोर्ट खो गया था चित्त उदास और परेशान था क्योंकि उस के बिना विदेशो में बडी कठिनाइया उठानी पडती हैं पासपोर्ट के साथ ही कुछ रुपए और कुछ जरूरी कागजात भी थे चिता में था, लेकिन दूसरे दिन सुबह की डाक से पासपोर्ट आ पहुचा सारे कागजात और रुपए ज्यों के त्यो थे दूसरा कोई देश होता तो कागजात और पासपोर्ट भले ही मिल जाते पर रुपए शायद ही मिलते दरअसल जिन सज्जन को वह पासपोर्ट मिला था, उन्होंने भारतीय नाम देख कर उसे एयर इडिया के जेनेवा कार्यालय को भेज दिया और वहा से मेरे पास भेज दिया गया

मैं एक बार जेनेवा के एक कैफे में खूटी पर फैल्ट हैट लटका कर टेबल पर चला गया था काफी पी कर पैसे चुकाने के बाद जब चलने लगा तो देखा हैट नदारद आश्चर्य तो हुआ, पर चुपचाप अपने होटल लौट आया दूसरे दिन जब फिर पहुचा तो देखा हैट उसी खूटी पर ज्यों का त्यों टगा था और साथ में एक पुर्जा था—'भूल के लिए खेद है'

स्विस लोगों में अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति भी नहीं दिखाई दी इस का भी मुझे प्रत्यक्ष अनुभव है मेरे छोटे भाई तपेदिक की चिकित्सा के लिए लेजां में रहते थे लेजा पहाडी पर बसा हुआ एक छोटा सा कस्बा है और अपनी खास जलवायु के कारण तपेदिक की चिकित्सा में एक केंद्र के रूप में भी प्रसिद्ध है वहाँ भाई की चिकित्सा के सिलसिले में मुझे विश्वविख्यात चिकित्सक और शल्यशास्त्री डाक्टर जेनेर से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ उन्होंने मेरे भाई का आपरेशन किया यद्यपि आपरेशन काफी बडा था, लेकिन पारिश्रमिक के रूप में उन्होंने केवल बारह सौ रुपए ही लिए वे आपरेशन के बाद भी १५ दिन तक प्रति दिन जा कर रोगी को देख आते थे उस की अलग से कोई फीस उन्होंने नहीं ली सहज ही मेरा ध्यान अपने गरीब देश के चिकित्सकों की बढ़ी हुई फीस की ओर चला गया

स्विट्जरलैंड सदा से शातिप्रिय और निरपेक्ष राष्ट्र रहा है उस के सीमावर्ती

कर्मठतापूर्ण जीवन यहा की उन्नति का एकमात्र रहस्य है

देश सदियो से आपस में लडतेझगडते और मारपीट करते रहे है, पर उस ने स्वय कभी किसी का पक्ष नहीं लिया जर्मनी, इटली और फ्रास जैसे शक्तिशाली राष्ट्र यदि चाहते तो वो महायुद्धो के दौरान कभी भी अपने इस छोटे से पडोसी को कुचल सकते थे, पर उन को भी इस की निरपेक्षता का लिहाज करना पडा उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र की आवश्यकता महसूस की जहा बैठ कर वे समझौते की बातचीत कर सकें ऐसी स्थितियो में स्विट्जरलैंड ने सदेशवाहक का काम कर के विपक्षियो को एकदूसरे के निकट आने का अवसर दिया इस के अतिरिक्त, जब युद्ध से जर्जर यूरोप के नागरिक अन्नवस्त्र के अभाव में त्राहित्राहि करने लगे, तब इस छोटे से राष्ट्र ने उन को अन्नवस्त्र दिया और असहाय तथा अनाथ बच्चों का पालन-पोषण भी किया

इस छोटे से राष्ट्र ने सेना का सगठन अपनी शांतिप्रिय नीति के अनुकूल ही किया है स्विसवासी न तो किसी दूसरे देश पर अधिकार करने की इच्छा रखते हैं और न ही किसी दूसरे राष्ट्र का अधिकार अपनी धरती पर सहन करने को तैयार है उन का समूचा सैनिक सगठन सुरक्षा की दृष्टि से ही किया गया है

१९ वर्ष से ऊपर के प्रत्येक स्विस नागरिक के लिए चार महीने की सैनिक शिक्षा अनिवार्य है इस के अतिरिक्त उन को अभ्यास के लिए प्रति वर्ष एक निश्चित अवधि तक सैनिक दस्तो में रहना पडता है इस प्रकार प्रत्येक नागरिक एक समर्थ सैनिक भी होता है आवश्यकता पडने पर स्विस सेना बात की बात

में आधुनिकतम अस्त्रों से लैस हो कर मातृभूमि की रक्षा के लिए डट सकती है, लेकिन स्विस सरकार एक विशाल सेना रखने के व्यय भार से हमेशा ही मुक्त रहती है राष्ट्र का धन सेना और अस्त्रशस्त्रों पर खर्च न कर के अन्य उपयोगी तथा उत्पादन कार्यों में लगाया जाता है

स्विस लोगों का घरेलू जीवन भी यूरोप के अन्य देशों से थोडा भिन्न है उन में फ्रांस के लोगों जैसी स्वच्छंदता नहीं उन की बातचीत, व्यवहार और काम के तरीकों में एक संयमित गति रहती है जीवन में स्वतंत्रता है, पर पेरिस और वेनिस जैसी नहीं स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि वह नैतिकता की सीमा पार कर जाए स्विट्जरलैंड में जहां भी किसी स्त्री या पुरुष ने सीमारेखा को पार किया, वहीं वह लोगों की निगाह से गिर जाता है वहां समाज में स्त्रियों का दरजा बहुत कुछ भारत जैसा है हां, हमारे यहां स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त है और वे राजनीति में भी दखल रखती हैं लेकिन स्विस स्त्रियां इन दोनों अधिकारों से वंचित हैं

स्विस लोगों को देशविदेश के पर्यटकों से करोडों रुपए की आमदनी होती है संसार के सभी देशों से लाखों की संख्या में पर्यटक यहां आ कर प्रकृति की अनुपम छटा देख कर व्यस्त और थके हुए जीवन से कुछ समय के लिए छुटकारा पाते हैं इन पर्यटकों का आदरसत्कार भी एक बडा अच्छा व्यवसाय हो गया है, जिस में जनसंख्या का काफी बडा भाग लगा हुआ है स्विस लोगों ने अपने अन्य धंधों की भांति इसे भी एक सुव्यवस्थित रूप दे दिया है

सभी रमणीय स्थानों में गाइड और होटल मौजूद हैं उन के कारण पर्यटकों को यह नहीं लगता कि वे किसी अपरिचित और अनजान देश में आ गए हैं सभी जगह स्वाभाविक मुसकान के साथ उन का स्वागत किया जाता है वे अपनी जेब के मुताबिक होटल चुन सकते हैं १० से ७० रुपए प्रति दिन तक के होटल मिलते हैं इस किराए में रहने के साथसाथ सुबह का नाश्ता भी शामिल रहता है

सरकार भी पर्यटकों के लिए हर प्रकार की सुविधाएं जुटाती है प्रत्येक स्टेशन पर स्टैंड बूफे हैं, जहां सस्तेदामों में अच्छा भोजन मिल जाता है रेलवे की ओर से भी सस्ती दर पर पंद्रह दिन तक इच्छानुसार यात्रा के टिकट मिलते हैं, जिन्हें ले कर आप कहीं भी जा सकते हैं

यों तो स्विट्जरलैंड के सभी शहरों और कसबों को स्विस जनता ने आकर्षक ढंग से सजायासंवारा है, उन की सफाई का पूरा खयाल रखा है, लेकिन मुझे जनेवा, बर्न, बेजल, ज्यूरिख और ल्यूजन विशेष सुंदर लगे

जनेवा अपने ही नाम की झील के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ है शहर की आबादी तो डेढ़ लाख ही है, पर इस का महत्त्व अंतरराष्ट्रीय है प्रथम महायुद्ध के बाद 'लीग आफ नेशंस' का प्रधान कार्यालय यहीं स्थित था आज भी संसार की बडीबडी राजनीतिक समस्याएं हल करने के लिए विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधि और राजदूत यहां अधिवेशनों और सम्मेलनों में एक साथ बैठ कर विचार करते हैं ऐसे अधिवेशनों से संसार में स्विट्जरलैंड का यश बढ़ता है और उसे अच्छाखासा आर्थिक लाभ भी होता है

बर्न के भारतीय दूतावास में मैं ने अपने देश के प्रमुख नेताओं के चित्र देखे. यूरोप में काफी लंबे अरसे के बाद मुझे यहीं के वातावरण में अपने देश की सहज आत्मीयता मिली. दूतावास यहा से एक बुलेटिन के रूप में भारतीय समाचार प्रकाशित करता है. स्विट्जरलैंड की राजधानी होने के अलावा बर्न एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर भी है.

बेजल उत्तरपश्चिमी कोने पर बसा हुआ है और व्यापार की दृष्टि से राइन नदी का प्रमुख बंदरगाह और व्यापारिक केंद्र है. अंतरराष्ट्रीय लेनदेन के कारोबार में यह अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है. स्विट्जरलैंड के रासायनिक उत्पादनों के मामले में यह सब से बढाचढा है. विश्व प्रसिद्ध औषधि निर्माता सीबा कंपनी का कारखाना यहीं है. बेजल में ही ससार की प्रसिद्ध आयात-निर्यात कपनियों के कार्यालय हैं. यहा प्रति वर्ष अप्रैल में एक औद्योगिक प्रदर्शनी आयोजित की जाती है जिस में ससार के विभिन्न देशों से लाखो ग्राहक पहुचते हैं.

ज्यूरिख यहा का सब से बडा शहर है इस की आबादी लगभग चार लाख है. इस की गणना विश्व के सब से सुंदर और बडे शहरों में की जाती है. यह ससार भर में घड़ियों और मशीनों के निर्माण का एक प्रमुख केंद्र माना जाता है. सभी कलकारखाने प्रायः बिजली से चलाए जाते हैं. इसी लिए ज्यूरिख के आसपास कलकारखानों की भरमार होते हुए भी गर्द और धुएं का नाम नहीं है. उन की बनावट भी स्कूलो जैसी है.

इस शहर की एक विशेषता यह है कि अन्य शहरों की भांति यहा लोग रात में काफी देर तक क्लबों और रेस्टोरेंटों में नहीं रहते. सारा वातावरण रात के १२ बजे तक शात हो जाता है.

इस के आसपास प्राकृतिक दृश्यों का भी काफी आकर्षण है. पहाडियां, झीलें और वन बरबस ही आकर्षित कर लेते हैं. ज्यूरिख यों भी झील के किनारे बसा हुआ है और फिर शहर के बीचोबीच लिम्मत नदी की धारा इस की छटा को और भी कई गुनी बढ़ा देती है. विश्वप्रसिद्ध होटल दोल देयर यहीं पर है. इस होटल में प्रायः अमरीकन और भारतीय ही ठहरते हैं.

छोटे कस्बों में मौंत्रो, भेंभे, लूर्जा, न्यू शेटल आदि बड़े ही सुंदर कस्बे हैं. लूर्जा और न्यू शेटल विद्या के केंद्र भी हैं. यहा विदेशों से हजारों छात्र पढ़नेलिखने के लिए आते हैं.

हालैंड

जहां असंभव भी संभव हो गया

राम ने समुद्र को मानव के पराक्रम और पौरुष की एक सीमा के रूप में स्वीकार नहीं किया था. रामेश्वरम् का पुल इस का साक्षी है. यह बात त्रेता युग की है और एक किंवदंती मालूम पड़ती है. लेकिन चौंकिए नहीं! इस संसार में एक ऐसा देश भी मौजूद है जिस ने महासागर को अपने पराक्रम की सीमा मानने पर विवश कर दिया है. उस ने महासागर को बाधा ही नहीं, उसे मीलों पीछे धकेल दिया है, उस से अपने उपयोग के लिए लाखों एकड़ भूमि छीन ली है और अपनी लगातार मेहनत के बल पर उसे उपजाऊ बना लिया है. इसी लिए इस संबंध में एक कहावत प्रसिद्ध है : विश्व को परमात्मा ने बनाया लेकिन हालैंड को डचों ने.

हालैंड समुद्र से नीचा है, इसलिए उसे नीदरलैंड यानी निचली भूमि वाला प्रदेश भी कहा जाता है. हालैंडवासी डच कहलाते हैं.

महाभारत में एक कथा है कि किसी नगर के समीप एक दानव रहता था. उस की भूख मिटाने के लिए नगर के परिवारों को बारीबारी से प्रति दिन एक व्यक्ति भेजना पड़ता था. हालैंडवासियों को भी अपने पड़ोसी दानव समुद्र से जूझने के लिए लगातार ८०० वर्षों तक अपने हर परिवार से सबल स्त्रीपुरुषों को हाथों में बेलचे थमा कर निश्चित समय के लिए मौत और जिंदगी की लड़ाई पर बारीबारी से भेजना पड़ता था. अंत में वे विजयी हुए

लेकिन हमेशा से पराक्रमी समुद्र भला इतनी जल्दी अपनी हार क्यों मानता! एक बार तो वह क्रोध से कांपता हुआ, प्रलयकारी गर्जनतर्जन करता हुआ बांध तोड़ कर आगे बढ़ गया सारा का सारा हालैंड जलमग्न हो गया था. चारों तरफ विनाश ही विनाश दिखाई देने लगा था. धनजन की इतनी क्षति हुई कि अनुमान लगाना संभव नहीं.

यह घटना आज से लगभग ५०० वर्ष पहले की है. तब न आज जैसे साधन थे और न सुविधाएं उपलब्ध थीं. केवल कुछ पनचक्कियों द्वारा अथाह जलराशि को उलीचना तो टिटहरी का समुद्र सोखने का प्रयास जैसा ही था. उस आपत्तिकाल में पड़ोसी राष्ट्रों ने अन्नवस्त्र आदि से हालैंड की सहायता तो की पर ताने भी कम नहीं दिए, 'चले थे कुदरत को बदलने! अरे, भला कभी समुद्र को भी बांधा जा सकता है!'

हालैंडवासियों के क्षोभ का अंत नहीं था. लेकिन संकट के समय वे हिम्मत न

हारे और अपने पुरुषार्थ द्वारा इन तीखे व्यग्य वचनो का करारा जवाब देने को कटिबद्ध हो गए सारे देश में समुद्र के खिलाफ युद्ध पर जुट जाने का ढिंढोरा पिटवा दिया गया बच्चे बच्चे, नौजवान, बूढ़े और युवतिया सभी ने मिल कर दृढ प्रतिज्ञा की— कार्यं वा साधयामि, शरीरं वा पातयामी अर्थात या तो समुद्र बाध कर रहेंगे या मौत का आलिंगन करेंगे!

सदियो तक हालैडवासियो का एकमात्र लक्ष्य समुद्र पर विजय प्राप्त करना ही था दिनरात के अथक परिश्रम तथा अनेक बलिदानो के बाद एक दिन उन की मनोकामना पूरी भी हुई उन्होने अपनी खोई हुई जमीन को समुद्र से छीन कर एक बडा ही सुदृढ बाध (डाइक) का निर्माण किया, जिस का कुछ हिस्सा आज भी मौजूद है

इस अभूतपूर्व विजय ने हालैंडवासियो को ससार के दूसरे राष्ट्रो की नजरो में बहुत ऊचा उठा दिया और वे स्वय भी अपनेआप को पराक्रमी, सहनशील और धैर्यवान अनुभव करने लगे इन सैकडो वर्षो के युद्ध में वे समुद्र के स्वभाव को इतनी अच्छी तरह पहचान गए कि उन की नौकाए बिना रोकटोक विश्व के कोनेकोने की यात्रा करने लगीं उन की गणना प्रथम कोटि के नाविको में होने लगी

उस समय ब्रिटिश की नौशक्ति काफी बढीचढी थी भला डचो को इस क्षेत्र में बढते हुए वे कैसे देख सकते थे? एक दिन अकारण ही उन्होने इस गरीब थके हुए देश पर धावा बोल दिया. परतु जिस वीर जाति ने समुद्र के छक्के छुडा दिए थे वह मनुष्यो से कहा हार मानने वाली थी? उन्होने अतिम सास तक शत्रुओ का वीरता के साथ मुकाबला किया नतीजा यह हुआ कि सन १६७४ ई० में अगरेजो को सधि करने पर बाध्य होना पडा

अठारहवीं सदी के अत में नेपोलियन बोनापार्ट की आधी सारे यूरोप पर छा गई थी दूसरे देशो की तरह छोटे से हालैंड को भी उस के सामने घुटने टेक देने पडे थे, पर कुछ वर्षो बाद ही वह पुन स्वतत्र हो गया

स्वाधीनता की इस नवीन अवधि के १५० वर्ष में डचो ने अपने देश को हर तरह उन्नत बनाया बडेबडे जहाज बनाने के कारखाने खुल गए, बिजली के सामानो, मशीनो और रेडियो का तो यह प्रमुख निर्माता बन गया हेग में विश्व का उच्चतम न्यायालय स्थापित हुआ एमस्टर्डम दुनिया के बहुमूल्य हीरों के क्रयविक्रय का मुख्य केंद्र बना और रोटरडम लदन के बाद यूरोप का सब से बडा बदरगाह

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, डच कष्ट सहने के अभ्यासी होते हैं, पर वे बडे सैलानी, कलाप्रेमी, खानेपीने के शौकीन और फूलो के अनुरागी भी कम नहीं होते प्रत्येक घर में फूलो का एक छोटा सा बगीचा और कुछ हाथ की बनी तस्वीरें मिलेंगी, चाहे वे सुप्रसिद्ध चित्रकारों की हो अथवा उन की स्वय की बनाई हुई

वहा वर्ष में कई बार फूलो की प्रदर्शनिया होती हैं, जिन में अच्छे फूलों पर इनाम दिए जाते हैं इस तरह हालैंड को फूलो के व्यापार से भी बडी आमदनी हो जाती है प्रदर्शनी में आए हुए फूलो के पौधों में से किसीकिसी के तो बीस हजार रुपयों तक दाम लग जाते हैं

हालैंड और डेनमार्क में साइकिलों का प्रचलन है छुट्टी के दिन यदि हल्की सी धूप निकल आती है तो हजारों की सख्या में वे लोग बालबच्चो के साथ साइकिलो

गोदियो की कलापूर्ण निर्माण शैली का एक नमूना   हेग में सेवेनिगेम का बदरगाह

पर सवार हो कर दूर समुद्र तट या डाइक पर सैर के लिए चले जाते हैं   एक साइकिल पर पतिपत्नी और दो बच्चो का बैठना तो साधारण बात हैं   इस दृश्य का अदाज नई दिल्ली की उन सडको से लगाया जा सकता हैं जहा दफ्तरों की छुट्टी के समय सडक अनगिनत साइकिल सवारों से भर जाती हैं

हालैंड में गोपालन भी एक मुख्य धधा हैं   एकएक गाय से प्रति दिन मनमनभर दूध पाना तो साधारण बात हैं   वहा की गायें हमारे यहा की भैंसों से भी बडी होती हैं   दक्षिण व उत्तरी अमरीका वाले अच्छी नस्ल के बछडे पैदा करने के लिए यहां से एकएक साड पचासपचास हजार रुपयो तक मूल्य दे कर खरीदते हैं   अपने यहां पिलानी (राजस्थान) में भी हालैंड का साड हैं जिस से उत्पन्न गायो के ४५ पौंड तक दूध प्रति दिन होता हैं

यहां खेलकूद भी जीवन का एक प्रमुख अग हैं   वैसे तो सभी तरह के खेल होते हैं, परतु शीतकाल में जब नहरें जम जाती हैं, तब बर्फ पर स्की का खेल शुरू हो जाता हैं   इसी तरह गरमी में इन्हीं नहरों में नावो की दौड और तैरने की प्रतियोगिताए भी होती रहती हैं

हालैंड के सभी शहर समुद्र के किनारे पर बसे हुए हैं   इसलिए यहां समुद्र-स्नान और तैरना जीवन का आवश्यक अग हो गया हैं   हर जगह स्नान की उचित व्यवस्था हैं   अन्य यूरोपीय देशों की तरह यहां हजारो की सख्या में लोग समुद्र स्नान करते रहते हैं, परतु यहां वेनिस और मोंतेकार्लो की तरह स्त्रीपुरुषों को अर्द्ध-नग्नावस्था में नहीं देखा जा सकता   जनजीवन-सुखी प्रतीत होता हैं, क्योंकि वस्तुओं का मूल्य, अन्य यूरोपीय देशों की अपेक्षा कम हैं   खासकर दूध, दही, पनीर, मक्खन और फल बहुत ही सस्ते हैं

इस छोटे से देश में २५० सग्रहालय (म्यूजियम) हैं, जिन में से हेग, एमस्टर्डम और रोटरडम के सग्रहालय तो विश्वविख्यात हैं

यद्यपि इंगलैंड की तरह हालैंड भी एक साम्राज्यवादी देश है, पर दोनो के वर्तमान शासको के रहनसहन और शानशौकत में बहुत बड़ा अंतर है. ब्रिटेन की महारानी का निजी खर्च प्रति वर्ष लाखो रुपए होता है, जब कि हालैंड की महारानी जुलियाना बहुत ही साधारण ढंग से अपने पति और बच्चों के साथ हेग के एक देहाती अंचल में रहती है. उन की तीन लड़कियां पब्लिक स्कूल में आम बच्चो के साथ ही पढती हैं.

मैं सर्वप्रथम एंटसर्व से ट्रेन द्वारा रोटरडम गया. रास्ते में एक सीमा चौकी पर पासपोर्ट की जाच की गई. हमारे देश की चौकियो की तरह यहां मालअसबाब उलट-पलट और अव्यवस्थित नहीं किया गया और न वस्त्र खुलवा कर तलाशी ही ली गई. इस का कारण है कि इन देशो के आपसी संबंध अच्छे हैं और लोगों का नैतिक स्तर भी ऊंचा है. यहा पूर्वी देशो जैसा तस्कर व्यापार नहीं होता.

रोटरडम को आबादी करीब दस लाख है. द्वितीय महायुद्ध में जर्मनो ने बमबारी से कुछ दिनो में ही इस के दस हजार मकान और तेरह सौ कारखाने नष्ट कर दिए थे. इस से जो हानि हुई उस का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है. तेजी से रोटरडम का पुनर्निर्माण हुआ और थोड़े समय में ही वह पहले से अधिक सुदर और समृद्ध बन गया. यह डचो के परपरागत मेहनती होने का सबूत है.

समुद्र के किनारे, राइन तथा मांज नदियों के मुहाने पर स्थित होने के कारण, रोटरडम विश्व के सर्वोत्तम बंदरगाहो में गिना जाता है. उत्तरी जर्मनी और स्विट्जरलैंड के आयातनिर्यात के लिए यह एक बड़ा बंदरगाह है, और इसे भी उन देशो के विकास का लाभ मिल रहा है.

रोटरडम बंदरगाह के गोदामो में आठ करोड़ मन माल रखने की जगह है. प्रति दिन यहा तीस लाख मन माल चढाया और उतारा जाता है. इस काम के लिए ३५० छोटीबड़ी मशीनें लगी हुई हैं. बदरगाह के अनुरूप ही, यहा विशाल रेलवे-स्टेशन है, जहा केवल मालअसबाब उतारनेचढाने के लिए साइडिंग की लंबाई १२५ मील है.

दर्शनीय इमारतों में प्रथम स्थान यहां के नवनिर्मित वाणिज्यभवन का है, जिस के निर्माण में पांच करोड रुपए खर्च हुए हैं. उस में सब प्रकार के व्यावसायिक और औद्योगिक कार्यालय हैं. साथ में माल रखने के गोदाम भी हैं. इस से आपसी विनिमय में समय, शक्ति और व्यय तीनो की बचत हो जाती है. अगर भारत के कलकत्ता, बबई और मद्रास आदि बड़ेबड़े औद्योगिक केंद्रो में भी इसी तरह के वाणिज्यभवनों का निर्माण हो जाए, तो लोगो के श्रम की बड़ी बचत हो और कितनी ही अनावश्यक कठिनाइयां दूर हो जाए.

अन्य दर्शनीय स्थानो में, यहा नदी के नीचे बनाई हुई सुरंग की सड़क भी है. पहले इस नदी के ऊपर बने हुए पुल द्वारा आवागमन होता था, परंतु ज्योंज्यों रोटर-डम का महत्त्व बढ़ता गया, उन्हें इस सुरंग की अधिकाधिक आवश्यकता महसूस होती गई.

रोटरडम से ट्रेन द्वारा शाम को विश्वविख्यात नगर व हालैंड की राजधानी हेग पहुंचा. हेग न केवल हालैंड की राजधानी है, बल्कि यहां विश्व का उच्चतम न्यायालय भी है, जिस के अधिवेशन ससार के प्रसिद्ध पीस पैलेस (शाति भवन)

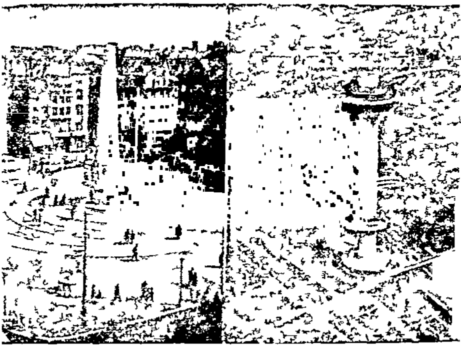

एमस्टर्डम नगर का हृदय स्थल ध्य न शनल डॅम राष्ट्रीय युद्ध स्मारक दाए
र टरडम नगर में स्थित विमान टावर ज पयटक क लिए आकषण का केंद्र है

म होते ह सर्वप्रथम इस भवन के निर्माण के लिए सन १९०० ई० म अमरीका के उदार मानवतावादी अरबपति एन्ड्रयू कारनेगी ने ६० लाख रुपए दिए थ उस के बाद अन्य देशों न भी इसे बनाने में काफी सहयोग दिया था सन १९१३ ई० में यह भव्य भवन बन कर तयार हो गया था इस म अंतरराष्ट्रीय न्यायालय क अलावा कानून पुस्तकों का भी विशाल संग्रह ह

सुंदरता व भव्यता की दृष्टि स हेग मुझ यूरोप क अन्य सभी नगरों स अधिक आकर्षक और मनोरम प्रतीत हुआ डच को अपने इस नगर पर नाज ह वे उसे यूरोप का सर्वस सुंदर नगर कहते ह यहां विश्व की विविध समस्याओं क समाधान क लिए वर्ष म पचासों सम्मेलन होत रहत ह जिन म सम्मिलित होन क लिए संसार क विभिन्न भागों स हजारों की संख्या म बड़ेबड़े राजनीतिज्ञ और विधिवेत्ता आत ह इस स नगर की राजनीतिक प्रतिष्ठा क साथसाथ विदेशी मुद्रा भी कम नहीं प्राप्त होती।

हेग क सेवेनिगम समुद्रतट की स्मृति मेरे मन म अभी भी ताजा है यह यूरोप क प्रसिद्ध समुद्री तटों म स एक ह मीलों तक पक्की सड़क ह एक तरफ बड़ेबड़े होटलों की कतारें ह दूसरी तरफ समुद्री रेत पर नहान वालों क लिए काठ क छोटेछोटे केबिन बन हुए ह

काफी घूमने व देखने क बाद थकावट महसूस हुई और भूख भी जोरों से लग आई इसलिए 'निकट म विक्टोरिया' नामक होटल म पहुंचा इस का विशाल और सुसज्जित डाइनिंग हाल देख कर म दंग रह गया फर्श पर कीमती

कालीन बिछे हुए थे और ऊपर वेनिस के बिल्लोरी काच के बडेबडे फानूस लटक रहे थे इस होटल की गणना यूरोप के सर्वश्रेष्ठ होटलों में है कहते हैं कि महारानी विक्टोरिया भी कभीकभी राजकाज से अवकाश निकाल कर यहा आ कर ठहरती थीं.

परिचारिका को मैं ने दूध, मक्खन और रोटी लाने के लिए कहा यूरोप के इन उत्तरी देशों में चाय और काफी की अपेक्षा दूध बहुत ही सस्ता है यहां एक बात विशेष उल्लेखनीय है कि इन देशों में दूध के लिए केवल गाय का ही उपयोग होता है, भैंसों या बकरियों का नहीं

मेरी मेज पर पहली बार जितनी खाद्यसामग्री आई, उस से क्षुधा शांत नहीं हुई तो परिचारिका को बुला कर एक बार और लाने को कहा यूरोप के इन बडेबडे होटलों में जो परिचारिकाएं रखी जाती हैं, वे बहुत ही स्वस्थ और सुन्दर युवतियां होती हैं स्त्रियों में मातृभावना प्रायः सर्वत्र समान रूप से मिलती है, चाहे वे किसी भी आयु अथवा देश की क्यों न हों

परिचारिका ने मुझे एक ग्राहक मात्र ही न समझ कर विदेशी अतिथि के रूप में देखा और दूसरी बार बहुत सा मक्खन, रोटी और दूध ले आई खा-पी कर तृप्त होने के बाद बिल आया तो केवल सवा दो रुपए का इतनी ही सामग्री का बम्बई कलकत्ता या नई दिल्ली के होटलों में पांचछह रुपयों से कम नहीं लगता हालैंड के इस होटल की खाद्यसामग्री से अपने यहां के होटलों की कोई तुलना ही नहीं हो सकती

... हेग और सेवेनिनगेम के बीच में छोटे बच्चों के लिए मदुरोडेम नाम का एक बौना आदर्श शहर बसा हुआ है इस का क्षेत्रफल तो कुल साढे चार एकड है परंतु इतनी सी जगह में ट्रेन, बस, एयरपोर्ट, होटल, मकान, कारखाने, बाजार, रेस्तरां, टाउनहाल आदि सभी कुछ है इस के निर्माण का भी अपना एक अनोखा इतिहास है हालैंड के एक धनी व्यापारी का किशोर पुत्र युद्धकाल में जर्मनों की कैद में भीषण यातनाओं से मार डाला गया था उसी की यादगार में बच्चों का यह शहर बसाया गया है इस आधुनिक लिलिपुटियन शहर (बौने नगर) को देखने के लिए लाखों की संख्या में यात्री आते हैं जिन से साधारण शुल्क लिया जाता है और वह सारी निधि टी बी सेनेटोरियम को दे दी जाती है इस प्रकार लोगों के मनोरंजन के साथ एक उपयोगी संस्था के संचालन में भी बडी सहायता मिल जाती है

ऊपर हम उल्लेख कर आए हैं कि डच फूलों के बडे शौकीन होते हैं उन्होंने सुंदर तरीके से इस शौक को देश की आमदनी का भी एक जरिया बना दिया है कोकनहाफ शहर में सिर्फ फूलों के ही बाग हैं जहां सैकडा तरह से प्रयोग और परीक्षण उन पर होते रहते हैं

विभिन्न नस्लों के पशुओं को मिश्रित जातियां जैसे तैयार की जाती हैं वैसे ही भिन्नभिन्न जाति के पौधों की कलमों के चश्मे चढा कर नाना प्रकार के रंगों और आकृतियों के फूल उपजाए जाते हैं, जिन्हें देखने के लिए विदेशों से लाखों की संख्या में यात्री आतेजाते रहते हैं कोकनहाफ के समीप ही आल्समीर नामक शहर में इन फूलों का नीलाम प्रति सप्ताह होता है इस शहर का अस्तित्व ही यदि फूलों के इस व्यापार पर आधारित कहा जाए, तो कोई अनुचित नहीं होगा फूलों के

निर्यात से हालैंड को बीस करोड रुपए की वार्षिक आमदनी हो जाती है

एमस्टर्डम हालैंड की व्यापारिक राजधानी तथा सब से बडा शहर है ५०० वर्ष पहले जहा दलदली जमीन और छिछले पानी का जमाव था, वहा डचों ने इतना सुदर और विशाल नगर बना लिया है कि इस को यूरोप का दूसरा वेनिस कहा जाता है स्वच्छता, मकानो की सुदरता और सडको की चौडाई में तो यह वेनिस से भी बढ़ाचढ़ा है वेनिस को यदि हम भारत का वाराणसी कहें, तो इसे सहज ही बगलौर की उपमा दी जा सकती है

नौ बजे ही जल्पान से निवृत्त हो कर शहर देखने निकला होटल के सामने की नहर में एक मोटर बोट खडा देखा, जिस में लोग सवार हो रहे थे मैं ने समझा कि यह भी कोई किराए का बोट है, अत मैं भी उस में जा सवार हुआ कोई पद्रह मिनट बाद करीब ५० यात्रियों को ले कर बोट कई नहरो से गुजरता हुआ खुले समुद्र में पहुच गया मैं ने साथ के यात्रियों से पूछने की चेष्टा भी की कि हम जा कहा रहे हैं, परतु अगरेजी यूरोप के खासखास होटलो व बडीबडी दुकानों के अलावा और कहीं काम नहीं देती फ्रेंच मैं जानता नहीं था लाचार हो कर चुपचाप बैठा रहा

कुछ देर बाद मोटर बोट अथाह जलराशि के बीच एक टापू के पास जा कर रुका वहा एक जहाज बनाने का बडा कारखाना था सब यात्री बोट से उतर पडे, केवल मैं ही रह गया समझ में नहीं आया कि वास्तविकता क्या है? सकेत की भाषा में बोट चालको को समझाया कि मुझे तो वापस शहर जाना है, परतु सफलता नहीं मिली सौभाग्य से, वहीं पर कारखाने में अगरेजी जानने वाला एक कर्मचारी मिल गया उस ने बताया कि यह बोट तो इस जहाजी कारखाने के कर्मचारियों को शहर से लाने और ले जाने के लिए है, यह इन्हें ले कर शाम को ही वापस लौटेगा

अब मेरी समझ में बात आई कि मुझे भी कारखाने में जाने वाला समझ कर न तो किराया ही मागा गया और न जाने की जगह का नाम ही पूछा गया बडे असमजस में पडा शहर से मीलों दूर, समुद्र के बीच, भूख काफी महसूस हो रही थी कोई एक घटे बाद सामने से एक बडा बोट आया सयोग से यह यात्रीबोट था डेढ़ रुपया दे कर उस से करीब दो बजे वापस एमस्टर्डम पहुचा इस के बाद तो यात्री सहायक केन्द्र पर जा कर सारी बातों की जानकारी कर ली और वहीं से शहर का एक नकशा भी ले लिया

एमस्टर्डम की एक छोटी सी घटना मैं आज भी नहीं भूल पाता एक महिला से मैं ने किसी रास्ते का पता पूछा जो उस ने सकेत से बता दिया थोडी दूर जाने के बाद पीछे से एक आदमी दौडता हुआ आया और टूटीफूटी अगरेजी में बताया कि मेरा रास्ता उस तरफ न हो कर दूसरी तरफ से है वह महिला भी उतनी देर तक वहीं खडी हुई मेरी तरफ देखती रही जब मैं सही रास्ते की तरफ मुड गया तब वह अभिवादन कर के लौटी सभवत जो रास्ता बताया था उस में भूल हो गई थी और इसी लिए उस ने वह आदमी दौडा कर मुझे परेशानी से बचा लिया इस घटना से मेरा ध्यान अपने देश के ऐसे लोगों की तरफ चला गया जो अपरिचित राहगीरों को रास्ता पूछने पर या तो झिडक देंगे या जानबूझ कर गलत

रास्ता बता देंगे.

हालैंड में जा कर यदि जाइडरजी का बाध, सीफोल का हवाई अड्डा न देखा जाए, तो यात्रा अधूरी ही समझी जाएगी जाइडरजी का बाध १९२० में बनना शुरू हुआ और १९३२ में बन कर तैयार हुआ था यह २७ मील लबा है एक तरफ अथाह खारा समुद्र है, तो दूसरी तरफ मनुष्य निर्मित मीठे पानी की झीलें व हरी-भरी कृषि योग्य उपजाऊ जमीन बाध की दीवार इतनी चौडी बनाई गई है कि उस पर एक साथ मोटर, साइकिल, पैदल चलने वालो के लिए अलगअलग सडके है छुट्टी के दिन इस बाध पर हालैंड के युवक और युवतियो व बच्चो का मेला लगा रहता है

इसी तरह सीफोल के हवाई अड्डे को भी दुनिया का आठवा आश्चर्य कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा सौ वर्ष पहले जहां समुद्र लहरा रहा था, वहा विश्व का सब से बडा हवाई अड्डा बन जाना, कम आश्चर्य की बात नहीं प्रति दिन सैकडो वायुयान यहा आतेजाते है उडडयन के क्षेत्र में आज भी 'के एल एं' के हवाई जहाज और उन के डच चालक ससार में अपना सानी नहीं रखते

अत में यहा के विश्व प्रसिद्ध फिलिप्स के कारखाने के बारे में दो शब्द लिखना अप्रासगिक नहीं होगा जहा फिलिप्स का कारखाना है, वहा जमशेदपुर की तरह आइडहोवेन नाम का एक नगर ही बस गया है पैंसठ वर्ष पहले बहुत छोटे पैमाने पर इस कारखाने की नींव पडी थी आज दुनिया में उस की पचहत्तर शाखाए है, जिन में एक लाख से भी अधिक आदमी काम करते है फिलिप्स के रेडियो, माइक्रोस्कोप एव बिजली के अन्य उपकरणो का वार्षिक उत्पादन करीब दो सौ करोड रुपए के मूल्य का होता है

गिरजों गोंदोलों के बीच

आक्रमणकारियों का शिकार

विश्व के नदनकानन में घूमते समय मन में विचार उठे कि पेरिस, बर्लिन, मास्को, हेग, लंदन आदि यूरोपीय शहरों में विविधता और वैचित्र्य की कमी नहीं। सभी यूरोपीय शहरों का अपनाअपना रूप है, अपनीअपनी विशिष्टताएं हैं। मन पर इन सभी शहरों और देशों की अलगअलग तरह की छापें पड़ती हैं। अनेकता का पता चलता है। लेकिन इस अनेकता में एकता का आभास भी स्पष्ट है।

जीवन और जीवन की मूल समस्याओं के प्रति पश्चिमी देशों के लोगों के दृष्टिकोण, उन की सहज प्रतिक्रियाओं और उन के तौरतरीकों में काफी हद तक समानता है। लगता है कि उन के संस्कारों की बुनियाद एक ही है। पश्चिमी सभ्यता की विभिन्न बड़ी रोमन और यूनानी संस्कृतियों की मिट्टी और खाद से पनपी और फलीफूली है।

इसी लिए इच्छा हुई कि इटली और यूनान को भी अवश्य देखना चाहिए। उस से पश्चिमी संसार को समझने में और अधिक सहायता मिलेगी। स्विट्जरलैंड में स्थित रोमन संस्कृति का केंद्र इटली देखने उड़ चला। हमारा विमान आल्प्स पहाड़ों की ऊंची बरफानी चोटियां लांघ कर मिलान के हवाई अड्डे पर उतरा। इटली पहुंचना आज कितना आसान हो गया है!

पिछली शताब्दी तक तो इटली पहुंचने का सब से आसान साधन समुद्री मार्ग ही था, क्योंकि इस के उत्तर में हिमालय की तरह आल्प्स की ऊंचीऊंची चोटियां खड़ी हैं। उन को पार करने में कई विदेशी आक्रांता प्राणों की बलि दे चुके थे। समुद्री मार्ग आसान था। इटली के तीन ओर समुद्र है। मानचित्र देखने से लगता है जैसे वह भूमध्य सागर के जल में एड़ी तक अपने पैर डाले बैठा हो।

अब विज्ञान ने वायु मार्ग के अतिरिक्त एक स्थल मार्ग भी सुलभ बना दिया है। आल्प्स का पेट चीर कर सुरंगें बना दी गई हैं। संसार की सब से लंबी बारह मील की सुरंग—सिंपलन के जरिए हम घर ही घंटों में पेरिस से मिलान पहुंच जाते हैं।

मिलान के हवाई अड्डे से अपने पहले से तय किए हुए होटल में पहुंचा। शहर का नक्शा पेरिस से बहुत कुछ मिलताजुलता है लेकिन पेरिस की भव्यता और सजीवता की उस की अपनी ही है। इस में मध्य भाग को केंद्र बना कर परिधि की

तरह दो सडकें एक दूसरे के समानांतर चली गई हैं जिन को सीधी सडकें आपस में जोडती हैं. लगभग सभी बड़ी सड़कों पर छायादार वृक्षों की कतारें करीने से लगी हुई हैं.

मध्य भाग को ऐतिहासिक मिलान कहना ही ठीक रहेगा. यहीं अधिकांश प्राचीन इमारतें और भग्नावशेष हैं. समय की कमी के कारण मैं उन खंडहरों के वैभव को सरसरी निगाह से ही देख पाया. फिर भी उन को देखते समय मुझे बारबार यही लगा कि इतिहास ने हमारे देश की तरह यहां भी कई बार करवटें बदली हैं.

जैसे भारत पर शक, हूण, तुर्क, पठान और मुगलों के आक्रमण गंगायमुना की शस्यश्यामला भूमि के कारण होते रहे हैं, उसी तरह इटली के लोंबार्डी के हरेभरे मैदानों ने अपने धनवैभव के कारण यूरोप के आक्रमणकारियों को अपनी ओर आकर्षित किया. नुकीले भालों और चमचमाती तलवारों की टक्करें देखने के अनगिनत अवसर दिल्ली की तरह मिलान को भी प्राप्त हुए हैं.

मिलान उत्तरी इटली का एक प्रमुख धार्मिक केंद्र रहा है. शहर के मध्य भाग में स्थित प्राचीन गिरजे, सन्यासियों के मठ और सकरी गलियां सदियों की घटनाओं पर प्रकाश डालती हैं. शहर के इस भाग में वातावरण बिलकुल बदला हुआ सा मिलता है कुछ देर के लिए उन में खो जाना पडता है, तब खयाल तक नहीं आता कि हम २०वीं सदी के किसी आधुनिक शहर में हैं.

वास्तुकला और विशिष्ट मतों के कारण प्रत्येक गिरजा अपना अलग महत्व रखता है. मुझे सत अंब्रोजियो का गिरजा तथा ड्यूमा कैथेड्रल बडे भव्य और आकर्षक लगे. विगत महायुद्ध की विभीषिका के परिणामस्वरूप सत अंब्रोजियो के गिरजे को बडी क्षति पहुंची है १९४३ की बमबारी से कई अंश ध्वस्त हो गए थे.

इस गिरजे का धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्व भी है इस का निर्माण चौथी शताब्दी में शुरू हुआ था फिर बारहवीं शताब्दी में इस का पुनर्निर्माण हुआ और कुछ नए अंश जोडे गए इस की वेदी पर अनेक नरेशों को राजमुकुट पहनाया गया है. भित्ति चित्र काफी प्राचीन हैं. मैं ने सत अंब्रोजियो के विविध चित्र देखे जो नवीं शताब्दी के आसपास के हैं. इन से उस काल के रहनसहन, पोशाक और आचारविचार का परिचय मिला है.

ड्यूमा कैथेड्रल की गणना संसार के विशाल गिरजों में की जाती है. कहते हैं कि इस के निर्माण में लगभग ५०० वर्ष लगे थे दूसरे महायुद्ध की बमबारी ने इसे भी बहुत हानि पहुंचाई. गनीमत है कि यह पूरी तरह से समाप्त हो जाने से बच गया, वरना आने वाली पीढ़ियां विश्व की एक बहुत सुंदर कलाकृति से वंचित रह जातीं. मैं ने सुप्रसिद्ध चित्रकार ल्योनार्दो की श्रेष्ठतम कृति 'अंतिम भोज' भी यहीं देखी. सचमुच यह चित्र बेहद आकर्षक है.

चित्र में महात्मा ईसा अपने शिष्यों के साथ अंतिम भोज पर बैठे हैं. उन्हें दूसरे ही दिन सूली पर चढ़ाया जाने वाला था. भोज में वह व्यक्ति भी शामिल है जिस ने महात्मा ईसा के साथ विश्वासघात किया था. ल्योनार्दो की तूलिका ने प्रत्येक व्यक्ति के मनोभावों को बड़ी सफाई और खूबसूरती से व्यक्त किया है

ल्योनार्दो की श्रेष्ठतम कृति 'अंतिम भोज'

महात्मा ईसा के चेहरे पर शांति, दया, क्षमा और सात्विकता के भाव स्पष्ट झलकते हैं। भक्तों की आंखों में श्रद्धा, भक्ति और विश्वास है।

ल्योनार्दो के अलावा विश्व के अन्य बड़े-बड़े चित्रकारों ने भी 'अंतिम भोज' को चित्रित करने की कोशिश की, पर वह सूरत, वह सीरत किसी से न बनी। इस चित्र में महात्मा ईसा को अंतिम उपदेश देते हुए देख कर लगा कि स्वयं करुणा की मूर्ति साकार हो।

मैं ने पेरिस पहुंच कर लूव्रे में ल्योनार्दो की 'मोनालिसा' भी देखी। मेरी समझ में नहीं आया कि क्यों कला पारखी 'मोनालिसा' को पहला और 'अंतिम भोज' को दूसरा स्थान देते हैं।

अन्य दर्शनीय स्थानों में स्काला थियेटर, आर्क आफ पीस और रायल विला प्रमुख हैं। स्काला अपने परिमार्जित और कलापूर्ण संगीत, नृत्य तथा नाटकों के लिए केवल इटली में ही नहीं, सारे विश्व में अनुकरणीय माना जाता है। शहर में कई अजायबघर भी हैं, जहां इतिहास, कला, समाजशास्त्र और धार्मिक महत्त्व के अध्ययन की बहुत सी सामग्री है।

इटली के अन्य शहरों और मिलान में एक उल्लेखनीय भेद यह है कि यहां के स्थानीय लोग अधिक परिश्रमी और व्यवहारकुशल हैं। दक्षिणी इटली में कुछ गरम जलवायु होने के कारण लोगों में परिश्रमशीलता कम देखने में आई

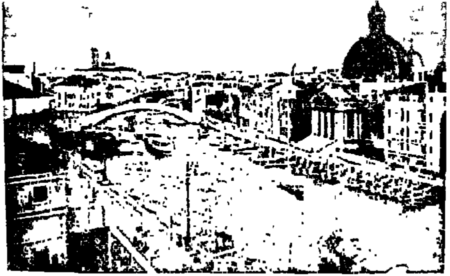

छोटेछोटे द्वीपो पर बसा वेनिस

मिलान इटली का औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र है. मैं ने शहर में शेयर बाजार भी देखा व्यापारी बडे जोरो से हाथ फटकारते हुए भावताव में व्यस्त थे मैं सोचने लगा कि अकेले कलकत्ता और बम्बई में ही यह रोग नहीं, यह तो सारे विश्व में फैला हुआ है. एक गोलमटोल सज्जन मुसकराकर अभिवादन करते हुए बोले, "क्या मैं आप की कुछ सेवा कर सकता हू?"

मैं ने बताया कि यह दृश्य मुझे अपने देश की याद दिलाता है मैं यहा केवल दर्शक हू, सौदा करने नहीं आया

वह हस कर बोले, "सिन्योर, मनुष्य और पैसे का सबध सब देशो में एक सा है भेद है तो सिर्फ नाम का"

हम दोनों हसने लगे

मिलान के बाद मैं वेनिस गया

वेनिस मिलान से करीब ७० मील पूर्व की ओर एड्रियाटिक सागर के उत्तरी छोर पर बसा है दरअसल यह शहर कई छोटेछोटे द्वीपों का पुज है वेनिस की सुदरता के बारे में बहुत दिनों से सुनता आ रहा था. आखो के सामने देख कर लगा कि इस के लिए जो भी कहा गया है, उस में कुछ भी गलत नहीं

इस की स्थिति सामुद्रिक व्यापार की दृष्टि से बहुत अच्छी है आधुनिक युग में यूरोप के बाजार पर लदन का जो नियत्रण है, प्राचीन काल में यह सौभाग्य वेनिस को प्राप्त था स्वेज मार्ग बनने पर इस का महत्त्व धीरेधीरे घटता गया जो भी हो, यह अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण वाणिज्यव्यापार के क्षेत्र में शुरू से ही आगे रहा है इन्हीं कारणो से यह लगातार समृद्ध होता गया

यहा के निवासी सुदूर अतीत से पश्चिम और पूर्व के सपर्क में बराबर रहते आ रहे हैं यही कारण है कि यहा के कलाकौशल का भी अपना एक अनोखा रूप है जो शेष इटली से भिन्न है बेलबूटे, कढ़ाईसिलाई और कटाईछटाई का इस का अपना निराला ढग है जो सदा से ही आकर्षक रहा है

आज भी वेनिस की बनी कांच की वस्तुए अपनी नक्काशी और तराश के

कारण दुनिया में अद्वितीय हैं सजावट के लिहाज से यहा के झाडफानूस विश्व के सभी देशो म बडे लोकप्रिय हैं ये स मान यहा लाखो लोगों की रोजी का बहुत अच्छा साधन बन गया हैं

वैसे इटली के सभी देशा में मोलभाव चलता हैं पर वेनिस के बाजारो के क्रयविक्रय का दृश्य तो देखने ही लायक होता हैं यहा यो भी चीजें महगी हैं, फिर नफीस चीजा का तो कहना ही क्या! यहा विदेशो से आने वाले यात्रियो को फसाने वालो की कमी नहीं हैं मुझे भी एक ऐसा मौका पडा

चाय का एक सेट खरीदना चाहता था सन मारको के विश्वप्रसिद्ध बाजार में गया, एक दुकान पर पहुचा दाम अनापशनाप मुह फेर कर लौटने लगा तो दाम तीनचौथाई दुकान के बाहर पैर रखा कि दाम आधा

इस चमत्कार से पुराने समय के जयपुर की दुकानें याद आ गई मैं ने जिस दुकान से सेट खरीदा उस ने नौ कई गुना दाम बता दिया था मैंने भी सोचसमझ कर अपना दाम बताया पैर बाहर रखा पर सिन्योर कुछ बोले नहीं मुझे कुछ आश्चर्य तो हुआ पर इस से अधिक आश्चर्य तब हुआ जब दुकान छोड कर चार कदम आगे बढ़ गया

सिन्योर दुकान से उतर आए और एहसान जताकर कहने लगे, "आप विदेशी हैं, वरना क्या कहू, आप ने तो कौडियो का भाव बताया है" फिर आसमान की ओर देख और अपनी गोलमटोल आखें नचाते हुए बोले, "क्या कहू, सिन्योर, लोग वेनिस की चीजें विदेश न ले जाए, यह मुझे गवारा नहीं चलिए ले जाइए!"

आखिर इटालियन मुद्रा में कीमत (भारतीय ३७० रुपए) देकर वह सेट खरीद हो लिया आज भी जब विशिष्ट अतिथियों को उन कपो में चाय पिलाता हू तो वे उस की नक्काशी और सुनहरे काम की सराहना किए बिना नहीं रहते

वेनिस शहर की बनावट निराली हैं छोटेछोटे द्वीपो पर बसा होने के कारण आज भी यातायात के प्रमुख साधन नावें और मोटरबोटें हैं हालांकि पुलो द्वारा द्वीप कहींकहीं पर जुडे हुए हैं और इन पुलो पर मोटरें और बसे भी दौडती हैं लेकिन फिर भी खासखास रास्ते नहरो के ही ह वास्तुशिल्प की दृष्टि से इटली के अन्य शहरो की तुलना में यहा विशेष अतर नहीं एक बात अवश्य है कि यहां गिरजो के अलावा बहुत सी ऐसी पुरानी भव्य इमारतें भी हैं जिन्हें मध्य युग में रईसों या सामतो ने बनवाया था हां, आज मरम्मत के अभाव में वे जीर्णशीर्ण पडी हैं

वेनिस में सिनेमाघर हैं, थियेटर, म्यूजियम और आपेरा हाउस भी हैं आकर्षण के सभी प्राचीन और आधुनिक साधन वहां उपलब्ध हैं लेकिन इतना सब होते हुए भी यहा का विशेष आकर्षण हैं गोंडोला

हसिनी की भाति सुंदर सजीली इन नौकाओ को वेनिस की नहरों के शांत जल में मस्ती के साथ चलते देख कर सम्मोहित हो जाना स्वाभाविक हैं

गोंडोलों में सजावट के साथसाथ आराम का भी पूरा ध्यान रखा जाता हैं इन में साफ और नरम बिस्तरे, शीशे जडे श्रृगार टेबल, आईने और कामदार परदे लगे होते हैं विलास के इन सारे साधनों का आकर्षण सजावट और सफाई के कारण और भी अधिक बढ़ जाता हैं

योरुप की अमरपुरी रोम

क्या अभी भी विश्व की सारी सडकें रोम पहुंचती हैं ?

वेनिस से रोम के लिए ट्रेन में बैठा उत्तरी इटली की यात्रा मिलान और वेनिस देख कर समाप्त कर चुका था अब रोम और नेपल्स देख कर दक्षिणी भाग की यात्रा पूरी करना चाहता था सुदरता की रानी फ्लोरेंस और जेनेवा को देखने की इच्छा मन में हो रह गई समय बहुत कम था

रोम पहुचने की खुशी में रोमरोम पुलकित हो रहा था ट्रेन अपनी रफ्तार से भाग रही थी स्वीडन और स्विट्जरलैंड की ट्रेनों में बहुत घूम चुका था इसलिए इटली की ट्रेन यात्रा उन के मुकाबले अच्छी नहीं लगी

बचपन में पढ़ा था कि रोम एक दिन में नहीं बना, विश्व की सारी सडकें रोम पहुचती हैं, इत्यादि अब प्रौढ़ मस्तिष्क उन्हीं बातों पर विचार कर रहा था अवश्य ही रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ होगा उसे बनने में सदियां लगी होगी नईनई विचारधाराओं ने उसे प्रभावित किया होगा. धर्म और सस्कृति का केंद्र रहा है रोम आज भी है

ईसाई धर्म के कैथोलिक मत का तो यह तीर्थ है सारा पाश्चात्य जगत ही ईसाई है इसी लिए श्रद्धा, भक्ति और प्रेम ने उन्हें रोम की ओर आकृष्ट किया बाधाए, विपत्तियां पार कर इस तीर्थ स्थली के दर्शन मात्र से अपनी आंखों को तृप्त कर अपने को औ र अपने जीवन को वे आज भी धन्य मानते हैं सोचने लगा, 'वैभवशाली इतिहास के रोम का रूप आज जाने कैसा होगा! शायद हमारी दिल्ली की तरह या काशी की तरह मकानों की बनावट में भिन्नता भले ही हो, वातावरण एक सा ही होगा'

रोम पहुचा देखा, बिलकुल आधुनिक वातावरण था वहा स्टेशन पर अन्य यूरोपीय देशों की अपेक्षा कुछ शोरगुल अधिक था—बहुत कुछ हमारे देश का सा सामान उठा कर होटल की ओर जाते हुए सोचने लगा कि ससार के प्राचीनतम समझे जाने वाले इस नगर में तो लदन, पेरिस, स्टाकहोम, बुसेल्स नजर आते हैं पर प्राचीन रोम की झांकी नहीं मिलती कहीं भी नहीं मिलती, न पोशाक में और न लोगों के ढग में

मेरा आकर्षण आधुनिक रोम से अधिक प्राचीन रोम की ओर था अत मैं ने पहले इसे ही देख लेना ज्यादा ठीक समझा

रोम की पहली बस्ती ईसा पूर्व आठवीं सदी में बसी थी आज तक

सेंट पीटर का भीतरी हिस्सा

पिआज़ा द स्पाना के महल्ले में टहलते हुए मैं ने ग्रीक, अमरीकी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि तमाम लोग देखे. पिछले महायुद्ध से पहले इटली के तानाशाह बेनिटो मुसोलिनी ने भी इटली की राजधानी को खूब संवारा था.

चौड़े रास्तों, बागबगीचों, नए ढंग के बड़ेबड़े भवनों और बिजली की सुविधा के कारण रोम यूरोप के अच्छे से अच्छे शहर से टक्कर लेने लगा. आज रोम की आबादी बीस लाख से भी ऊपर है, जब कि इसी शताब्दी के प्रारंभ में वह सिर्फ चार लाख थी. शहर की सब से बड़ी समस्या है यातायात की भीड़. ठीक यही समस्या तो हमारे यहां बंबई, कलकत्ता और दिल्ली में भी है.

शाम का समय था. मैं काफे ग्रेको में बैठा काफी पी रहा था. काफे ग्रेको रोम का एक प्रसिद्ध कैफे है जहां लेखक, कलाकार, पत्रकार और कुछ छात्र एकत्र

सेंट पीटर स्क्वायर   पोप का निवास

दशक मनुष्य के चिथड़े उड़ते देखते और बरदाश्त करते थे? परंतु मनुष्य भी तो मूलतः पशु ही है—पश्चिम का महान जीवशास्त्री डारविन यही तो कहता था

रोम के खंडहरों और प्राचीन भवनों को देख कर बीती हुई शताब्दियों के इतिहास की परतें एकएक कर खोलने में कठिनाई नहीं होती क्योंकि उन में अपने-अपने समय की छाप अंकित मिलती है लोगों के रहनसहन और रुचि का परिचय मिल जाता है यह निस्संदेह इटली और खासतौर पर रोम की सभ्यता के लिए सौभाग्य की बात है कि विदेशियों के आक्रमण तो उन पर हुए पर वहां के सांस्कृतिक चिह्नों को हमारे देश की तरह मटियामेट नहीं किया गया

यही नहीं, रोम का यह भी सौभाग्य रहा है कि प्राचीन भवनों और जीर्ण-प्राय ऐतिहासिक स्थलों का पुनर्निर्माण भी समयसमय पर होता रहा है इस दृष्टि से यहां के पोप (धर्मगुरु) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं. १५वीं शताब्दी से तो समयसमय पर विभिन्न पोपों की चेष्टा यही रही है कि रोम का गौरव बढ़े और सांस्कृतिक केंद्र कहलाने का उस का अधिकार कायम रहे

यही कारण है कि आज भी रोम में ऐतिहासिक श्रृंखला की कड़ियां टूटी नहीं हैं नेपोलियन के साथ युद्ध होने के बाद, इटली में प्रादेशिकता की भावना धीरेधीरे घटने लगी और एकता की भावना बढ़ने लगी रोम का महत्त्व बढ़ा और एक बार फिर रोम यूरोप की संस्कृति का नियंत्रण करने लगा बाद में भी सम्राट विक्टर एमेन्युएल ने इसे सजानेसंवारने में कोई कसर न रखी यूरोप और सुदूर अमरीका से लोग यहां के जीवन का आनंद लेने के लिए आने लगे आज का रोम अपने उस गौरव को अभी तक सफल उत्तराधिकारी के रूप में सुरक्षित रखता आया है

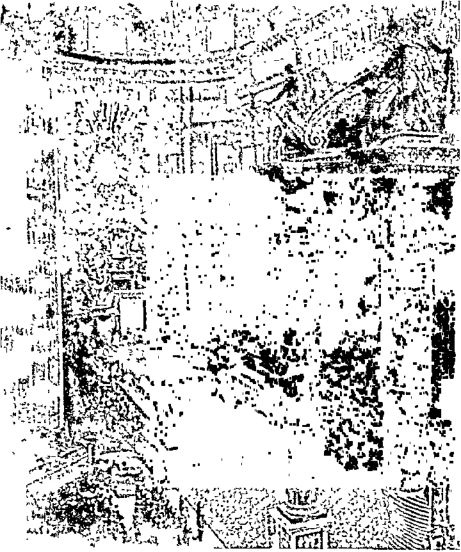

सेंट पीटर का भीतरी हिस्सा

पिआज़ा द स्पाना के महल्ले में टहलते हुए मैं ने ग्रीक, अमरीकी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि तमाम लोग देखे. पिछले महायुद्ध से पहले इटली के तानाशाह बेनिटो मुसोलिनी ने भी इटली की राजधानी को खूब संवारा था.

चौड़े रास्तों, बागबगीचों, नए ढंग के बड़ेबड़े भवनों और बिजली की सुविधा के कारण रोम यूरोप के अच्छे से अच्छे शहर से टक्कर लेने लगा. आज रोम की आबादी बीस लाख से भी ऊपर है, जब कि इसी शताब्दी के प्रारंभ में यह सिर्फ चार लाख थी. शहर की सब से बड़ी समस्या है यातायात की भीड़. ठीक यही समस्या तो हमारे यहां बंबई, कलकत्ता और दिल्ली में भी है.

शाम का समय था. मैं काफे ग्रेको में बैठा काफी पी रहा था. काफे ग्रेको रोम का एक प्रसिद्ध कैफे है जहां लेखक, कलाकार, पत्रकार और कुछ छात्र एकत्र

हो जाते हैं. मेरे पास की टेबल पर इटालियन, अंगरेज और अमरीकी युवक बैठे हुए थे. वे आपस में बातें कर रहे थे. इटालियन भी साफ अंगरेजी बोल रहा था. कभीकभी तीनो ही मेरी ओर देख लेते थे. मेरी दृष्टि इटालियन से मिली तो उस ने मुसकरा कर अभिवादन किया और तुरंत आ कर पूछा, "अंगरेजी, फ्रेंच, इटालियन कौन सी भाषा में बात करने में आप को सुविधा होगी? शायद आप भारतीय हैं!"

मैं ने अंगरेजी में कहा, "आप का अनुमान सही है. मैं भारतीय हू."

हम चारो एक टेबल को घेर कर बैठ गए. अब मैं वक्ता बना और शेष तीनो श्रोता. उन्होंने भारत और भारतीय संस्कृति के संबंध में प्रश्नो की झडी लगा दी. मैं ने समझाने की कोशिश की कि मैं व्यवसायी हूं और राजनीति, साहित्य तथा इतिहास का मेरा अध्ययन साधारण सा है. हा, अपने यहा सामाजिक कार्यों में उत्साह से भाग लेता हू.

जिस प्रकार काशी की यात्रा सारनाथ के बिना और मथुरा की वृन्दावन के बिना पूरी नहीं होती, उसी प्रकार रोम जा कर वेटिकन न देखना रोम न देखने के बराबर ही है. रोम का महत्त्व केवल ऐतिहासिक ही नहीं है, बल्कि उस के साथ ईसाई धर्म का गौरव भी जुड़ा हुआ है. उस का केंद्र स्थल है वेटिकन—पोप का प्रासाद.

वेटिकन रोम के अंतर्गत एक छोटा सा राज्य है इस की अपनी सरकार है, अपनी डाकतार व्यवस्था है और साथ ही अपनी पुलिस और रेडियो स्टेशन है इस राज्य का सर्वोच्च शासक है धर्मगुरु पोप पोप का अधिकार, उस की श्रद्धा का साम्राज्य इतना विस्तृत और असीम है कि वहा सूर्यास्त होता ही नहीं. पोप का सारा समय धर्म चिंतन और अध्ययन में ही बीतता है. विश्व में उन का प्रभाव तथा आदर कम नहीं है. ईसाई चाहे कैथोलिक हो या प्रोटेस्टेंट, पोप को दोनों ही आदर की दृष्टि से देखते हैं.

संसार के सभी देशों के कैथोलिक ईसाई पोप के वाक्य को वेदवाक्य मानते हैं. संसार के सभी राष्ट्र वेटिकन राज्य की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं पिछले महायुद्ध के दौरान रोम पर सैकडों बार बमबारी हुई लेकिन बमवर्षको ने हमेशा इस बात का ध्यान रखा कि कहीं वेटिकन राज्य को कोई हानि न पहुचे.

वेटिकन का निर्माण वास्तव में पांचवीं शताब्दी के शुरू में हुआ था पिछली पदरह शताब्दियों में ससार के कोनेकोने से श्रद्धालुओ ने श्रेष्ठतम वस्तुए यहां भेंट में ला कर अपने को धन्य माना लोगों ने अपने जीवन भर की कमाई पोप के चरणों में अर्पित कर दी. यही कारण है कि आज यहां जैसी बहुमूल्य सामग्री संग्रहीत है, वैसी न ब्रिटिश म्यूजियम में है और न वाशिंगटन या लूब्रे में ही

विश्व की दुर्लभ वस्तुए, महत्त्वपूर्ण पुस्तकें और चित्र यहां देखने को मिलते हैं. विश्व के महान कलाकारों ने वेटिकन गिरजों और मठों को सजाने में अपने को धन्य माना और इसी में सारा जीवन लगा दिया

इतना वैभव, आदर और असीम अधिकार किसी भी व्यक्ति का चित्त डावांडोल कर सकता है लेकिन मौजूदा पोप को देख कर मानना पड़ता है कि सात्त्विकता के आगे मानसिक विकार टहर नहीं पाते. यों पिछली दोतीन सदियो

से पोप के चुनाव में बहुत सतर्कता और सावधानी बरती जाती है

वेटिकन को अच्छी तरह से देखने के लिए काफी समय चाहिए मैं ने तो सरसरी निगाह से दीवारों पर टंगे चित्र देखे ज्यादातर जिहाद के चित्र थे इस के अलावा ईसाई धर्म से संबंधित और बहुत से सुंदर तथा चित्ताकर्षक चित्र भी थे ये चित्र विश्व के सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाशाली कलाकारों द्वारा बनाए गए हैं कुछ तो इतने बहुमूल्य हैं कि प्रत्येक का मूल्य पचास लाख रुपए तक आंका गया है यदि पोप के संग्रहालय का मूल्य आंका जाए तो अरबों तक पहुंचेगा मैं ने यहीं पर सिस्टाइन के गिरजे में विश्व के दो प्रसिद्ध कलाकारों, माइकेल एंजिलो और रेफियल के सर्वोत्तम चित्र देखे

वेटिकन में बहुत से गिरजे और मठ हैं मठों में ईसाई साधु रहते हैं यहां किशोर साधुओं को भी देखा जिन्हें ईसाई धर्म तथा धार्मिक आचारव्यवहार में पारंगत बना कर पूर्ण रूप से योग्य साधु बना दिया जाता है इटली की पहाड़ियों में साधुओं के कुछ ऐसे संप्रदाय भी हैं जो अपने मठों में ही तपस्या करतेकरते सारा जीवन व्यतीत कर देते हैं और यहां से कभी नीचे नहीं उतरते

वेटिकन में ही विश्व प्रसिद्ध संत पीटर का गिरजा है यह महात्मा ईसा के मुख्य शिष्य संत पीटर के स्मारक स्वरूप बनाया गया है ईसाई मत वास्तव में संत पीटर का बड़ा ऋणी है फिलस्तीन के मरुस्थल में महात्मा ईसा ने करुणा और क्षमा का मंत्र बर्बर गिरोहों को सुनाया पर वह सूली पर चढ़ा दिए गए थे

ईसा की मृत्यु के बाद, संत पीटर उन का संदेश पश्चिम की ओर पहुंचाते हुए रोम पहुंचे रोमन शासकों के अत्याचारों से पीड़ित जनता में इन के प्रेम और शांति के संदेश से आशा, धैर्य और जीवन के प्रति विश्वास का संचार हुआ

ईसा को मानने वालों की संख्या बढ़ने लगी ईसा के जन्म को ६७ वर्ष हो चुके थे रोमन साम्राज्य का गौरव नष्ट होने की राह पर था नीरो जैसा विवेकहीन सम्राट गद्दी पर था उस ने ईसाइयों को हजारों की संख्या में या तो पहाड़ों की चोटी से गिरवा दिया या आग में भुनवा दिया संत पीटर भी जीवित ही जला दिए गए ईसाइयों पर भूखे सिंह छोड़े गए सब कुछ होते हुए भी अंत में सच की ही जीत हुई नीरो पागल हो कर मर गया

ईसाई धर्म रोमनों में और फिर रोमनों के द्वारा उन के साम्राज्य के कोनेकोने में फैला थोड़े ही दिनों में सारा यूरोप तथा उत्तरी अफ्रीका ईसा की वाणी में दीक्षित हो गया यूरोप के प्रभुत्व के साथसाथ विश्व के कोनेकोने में ईसाई धर्म का प्रचार हो गया

संत पीटर का गिरजा विश्व की सब से बड़ी इमारत तो है ही, साथ ही कलापूर्ण भी कम नहीं है इस की ऊंचाई के सामने दिल्ली की जामा मस्जिद बहुत छोटी है इस की वास्तुकला तो अचंभे में डाल देती है किंतु निर्माण कौशल भी कम आश्चर्य नहीं पैदा करता इस के अंदर ६० हजार व्यक्ति बड़ी आसानी से प्रार्थना कर सकते हैं अंदर चारों ओर दीवारों और मेहराबों पर धार्मिक चित्र बने हुए हैं

इस गिरजे में अनगिनत स्मारक और समाधियां हैं सब से महत्त्वपूर्ण है संत पीटर की कांस्य की विशाल मूर्ति संत पीटर एक कुरसी पर बैठे हैं और

उन का शरीर वस्त्र से ढका हुआ है एक हाथ में कुंजिया है और एक हाथ की तर्जनी तथा बीच की उगली किसी विशेष भाव को बता रही है चेहरे पर घनी दाढी है सिर के घुघराले बालो के पीछे एक चक्र सा है जो सहज ही श्रद्धा और आदर की भावना जगाता है सत पीटर का एक पैर कपडो में ढका हुआ है और दूसरा बाहर की ओर बढा है भक्तो के स्पर्श से चरण का यह अश घिस गया है

दिन भर घूमते रहने के कारण मै काफी थक गया था इसलिए अपने होटल जल्दी लौट आया और आराम करने लगा खिडकी के सामने टाइबर नदी दिखाई दे रही थी उसी को एकटक देखने लगा देख कर बडी शाति मिली लगा कि सिकदर ने जो एक साम्राज्य फैलाया था, सो ढह गया रोमन भी तलवार की नोक पर साम्राज्य पर साम्राज्य स्थापित करते गए पर वे भी टिक न सके आश्चय है कि निहत्थे गौतम और ईसा का साम्राज्य काल के गाल में क्यो नहीं समाया!

टाइबर से आती हुई हवा के एक झोके ने फुसफुसा कर कान में कहा, "तलवार की नोक शरीर ही छेद सकती है पर क्षमा और प्रेम तो हृदय में घर बना लेते है" तुरत ही खयाल आया स्तालिन, मुसोलिनी, हिटलर का और उन की तुलना में अपन बापू का

पांपियाई की भस्म समाधि पर...

सस्कृति व सभ्यता ज्वालामुखी को भेंट

सुबह के आठ बज चुके थे बादलों के टुकड़े आसमान में धीरेधीरे तैर रहे थे समुद्र की लहरों से अठखेलियां करती हुई हवा पास से कुछ फुसफुसा कर चली जाती थी जाड़ा बीत चुका था, फिर भी रहरह कर एक सिहरन हो उठती थी

हमारी बस नेपल्स से पांपियाई का रास्ता तय कर रही थी बस काफी आरामदेह थी सामने ड्राइवर की बगल में गाइड हाथ में एक छोटा सा माइक्रोफोन लिए बीचबीच में हमें आसपास के स्थानों की विशेषताएं बताता जा रहा था

नेपल्स से पांपियाई का फासला केवल १४ मील है अलकतरे की साफ सड़क पर बस दौड़ रही थी दोनों ओर के खेत अंगूर, सेब और दूसरी किस्म के फलों के बाग बड़े ही मोहक लग रहे थे बीचबीच में किसानों के साफसुथरे मकान वातावरण की शोभा और भी आकर्षक बना रहे थे इन्हें देख कर मेरा ध्यान अनायास ही अपने देहातों के घरों की ओर चला गया मुझे लगा कि विदेशी जब हमारे यहां देहात के घरों को देखते होंगे तो सोचते होंगे कि हम भारतीयों को रहने का ढंग नहीं आता स्वच्छता और सौंदर्य के प्रति हमारा आकर्षण कम है इटली की आर्थिक अवस्था साधारण है वहां के रहनसहन का स्तर भी अन्य यूरोपीय देशों से कहीं अधिक गिरा हुआ है फिर भी, यहां के किसानों के घर गरीबी को जाहिर भले ही करें, पर उन में फूहड़पन हरगिज नहीं मिलेगा

दाहिनी ओर नजर गई समुद्र गर्जन कर रहा था कुछ दूरी पर देखा, विसुवियस खड़ा था एकटक देखता रहा उस ज्वालामुखी को बादलों की चादर से उस का सिर ढका हुआ था और शरीर कुहासे के झीने आवरण में घिरा हुआ था लगा कि विसुवियस प्रगाढ़ निद्रा में मग्न है

गाइड की आवाज आई, "ये कालेकाले पत्थर जो आप लोग देख रहे हैं, विसुवियस के लावा से बने हैं रागरंग के इस सुदरतम नगर के साथ विसुवियस ने आग की फाग खेली थी और कुछ ही देर में वह भस्मसमाधि में लीन हो गया था"

सामने विसुवियस था और उस के पैरों पर पांपियाई पांपियाई नहीं, बल्कि उस के खंडहर और राख की ढेरियां

"इस नगर का भी अपना एक जमाना था कितनी ही शताब्दियों की मजी हुई, अपनी संस्कृति और सभ्यता की गरिमा में डूबी हुई पांपियाई सुंदरता में

पांपियाई में ज्वालामुखी के फटते समय का एक चित्रकार का चित्रण

प्रकृति के सामने मनुष्य को पराजय स्वीकार करनी पड़ी.

मध्य युग में पांपियाई की ओर किसी का विशेष ध्यान नहीं गया. इस की कहानी विस्मृति के गर्भ में पड़ी रही. १६वीं शताब्दी के अंतिम चरण में लोगों का ध्यान इस की तरफ गया. उद्धार का कार्य प्रारंभ किया गया लेकिन प्रगति बहुत ही सुस्त और सीमित रही. १९वीं शताब्दी के प्रारंभ में फ्रांसीसी सरकार ने यह कार्य अपने हाथों में लिया और तब से लगातार इस दिशा में प्रगति होती रही है. धीरेधीरे इटली सरकार का भी ध्यान पांपियाई की ओर गया और उस ने १८६१ में खुदाई का काम अपने जिम्मे ले लिया.

गाइड के साथ घूमता हुआ सब कुछ देख रहा था. दो हजार वर्ष पूर्व यही सब एक जनपद था. इस की निर्माणव्यवस्था, कानूनकायदे और यहां के रहनसहन के तरीके को देख कर ऐसा अनुमान होता है कि आधुनिक ढंग के शहरों का सूत्र हमारे यहां के मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की तरह यहां भी रहा होगा. नगर के चारों ओर दीवारें थीं. उन दिनों स्वरक्षा और सुरक्षा के लिए ऐसी व्यवस्था का रहना आवश्यक माना जाता था. रास्ते अच्छे बने थे. बारहचौदह फुट से अधिक चौड़े तो नहीं थे, मगर विशेषता यह थी कि इन पर फुटपाथ बने थे. सड़कें नगर के महत्त्वपूर्ण अंचलों में अपेक्षाकृत प्रशस्त बनाई गई थीं. इन पर चौड़ी-चौड़ी पटरियां भी थीं. ये पटरियां अथवा फुटपाथ प्रायः सभी सड़कों से ऊंचे रखे गए थे. इस से गाड़ियों के आनेजाने में दिक्कत होने की संभावना नहीं थी.

मकान और रास्ते जल निस्सारण सुविधा को ध्यान में रख कर बनाए गए थे. कई स्नानागारों के ध्वंसावशेष स्पष्ट बताते हैं कि एक साथ ही गरम और ठंडे पानी के भरे जाने का प्रबंध था.

एक स्थान बहुत कुछ चौक जैसा लगा. शायद यही पांपियाई का व्यवसाय केंद्र रहा होगा, क्योंकि इसी के चारों ओर नगर का विस्तार है. केंद्रस्थल में

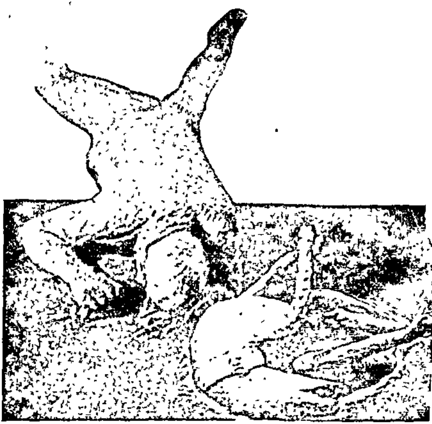

पांपियाई में खुदाई के समय मिले एक व्यक्ति व कुत्ते का माडल

बाजार हाट और न्यायालय भी था. इन्हें देख कर पता चलता है कि पांपियाई का वाणिज्यव्यापार कितना उन्नतिशील रहा होगा. नागरिकों के मनोरंजन की भी व्यवस्था थी. नाट्यशालाओं के खंडहरों को देख कर ताज्जुब होता है. उन में पांच हजार व्यक्तियों तक के बैठने की व्यवस्था थी. इन नाट्यशालाओं पर यूनानी वास्तुशैली का प्रभाव है.

इटली की सरकार ने पांपियाई में एक म्यूजियम बना दिया है. म्यूजियम छोटा लेकिन अच्छा है. यहां संग्रहीत नमूनों से पांपियाई की कहानी स्पष्ट हो जाती है. लेकिन व्यवहार में आने वाली विभिन्न वस्तुओं को देख कर नागरिकों के जीवन स्तर का सहज अनुमान हो जाता है. केशविन्यास के कांटे, गले के हार, चूड़ियां तथा इसी तरह के नाना प्रकार के वस्त्राभूषण स्त्रियों के शृंगार और रुचि का परिचय देते हैं.

तरहतरह के बरतनों के साथ सुरापात्र भी हैं, जो बताते हैं कि जीवन में विलास का प्रवेश कहां तक था. विभिन्न प्रकार की प्रतिमाएं भी वहां देखने में आईं. ये सभी, अधिकांश लोहे और तांबे की बनी थीं. यहां रखे छुरीकांटे, तराजू और तमाम वस्तुओं से उन के सामाजिक जीवन का भी परिचय मिला.

म्यूजियम के एक भाग में प्लास्टर किए गए शरीर देखने में आए. एक स्त्री

का शरीर देखा. वह एक हाथ की कोहनी में अपना मुंह छिपाए है और दूसरे हाथ की मुद्रा उस की घबराहट बताती है. ज्वालामुखी से निकलते विषैले धुएं से बेचारी का दम घुटा होगा. एक कुत्ते का शरीर देखा, विष के प्रभाव से उस का शरीर बिलकुल धनुष की तरह ऐंठ गया था.

म्यूजियम में जो भी संग्रहीत है, वह वास्तव में उद्धार से प्राप्त वस्तुओं का एक अंश मात्र है. बहुत सी वस्तुएं यूरोप के अन्य देशों में ले जाई गई हैं, जिस में सब से अधिक फ्रांस के लूवे म्यूजियम में संग्रहीत हैं. अमरीका के न्यूयार्क संग्रहालय में भी पांपियाई के कुछ ध्वंसावशेष ले जाए गए हैं.

ज्वालामुखी विसुवियस पर चढ़ने के लिए एक सड़क बना दी गई है. मोटर इसी रास्ते पर विसुवियस के मुख से कुछ सौ फीट दूर तक यात्रियों को ले जा सकती है. पैदल तो कोई मुंह तक भी पहुंच जाए, पर शामत किसे आई है और आफत मोल लेना किसे पसंद होगा!

यात्रियों की सुविधा के लिए यहां एक पोस्टआफिस है, एक अच्छा सा रेस्तरां है और कुछ छोटीछोटी दुकानें हैं. इन दुकानों में इटली के विभिन्न भागों में बनी शौक की चीजें मिलती हैं.

शाम हो चुकी थी. घूमतेघूमते काफी थक गया था. बस लौटने में अभी देर थी. मैं रेस्तरां में बैठ कर काफी पीने लगा. खिड़की के बाहर विसुवियस दिखाई पड़ रहा था. वह अब भी हल्का धुआं उगल रहा था.

मैं सोचने लगा कि इस का धुआं बताता है कि यह सुप्त नहीं है और न शांत ही है. पर अब यह किस पांपियाई को ग्रसने के लिए भीतर ही भीतर उबल रहा है?

सहसा लगा कि हल्के से वाष्प ने मेरी दृष्टि को धुंधला कर दिया और कान में कोई कह गया, 'यह नफरत भरी निगाहें मुझ पर हैं या प्रकृति पर? खुद पर क्यों नहीं! हिरोशिमा और नागासाकी को किस ने ग्रसा? मैं ने, फ्युजियमा (जापान का एक ज्वालामुखी) ने या तुम ने?'

मैं चौंक उठा. देखा गरम काफी की भाप ने चश्मा धुंधला कर दिया है. उतार कर चश्मे को साफ किया और जल्दीजल्दी काफी पीने की कोशिश करने लगा.

ग्रीस

जो योरोपियन सभ्यता की जन्मभूमि थी

रोम से वायुयान द्वारा एथेंस आ रहा था, पाश्चात्य सभ्यता के दूसरे मूल स्रोत यूनान की राजधानी एथेंस   जहाज जब यूनान की भूमि पर मडराया तो ऊबडखाबड, बजर पर्वतीय भूमि देख कर राजस्थान के चित्तौड क्षेत्र की याद आ गई   मन में प्रश्न उठा, क्या इस प्रकार की शुष्क भूमि में ही ऐसे वीर उत्पन्न होते हैं, जिन की गौरवगाथा वर्णन कर के होमर और चदवरदाई अमर हो गए।

फ्रांस और स्विट्जरलैंड में मित्रो ने कहा था कि आप विश्व के सुदरतम स्थानो को देखने के बाद यूनान जैसे नीरस और निर्जन देश में क्यो जा रहे हैं? परतु प्राचीन सभ्यता के अवशेषो, विश्वविख्यात आर्कोपोलिस पर्वत और देवी एथीना का मदिर देखने के मोह ने विवश कर दिया

विश्व के इतिहास में भारत एव मिस्र के समान यूनान का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है. जिस समय अन्य यूरोपीय देशों के निवासी गुफाओ में रहते और वल्कल पहनते थे, उस समय यूनान अपनी सभ्यता के चरमोत्कर्ष पर था   यद्यपि भारत और मिस्र जैसा पुराना इतिहास तो यूनान का नहीं है, परतु जितनी सामग्री उस के इतिहास के बारे में उपलब्ध है, वह इन दोनो देशो की अपेक्षा कहीं अधिक है   यदि किसी को केवल आमोदप्रमोद के लिए रात्रिक्लब और बडेबडे ऐय्याशी के साधन ही चाहिए, तो यह उपयुक्त स्थान नहीं, किंतु जो मानव की सतत विकासोन्मुख प्रवृत्तियो का अध्ययन करने के अभिलाषी हो, उन्हें यूनान अवश्य जाना चाहिए   भारत से लदन जाने वाले यात्रियो को यूनान जाने के लिए कोई अतिरिक्त व्यय नहीं करना पडता   कुछ हवाई कपनियो के जहाज एथेंस में भी उतरते हैं वे यात्रियों को इस बात की सुविधा देते हैं कि वे कुछ दिन वहा बिता सकें

एथेंस को यूनान की दिल्ली कहना उपयुक्त होगा   यूनान के इतिहास में इस नगर का वैसा ही स्थान है, जैसा भारत के इतिहास में दिल्ली का   एजियन समुद्र के किनारे बारह लाख की जनसख्या का यह नगर राजधानी होने के साथसाथ एक बडा बदरगाह और व्यापार केंद्र भी है

ग्रीस बहुत धनी   देश नहीं है और उस के साधन भी सीमित हैं, इसलिए एथेंस में नई दिल्ली की तरह बडेबडे भव्य भवन   देखने को नहीं मिलते   परतु वहा के निवासियो का आतिथ्य सत्कार और नगर की सुदरता व स्वच्छता यह कमी पूरी कर देती है

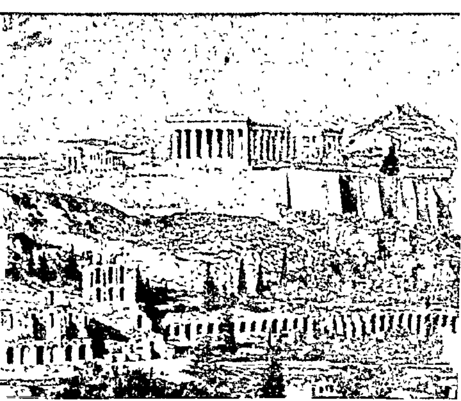

आर्कोपोलिस पर्वत पर सबसे प्रसिद्ध इमारत पार्थेनान

मैं नाश्ता कर के पैदल घूमने निकल गया. सब से पहले आर्कोपोलिस पर्वत पर गया जो शहर से थोड़ी दूर पर ही है. इस पर्वत ने अनेक उतारचढ़ाव देखे हैं. यहीं पर सत्यान्वेषी सुकरात को जहर का प्याला पिलाया गया था. यहीं वीर सिकंदर ने अपनी विश्वविजय का अभियान आरंभ किया था. जिस समय सिकंदर की वीर जननी अपने पुत्र को विश्वविजय के लिए लाखों सैनिकों के साथ आशा भरी विदाई दे रही थी, उस समय यह निर्मोही पर्वत मन ही मन सोच कर हंस रहा होगा कि यह विदाई ही अंतिम विदाई है.

उस बात को आज ढाई हजार वर्ष हो चुके हैं. अन्य देशों की तरह यूनान में भी परिवर्तन चक्र निरंतर चला. कभी तो यहां के वीर अनेक देशों से लूट की सामग्री और दासदासियों को ले कर विजयी होकर आए और कभी ऐसा समय भी आया कि रोमन और तुर्की सेना के आक्रमण से इन्हें एथेंस खाली कर के भाग जाना पड़ा.

वैसे तो आर्कोपोलिस पर्वत पर कई इमारतों के खंडहर दृष्टिगोचर होते हैं, पर सब से पहले मैं पार्थेनान के खंडहरों में संगमरमर से बने देवी एथीना के मंदिर में गया.

विश्व की कला कृतियों में इस मंदिर का अनुपम स्थान है. आज यहां चारों तरफ बिखरे हुए संगमरमर के पत्थरों और खंडित मूर्तियों के सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देता; पर २,००० वर्ष पहले एक ऐसा भी समय था, जब इसी मंदिर के प्रांगण में बैठ कर सम्राट लीरो अपने सरदारों के साथ विश्वविजय की

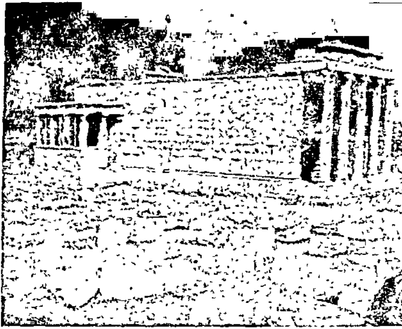

एरक्थम : अपनी बनावट व मौलिकता के लिए विश्व में प्रसिद्ध

रूपरेखा बनाया करते थे और विजय अभियान के पूर्व देवी एथीना से वरदान मांगते थे.

एक कोने में कब्र के एक पत्थर पर बैठे हुए मैं ने सोचा—मनुष्य कितना विस्मरणशील है. शायद इस कब्र में ही कोई ऐसा प्रतापी सरदार सोया होगा, जिस ने किसी समय अपनी तलवार से हजारों बच्चों और स्त्रियों को अनाथ कर दिया होगा और आज उस के अवशेष कुछ मिट्टी के कणों में बदल गए हैं. उस समय मुझे कवि की यह वाणी याद आ गई :

जहां शाह जमशेद विभव था, वही जहा मदिरा लहरी,
बने आज उन राजगृहो के सिंह श्रृगालादिक प्रहरी.
करते थे जो यहांवहां को व्याख्या रातरात भर जाग,
सब थकियाए गए अंत में, भूल गए सब रागविराग.

करीब तीन हजार वर्ष पूर्व एथेंस का नाम केक्रोपिया था. यहां के एक वीर सरदार थेसस ने देवी एथीना के नाम पर नगर का यह नाम रखा था. उस के बाद की छः शताब्दियों में तो इसी जगह से यूनानी साम्राज्य का शासन संचालित होता रहा.

ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी में ग्रीस में पेरीक्लीज नाम का एक महापुरुष हुआ, जिस की वक्तृत्वशक्ति और कार्यकौशल से ही आर्कोपोलिस की इमारतें बनीं. इन्हें बनाने में मिस्र के पिरामिडों की तरह गुलामों से जबरन मेहनत नहीं कराई गई थी. ग्रीसवासियों ने स्वेच्छा से श्रमदान द्वारा लगातार चौदह वर्ष में इसे पूरा किया था. ऐसा कहा जाता है कि उस समय ऐसी इमारत विश्व के किसी भी देश

में नहीं थी. अंग्रेजी में एक कहावत भी है कि दुनिया में आ कर यदि एथेंस नहीं देखा तो जीवन वृथा है.

प्रथम ईसवी शताब्दी में रोमनों ने यूनान को विजित कर लिया और एथीना के मंदिर में माता मरियम की मूर्ति स्थापित कर दी गई. इस के बाद पंद्रहवीं शताब्दी में तुर्कों ने एथेंस पर कब्जा कर लिया और एथीना का मंदिर, माता मरियम का गिरजा कुछ शताब्दियों के लिए मसजिद के रूप में बदल गया. तीन सौ वर्षों के तुर्की शासन में यूनान को जो सांस्कृतिक और जन हानि उठानी पड़ी, वह कभी पूरी न हो सकी.

आर्कोपोलिस के खंडहर-देखतेदेखते शाम हो गई. गरमी महसूस हो रही थी, क्योंकि अन्य यूरोपीय देशों की अपेक्षा यूनान अधिक गरम देश है. तो भी इन खंडहरों में कुछ ऐसा आकर्षण था कि वहां से वापस आने को जी नहीं करता था. एक बड़े खंडहर में बैठ कर थकावट मिटा रहा था कि नींद सी आ गई. हठात् रवि बाबू की 'क्षुधित पाषाण' कहानी के नायक की तरह मैं भी दो हजार वर्ष पहले के यूनान में पहुंच गया, जहां विचित्र वेशभूषा में लोग अनेक प्रकार के रागरंग कर रहे थे. थोड़ी देर बाद एक सिहरन सी महसूस हुई और आंखें खुलने पर परियों की जगह विशाल संगमरमर के खंभे दिखलाई दिए. आखिर, जी कड़ा कर के पर्वत से नीचे उतर वास्तविक जगत में आ गया.

संध्या समय एथेंस का राष्ट्रीय संग्रहालय देखने गया. २,७०० वर्षों के लंबे व्यवधान की जितनी यादगारें, मूर्तियां और वस्तुएं इस में संग्रहीत हैं, उतनी शायद ही अन्यत्र कहीं हों. वैसे तो लंदन, मास्को, पेरिस और वाशिंगटन के संग्रहालय संसार में बड़े अद्भुत माने जाते हैं, पर एथेंस में अन्य प्राचीन दर्शनीय वस्तुओं की भी कमी नहीं. इन में प्रमुख हैं: नायक का मंदिर, एपागस और एगस के गिरजे, केमिसिर्स की कब्रगाह, डिनोश का थियेटर हाल और स्टेडियम. परंतु एथीना के मंदिर और पार्थेनान के खंडहरों का वर्णन ही यहां पर्याप्त होगा.

इस प्राचीन एथेंस के साथ एक नया एथेंस भी है, जिसे हम इंद्रप्रस्थ के मुकाबिले में नई दिल्ली कह सकते हैं. यह नगर आज से १२५ वर्ष पूर्व बसाया गया था. अन्य यूरोपीय नगरों की तरह यहां भी विश्वविद्यालय, बैंक, बाजार, दुकानें, सड़कें, पुस्तकालय, सरकारी दफ्तर, सिनेमा, नाटक गृह आदि सब कुछ हैं. परंतु फ्रांस और बेलजियम से लौटे पर्यटक के लिए इन में कुछ आकर्षण नहीं रह जाता. एक बात मुझे अवश्य अनुभव हुई कि यहां के निवासियों में पूर्व और पश्चिम का सम्मिश्रण है, इसलिए यूरोप के पश्चिमी देशों की अपेक्षा वे सुंदर और गोलाकार मुखाकृति वाले हैं. वेशभूषा में भी पश्चिमी यूरोपीय देशों से कुछ अंतर मालूम देता है. कई जगह लंबी दाढ़ी वाले, चोगे और लंबी टोपी पहने पादरी भी दिखाई दिए. इस के सिवाय, गलियों और सड़कों पर भी हमारे यहां की तरह मिठाइयां और अन्य वस्तुएं बेचने वालों के खोमचे दिखलाई पड़ जाते हैं. कुछ बाजार तो भारत के बाजारों जैसे हैं.

यूनान बहुत बड़ा देश नहीं है. इस का क्षेत्रफल ५० हजार वर्गमील और आबादी करीब ७५ लाख है. न तो यहां बड़ेबड़े कारखाने हैं और न खनिज संपत्ति ही अधिक है. इसलिए अमेरिका व यूरोप के संपन्न देशों की तरह

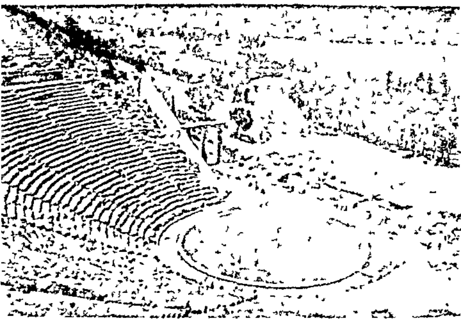

ईसा से ३२५ वर्ष पूर्व बना इपीडोरस का थियेटर

यह देश धनी नहीं है, तो भी इस की अपनी सभ्यता है, अपना इतिहास है आज भी जब कोई विदेशी यूनानियो से बातें करता है तो उसे उन के गौरवपूर्ण अतीत की झलक मिलती है.

१९४० के अत में जर्मनों और इटालियनो ने इस देश पर अधिकार कर लिया था जो तीन वर्षों तक कायम रहा इस अवधि में इसे बहुत हानि उठानी पडी १९४४ में मित्र राष्ट्रो की सहायता से वह फिर स्वतत्र हुआ और वहा के लोग इन २० वर्षों में अपने देश को आगे बढाने में कुछ अशो तक सफल भी हुए है

एथेंस और आर्कोपोलिस के अतिरिक्त और भी बहुत से स्थान देखने योग्य है, जैसे क्रीट और स्पार्टा परतु मेरे पास समय कम था और स्वदेश लौटने की जल्दी थी, इसलिए उन्हें देख न सका और वायुयान से काहिरा आ गया

यद्यपि थोडे समय ही ठहर सका, परतु जो भी देखा, उस की स्मृति जीवन भर बनी रहेगी यहा की एक घटना आज भी हृदय पर अकित है उस का उल्लेख कर यह लेख समाप्त करूगा

एथेंस प्रवास के समय 'टी डब्लू ए' (एक अमरीकी वायुयान कपनी) के युवक अफसर श्री कोर्नोपोलिस से मेरी मित्रता हो गई थी उन्होंने मुझ से कहा कि वे एक बार मुझे अपनी पत्नी से मिलाना चाहते हैं चार महीने पहले उन का ढाई वर्ष का इकलौता बच्चा काल कवलित हो गया था उस दिन के बाद से प्रत्येक दिन उन की स्त्री तीनचार घटे उस की कब्र पर बैठ कर रोती थी वह कुछ विक्षिप्त सी भी हो गई थी उन्होंने उस से मेरा जिक्र किया था वह मुझ से एक बार मिलना चाहती थी

दूसरे दिन उन के घर जा कर थोडा नाश्ता किया और उन की पत्नी से

महिला यह उस समय भी शोक चिह्न धारण किए हुए थी और बहुत ही उदास मालूम देती थी। उस ने मुझ से कहा, "भारत की ज्योतिष विद्या के बारे में मैं ने बहुत कुछ सुन रखा है। कृपया मेरा हाथ देख कर बताएं कि मेरा भविष्य क्या है?"

यद्यपि मैं ज्योतिष का क ख ग भी न जानता था, परन्तु उस शोक संतप्त मातृ हृदय को सांत्वना देने के विचार से मैं ने हाथ देख कर कहा, "दो वर्ष के भीतर ही आप को पुनः पुत्र प्राप्ति होगी।"

यह सुन कर उस के उदासीन चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। मैं ने भी अपनी बात में असत्य के पीछे सत्य के दर्शन पाए। संयोग वश दो वर्ष बाद अचानक ही एक दिन उस के पति का पत्र मिला, जिस में उस ने अपनी और अपनी स्त्री की ओर से बहुत ही कृतज्ञता से लिखा था 'आप के कथनानुसार हमें पुत्र की प्राप्ति हुई है। हमें बड़ी प्रसन्नता होगी, यदि आप एक बार हमारे यहां आ कर बच्चे को आशीर्वाद दें।"

काश! मैं फिर से यूनान जा कर उस दम्पति से मिल पाता!

ताशकन्द

सुख व समृद्धि का प्रचार. . .लेकिन वास्तविकता क्या है?

१९६५ के ताशकन्द समझौते के बाद हमारे देश के साधारण से साधारण व्यक्ति की जबान पर यह नाम आ गया किन्तु सन १९६१ में जब हम ताशकन्द गये थे, उन दिनों भारत के बहुत कम लोग इस के नाम से परिचित थे इनमें भी बहुतो की जानकारी इतनी सी थी कि ताशकन्द रूस के विशाल सोवियत सघ के एक राज्य का प्रमुख शहर है. कुछ लोगो का यह ख्याल था कि ताशकन्द हिमालय के उस पार मध्य एशिया में इस्लामी सभ्यता और सस्कृति का प्रमुख केन्द्र है

बचपन में पढा था कि हिमालय पर शिवपार्वती विचरण करत है बाल बुद्धि इन सब बातो को सत्य मानती थी महाभारत की कथा में भी सुनते थ कि सम्राट युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में चीन अफगानिस्तान और गाधार तथा हिमालय के उस पार के देशो से बहुमूल्य उपहार भेजे गये थ वैसे ये पडोसी देश भी हैं इसलिए इन्हें देखने की बहुत दिनो से इच्छा थी

कुछ वर्षों बाद प्रसिद्ध पर्यटक स्वर्गीय राहुल साकृत्यायन के सम्पर्क में आया वे तन्मय होकर सोवियत रूस की सर्वांगीण उन्नति के बारे में सुनाते थे उनकी 'वोलगा से गगा' ने भी जिज्ञासा के बीज को अकुरित किया परन्तु उन दिनो रूस देखने की अनुमति सिवाय साम्यवादी विचारधारा के लोगों के किसी को नहीं मिलती थी हिमालय का लघन सभव था परन्तु लौह प्राचीर के भीतर जाना दुष्कर था उधर झाकना तक खतरे से खाली नहीं था

मई सन १९६१ को एक दिन श्री जी०डी० बिडला ने कहा—"रूस सरकार का निमत्रण है, तुम चलोगे क्या?' भला मेरी इन्कारी का सवाल ही कहा था? इसी प्रकार की ताक में तो था ही दूसर ही दिन उन्हें अपनी स्वीकृति दे दी

यात्रा की तयारी कर ली गयी श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिहका को भी साथ जान के लिए राजी कर लिया वे आयु में ७५ वर्ष के हैं परन्तु उनमें शारीरिक शक्ति और जोश युवकों से भी ज्यादा ह यात्रा के लिए तो हमेशा तयार रहत ह चाहे उत्तरी ध्रुव की हो या टिम्बकटू की यात्रा में हमारे अलावा बिडलाजी के दो निजी सचिव और तीनचार अन्य मित्र थ

मई का महीना था दिल्ली में इन दिनों नौ बजे सुबह से ही आसमान से आग बरसती है और राजस्थान से उडी धल की आंधियां चलती हैं मगर हम

ताशकन्द की रिपब्लिकन एस्टेट लाइब्रेरी जो 'अलीशेर नावोई' के नाम से मशहूर है

ऊनी गरम कपडे पहने हाथो में ओवरकोट लिए रूस की यात्रा पर चल पडे   लोगो की निगाह में भले ही कुछ लगे हो पर बात यह थी कि रूस में इस समय भी जोरो की सर्दी पड रही थी   मोटे गरम कपडे और ओवरकोट सन्दूक में रखते तो सामान के बतौर उनका भी किराया लग जाता

अबतक हम अधिकतर अपने ही देश के एयर इण्डिया या अन्य आरामदेह हवाई जहाजो से यात्रा करते रहे थे   इनमें सब प्रकार की सुविधा रहती है इस यात्रा में जिस रूसी यान एयरो फ्लैट में बैठे वह बडा और तेज तो जरूर था मगर साज-सज्जा में मामूली सा था   इसके अलावा जो तहजीब, खातिरदारी और स्नेहपूर्ण व्यवहार भारतीय या अन्य यूरोपीय एयर होस्टेसो से मिलती रही है, उसका इसमें सर्वथा अभाव मिला   सच पूछा जाय तो हवाई जहाज की लम्बी और उबा देने वाली यात्रा में आधी थकावट तो इनकी सुन्दरी परिचारिकाओ के मधुर व्यवहार और बातचीत से ही मिट जाती है   यह रूसी यान १२० यात्रियो का था, एयर होस्टेस की जगह ये कद्दावर रूसी जवान   अपनी तरफ से तो ये बिचारे हर तरह की सहायता करने को तैयार रहते परन्तु यह स्नेहपूर्ण मुस्कान और सुमधुर सुगन्ध इनके पास कहाँ से आती? इनकी भाषा भी साफ समझ में नहीं आती थी   कुर्सियो के गद्दे और कमर की पट्टिया सेना के प्लेनो जैसी थीं ऐसा लगा मानो रूस का सबसे पहला काम सैनिक तैयारी के बारे में सोचना है फिर और सब कुछ हमें बताया गया कि इसी ढग के बोतल्ले के हवाई जहाज भी रूस में बनाये जा रहे है जिनमें ढाई सौ यात्री बैठ सकेंगे

यान की गति सभवत ६०० मील प्रति घन्टे की थी इसलिए हम दो ही घन्टों में नगराज हिमालय की ऊची चोटियो पर से उड रहे थे

हमारे प्लेन की ऊचाई ३५-४० हजार फीट थी परन्तु बर्फानी चोटिया भी बीस पचीस हजार फीट ऊची थीं इसलिए वे काफी नजदीक दिखाई पड रही थीं और ऐसा लग रहा था कि हिमसागर की ऊची लहरों पर से हम उड रहे हैं बर्फ ही बर्फ, न हरियाली और न नदी नाले या सडकें चमकीली बर्फ पर धूप पड रही थी मानो चादी का सागर लहरा रहा हो दुगम हिमालय चादी की चादर ओढे मुझे बुलाना सा लगा सोचने लगा—यात्रियों ने ठीक ही लिखा है कि कैलाश और मानसरोवर के दृश्यों को देखकर मनुष्य आत्म विस्मृत हो जाता है, वहा से वापस आने को जी नहीं चाहता कठोर शीत में मृत्यु की आशका रहती है, फिर भी वह खिचा ही रह जाता है अमरनाथ की यात्रा की मेरी अपनी ही घटना का स्मरण आया मै भी तो वहा पर बर्फानी चोटियों के शात और सौम्य दृश्य को आधी रात तक देखता ही रह गया था

इन्हीं ऊचे हिम शिखरों को पार कर कितनी जातिया हमारे देश में आयीं हमारे यहा से कितने ही लोग इन्हीं घाटियों से गुजरे बल्ख, बदख्शा, समरकन्द और बुखारा ताशकन्द भी तो इन्हीं में हैं हिमालय के उस पार कल्पना में ऐसा लगा मानो गैरिक वस्त्र पहने बौद्ध भिक्षुओं की कतार धीरेधीरे इन्हीं बर्फानी घाटियों से आगे बढ़ रही है

भारी सी आवाज सुनाई पडी वेटर ने नाश्ते के लिए पूछा था इच्छा नहीं थी, मैंने इन्कार कर दिया विचारों का तार टूट गया मन में सोचा, कल्पना से यथार्थ कितना भिन्न होता है

यदि हम किसी दूसरी कम्पनी के हवाई जहाज से जाते तो उसी किराये मे काबुल को देखने का सुयोग मिल जाता मगर ये बड जहाज दिल्ली से उडकर सीधे ताशकन्द आकर रुकते हैं हम तीनसाडेतीन घटा में ताशकन्द हवाई अड्डे पर पहुच गये मन में प्रसन्नता सी हुई आखिर पहुच ही गया हिमालय के उस पार और लौह प्राचीर के भीतर!

यद्यपि यूरोप के कई देशों की यात्रा पहले कर चुका था परन्तु रूस की यह मेरी प्रथम यात्रा थी ताशकन्द सोवियत सघ के उजबेकिस्तान की राजधानी है यों भी रूस अन्य यूरोपीय देशों से भिन्न सा लगता है और यहा का वातावरण तो रूस से भी काफी अलग ढग का है हमारी अगवानी के लिए मास्को से रूसी सरकार के विदेश मत्रालय के दो अधिकारी आये थे व अग्रजी अच्छी तरह समझते और बोलते थे अत्यन्त सौजन्य से उन्होंने अपना परिचय देते हुए सोवियत सरकार की ओर से हमारा स्वागत किया अन्य तीनचार व्यक्ति जो वहा खडे थ उनसे परिचय कराया नगर के मेयर के अलावा यहा के व्यापार चम्बर की प्रधान श्रीमती हमीदा भी थीं ये अग्रजी नहीं जानती थीं अतएव, परिचायक के माध्यम से बातचीत हुई परिचय से अन्दाज मिला कि श्रीमती हमीदा न केवल सुशिक्षिता है बल्कि अपने विषय और दायित्व की काफी जानकारी रखती है

ताशकन्द का एयरपोर्ट कोई खास अच्छा नहीं लगा साधारण सा

मानियत उजबक की सुप्रसिद्ध नर्तकी, गालिया इज्माएलोवा भारतीय नृत्य की एक मुद्रा में

था, हमारे यहां के पटना या वाराणसी के जैसा कहा जा सकता है कई प्रकार के छोटेबडे हवाई जहाज बहुत बडी सख्या में खडे थे विश्व में अमेरिका के सिवाय रूस के पास सबसे ज्यादा हवाई जहाज है, जिन्हें देश के भिन्न भिन्न हिस्सों में बाट रखा है

हमारे स्वागत के लिए एयरपोर्ट के रेस्तरा में नाश्ते का आयोजन किया गया था दरअसल बात यह थी कि हमारे पासपोर्ट और विसा की जाच की जा रही थी इसमें कुछ देर लगनी सभव थी चूकि, हम सरकार द्वारा आमत्रित थे, इसलिए वे इन बातों का हमें आभास नहीं होने देना चाहते थे रूस में विदेशियो के विसा वगैरह की जाच बडी सतर्कता और कडाई से की जाती है यो, हमारे बारे में पूरी जानकारी भारत में रूसी राजदूत श्री बेनेडिक्टोव द्वारा वहा दी जा चुकी थी साथ ही यह भी बता दिया गया था कि हम निरामिष भोजी है और वोदका की जगह पानी पीते हैं पानी का खास हवाला देना भी जरूरी था क्योंकि यूरोप में आमतौर से पानी की जगह लोग बियर पीते है खैर, रेस्तरा में हमारे सामने रोटी, मक्खन और फलों की तश्तरिया रखी गयीं ये सब तो साधारणतया अच्छी थीं, मगर काफी जो हमें दी गयी थी, वह काली और कुछ बदबूदार थी, दूध-चीनी भी उसमें नहीं था थोडी सी ही गले की नीचे उतार पाये, उबकाई आने लगी

मि० मिरकाव, जो हमें मास्को से लेने आये थे आग्रह करने लगे कि थोडी ही सही हम वोदका मेजबानो की स्वास्थ्य कामना के लिए जरूर पीनी चाहिए वरना वे अपना अपमान समझेंगे वोदका की तजी की शोहरत हम सुन चुके थे, इसलि

उनकी शुभकामनाएं हमने पानी के गिलास दिखाकर ही की हमारे एक साथी ने कुछ वोदका पी, वे इससे पूर्व कई बार रूस आ चुके थे

एयर पोर्ट से हमारा होटल करीब आठदस मील था सड़क तो अच्छी थी, दोनों तरफ हरे वृक्षों की लम्बी कतार थी, मगर मकान बहुत ही साधारण तरीके के थे *यूरोप के अन्य देशों की सी उनमें भव्यता नहीं थी* इन्हें देखकर रूसी जनजीवन में समृद्धि का परिचय भी नहीं मिलता हमने रूस के विदेशी प्रचार विभाग द्वारा प्रसारित पत्रपत्रिकाओं में पढा था कि सोवियत सघ में पिछडे इलाको को भी खुशहाल बना दिया गया है मगर जो कुछ भी हमने पहली नजर में देखा, उससे यही लगा कि साम्यवाद ने प्रचार में अच्छी कुशलता और निपुणता प्राप्त की है

सोवियत सघ का यह अचल मध्य एशिया के तुर्किस्तान का अश है उजबेक, कज्जाक, किरगिज आदि जातियां यहा रहती हैं. इनके रक्त में मगोल मिश्रण है अधिकाश इस्लाम के अनुयायी हैं मुल्ले और मौलवियो का चूडान्त प्रभाव यहा के जनसमाज पर सदियों से रहा है. छोटेछोटे स्वतत्र जनपद के रूप में ये बिखरे हुए थे लगभग एक सौ वर्ष पूर्व रूस ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था पिछले पैंतालिस वर्षो से यहा साम्यवादी शासन है फिर भी, वही इस्लामी शक्लें दिखाई पडीं लोग लम्बे चोगे, अमामे की जगह घटिया पुराने कोटपतलून पहने हुए थे—जैसे हमारे कलकत्ते की हरिसन रोड की दुकानो में मिलते हैं कपडे की गोल और छोटी टोपी हमारे यहा बेढंगे या नासमझ को 'उजबक' कहते हैं क्यों कहते हैं पता नहीं वैसे उजबेक बहादुर और लडाकू भी होते हैं. इन्हे जो बात जच गयी, उसमें तर्क की गुजाइश नहीं यह इनकी खूबी है सभव है, अभी तक साम्यवाद इनके मन में जचा, बैठा है वरना कुछ न कुछ ये कर ही बैठते

हम जिस होटल में ठहराये गय थे, वह छ मजिला था आधुनिक साज-सज्जा से सम्पन्न भी था फिर भी फर्नीचर और गलीचो को देखकर ऐसा आभास हुआ कि हमारे देश के कलकत्ते, बम्बई या दिल्ली के बडे होटलो से यहा का स्तर काफी नीचा है

अभी शाम के भोजन में तीनचार घन्टे का समय था अपनी घुमक्कड आदत के अनुसार मैं बिना किसी को सूचना दिए शहर देखने निकल पडा ताशकन्द भी दुनिया के पुराने शहरो की तरह दो हिस्सो (नये और पुराने) में बटा हुआ है शहर के पुराने भाग को देखने के प्रति मेरी रुचि अधिक रहती है, क्योंकि इन जगहो में वहा की प्राचीन सस्कृति का परिचय मिलता है साथ ही, देश और जाति के इतिहास की परत भी सामने आ जाती है आधुनिक भाग के प्रति आकर्षण न रहने का कारण है कि यहा लन्दन, पेरिस, ब्रुसेल्स, बर्लिन आदि शहरो की नकल दिखाई देती है

ताशकन्द का शहर मध्य एशिया के बुखारा, समरकन्द, बल्ख या बदख्शा की तरह प्राचीन तो नहीं है फिर भी अरब से फैली इस्लामी सभ्यता और सस्कार के पिछले १४०० वर्षों का इतिहास यहां मिलता है पुराने गन्दे मकान, तग गलिया, फटे गन्दे और पुराने कपडे पहने आदमी और बच्चे, पीठ पर चमडे के थैले लिए

ताशकन्द का एक रस्तोरेंत अन्य पश्चिमी देशों की तड़क भड़क से दूर

आवाजें लगाकर शरबत बेचते फेरीवाले—ये सारे दृश्य हमें सदियों पहले के बगदाद और बसरा में ले जाते हैं मैं घूमता हुआ यह सब देख रहा था, दिमाग में ख्याल उठ रहे थे अरबों रुपये प्रति वर्ष प्रचार में खर्च कर सोवियत रूस दुनिया को यह दिखाने का प्रयत्न करता है कि साम्यवादी विशाल साम्राज्य के हर क्षेत्र में अमनचैन है, खुशहाली है, गरीबी, गन्दगी और जहालत नहीं है हम अपने देश के साम्यवादी मित्रों से भी रूस और चीन में की गयी तरक्की की तारीफ सुनते ही रहते थे मुझे पहले अनुभव ने ही यह बता दिया कि साम्यवाद और कुछ हो, न हो भ्रमवाद तो जरूर है

सूखा जलवायु है प्यास लग आयी परन्तु पानी पीने को मन नहीं हुआ दिक्कत भी थी हिन्दी की तो बात ही क्या अंग्रेजी जानने वाला भी कोई नहीं मिला थोड़े से सिके हुए तरबूज के बीज लिए और पानी की जगह लेना पड़ा घटिये दरजे का एक लेमन अवसाद और थकान का मारा किसी तरह होटल वापस आया

पहुचते ही प्रश्नों की झड़ी बरस पड़ी "कहा गये," "कब गये, "कैसे गये," 'किससे मिले," "क्या कहा" और न जाने क्या क्या झुझलाहट खुद पर आगयी, क्योंकि मैं भूल गया कि लौह दीवार के अन्दर आया हू परन्तु भूल तो मुझ से हो चुकी थी, पछतावा भी हुआ कुछ झमेला उठता परन्तु दिल्ली से रूसी दूतावास नें शायद हमारे बारे में अच्छी सिफारिश की थी, इसलिए बात वहीं खत्म हो गयी हमारे सरकारी रूसी सहायक कहने लगे "बात कुछ नहीं, हम नहीं चाहते कि अनजान जगह हमारे मेहमान परेशान हो उस पर भाषा की भी तो

फटे पुराने और गंदे कपड़े पहने आदमी और पुराने मकान हमें सदियों पहले के बगदाद और बसरा की याद दिलाते है

दिक्कत है और बिलावजह आपका समय बर्बाद होने का अदेशा रहता है आप जहा भी जाना चाहे हम में से किसी को साथ ले लें, इससे आपको जाने और समझने में सुविधा रहेगी" मैं मुस्करा उठा शायद हम दोनो एक दूसरे का आशय समझ गये

थकावट थी ही, मन में ग्लानि भी थी न भूख लगी न प्यास, फिर भी औपचारिकता के नाते भोजन की टेबुल पर बैठना पडा क्राकरी बहुत साधारण सी और नेपकिन घटिया कपडो की मक्खन, रोटी और फल बेशक बडी मात्रा में थे अपनी टेबुल से नजर हटाकर दूसरी टेबुलो को देखा—बहुत सी मोटी रोटिया और काली काफी थी, नेपकिन कागज के कहना न होगा कि हमारे लिए विशेष प्रबन्ध किया गया था

भोजन के उपरान्त होटल की छत पर के रेस्तरा में हम गये और जाते भी कहा? व्यक्तिगत स्वतन्त्रता थी नहीं रेस्तरा में सगीत का कार्यक्रम चल रहा था समझ में नहीं आया, उजबेकी धुनें हैं या रूसी पेरिस के फौली बर्जे और सेवाय के सगीत तथा नृत्य की तुलना में ये बहुत ही हल्के लगे

रात दस बजे सोने के कमरे में चला आया जी चाहता था जरा घूम आऊ हवा में ठडक हो गयी थी, मगर मन की घुटन से परेशान था ख्याल आ गया कि दिन में थोडी देर के लिए गया, उसकी इतनी जाचपडताल हुई तो फिर रात में जाना तो और भी सन्देहास्पद हो सकता है सोने की चेष्टा करने लगा, कमरा ताप-नियत्रित नहीं था बिस्तर वगैरह भी साधारण से थे किन्तु दिन भर की थकान

के कारण आखें लग गयीं. दुस्वप्न आते रहे—मुझे गिरफ्तार कर लिया गया है, साईबेरिया चालान कर दिया गया है, चारो ओर बर्फ ही बर्फ है. कहीं रेनडियर दौड़ाते हैं तो कहीं भालू. सुबह उठने पर सपनों की छाप का असर दिमाग में था. यह थी रूस में मेरी पहली रात.

दूसरे दिन सुबह नाश्ता कर यहां के व्यापारिक चेम्बर में गये. यद्यपि यहां के सारे कारखाने और उद्योग सरकारी नियंत्रण में हैं फिर भी चेम्बर वगैरह हमारे यहां की तरह ही हैं. अध्यक्ष ने हमें यहां के व्यापार, उद्योग की जानकारी संक्षेप में दी और अंग्रेजी में छपे कुछ विवरण-पत्र दिये. उन्होंने बताया कि १९१७ के पहले यह इलाका पिछड़ा हुआ था. न तो यहां कारखाने थे और न पर्याप्त रूप में खेती ही थी. सोवियत संघ में यह १९२५ में आया. उसके बाद यहां नाना प्रकार के कारखाने खुले हैं. पास की पहाड़ियों में तेल, तांबा तथा अन्य खनिज पदार्थ भी मिले हैं—बेहतरीन किस्म की रुई, फल और सूखे मेवे उत्पन्न करते हैं. विदा के समय हमें उजबेकी काली टोपी दी जिसे पहनाकर फोटो लिया गया. यहां चायपान के दौरान में हमारे दल के नेता श्री बिड़ला का संक्षिप्त भाषण भी हुआ.

इसके बाद हमें कपड़े की एक मिल दिखाने ले गये. यह काफी बड़ी थी किन्तु मशीनें हमारे यहां की आधुनिक मिलों से कहीं घटिया थीं. किसी देश विशेष की समृद्धि का अनुमान वहां के पहनावे और खानपान से लग जाता है. यहां हमारे देखने में आया कि बहुत हल्के दरजे का और मोटा कपड़ा बनाया जा रहा है. मजदूरों के बारे में पता चला कि ३५०)-४००) रु० मासिक प्रति व्यक्ति है. जनरल मैनेजर और अन्य आफिसरों को १५००) रु० से २०००) तक का वेतन मिलता है अर्थात मजदूर और आफिसरों का वेतनमान का अन्तर अधिक से अधिक १और५ का है. हमने महसूस किया कि इस बात में साम्यवादी विचारधारा को अवश्य सफलता मिली है. हमारे यहां बड़े साहबों का मासिक वेतन किसीकिसी प्रतिष्ठानों में सब मिलाकर २०-२२ हजार तक है, जबकि उनके साथ काम करने वाले मजदूरों को १२५)-१५०) रु० ही मिलता है.

मिल देखने के बाद हम दोपहर के भोजन के लिए होटल वापस आ गये. भोजन की टेबुल पर कई प्रकार के फलों को देखकर मैंने पूछा कि क्या ये विविध प्रकार के फल यहीं होते हैं? पता चला कि सोवियत संघ के इस अंचल में कुछ फल तो होते हैं मगर बाकी बाहर से मगाये गये हैं

भोजन के बाद हमें शहर के नये हिस्से को और वहां की संस्थाओं को दिखाने के लिए ले जाया गया रास्ते में हमने लक्ष्य किया कि लोग बेकाम बैठे बातचीत कर रहे हैं. उनकी शक्ल, उनका पहनावा, उनकी चाल बता रही थी कि जिन्दगी का बोझ वे ढो रहे हैं. इसके पूर्व हमने भारत में सोवियत पत्रों में पढ़ा था कि साम्यवादी रूस में बेकारी की समस्या का हल निकाल लिया गया है.

हम एक स्टोर में गये चीजें अधिक नहीं थीं. जो भी थीं घटिया किस्म की. हमें खरीदारी करनी नहीं थी फिर भी जिज्ञासावश दाम पूछे. प्रत्येक के लगभग इस प्रकार थे:

महिलाओं के लिए रेक्सिन हैंडबैग	—	१००)	से	१५०)रु०
टेबल घड़ियां	—	१२५)	से	१५०)रु०
चाकलेट (एक पाउण्ड)	—	२०)	से	३०)रु०
नेकटाई	—	४०)	से	६०)रु०
सूती कमीजें	—	१२०)	से	२००)रु०
ऊनी सूट (साधारण)	—	१०००)	से	१५००)रु०
सूती सूट ,,	—	४००)	से	६००)रु०
सिगरेट केस (साधारण धातु का)	—	२००)	से	३००)रु०
जूते	—	३५)	से	१६०)रु०

चीजों का दाम जानकर चकित होना स्वाभाविक था हमने यह भी सुना कि कोई-कोई विदेशी पर्यटक चुपके से यहा कुछ चीजें बेच भी देते हैं मगर इससे क्रेता और विक्रेता दोनों को ही खतरा रहता है सोवियत सरकार इस ढग के कानून उल्लघन पर कड़ा दण्ड देती है हमने साथ के सरकारी अधिकारी से इन ऊचे दामों के बारे में पूछा तो वे बिचारे सतोषजनक उत्तर नहीं दे पाये दूकानें सब सरकारी थीं इसलिए लागत और पडता का तो सवाल ही नहीं था

कार्यक्रम कुछ अरुचिकर सा लग रहा था हमने लक्ष्य किया कि हमें पहले से निर्धारित की हुई जगह दिखाई जा रही है, जहा हमारे लिए पूर्व निश्चित तैयारी है उपाय भी नहीं था तन के साथ मन को भी चलाने का असफल प्रयोग साम्यवादी कहा तक करते रहेंगे कुछ समझ में नहीं आया प्रभुदयाल जी ने शहर के पुराने हिस्से को देखने की इच्छा प्रकट की तो सरकारी आफिसर बहान बनाकर उसे टाल गये हम लोगों न भी अधिक आग्रह करना उचित नहीं समझा मैंने धीरे से उन्हे कहा, 'कोई बात नहीं, कल म अकेले ही बहुत कुछ देख आया हू आपको पूरी जानकारी दे दूगा"

हम चाहते थ कि यहा को आर्थिक अवस्था और व्यवस्था की कुछ जानकारी पा सकें श्री मिरकोव स पूछने के अलावा कोई चारा नहीं था रीडस डाइजेस्ट में एक लेख पढा था कि साम्यवादी दश कुछ समय पहले तक तो अभेद्य, लौह प्राचीर के अन्दर थ वहा से किसी प्रकार के आकडे मिलने सभव नहीं हालाकि, अब कुछ शिथिलता अवश्य की गयी ह परन्तु वहा दूसरे देशो की तरह जानने या जाचन की सुविधा कतई उपलब्ध नहीं ह फिर भी, मेरा अनुमान है जो बातें हमन पूछी—उनका जवाब गलत मानन का हमारे पास कोई कारण नहीं है १८६५ तक उजबकिस्तान तुर्किस्तान का एक अचल था ज्यादातर जमीन रेतीली और रेगिस्तानी है, पहाड भी ह नदियो में आमू और सायर ह जिनके किनारे रूई और फलो की खेती और बागवानी की जाती है रगिस्तानी हिस्सो में वैज्ञानिक साधनो के द्वारा खती करने का प्रयास प्रारम्भ किया गया ह जिससे अच्छी किस्म की रूई यहा बडी मात्रा में पदा होन लग गयी है फिर भी अन्न के लिए इस अचल को सोवियत सघ के अन्य देशो पर निभर रहना पडता है साम्यवादी क्रांति के पूर्व यहा को साक्षरता थी तीन प्रतिशत किन्तु इस समय यह बढ़ कर अस्सी प्रतिशत हो गयी है महिलाओं को पुरुषो के समान ही अधिकार प्राप्त हैं कुछ कट्टर मुल्ला

सोवियत उजबेक की विज्ञान अकादमी के अणु केंद्र में अणु यंत्र

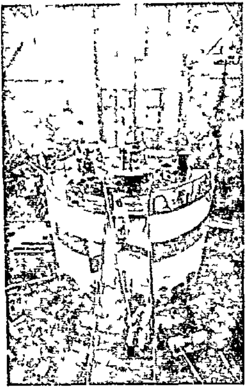

और मौलवियों ने इसका विरोध किया और उत्पात-उपद्रव की चेष्टा की किन्तु उनका कठोरता के साथ दमन कर दिया गया यद्यपि सोवियत संघ के केन्द्रीय भाग की तरह यहा उच्च वैज्ञानिक प्रयोग-शालाए और अनुसधान केन्द्र नहीं हैं फिर भी कपडे की मिल, रासायनिक और लकडी चिराई के कारखाने हैं हम जानना चाहते थे कि यहा के मिल और कारखानो की उत्पादन क्षमता कितनी है पर पूछने पर हमें जानकारी नहीं मिली वे लोग विवश थे, शायद उन्हें पहले ही हिदायत दी जा चुकी थी कि क्या दिखाना और कितना बताना है

दूसरे दिन जब हम मास्को के लिए रवाना होने लगे तो ताशकन्द के अपने मेजबानो को भारत से लाये छोटेछोटे उपहार भेंट दिये शुरू में तो वे इन्हे स्वीकारने में कुछ हिचके परन्तु आफिसरो के रुख को देखकर खुशीखुशी सबो ने ले लिया हमारे लिए तो वे कुछ ही रुपयो के थे किन्तु वहा के दामो में ये दुर्लभ जरूर थे और शायद इनका खरीदना उनके बस की बात भी नहीं थी.

प्लेन में बैठा सोचने लगा कि जीवन में इस प्रकार के अवसर कई बार आते हैं हम नयी जगह जाते हैं—वहा के लोगो से मिलते हैं—कभीकभी उनमें से किसी से मेलजोल भी हो जाता है. परन्तु फिर शायद ही कभी उनसे मिलना होता है यात्री यदि इन यादों को मन में सजोए रखे तो उसके लिए शान्ति से जीवनयापन कठिन हो जाता है इसलिए ही शायद हमारे धर्म ग्रन्थो में लिखा है कि किसी भी वस्तु या घटना से लगाव मत रखो

मास्को-१

रूस के उतारचढाव से संबधित प्रसिद्ध शहर

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक म रूस व जापान के युद्ध के कारण भारतीय राजनीति के विद्यार्थी यूरोप में ब्रिटिश ओर जर्मनी के अतिरिक्त रूस का नाम भी जानने लगे थे. १९१९ में जलियावाला बाग का हत्याकाड हुआ और इस के बाद १९४२ तक भारतीय स्वतत्रता के सेनानियो पर विदेशी नौकरशाही के साथसाथ देशी रियासतो के राजेमहाराजे और नवाबो के अत्याचार इस कदर बड रहे थे कि उन की स्वेच्छाचारिता, नृशसता और बर्बरता को जारशाही कहा जाता था अर्थात रूस के सम्राट जार के द्वारा किए गए अत्याचारो से तुलना की जाती थी रूस में जारो का शासन १९१७ तक रहा उस के बाद वहा लेनिन के नेतृत्व में जनता ने विद्रोह किया अतिम जार सम्राट प्रजा द्वारा परिवार सहित मार डाला गया इस से पूर्व भी कई बार जनता ने जारशाही का अत करने के लिए विद्रोह किया था किंतु कज्जाक सिपाहियो के द्वारा उसे कुचल दिया गया इन घटनाओ को पढसुन कर रोगटे खडे हो जाते ह

१९१७ के बाद से रूस में राजतत्र का अत कर साम्यवादी शासन की स्थापना हुई पूर्व में प्रशात महासागर, उत्तर में उत्तरी ध्रुव सागर, पश्चिम में बाल्टिक सागर तथा दक्षिण में हिमालय की हिंदूकुश की श्रेणिया तथा पामीर का पठार इस विशाल भूखड में फैले रूस साम्राज्य को सोवियत समाजवादी सघ की सज्ञा दी गई साम्यवादी सरकार का शासन यहा १९३९ ई० तक निर्विघ्न चलता रहा

इस समय तक यूरोप के राजनीतिक मच पर हिटलर का सिक्का जम चुका था

हिटलर भी अपने को समाजवादी कहता था और उस ने अपने दल का नाम भी रखा राष्ट्रीय समाजवादी दल (नेशनल सोशलिस्ट पार्टी—नात्सी) प्रथम महायुद्ध के बाद दो धाराए यूरोप में पनपीं—एक साम्यवाद के रूप में रूस में, दूसरी उस के कुछ वर्ष बाद, नात्सीवाद या फासिस्टवाद के रूप में जर्मनी, इटली और स्पेन में हिटलर के अधिनायकत्व में जर्मनी ने आशातीत प्रगति की वह अपने देश में पूजा जाने लगा विदेशो के लोग विस्मय से उसे देखने लगे रूस की प्रगति तब तक धीमी ही रही

जो भी हो, ये दोनो धाराए एकदूसरे से दूर हटती गई स्थिति यहा तक बनी कि एकदूसरे को साम्राज्यवादी, विस्तारवादी आदि कहने लगे हिटलर के प्रताप

मास्को शहर की सबसे बडी इमारत 'मास्को विश्व विद्यालय'

और प्रभुत्व से सारे यूरोप के देश, विशेषत ब्रिटेन और फ्रास आतकित हो उठे हिटलर दहाड उठा साम्राज्यवादी ब्रिटेन और फ्रास के विरुद्ध उत्कट राष्ट्रवाद और जातिवाद ने जिहाद बोल दिया १९३९ में युद्ध छिड गया मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि नये युग के यूरोप की एक विशेष धारा का सघर्ष साम्राज्यवाद से छिडा, किंतु आश्चर्य की बात यह हुई कि एक वर्ष के अदर ही समाजवादी रूस और जर्मनी की टक्कर कमजोर पोलैंड के बटवारे को ले कर हो गई रूस भी ब्रिटेन व फ्रास की मित्रशक्ति में सम्मिलित हो गया

सन १९४१ से १९४५ तक चार वर्षों में मित्र राष्ट्रों ने रूस को अपरिमित युद्ध सामग्री दी इसी सिलसिले में इन देशो के लोगो का आवागमन भी वहा सभव हुआ, अन्यथा रूस में दूसरे देशो की भाति प्रवेश पाना सहज और सरल नहीं था इस प्रकार बाहरी दुनिया को रूस के साम्यवादी शासन एव उस की प्रगति का अनुमान हो सका पर ज्यों ही युद्ध समाप्त हुआ, मित्रो की मैत्री ढीली पड गई सोवियत रूस और अन्य जनतत्री राष्ट्रों में सदेह की खाई बढती गई ऐसा होना स्वाभाविक था, क्योंकि दोनो के शासनतत्र के सिद्धांतो में मूलभूत अतर तो था ही

स्वाधीनता के बाद भारत ने प्रारभ से ही विश्व की राजनीति में अपने को गुटबदी से पृथक रखने की तथा सब से मैत्री की नीति अपनाई इसलिए स्टालिन के शासनकाल में भी रूस से हमारा व्यवहार मैत्रीपूर्ण रहा फिर भी साम्यवादी

शासन ने रूस को लौह प्राचीर के अतर्गत ही रखा जो समाचार रूसी सरकार के मुखपत्र 'प्रावदा' में प्रकाशित होते थे, उन से ही थोडी बहुत जानकारी वहा की मिलती थी

१९५५ में रूसी प्रधानमत्री बुलगानिन और वहा के साम्यवादी दल के मुख्य नेता श्री ख्रुश्चेव भारत आए आज भी हमें याद है कि भारतीय जनता ने उन का अपूर्व स्वागत किया था उस के बाद जब हमारे प्रधानमत्री श्री नेहरू रूस गए तो रूसी जनता ने उन का हार्दिक अभिनदन किया रूस के इतिहास में शायद ही इतना विशाल जनसमूह किसी विदेशी राजन्य अथवा नेता के लिए एकत्र हुआ होगा रूसी जनता भारत की गुटनिरपेक्ष नीति से प्रभावित थी और उसे एशियाई देशों में अग्रणी समझती थी उन्हें विश्वास था कि श्री नेहरू विश्वशाति के लिए अटूट प्रयत्न और परिश्रम कर रहे ह

निकिता ख्रुश्चेव के प्रधानमत्री बनने के बाद रूस के बधनो में कुछ ढिलाई हुई भारतीयो के लिए विसा (प्रवेश पत्र) मिलने में भी कुछ सुविधा होने लगी वहा स्टालिन की दमन नीति की खुले तौर पर आलोचना होने लगी विदेशों से बहुत से यात्री जाने लगे तथा रूसी कलाकार और इजीनियरो को भी दूसरे देशों में जाने की अनुमति मिलने लगी

इससे पूर्व हमारे देश से कुछ पर्यटक विद्वान रूस हो आए थे, जिन में राहुल साकृत्यायन तथा यशपाल उल्लेखनीय हैं. इन दोनों ने वहा के बारे में लिखा भी है किंतु ऐसी धारणा है कि ये साम्यवादी विचारधारा के पोषक थे, इसलिए इन की बातें पूर्णत: निरपेक्ष नहीं हैं

ताशकद में दो दिन ठहर कर हम मई की एक दोपहर में मास्को पहुचे एयर-पोर्ट पर कई रूसी अधिकारी थे, इसलिए जाच पडताल में देर नहीं लगी इस समय तक म अमरीका नहीं गया था इसलिए एयरपोर्ट का भव्य रूप देख कर चकित रह गया हजारो छोटे बडे वायुयान खडे थे

वहा से मास्को शहर लगभग पचास किलोमीटर होगा रास्ते में हरे भरे खेत और बस्तिया दिखाई पडीं फिर एक बहुत ही शानदार गुबज दिखने लगा हमें बताया गया यह मास्को विश्वविद्यालय का गुबज है इस के बाद एक अच्छी चौडी सडक पर पहुचे दोनो ओर एक सरीखे बने सात मजिले मकान थे इन की सख्या हजारो की रही हो तो आश्चर्य नहीं हमें श्री मिरकोव ने बताया कि साम्यवादी सरकार न पहला काम लोगों के आवास की व्यवस्था का किया है और उसी उद्देश्य से ये मकान बनाए गए हैं पहले के बने सारे मकान जो व्यक्तिगत सपत्ति के रूप में थे, उन का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया इसलिए व्यक्तिविशेष द्वारा कानूनी अडचन उठाने का सवाल नहीं रहा

हमें वहां के प्रसिद्ध होटल 'लेनिनग्राड' में ठहराया गया सारा होटल वाता-नुकूलित था सर्दी इतनी अधिक थी कि बिना इस के कमरे में रहना या काम करना सभव नहीं था एयरपोर्ट से चलते समय सनसनाती सर्द हवा न हमें आगाह कर दिया था कि हम उस मास्को में हैं जहा की ठडक में नेपोलियन और हिटलर की फौजें जम गई थीं पूछने पर पता चला कि इन महीनों में जब कि भारत में गरमी के मारे शरीर पसीने से नहा उठता है और धरती तवा हो जाती है, यहा

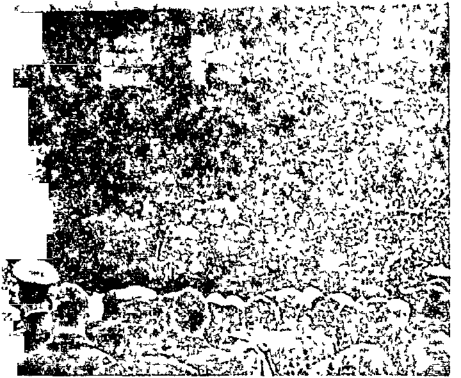

लैनिन स्मारक पर सिपाही ड्यूटी बदलते हुए

तापमान शून्य तक रहता है तथा जाड़े में तो शून्य से भी कहीं नीचे चला जाता है

होटल पहुचते शाम हो गई थी परतु लगता था दिन ढला नहीं यहा मई जून में १०, ११ बजे तक प्रकाश रहता है खाना खा कर बाहर जाने का मन था, किंतु मिरकोव और उस के साथी किसी काम से बाहर गए थे शायद हमारी अब तक की यात्रा का हवाला देने और आगे के लिए हिदायत लेने ताशकद के अनुभव ने हमें सिखा दिया था कि पर्व सूचना और सरकारी साथी के बिना सोवियत देश में घूमना परेशानी को न्योता देना है अतएव, होटल के ही इर्दगिर्द टहलने लगे

होटल के स्वागत कक्ष में काफी सख्या में विदेशी देखने में आए इच्छा तो हुई कि बातचीत कर जानकारी प्राप्त की जाए, पर प्रभुदयालजी के सकेत से सभल गया अगरेजी के कुछ समाचारपत्र वहा दिखाई पड़े देखा, मास्को से ही प्रकाशित थे और समाचारपत्र की अपेक्षा प्रचारपत्र अधिक लगे बाद में पता चला कि यहा विदेशी समाचारपत्रों के प्रसार को सरकार प्रश्रय नहीं देती

होटल के सामने एक बहुत बड़ा मैदान था घुटन सी हो रही थी अत मैं और प्रभुदयालजी वहा आ कर एक बेंच पर बैठ गए आसपास रूसी नागरिक भी घूमफिर रहे थे इन का स्वास्थ्य अच्छा था कद लबा, चौड़ी हड्डिया और चेहरे पर चमक थी स्त्रियां अपेक्षाकृत स्थूल और ठिगनी लगीं शरीर पर इन के गरम कपड़े तो जरूर थे, पर थे घटिया दरजे के जूते भी फटे से वाता-

यरण स्वच्छंद और उन्मुक्त था, पर यूरोप के अन्य शहरों जैसा उच्छृंखल
पेरिस, लंदन और रोम के पार्कों के रात्रिकालीन दृश्य तो यहां कतई नहीं दिखे

हमारे पास कुछ स्त्रीपुरुष आ कर खड़े हो गए. पूछने लगे. 'बुर्री इंदिस्की (भारतीय)?' रूसी हमें आती नहीं थी, अंगरेजी बेकार थी, हिंदी सवाल नहीं. हम ने मुसकराते हुए कहा, 'इंदिस्की' और नमस्कार किया. पं नेहरू ने रूस में नमस्कार को लोकप्रिय बना दिया था. हमारे नमस्कार से स प्रसन्न हुए. दोएक ने तो मुसकरा कर हाथ भी जोड़े. मैंने लक्ष्य किया कि हमारे ग मोटे ओवरकोट, क्लाइमो पर दस्तानें और जूतो को वे निगाह बचा कर बारबार रहे थे. स्वाभाविक ही था, क्योंकि वहां के स्तर के अनुसार ये चीजें बेशकीमती थीं

सर्दी बढ़ने लगी. लोगबाग जाने लगे. हम भी ग्यारह बजे अपने कमरे आ गए और सो गए. होटल की ग्यारहवीं मंजिल पर हमें कमरा दिया गया थ

दूसरे दिन सुबह उठ कर खिड़की के पास आया. हल्का कुहरा था, फि भी पास के मकान और सड़के साफ दिखाई पड़ रही थीं. नीचे झुक कर देखा पुराने मकान थे. जर्जर. रहनसहन का स्तर भी काफी नीचा लगा.

इन उत्तरी देशो में सर्दी इतनी अधिक पड़ती है कि पसीना आता ही नहीं इसलिए लोग स्नान की आवश्यकता महसूस नहीं करते. यो अरब में भी जहा गरमी काफी पड़ती है, वहा स्नान के प्रति लोगो में उदासीनता होती है, शायद पानी की कमी के कारण. पर हम तो भारतीय संस्कारो में पले है. इसलिए रूसी सर्दी का हमारी दिनचर्या पर असर नहीं पड़ा. हम ने स्नान किया और नाश्ते के लिए तैयार हो गए.

आठ बजे हम नाश्ते के लिए भोजन कक्ष (डाइनिंग रूम) में आए. हमारे लिए अलग से एक बड़ी सी मेज सजा कर रखी गई थी. उस पर गुलदस्ते रखे थे, सभी तश्तरियो में अनेक प्रकार के फल, फलों के रस, दूध के बड़ेबड़े कंटर आदि. कई प्रकार की मिठाइयां भी थीं हम ने लक्ष्य किया, ताशकंद की भांति यहा भी अन्य व्यक्तियों की मेजो पर मोटी रोटियां, भुना हुआ रसदार मांस और काली कॉफी रखी हुई है. मैंने धीरे से प्रभुदयालजी से कहा, "रूस की जलवायु अच्छी है, वरना ऐसे आहार पर इन का स्वास्थ्य कैसे बना रहता!"

हमारा एक अन्य साथी फुसफुसाया, "साम्यवाद तो सब के लिए बराबरी का दावा करता है, फिर भोजन में इतना अंतर क्यो है?

श्री भट्टाचार्य ने इस का जवाब दिया, "हमारे यहा भी तो विदेशी मेहमानो के लिए ट्रेनो में नई बोगियां लगती हैं, स्पेशल ट्रेनें दौड़ा दी जाती हैं, वरना आम जनता तो तीसरे दरजे में खड़ेखड़े भी चली जाए तो गनीमत है"

नाश्ता कर के सब से पहले हम लेनिन और स्टालिन की समाधियां देखने गए ये क्रेमलिन की दीवार के बाहर रेड स्क्वायर में हैं इस जगह के बारे में हम ने बहुत कुछ पढ़ रखा था राजतंत्र के विरुद्ध क्रांति के सेनानी वीरो की खून की होली—जार के कज्जाक सैनिकों द्वारा यहा अनेको बार खेली गई थी अंतिम युद्ध भी इसी लाल चौक में सन १९१७ में लड़ा गया, जब कि जार सरकार के सशस्त्र सैनिको ने भूखीनंगी निरीह जनता पर गोली चलाने और उन्हें घोड़ो के पैरो के नीचे रौंदने से इनकार कर दिया था. उस समय के शहीदो को

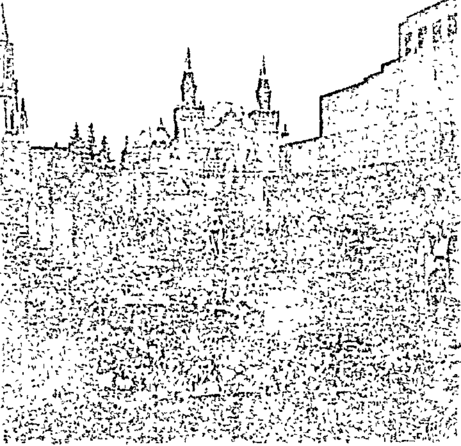

स्टालिन की कब्र सिर्फ फूलो मे ढकी ?

पाच सौ समाधिया क्रेमलिन की दीवार मे सटी हुई हैं.

लेनिन और स्टालिन का समाधि स्थल भी क्रेमलिन की दीवार के पास रेड स्क्वायर के पास के कोने में हैं. बाहर से काले और लाल संगमरमर की बनी यह इमारत विशेष आकर्षक नहीं लगती. फिर भी देशविदेश के दर्शनार्थियों की लंबी कतारें यहां लगी ही रहती हैं. हमारे साथ के अधिकारी ने वहां खड़े प्रहरियों को कुछ संकेत किया, हमें क्यू में खड़ा नहीं होना पड़ा. हम ने यह भी लक्ष्य किया कि रूसी नागरिक जो वहा खड़े थे, उन्हे बुरा नहीं लगा, अपितु हमें विदेशी जान प्राथमिकता देने पर वे प्रसन्न थे.

प्रवेश द्वार से लगी कुछ सीढ़ियां उतरने पर हम ने देखा, दो ऊंची टेबलें शीशे से ढकी कक्ष में रखी हैं. एक पर लेनिन और दूसरी पर स्टालिन फौजी वरदी में सोए हुए हैं. चेहरे की भावभंगिमा, कपड़ों की ताजगी और सफाई देख कर यह अनुभव ही नहीं होता कि वे शव हैं. लेनिन की शक्ल पर कुछ शिकनें जरूर हैं ऐसा शायद इसलिए कि लेनिन अंतिम वर्षों में अस्वस्थ रहा. पर स्टालिन तो

ऐसा लगता है जैसे अभी सोया है जो भी हो रूस के इन दो भाग्यविधायक को देख कर बहुत सी बातें मेरे दिमाग में घूमने लगीं

साम्यवाद ईश्वर को अथवा दैवी शक्ति को नहीं मानता धर्म उस के लिए मानसिक विकृति अथवा दुर्बलता का द्योतक है किंतु मनुष्य के शव की पूजा! इसलाम में भी तो मूर्तिपूजा का निषेध है, पर काबा के पत्थर को सभी चूमते हैं हजरत मुहम्मद साहब के बाल को शीशे की नली में हिफाजत से रखा गया है हजारों सिर उसे देखते ही झुक जाते हैं फिर क्यों मुसलमानों ने नालंदा और राजगृह के बौद्धविहार उजाड़े, सोमनाथ को खंडहर बनाया ईसाइयों ने भी यही किया क्रूसेड के नाम पर दानव बन मानवता को तलवार के घाट उतार कर अपने लिए स्वर्ग द्वार खुलवाए साम्यवाद ने उसे दोहराया गिरजों और मसजिदों को म्यूजियम बना दिया हजारों पादरियों और मुल्लाओं को साइबेरिया भिजवा दिया साम्यवाद के नशे में या उस के आतंक से रूसी जनता ने सब कुछ सहा

मैं देख रहा था, कितना सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व था स्तालिन का फिर भी यह व्यक्ति कितना क्रूर और दुर्धर्ष आजीवन रहा इस के सामने जाने की और बोलने की लोगों की हिम्मत नहीं होती थी आज वह निर्जीव और असमर्थ पड़ा है शीशे से ढका न रहता और प्रहरी भी नहीं रहते तो शायद मैं उस की उस तर्जनी को अवश्य छूता, जिस के इशारे से लाखों के जीवन का ही नहीं, अनेक देशों के भाग्य का वारान्यारा होता था

हम जिन दिनों रूस में थे, स्टालिन की नीति की खुली आलोचना वहां होने लगी थी उस की तस्वीरें राजकीय भवनों से हटा दी गई थीं कहा जाता था कि वह मार्क्सवादी की जगह व्यक्तिवादी था

स्वदेश आने के कुछ दिनों बाद पता चला कि स्टालिन का शव क्रेमलिन की उस समाधि से हटा दिया गया है और कहीं दूर अनजान जगह भेज दिया गया है आश्चर्य हुआ जीवित व्यक्तियों से तो वैर भुगताने की बात सुनने और समझने में आती है मरने के बाद तो बड़े से बड़े शत्रु के प्रति भी वैर की भावना समाप्त हो जाती है, फिर स्टालिन तो थोड़े वर्ष पूर्व रूस के वर्तमान नेता और अधिकारियों का सर्वोच्च कामरेड था पर यहां शव को भी प्रायश्चित्त करना पड़ा स्टालिन ने भी अपने जीवन में लाखों को मौत के घाट उतारा बेघरबार किया अपने साथियों में से बहुतों को साइबेरिया की सर्दी में ठिठुर कर मरने को भेज दिया या षड्यंत्र कर उन की हत्या करा दी ट्राटस्की को, जिस ने साम्यवाद की स्थापना में उस से कम सेवा नहीं की, स्टालिन के आतंक से स्वदेश छोड़ना पड़ा फिर भी सुदूर मेक्सिको में जिस नृशंसता से उस की हत्या हुई, वह किसी से छिपी हुई बात नहीं है हमारे देश में ऐसी घोर नृशंसता का केवल एक ही उदाहरण मिलता है औरंगजेब का, जिस ने दारा के कटे सिर को धूल में लपेट, बूढ़े हाथी पर रख सारे शहर में घुमाया था सभी कट्टरताओं का रूप एक सा होता है

समाधि स्थल देख कर हम क्रेमलिन गए क्रेमलिन के साथ रूस का इतिहास कुछ इस कदर जुड़ गया है कि इसे एकदूसरे से अलग नहीं किया जा सकता इस का निर्माण १२वीं शताब्दी में हुआ इन दिनों मंगोल और तातारों के

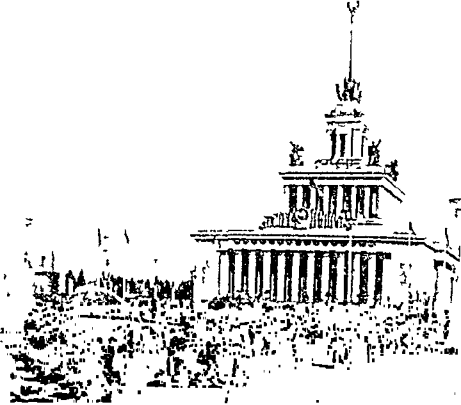

रूस की आर्थिक प्रगति की सचित्र झांकी प्रस्तुत करने वाली इमारत

हमले अकसर हुआ करते थे इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से क्रेमलिन के चारों ओर प्राचीर बना दी गई शुरू में यह लकड़ी की बनी थी, जो हमलावरों को रोकने में असफल रही, बाद में इसे ईंटों और पत्थरों की बना कर पक्का कर दिया गया प्राचीर खड़ी करने के बाद धीरेधीरे इस में गिरजे, गुबज और महल बनते गए सब से विशाल मीनार की ऊंचाई २२१ फुट है, हमारे कुतुब मीनार के बराबर

मास्कोवा नदी क्रेमलिन से सट कर बहती है यहीं लगभग १२५ वर्ष पूर्व जार ने अपना प्रसिद्ध महल बनवाया जिस में आजकल साम्यवादी पार्टी के बड़ेबड़े जलसे हुआ करते हैं यहीं क्रेमलिन का म्यूजियम भी है जिस की गणना संसार के बड़े संग्रहालयों में होती है यह तीन विशाल भवनों में है पहले में जारों की निजी वस्तुएं संग्रहीत हैं, राजमुकुट, सिंहासन, वस्त्र, पोशाक आदि विदेशों से उन्हें जो बहुमूल्य उपहार भेंट किए जाते थे, वे सब यहां सजा कर रखे गए हैं यों तो ब्रिटेन तथा अन्य कई देशों में म्यूजियम हैं, जिन में अच्छे और कीमती संग्रह हैं, किंतु जैसा कि हम ने पेरिस के लूव्रे और मास्को के क्रेमलिन में देखा, अन्यत्र कहीं भी इतनी दुर्लभ और अमूल्य वस्तुएं देखने में नहीं आईं

दूसरे भवन में हथियारों का अद्वितीय संग्रह है नाना प्रकार के हथियार विभिन्न समय के हैं फ्रांस के सम्राट नेपोलियन से छीनी गई अनेक प्रकार की तोपें भी रखी हैं

तीसरे भवन में जार की सरकार का सचिवालय था   राजतन्त्र के अवसान के बाद यह लेनिन का आवास बना   हम ने उस का अध्ययन कक्ष देखा   दवात, कलम, पैड आदि सारी चीजें इस प्रकार सजीसजाई रखी हैं, मानो थोडी देर पहले ही लेनिन यहां से लिख कर गया हो

इन सामग्रियो के बारे में जानकारी देने के लिए कुशल एव प्रशिक्षित गाइड रहते हैं   इन के अलावा विभिन्न भाषाओ में पुस्तकें भी हैं   किंतु वे तो रिसर्च स्कालरो के काम की हैं जो महीनो यहां बैठ कर साम्यवाद के विकास और उसके गूढ तत्वो का अध्ययन करते हैं   हमें तो दोतीन घटो में यहां सब कुछ देख लेना था

क्रेमलिन में तीन प्राचीन गिरजे भी हैं   एक में जहां जारो का राजतिलक होता था, वहां अब साम्यवादी नेताओ की समाधिया हैं   यहा हम ने विश्व का सब से बडा घटा देखा   २३० वर्ष पूर्व इसे जार ने बनवाया था   वजन है ५,६०० मन, ऊचाई और घेरा है क्रमश १८ फुट और २० फुट.

दोपहर हो आई थी   यद्यपि सुबह डट कर नाश्ता किया था, ठडा देश है, घूमे भी बहुत, भूख लग आई   फाटक के बाहर रेड स्क्वायर में आ गए   छुट्टी का दिन था हजारो दर्शक इधरउधर घूम रहे थे   हम ने १ मई की फौजी परेड की तसवीरें देखी थीं, यह चौक हमें अपरिचित नहीं लगा

एक बजे होटल आ कर भोजन कक्ष में गए   हम शाकाहारियो के लिए रोटी, मुरब्बे, मक्खन, केक और फलो के रस की व्यवस्था थी   हमारे साथियो में जो आमिषाहारी थे, उन के लिए एक बेशकीमती और दुष्प्राप्य सामग्री मगाई गई थी मछली के अडे   रूसी भाषा में इसे 'केवियर' कहते हैं   चिरमी के आकार के काले मटमैले से   इन्हें चख कर हमारे साथी स्वाद की बडी प्रशसा कर रहे थे   भोजन के बाद प्रथानुसार वोदका पी कर स्वास्थ्य के लिए शुभकामना की गई   हम ने फलो के रस के गिलास ऊचे उठा कर प्रथा का निर्वाह किया

मास्को में हमारा प्रवास छ दिन का था   इसी के अनुसार सरकार न प्रोग्राम बना दिया था   म इस आशा में रहा कि अन्य देशो की भाति यहा भी सरकारी मेहमानो के लिए एक दिन 'अपनी मर्जी से घूमोफिरो' की छूट मिलेगी, पर मेरा अनुमान गलत निकला

दिन के तीन बजे श्री मिरकोव के साथ उद्योग और कृषि सबधी यहा की स्थायी प्रदर्शनी देखने गए   वैसे हमारे देश में भी प्रदर्शनियो के आयोजन होते रहते हैं   पर यहा जो कुछ देखा, अदभुत और कल्पनातीत था   ५०० एकड के मैदान में सैकडो विशाल भवन बने थे   बीचबीच में दूब के लान और फूलो के बगीचे थे, जिन में फव्वारे चल रहे थे

प्रवेश द्वार देखते ही प्रदर्शनी की भव्यता का अनुमान हो जाता है   द्वार के ऊपर रूसी कृषक दपति की विशाल धातु मूर्ति है जो वहा के मूर्धन्य शिल्पियो द्वारा बनाई गई है   हाथो में जौ की बालिया लिए हुए वे कदम बढा रहे ह   मिरकोव ने बताया कि इस में ३०० से अधिक मडप सोवियत सघ के प्रत्यक जिलो के हैं जिन में वहा के उद्योग और कृषि के उत्पादन का प्रदशन किया गया ह   लाखो व्यक्ति इसे देखने के लिए प्रति वर्ष आते ह   विद्यार्थियो के लिए तो यहा इतनी सामग्री एकत्रित ह कि उन्हे बहुत कुछ सीखने और समझने की सुविधा सहज ही मिल जाती

है   अनेक विदेशी यात्री और विद्यार्थी भी यहा आते रहते हैं. श्री मिरकोव ने बताया कि इसे अच्छी प्रकार देखने के लिए महीनों का समय चाहिए. हमें तो उसे समयाभाव के कारण सरसरी तौर पर देखना था इसलिए मोटरो से ही प्रमुख मडपो को देखा

केंद्रीय मडप सब से बडा है   यहां जारो के समय की खेती की स्थिति, उस के आकडे, भूमि की उर्वरा शक्ति, उत्पादन और कृषि के औजार आदि दिखाए गए हैं   साथ ही साम्यवादी शासन के इन ४५ वर्षों में कृषि की कितनी उन्नति हुई है और वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग से कितना अधिक विकास हो सका है, इस के आकडे एव विवरण चित्रो तथा प्रत्यक्ष यत्रो द्वारा प्रदर्शित हैं   सब प्रकार के शस्यादि अन्न एव फल शीशे की मेजो पर बडे ही कलापूर्ण ढग से सजे हैं

अन्य मडपो में अपनेअपने अचल की विशेष जानकारी दी गई है   किसी में भेडबकरियो एव मधुमक्खियो की नसलसुधार की दिशा में प्रगति, तो किसी में मुर्गी पालन की, कहीं मछली तो कहीं सुअर, गाय, घोडे की   कहीं जगली पेडो की नसल सुधार कर उन्हे मोटा और लबा बनाने की दिशा में प्रगति दिखाई गई है तो कहीं सब्जियो और फलो के विकास और उत्पादन का नवीनतम परिचय दिया गया है   जार्जिया के चाय के उत्पादन प्रयास पर भी प्रकाश डाला गया है   सभी मडपों में गाइडो के अलावा सभी भाषाओ में आवश्यक विवरण उपलब्ध हैं   अग-रेजी और फ्रेंच की तो बात ही क्या, अरबी, फारसी, चीनी और जापानी में भी है पर भारतीय भाषाओ में कोई भी परिचय देखने में नहीं आया, हिंदी में भी नहीं. भारत में सोवियत प्रचार विभाग द्वारा प्रसारित रूस के हिंदी प्रेम की यह असलियत जान कर आश्चर्य हुआ

दर्शकों में विद्यार्थी काफी सख्या में थे   इन्हे तीनचार कक्षो को सरसरी तौर पर देखने में दो घटे लग गए   अभी हमारी रुचि के विषय—उद्योग और विज्ञान के मडप नहीं देखे जा सके थे   इसलिए कार में बैठ कर उस हिस्से में गए

यहा जो कुछ देखा, उस से अदाजा हुआ कि द्वितीय महायुद्ध के समाप्त होने तक रूस औद्योगिक यत्रो के निर्माण और कौशल में ब्रिटेन, फ्रास, जर्मनी और अम-रीका से काफी पिछडा हुआ था, क्योंकि उस ने अपनी सारी शक्ति कृषि के विकास में नियोजित कर दी थी. युद्ध के बाद के इन १५ वर्षों में, शिल्प और उद्योग की ओर ध्यान दिया गया और विभिन्न प्रकार की छोटीबडी मशीनों का उत्पादन किया जाने लगा है   फिर भी जो निपुणता और कारीगरी पश्चिमी जरमनी, स्विटजरलैंड और ब्रिटेन की मशीनों में दिखाई पडती है, वह यहा नहीं है   हा, खेती के ट्रैक्टरो के उत्पादन में ये सब से आगे है   ये सस्ते है तथा छोटेबडे कई प्रकार के हैं

विज्ञान मडप में राकेट और स्पूतनिक के माडल देखने को मिले   प्रथम स्पूत-निक, जो अतरिक्ष में भूमडल की कई परिक्रमा कर चुका था, हम ने यहा देखा गाइड ने गर्व से कहा, "इस दिशा में हम अमरीका से बहुत आगे बढ चुके हैं"

यह सही था, क्योंकि कुछ दिनो पूर्व ही रूसी युवक यूरी गागारिन अतरिक्ष की सफल यात्रा कर आया था   हम ने मिरकोव से पूछा, "क्या सोवियत सघ ऐसे भी राकेट बना रहा है जो बटन दबाते ही निर्दिष्ट लक्ष्य पर विस्फोट कर देंगे?"

उस ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया सभवत उसे पता न हो या इन विषयो पर न बोलने के सरकारी निर्देश हो जो भी हो, किंतु आज यह किसी से छिपा नहीं कि अमरीका और रूस दोनो ने ही ऐसे सहारक प्रक्षेपास्त्र बना लिए हैं

उस समय तक हाइड्रोजन बम बन चुका था किंतु प्रदर्शनी में एटम और हाइड्रोजन दोनो ही प्रकार के बम नहीं रखे गए थे

३०० मडपों में से हम केवल सातआठ ही देख पाए थे कि रात होने लगी ठडक होने के बावजूद थकावट आ गई वहीं एक कक्ष में बैठ कर गरम काफी ली और रवाना हुए देखा, करोडो पावर की तेज रोशनी के रगीन बल्ब और नियोन जगमगा रहे हैं यदि आधुनिक रूस का सही परिचय इस प्रदर्शनी से मिलता है तो यह मानना पडेगा कि साम्यवादी प्रयोग को सफलता मिली है, किंतु निर्णय पर तो तभी पहुचा जा सकता है जब जनसाधारण से मिल कर, गावों में जा कर वास्तविक स्थिति का अध्ययन स्वतत्र एव बेरोकटोक करने दिया जाए यो तो हम भी विदेशियो को भाखडानगल और चडीगढ दिखा कर अपने देश की प्रगति का परिचय करा देते हैं हम इतनी ईमानदारी अवश्य रखते हैं कि विदेशियों पर आवागमन के और जनसाधारण से मिलने के मामले में कोई प्रतिबंध नहीं रखते

हमारे यहा जिस प्रकार महात्मा गाधी को राष्ट्रपिता मानते हैं, आधुनिक रूस में लेनिन के प्रति उसी प्रकार की श्रद्धा है रूस भी भारत की तरह सदियो तक ऐयाश और क्रूर शासकों द्वारा शोषित और त्रस्त रहा दोनो ही देशो में आम लोग भूखो मरते रहे हैं अन्न उपजाने वाले किसानो के बच्चे अभावों में दम तोडते रहे हैं नवाबो और राजाओ ने तीतर, बटेर तथा कुत्तो की फौज पर लाखो रुपए बरबाद किए, पर रियाया की राहत के लिए अस्पताल और स्कूल की आवश्यकता नहीं समझी किसी ने आवाज उठाई तो कोडे बरसे भारत में गाधीजी ने *अहिंसात्मक आदोलन चला कर राष्ट्र को नया जीवन दिया रूस में लेनिन ने* हिंसात्मक क्राति से राजतत्र को समाप्त किया यह विवाद अभी अनावश्यक है कि सही रास्ता कौन सा था समय इस का निर्णय करेगा

दूसरे दिन हम लेनिन की स्मृति में बने स्मारकभवन को देखने गए सर्वप्रथम हमें क्राति चौक के सग्रहालय में ले जाया गया इस विशाल भवन में १९१७ में जार के समर्थकों ने भाग कर शरण ली थी, किंतु क्रातिकारी सैनिको ने उन को बाहर ला कर गोली से उडा दिया था इसलिए इस का नाम क्राति चौक पडा

सग्रहालय में रूस के गत १०० वर्षों का पूरा इतिहास है क्रातिकारियों को कसी यातनाए दी गई, किन सघर्षों से गुजर कर साम्यवादी शासन की स्थापना की जा सकी आदि सब बातें चित्रो और चार्टों के माध्यम से दिखाई गई हैं लेनिन द्वारा बरती गई सभी वस्तुए यहा सजा कर रखी गई हैं उस के अतिम काल में पहने गए ओवरकोट को भी देखा, जिसे छेद कर गोली निकल गई थी

मास्को से २० मील दूर गोर्की नाम का गाव है, जहा लेनिन ने अपने जीवन के अतिम छः वर्ष बिताए थे जीवन की विषमताओ से और देश की उथलपुथल की चिंताओं से जूझते हुए, विदेशो में दीर्घ काल तक अभावग्रस्त में रहने के कारण उस का स्वास्थ्य टूट चुका था इसलिए स्वतत्रता के बाद १९१८ में वह

मास्को से यहां आ कर रहने लगा. १९२४ तक यहीं रहा. आसपास गरीब किसानों के छोटेछोटे घर हैं एक प्रकार से यह देहात ही है. लेनिन के इस स्मारक में उसे लिखे गए अगणित पत्र तथा उपहारों का संग्रह है. लिखने की मेज, पहनने के कपड़े और पलंग आदि सभी सुरक्षित हैं. इन्हें देखते हुए मुझे लेनिन के जीवन की एक घटना याद आ गई. हमारे क्रांतिकारी नेता राजा महेंद्रप्रताप एक बार लेनिन से मिलने यहां आए थे. उन का सामान एक मजदूर ढो कर लाया था. लेनिन ने पहले उस मजदूर से हाथ मिलाया फिर राजा साहब से.

रूस के महान लेखक मैक्सिम गोर्की से लेनिन की गहरी मित्रता थी. कहना चाहिए कि वह गोर्की का अनन्य भक्त था. इसलिए इस गांव का नाम गोर्की रखा गया रूस में आज भी लेनिन के बाद यदि किसी का नाम है तो वह है गोर्की और तालस्ताय का.

मास्को से गोर्की जाते समय किसानों के घर दिखाई दिए. इन से सटे हुए छोटेछोटे खेत और फलों के बगीचे थे. पूछने पर पता चला कि ख्रुश्चेव की सरकार ने सहकारी खेती (कलखोज) के साथसाथ इन लोगों को छोटे पैमाने पर निजी खेती करने की भी छूट दी है इस की उपज को वे खुद काम में ले सकते हैं अथवा बाजार में बेच भी सकते हैं. हमें अन्य सूत्रों से यह जानकारी भी मिली कि निजी खेती की प्रति एकड़ उपज सहकारी खेती की उपज से दुगुनी से भी अधिक है उन के द्वारा बहु प्रचारित सहकारी खेती की वास्तविकता की पोल न खुल जाए, इसलिए रूसी सरकार इस तथ्य को छिपाती है. किसानों का स्वास्थ्य साधारणत अच्छा दिखा हम उनके घरों में जा कर उन के रहनसहन को तो देखना चाहते थे पर यह संभव न था. दूर से ही देख कर संतोष कर लिया छोटे खेतों में ट्रैक्टर के उपयोग का प्रश्न नहीं उठता हां, इन में छोटे मोटरचालित यंत्रों को देखा जमीन की खुदाई वगैरह का काम किसान नरनारी अपने हाथों से ही कर रहे थे

दोपहर बाद हमें विदेश व्यापार मंत्री से मिलने जाना था नई दिल्ली की तरह यहां भी विभिन्न मंत्रालयों के अलग-अलग भवन हैं. शान्त वातावरण, सफाई और अपने काम के प्रति रुचि ने हमें वहां के अनुशासन का अच्छा एवं प्रभावशाली परिचय दिया मंत्री महोदय से औपचारिक बातों के बाद रूस के आयातनिर्यात से संबंधित चर्चा हुई भारत से रूस में किस प्रकार आयात बढ़ाया जाए, चायनास्ता के साथ इस पर भी चर्चा हुई

हम ने लक्ष्य किया कि यद्यपि उन में बहुत से अंगरेजी जानते थे, फिर भी बातचीत दुभाषिए के माध्यम से कर रहे थे इस प्रकार उन्हें सोचने और समझने का मौका मिल जाता था शायद यह भी उद्देश्य हो कि एकदूसरे की बातों पर निगरानी भी रख सकें

उन की बातचीत से ऐसा आभास हुआ कि सारी बातों का खाका पहले ही तैयार कर लिया गया था. विदा करते समय उन्होंने हमें रूस के व्यापार के संबंध में बहुत सी सचित्र पुस्तकें भेंट कीं

मास्को-२

धर्म के साथ-साथ मानवता से भी चिढ ?

मास्को में रहते दो दिन हो गये थे इस छोटे से अर्से में कभीक्दास अकेले ही घूम लेने मे याद कुछ हिम्मत बढ़ी

डा० राजेन्द्र प्रसाद की निजी सचिव श्रीमती ज्ञान दरबार के भाई श्री परमात्मा प्रकाश वहा के रेडियो मे हिन्दी विभाग में थे दिल्ली से रवाना होते समय श्रीमती दरबार ने उन का एक परिचय पत्र मुझे दे दिया था रूस के बारे में निष्पक्ष जानकारी भी लेनी थी इसलिए अगले दिन उन से मिलने का प्रोग्राम तय किया

सुबह चार बजे उठा प्रभुदयालजी सो रहे थे चुपके से बिस्तर छोड तयार हो गया खिडकी से बाहर झाक कर देखा—कुहासे की हल्की सी चादर में मास्को अलसाया सा करवट ले रहा था किसी को कुछ कहे बिना होटल से बाहर निकल आया

उजाला हो गया था पर सडको पर इक्केदुक्के ही आदमी दिखाई पड रहे थे औरते लम्बे ब्रश से सडकें साफ कर रही थी स्वास्थ्य इन का अच्छा था पर इन में से कुछ काफी वृद्धा थीं वे इस काम के लायक नहीं थीं भारत में इस उम्र की औरते शायद ही काम करती हो आम तौर से अपन यहा इन की परवरिश परिवार् वाले ही करते ह जो निहायत अभागन होती हैं, उन्हें पट पालने के लिए भीख मिल जाती ह धीरेधीरे सडक पर बढता हुआ सोचन लगा साम्यवादी व्यवस्था में सयुक्त परिवार का तो सवाल ही नहीं रहता फिर इन बूढेबूढियो के पालनपोषण की जिम्मेदारी तो सरकार की ह जीवन की सध्या के बोझ ढोते हुए इन के लिए यदि आश्रम बना कर विश्राम करन की व्यवस्था होती तो कहा जा सकता था कि सामाजिक दायित्व का निर्वाह सरकार स्वय कर देती है कम से कम मानवता के नाते यह अपेक्षित भी है भले ही धम के नाम से साम्यवादी चिढ़ते हो पर मानवता का तो वे दावा रखते है हम ने अय यूरोपीय देशो में देखा था वृद्धो के लिए आवासगृह और खान पोने की व्यवस्था सरकार द्वारा समुचित रूप स ह

कदम बढता हुआ भूगभ ट्रन क स्टशन पर पहुचा नक्शा जेब में था ही एक बार फिर से उसे दख लिया यूनिवर्सिटी क्षत्र में जाना था मास्को की खूबी है भूगभ ट्रेनो की लन्दन, परिस, बर्लिन अथवा पृथ्वी के किसी भी देश

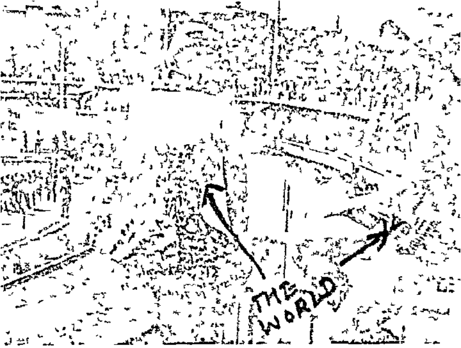

सभी जगह मुक्त परिवेश और स्वच्छन्दता का अभाव

में इस का मुकाबला नहीं भूगर्भ स्टेशनें क्या है मानो वास्तुशिल्प और कला-कारीगरी के अद्भुत नमूने है सफाई बेमिसाल और बेजोड़ मुझे ऐसा लगा कि साम्यवादी सरकार विशेष रूप से इन की व्यवस्था पर ध्यान रखती है प्रकाश की सुन्दर व्यवस्था और जगह जगह साम्यवादी प्रतीक, विचारक और नेतृवर्ग की मूर्तिया करीने से लगी हैं रूस के सर्वोत्तम रंगीन मारबल का प्रयोग यहा किया गया है

कुछ ही मिनटो में ट्रेन आ गयी कम ही यात्री थे बहुत धीरेधीरे आपस में बोल रहे थे कुछ कनी नजर से मुझे देख भी लेते थे कुछ मुस्कराते भी थे देख कर मुझे पिछले ५-६ दिनों में पता चल गया था कि रूस वालो के लिए विदेशियो से मिलनाजुलना खतरे से खाली नहीं और बिना वजह न्यौता देने का खतरा साम्यवादी शासन में शायद ही कोई साहस करे इंगलैंड के लोग साधारणतया अपरिचितो से खिचे से रहते है किन्तु यहा वालो की तरह बधबधे नही फ्रास, जर्मनी, इटली या यूरोप और अमेरिका के सभी देशों में जनता को विदेशियो से बोलने या मिलने जुलने की पूरी छूट है यात्रिक व्यवसाय की वृद्धि के लिए वे विदेशियो से बातचीत और मित्रता करने को उत्सुक रहते है किन्तु मानव समाज में पारस्परिक मिलन को नियत्रण में रख कर आज के साम्यवादी देश किस प्रकार अनुप्रेरित करने की सोच रहे है—समझ में आया नहीं

बात की बात में गन्तव्य स्टेशन पर ट्रेन पहुच गयी स्टेशन से निकल कर ऊपर सडक पर आया देखा सैकडो मकान एक सरीखे चारो तरफ बने हुए है और बहुत से बन रहे है हमारे यहा भी कलकत्ते में साल्टलेक अचल में स्व०

बिधानचन्द्र राय की प्रेरणा से पश्चिम बग सरकार ने जनता के आवास के लिए कुछ मकान बनाये हैं परन्तु कलकत्ते की बढ़ती हुई आबादी के लिए अब तक यह प्रयत्न अपर्याप्त सा ही रहा है मास्को में पश्चिम जर्मनी या हालैंड की तरह सब के लिए तो मकान नहीं बन पाये फिर भी प्रयत्न जोरो से चालू है सडक का नाम खोजने लगा दिक्कत हुई, कारण कि रूसी लिपि समझ में आती नहीं थी लोगो से बातचीत करने में भाषा की समस्या बाधक थी आखिरकार सभ्यता के आदिम युग की भाषा का प्रयोग किया यानी हाथ और मुह से सकेत काम कुछ बना, रूसी अग्रेजी सहायक पुस्तक भी कुछ सहायक बनी

करीब तीस मिनट लगे चक्कर लगाता हुआ उन के मकान पर पहुचा स्वचालित लिफ्ट से सातवीं मजिल पर पहुच कर उन के फ्लैट में लगी घन्टी की बटन दबाई कुछ ही देर बाद रात के लिबास में ही पतिपत्नी ने दरवाजा खोला उन की शक्ल के तनाव से जाहिर हो रहा था कि इतनी सुबह को अप्रत्याशित रूप से मीठी नींद में विघ्न पहुचाने वाले का स्वागत करने को वे दरवाजा नहीं खोल रहे हैं किन्तु ज्यो ही उन्होंने मुझे देखा, पहचान लिया, "अरे रामेश्वर जी, आइए नमस्ते हम तो आप की प्रतीक्षा में परसों से ही थे दिल्ली से आप के बारे में हमें हेडाजी ने लिखा है" श्रीमती हेडा, श्रीमती प्रकाश की बडी बहन थी और दिल्ली में मेरे पडोसी हैं इसलिए एक प्रकार से बिना पूर्व मिलन के ही पतिपत्नी दोनो का ही मैं परिचित था पारस्परिक झिझक क्षणो में मिट गया मुझे ड्राइग रूम में बैठा कर दोनो कपडे बदल कर आ गये उन्हें ताज्जुब हो रहा था कि इतने सवेरे होटल से चल कर इतनी दूर अकेला ही आया हू मैंने हसते हुए कहा, "घुमक्कडो के लिए अकेलापन या अजनबीपन बाधक नहीं, प्रेरक होता है मैंने तो सुदूर उत्तर के वीरान लैपलैन्ड में भी अकेले ही भ्रमण किया है" श्री प्रकाश कहने लगे, "भाई वह तो स्वीडेन है, वहा की बात और है क्या यहा आप से किसी सिपाही ने पूछताछ नहीं की? आप ने हिम्मत के सायसाथ जोखिम का काम किया, टाटिया जी यह न भूले यह मास्को है, साम्यवादी रूस की राजधानी यहा के नियम मानने में शिथिलता न लायें आप ने खुफिया पुलिस के सर्वोच्च अधिकारी बेरिया के बारे में तो पढा ही है भविष्य में सतर्क रह कर घूमाफिरा करे"

करीब घटे भर तक बातचीत होती रही अपने परिचित और रिश्तेदारो की खोजखबर, दिल्ली की गतिविधि, देश के बारे में नाना प्रकार की जिज्ञासा, सभी पर जीभर कर उन्होने बातें की छोडना ही नहीं चाहते थे क्योकि स्वदेश के लोग वहा बहुत कम मिलते हैं कुछ भारतीय हैं जरूर पर वे या तो दूतावास में या इजीनियरिंग कालेजो में कहने लगे, "मास्को रेडियो पिछले चार दिना से आप लोगो की खबरें प्रसारित कर रहा है. मुझे तो आश्चर्य हो रहा है कि भारतीय पूजीपतियो के सिरमौर श्री बिडला को यह साम्यवादी सरकार इतना महत्त्व किस कारण से दे रही है शायद रूसी प्रधान मत्री ख्रुश्चेव की नीति कुछ मौलिक परिवर्तन की दिशा में बढ रही है"

मैंने उन का फ्लैट देखा तापनियन्त्रित दो कमरो का है, स्वय सम्पूर्ण यानी गुसलखाना, रसोई पानी वगैरह सब कुछ है किराया यहा मासिक वेतन और

'गुम' में खरीदारी करते हुए

परिवार के सदस्यों की संख्या पर धार्य हैं. यदि केवल पतिपत्नी हैं और मासिक आय १५००) हैं तो फ्लैट का किराया लगेगा २००) रु०. किन्तु यदि साथ में दो बच्चे हैं और वेतन ५००) हैं तो उसी फ्लैट का किराया होगा केवल ३५) रु०. मुझे यह व्यवस्था और अनुपात बहुत जंचा. भारत में भी इस पद्धति को अपनाना अपेक्षित है. रूस में सारे मकान सरकारी हैं. हजारों की तादाद में हर साल मकान बनाये जा रहे हैं फिर भी आवास का अभाव अभी बना हुआ है. मजदूरों के कमरों में रेल के कम्पार्टमेंट की तरह सोने के लिए नीचे ऊपर खाटें बनी हैं. यानी १० × १२ फीट के कमरे में आठ व्यक्ति रहते हैं. वे बारीबारी से सोते हैं. पहली पारी के मजदूर जब आते हैं तो दूसरी पारी के कारखाने चले जाते हैं. इनके सामान रखने की सन्दूकें खाट में ही बनी हैं. एक प्रकार से, इस ढंग के आवास को छोटी डोरमेटरी कहा जा सकता है.

खाने की चीजों के बारे में उन्होंने बताया कि मोटी रोटी और सुअर का मांस तो सस्ता मिल जाता है. इन के अलावा, दूसरी चीजें काफी मंहगी हैं दूध-मक्खन और फलों की बहुतायत नहीं है. चिकनाई की पूर्ति सुअर की चर्बी से हो जाती है. आम तौर से यहां के लोगों की खुराक अधिक है यानी ३०००-३२०० कैलोरी प्रति व्यक्ति का औसत है. सर्द मुल्क के लिए इतना शायद जरूरी है भी. निरामिषों के लिए काफी दिक्कत है.

काम करना सब के लिए जरूरी है, चाहे स्त्री हो या पुरुष. जब महिलाएं

काम पर जाती है तो अपने शिशुओं को सरकारी 'क्रीजों' में छोड़ जाती हैं यहा उन की देखभाल नर्सें करती हैं, काम से वापसी पर अपनेअपने बच्चे लेकर घर चली जाती हैं. इन क्रीजों का सचालन और सगठन सरकार स्वय करती है

उन की बातों से काफी जानकारी मिली, जो रूस में दूसरी जगह मिलनी सभव नहीं थी. रूस के बारे में पक्ष विपक्ष में अतिरजित चित्रण ही मिलते हैं इसी कारण साम्यवादी पद्धति के प्रयोग का यथार्थ परिणाम सामने आ नहीं पाता

बहुत दिलचस्प बातें हो रही थीं, मगर मेरी लाचारी थी कि नाश्ते के पहले ही मुझे अपने होस्टल पहुच जाना चाहिए था अतएव, उन्हें दूसरे दिन सुबह अपने यहा आने का निमत्रण देकर विदा ली

होटल वापस आकर देखा मि० भट्टाचार्य ढूढ रहे थे कुछ चिन्तित भी थे मैंने अपना भ्रमण वृतान्त सुनाया तो वे चकित रह गये उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि इतनी जल्दी और अकेले दस मील जाकर, भेंट मुलाकात कर कैसे ८ बजे तक वापस आ गया मैंने धीरे से कहा—"भट्टाचार्य जी, घुमक्कड लोगो के पैरो में चक्कर होता है वे एक जगह जमकर बैठ ही नहीं सकते रही खतरे और झझट की बात सो वह उत्तरी दक्षिणी ध्रुवो और अफ्रीका के भयावह जगली देशो से तो यहां कम ही है"

८॥ बजे मिरकोव वगैरह आ पहुचे उनसे मैंने अपनी सुबह की सैर के बारे में कोई जिक्र नहीं किया

नाश्ते के बाद यहा के ट्रक निर्माण के कारखाने को देखने गये काफी बडा था. सभवत पैंतालीस हजार मजदूर वहा काम कर रहे थे. इस कारखाने की उत्पादन क्षमता थी १॥ लाख ट्रक प्रति वर्ष की हमारे देश के मोटरट्रको के सारे कारखानों से अकेले ही इसका उत्पादन कहीं ज्यादा था किन्तु अमेरिका के बडेबडे कारखानो से इसकी तुलना नहीं की जा सकती यहां भी चेन सिस्टम यानी श्रृखला पद्धति थी एक ओर से चलकर घूमती हुई जजीरो पर इजन के पुर्जे लगते जाते थे, फिर चेसिस बैठाई जाती थी और इस प्रकार अन्त में दूसरी ओर से ट्रक तैयार होकर निकलती थी यहा के एक ट्रक पर लागत बैठती थी लगभग १०,०००) रु० देखने में काफी मजबूत लगती थी हमारे यहां एक ट्रक पर लागत बैठती है लगभग २२,०००) रु० इसके अलावा सरकारी टैक्स है १५,०००) रु० अर्थात ग्राहक को ३७,०००) रु० में एक ट्रक पड जाती है कारखाने की व्यवस्था अच्छी थी और लगा मजदूर अनुशासन मानते हैं काम के समय बातचीत और चुहलबाजी जो आमतौर से हमारे यहा साधारणसी बात है, यहा के मजदूरों में नहीं देखने में आयी मुझे बताया गया कि व्यक्ति की कार्यक्षमता पर पदोन्नति और सुखसुविधा का ध्यान रखा जाता है अनुशासन का स्तर सैनिक कठोरता की तरह है कारखानो के अन्दर दलबन्दी या विरोध प्रदर्शन की गुजाइश नहीं है और न इन हरकतो को सरकार ही प्रोत्साहन देती है. मजदूर स्वस्थ और प्रसन्न लगे इन में स्त्रियो की भी काफी सख्या थी जो भारी काम भी बडी दक्षता से कर रही थीं हडताल के बारे में मैंने पूछा तो बताया गया, मजदूर कारखाना को अपना समझते हैं क्योकि सब राष्ट्र की सम्पत्ति है और देश की समृद्धि में ही उन का जीवन और सुखसुविधा सम्पूर्ण रूप से आधारित

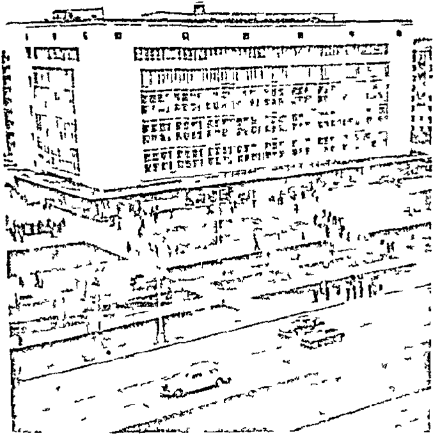

रूस का प्रसिद्ध डिपार्टमेंट स्टोर गुम

है। सरकार की व्यवस्था और नियंत्रण रहने के कारण सब के साथ एक सा व्यवहार रहता है। अनुशासन भंग के लिए कड़ा दण्ड है। यह भी सुना गया कि बड़े बड़े रूपिया अफसर साधारण मजदूरों के साथ मिलकर काम करते हैं और उन की गतिविधि पर नजर रखते हैं। इस स्थिति में हड़ताल की कल्पना में ही जान पर जोखिम है। मैं सोचने लगा कि भारतीय साम्यवादी दल के नेतागण तो आये दिन कारखानों की तोड़फोड़, दंगे और हड़तालों को प्रोत्साहन देते रहते हैं। शायद मार्क्स के सिद्धान्तों के अनुसार उन के लिए सबसे जरूरी और पहला काम है साम्यवाद प्रचार। इस के लिए अगर देश का औद्योगिक उत्पादन घटे या बेकारी हो तो भी उन्हें कोई परवाह नहीं। सच पूछा जाय तो वे तो चाहते ही हैं कि पूरी तौर से अव्यवस्था हो जिससे पड़ोसी साम्यवादी देशों को हस्तक्षेप का मौका मिले।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि राष्ट्र के निर्माण या पुनर्गठन में अनुशासन और कठोर

नियत्रण परमावश्यक है. रूस ने पूरी तौर से इसका प्रयोग किया. जनता का सहयोग भी उसे मिला. कारण कि उस के सामने राष्ट्र का और उन के स्वय के जीवनमरण का प्रश्न था १९४२ में जर्मनी की नाजी फौजें पोलेण्ड आदि देशों को रौंदती हुई मास्को के भीतर पहुच गयी थीं. यहां के कारखाने ध्वस्त किये जा चुके थे या रूसियो ने स्वय नष्ट कर दिये थे ताकि जर्मनो को फायदा उठाने का मौका न मिले. अधिकाश मकान भी बमो की मार से ढह चुके थे उसी रूस में अब एक दूसरा ही नजारा देखने में आता है. नाजियो की पराजय के बाद जिस द्रुत गति से देश का पुनर्निर्माण और पुनर्गठन हुआ वह अनुकरणीय है. मास्को के पुनर्निर्माण को तो अदभूत और अभूतपूर्व कहना चाहिए यहां के स्वस्थ और प्रसन्न नागरिको के चेहरे पर इस सफलता का गर्व परिलक्षित होता है.

मोटर ट्रकों का कारखाना देखने के बाद हम शहर के अन्य स्थानों को देखने के लिए निकले. *तीन एक सरीखी बडीबडी कारो का एक साथ होना वहा वालो* के लिए कुछ ताज्जुब की बात थी. क्योंकि, एक तो वहा कारें कम हैं और दूसरे जो हैं भी वे आमतौर से मझोली या छोटी हैं. 'पोबेदा' कार के दाम १२,०००) थे जब कि जिन कारो में हम सैर कर रहे थे उन की उन दिनो कीमत ५५,०००) थी

टैक्सिया सबकीसब सरकारो थी ही—कारें भी अधिकतर मत्री, अफसर या विदेशी दूतावासों की थीं. किसीकिसी प्रोफेसर या कलाकार के पास अपनी कार भी थी.

मास्को आधुनिक रूस की सर्वोत्तम कृति है इसे वे बड गर्व से विदेशियो को दिखाते हैं. बडीबडी चौडी सडकें, दोनो तरफ एक सरीखे बने नएनए मकान, थोडीथोडी दूरी पर बागबगीचे और विभिन्न विषय और रुचि के सग्रहालय दुनियावालो के सामने इन सब को साम्यवादी सरकार अपनी सफलताओ के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करती है

यहा का लेनिन पुस्तकालय वाशिंगटन के काग्रेस पुस्तकालय के बाद विश्व का सबसे बडा पुस्तकालय माना जाता है इस में १५० भाषाओ की दो करोड बीस लाख पुस्तके हैं १८—२० बडेबडे पाठागार हैं जहा २५०० व्यक्ति बैठ कर आराम से पढ़ सकते हैं अलग–अलग भाषाओ के सूचीपत्र हैं मैंने हिन्दी सूचीपत्र देखा मुझे ऐसा लगा अन्य देशों की तरह या तो इन्होंने हिन्दी के प्रति उपेक्षा बरती है या उन्हे सही जानकारी नहीं मिली है इस दिशा में हिन्दी साहित्य एव काशी नागरी प्रचारिणी सभा को चाहिए कि विदेशो को वे हिन्दी के प्रकाशन के सबध में आवश्यक सूचनाए दें और उन से सम्पर्क स्थापित कर सहयोग दें हमारी सरकार से यह आशा हम नहीं रख सकते कारण, हिन्दी के प्रति अभी तक सरकारी नीति दुविधाग्रस्त है वहा हम ने तुलसी, प्रेमचन्द और मैथिलीशरण आदि की कृतिया देखी

मास्को में दूसरा बडा आकर्षण है त्रेत्याकोव आर्ट गैलरी इसमें पिछले नौ शताब्दियो में उच्चकोटि के कलाकारो द्वारा बनाये गये पचास हजार चित्र हैं इन में तो कई इतने कीमती हैं कि उन का मूल्य आका नहीं जा सका है रूसी क्रान्ति के उत्तर काल की घटनाओ के चित्र काफी सख्या में हैं किन्तु पूर्व क्रान्ति-काल के चित्रो में कला की बारीकिया ज्यादा खिलती सी लगीं यद्यपि मैं कला

पारखी तो नहीं हू परन्तु मुझे विश्व के बड़ेबड़े कला सग्रहालयो में जाकर यहा के चित्रो के सामने देर तक बैठकर देखने रहने का शौक है मुझे ऐसा लगा कि शाश्वत मानव भावनाओ की अभिव्यजना भौतिक विचारों की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट और पुष्ट निखरती है ईसा मसीह सबधी धार्मिक चित्र तो हृदय में सहज भाव से करुणा का उद्रेक करा देते है इसी कलाकारों द्वारा बनाये गये चित्र कहीं-कहीं तो रैफेल, ल्योनार्दो अथवा यूरोप के मध्ययुगीन प्रसिद्ध कलाकारो की टक्कर के है. इन्हे देखते हुए दर्शक आत्मविस्मृत से हो जाते है मृत ईसा के चित्र को देखते समय ऐसा लगा मानो सचमुच हो उस करुणामूर्ति ने अभी कुछ हो क्षण पहले देह त्यागा हो तूलिका की सफाई देखते ही बनती है. सूली से उतार कर ईसा को नीचे सुलाया गया है आखें अधखुली है, अगो से खून बह रहा है आंखो में अपूर्व प्रेम, दया और क्षमा है मुखमण्डल पर शान्ति के साथ नैसर्गिक तेज है चारों ओर उन्हें घेर कर उन के भक्त शोकाकुल है

साम्यवादी क्रान्ति से सबधित कुछ चित्र ही धार्मिक लगे इनमें से एक में दिखाया गया है कि जार सरकार के विरोधी क्रान्ति के सेनानियो को साइबेरिया निष्कासन किया जा रहा है, जहां से वापस आना सर्वथा असभव है बल्कि वहां दीर्घ में उन की मृत्यु अधिक निश्चित है उन के निर्विकार चेहरों में एक दृढता झलकती है किन्तु इनके आत्मीय, पितामाता, पत्नीपुत्रो के विलाप के दृश्य देखकर चित्त आर्द्र हो उठता है दूसरा एक चित्र देखा, कज्जाक फौजियो की घोडो की टापो के नीचे रौंदे गये एक युवक की लाश का पत्नी उस के पास अर्द्ध विक्षिप्त सी बैठी है, वेदना और विलाप का यह चित्र स्वत ही अत्याचारी जाने के प्रति क्षोभ उत्पन्न कर देता है

मैंने पेरिस और लूव्रे में देखा था कि सैकडो स्त्रीपुरुष गैलरी के सामने रखी बेंचों पर बैठे हुए तन्मय होकर वहा के चित्रो को देखते रहते है बहुतो की तो यह दैनिक दिनचर्या है भावुक लेखक, कलाकार और वास्तुशिल्पी इन चित्रो से प्रेरणा ग्रहण करते रहते है ऐसी बात मास्को में नहीं दिखाई पडी

आज का रूस साम्यवादी है, इसलिए उसका विश्वास द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में है इसी का प्रचार और प्रसार वहा निरतर चलता रहता है फिर भी मैंने यह लक्ष्य किया कि ईसाई धर्म से सबधित चित्रो के सामने स्त्रीपुरुष मौन हो कर प्रार्थना करते है. ऐसा लगता है कि युगों से चले आदे धार्मिक सस्कारो को कानून और प्रचार के धक्के से मानव मन से निकाल फेंकना किसी प्रकार भी सभव नहीं

मास्को की दुकानें अन्य देशो की दुकानो से भिन्न लगती है यहा आमतौर से चीजो की विविधता बहुत कम दिखाई पडती है और वह चहलपहल या उत्साह खरीददारो में नहीं मिलता जो अन्य देशो में है सभवत साधारण जनता की क्षीण क्रय शक्ति इसका कारण है

दोपहर के बाद हम मास्को के सबसे बडे डिपार्टमेन्ट स्टोर्स 'गुम' में गये यह स्टोर एक अच्छा खासा बाजार हो है चार मजिला विशाल भवन है जिसमें बडे—बडे कमरे है इनमें विभिन्न प्रकार की चीजें सजाकर रखी गयी थी दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुओ के दाम तो हमारे यहा से लगभग दुगने थे परन्तु शौक की नायाब चीजो के दाम लगभग दस या पन्द्रह गुने अधिक इसके बारे

में हमें पहले ही से जानकारी थी कि साम्यवादी रूस में यदि किसी कलाक
साहित्यकार या शिक्षाविद को बहुत अधिक वेतन दिया जाता है तो दूसरे
से इन्हीं स्टोर्स के माध्यम से सरकार उनसे पैसे वापिस वसूल भी कर लेती
यादगार के बतौर मैंने यहां से दोतीन पोस्टकार्ड खरीदे जिनमें एक था महाक
के प्रथम सफल यात्री युरी गागारिन का और दूसरा था महाकाश को चीरता
उस के राकेट यान का

फ्रांस में राज्यक्रान्ति लाने का श्रेय वहां के साहित्यकारों का रहा है इगलै
की जनता को भी औलिवर क्रॉमवेल के जमाने में मिल्टन के काव्यग्रन्थों ने ब
प्रभावित किया था भारत के साहित्यकार और कवि भी जनता के हृदय
सोये हुए भावों को उकसा कर समाज और देश की विचारधारा को बरा
दिशादान देते रहे हैं इसी प्रकार रूस में क्राति का प्रचार और प्रसार वहा
साहित्यकारों के कारण ही सभव हुआ आज भी वहा की साम्यवादी सरका
उन्हें भूली नहीं है बल्कि उन्हें देवता की भांति पूजा जाता है उनकी स्मृति म
सग्रहालय, पार्क, सड़के और नगर तक के नाम रखे गये हैं जिस आदर औ
श्रद्धा से हम गीता, रामायण और भागवत को देखते हैं उसी प्रकार रूस में कार्लमा
वर्स के कैपिटल के बाद तालस्ताय और गोर्की की रचनाए पढी जाती है. तालस्ता
की अन्नाकरनीना, युद्ध और शान्ति तथा गोर्की की मा और मेरे विश्वविद्यालय क
केवल साहित्यिक महत्त्व ही वहा नहीं मिला है बल्कि उनका स्थान सैद्धान्तिक दृष्टि
से भी काफी ऊंचा है

उसी दिन शाम को भारतीय राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन ने हमें दूतावास
में भोजन के लिए आमत्रित किया था प्राय सौसवासौ भारतीय जो उन दिनों
मास्को में थे, शामिल हुए भारतीय सगीत और वाद्य का कार्यक्रम भी था
भोजन अपने ही देश का था ताजगी आ गयी पारस्परिक परिचय हुआ
दूतावास के लोगो के सिवाय भिलाई कारखाने मे बहुत भारतीय युवक शिक्षा लेने
के लिए यहा आए हुए थे बातचीत करने पर पता चला कि वे वहा के अनुशासन
और शिक्षा पद्धति स प्रभावित है आम तौर से रूसियो का व्यवहार भी उनके प्रति
स्नेहपूर्ण ह किन्तु एक कसक सबके मन में थी कि मुक्त परिवेश और स्वच्छन्दता का
वहा अभाव है हर जगह एक पर्दा सा रहता है

इन दो घन्टो में हसी और कहकहे के बीच मन का बोझ हल्का हुआ ऐसा
लगा कि हम दिल्ली या कलकत्ते के किसी उत्सव में शामिल है रात दस बजे
होटल वापस आये मास्को की सडके रोशनी में मुस्करा रही थीं ट्राफिक की
लाल, पीली, हरी बत्तिया खिडकियो से देख रहा था सामने के मकान के कमरे
की खिडकी पर पर्दा नहीं था बरबस नजर उधर चली गयी वहा देखा आदम
का बेटा हौवा की बेटी की मानमनुहार कर रहा था

धीरे से अपने कमरे की खिडकी बन्द करके सोने का प्रयत्न करने लगा

मास्को-३

मशीनवाद के घेरे में . . .

सुबह नाश्ते पर परमात्माप्रकाशजी सपत्नीक आए. किसी खास मीनू का इतजाम उन के लिए किया जाना सभव नहीं था. जैसा कि आम तौर पर मास्को में हम प्रति दिन के नाश्ते में लेते रहे, उसी ढग की चीजें थीं. हां, चिवडे और बादाम की बरफी जो हम अपने साथ भारत से ले आए थे, तश्तरियों में रखे गये. हम यह जानते थे कि स्वदेश से दूर रहने पर अपने देश की हर चीज प्यारी लगती है प्रकाश दपति तो हमारे विशुद्ध देशी चिवडे और बरफी के टुकडो को चख कर बडे प्रसन्न हुए, कहने लगे कि एक लबे अरसे के बाद ये चीजें मिली हैं, इन से अपूर्व तृप्ति मिली मैं ने एक डब्बे में वे दोनों चीजें रख कर उन्हें भेंट देते हुए कहा, साथ रख लीजिए तृप्ति का खजाना दोनों हस पडे

इन लोगो को रूस आए करीब साल भर हो चुका था नाश्ते के दौरान मैं ने अपने दिवगत मित्र राहुल साकृत्यायन की पत्नी के बारे में जानना चाहा. सुना था कि वे मास्को में ही रहती हैं अत. उन्हे व उन के पुत्र को एक बार देखने और उन से बातचीत करने की इच्छा थी प्रकाशजी ने कहा, होंगी तो सभवतः यहीं, पर हम ने कभी उन के बारे में रुचि रखी नहीं और न जानने का प्रयास किया.

कुछ मुसकराकर वह कहने लगे, "राहुलजी यदि स्वदेश आ कर दूसरी पत्नी अपना सकते हैं तो क्या उन की रूसी पत्नी दूसरा पति अपने देश में नहीं चुन लेगी? भारतीय पत्नी की तरह आजीवन पति के नाम की माला जपने की प्रथा यहा नहीं है. रूस में अन्य यूरोपीय देशो की तरह व्यक्तिगत जीवन में उच्छृंखलता नहीं है, लेकिन तलाक दे कर पुनर्विवाह के लिए तो छूट है ही.

यहा स्त्रीपुरुष तभी बधते है जब उन्हे परस्पर की आवश्यकता का नितात अनुभव होता है अवैध प्रणय का कोई प्रश्न नहीं अतएव अवैध सतान का सवाल नहीं न किसी को विश्वामित्र की तरह तपोभग की ग्लानि होती है न कोई शकुतला की तरह त्याज्या ही सरकार सतति की परवरिश करती है. नई पीढ़ी में बहुतों को अपने जनक का परिचय न मालूम हो तो कोई बात नहीं.

फिर भी, यहा उद्दाम उच्छृखलता नहीं है, जो पश्चिम के अन्य देशो में देखने में आती है रूस में 'बीटल कट' लडकेलडकियों को प्रोत्साहन नहीं मिलता हमारे देश में विशेषत बगाल में 'भूखी पीढ़ी' की एक नई परपरा चली है इस ढग के विचार और आचार यहा देखने में नहीं आए. स्वच्छदता है जरूर, पर

उस में एक शिष्टता है और आचार भी यही कारण है कि आम तौर से यहां के युवकयुवतियों का स्वास्थ्य अच्छा है

स्पष्ट है कि ऐसे वातावरण में तलाक की सुविधा और असुविधा का सवाल महत्त्व नहीं रखता फिर भी तलाक होते हैं और पुनर्विवाह भी किन्तु तभी जब कि पतिपत्नी के स्वभाव और स्वार्थ टकराते हैं लोग इन मामलों पर ध्यान नहीं देते हैं

यहां परिवार नियोजन को प्रोत्साहन सरकार नहीं देती, बल्कि जो महिला जितने अधिक बच्चों की जननी होती है उस की प्रतिष्ठा उतनी ही अधिक होती है १२ बच्चों की माता को 'नगरमाता' का गौरव दिया जाता है एक महिला के १७ बच्चे जीवित थे, उसे 'देशमाता' की उपाधि से विभूषित किया गया और उस का सार्वजनिक अभिनदन हुआ मुझे इन बातों को सुन कर याद आया, हमारे यहा भी 'दूधो नहाओ, पूतों फूलो' का आशीर्वाद बडेबूढे देते थे, क्योंकि जमीन बहुत थी और जनसख्या कम

रूस में परिवार नियोजन की आवश्यकता है नहीं, क्योंकि विशाल सोवियत भूमि की जनसख्या सिर्फ बीस करोड हैं खनिज बहुत हैं. उन्हें तो जन चाहिए अधिक से अधिक, जिन की मेहनत से साइबेरिया जैसे उजडे प्रदेश को आबाद कर सकें

मैं ने प्रसगवश पूछा, "क्या साइबेरिया के मरुस्थल को खलिहान या औद्योगिक अचल बनाना सभव हो सकता है?" उन्होंने बताया कि सोवियत वैज्ञानिक प्रकृति से टकराने से डरते नहीं हैं उत्तरी ध्रुव के बर्फ के समुद्र में यदि नौमार्ग बना लेना सभव हो सका है तो साइबेरिया की धरती में भी वे लहराते खेत एक न एक दिन बना ही लेंगे, जहा तक उद्योगों का सवाल है वे तो थोडी मात्रा में इस अचल में स्थापित हो चुके हैं

प्रकाश दपति विदा हो ही रहे थे कि सरकारी गाइड हाजिर हो गए हम ससद देखना था गाइड बारबार घडी देखने लगे समय की पाबदी के औचित्य पर हमें आपत्ति नहीं है, पर समय को सेकड की सुई पर बाधना मन में एक बोझ सा पैदा करता है खैर, हम निकल पडे

भारत की तरह सोवियत रूस की धरती की कोख भी खनिज राशि से भरी हुई है शायद ही ऐसा कोई खनिज पदार्थ हो जो यहा न पाया जाता हो कोयला, क्रोमाइट, पट्रोल, सोना, मैंगनीज, ताबा इत्यादि सभी कुछ प्रचुर मात्रा में यहा उपलब्ध है रूस इन के उत्पादन में ससार के अग्रणी देशों में माना जाता है

आम तौर से हम जिसे रूस कहते ह वह इस विशाल राष्ट्र का केवल एक भाग ह, जो यूरोप में है सही माने में तो सारे देश को सोवियत भूमि कहना चाहिए इस म रूस, यूक्रेन, बाइलोरूस, अजरबईजन, जार्जिया, आर्मेनिया कज्जाकिस्तान, तुर्कमनिस्तान, किरगिजस्तान, ताजिकस्तान, उजबेकिस्तान, ल्लातिविया, इस्टोनिया, लियुआनिया और मोलडाविया के गणराज्य हैं पृथ्वी का यह सब से अधिक विस्तृत राष्ट्र है एक ओर प्रशात महासागर की लहरें इस के पूर्वी तटों से टकराती ह, दूसरी ओर फिनलैंड की खाडी इस के पश्चिमी सागर तट की सीमा रेखा है पृथ्वी के सपूर्ण भूभाग का छटवा भाग सोवियत भूमि के

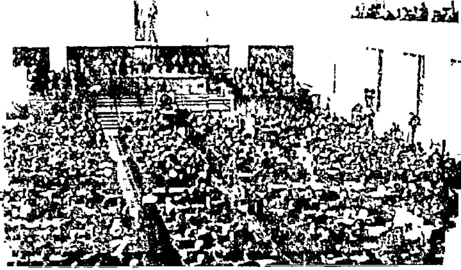

सोवियत संसद भवन काफी बडा है और भव्य भी

अंतर्गत है. केवल विषुवत् रेखा की भीषण गरमी को छोड कर सब प्रकार की जलवायु इस विशाल भूखंड पर कहीं न कहीं मिलेगी ही.

मन में बडी इच्छा थी कि मार्क्स के सिद्धांतों पर आधारित कम्युनिज्म के प्रयोग के परिणाम निकट से देखूं. सोवियत भूमि में आने के पूर्व भारत में इस के बारे में काफी प्रचार सामग्री पढ़ने को मिली थी. अपने देश में कम्युनिस्टों द्वारा समयसमय पर सोवियत रूस और चीन भ्रमण के अनुभव और संस्मरण पढ कर जिज्ञासा बढती थी कि शाश्वत और स्वाभाविक मानव प्रवृत्तियों की उपेक्षा अथवा दमन कर के समाज में साम्य प्रतिष्ठित करने में आखिर ये देश किस सीमा तक सफल हो सके हैं.

सोवियत भूमि की हमारी यात्रा के प्रथम चरण में ही हमें अनुभव हो चुका था कि साम्यवाद का पर्यायवाची शब्द प्रचारवाद भी है. और अब मास्को में यह धारणा बनी कि साम्यवाद का अर्थ मशीनवाद भी है. मानव को शासन का पुर्जा मात्र यहां समझा जाता है. आवश्यकतानुसार उसे कसा जाता है, बदला जाता है अथवा रद्दी समझ कर नष्ट भी कर दिया जाता है. पुर्जे ने चूंचा किया तो तेल या ग्रीज दी गई अथवा गला दिया गया. कम्युनिस्ट सत्ता ने इस प्रकार कितनों को खत्म किया, इसे बताने की शायद जरूरत नहीं. ट्राटस्की से लेकर बेरिया तक बड़ेछोटे लाखों व्यक्तियों का जीवन के मंच से नेपथ्य में हट कर लापता हो जाना सर्वविदित है. मित्र देश हंगरी में १९५६ में जो कुछ रूसियों ने किया उस की तुलना में नाजी फौजों के फ्रांस और नार्वे के अमानुषिक अत्याचार बहुत हल्के ठहरते हैं, और फिर वे तो युद्ध के दौरान किए गए थे

उन दिनों रूसी संसद का सत्र चालू नहीं था. फिर भी दोचार व्यक्ति जो शायद संसद सदस्य थे वहां के पुस्तकालय में मिल गए. मुझे आशा थी कि वे दिलचस्पी के साथ हम से मिलेंगे. मेरा ख्याल गलत निकला. प्रतिबंध यहां भी था. हमें दोएक ने देखा जरूर, मगर अनदेखा कर दिया.

सोवियत ससद भवन काफी बडा है और भव्य भी लेकिन हमारे ससद भवन की तो बात ही न्यारी है यहा ३,००० दर्शकों के बैठने की जगह है सदस्यों की सख्या ७७५ है जिस में १९० महिलाए है, दोतिहाई मजदूर और किसानो के प्रतिनिधि है और शेष बुद्धिजीवी वर्ग के डाक्टर, वैज्ञानिक, इजीनियर, प्रोफेसर, लेखक आदि है गणतत्र का दावा साम्यवादी सोवियत जरूर करता है पर यहा दूसरी पार्टी है ही नहीं साम्यवाद के सिवा दूसरी किसी विचारधारा का पोषण करना देशद्रोह समझा जाता है अतएव यहां जो चुनाव होते है वे मुख्यत व्यक्तियो के चयन के लिए है निर्वाचन का सारा व्यय सरकार वहन करती है इसलिए गरीब से गरीब भी ससद सदस्य या मत्री बन सकता है यद्यपि एक ही पार्टी है फिर भी अपनेअपने क्षेत्र की समस्याओ को ले कर काफी जोरदार बहस हो जाया करती है, व्यग्य और हसी का वातावरण भी हमारे देश की ही तरह रहता है

रात्रि में हम बहुचर्चित बोलशाय थिएटर देखने गए विश्व में सिवा अमरीका के शायद ही इतना बडा थिएटर हाल कहीं हो रगमच बहुत ही विशाल था पर साजसज्जा साधारण दर्जे की थी यहा अभिनेताओ की सख्या सैकडो रहती है हमारे साथ एक द्विभाषी महिला कर दी गई थी जो हमें अगरेजी में वहा की विशेषताए समझाती जाती थी मैं ने चुपके से प्रभुदयालजी से कहा कि प्रेमचद और राहुल का नाम लेले कर सोवियत प्रचार यत्र भारत में हिंदी प्रेम का जो रूप प्रदर्शित करता है उस का वास्तविक रूप यहा देखने में आता है कि हमारे लिए एक हिंदी दुभाषिए की व्यवस्था न की जा सकी

द्विभाषी का स्वभाव मधुर था पर उस की अगरेजी का रूसी ढग थोडा बाधक था शायद उस ने महसूस भी किया और इसलिए वाणी और सकेत दोनो से वह हमें समझाती रही

बोलशाय में उस दिन एक नाटयरूपक था रूसी भाषा में सवाद और सलाप होने के कारण बारबार हमें द्विभाषी की मदद लेनी पड रही थी युद्ध का कितना भयकर परिणाम होता है, इस की कथावस्तु थी अभिनय मजा हुआ था और कलाकारो का कौशल भी उच्च स्तर का अतर्विराम के बाद स्टेज पर एक व्यक्ति आया जिस के लिए लगातार करीब पाच मिनट तक जोरजोर से तालिया बजती रहीं पहले तो हम ने समझा कि कोई राजनीतिक नेता होगा, पर बाद में जानकारी मिली कि वह देश का सर्वश्रेष्ठ वाद्यसगीतकार था यहा लेखको या वैज्ञानिको को सब से अधिक आदर और स्नेह मिलता है, उस के बाद कलाकारो को और तब कहीं अन्यान्य नेताओ को धन सपत्ति का सचय सभव नहीं, अतएव धनी या सपत्तिशाली की प्रतिष्ठा का सवाल ही नहीं उठता

भारत से रूसी राजदूत श्री बेनडिक्टोव उन दिनों किसी कार्यवश मास्को आए हुए थे वह हम से मिलने होटल में आए हम ने विभिन्न विषयो पर उन से कई सवाल पूछे हमें लगा कि उन के उत्तर स्पष्ट थे, घुमावदार कम मकानो के बारे में उन्होने बताया कि व्यक्तिगत सपत्ति का तो अत कर दिया गया है अतएव मकान सारे सरकारी है प्रति वर्ष लाखो की सख्या में नए मकान बन रहे है, फिर भी आवास की कमी है हा, लोग सडको के फुटपाथो पर नहीं सोते

अन्य पश्चिमी देशों की अपेक्षा रूस के युवकयुवतियों में शिष्टता और आचार भी हैं

सरकार आवास तो दे ही देती है भले ही पालीपाली से एक ही बिस्तर पर सोना पड़े

सोवियत रूस साम्यवादी है जरूर, पर इस का अर्थ यह नहीं कि यहां सभी की आय, वेतन या मजदूरी समान है सब से अधिक आय कलाकार, लेखक और वैज्ञानिकों की है अधिकतम २०,००० रुपए मासिक तक, जब कि मजदूर और

क्लर्कों को केवल छ सात सौ रुपए तक मिलते हैं कम आमदनी वालों के लि सरकार सुलभ दर में प्रयोजनीय वस्तुओं की व्यवस्था कर देती है जब कि शौक की चोजों की कीमतें इतनी अधिक हैं कि इन्हें खरीदने में काफी पैसे निकल जाते हैं सर्दी या भूख से मरने का सवाल उठता नहीं, क्योंकि भोजन और वस्त्र की जिम्मेदारी सरकार की है हम सोचने लगे कि जब एक और ३० का यहा अतर है तो फिर किस बूते पर ये समता का ढिंढोरा पीटते हैं, स्वीडन या स्विटजरलैंड में ज्यादा से ज्यादा एक और १५ का अतर है जब कि वे देश साम्यवादी विचारधारा से बहुत दूर है

हम ने एक खास उद्देश्य से एक पेचीदा सवाल उन से किया कि सोवियत भूमि में विदेशी यात्री अन्य देशों की अपेक्षा कम क्यों आते है? उत्तर बहुत ही बुद्धिमानी का था, सपूर्ण रूप से मानने योग्य तो नहीं पर कुछ अशों में युक्तिपूर्ण तो कहना ही पडेगा उन्होंने बताया, "सोवियत सरकार अपने देश में यूरोपीय देशों की तरह हर प्रकार के कामोत्तेजक मनोरजन और साधनों को प्रोत्साहन *नहीं देती रात्रि क्लब और जुए से पैसे कमाना हम अनुचित मानते हैं,* इसलिए वह मौजबहार यहा कहा, और यही वजह है कि विदेशी यात्री कम ही आते है" मुसकराते हुए उन्होंने आगे कहा, "आप के देश में भी तो इन्हीं आदर्शों की प्रतिष्ठा है!"

लच के पहले लेनिन हिल पर बने मास्को विश्वविद्यालय देखने गए सचमुच, रूस की यह अनुपम कृति है इसे एक प्रकार से अलग शहर कहा जा सकता है इस के बीच के गुम्बज की ऊचाई ७८७ फुट है, जो यूरोप में सब से ऊची है १९४८ से १९५३ तक लगभग ५५० करोड रुपए की लागत से यह विश्वविद्यालय बन कर तैयार हुआ इस में १५,००० कमरे, १,९०० प्रयोगकक्ष, ११३ लिफ्ट है वार्षिक बजट लगभग पैंतालीस करोड का है इस के सिवा बहुत बडी राशि नए भवन बनाने में खर्च की जाती है यहा लगभग तीस हजार विद्यार्थी विभिन्न विषयो का अध्ययन करते हैं रूस को विज्ञान के क्षेत्र में जो सफलता मिली है, उस का श्रेय एक प्रकार से मास्को विश्व विद्यालय को है विद्यार्थियो के आवास सादगीपूर्ण हैं हमें यह देख कर आश्चय हुआ कि हमारे दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रो के रहनसहन का स्तर इन के मुकाबले कहीं महगा और फैशनबल कहा जा सकता है इन से मिल कर बडी खुशी हुई सभी अपनेअपने पाठ्य विषय में रुचि रखते मिले

विश्वविद्यालय से वापस आते समय हम ने कारें छोड दीं और मेट्रो (भूगर्भ ट्रेन) से आए मेट्रो में इस के पहले सफर कर चुका था पर उस समय बहुत सवेरा था अत लोगों की चहलपहल कम थी इस समय काफी भीड थी मेट्रो की सजावट और शान देखते ही बनती है बड लोगों में किसी न किसी तरह का शौक होता है प्रियदर्शी अशोक को बौद्ध धर्म के प्रचार का शौक था तो मुहम्मद तुगलक को बवकूफों को फांसी चढा देने का जहांगीर को न्याय की धुन था तो शाहजहा को इमारत बनवाने की और औरगजेब को मदिरों के ध्वस करने की इसी शताब्दी में सम्राट विलियम कैसेर का अनेक प्रकार के घोड़े रखने का और

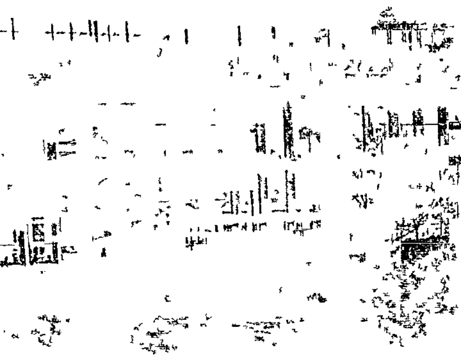

मास्को के मशहूर क्रेमलिन पेलेस का एक दृश्य.

पचम जाज को पुराने स्टाप इकट्ठा करने का शौक था

कभीकभी शासकों का शौक राष्ट्र की कायाकल्प करा देता है स्टालिन जब रूस के राष्ट्रनायक थे, उन के एक शौक ने मास्को को अनोखा बना दिया वह था, मेत्रो को ज्यादा खूबसूरत बनाना वह इस के प्रत्येक स्टेशन की प्लान, इस के निर्माण, इस की सजावट में व्यक्तिगत रुचि रखता था कहा कौन सी मूर्ति बैठाई जाए और किस रग का सगमरमर लगे और उस पर विशेष कोण से प्रकाश डाला जाए, इतनी बारीकियो का वह स्वय ध्यान रखता था यहा रूस के जनजीवन, इतिहास और सस्कृति के सजीव चित्र सजे हैं किराया वाजिब और गाडियो की गति काफी तेज है

ट्रेन में हमारे इर्दगिर्द रूसी स्त्रीपुरुष आ कर बैठ गए कुछ बातें करने का प्रयत्न करने लगे हमें आश्चर्य हो रहा था क्योकि रूस की अब तक की यात्रा में लोग हमारी ओर खिंचते तो जरूर थे मगर पास कम आते थे यहा बीचबीच में गाधी, नेहरू और राजकपूर के नाम सुनने में आए कुछ ने रूसी में कुछ पूछा भी पर हमारे कुछ पल्ले नहीं पडा कामराद, तवारीश, गास्पुदीना वह कर हम दोनो हाथ जोडते जाते थे दोनो ओर से मुसकराकर हाथ जोडने का क्रम चलता रहा

शायद यूनिवर्सिटी के कालेजो की पहली पारी की छुट्टी हुई थी, इसलिए ट्रेन में बहुत से विद्यार्थी थे उन्होंने हमें बहुत प्रभावित किया उन का सयम,

अनुशासन और व्यवहार हमारे यहां के उच्छृंखल छात्र समाज की तुलना में एक आश्चर्य की सृष्टि करता है हमें आदरपूर्वक उन्होंने जगह दी आपस में इतने धीरेधीरे बातचीत कर रहे थे कि पता नहीं चलता था कि छात्रों का झुंड ट्रेन में है हमारे यहां तो छात्रों का दल ट्रेन में सवार हुआ कि इंजिन ड्राइवर से ले कर गार्ड तक की शामत आ गई टिकट चेकर तो बेचारे चुपके से चल देते हैं महिला यात्रियों के साथ अशोभनीय बातें रोज की चर्चा हो गई हैं लंदन में भी छात्रों में खुले आम गुंडागर्दी है रूस के छात्र इस मुकाबले में देहाती भले ही लगते हों, पर हैं सभ्य हमें सब से ज्यादा प्रभावित किया बच्चों ने स्वस्थ चेहरे, चमकती आंखें, मुसकराते होंठ, कोई कोट के पल्ले पकडता, कोई हमारे हाथ घिसकर देखता कि हमारे रंग का उस पर कुछ असर हुआ या नहीं इस में संदेह नहीं कि रूसी सरकार इन का बडा खयाल रखती है

एक शाम हम मास्को की दुकानों में घूमते हुए किसी एक में जा पहुंचे कहना न होगा कि दुकानें सरकारी होती हैं बहुत तरह की चीजें थीं, पर घटिया दर्जे की हमें कुछ खरीदारी तो करनी थी नहीं, महज दामों के बारे में जानकारी लेनी थी, दोचार रुपयों की कुछ चाक्लेट ले कर बाहर आए कीमतें हमारे यहां से काफी ऊंची थीं—खासकर बढिया चीजों की कीमतें तो दस गुनी तक थीं मैं ताज्जुब कर रहा था कि सोवियत जनता के मनोभावों को शायद कठोर शासन और बेरिया के आतंक ने कुचल दिया है यहां सरकार पर यह दबाव नहीं दिया जाता कि वाजिब दामों में बढ़िया चीजों को उन के लिए क्यों नहीं मंगाया जाता

हमारे देश में यदि ऐसा हो तो जुलूस और नारों से शासन का सिंहासन हिल उठे और सरकार को अपनी आयात नीति के बारे में रद्दोबदल करने के लिए बाध्य होना पडे आश्चर्य यह लगा कि हजामत भी सरकार ही बनाती है, यानी सैलून भी सरकारी और बूट पालिश तक सरकारी है होटल आ कर आपस में चर्चा होने लगी कि इंगलैंड, फ्रांस, स्वीडन, जरमनी आदि देशों के मुकाबले में रूस के जनजीवन का स्तर नीचा होने पर भी इस की शक्ति का विश्व में महत्त्व है विज्ञान के क्षेत्र में रूस अमरीका जैसे साधनसंपन्न राष्ट्र का प्रबल प्रतिद्वंद्वी है

एक बात रूस और भारत में करीब एक सी लगी कि सार्वजनिक पार्कों में या सडकों के निराले कोनों पर फ्रांस, इंगलंड या बेल्जियम की तरह नरनारी प्रगाढ़ आलिंगन और चुंबन में रत नहीं दिखाई देते हवाई में तो इस से भी कहीं आगे बढ़ जाते हैं मास्को में स्त्रीपुरुष पासपास बैठे बातचीत में मगन दिखाई जरूर देते हैं, पर सीमा रेखा से आगे बढ़ने के थोडे प्रयास के साथ ही पुलिस की सीटी उन्हें सचेत कर देती है कई बुकस्टालों पर हम गए पर कहीं 'कामोत्तेजक' मैगजीनें या पोस्टकार्ड नहीं दिखाई पडे लंदन और पेरिस की तरह यहां सडकों पर 'पिंप' (दलालों) को साए की तरह चलते नहीं देखा इस ढंग के लोगों को यहां बहुत ही कठोर दंड दिया जाता है मास्को के टैक्सीचालक भी शिष्ट और विनयशील हैं विदेशों के टैक्सी ड्राइवरों का कटुतिक्त अनुभव हमें था 'टिप' के लिए किस तरह मुंह बिचकाते और झल्लाते हैं, पर यहां वह सब कुछ नहीं था

सोवियत देश में पुरुषों की तरह स्त्रियां भी काम पर जाती हैं इसलिए इन के बच्चों के लिए हर महल्ले में शिशुगृह हैं इन में डाक्टर, नर्स और परि-

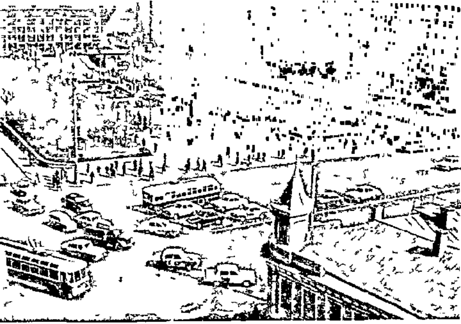

मास्को में बने पुश्किन स्क्वायर का एक दृश्य

चारिकाए नियुक्त रहती हैं सब की पोशाक एक सी और खाना एक सा इन शिशुगृहो को ऋशे कहते हैं इन में उमर के अनुसार बच्चे अलगअलग रखे जाते हैं उन के लिए मनोरजन के अच्छे साधन रहते हैं महिलाए काम पर से वापस आते समय इन्हें साथ ले कर चली जाती हैं बच्चे यहीं प्रारभिक शिक्षा भी पा लेते हैं इन्हे रखने का शुल्क मातापिता की आय के अनुपात से लगता है अतएव अधिक वेतन या कम वेतन पाने वालो के बच्चो के लालनपालन में भदभाव को गुजाइश नहीं

स्कूलो के लबे अवकाश में अथवा गरमी की छुट्टियो में स्कूलो की तरफ से बच्चो को समुद्र के उपकूल या रमणीक स्वास्थ्यप्रद पर्वतों पर घुमाने ले जाया जाता है इस अवधि में अध्ययन के सायसाथ पारस्परिक सहयोग की भावना को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया जाता है स्कूल, कालिज और घरों में किस प्रकार की पुस्तके पढी जाए यह भी सरकार ही निश्चित करती हैं अर्थात साम्यवाद के विरोधी विचारधारा का साहित्य यहा के बुकस्टालों और लाइब्ररियो में नहीं मिलता प्रत्येक दल के साथ शिक्षक के अतिरिक्त डाक्टर भी रहते है

सोवियत सरकार एकतत्री है शिक्षा म वह इस ढग से साम्यवाद का अनुप्रवेश करा चुकी है कि नई पीध की विचारधारा इतनी कुठित सी है कि साम्यवाद के अलावा और भी कोई सामाजिक व्यवस्था है या सभव है, इस की कल्पना वह नहीं कर पाती मार्क्स, एगल्स और लेनिन आदि उन के लिए अवतार ह कुछ समय पहले तक स्टालिन भी था, पर अब पाठ्य पुस्तको से उस का नाम निकाल दिया गया है आश्चर्य तो यह ह कि धर्म न मानने वाले साम्यवाद ने स्वय को एक धर्म बना दिया और उस म भी मसीहो को ठीक उसी ढग से सृष्टि की जसे इसलाम ने मुहम्मद साहब को और ईसाइयो ने ईसा की

लेनिनग्राद-१

जिस की हर बात पर मास्को से होड़ लगी रहती है ..

मास्को से लेनिनग्राद हमें हवाई जहाज से आना पडा चाहते तो हम थे कि ट्रेन से सफर करें, ताकि सोवियत देश के ग्राम्यांचल की झांकी के साथसाथ यहा की ट्रेनो के बारे में भी कुछ जानकारी प्राप्त कर सकें, किंतु कुछ तो समयाभाव के कारण और कुछ सरकारी व्यवस्था की वजह से हमारी यह आकांक्षा पूरी न हो सकी

मास्को में हम पाच दिनों तक रहे मगर जितनी जानकारी सोवियत शासन व्यवस्था अथवा वहा के जनजीवन के विभिन्न पक्षों के सबध में पाना चाहते थे वह संभव न हो सका पहली बाधा तो भाषा की और दूसरी सरकारी गाइड के रूप में मिरकोव और उस के साथी की, जो छाया की तरह सदैव साथ रहते थे जो चीज न दिखानी हो या जो न बताना हो, उस के लिए उन के पास बनेबनाए बहाने तैयार रहते थे इस ढंग का रुख उन का रहता था कि हमारा उत्साह अपनेआप ही ठंडा हो जाता वैसे वे दोनो बहुत ही नम्र और हसमुख थे और पिछले सात दिनो में उन्होंने किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं दिया

मैं ऊब चुका था इसलिए मैं ने श्री बिड़ला और साथियों को मास्को में छोड कर प्रभुदयालजी के साथ लेनिनग्राद देख लेने का निश्चय किया इस बार हम मास्को के जिस एयरपोर्ट से रवाना हुए वह पहले जितना न तो बडा था और न साफसुथरा बाथरूम वगैरह भी गदे थे, रेस्तोरां घटिया सा साथ के यात्री सभी रूसी थे, जिन में से अधिकतर अंगरेजी नहीं समझते थे

लेनिनग्राद से हम सर्वथा अपरिचित थे फिर भी हम खुश थे क्योंकि मिरकोव और उस के साथी से पिंड छूट गया था वे मास्को ही बिड़लाजी के साथ रह गए यहां का एयरपोर्ट लदन, पेरिस या बर्लिन की तरह व्यस्त नहीं रहता हम ने वहां लगी समयसारिणी देखी तो पता चला कि आनेजाने वाले हवाई जहाजों की कुल सख्या चालीसपंतालीस मात्र है इस से कहीं ज्यादा तो बंबई, कलकत्ता के एयर-पोर्टों में है जब कि हमारा देश पिछड़ा और अल्प उन्नत समझा जाता है

एयरपोर्ट से हम अपने पूर्व निश्चित होटल अस्टोरिया के लिए टैक्सी से रवाना हुए रास्ते में हम ने देखा, प्रासाद सरीखे कई एक मकान शहर से ही रहे हैं कुछेक नए ढंग के ऊंचे बन रहे हैं टैक्सी वाले से पूछा, यानी हाथ और उंगलियों

रोम के वटिकन और परिस के लुब्रे के समक्ष लनिनग्राद का हरमिज्ज सग्रहालय

को नचा कर सकेत से पूछा तो उसी भाषा में उत्तर मिला—कुछ तो पुराने होने के कारण गिराए जा रहे हैं और कुछ नाजियो के आक्रमणकाल में ढह गए थे हम ने देखा कि कई मजिलो के ऊपर लोहे के ढाचो पर झलाई का काम हो रहा है और चिनगारिया नीचे गिर रही हैं यह भी देखा कि मोटा काम औरतें कर रही हैं कई मजिल ऊचे मकान के सहारे लगे ढाचे पर खडी हो कर लोहे की बीमो में झलाई का काम कर रही थीं हमारे गरीब देश में सिर पर ईंटें रख कर बास की सीढियो के सहारे औरतो को चढते देखना आश्चर्य नहीं, किंतु सम्य और उन्नत साम्यवादी राष्ट्र में भी इस ढग का काम पेट के लिए इन को क्यों करना पडता है, यह समझ में आया नहीं

टैक्सी में हम ने आपस में सोवियत शासन या व्यवस्था के बारे में कोई बात न की हमें डर था कि कहीं टैक्सी वाला खुफिया न हो होटल पहुच कर हम ने अपने कमरे में सामान रखा हाथमुह धो कर, रेस्तोरा में आ कर हम जलपान करने लगे हमारी टेबल एक कोने में थी, सिर्फ तीन कुरसिया लगी थीं दो पर हम बैठे, एक खाली रही आसपास के टेबलो पर लोग बैठे थे

थोडी देर बाद हम ने देखा कि एक लबा सा आदमी कधे पर कैमरा लटकाए हमारी ओर आ रहा है लगा, आ गया—शायद हमारे लिए मास्को से सरकारी मेजबान मुसकरा कर इशारे से खाली कुरसी पर बैठने की उस ने इजाजत ली और नाश्ता करने लगा मैं ने हिंदी में प्रभुदयालजी से धीरे से कहा, 'लगता है, यह 'देवदूत' (गाइड के रूप में खुफिया) नहीं है "

"चुपचाप देखे जाओ," कह कर नाश्ता करते हुए प्रभुदयालजी ने विवडे और बरफी को अपने झोले से बाहर किया

हम ने देखा कि आगतुक बडे गौर से हमारी ओर कनखियो से देख रहा था

अपने चिवडे और बरफी का जादू विदेशों में हम कई बार आजमा चुके थे इसलिए इन का नाम हमने 'खुल जा समसम' रखा था में ने आगतुक से बिना झिझक अगरेजी में कहा, "भारत का है, आप भी कुछ चखना पसद करेंगे?"

हमारा निशाना अचूक बैठा "ओह, जरूर निःसदेह! आप भारत के है?" साफ अगरेजी में कह कर वह हमारी तरफ मुखातिब हुआ फिर पारस्परिक परिचय हुआ आगतुक मिस्टर जौन स्वीडिश पत्रकार थे अपने देश के किसी दैनिक के सवाददाता के रूप में पिछले चार महीनों से रूस में प्रवास कर रहे थे हमें आश्चर्य हो रहा था कि किसी भी विदेशी, यहां तक कि कम्युनिस्ट देशों के लोगों की गतिविधि पर भी जब रूस में नियत्रण रखा जाता है, तो पत्रकार और सवाददाता के रूप में मिस्टर जौन को स्वच्छद जानेआने की सुविधा किस तरह मिल सकी! पूछने पर उन्होंने बताया कि पिछले महायुद्ध में स्वीडन तटस्थ रहा है रूस के साथ उस के सबध अच्छे रहे हैं, इसलिए अन्य देशों के सवाददाताओं से उन्हें अधिक छूट है, फिर भी परोक्ष रूप से नियत्रण तो रहता ही है

एक आम, बादाम की बरफी और चिवडे हम ने उन्हें दिए आम तो शायद पहले कहीं वह खा चुके थे, किंतु बरफी और चिवडे उन्होंने पहली बार देखे और चखे उन्होंने बडी रोचकता के साथ इन के नाम पूछे और नोट किए शायद उन्हें ये चीजें बहुत ही स्वादिष्ट लगीं

मिस्टर जौन को हम ने बताया कि हम अपने देश के ससद सदस्य हैं और शासकदल काग्रेस के हैं पडित नेहरू के विचारों से सर्वथा सहमत हैं और हमारी यात्रा का उद्देश्य है, विदेशों के औद्योगिक विकास की जानकारी प्राप्त करना सोवियत सरकार के आमत्रण पर ही रूस आए हैं, इसलिए हमारी इच्छा है कि इस महादेश के बारे में अधिकाधिक परिचय प्राप्त करें इस के बाद हम फिनलैंड होते हुए स्वीडन जाएगे हम ने बताया कि भाषा की दिक्कत और सरकारी नियत्रण के कारण हम यहां के बारे में आशानुकूल जानकारी नहीं कर पा रहे हैं

पता नहीं, भारत ने या भारतीय मिठाई ने उन्हें प्रभावित किया, वह हमें यथासाध्य सहयोग देने को तैयार हो गए यही नहीं उस अनजाने शहर में वह हमारे लिए बिना फीस के गाइड बने और सारे दिन की सर्विस अपनी मोटर के साथ दी

उन्होंने हमारे लिए प्रोग्राम बना दिया और कहा, "बातचीत हम बाहर घूमतेफिरते करते रहेंगे, खानेपीने के टेबल पर नहीं क्योंकि हो सकता है कि कोई गुप्त माइक्रोफोन टेबल पर हो या पास की टेबल पर अगरेजी जानने वाला गुप्तचर हो आप लोग प्रश्न बहुत सावधानी से करें और जितना उत्तर दू उसी से सतोष कर लें" दो घटे बाद हरमिटेज में मिलने का वचन दे कर उन्होंने हम से विदा ली

हम दोनों अकेले ही शहर घूमने निकल पडे लेनिनग्राद सोवियत सघ का दूसरा बृहत्तम नगर है और ससार के बडे शहरों में इस का स्थान (शायद ग्यारहवां) है यहां की जनसख्या लगभग तीस लाख है

लेनिनग्राद बहुत कुछ वीनिस या एम्सटर्डम की तरह सौ से भी अधिक छोटेबडे द्वीपों पर बसा हुआ है यहां करीब चार सौ पुल है जो यहां के विभिन्न

लेनिनग्राद की सडको पर मास्को की तरह काम पर भागते हुए लोग
नजर नही आते

महल्लो को एकदूसरे से जोडते हैं ग्रीष्मऋतु में तो यहा अठारहउन्नीस घंटे तक सूर्य का प्रकाश रहता है, और जाडे में नौ बजे दिन तक अधेरा इस का कारण यह है कि ६० अक्षाश पर स्थित होने के कारण यह ध्रुवात्तलीय क्षेत्र में है सरदी यहा इतनी ज्यादा पडती है कि तापमान शून्य से भी ३० डिग्री नीचे उतर जाता है नेवानदी जाडे के मौसम में जम कर पत्थर सी हो जाती है उस समय यहा के निवासी इस पर तरहतरह के खेल खेलते हैं बडी हिम्मत और जीवन की जरूरत इन खेलो के लिए पडती है शरीर में बल, स्नायुयों में शक्ति और अभ्यास इन के लिए आवश्यक है भारत में आए हुए 'हालिडे आन आइस' से इस की कुछ झाकी मिल सकती है इन खेलो को देखने के लिए सोवियत सघ के दक्षिणी भाग तथा पडोसी देशो से हजारो यात्री आया करते हैं

ससार के अन्य बडेबडे शहरो की तरह यहा भी इतिहास ने करवटें बदली हैं, मामूली व्यापार केंद्र था यह किसी जमाने में स्वीडन के व्यापारी नेवा के मुहाने पर जहाजो से आयाजाया करते थे और रूस से माल की खरीदफरोख्त करते थे यहा दलदलीय जमीन थी, सरदी हद से ज्यादा पडती थी रूस के प्रसिद्ध सम्राट पीटर महान को धुन चढी कि राजधानी यहीं बन, ताकि यूरोप के सभ्य देशो के निकट वे केंद्र बना सके

पीटर रूस को दकियानूसी घेरे से बाहर ला कर यूरोप के देशो की पक्ति में बैठाना चाहता था रूस को आधुनिक बनाने में उस का अवदान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण ह सम्राट पीटर ने अपनी मुराद पूरी की और लेनिनग्राद को सन १७१७ में रूस की राजधानी बनने का गौरव मिला किंतु उस न इसे अपना नाम नहीं दिया बल्कि ईसाई धर्म के महान प्रचारक सत पीटर की स्मृति में इस का नाम सट पिटसबग रखा इस के नाम से जुडी हुई जरमन भाषा की बू हटाने के

लिए बाद में इस का नाम बदल कर पेत्रोग्राद रखा गया लेनिन के प्रति कम्युनिस्टों की अपरिमित भक्ति के कारण इस का नाम १९२४ में लेनिनग्राद कर दिया गया लगभग दो सौ वर्षों तक इस ने रूस का शासन किया यहीं जारशाही का राजदंड घूमता रहा यहीं से पीटर, कैथरीन और अलेग्जेंडर ने विशाल रूसी साम्राज्य पर निरंकुश शासन किया फिर यहीं केंद्र बना जारशाही का तख्ता उलटने का सम्राटों की मानमर्यादा, भय, आतंक उन की अच्छाइयां या बुराइयां सभी को साम्यवादी क्रांति ने समान रूप से धूलिधूसरित कर दिया शहर को देखने पर बारबार मन में भावना उठती है 'खंडहर बता रहे हैं, इमारत कितनी बुलंद थी!'

खैर, आज भी लेनिनग्राद शानदार है उद्योगधंधों और कलाकौशल सभी में वह दूसरे सोवियत नगरों से आगे है सोवियत संघ के बंदरगाहों में लेनिनग्राद को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समझा जाता है इस की गोदी लगभग सोलह मील लंबी नहर के जरिए सागर से जुड़ी है और संसार के बड़े बंदरगाहों में मानी जाती है लगभग तीन सौ विदेशी जहाज ही यहां पर प्रति वर्ष आते हैं कलकत्ता और बंबई में इस से कहीं अधिक जहाज विदेशों से आया करते हैं, जब कि संसार के चुने हुए बंदरगाहों में इन की गिनती नहीं होती कारण स्पष्ट है, इस समय तक भी रूस विदेशी व्यापार के प्रति शंकाशील है

जनसंख्या की दृष्टि से मास्को लेनिनग्राद से दोगुना है और सोवियत संघ की राजधानी होने के कारण उस का महत्त्व भी अधिक है फिर भी, जहां तक कला और वास्तुशिल्प का सवाल है इस की बराबरी में रूस का कोई भी शहर नहीं आता संसार के सुंदरतम नगरों में इस की गिनती होती है अब तक जिन बड़े बड़े शहरों में जा चुका था उन में बंगलौर, स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख और लूजन, पेरिस, स्टाकहोम, हेग और वियना के समकक्ष इसे माना जा सकता है

लेनिनग्राद की सड़कों पर घूमते हुए लगता है कि यूरोप के किसी अच्छे शहर में हम हैं शहर के केंद्रीय भाग को हम देख रहे थे हमें यहां टूटीफूटी अंगरेजी समझने वाले बीचबीच में मिल गए इन से बड़ा सहारा मिला भारतीय भाषाओं में यों ही यात्रा वृत्तांत बहुत कम हैं, बंगला में कुछेक हैं जरूर लेनिनग्राद के विषय की आधुनिक जानकारी के बारे में तो अंगरेजी में भी बहुत ही कम सामग्री है इसलिए यहां के स्थानीय लोग बड़ी रुचि के साथ अपने शहर के इतिहास और श्रेष्ठता को बताते हैं मास्को में यह बात नहीं है

यहां कुछ वृद्धों से बातें करने पर लगा कि वे अपने भूतपूर्व सम्राट व सम्राज्ञी की चर्चा में उसी प्रकार रुचि रखते हैं जैसे ब्रिटेन के लोग बड़ी खुशी से उन के व्यक्तिगत जीवन की प्रणय कथा, उन की मनमानी या जिद्दीपन का बयान करते हैं

यहां स्मोलनी इंस्टीट्यूट को देखते समय उन्होंने बताया कि यह विद्यालय मूलतः राजघराने अथवा रईसों की कन्याओं के लिए बनाया गया था सन १९१७ में इसे बोल्शविकों ने अपना प्रधान केंद्र बनाया लेनिन इसी भवन की तीसरी मंजिल पर रहता था

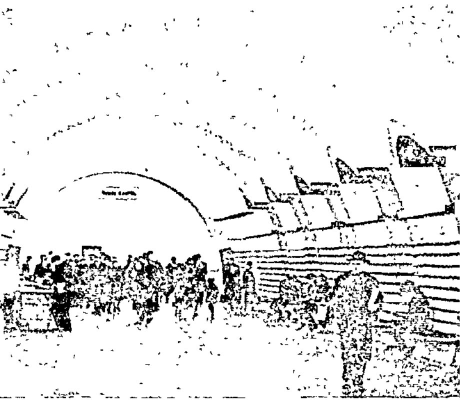

लेनिनग्राद का भूगर्भ ट्रेन स्टेशन मास्को के भूगर्भ ट्रेन स्टेशन के मुकाबले शत प्रतिशत घटिया

पास के ताबरिस भवन को भी हम ने देखा. इस के बारे में बड़ा मनोरंजक इतिहास था. इसे रूसी सम्राज्ञी कैथरिन ने अपने प्रेमी प्रिंस पोतोम्किन के लिए बनवाया था. क्रिमिया के युद्ध में विजयी होने पर उसे उपहार में दिया गया. प्रिंस ने इसे दूसरे को दे दिया मगर कैथरिन ने फिर इसे खरीद कर अपने प्रेमी प्रिंस को दोबारा उपहार में दे दिया. इस ढंग की राजसी मौज की बात मैं ने पहले कभी नहीं सुनी थी. उन्नीसवीं शताब्दी तक यूरोप के राजघरानों में इस प्रकार की खुली प्रेम चर्चाओं की कथाएं इतिहास में भरी पड़ी हैं.

लेनिनग्राद को बनानेसंवारने का दो वास्तुकारों को बहुत बड़ा श्रेय है. दोनों में इतालवी रक्त था. एक का नाम था वार्तालोम्यों रास्त्रेली. इस का जन्म पेरिस में हुआ था, किंतु सन १७१६ में यह रूस में आ कर बस गया. इसी ने शरद प्रासाद तथा अन्यान्य राजप्रासाद बनाए. दूसरा था कार्लो इवानोविच रोस्सी. लेनिनग्राद की एक इतालवी नर्तकी का यह पुत्र था. रोसी ने यहां के सीनेट, बैले स्कूल, पुस्तकालय और अलेक्जेंड्रेस्की थिएटर का निर्माण किया. इस थिएटर का नाम अब रूसी साहित्यकार की स्मृति में पुश्किन रख दिया गया है.

जार शासन के अंत के साथसाथ लेनिनग्राद के प्राचीन और मध्ययुगीन गौरव का अवसान हुआ. अप्रैल १९१७ में लेनिन स्विट्जरलैंड से यहां आया. चंद

महीनो में उस के क्रांतिकारी विचार शोषित और आतंकित रूसी प्रजाजनो के दिमाग में घर कर गए अक्टूबर में साम्यवादी मजदूरो और मल्लाहो ने शरद प्रासाद को घेर लिया मल्लाहो के पास उस समय 'औरोरा' नामक एक युद्धपोत भी था इस पर से उन लोगो ने शरद प्रासाद पर गोले बरसाने शुरू कर दिए यहीं से लेनिन की शक्ति का निखार हुआ जहाज आज भी वहा के नेवेल म्यूजियम में है हम ने प्रश्न किया कि जार के प्रति रोष था, पर जार तो मार्च १९१७ में ही सिंहासन त्याग चुका था उत्तर मिला, ठीक है अस्थायी सरकार जरूर थी पर शोषित वर्ग इतना असतुष्ट हो चुका था कि उस में धैर्य नहीं था और शासन सूत्र को हाथ में लेने के लिए लाल क्रांति की जरूरत पड़ी

विद्रोह हुआ, लूटमार हुई, हजारो जानें गई भुखमरी और बेकारी फैली साम्यवादी सरकार ने शोषित वर्ग का त्राता बन कर लोगो का दमन किया पहले था जार का आतंक, अब जनता के नाम पर जनता में जनता की सरकार का आतंक छा गया जनसकुल नगर की आबादी इक्कीस लाख से घट कर १९२० में सात लाख रह गई

साम्यवादी प्रचार में बडे प्रवीण होते हैं जिस बात का प्रचार चाहते हैं उसे निपुणता से करते हैं और जिसे रोकना चाहते हैं उसे लोहे के आवरण से ढक देते हैं उस समय भी यही हुआ समाचारो पर लाल सरकार ने रोक लगा दी यह क्रम स्तालिन की मृत्यु तक चला अपने शासनकाल में स्तालिन ने जितनी हत्याए करवाई उन की उस समय किसी को खबर तक न लगी इतिहास में चगेज, तैमूर और नादिरशाह आदि के बारे में सुना जाता है कि हजारो को उन्होंने कटवा दिया पर यह भी सही है कि वे लुटेरे या डाकू ही माने जाते रहे, नेता या कामरेड नहीं हा, शासको ने, राजाओ ने भी कभीकभी ऐसे जघन्य आचरण किए हैं पर साम्यवादी शासको ने उन से कम नहीं किया तो फिर क्या अतर रहा सामतवाद और साम्यवाद में?

लेनिनग्राद और मास्को में हमें वैसा फर्क लगा, जैसा कि अपने देश के बगलौर और कलकत्ता में है यद्यपि लदन या न्यूयार्क की तरह मास्को के नागरिक काम पर भागते नजर नहीं आते फिर भी लेनिनग्राद से कहीं ज्यादा भीड यहा नजर आती है शाम को नागरिक जिस मौज में लेनिनग्राद की सडको पर मिलते है वह नजारा मास्को में देखने में नहीं आता सेंटों की सौरभ बिखेरती महिलाए भी लेनिनग्राद में मिल जाएगी, पर मास्को में नहीं आश्चर्य है कि 'बुर्जुआ' प्रवृत्ति थोडीबहुत मात्रा में यहां जीवित कैसे रह पाई!

एक बात की लेनिनग्राद और मास्को में होड सी लगी रहती है यहां वाले मास्को वालों को अपने से घटिया मानते है यहां की एक भूगर्भ ट्रेन में मैं सफर कर रहा था मैं ने बातचीत के सिलसिले में बताया कि मास्को के मेट्रो में भी बैठ चुका हू तुरत उत्तर मिला, "मगर वहां तो इस ढग की खूबियां नहीं है" पता नहीं किन खूबियो की तरफ उन का इशारा था! क्योंकि जहा तक मेट्रो का सवाल था, मास्को की यहां से बहुत ज्यादा सुदर थी

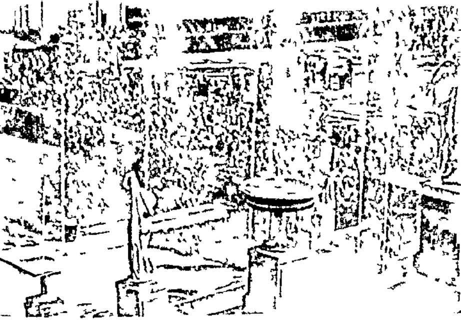

जार के खूबसूरत महलों को देखने के लिए आज भी सारी जनता बारबार जाती है

लेनिनग्राद और मास्को की प्रतिद्वंद्विता इतनी गहरी है कि दोनों के म्यूजियम किसी एक कला वस्तु को अपने यहां लाने के लिए दूसरे देशों में भी मूल्य की ऊंचीऊंची बोली बोलते हैं

मास्को का बोलशोय थिएटर मशहूर है, लेकिन लेनिनग्राद का बैले भी नायाब माना जाता है यहां वालों की एक मजेदार शिकायत यह सुनने में आई कि मास्को वाले उन के कलाकारों को अपने बैले के लिए 'हरण' कर ले जाते हैं मुझ से तो एक युवक ने यह भी कहा, "अच्छा किया जो आप यहां चले आए, मास्को में जिंदगी है कहां?"

शहर का केंद्र भाग पेरिस के प्लेस द ला कांकर्ड से बहुत कुछ मिलता है यहां हम ने दो प्रतिमाएं देखीं एक दिसंबर चौक में रूसी सम्राट पीटर महान की है कांसे की बनी यह प्रतिमा बहुत ही शानदार है सम्राट घोड़े पर सवार है, गर्वोन्नत मस्तक है उस का यह सम्राट था भी अत्यंत व्यक्तित्वशाली कहा जाता है, कि पीटर जितना दीर्घकाय था उतना ही बलिष्ठ भी लंबाई थी ६ फुट ९ इंच इस के शौर्य और बल की गाथाएं आज भी लोगों की जबान पर हैं रूस का इतिहास इस के कृतित्व से भरा पड़ा है क्रूर भी वह कम नहीं था बारह हजार लोगों को इस के हुक्म से एक ही दिन मौत के घाट उतार दिया गया था फिर भी यदि यह कहा जा सकता है कि स्तालिन ने रूस को दुनिया के सर्वशक्तिमान राष्ट्रों की पंक्ति में बैठा दिया, तो यह कहना ही पड़ेगा कि पीटर ने अंधकार में पड़े पिछड़े रूस को प्रकाश दिखाया और यूरोप के उन्नत देशों के बीच खड़ा कर दिया पीटर की यह प्रतिमा दो फ्रांसीसी मूर्तिकारों ने बनाई है

दूसरी प्रतिमा है रूसी सम्राट निकोलस प्रथम की इस सम्राट के बारे में एक मजेदार बात सुनने में आई आज का सिटी हाल मूलत मेरिस्की प्रासाद था सम्राट ने इसे अपनी रानी मेरी के लिए बनवाया था मगर रानी को यह प्रासाद जचा नहीं न जचने का कारण यह था कि सम्राट की घुडसाल क्यो इस की किसी एक खिडकी से दिखाई पडती है! राजारानियो के चोचले प्राय सारे देशो में एक समान ही रहे है

मिस्टर जौन से हमें निश्चित स्थान और समय पर मिलना था समय कम रह गया था घूमतेघूमते कुछ थकान सी हो आई काफी पीने के लिए हम एक रेस्तरा में गए, ताकि थोडी ताजगी आ जाए यहा भी वातावरण मास्को से भिन्न था लोगो के चेहरो पर ताजगी और कुछ बेफिक्री भी लगी एक टेबल पर हम बैठ गए एक अध्यापक पहले से बैठा था, विज्ञान का था स्वय ही उस ने हम से परिचय किया हमें भारत का जान कर उसे बडी खुशी हुई उस का कोई चाचा रूसी क्राति के समय भारत भाग गया था, फिर स्वदेश वापस लौटा नहीं थोडी बहुत बातचीत के बाद उस ने कहा, "निश्चय ही मास्को से हमारा शहर आप को ज्यादा अच्छा लगा होगा" हम ने यह स्वीकार किया

वह आगे कहने लगा, "हमारा शहर दुनिया में बेजोड हो उठता, मगर नाजियो के कारण इस के विकास में बहुत बडी बाधा पड गई सन १९४१ के अगस्त में नाजी लुटेरे साम्राज्यवादी नशे में अपनी अजेय फौजो को ले कर हमारे शहर पर चढ आए उन्होने जबरदस्त घेरा डाल दिया वह घेरा ९०० दिन के घेरे के नाम से प्रसिद्ध है बमबारी से शहर को वे तहसनहस करते रहे फिर भी हमारे बहादुर कामरेडों ने उन्हें आगे बढने नहीं दिया, बमो की मार से तो लोग मरते ही थे पर भुखमरी और सक्रामक व्याधियो से भी काफी लोग मरने लगे अनुमान है कि इस दौरान में लेनिनग्राद ने अपने आठ लाख नागरिक खो दिए फिर भी हम हिम्मत नहीं हारे जैसे ही बम वर्षा रुकती कि हमारे नागरिक खदको से या मलबो से मृतको को निकाल लाते, घायलो की सेवाशुश्रूषा करते और फिर अपने दैनिक काम में लग जाते

"आखिर जनशक्ति के सामने साम्राज्यवादी नाजी टिक न सके जनवरी १९४४ में उन्हें हार कर यहा से हटना पडा उन के लाखों सैनिक बर्फानी हवा और ठड से जम कर अकड गए सदा के लिए नेवा नदी में रह गए युद्ध विशारदो का तो यहा तक कहना है कि यदि नाजी रूस पर हमला नहीं करते तो उन की सर्वोत्तम फौजें बरबादी से बच जातीं और बहुमूल्य युद्ध सामग्री भी नष्ट न होती तब शायद युद्ध का नतीजा दूसरा ही होता रूस से नेपोलियन भी टकराया था, मास्को में तो घुस गया था ताल्सताय के 'युद्ध और शांति' में इस का वर्णन है नेपोलियन को भी पता चल गया कि रूस का किसान केवल धरती की छाती नहीं चीरना जानता, साम्राज्यवादी लुटेरों के सिर छेदना भी जानता है उस समय मैं बहुत छोटा था, पर मैं ने भी यथाशक्ति लडाई में भाग लिया था"

उस की जोश भरी बातों में सचाई थी मगर जब उस ने यह कहा कि

दुनिया में यहां ऐसी मिसाल नहीं मिलेगी तो हम ने उसे बताया कि हमारे भारतवर्ष में इस ढंग के एक नहीं अनेक उदाहरण हैं. मैं ने चित्तौड़ के घेरे की बात उसे बताई.

वह आश्चर्यचकित रह गया, कहने लगा, "मगर यह तो एक व्यक्ति की जिद की बात थी, पर यहां तो पूरी जनता का बलिदान था."

हमें देर हो रही थी, अतः उस से विदा लेते हुए हम ने कहा, "राजा हो या नेता, सभी के पीछे जनता का बल तो रहता ही है. व्यक्ति यदि समष्टि को साथ ले कर चलता है तो समष्टि स्वतः उस में सिमट जाती है."

मैं ने देखा, वह कुछ उलझाउलझा सा काफी पीने में लग गया.

रास्ते में प्रभुदयालजी मुझे समझाने लगे, "सोवियत शासन अथवा साम्यवादी तरीके में व्यक्ति के व्यक्तित्व को नष्ट कर दिया जाता है. मास्को में यह देख चुके हो. बहुत बचपन से उस के विचार को केवल साम्यवादी सरकार की समर्थित दिशा में ही बढ़ने दिया जाता है. फलतः यहां इतिहास और संस्कृति की विविधता को समझने और परखने की शक्ति नई पौध में है कहां. यह तरीका लगभग पिछले तीस वर्षों से अपनाया गया है. इस का ध्यान रखना चाहिए. यहां बहस का मौका नहीं देना चाहिए वहीं किसी दूसरे मिरकोव की छाया लगी कि अब तक का सारा मजा किरकिरा हो जाएगा."

हरमिटेज के करीब हम आ गए देखा, मिस्टर जौन लान में खिले फूलों को देख रहे हैं. वह आगे बढ़ आए, कहने लगे, "कोई दिक्कत तो नहीं हुई?" हम ने उन्हें अपने अनुभव के बारे में संक्षेप में सुना दिया. "आप अच्छी किस्मत वाले हैं, दोस्ती करना जानते हैं."

मिस्टर जौन हम दोनों को साथ ले कर हरमिटेज दिखाने ले चले. उन्होंने बताया, "यहां के दर्शनीय स्थानों में यह सर्वोपरि है. रोम के वेटिकन और पेरिस के लूव्रे म्यूजियम के समकक्ष इस संग्रहालय को माना जाता है. अलभ्य वस्तुएं यहां संगृहीत हैं. वास्तव में पहले यह जार का राजप्रासाद था. यह इतना बड़ा है कि यदि इस के सारे बरामदों में घूमा जाए तो १६ मील का चक्कर लग जाए. इस में १,५०० बड़ेबड़े कक्ष हैं. इन में से सिर्फ ४०० को संग्रहालय के काम में लाया गया है इस की चित्रशाला का संग्रह भी अमूल्य है. राम्बेंडे, पिकासो, रूबेंस, टिटान, ल्योनार्दो दाविंची आदि के दुर्लभ चित्र यहां मिलेंगे. इन में से किसीकिसी का मूल्य करोड़ दो करोड़ तक है."

मैं ने लूव्रे और वेटिकन में इन में से प्रायः सब प्रसिद्ध चित्रकारों की बनाई अन्य तसवीरें पहले देखी थीं.

हरमिटेज का आकर्षक अंश है इस का खजाना. इस में प्रवेश के लिए अनुमति प्राप्त करनी पड़ती है. हम ने पहले से इंतजाम कर लिया था. खजाने में संसार के अद्वितीय सोने के गहने, बरतन और वस्तुएं हैं. प्राचीनकाल से ले कर जार के समय तक के स्वर्णाभूषण देखने लायक हैं. मिस्र के सम्राट तुतमखामन की समाधि से निकाले गए स्वर्ण पात्र, अलंकार और राजचिह्न भी यहां देखे.

रूसी सम्राटों के जवाहरात, अलंकारआभूषण और उन के काम में आने

वाली वस्तुए देखीं सोने की बनी इन चीजो की कारीगरी और सफाई बेशक लाजवाब है, पर वह दक्षता जो भारतीय कारीगरो के हाथ में है वह इन चीजों में नहीं दिखाई पडी ठोस सोने की एक बडी सी शृगारदानी देखी ६० कक्ष थे उस में यह रूस की सम्राज्ञी अन्ना की थी सन १७१० से १७४० तक इस का शासनकाल रहा है इन्हें स्नान से बडी चिढ थी बदन पर खुशबूदार उबटन लगवा लेती थी और उसे साफ करा लेती थीं यहीं एक कबल देखा, जिसे तुर्की के सुलतान ने सम्राट निकोलस प्रथम को सन १८३० में उपहार दिया था ८९ बडेबडे हीरे, जो हमारे यहा के नए पैसे के बराबर होगे, इस पर जडे हुए हैं प्रकाश की किरणें इन हीरों पर बिखर कर समय की करवटो को मुसकरा कर बता रही थीं मैं सोच रहा था कि यद्यपि रूस की सर्दी के अनुरूप ही कबल मोटा और गरम है पर क्या इन हीरो से कबल की गरमी और बढ़ जाती है? इन सब के अतिरिक्त ६० सदूको में बद किए हुए आभूषण वहा और थे

पीटर महान के कक्ष की ओर जाते हुए मैं ने मिस्टर जौन से कहा, "अचभे की बात तो यह है कि साम्यवादी सरकार ने ६० बडेबडे सदूको में भरे ठोस सोने के पात्र और आभूषणो को बेच कर अपने शासनकाल के प्रारभिक दिनो की भुखमरी से अपने भूखे नागरिको को बचाया क्यो नहीं? विदेशी तो बडीबडी कीमतें इन के लिए दे देते लाखों व्यक्तियो के प्राण बच जाते

मिस्टर जौन ने कहा, "इन चीजो का ऐतिहासिक महत्त्व है, इसी लिए इन्हें सुरक्षित रखा गया है बात सही है मगर साम्यवादी तो इतिहास, धर्म और सस्कृति को स्वीकार करते नहीं—यहा तक कि अपने देश के भी जिस तरह इसलाम या ईसाई मजहब में धर्म, सभ्यता और सस्कार की शुरुआत मानी जाती है उन के अपनेअपने पैगबर के आविर्भाव के साथ उसी प्रकार साम्यवादी भी मार्क्स के आविर्भाव के साथ यथार्थ सभ्यता और सस्कृति का विकास मानते हैं उन के लिए इस के पूर्वकाल की सभी बातें जगलीपन की हैं, उन में वर्ग सघर्ष है, शोषण है"

"मेरा खयाल है कि जारो की इन बहुमूल्य वस्तुओं का प्रदर्शन इसलिए कराया जाता है कि लोग समझें कि जार शासक जनता का शोषण कर के कितनी ऐयाशी करते थे"—मैं ने अपने विचार रखे

सम्राट पीटर के कक्ष में उस के निजी काम में आने वाली चीजें देखीं शरीर के अनुरूप ही उस के शस्त्र भी लबेचौडे थे वहीं एक नुकीली गदा भी रखी थी, जिस से उस ने अपने बेटे का सिर फोड दिया था कहते है, कि उसे अपनी रानी के चरित्र पर सदेह हो गया था जहां तक उस ने रानी के प्रेमी की नृशस हत्या की वह तो समझ में आने की बात है, पर बेचारे बालक का क्या कसूर था?

सभी कक्षो को यदि सरसरी तौर पर देखा जाए, तो कम से कम दो दिन का समय चाहिए हमारे पास तो इतना ही समय पूरे लेनिनग्राद के लिए था अतएव हम काजान कैथेड्रल देखने के लिए निकल पडे

रोम के सेंट पीटर्स गिरजे के अनुरूप यह बनाया गया है. इसे सन १८०१ में बनाना शुरू किया गया और लगभग ग्यारह वर्षों में पूरा किया गया. इस के ऊपर का गुंबद रूस भर में सब से अधिक सुंदर है. मेरा खयाल था कि रूस का यह सब से सुंदर गिरजा अब भी उपासना मंदिर होगा. मगर यहां आने पर पता चला कि सन १९२९ में इसे विज्ञान की अकादमी बना दिया गया था और इन दिनों यह धर्मों के इतिहास का संग्रहालय है. धर्म के नाम पर जो विभिन्न अत्याचार किए जाते रहे हैं उन की सजीव झांकियां यहां देखने में आती हैं. एक झांकी में देखा कि बंदियों को जलाया जा रहा है. दूसरे में देखा, उन के शरीर की बोटियां उछाली जा रही हैं. यहीं एक औजार ऐसा देखा जो बंदियों के मुंह पर लगा दिया जाता था ताकि उन का मुंह न खुल सके. बंदी को भूखा रख कर कई दिनों बाद उस के मुह पर यह औजार वे लगा देते थे और उस के सामने खाना रख देते थे. बेचारा खाना देखता था और घुटघुट कर मरता था. एक ऐसी कुरसी देखी जिस में नुकीले कांटे लगे थे. उस पर भूखे बंदी को बैठने के लिए विवश किया जाता था. वे उसे उसी से बांध देते थे और खाना देते थे. लहूलुहान हो कर वह दो कौर खा भी न पाता था कि दम तोड़ देता था.

जी घबरा उठा. क्या उपासना मंदिर का ऐसा उपयोग साम्यवादी उचित समझते हैं? विकृत प्रवृत्तियों या पाशविक आचरणों को धर्म की आड़ देना पुरानी बात है. साम्यवाद यदि इस बर्बरता का विरोधी है तो उसे साम्यवादी मसीहा स्तालिन के कारनामों और उस के बाद किए गए हजारों के अत्याचारों की झांकियां भी यहां लगा देनी चाहिए. यदि आज इन्होंने ईमानदारी से नहीं लगायीं तो आने वाला कल इन्हें माफ नहीं करेगा. स्तालिन की लाश को लाल मकबरे से निकाल कर जब साम्यवादी अनजान जगह दफना सकते हैं तो क्या भविष्य में साम्यवाद का नशा उतरने पर इन की कारगुजारियों को आने वाली पीढ़ी बतौर सबक के दुनिया के सामने नहीं रखेगी!

खड़ा हुआ मैं एकटक कब तक न जाने उस कंटीली कुरसी को देखता रहा. मिस्टर जौन ने कहा, "गौर से क्या देख रहे हैं?"

मैं सचेत हो गया, धीरे से कहा, "सोच रहा हूं कि इन अमानुषिक यन्त्रणा-दायक वस्तुओं को दिखा कर कहीं साम्यवादी नेता अपने किए गए अत्याचारों को ढकने का प्रयत्न तो नहीं कर रहे हैं?"

लेनिनग्राद-२

खडहरों में सच्चाई की ढूंढ?

काजान गिरजाघर देखने पर मन कुछ भारी सा हो गया था तरहतरह के विचार उठने लगे मैं ने मिस्टर जोन से अनुरोध किया कि अब गिरजाघरो को न देख कर ऐतिहासिक महत्त्व के किसी स्थान को देखा जाए हम सत पीटर और पाल के किले की ओर चले

सिलेटी रग की नीवा नदी के बीच किले की पीले रग की मीनारें आसमान में बादलो से छेडछाड कर रही थीं दूर से ऐसा लगता था मानो छोटा सा किला होगा पर अदर जाने पर देखा कि अपने में यह एक अच्छीखासी वस्ती है इस किले को सम्राट पीटर महान ने बनवाया था काफी पुरानी इमारतें यहा हैं जो देखभाल की वजह से अब भी दुरुस्त हैं निकोलस प्रथम को छोड कर प्राय सभी रूसी सम्राटो की समाधिया इस में हैं कई अच्छे गिरजे भी सम्राटो द्वारा इस में बनवाए गए थे जो आज भी हैं हम ने सत निकोलस का गिरजा देखा पुराना होने के बावजूद इस की सुनहरी चमक आज भी शानदार है युसुवोव महल का वह स्थान भी देखा जहा रासपुतिन की हत्या की गई थी यहीं हम ने सम्राट पीटर का ग्रीष्म प्रासाद देखा चारो तरफ कुज और उपवन हैं, जगहजगह कलापूर्ण प्रस्तरमूर्तिया ह जाडे में इन्हें लकडी की पटिटयों से ढक दिया जाता है ताकि फूले और ठड के कारण चटक न जाए मुझे लेनिनग्राद भर में इस प्रासाद से अधिक आकर्षक स्थान दूसरा न लगा

समय सब कुछ बदल देता है. दिल्ली का लाल किला, जो कभी सल्तनते मुगलिया के शहनशाहो का महल था, उन्हीं के लिए बदीगृह बना देश की आजादी के लिए जा त देने वाले आजाद हिंद फौज के सिपाहियो का मुकदमा भी यहीं पर हुआ इसी तरह सत पीटर और पाल के किले ने जारशाही के नजारे देखे और उन्हीं के लिए यह कारागार भी बना पीटर प्रथम के शासन काल से यह अत्याचार और हत्या का प्रधान केंद्र बना रहा लगभग दो सौ वर्षों में यहा न जाने कितने लोग जातेजी गाड दिए गए, कठोर यत्रणा देदे कर मार डाले गए या इस की सडी बदबूदार अंधेरी कोठरियों में पडेपडे पागल हो गए रूस के बडेबडे क्रान्तिकारियो को यहां कारावास का दड मिला प्रसिद्ध क्रांतिकारी लेखक दास्तो यव्स्की को यहीं कोठरी में बद किया गया था

किला देख कर हम लेनिनग्राद का स्टेडियम देखने निकले. रास्ते में एक मसजिद भी देखने को मिली. ईसाई प्रधान अंचल में मसजिद का होना विस्मयकारी था, खास तौर से इसलिए कि रूस में धर्म को महत्त्व नहीं दिया जाता है. पूछने पर पता चला कि रूस में ईसाइयों के बाद मुसलमानों की संख्या सब से ज्यादा है. सोवियत देश के एशियाई क्षेत्र के कई राज्यों में तो मुसलमानों की संख्या अधिक है ही, यूरोपीय अंचल के जार्जिया और आरमेनिया आदि इलाकों में भी इन की संख्या काफी है. लेनिनग्राद जारों के समय राजधानी थी और अब भी यहां काफी संख्या में मुसलमान आतेजाते रहते हैं, इसलिए यहां मसजिद में जुमे के दिन काफी चहलपहल रहती है.

इन के अलावा यहूदी और बौद्ध भी सोवियत देश में हैं. इन दिनों रूस में लगभग ढाई लाख यहूदी हैं. बौद्ध बहुत कम हैं पर मध्य एशिया में इन की संख्या काफी है. एक समय था जब अफगानिस्तान की सीमा से ले कर चीनसागर तक बौद्धविहार जगहजगह बने थे. इस्लाम के अभ्युदय के साथ ही बौद्ध का पराभव हुआ. आज भी इन के अवशेष यत्रतत्र मिल जाते हैं.

रूस में यहूदियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है. जरमन नाजियों की तरह उन पर कठोर अत्याचार भले ही न किए गए हों पर इन्हें नाना प्रकार से हतोत्साहित किया जाता रहा है और अब भी यही सिलसिला जारी है. इस के कारण का सही अनुमान लगाना कठिन है. शायद संयुक्त अरब राष्ट्रों की तुष्टि के लिए यहूदियों से तनाव बनाए रखना आवश्यक समझा जाता हो. रूस वालों की यह भी धारणा है कि यहूदी एक अंतर्राष्ट्रीय कौम रही है पर अब इजरायल इन का अलग राष्ट्र बन गया है. ऐसी स्थिति में इन की वफादारी अन्य देशों के प्रति नहीं हो सकती है, इसी लिए इन पर विश्वास कम किया जाता है. यों तो सोवियत सेना और सरकार में ऊंचे पदों पर यहूदी भी हैं पर धीरेधीरे वे हटाए जा रहे हैं.

स्टेडियम शहर से लगभग छ सात मील दूर है इस में दाखिल होने के पहले एक प्रवेश पत्र दिखाना पड़ा मिस्टर जोन ने इस के लिए पहले ही प्रबंध कर दिया था. स्टेडियम देख कर अनुमान होता है कि सोवियत जनता और सरकार दोनों का उत्साह खेलकूद के प्रति काफी है खेलकूद को यहां के लोग राष्ट्रीय महत्त्व देते हैं और विदेशों से प्रतियोगिता में आगे बढ़े रहने का प्रयास करते हैं. एक पृथक मंत्रीपरिषद की देखरेख में खेलकूद का प्रबंध होता है. सोवियत संघ में दो खेल बहुत ही जनप्रिय हैं—मैदान में फुटबाल और घर में शतरंज. अन्य यूरोपीय देशों की तरह यहां गोल्फ के प्रति रुचि नहीं है सारे देश में अच्छेअच्छे क्लब हैं. पता चला इन क्लबों में लगभग तीस लाख अच्छी श्रेणी के खिलाड़ी हैं. सरकार की ओर से इन के खानेपीने और रोजगार की विशेष व्यवस्था की गई है

स्टेडियम के बाद मिस्टर जोन हमें ओरिएंटल इंस्टीच्यूट में ले गए. भारत में हमें एक बार राहुलजी ने बताया था कि यह रूस में प्राच्य विद्या तथा संस्कृति के अध्ययन का केंद्र है. भारत की लगभग सभी भाषाओं के शीर्ष लेखकों की चुनी

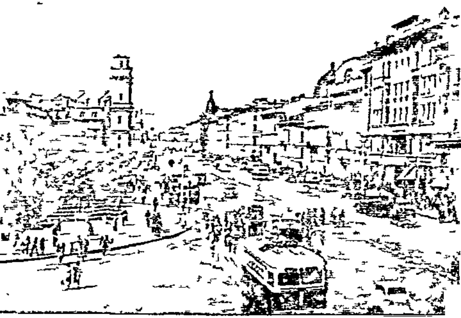

लेनिनग्राद का नावोस्की प्रास्पेक्ट को खूबसूरती देखने ही बनती है

हुई कृतियों का रूसी में यहां अनुवाद होता है हम ने दिवगत बारान्निकोव द्वारा तुलसी के 'रामचरितमानस' का अनूदित सस्करण देखा यहा हमें हिंदी भाषी रूसी भी मिले मुझ ऐसा लगा कि रूस की जनता भले ही द्वद्वात्मक भौतिकवाद के प्रति अधिक आस्था रखती हो, क्योंकि साम्यवादी सरकार ने उस के विचारों को इसी दिशा में मोड दिया है, फिर भी भारतीय चितन के प्रति उस की जिज्ञासा है अच्छा होता यदि हमारे यहां भी प्रयास किया गया होता कि हम विदेशों में अपनी सस्कृति और साहित्य का प्रसारप्रचार बढ़ाए हमारे बडेबडे मठाधीश, जिन के पास प्रचुर सपत्ति और साधन हैं, यदि भारतीय सस्कृति के प्रचार में थोडी सी भी रुचि लें तो न केवल हमारी राजनीतिक मर्यादा पुष्ट होगी, बल्कि दूसरे देशों से हमारा मैत्री सबध भी अधिक बढ़ेगा कम से कम पूर्वी एशिया और रूस के साथ तो निश्चित रूप से

ओरिएटल इस्टीच्यूट में सस्कृत, पाली, हिंदी, तमिल, बगला आदि भाषाओं के अच्छेअच्छे ग्रथों के अनुवाद हो रहे हैं

रात हो आई थी हम बदरगाह की ओर गए जून का महीना था पर हमें सर्दी लग रही थी बदरगाह के किनारे बहुत से मल्लाह युवतियों के साथ प्रेमालाप में तल्लीन थे इस ढग के दृश्य हम ने मास्को में नहीं देखे थे हम ने मिस्टर जोन से कहा, "रूस में तो इन बातों को प्रोत्साहन नहीं मिलता, फिर यहां यह सब कैसे?" उन्होंने जवाब दिया, "यह दृश्य आप को अजीब सा लगता है पर भूख की पूर्ति तो करनी ही पड़ती है, चाहे वह पेट की हो या सेक्स की ये मल्लाह महीनों घर से दूर रहते हैं इसलिए जहाज से उतरने पर इन का सब से पहला काम होता है—साथी ढूढ़ कर मौजमस्ती में डूब जाना सभी

देशो में ऐसा होता है हागकाग, सिगापुर, मार्सलीज, पोर्टस्माउथ आदि में इसी ढग के दृश्य देखने में आते हैं" हम ने कहा, "पर बबई, मद्रास, कलकत्ता में नहीं"

रात्रि के लगभग बारह बजे हम होटल वापस आ गए इस समय भी कुछ-कुछ प्रकाश था मिस्टर जोन ने हमारे साथ काफी पी और अगले दिन का कार्यक्रम निश्चित कर विदा ली चलते-चलते हसते हुए कह गए, "चिवड़े और बरफी तैयार रखें!"

हमारे विशेष आग्रह पर दूसरे दिन सुबह मिस्टर जोन स्वीडिश दूतावास के अपने एक मित्र को साथ ले आए हमारा परिचय कराते हुए उन्होने मित्र से कहा कि वह बिना सकोच अथवा दुविधा के रूस सबधी प्रश्नो के बारे में हमें बता सकते है, क्योंकि हम केवल जिज्ञासु हैं, हमारा उद्देश्य रूस अथवा साम्यवाद के विरोध में प्रचार करना नहीं है

हम यह जानना चाहते थे कि रूस की जनता ने एकाएक इस प्रकार रक्त क्राति को कैसे स्वीकार कर लिया? फ्रास में भी क्राति हुई, इगलैंड में भी, पर वहां तो परिस्थिति इतनी जल्दी नहीं बदली!

उत्तर में हमें बताया गया कि यहा की जनता अशिक्षित थी और जारो के अत्याचार, सामतवादी शोषण और धर्माचार्यों के पाखड के कारण आर्थिक व्यवस्था इतनी असतुलित रही कि उस से छुटकारा पाने का अन्य कोई उपाय समझ में नहीं आया लोग किसी भी मूल्य पर परिवर्तन चाहते थे और इसीलिए क्राति को उन्होने स्वीकार किया यदि उन्हें यह अनुमान होता कि क्राति के कारण उन का व्यक्तित्व नष्ट हो जाएगा तो शायद वे साम्यवादी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करते जो भी हो, जारशाही का अत कर के यहा प्रजातत्रवादी सरकार बनी पर १५ वर्ष बाद स्तालिन के शासन में उस का रूप अधिनायकवादी हो गया मार्क्स का नाम केवल प्रचार के लिए ही रह गया

स्तालिन ने भी वही किया जो पीटर और निकोलस करते थे जनता में भीतर ही भीतर असतोष फैला, पर उस के जीवनकाल में उस के रोबदाब के सामने किसी प्रकार का विद्रोह अथवा विरोध न हुआ स्तालिन की मृत्यु के बाद इस असतोष का सब से अधिक लाभ उठाया ख्रुश्चेव ने उस ने जनता को बताया कि स्तालिन ने तानाशाही चलाई जो मार्क्सवाद के प्रतिकूल है इस प्रकार के प्रचार से उस ने अपनी शक्ति बढ़ा ली

इस प्रसग में मैं ने उन से पूछा, "यह बात कहा तक सच है कि स्तालिन की हत्या की गई?"

उन्होने कहा कि सदेह लोगो में है पर निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता स्तालिन की मृत्यु किस प्रकार हुई, इस पर उन्होंने जो कुछ बताया, वह हमारे लिए एक नई जानकारी थी

अपनी बात की पुष्टि के लिए उन्होने एक प्रसिद्ध फ्रासीसी समाचारपत्र में प्रकाशित घटना का उल्लेख किया घटना इस प्रकार है कि स्तालिन की तानाशाही

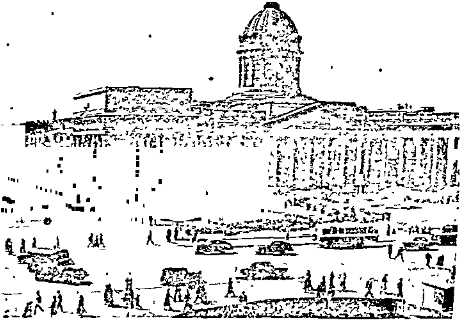

पुराना काजान गिरजाघर, जिस को इतिहास संबंधी संग्रहालय में बदल दिया गया है

का विरोध वोरोशिलोव ने किया. अपनी सेवाओं के कारण उस का प्रभाव और व्यक्तित्व रूसी नेताओं में स्तालिन से कम नहीं था. दोनों में विवाद और विरोध भीतर ही भीतर बढ़ता जा रहा था. उन्हीं दिनों रूसी प्रेसीडियम के समस्त सदस्यों की चिकित्सा का भार नौ प्रसिद्ध यहूदी डाक्टरों को सौंपा गया था. स्तालिन ने जनवरी १९५३ में चिकित्सकों को यह कह कर गिरफ्तार करा लिया कि इन्होंने सदस्यों की हत्या करने की योजना बनाई. दो डाक्टरों को तो इस बुरी तरह पीटा गया कि वे मर गए. दरअसल दोष बेबुनियाद था किंतु स्तालिन यहूदियों में आतंक की सृष्टि कर के उन्हें सुदूर साइबेरिया में बसाना चाहता था ताकि वे किसी से संपर्क न रख सकें. वोरोशिलोव ने एक बैठक में इस का विरोध खुले रूप से किया. मोलोतोव और कागनोविच भी उस के मत के थे, पर उन में विरोध करने का साहस नहीं था. वोरोशिलोव ने प्रेसीडियम की एक बैठक में अपनी जेब से सदस्यता का कार्ड निकालकर मेज पर फेंकते हुए कहा, "यदि बेकसूरों के प्रति इस ढंग की कारवाई की गई तो कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बने रहना मेरे लिए लज्जा की बात होगी." स्तालिन क्रोध से तमतमा उठा. उस ने वोरोशिलोव को डपटा, "तुम कौन हो सदस्य बनने या छोड़ने वाले! यह तो मैं हूं जो निर्णय करूंगा कि तुम्हें सदस्य बनाए रखा जाए या निकाल दिया जाए."

इस पर कुछ फुसफुसाहट हुई. लेकिन जब उपस्थित सदस्यों की नजर स्तालिन पर पड़ी तो उन्होंने देखा कि वह कुरसी से लुढ़क चुका है और फर्श पर औंधा पड़ा है. बेरिया, जिसे बाद में ख्रुश्चेव ने मरवा दिया था, खुशी से नाच उठा. कहने लगा, "आखिर हम आजाद हुए."

इसी बीच स्तालिन की लड़की स्वेतलाना खबर पा कर घटना स्थल पर आ

गई उस ने पिता के सिर को उठा कर गोद में रख लिया स्तालिन के शरीर में अब भी गरमी थी, पर वह कुछ बोल न पाया वह बेहोशी उस की मौत तक बनी रही

यह सही है कि स्तालिन ने तानाशाही की और अपने को पुजवाया, फिर भी यह मानना पड़ेगा कि उस ने रूस को सशक्त बनाया और ससार के अग्रणी राष्ट्रो में प्रतिष्ठित किया

१९२८ के बाद रूस ने पचवर्षीय योजनाए शुरु कीं आशानुकूल इन में सफलता नहीं मिल सकी, फिर भी एक पिछडे हुए विशाल देश के विकास के लिए इस के सिवा अधिक सुविधाजनक रास्ता और हो भी क्या सकता था? आज खाद्यान्न और खनिज पदार्थो में रूस स्वावलबी है फौजी सामान और आणविक शक्ति में उस के प्रतिद्वद्वी इगलैंड, फ्रास और जरमनी नहीं है उस का प्रतिद्वद्वी है अमरीका, जब कि अमरीका का वार्षिक बजट रूस से कहीं बढाचढा है

शिक्षा में रूस ने आशातीत प्रगति की है तीन दशको में ३० प्रति शत से बढा कर ९९ प्रति शत लोगो को शिक्षित बना देना मामूली बात नहीं

विश्व की सब से बडी जनसख्या वाले किंतु गिरे हुए राष्ट्र चीन को भी रूस ने उठाया और शक्तिशाली बनाया अपने अनुभवी फौजी अफसर और इजीनियरो को वहा भेज कर रूस ने चीनियो को तैयार किया आज वही चीन रूस विरोधी बन गया है रूसी भी सावधान हो चुके है युगोस्लाविया के प्रेसिडेंट टीटो के विरोध को सोवियतवासियो ने सह लिया है पर चीन के प्रति ऐसी भावना नहीं रहेगी रूस और चीन के बिगडते सबध इस ओर स्पष्ट सकेत करते है रूस वालो की धारणा है कि चीनियो के समान एहसानफरामोश और धोखेबाज विश्व में शायद ही कहीं हो मैं ने हस कर कहा, "हम तो इस के भुक्तभोगी है, हम से ज्यादा इस तथ्य को कौन जानता है!" फिर पूछा, "दोनो ही मार्क्स के सिद्धात को मानते है, दोनो ही साम्यवादी है, फिर यह असाम्य क्यो?"

वह कहने लगे, "सब से बडा वाद स्वार्थवाद है, इसे न भूलना चाहिए मनुष्य के जन्मकाल से यह उस के साथ जुडा हुआ है और सुविधानुसार समयसमय पर इस के नामकरण होते रहते है" हम सभी हस पडे वह कहने लगे, "साम्यवादी देश जनता को भुलाने के लिए मार्क्सवाद का नाम अपनेअपने ढग और तरीके से लेते रहते है, अन्यथा है ये सभी एकदूसरे से दूर मार्क्स ने १८६७ में जब 'कैपिटल' लिखा था तो उस समय स्थिति दूसरी थी उद्योगधधो की शुरुआत थी, मजदूरो का शोषण खूब होता था प्रति दिन बारह से सोलह घटे तक उन्हें काम करना पडता था और समाज में बहुत बडी विषमता थी पर समय के साथसाथ मान्यताए बदलती गई श्रमिकों की सुखसुविधा का ध्यान, स्वार्थपूर्ति की दृष्टि से ही सही, सभी जगह आवश्यक समझा गया चाहे वह पूजीवादी व्यवस्था हो या साम्यवादी इस समय यदि मार्क्स जिंदा होता तो शायद उसे कैपिटल लिखने की जरूरत नहीं होती क्योंकि इन सौ वर्षो में उस के विचारो के विरोधी देशों में मजदूरो या किसानो की दशा कम उन्नत नहीं हुई है यदि स्वीडन, अमरीका, पश्चिमी जरमनी और इ[illegible] जरलैंड को एक पलडे पर रखा जाए और दूसरे पर [illegible]

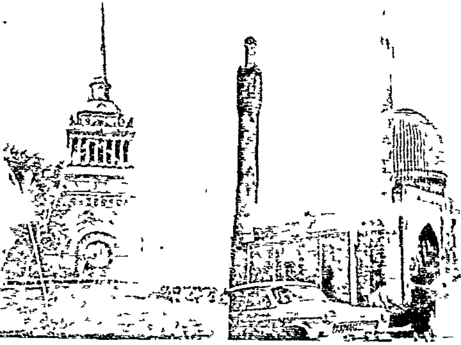

लेनिनग्राद का भव्य म्यूजियम 'एडमिरल्टी' व एक पुरानी मसजिद

जरमनी को तो इस कथन की सच्चाई का अंदाज मिल जाएगा.

५६-५७ में हंगरी में जिस नृशंसता से लाखों व्यक्तियों की हत्या की गई थी, उस के सिलसिले में उन्होंने बताया कि साम्यवादी सिर्फ यह मानते हैं कि सिद्धांत के आगे व्यक्ति का जीवन कोई भी मूल्य नहीं रखता. यदि हंगरी का विद्रोह सफल हो जाता तो फिर सोवियत गुट के अन्य देश भी सिर उठाते और तब रूस की सत्ता की साख घट जाती. इसी लिए मानअपमान या आलोचना की परवाह किए बिना कठोरता से दमन किया गया. राजनीति का उन का यह प्रयोग अब तक सफल रहा है. लोग उंगलियां भले ही उठा लें पर सिर नहीं उठा सकते.

हमें जितनी जानकारी यहां दो दिनों में मिली, मास्को में पांच दिन तक रह कर भी पा न सके थे. हम चाहते थे उन से और प्रश्न पूछें, पर ऐसा संभव न हुआ. समय उन के पास था नहीं और हमें भी अपने अगले कार्यक्रम के लिए तैयार होना था. शाम के प्लेन से हमें फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी जाना था. इसलिए दिन भर में जितना कुछ समय था, देख लेना चाहते थे.

यों तो लेनिनग्राद में ४८ म्यूजियम हैं पर हम इतने बड़ेबड़े म्यूजियम अब तक देख चुके थे, इसलिए हम उन में नहीं गए. फिर भी हम ने प्राकृतिक इतिहास के संग्रहालय को देखा. इस की तारीफ मास्को में हम ने सुनी थी. प्रागैतिहासिक काल से आज तक की वस्तुओं का संग्रह बड़े करीने से यहां है. हम ने यहां दस हजार वर्ष पहले का एक हाथी देखा. जिसे एक शिकारी ने साइबेरिया में बर्फ के नीचे दबा पाया था. वहां से इसे टुकड़ेटुकड़े कर के लाया गया और बाद में जोड़ कर यहां रख दिया गया. हजारों वर्ष पहले किस प्रकार मनुष्य और पशु साथसाथ रहते थे, किस प्रकार मानव समाज में विकास किया, इन्हें क्रमबद्ध रूप

से माडलों द्वारा यहां दिखाया गया है.

नौसेना का म्यूजियम भी हम ने देखा. इसे 'एडमिरल्टी' कहते हैं. यह भवन आधा मील लंबा है. इसे रूसी सम्राटों ने बनवाया था. यद्यपि रूसी नौसेना की शक्ति कभी भी उल्लेखनीय नहीं रही पर जारों को बड़े और विशाल भवन बनाने का शौक था इसलिए यह भवन बना. आज भी रूसी नौशक्ति प्रथम पंक्ति में नहीं है. म्यूजियम में हम ने पुरानेपुराने हथियार, जहाजों के माडल और विभिन्न युगों में बने नाना प्रकार के अस्त्रशस्त्र देखे.

हमें बताया गया था कि यदि रूसी कला का निखार देखना हो तो लेनिनग्राद के किसी थियेटर, विशेषतया किरोव को तो जरूर देखा जाए. हमें शाम को ही लेनिनग्राद छोड़ना था इसलिए इच्छा मन में ही रह गई.

लेनिनग्राद में कई तरह के बड़ेबड़े कारखाने हैं. इन में कई तो रूस में सब से बड़े माने जाते हैं. इन में से एक में हम गए. जो बिजली के पंखे बनाने का कारखाना था. अनुशासन और प्रबंध का परिचय तो हमें मास्को में ही मिल चुका था. इस में करीब दस हजार मजदूर हैं और इंजीनियर हैं लगभग ढाई हजार. जब हम ने प्रश्न किया कि आखिर ढाई हजार इंजीनियर यहां क्या करते हैं तो उत्तर मिला, "सुदक्ष स्नातक (ग्रेजुएट) भी यहां साधारण मजदूरी करते हैं ताकि सभी तरह के काम को प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त कर सकें."

लेनिनग्राद से चलते समय इस की यादगार के तौर पर हम कुछ ले जाना चाहते थे. मैं ने एक फरदार मफलर खरीदा. दाम बहुत ज्यादा था. हमारे पास रूसी रूबल बच गए थे इसलिए खरीद लिया थोड़े से भारतीय रुपए देने लगा तो दुकानदार ने लेना अस्वीकार कर दिया हां, अमरीकी डालर लेने को वह तैयार था. हम ने मिस्टर जोन की मारफत कहा, "भारत तो आप का मित्र देश है, फिर भी हमारे सिक्के से ज्यादा आप अमरीकी सिक्के को मान्यता देते हैं, यह बात समझ में नहीं आती."

बड़ा रोचक उत्तर मिला, "दोस्ती और सिक्के की कीमत अलगअलग है."

ध्यान आया कि दस वर्ष पहले जब यूरोप आया था, उस समय हमारे सिक्के की साख थी—दूसरे सिक्कों के मुकाबले हाथोंहाथ चलता था. स्पष्ट था कि हम ने असंतुलित ढंग से अपनी योजनाएं बनाई हैं.

फर (रोएं) के बारे में हमें बताया गया कि साइबेरिया में छोटे चूहे जैसा एक जानवर पाया जाता है, उसी की खाल से यह बनता है. फर से मफलर के अलावा कोट भी तैयार होता है जिसे 'संबर' या 'मिंक कोट' कहते हैं. उम्दा किस्म के एक कोट की कीमत पांच लाख रुपए तक होती है. हमारे पास न तो ऐसे कोट खरीदने के लिए रुपए ही थे और न इच्छा ही. पहले इस बात का पता रहता तो दुकानदार से पूछ कर कम से कम इन कोटों को देखते जरूर और अगर वह मंजूरी देता तो हाथ से छूते भी.

हमारे बहुतेरा मना करने पर भी मिस्टर जोन एयरपोर्ट पर हमें छोड़ने के लिए आए और विदा कर ही वापस गए. उन के स्नेहपूर्ण व्यवहार से हमें लगा कि पूर्वजन्म संबंधी हमारी धारणाओं में शायद कुछ तथ्य है, अन्यथा महज एक बार को [illegible]

उन का कार्ड आज भी सुरक्षित है और उन से फिर से मिलने की भी बात थी पर दोनों ही पक्ष जानते थे कि शायद यह सभव नहीं होगा विदाई के समय हम लोगों की आखें गीली थीं. वायुयान में बैठा सोचने लगा, 'जीवन में न जाने कितने क्षण ऐसे आते हैं जिन की पुनरावृत्ति होती नहीं पर उन की अमिट छाप हृदय और मस्तिष्क पर रह जाती हैं'

सन १९५० में अपनी ग्रीस यात्रा में मिस्टर निगानी की पुत्रशोकाकुल पत्नी के साथ बिताए आधे घटे की याद अनायास ताजा हो उठी.

पिरामिडों के देश में

रेगिस्तान की अमृत धारा के बीच में

पश्चिमी यूरोप के बाद यूनान भी देख चुका था अब देखना था मिस्र—पिरामिडों का देश ठीक भी यही लगा, क्योंकि इतिहास के अरुणोदय काल में ही, यूनान की भांति नील की घाटी में भी मानव सभ्यता की एक धारा प्रवाहित हुई थी, जिसे मिस्र सभ्यता कहते हैं यूनान, बेबीलोन और सिंधु घाटी की प्राचीनतम सभ्यताओं की भांति ही इस की महिमा और गरिमा भी विकसित होती चली गई थी और अब इस के अवशेष बताते हैं कि भौतिक उन्नति में भी यह अपनी समकालीन सभ्यताओं से किसी कदर कम न थी

मिस्र जाना पहले से तय था एथेंस में सभी काम निपटा कर हवाई अड्डे पर पहुंचा मई का महीना था, मौसम साफ था

दो घंटे में यूनान से मिस्र, खयाल आया, आज से ५,००० वर्ष पूर्व कितना समय लगता होगा? अपने विजयोन्माद में चूर, आंधी की तेजी से बढता हुआ सिकंदर भी कितने दिनों में मिस्र तक पहुंच पाया होगा?

ध्यान भंग हुआ विमान की परिचारिका कह रही थी, "काहिरा आ रहा है और अब हम नीचे उतरेंगे"

विमान ने मिस्र की धरती का स्पर्श किया उस समय रात के साढे बारह बज रहे थे चुंगी अफसरों के घेरे से बाहर निकला हमें 'टी. डब्लू. ए.' (ट्रांस वर्ल्ड एयरवेज) की बस ने नगर में अपने पूर्व निश्चित स्थान 'विक्टोरिया होटल' पहुंचा दिया

होटल यूरोपीय ढंग का था—साफ और आरामदेह—लेकिन दिल्ली के 'अशोक' और 'इंपीरियल' के मुकाबले का नहीं बिस्तर पर पीठ सीधी करते ही नींद आ गई

सुबह उठा दिन चढ आया था आठ बजे थे गरमी ने बता दिया कि यह अफ्रीका है और सहारा का रेगिस्तान यहां से दूर नहीं नित्य कर्म से निपट कर होटल से निकला

रास्ते और बाजार बहुत कुछ पुरानी दिल्ली और कलकत्ता की 'जाकरिया स्ट्रीट' की तरह थे रोमन और अरबी लिपि में लिखे साइनबोर्ड और अधिकांश लोग ताम्रवर्ण के तथा लंबेचौड़े थे उन्हें देख कर लगा कि मिस्र सदियों से अरब और अफ्रीका का संगमस्थल रहा होगा उन का पहनावा भी अरबों का सा था

लबे चौगे, अमामे, ढीले पायजामे और ऊची लाल टोपी किसीकिसी की टोपी के चारो ओर फेंटा भी बधा हुआ था बातचीत के तौरतरीके भी बहुत कुछ अपने यहा की तरह थे बुरको में औरतें, मसजिद, मुल्ले-मौलवी और शेख —वातावरण अपरिचित नहीं लगता था, शायद इसी लिए कि करीब नौ सौ वर्षों तक भारत पर भी इस्लाम का प्रभुत्व रहा है

चीजो की सजावट में भी बहुत अपनापन सा था एक जगह देखा, तरबूज के भुने हुए बीज और नमकीन चने रखे हुए थे एक जगह बडे तरबूज की रसदार फाके भी सजी थीं पेट भर चने और बीज खाए, फिर ऊपर से तरबूज तृप्ति महसूस हुई याद आया राजस्थान में बाजरे के सिट्टे खा कर मतीरे का पानी पीना

शहर के मकान विशेष आकर्षक नहीं लग वास्तुकला की दृष्टि से ये हमारे यहा से अच्छे नहीं हैं नए मकान यूरोपीय ढग के थे मुहम्मद अली की मसजिद बडी तो जरूर है पर दिल्ली की जामा मसजिद और अजमेर की दरगाह शरीफ की विशालता और शान कुछ और ही है

गरमी सता रही थी नहाना चाहता था सोचा कि नील ही में क्यों न नहाऊ! और चल पडा नील थोडी ही दूरी पर थी तौलिए में कपडे लपेट कर किनारे रखे और जाघिया पहने नदी में उतरा अब तक देश के बाहर इस प्रकार खुल कर नहाने का अवसर नहीं मिला था आनद आ गया लगा गगा में स्नान कर रहा हू तैरने के लिए हाथ चलाए ही थे कि पास ही से आवाज आई "अच्छी तरह तैरना तो जानते ही होगे?"

देखा—पास ही एक बुजुर्ग स्नान कर रहे थे गेहुआं रग, स्वस्थ शरीर, हलकी दाढ़ी और ऊपर की ओठ पर बारीक मूछें मैं ने मुसकरा कर कहा, "जी, हा, तैर लेता हू"

"कैसा लगा हमारा देश?" सवाल अगरेजी में पूछा गया

"अभी कुछ देख नहीं पाया, कल रात ही आया हू," मैं ने कहा

'हमारा देश' सुन कर कुछ ताज्जुब हुआ था, इसलिए मैं पूछ ही तो बैठा, 'माफ कीजिए, क्या आप यहीं के हैं?"

उन्होंने हस कर उत्तर दिया "जी हा, क्या मेरी अगरेजी की वजह से आप मुझे कहीं और का समझ रहे हैं? फ्रेंच, इतालियन और जर्मन बोलने वाले भी आप को यहा मिल जाएगे"

मैं ने कहा, "मेरा खयाल था कि मिस्रवासी ताम्रवर्ण के होते हैं, मगर आप आप "

यह कहने लगे, "आप का अनुमान सही है, पर पूरी तरह से नहीं हमारे देश का उत्तरी भाग अरब और यूरोप के समीप है, इसलिए दक्षिण की अपेक्षा यहा वालो का रग आप को साफ मिलेगा इस के अलावा कुछ अरब, तुर्क, यहूदी, यूनानी और इतालियन भूमध्यसागरीय तट पर सैकडों वर्षों से बसे हुए है उन की मिश्रित सतानें अपनी सुदरता के लिए ससार में बेजोड है"

बातचीत में मजा आ रहा था मैं ने कहा, "बचपन में पढ़ा था कि मिस्र नील की देन है इसी लिए नील के प्रति आप लोगो के हृदय में बडी श्रद्धा है

अबू सिंबल, सिबुआ के मंदिर जो अब अस्वान बांध के पानी में जलमग्न होने से बचाए जा रहे हैं

आज मैं ने अपनी स्नान की हुई पवित्र नदियों की संख्या में एक और वृद्धि की है"

मिस्री बुजुर्ग ने कहा 'जनाब, हमारे लिए तो यह आबे हयात है हमारा संपूर्ण देश रेगिस्तान है पश्चिम में लीबिया से गरम रेत की आंधियां आती हैं और पूर्व में अरब का रेगिस्तान है बस बीच में यह अमृत की धारा मौजूद है यह इथोपिया के पठारों से उपजाऊ-मिट्टी-ला कर अपने किनारों पर जमा करती जा रही है इसी में खेती कर के हम कुछ अन्न उपजा लेते हैं हम यहां विश्व की सर्वोत्तम रुई पैदा कर, उसे अन्य देशों को निर्यात कर के अपनी आर्थिक दशा संभाले हुए हैं वरना न तो हमारे पास अच्छे उद्योग धंधे हैं और न खनिज पदार्थ ही हमारे यहां ८० प्रति शत लोग नील के किनारे खेती कर के जीवनयापन करते हैं शेष २० प्रति शत शहरों में रहते हैं शहर भी इसी पट्टी के दोनों किनारों पर हैं मिस्र में नील भी खुदा की तरह एक ही है," कह कर वह हंसने लगे

देर तक नहाने के बाद हम बाहर निकले उन्होंने कपड़े पहनते हुए कहा, 'चलिए काफी पीएं, सामने कहवाघर है"

मिस्र में चाय की जगह काफी पीने का प्रचलन है

कहवाघर हमारे यहां के मद्रासी रेस्तरां की तरह था कमरे की दीवार पर प्रेसीडेंट नासर और मक्का शरीफ के चित्र कुरान शरीफ की सचित्र आयतें

और कुछ कलेंडर टगे थे   हम एक छोटी टेबल के किनारे बैठ गए
मैं ने पूछा, "हलकी मगाऊ या कडी?" उन्होंने सहज मुसकान के साथ कहा "अपनी ओर से मगान की बात भारत में आप मुझ से कर सकते हैं, यहा तो मैं ही आप से पूछूगा"
काफी बुरी नहीं थी   उन्होंने बडे ही उत्साह से अपने देश के बारे में जानकारी दी   मुझे ऐसा लगा कि वास्तव में मिस्र को दक्षिण से उत्तर तक देखने के लिए कम से कम दस दिन का समय चाहिए   इसी प्रसग में मैं ने कहा, "अगर आप बुरा न मानें तो एक बात पूछू?"
"शौक से पूछिए"
मैं ने कहा, "पेरिस में शाह फारूख के बारे में कुछ ऐसी चर्चा सुनी कि दुनिया के हर कोने की सुदरियों का एक बडा मजमा इन के हरम में था, जिस पर करोडो रुपए सालाना खर्च किए जाते थे   इन की ऐयाशी और इन के अजीबोगरीब शौको पर इसी तरह मिस्र की बेशुमार दौलत बरबाद होती थी   इसे आप के देश ने कैसे बरदाश्त किया?"
बुजुर्ग महोदय ने सजीदगी से कहा, "जनाब, राजा और बादशाह कुवंत, हिंदुस्तान या मिस्र, कहीं के भी हो, जब तक उन के पास निरकुश सत्ता रहेगी, नतीजा साफ ही है"
इस सक्षिप्त उत्तर से मुझे अपने सवाल का जवाब मिल गया और याद आ गया अपने देश के नवाब और राजाओं के लज्जास्पद, विवेकहीन कारनामें   विदा होते समय बुजुर्ग महोदय ने मेरे हाथ अपने हाथो में ले कर सीने से लगाए
पीछे मुड कर देखा—छोटीछोटी डोगिया और नावें पाल तान नील की लहरो में तिर रही थीं   लहरें धूप में चमक रही थीं   याद आ गई भारतेंदु की पक्ति—नव उज्ज्वल जलधार हीरक सी सोहति
काहिरा से सात मील दक्षिण में गिजे नामक स्थान है, विश्वविख्यात पिरामिड है   बस में बैठ कर उधर ही चल पडा   शहर से निकलते ही, गरम रेत और सूखी हवा के थपेडे लगने लगे   मैं ने सोचा, 'बीच सहारा में तपती रेत की आंधियो में कैसी गुजरती होगी?'
गिजे से पिरामिड डेढ़ मील पर है   बस से उतरते ही, गधे और ऊट वालो ने घेर लिया   गरमी के कारण यात्री बहुत कम थे   इसलिए सभी अपनी ओर खींचातानी कर रहे थे   अगरेजी, फ्रेंच और इतालियन के टूटेफूटे शब्दो में वे अपनीअपनी सवारी की प्रशसा कर रहे थे   उन वाक्यों के बीच हिंदी का 'बहुत अच्छा' शब्द सुन कर मुझे सचमुच बहुत अच्छा लगा   मैं उन के मोलभाव से चौकन्ना था क्योंकि इस विषय में पहले पढ़ चुका था
सोच रहा था कि गधे पर बैठूं या ऊट पर? गधे की सवारी में किफायत, ऊंट की सवारी में ज्यादा खर्च   गधों को देखो—कान लटकाए खडे थे   गधे की सवारी को अपने यहां अच्छी नहीं मानते, लिहाजा सोचा कि रेगिस्तान का जहाज ही उपयुक्त रहेगा   बडी हुज्जत के बाद 'अब्दुल' से ऊट का किराया तय हुआ तीन रुपए   यहां एक बात देखी—जैसे हमारे यहां आमतौर पर हर नेपाली 'बहादुर' है, उसी तरह हर मिस्री 'अब्दुल' है

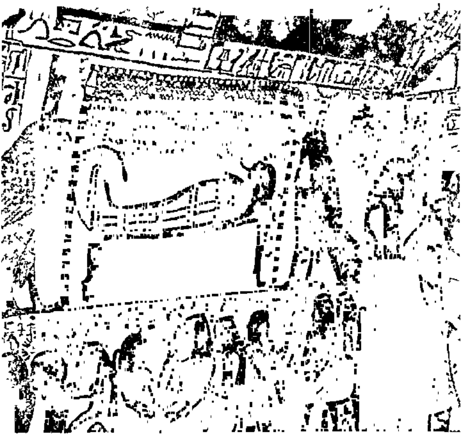

पिरामिडों की दिवारों पर 'ममी' का चित्र

रास्ते में अब्दुल ऊट की नकेल थामे चला जा रहा था ऊट की चाल सुस्त पर अब्दुल की जबान चुस्त थी टूटीफूटी अगरेजी में अपनी, अपने खानदान की और अपने ऊट की तारीफ कान खडे हो गए जब मुझे यह बतलाया गया कि मैं उस कमाल पर बैठा हुआ हू जिस पर सुप्रसिद्ध जर्मन जनरल रोमल बैठ चुका था इतना ही नहीं, रोमल को हटा कर जब जनरल माटगोमरी काहिरा आया तो उस ने तमाम ऊटो में से इसी को पसद किया था

"अगरेज बुरे हो या भले, होते हैं, कद्रदां वैसे आप के यहा के कशमीर के महाराजा ने भी इस की चाल से खुश होकर १०० रुपए तो बतौर बख्शीश ही दे दिए थे," अब्दुल ने लखनऊ के इक्के वालो के से अदाज में कहा

एक तो सिर पर कडकडाती धूप, दूसरे कमाल की चाल परेशानी हो रही थी तिस पर जनाब अब्दुल ने फरमाया, "यह शुक्र समझिए कि आप को उन ठगों से बचाने के लिए मैं ने यो ही तीन रुपए कह दिए, वरना दस से कम में तो मेरा कमाल अपनी नकेल ही नहीं थामने देता"

उस की बकवास पर खीझ तो बहुत आ रही थी, लेकिन बियाबान सहारा में उस दैत्याकार डीलडौल को देख कर चुप कराने के बजाए खुद ही चुप्पी साधे रहने में भलाई समझी

हाल इतहा बेहाल हो रहा था पर पिरामिड के पास पहुचने पर शाति मिली

ऐसी समाधियां संसार में अन्यत्र कहीं नहीं हैं इन का निर्माण प्रायः छः हजार वर्ष पूर्व हुआ था कितने विशाल हैं ये पिरामिड, इस का अनुमान इस तरह लगाया जा सकता है कि खूफू के पिरामिड में, जो सब से बड़ा पिरामिड है, लगभग ३० लाख टन बड़ीबड़ी शिलाएं लगी हैं इन का कुल वजन १७ करोड़ मन आंका गया है

मिस्र के महाराजे इन पिरामिडों को इसलिए बनवाते थे कि मृत्यु के बाद वे इन में समाधिस्थ कर दिए जाएं शव के साथ उन की प्रिय वस्तुएं—अलंकार, स्वर्णपात्र, राज्यचिह्न, वस्त्रादि—इन में रखे जाते थे इन में जो ठोस स्वर्ण के बने वजनी किस्म के अलंकार पात्र अथवा राज्यचिह्न हैं, उन को अब मिस्र के राज्य संग्रहालय में रख दिया गया है

इन की दीवारों पर राजाओं के जीवन की प्रमुख घटनाओं और कीर्ति के चित्र उत्कीर्ण किए जाते थे और उन का वर्णन भी रहता था पत्थरों पर खोदे हुए चित्रों के साथ कहींकहीं रंग का भी प्रयोग किया गया है राजाओं का शव रासायनिक लेप लगा कर एक विशेष प्रकार के ताबूत में बंद कर दिया जाता था इस शवाधार को 'ममी' कहते हैं इस ताबूत को पत्थर के एक बड़े बक्स में रख दिया जाता था इस पर राजा की प्रतिमूर्ति, उस का राज्यकाल आदि अंकित कर दिया जाता था ममी में रखे हुए शव सड़तगलते न थे लेप का रासायनिक नुसखा क्या था, इस का पता आज तक नहीं चल पाया है

पिरामिडों का निर्माण अत्यंत कष्टकर तथा व्ययसाध्य था —हजारों गुलाम बड़ेबड़े पत्थर सैकड़ों मील की दूरी से लंबी रस्सियों से खींच कर लाते थे—दहकती बालू की आंधी में जहां पानी का नाम नहीं कितनी जानें गई होंगी, यह कल्पनातीत है

इन के पास ही स्फिंक्स की विशाल मूर्ति है, जिस की ऊंचाई १८९ फीट है इस का सारा शरीर सिंह का परंतु सिर मनुष्य जैसा है इस ढंग की मूर्ति के बनवाने में राजा की शक्ति और पराक्रम के प्रदर्शन की भावना रहती थी अपनी कीर्ति और यश को अमिट रखने की आकांक्षा मनुष्य में कितनी अधिक रहती है—पिरामिड, कुतुबमीनार और ताजमहल इसी के तो प्रत्यक्ष प्रमाण और प्रयत्न हैं

पिरामिड से वापस बस स्टैंड पर आया दो बज रहे थे अब्दुल को तीन रुपए देने लगा तो वह झगड़ा करने पर उतारू हो गया हाथ हिलाते हुए चिल्ला कर कहने लगा, "दस की बात हुई, देते हैं तीन रुपए!"

शोर सुन कर दूसरे ऊंट वाले भी वहां आ गए आश्चर्य तो यह था कि जाते समय जहां सभी आपस में उलझ रहे थे, अब सब उसी की तरफदारी करने लगे खैर, किसी प्रकार दूसरे लोगों के बीचबचाव से पांच रुपए में छुट्टी मिली मैं सोचने लगा कि पूर्वी देशों में हम लोग अपने इस व्यवहार के कारण पर्यटन व्यवस्था को कितनी हानि पहुंचाते हैं और साथ ही विदेशियों की नजरों में अपने राष्ट्र को कितना नीचे गिराते हैं

गिज़ा से बस पर बैठ कर शहर लौट रहा था मन में विचार उठे, 'नील में मिले बुजुर्ग व्यक्ति और ऊंट वाला अब्दुल, दोनों ही तो मिस्र के हैं! शिक्षा और संस्कार मनुष्य को कितना प्रभावित करते हैं! जिस देश में इन बातों पर अधिक

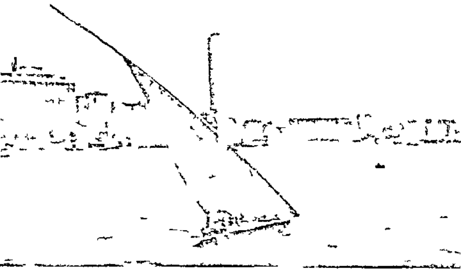

नील नदी मिस्र का खुदा'

ध्यान दिया जाएगा, वहा निश्चय ही अब्दुल कम मिलेंगे" खिडकी से बाहर देख रहा था पिरामिड ओझल हो चुके थे कितना श्रम, धन और समय लगाया गया था इन पर! सदिया गुजर चुकी है, जमाना कहा से कहा आ गया ह

शहर आकर नाश्ता किया सग्रहालय देखने गया दरवाजो पर गाइडो न घेर लिया मैं ने किसी को साथ नहीं लिया समय कम रहने के कारण सरसरी तौर पर यह देखना चाहता था मिस्र का यह सग्रहालय बहुत बडा नहीं ह सग्रह में भी उतनी विविधता नहीं जितनी कि कलकत्ता म्यूजियम में ह मेरी दिलचस्पी मिस्र की शिल्पकला पुरातत्व और इतिहास में थी, इसलिए उन्हीं को देखने लगा मिस्र के प्रागैतिहासिक और प्राचीन काल की बहुत सी वस्तुए देखीं लेकिन मैं ने अनुभव किया कि उन की बारीकिया समझना मेरे लिए कठिन था अच्छा होता कि 'इजिप्टालोजी' (मिस्र के पुरातत्व की विद्या) का थोडा सा ज्ञान प्राप्त कर लेता या गाइड को साथ ले लेता

यहीं ममी में रखा हुआ तुतेनखामन का शव देखा उस की बहुमूल्य वस्तुए भी यहीं सुरक्षित है यह सम्राट आज से ३,३०० वर्ष पूर्व हुआ था धन के लोभ स पिरामिडो की लूटखसोट सैकडो वर्ष तक चलती रही लेकिन रेत के नीचे दब जाने के कारण तुतेनखामन का पिरामिड सुरक्षित रह गया पपियाई की कुछ वस्तुए भी इटली में इतनी ही अच्छी हालत में देखने को मिलीं लेकिन वे इन से १४ शताब्दी के बाद की थीं

अन्य वस्तुओ में प्राचीन अस्त्रशस्त्र, चित्र, अलकार, लकडी के बक्स इत्यादि की बनावट प्राचीन मिस्रवासियो की परिमार्जित रुचि का परिचय दे रही थीं ३,३०० वर्ष पहले के सोनेचादी के कुछ बरतन भी देखे, जो खिले हुए कमल के आकार के थे इन वस्तुओ को देख कर पता चलता है कि भारत की तरह यहा भी शायद सूय, अग्नि, सर्प और गरुड की पूजा देवीदेवताओ के रूप में होती थी राम-शेष नामक सम्राट भी यहा हुए थे ऐसा लगता है कि सुदूर अतीत में हमारे देश से मिस्र का घनिष्ठ सबध रहा होगा

सग्रहालय में अस्वान के बाध का एक माडल भी देखा याद आया कि सुबह एक मिस्री बुजुर्ग ने कहा था कि पर्यटक पिरामिड देखने तो आते है पर अस्वान का बाध कोई नहीं देखता वास्तव में इसी बाध ने मिस्र की काया पलट की है सचमुच ही यह बाध आधुनिक मिस्र का एक आश्चर्य है इस का निर्माण १८९८ में आरभ किया गया और १९०२ में जा कर यह पूरा हुआ था अब यहा एक अन्य विशाल बाध बन रहा है

यहीं विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर से भेंट हो गई उन्होने कहा, "लगता है, आप की रुचि का विषय है"

मैं ने कहा, "जी हा, आजादी के बाद अब हमारी राष्ट्रीय सरकार ने भी इस ढग के कई बाध बनाए लेकिन साथ ही यह भी देख रहा हू कि नील के पानी को रोक कर इस बाध ने २०० मील की एक कृत्रिम झील तो बना दी है, पर इस में फिले द्वीप अबू सिबल, सिबुआ के मदिर इत्यादि पुरातत्व के महत्त्वपूर्ण स्मारक जलमग्न हो गए है"

प्रोफसर ने कहा, 'जनाब, अतीत के स्मारको की रक्षा का मोह हमें भी किसी से कम नहीं, लेकिन वर्तमान की आवश्यकताओं यानी अन्नवस्त्र आदि की उपेक्षा नहीं की जा सकती अस्वान पर हमें नाज है यह हमारा पुण्यतीर्थ है, जो सैंकडो पिरामिडों, दरगाहो और मसजिदो से कहीं पाक है"

सीढियो से उतरता हुआ सोच रहा था, 'अस्वान का बांध या पिरामिड, मिस्र की जनता किसे हृदय से दुआ दती है? सचमुच, किस पर नाज है उसे?'

फिनलैंड

झीलों और द्वीपों का देश

रूस में दस दिन रहने के बाद लेनिनग्राद से हम हेलसिंकी के लिए रवाना हुए. जेट विमान से ४० मिनट की उड़ान है. फासला बहुत कम, फिर भी दूसरा देश तो है ही. राजनीति, भाषा, अर्थव्यवस्था और रहनसहन के तौरतरीके भी भिन्न हैं. हमारे दूसरे साथी मास्को में रह गए, इसलिए इस यात्रा में मेरे साथ केवल प्रभुदयालजी थे.

साधारणतया किसी भी देश के पर्यटन के पहले उस के भूगोल, इतिहास, राजनीति, समाज व्यवस्था एवं आचार इत्यादि की जानकारी हम पुस्तकें पढ़ कर कर लेते थे. लाभ यह हुआ कि हम नए देश में अनाड़ी से न लगे और भ्रमण का आनंद भी मिला. प्रायः हर देश में टूरिस्ट आफिसों में दर्शनीय स्थानों के संबंध में विवरण और नक्शे मिल जाते हैं. इस के अलावा एक छोटी पुस्तिका भी मिल जाया करती है, इस में उस देश के रोजमर्रा के जरूरी शब्दों का अनुवाद अंगरेजी में रहता है.

फिनलैंड यूरोप के उत्तरी छोर पर एक छोटा सा देश है. पूरे देश की जनसंख्या है केवल चौवालिस लाख, अर्थात हमारे कलकत्ते से भी कम और क्षेत्रफल सवा लाख वर्ग मील है, यानी बहुत कुछ हमारे राजस्थान के क्षेत्रफल के बराबर. इतने छोटे देश में अस्सी हजार टापू और साठ हजार झीलें हैं. इसलिए इसे 'द्वीपों और झीलों का देश' भी कहते हैं. यहां के अधिकांश भूभाग पर लकड़ी के जंगल हैं जो वर्ष में आठ महीने बर्फ से ढके रहते हैं.

फिनलैंड छोटा राष्ट्र है लेकिन इस में राष्ट्रीय चेतना सदैव जाग्रत रही. उत्तरी सीमा पर नारवे है, पश्चिम में है संपन्न राष्ट्र स्वीडन और पूर्व में है साम्यवादी और शक्तिशाली सोवियत रूस. ११० वर्ष तक रूस के शासन में रहा, लेकिन स्वाधीनता के लिए सदैव यहां के निवासी प्रयत्नशील रहे. रूस में जार के अत्याचार के कारण असंतोष बढ़ता गया. बोलशेविक शक्ति बढ़ी, राजतंत्र की नींव हिल उठी. सन १९१७ में जार के परिवार की हत्या कर दी गई. शासन ढीला था ही, फिनलैंड इसी मौके पर स्वतंत्र हो गया.

स्वतंत्र फिनलैंड अपने पिछले कष्टमय जीवन को भूला नहीं. रूस और पड़ोसी स्वीडन ने उस पर जो जोरजुल्म किए थे, उस से वह सतर्क रह कर अपने को संगठित और शक्तिशाली बनाने में अग्रसर हो गया.

इतिहास साक्षी है कि धर्मप्रचार के नाम पर जिस ढग के अत्याचार और दुर्नीतियो को विदेशो में अपनाया गया वैसा भारत ने किसी भी राष्ट्र के साथ नहीं किया हम ने जिहाद के नाम पर अपनी फौजें नहीं भेजीं बल्कि शाति के दूत श्रीलंका, इडोनेशिया, मलाया, तिब्बत, मगोलिया और चीन में भेजे धर्म-प्रचार के नाम पर यूरोप और अरब देशो में हत्या, लूट और बलात्कार करना गौरव समझा जाता रहा है क्योकि इस कृत्य में धन तथा दासदासियो की लूट के साथ-साथ 'ग़ाजी' बनने का या स्वर्गद्वार खुलने का सौभाग्य भी मिलता था महम्मद गजनी, बख्तियार खिलजी और औरगजेब की धर्मांधता हम ने सुनी थी पर सभ्यता का दम भरने वाले यूरोप के धर्मगुरु पोप के आदेशानुसार ईसाइयो ने (क्रूसेड) धर्मयुद्ध के नाम पर जो भयकर अत्याचार और रक्तपात किया है, उस की कल्पना कर रोगटे खडे हो जाते हैं

फिनिश ईसाई नहीं थे इसलिए बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में स्वीडन ने पवित्र धर्मप्रचार के नाम पर इन निरीह लोगों पर तीन बार हमला किया हजारो बच्चे, बूढो और स्त्रियो को लकडियो के घरो में आग लगा कर जिंदा जला दिया या अन्य प्रकार से मार डाला इस के करीब ५५० वर्ष बाद रूस के सम्राट अलेग्जेंडर प्रथम ने सन १८०९ में फिनलैंड पर आक्रमण कर वहा स्वीडन की सत्ता खत्म कर दी १०८ वर्ष बाद, ६ दिसबर १९१७ को फिनलैंड स्वतत्र हुआ और १७ जुलाई १९१९ के दिन उस ने अपने लिए गणतत्र की घोषणा की

फिनलैंड में शासन के सर्वोच्च अधिकार राष्ट्रपति के हाथ में हैं वहा ससद में २०० सदस्य हैं जो हमारे यहा की तरह निर्वाचित होते हैं विधान या कानून बनाने का अधिकार राष्ट्रपति एव ससद में निहित है राष्ट्रपति का निर्वाचन छ वर्षों के लिए होता है

उत्तरी ध्रुवाचल के निकट होने के कारण यह शीतप्रधान देश है फिर भी, प्रकृति यहा अनुदार नहीं है दर्शनीय और रमणीय स्थल एक नहीं, अनेक हैं ऊचे नुकीले पत्तों वाले पेडों के घने जगल, झील और टापुओ से यह देश भरा है इस देश के उत्तरी भाग में बर्फीली आधिया और तूफान जाडे के मौसम की दैनिक घटनाए हैं, तो मध्य रात्रि का मुसकराता चाद सा सूरज सृष्टि के सूत्रधार के प्रति श्रद्धा की प्रेरणा भी देता है * वर्ष में आठनौ महीने झीलो का पानी जम कर चट्टान सा कडा हो जाता है इन पर विविध प्रकार के खेल होते रहते हैं स्वाधीन फिनलैंड इन का आनद उठाता है अपनी पराधीनता के दिनो में उस का नैसर्गिक वैभव उपेक्षित रहा पराधीन देशो की उन्नति का ध्यान दूसरो को क्यों रहेगा, चाहे वह देश भारत हो या फिनलैंड

सन १९१७ से १९३९ तक बाइस वर्ष फिनिश जनता और सरकार को अपने देश को सजाने, सवारने और सुधारने में लगे यह दीर्घ अवधि विश्व भर में बडी मदी की थी लेकिन फिनिश जनता ने इसी समय अपने देश को समृद्ध किया, यह उन के लगन और परिश्रम का पुष्ट प्रमाण है आज फिनलैंड की गणना सैलानियों के लिए कश्मीर, स्विट्जरलैंड और स्वीडन से की जाती है

कृत्रिम जल प्रपात से दृश्य और भी सुहावना हो जाता है

सन १९३९ में द्वितीय महायुद्ध छिड़ा. इस समय तक रूस विश्व की बड़ी शक्तियों में हो गया था. उस के पास अजेय सेना और अमोघ अस्त्र थे. साम्राज्यवादी और साम्यवादी देशों के इरादों में ज्यादा फर्क नहीं होता, हां, तरीके कुछ अलग-अलग होते हैं. साम्राज्यवादी दूसरे देशों को बहाने बना कर हड़पते हैं और साम्यवादी सीधे हमला कर बैठते हैं. औरों का अनुभव कैसा है, हम यह नहीं जानते पर भारत ने ब्रिटेन और चीन से यही अनुभव प्राप्त किया है. साम्यवादी रूस ने भी इसी तरह सन १९३९ में छोटे से शांतिप्रिय एवं निरीह राष्ट्र फिनलैंड पर जल, थल और नभ से एक साथ हमला बोल दिया. उन दिनों रूस मित्रराष्ट्रों में नहीं था. इसलिए ब्रिटेन और अमरीका ने मौखिक सहानुभूति तो फिनलैंड के साथ पूरी दिखाई पर सैनिक सहायता के नाम पर एक भी हथियार या सिपाही नहीं भेजा. फिर भी फिनिश वीर ११० दिनों तक रूसी शक्ति का मुकाबला करते रहे. छोटा सा देश, सीमित साधन, कब तक टिकता? उस की युद्ध और खाद्य सामग्री घट गई. जनहानि देख कर विवश हो गया. १८ मार्च १९४० को रूस के साथ संधि करनी पड़ी. हार वह भूला नहीं.

जरमनी ने १९४१ में जब रूस पर हमला किया तो उसी थकीहारी फिनिश जनता की रगों में जोश उमड़ पड़ा. तीन महीने के अंदर ही उस ने रूस को अपने देश से निकाल बाहर किया. लेकिन इस समय तक रूस मित्रराष्ट्रों के गुट में

शामिल हो चुका था ब्रिटेन और अमरीका की फौजी सहायता से रूस ने युद्ध में थके हुए फिनलैंड पर सितबर, १९४४ में फिर हमला कर दिया लाचार हो कर फिनलैंड ने रूस से सधि की और शर्तों के अनुसार देश का कुछ कीमती हिस्सा और २२५ करोड रुपए का हरजाना आठ किश्तो में चुकाना मजूर किया साम्राज्यवाद और साम्यवाद का यह गठबधन राजनीति के अध्येताओ के लिए एक ज्वलंत दृष्टात है

हारे और थके फिनलैंड के पास इतना धन कहा था? उस ने हिम्मत नहीं हारी नगे और भूखे रह कर फिनिश लोगो ने अपनी सर्वोत्तम लकडियो और अन्यान्य सामग्री दे कर १९५२ तक में यह कर्ज पटा दिया जानकार लोगो का कहना है कि रूस ने कम से कम दोगुनी रकम का माल कर्ज के एवज में वसूल किया समता और अतर्राष्ट्रीय साम्यवाद का यह रूसी तरीका न्यायसगत किसी भी स्थिति में नहीं कहा जाएगा

फिनिश स्वभाव से ही परिश्रमी और उद्यमी है सर्दी इतनी ज्यादा यहा है कि बिना कडे काम के मनुष्य रह नहीं सकता जगलो और खानों में सपदा भरी पडी है सन १९५२ के बाद फिनलैंड दोगुने उत्साह से अपनी प्राकृतिक सपदा का लाभ उठाने में जुट पडा इस की उन्नति भी द्रुतगति से हुई सन १९६० के जून में हम जब वहा थे, यह सपन्न और उन्नत देशो में गिना जाने लगा था

लेनिनग्राद से हम शाम को साढे छ या सात बजे हेलसिंकी पहुचे कस्टम की औपचारिकता से निवृत्त हो कर जब होटल आए, आठ बज रहे थे हेलसिंकी फिनलैंड के दक्षिण में है फिर भी ध्रुवाचल में होने के कारण वर्ष के तीन महीने तक तो यहां एकडेढ़ बजे तक कुदरती रोशनी रहती है इसलिए रात्रि का भोजन कर हम ने १० बजे शहर का एक चक्कर लगा लेना तय किया

हेलसिंकी फिनलैंड का प्रमुख शहर है और राजधानी भी बाल्टिक सागर में फिनलैंड की खाडी से सटा यह शहर लदन या मास्को की तरह व्यस्त और भव्य तो नहीं लगता पर उन से ज्यादा शात और सौम्य है यहां की आबादी है पाच लाख हम ऊनी पाजामे पर ऊनी पतलून और पाचछः गरम पोशाक पहने दुकानों में मोटेमोटे शीशे की चद्दरों के पीछे सजी चीजो को देखते जाते थे कुछ ही घटे पहले हम रूस के एक प्रमुख शहर से आए थे वहा की दुकानो में काउटरो पर या आलमारियो में कुछेक भोडी और सस्ती चीजें ही देखने में आई थीं रूस के अन्य शहरों में भी ऐसा ही नजारा देखा था पर यहां के बाजार और दुकानों में सुरुचिपूर्ण कलात्मक वस्तुओं को देख कर ऐसा लगा मानो खोईखोई सी चीजें सामने आ रही हों मैं ने प्रभुदयालजी से कहा, "जो कुछ भी हम ने रूस में देखा, यदि साम्यवाद का यही अजाम है तो पूजीवाद उस से कहीं बेहतर है" कहने को तो कह गया मगर न जाने क्यों मैं कुछ सहम सा गया और आसपास झाकने लगा प्रभुदयालजी ने मुसकरा कर कहा, "डरने की क्या बात है, आदत पड गई क्या? यह रूस नहीं फिनलैंड है, भारत की तरह यहां बोलने के लिए स्वाधीन हो" हम दोनों हस पडे

दूध, रोटी, पनीर और फलों की दुकानें बहुत रात होने पर भी खुली थीं

इमारती लकडी के व्यापार ने फिनलैंड को आत्मनिर्भर बना दिया है

दूसरे दिन सुबह के लिए बहुत से फल और पैकेटो में दूध ले कर वापस आ गए आजकल यूरोप और अमरीका में दूध बोतलों की जगह मोटे-मोमिया कागज या प्लास्टिक की थैलियो में बिकता है वापस आते समय रास्ते में हम ने दोएक लोगों को वायलिन बजा कर भीख मागते हुए देखा हमें ताज्जुब हुआ क्योकि इटली, ग्रीस आदि यूरोप के दक्षिणी देशो में भी तो भिखमगे दिखाई देते है, पर उत्तरी यूरोप के देशो में नहीं मिलते पूछने पर पता चला कि कुछ लोग यदाकदा रूस से भाग कर यहा आ जाते है ऐसे ही व्यक्ति शुरूशुरू में गा-बजा कर भीख मागते है

जून से अगस्त तक यूरोप के दक्षिणी देशो और अमरीका से बहुत बडी सख्या में सैलानी यहा आते रहते हैं इसलिए रात्रिक्लबो और नृत्यशालाओं में बहुत चहलपहल रहती है अगरेजी के थियेटर और सिनेमा भी यहा है वेनिस और पेरिस में जिस प्रकार की उच्छृखलता और नग्नता का प्रदर्शन होता है, वह यहा अपेक्षाकृत कम है फिर भी, नाइटक्लब और कैबरे, मदिर या गिरजे तो ह नहीं, इसलिए चाहे पेरिस हो या हेलसिकी, लोग इन में जाते ही ह उद्दाम लालसा ले कर, मात्रा चाहे ज्यादा हो या कम

अगले दिन सुबह चार बजे अपनेआप ही मैं जाग गया क्योकि धूप निकल आई थी रात तो यहा इन महीनों में होती ही नहीं सोते समय खिडकियों पर काले पर्दे लगाना भूल गए थे रोशनी में सोने की आदत नहीं देखा, प्रभु दयालजी गहरी नींद में सो रहे ह

पिछली रात को घूमते समय पता चला था कि यहा गरम पानी और भाप

के 'साउना' स्नानगृह हैं जो शहर में सैकडो की सख्या में हैं वे केवल विदेशियों के लिए ही नहीं बल्कि स्थानीय लोगो के लिए भी ये आकर्षण रखते है, क्योकि वैज्ञानिक स्नान के साथसाथ इन्हें शारीरिक व्यायाम का अच्छा माध्यम माना जाता है ऐसे स्नानगृह कई प्रकार और श्रेणी के होते हैं दस रुपए से ले कर पचाससाठ रुपयो तक के

लदन और हाम्बग के बाथहाउसों के उन्मुक्त वातावरण को मैं अपनी पिछली यात्रा में देख चुका था इसलिए प्रभुदयालजी को बिना कहे अकेला ही स्नान करने चला गया क्योकि उन के सामने निर्वस्त्र हो कर नहाने में सकोच होता मध्यम श्रेणी के एक 'साउना' में गया जरा सवेरे पहुचा था, इसलिए भीड नहीं थी फिर भी बीसपचीस स्त्रीपुरुष तो थे ही

प्रत्येक के लिए एकएक छोटी कोठरी सी रहती है, उस में कपडे वगैरह उतार कर भाप के कमरे में चले जाते है, यहा एक प्रकार के घास से शरीर को रगडते रहते हैं और बीचबीच में ठडे पानी के फव्वारे के नीचे स्नान भी करते रहते हैं कम या ज्यादा कई मात्रा के ताप के कक्ष हैं सिर पर ठडा तौलिया रख लिया जाता है, नहीं तो चक्कर आने का अदेशा रहता है कुछ देर तक स्नान करने के बाद वहीं पर बने एक तालाबनुमा बडे से हौज में तैरने के लिए आ जाते हैं स्त्रिया बिकनी पहने रहती है, शेष सारे अग खुले रहते हैं पश्चिम के देशो में प्रथा है कि पुरुष, स्त्रियो के सामने निवस्त्र नहीं होते, यहा तक कि गजी या बनियान तक नहीं उतारते इन स्नानगृहो में पूरी छूट है यहा एक प्रकार से 'न्यूडिस्ट क्लब' का वातावरण रहता है मैं ने लक्ष्य किया कि इतने उन्मुक्त वातावरण में भी शालीनता की लक्ष्मण रेखा का उल्लघन नहीं होता उत्तरी यूरोप के प्राय सभी बडे या छोटे देशो में इस प्रकार के सार्वजनिक स्नानगृह हैं पर अशोभनीय वारदात शायद ही कहीं हो बल्कि ये सामाजिक स्तर पर मिलने जुलने के अच्छे माध्यम माने जाते हैं और हैं भी इन दिनो दक्षिणी यूरोप में भी ऐसे क्लब हो गए हैं पर वहा का वातावरण कुछ दूसरे ढग का रहता है

स्नानगृह में, मैं ही अकेला भारतीय था इसलिए मेरे प्रति लोगों में दिलचस्पी थी भारत के बारे में यहा के लोगो की जानकारी बहुत कम है हमारी सरकार का प्रचार विभाग भी इन देशो में अपेक्षित रूप से सक्रिय नहीं है हम सपर्क भी यूरोप में ज्यादातर ब्रिटेन, फ्रास, जरमनी और रूस आदि देशो से रखते हैं बडे आग्रहपूवक ये मिले मैं ने देखा कि हमारे देश से इतना कम सपर्क रहने पर भी इन में बहुत से गाधीजी, नेहरूजी और रवींद्रनाथ के बारे में काफीकुछ जानते हैं

लगभग डेढ़ घट वाष्पस्नान और तैरने में लग जाते हैं शरीर इतना हलका हो जाता है और मन ऐसा प्रसन्न कि आसमान में उडने की तबियत होती है स्नान के बाद सुस्वादु काफी पीने को मिलती है मुझे पूरी तरह याद नहीं, पर चार्ज शायद १२ रुपए या १४ रुपए लगे

अपनी विदेश यात्रा में हर जगह मैं मध्यम श्रेणी के रेस्तरां और क्लबों को चुनता था, क्योकि इन में जनसाधारण से भेंट हो जाती थी उन के जीवन और यहा की विचारधारा को नजदीक से देखने और समझने का मौका मिलता

बर्फ पर फिसलती रेंडीयरों की गाड़ियां उत्तरी ध्रुव का मोहक दृश्य
प्रस्तुत करती हैं

था. एक और सुविधा यह भी होती थी कि मध्यम श्रेणी की जगहों में खर्च कम लगता था.

नहाधो कर साढ़े आठ बजे होटल लौटा तो प्रभुदयालजी बैठे राह देख रहे थे. कुछ चिंतित भी थे. उन्हें फिक्र हो रही थी कि नया देश है, भाषा की भी दिक्कत है. संकोच के साथ मैं ने स्नानगृह की बात कही तो हंसते हुए कहने लगे, "मुझे क्यों नहीं जगा लिया, मैं भी साथसाथ चलता."

विदेशों में होटल या रेस्तरां में हम पहले ही सरल और स्पष्ट अंगरेजी में कह देते थे, "नो फिश, एग्ज एंड मीट." यानी मछली, अंडे और मांस नहीं, केवल दूध, मक्खन और रोटी. नाश्ते के लिए परिचारिका आई. बहुत से टोस्ट के साथ मक्खन, मीठी चटनी और साथ में दो बड़ेबड़े कैंटर दूध से भरे हुए. बहुत समझाया कि इतने सारे दूध का क्या होगा? पर किसी तरह कम करने को तैयार न हुई, केवल हंसती रही. आखिर हिम्मत कर सारा पी ही लिया. स्वाद के क्या कहने, उत्तरी यूरोप के देश दूधमक्खन के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं.

हमारे होटल में एक फ्रेंच यात्री से जानपहचान हो गई. अंगरेजी अच्छी तरह बोल लेता था. कई बार यहां आ चुका था. दोएक दिन बाद लैपलैंड जा रहा था, हमें भी आग्रह करता रहा कि ऐसे मौके आप को बारबार नहीं मिलेंगे. जब भारत से इतनी दूर उत्तरी ध्रुव के पास तक आ ही गए हैं तो क्यों नहीं तीनचार दिन का समय निकाल कर उस के साथ चलें और लैपलैंड, रेंडीयर और मध्य रात्रि का सूर्य और बर्फानी आंधियां देख लें.

हमारे लिए यहां की सर्दी भी काफी थी, चमड़े के वस्त्र भी ने

लिए थे, जिस से कि बर्फानी हवाओं के थपेडे सहे जा सकें फिर मैं तो वहा तक सन १९५० में ही हो आया था इसलिए उस का आभार मानते हुए हम ने प्रस्ताव के लिए नाहीं कर दी

नाश्ता इतना ज्यादा कर लिया था कि दोपहर के भोजन की जरूरत नहीं रही फ्रेंच मित्र के साथ बाजार देखने निकल पडे हर तीसरी दुकान फलो या फूलो की थी शराब या बियर तो प्राय हर दुकान में पानी की जगह यहा लोग इन्हें पीते है इस के बारे में यह पता चला कि अत्यत ठडे देशो में केवल पानी पीने से फेफडों में सर्दी जम जाने का भय रहता है, सर्दी से बचाव के लिए ब्राडी या दूसरी किस्म की शराब पीना जरूरी है मगर हमें कहीं भी ऐसी जरूरत महसूस नहीं हुई हम पानी पीते रहे और हमें न सर्दी लगी और न हमारे फेफडो में ही सर्दी जमी

इन देशो में एक बात आमतौर पर देखने में आई कि बागबगीचों, रेलवे-स्टेशनो, एयरपोर्ट, रेस्तरा, थियेटर और बाजारो में एक तरफ किसी कोने में स्त्रीपुरुष बिना सकोच या झिझक के आलिगन अथवा चुबन लेते रहते हैं फ्रेंच साथी ने इस के लिए दलील दी कि गरम मुल्कों की बात और है पर सर्द मुल्को में तो शरीर की उष्णता को स्थिर रखने के लिए आलिगन और चुबन करते रहना जरूरी है मुसकराते हुए उस ने कहा कि इन देशो में यदि उत्तेजक साधन और माध्यम न अपनाए जाए तो शायद हमारी जनसख्या की वृद्धि ही रुक जाएगी

हो सकता है, इन बातो में कुछ तथ्य हो, पर हम भारतीयों के लिए तो यह शालीनता और मर्यादा की सीमा के बाहर की बातें लगीं हमारे यहां भी लद्दाख और उत्तरी कुमायू आदि ऐसे काफी अचल हैं जहा कडी सर्दी पडती है वहा शरीर की उष्णता के लिए इस ढग के माध्यम और साधन की जरूरत कभी नहीं समझी गई

कुछ छोटीमोटी चीजें बाजार से खरीदीं सर्दी इतनी थी कि दौडने का मन करता था थकावट का नाम नहीं था बस में बैठ कर पास के एक देहात में पहुचे अच्छा लगा चमकदार और चिकनी लकडी के छोटेछोटे मकान थे हरेक घर के साथ फलो और फूलों का बाग, स्त्रिया और बच्चे काम कर रहे थे सभी स्वस्थ और प्रसन्न दिखाई पडे शरीर सुडौल और सुदर

एक घर के सामने हम रुके गृहिणी थोडीबहुत अगरेजी जानती थी उस ने बडे प्रेम से अपना बगीचा दिखाया मना करने पर भी फलो का रस पिलाया देखा, मकान छोटा था पर आधुनिक सभी साधनों से सपन्न, टलिविजन, हीटर, टेलिफोन, छोटा सा पुस्तकालय अपने देश के देहात के घरों के लिए तो आज भी ये सारी चीजें कल्पना तक ही सीमित हैं गृहिणी ने बताया कि पति की फलों की दुकान है हेलसिंकी में सुबह नौ बजे जाता है, दिन का भोजन वहीं करता है, शाम के बाद नौ बजे घर लौटता है गांव में एक सरीखे मकानों को देख कर हम ने कारण पूछा तो उस ने बताया कि कुछ वर्ष पहले अग्निकांड में सारा गांव जल गया था जब गांव नए सिर से बसा तब सभी मकान एक ढग के बना लिए गए इस बार भी मकान लकडी के ही हैं पर अब आग बुझाने के उन्नत और वैज्ञानिक साधन हैं

वहीं पर गांव के स्कूल की अध्यापिका से मुलाकात हुई इसी स्वीडिश, अग-

रेजी और फ्रेंच भी जानती थी. एनी बेसेंट की गीता का अंगरेजी अनुवाद उस ने पढ़ा था. तभी से भारतीय दर्शन के प्रति रुचि हुई. उस का विश्वास था कि भौतिक उन्नति से सुख भले ही मिल जाए पर वास्तविक आनंद नहीं. सुदूर उत्तरी ध्रुवांचल में भारतीय विचार के इस तत्व को सुन कर बड़ी खुशी हुई. फिनलैंड के बारे में उस ने बहुत सी बातें बताईं. शिक्षा के क्षेत्र में फिनलैंड के शासन ने बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है. शायद ही कोई अनपढ़ व्यक्ति फिनलैंड में मिले. अपनी भाषा के अलावा रूसी और अंगरेजी बहुत से लोग जानते हैं. उस ने यह भी बताया कि यहां की स्त्रियां पुरुषों से अधिक भाषाएं जानती हैं, क्योंकि उन्हें पढ़ने और सीखने की फुरसत ज्यादा रहती है.

हम ने राय मांगी कि हम फिनलैंड में क्या देखें? उस ने कहा भारत की विविधता के मुकाबले में छोटा सा फिनलैंड कुछ खास तो पेश नहीं कर सकता, फिर भी ओलंपिक स्टेडियम और विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी जरूर देख ली जाए, अगर समय मिले तो ओलंको भी. — ओलंको का ट्रेन से केवल दो घंटे का रास्ता है. वहां आप को विश्व के हर कोने के लोग मिलेंगे. कोई बर्फीले ठंडे पानी की झील में तैर रहा है तो कहीं घुड़सवारी की प्रतियोगिता चल रही है. टेनिस, गोल्फ, फुटबाल, हाकी, वालीबाल आदि दुनिया भर के खेलकूद और विभिन्न तरीके की कुश्तियां भी देखने को मिलेंगी. मनोरंजन के काफी साधन हैं. हां, नाइटक्लब और कैबरे नहीं हैं.

हेलसिंकी आ कर हम यहां के विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में गए. यहां हम ने देखा, प्रायः सभी भाषाओं की आठदस लाख पुस्तकें थीं. कलकत्ते की हमारी नेशनल लाइब्रेरी में इस से कुछ अधिक संख्या जरूर है, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि फिनलैंड हम से सौ गुना छोटा देश है. भारतीय भाषाओं की पुस्तकें देखने में नहीं आईं. अंगरेजी, फ्रेंच और जरमन में संस्कृत की पुस्तकों के अनुवाद जरूर देखे. हम ने एक बात की कमी अनुभव की कि विदेशों के छोटेछोटे राष्ट्रों में हमारी ओर से संपर्क स्थापन करने के प्रति ऐसी उदासीनता बरती जाती है कि उसे उपेक्षा का पर्यायवाची कहा जाए तो असंगत न होगा. यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हमारी आवाज का साथ देने वालों की संख्या बहुत कम रहती है. हमारे विदेश मंत्रालय के लिए यह विशेष ध्यान देने की बात है. ऐसी स्थिति में यहां के पुस्तकालय में हिंदी साहित्य या भाषा संबंधी पुस्तकें या उन के अनुवाद का न होना स्वाभाविक है. आज प्रचार का युग है. दूसरे बड़े देश अपने विशिष्ट साहित्य को विश्व के बड़ेबड़े पुस्तकालयों को भेंट के रूप में भेजते रहते हैं. लाइब्रेरी के कक्ष ताप नियन्त्रित हैं. अध्येताओं के लिए यहां भी हमारी नेशनल लाइब्रेरी की तरह हर प्रकार की सहायता और सुविधा सहज उपलब्ध है. [illegible] सुविधा और वातावरण तो हमारे से कहीं अधिक सुन्दर और स्वच्छ.

फिनलैंड की गाइडबुक में यहां के दर्शनीय स्थलों का उल्लेख [illegible] भवन, नेशनल म्यूजियम, वाटरटावर, किला और ओलंपिक स्टेडियम [illegible] ग्राद, मास्को के म्यूजियम तो हम ने पिछले हफ्ते में ही देखे थे, पेरिस के [illegible] वेटिकन में पोप की आर्ट गेलरी भी हम देख आए थे. इसलिए [illegible] न रही. ओलंपिक स्टेडियम और वाटरटावर देख लेना तय [illegible]

ओलंपिक स्टेडियम १९४० में विश्व के खेलों के लिए बनाया गया था लेकिन महायुद्ध के कारण उस वर्ष खेल नहीं हो सके अतएव, फिर से १९५२ में इस की साजसज्जा की गई और उस वर्ष यहीं विश्व के खेलों की प्रतियोगिता हुई दुनिया के कोनेकोने से, हर छोटेबडे राष्ट्र से यहा चुनेचुने खिलाडी आए थे अमरीका, फ्रास, रूस और ब्रिटेन का तो कहना था कि फिनलैंड कहा से बाहर के इतने खिलाडियो और दर्शको को जगह दे सकेगा, इतना बडा स्टेडियम कैसे बना पाएगा? फिनलैंड इन बातो से निराश नहीं हुआ दूने उत्साह से उस ने चुनौती स्वीकार की दो वर्ष के कठिन परिश्रम और करोडो की लागत से आखिर यह स्टेडियम बना ही डाला फिनलैंड अपने रगबिरगे सगमरमर के लिए प्रसिद्ध है इस से विदेशी मुद्रा की उसे अच्छी आमदनी हो जाती है पर स्टेडियम निर्माण के समय अच्छे किस्म के पत्थरो का निर्यात रोक दिया गया क्योकि उसे प्रदर्शनी का फर्श बनवाना था उसी समय हेलसिंकी की सुदरता को देखने के लिए एक बहुत ऊचा टावर भी बनाया गया

हम ने सुना कि १९५२ में जब यहा सारे देशो से खिलाडी और शौकीन दर्शक आए तो उन्हें स्टेडियम देख कर विस्मय हुआ क्योकि अब तक अमरीका और फ्रास भी इतनी अच्छी व्यवस्था नहीं कर पाए थे हमारे भारतीय हाकी टीम के खेल को आज भी यहा वाले याद करते हैं भारतीयो को तो वे हाकी का जादूगर कहते हैं यहा की ओलपिक प्रतियोगिता में भारत हाकी और पोलो में शीर्ष स्थान तक पहुचा था

सुबह नाश्ते में सेरो दूध, पाव रोटी और मक्खन ले लिया था एक तो दिन भर घूमते रहे और दूसरे यहा की ठडी स्वास्थ्यकर हवा भूख जोरो की लग रही थी होटल लौट कर उबला साग, पाव रोटी और भारत से लाए हुए चिवडे की खीर खा कर भूख शात की हम ने देखा कि हमारी तरह दूसरे यात्री भी यहा ज्यादा खाते हैं पूछने पर मालूम हुआ कि यहा प्रति व्यक्ति की औसत खुराक ३,२०० कैलोरी से भी अधिक है, जब कि भारत में यह औसत १,६०० के लगभग है

हमारा फ्रेंड मित्र हमारी प्रतीक्षा कर रहा था मुसकरा कर कहने लगा, "अभी तो दस ही बजे है, क्यो न नाइटक्लब चला जाए आप विदेशी मेहमान हैं, अगर इन के नाइटक्लब में न गए तो ये बुरा मान जाएगे" बुरा मानने वाली बात पर हमें हसी आई हम ने थकावट का बहाना बता कर उस से छुट्टी ली

दूसरे दिन हमें विश्व के सब से धनी देश स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम के लिए सुबह ही एयरपोर्ट जाना था कमरे म आ कर प्रभुदयालजी सो गए मुझे नींद नहीं आ रही थी, खिडकी के पास खडा हो गया शहर की झांकी देखने लगा वनिता की तरह सैकडा टापुओ पर बसा यह नगर उस से कितना स्वच्छ है आचार-विचार और व्यवहार में भी सडकों पर से जब चाहें, जहां चाहें इसकी लहरें दिखाई पड जाती ह सागर की ओर दृष्टि गई देखा छोटे बडे जहाजों की बत्तियां दीवाली सजा रही हैं

नार्वे

विषम परिस्थितियों में जूझने की शक्ति

'दो फूल साथ फूले, किस्मत जुदाजुदा है,' बहुत दिनो पहले किसी नाटक के गाने में इसे सुना था जब स्वीडन के बाद नार्वे देखने गया तो उक्त पंक्ति याद आ गई स्वीडन और नार्वे दोनो पडोसी है एक हजार मील तक जुडी हुई सीमा, दोनो स्थानो के लोगो का एकसा पहनावा, एक सी चालढाल, शारीरिक गठन, रीतिरिवाज और एक से ही प्राकृतिक दृश्य लेकिन जहा स्वीडन विश्व के सपन्नतम देशो में से है, नार्वे अपने जीवन के सघर्षों में निरतर जूझता चला जा रहा ह बर्फीले तूफान और समुद्री लहरो के थपेडो को सहता हुआ वह किसी न किसी तरह विश्व के रगमच पर अपना अस्तित्व कायम रखने की कोशिश कर रहा है

स्वीडन को दुनिया का सर्वोत्तम लोहा, ताबा और कागज बनाने की लकडी प्रचुर मात्रा में प्रकृति ने दे रखी है, जब कि नार्वे के हिस्से में आए है पहाड, गिरिनिखात (फियर्ड) और नदिया इस छोटे से देश में डेढ़ लाख तो टापू ही है विचित्र और तरहतरह के है ये—पहाड, फियर्ड और झीलों से भरे हुए प्रकृति यहा अनुदार ह फिर भी यह हमारे देश की तरह गरीब नहीं है इस बात का सहज अनुमान इस से लग सकता है कि हमारी राष्ट्रीय आय से उस की आय १३ प्रतिशत अधिक है जब कि जनसख्या है—०७ प्रतिशत प्रति व्यक्ति वहा वार्षिक आय है दस हजार रुपए जब कि हमारे यहा प्रति व्यक्ति वार्षिक आय केवल ४५० रुपए है

भौगोलिक कारणो का प्रभाव स्थानीय जनजीवन और सस्कृति पर पडता है इसी लिए नार्वे के बर्फीले तूफानो, कठोर भूखड और गिरिनिखातो का प्रभाव वहा के निवासियो पर भी पडा है वे दुर्धर्ष, कठोर और कष्टसहिष्णु बन गए नार्थमेन, नार्मन, नार्डस और वाईकिग के नामो को सुन कर किसी जमाने में यूरोप के देशो में कपकपी उठ जाती थी आज से हजार सवा हजार वर्ष पहले, जब कि न तो उन्नत वैज्ञानिक साधन थे और न भौगोलिक ज्ञान, हजारो की सख्या में वाईकिग बडेबडे जहाजो के जरिए समुद्र की ऊची लहरो को चुनौती देते हुए आधी की तरह जिस देश में उतर पडते थे वहा हाहाकार मच जाता था

कुछ इतिहासकारो की मा यता है कि मानव की आदि सभ्यता का विकास नार्वे से हा हुआ यह बात कहा तक सही है, कहना कठिन है पर दसबारह हजार वर्ष पहले मनुष्य के काम में आने वाली चीजें यहा अवश्य मिली है अन्वेषण अब

भी जारी है। यहा की चट्टानो के बारे में भूतत्त्वशास्त्रियो की राय है कि वे अस्सी लाख वर्ष पुरानी होंगी

जमाना करवटें बदलता है नार्वे के दुर्घर्ष नाविक आज अपने पूर्वजो की तरह खूखार और क्रूर भले ही न हो, फिर भी है उन का जीवन कठोर और सघर्षमय ही

नार्वे में भूमि का केवल तीन प्रतिशत भाग कृषि योग्य है, २४ प्रतिशत जगलों से भरा पडा है और शेष ७३ प्रतिशत में पहाड, गिरिनिखात (फियर्ड) और झीलें है वहा का कुल क्षेत्रफल १ २५ लाख वर्ग मील है

नक्शा देखने पर नार्वे ऐसा लगता है मानो एक बडी ह्वेल मछली हो यह भी बडी मजेदार बात है कि नार्वे की छत्तीस लाख की आबादी में से लगभग नब्बे हजार मछुवे हैं इन के पास चालीस हजार नावें या बोट है ये लोग वर्ष में तेरह लाख टन मछलिया समुद्र से निकाल कर अपने देश की खाद्य समस्या हल करते है बची हुई मछली को विदेशो में निर्यात कर दिया जाता है

ह्वेल मछली के तेल के लिए विश्व को नार्वे पर निर्भर रहना पडता है इन वैत्याकार समुद्री जीवो को पकडने के लिए अत्यत साहस और बल की जरूरत पडती है नार्वे के लोगों के भोजन में भी मछली और समुद्री जीवो की प्रधानता है

मई के तीसरे सप्ताह से लगातार दो महीने तक यहा सूर्यास्त नहीं होता इसी प्रकार आधे नवबर से जनवरी तक उत्तरी नार्वे में घनघोर अधेरी रात रहती है ऐसा लगता है कि उत्तरी ध्रुव के बर्फीले तूफानों से भयभीत हो कर सूर्य सदा के लिए छिप गया हो इन दिनों उत्तरी पूर्वी भाग में इतनी कडाके की सर्दी हो जाती है कि मुह से थूक जमीन तक गिरतेगिरते बर्फ बन जाता है लेकिन यह बात नार्वे के पश्चिमी हिस्से पर लागू नहीं होती अमरीका से चली गल्फ स्ट्रीम की गरम जलधारा अतलातिक को पार कर नार्वे के पश्चिमी तट से हो कर मुडती है इसलिए पश्चिमी भाग में समुद्र जहाजरानी के लिए वर्ष भर खुला रहता है

हजारो वर्षों से विश्व के विभिन्न समुद्रों में विषम परिस्थितियो से जूझने के कारण नार्वेवासी नौविद्या में बड़े प्रवीण हो गए है जहाजरानी में नार्वे का ससार में तीसरा स्थान है

अनुमान था कि कठोर सर्दी में यहां के लोग घरो में रहते होंगे पर देखा कि स्थानीय लोगों की दिनचर्या में मौसम की बेरुखी से कोई अतर नहीं आता लोग यथावत अपने गाय, बैल, सुअर, भेड सभालते है, दैनिक काम पर आते है खेती के लायक जो भी थोडीबहुत जमीन यहां है, वह जब बर्फ के नीचे दब जाती है तो लोग उन दिनों दूसरे धधों में लग जाते है

नार्वे में कोयले का सर्वथा अभाव है और पेट्रोलियम भी यहां नहीं है इसलिए नार्वेवासियों ने अपने कारखानो या मशीनों को चलाने के लिए जलशक्ति का उपयोग किया है उस से विद्युत बना कर पूरे देश की औद्योगिक आवश्यकता की पूर्ति की जाती है विश्व में सब से ज्यादा व्यक्तिगत विद्युत उत्पादन की दृष्टि से नार्वे अग्रणी है

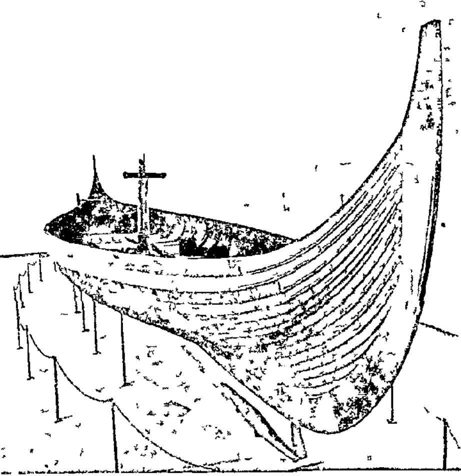

प्राचीन काल का वाइकिंग जहाज ओसलो के एक सग्रहालय में

'निशा सूय के देश में' नामक लेख में नार्विक की चर्चा मं ने की हं लगभग तेरह हजार की आबादी का यह शहर है हैमरफास्ट को छोड कर, विश्व का यह सब से उत्तरी पोर्ट हं गल्फस्ट्रीम की उष्ण जलधारा के कारण यहां बफ जम नहीं पाती इसलिए जहाजो के आवागमन के लिए यह वष भर खुला रहता हं स्वीडन की किरुना के विश्वविख्यात लोहे की खानो के उत्पादन का अधिकाश निर्यात यहीं से होता हं

नार्विक से करीब डेढ़ सौ मील उत्तर में हैमरफास्ट है जो उत्तरी ध्रुव से केवल ६० मील के फासले पर हं एक बार तो इच्छा हुई कि इसे भी देख लिया जाए पर साथी नहीं रहने के कारण नहीं गया यहा की आबादी केवल छ हजार हं यात्रियो के लिए मई से जुलाई तक हवाई माग खुला रहता हं

स्वीडन से आते समय मं ने ट्रेन से सफर किया था किरुना से होता हुआ नार्विक आया था जाते समय मं ने निश्चय किया कि जहाज, बस या कार से ओसलो की यात्रा की जाए इस प्रकार इस देश को अपेक्षाकृत अच्छी तरह देखने का मौका मिल जाएगा

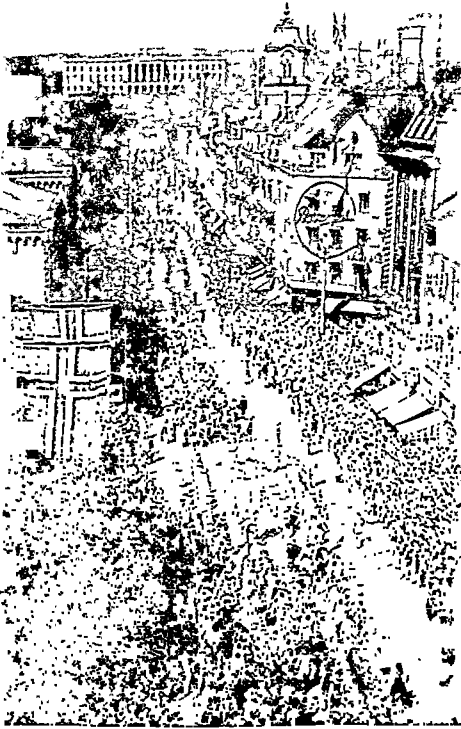

नार्वे की राजधानी ओसलो मविधान दिवस समारोह की एक झाकी

टूरिस्ट आफिस में जाने पर पता चला कि जहाज के लिए तो दो दिन रुकना पड़ेगा पर उसी दिन दोपहर को विंजे की तापनियंत्रित डीलक्स स्टेशन वेगन जा रही है उस में कुल नौ सीटें थीं. ड्राइवर दो थे जो गाइड का भी काम करते थे. विंजे यहा के विश्वसनीय ट्रावेल एजेंट है. इन के नाना प्रकार के टूर प्रोग्राम रहते है. इन की कारों और बसों में एक मोटरसाइकिल भी रहती है. रास्ते में कुछ खराबी होने पर इसी से पास के गाव में खबर दे दी जाती है जिस से फौरन आवश्यक मदद मिल जाती है.

ओसलो की यात्रा लबी थी. सात सौ मील का सफर, बीहड और खतरनाक पहाड़ी रास्ते और बस्ती दूरदूर पर. सोचने लगा, 'जीवन में बहुत ही कम अवसर ऐसी यात्रा के लिए आते है और इन स्थानों पर आना तो शायद ही फिर सभव हो. फिर क्यो न इस मौके का लाभ उठाया जाए!' साथ के यात्रियो में से दो अमरीकी वृद्धाए थीं. उन्हे इस कठिन यात्रा के लिए तैयार देख कर मेरा उत्साह भी बढ़ा. ५०० रुपयों की टिकट चार दिन की उस यात्रा के लिए मैं ने खरीद ली. होटल और भोजनादि के चार्ज इस में शामिल थे. ट्रेन या हवाई जहाज से किराया कम लगता पर नार्वे के जो दृश्य मैं ने इस यात्रा में देखे, वे ट्रेन या हवाई जहाज से जाने पर नहीं देख पाता.

दोपहर को दो बजे हम रवाना हुए. आपडे फियर्ड के किनारेकिनारे हमारी गाडी जा रही थी. रास्ता बहुत ही विकट और उतारचढाव वाला था. कहीं-कहीं फेरी से भी पार उतरना पडता था. तीन घटे में लगभग सौ मील का रास्ता तय किया. फियर्ड पर फेरी की इतनी अच्छी व्यवस्था है कि गाडी के पहुचते ही उसे पार कर दिया जाता है. मुसाफिर गाडी में ही बैठे रहते है, उन्हें उतरना नहीं पडता. पाच बजे शाम को हम सारेफोल्ड नाम के एक गाव में कुछ देर के लिए रुके. जितनी देर में नाश्तापानी किया, उतनी देर में गाडी की देखभाल पूरी तौर पर कर ली गई. पूरी सफर में इस प्रकार की व्यवस्था रखी जाती है कि मशीन की गडबड़ी से असुविधा न हो

उस रात हम मो नाम के गाव में रुके यो तो रात के नौ बजे थे पर रोशनी दिन की तरह थी. गाव को देखते हुए होटल की व्यवस्था अच्छी थी. निरामिष यात्रियो को ऐसे स्थानो पर दिक्कत होती है क्योंकि आमतौर पर यहा मछली और समुद्री जीवों के ही मीनू बनते है. होटल और रेस्तराओ में आए दिन खाना ही पड़ता है. लोगो को सामिष खाते देख अभ्यस्त सा हो गया था फिर भी यहा तरहतरह के समुद्री जीवों को पका कर जब मेज पर रखा देखा तो उबकाई सी आने लगी.

यूरोप के अन्य स्थानो की तरह यहा भी भोजन के साथ वाद्य, सगीत और नृत्य के कार्यक्रम चलते रहते है. सगीत की धुन अच्छी लगी. पेरिस, वेनिस या ब्रूसेल्स की तरह उत्तेजना पूर्ण नहीं थी. यात्रियो के मनोरजन के लिए गाव से लडकिया आ जाती है. साथियो ने नाचना शुरू कर दिया था. दोनो ड्राइवर भी कपडे बदल कर नाचगाने में शामिल हो गए थे. दोएक महिलाओ ने मुझे भी साथ नाचने के लिए आमत्रित किया पर मैं इस दिशा में कोरा था.

दूसरे दिन सुबह यहा के ग्रोटे और ग्लेशियर देखे. ग्लेशियर बर्फ के झरने

होते हैं ऊंचेऊंचे पहाड़ों पर से आने वाला नदी का जल ठंड के कारण पत्थर की तरह जम जाता है पर धीरेधीरे नीचे खिसकता है अपने यहां मनाली से आगे रोहतांग का ग्लेशियर देख चुका था इसलिए ग्लेशियर के बारे में पहले से ही जानकारी थी

दोपहर में नामसोम नाम के एक गांव के होटल में पड़ाव डाला यहीं लंच लिया पिछली रात रुचि के अनुकूल भोजन नहीं मिला था इस अनुभव के कारण आगे के स्थानों पर पहले ही सूचना दे दी गई थी यहां निरामिष भोजन अच्छा मिल गया लंच के समय गाड़ी को देखा जा रहा था विश्राम के लिए भी थोड़ा सा समय हाथ में था गांव देखने निकल पड़ा

छोटा सा साफसुथरा गांव सागर की लहरें दौड़दौड़ कर किनारा चूम रही थीं मछली पकड़ने का यह एक प्रमुख केंद्र है मछियारों की बस्ती और उन का रहनसहन देखा अपने देश के कोंकण, तमिलनाड, उड़ीसा और बंगाल में भी मछियारों की बस्तियां देखी थीं मगर कितना अंतर है! नार्वे संपन्न देश नहीं है और यहां जीवन भी संघर्षमय है, फिर भी देखा कितना उन्नत स्तर है यहां का! आधुनिक यांत्रिक साधन, सहकारिता और श्रम का संतुलित समन्वय कर उपार्जन को इन लोगों ने सरल बना लिया है बच्चों को देखा, हमारे यहां की तरह लावारिस-से नहीं घूम रहे थे शिक्षा और खेलकूद की व्यवस्था अच्छी थी बच्चों में अनुशासन भी था

अधिकांश बोटों में मोटरें लगी थीं पकड़ी गई छोटीबड़ी मछलियां ढेरा पड़ी थीं किसीकिसी का वजन तो पचाससाठ मन तक था अनेक मछलियां आकार में इतनी बड़ी थीं जैसे हमारे यहां की भैंसे

निरामिष होने के कारण वह दृश्य मेरे लिए भले ही रुचिकर न हो पर इन की व्यवस्था और व्यवस्थित जीवन का प्रभाव मन पर जरूर पड़ा कार की लंबी यात्रा में थक जाना स्वाभाविक है पर यहां की खुली ठंडी हवा ने ताजगी पैदा कर दी

दो दिनों में हम ने करीब चार सौ मील का सफर पूरा किया रात में उत्तरी नार्वे के एक कसबे टरोन्वियम में ठहरे आबादी लगभग सत्रह हजार होगी किसी समय यह नगर नार्वे की राजधानी था वाईकिंग इसे जहाजों के लिए सुरक्षित गोदी समझते थे और अपने बड़ेबड़े जहाज यहां खड़े करते थे यह कसबा अपने नाम के फियर्ड के किनारे बसा हुआ है रात का भोजन कर नगर का एक चक्कर लगा आया रात के ग्यारह बज रहे थे पर प्रकाश काफी था नार्वे में अब तक जो देखा उस से यहां का वातावरण कुछ भिन्न लगा मल्लाह लड़कियों को साथ लिए घूमते दिखाई पड़े शराब में स्त्रीपुरुष धुत्त थे और शोरशराबा भी कम नहीं था

कहते हैं चार कदम चलते ही पहचान दोस्ती में बदल जाती है दो दिनों के सफर में साथी यात्रियों से जानपहचान अच्छी हो गई थी भारतीय होने के नाते उन सब की उत्सुकता मेरे प्रति कुछ अधिक थी मौकेबमौके तरहतरह के सवालों के जवाब दे कर उन की जिज्ञासा शांत करता रहता था सवाल भी बड़े अजीब थे एक महिला ने पूछा कि रंग को सांवला बनाने का सब से उत्तम उपाय

ऊंचे पर्वत, गहरी घाटी : संघर्ष की भुजाओं में मुसकाता एक छोटा सा गांव

कौन सा है? एक अन्य महिला ने जानना चाहा, भारतीय ग्रामीण चित्रों में मर्द के पीछे औरत चलती देखी जाती है, साथ क्यों नहीं चलती? होली में अपने मुंह को रंग कर लोग सड़कों पर क्यों नाचते हैं? आप के यहां पत्नियां पतियों से इतनी डरती क्यों हैं?

इस से लाभ भी हुआ. हम सब की आपसी झिझक मिट गई और हंसीखुशी के वातावरण में यात्रा और आनंदपूर्ण हो गई.

अगले दिन सुबह उठ कर देखता हूं कि तैराकी की पोशाक में सभी साथी तैयार हैं. मुझ से भी फियर्ड में तैरने के लिए बहुत अनुरोध करने लगे, पर मैं गरम कपड़ों में भी सर्दी महसूस कर रहा था. तब भला खुले में तैरने की हिम्मत मुझे कैसे होती! महिलाओं से बहुत कहनेसुनने पर किसी तरह छुटकारा मिला. साथ उन के जरूर गया. इतनी सर्दी में भी लोग खूब तैरे.

लौट कर नाश्ता किया और फिर अपनीअपनी सीटों पर गाड़ी में जा बैठे. दिन भर में हम ने कोई तीन सौ मील की दूरी तय की. रास्ते में दृश्य लगभग एक से ही मिलते रहे. नदियां, झीलें, फियर्ड, गांव और उन के आसपास खेत. कहींकहीं नदियां बहुत तेज धार से बहती मिलीं. इसी प्रकार निसातों के बीच से समुद्र का जल भी देखा. बड़े वेग से प्रवेश कर रहा था. जब किसी कगार पर से हमारी गाड़ी गुजरती तो नीचे झांक कर देखने पर भय सा होने लगता था. ड्राइवर यहां होशियार होते हैं, वरना हाथ सधे न रहें तो गाड़ी का संभलना मुश्किल ही है. तब हड्डीपसली का पता तक न चले, गहरे खड्डों में जलसमाधि निश्चित है.

रात में हम लिलेमर नाम के एक गांव में ठहरे   लगभग तीनचार हजार सैलानी यहां हर समय रहते हैं.   कहते हैं कि यहां के रेस्तरां का भोजन बड़ा स्वादिष्ट बनता है   मेरे लिए स्वाद चखना संभव न था क्योंकि भोजन क्या था मछली, केकड़े और भांतिभांति के घोंघे थे   जो भी हो, दूध, मक्खन, रोटी भी यहां अच्छी मिली   गांव छोटा सा था मगर आधुनिक साधन सभी मौजूद थे

तीसरे दिन शाम को हम नार्वे की राजधानी ओसलो पहुंचे   नार्विक से ओसलो की यात्रा काफी लंबी और बीहड़ थी   फिर भी जितना आनंद इस में मुझे मिला, वह एक मधुर स्मृति के रूप में आज भी मैं ने संजो कर रख छोड़ा है

प्रकृति एक ऐसी श्रेष्ठ कृति है जिसे बिना किसी अतिरिक्त खर्च के हम उपयोग कर सकते हैं   हमारे देश में भी अपूर्व रमणीय स्थल हैं   हो सकता है, प्राचीनकाल में अतिथि सत्कार की भावना के कारण इन स्थानों में यात्रियों को असुविधा न हुआ करती हो पर आज के युग में तो हमें इन को लोकप्रिय बनाने के लिए आवागमन के उन्नत साधनों और आधुनिक सुखसुविधा की व्यवस्था करनी ही पड़ेगी   अपने यहां जिन्होंने पहलगाव से अमरनाथ और मनाली से रोहतांग की यात्रा की है, उन्हें हमारी कमियों का व्यक्तिगत अनुभव हुआ होगा

ओसलो इस देश की राजधानी भले ही हो पर वह मुझे विशेष आकर्षक नहीं लगा   संभव है इसलिए कि इस से पहले मैं यूरोप के कई एक बड़ेबड़े शहरों को देख चुका था   कहते हैं, यह शहर लगभग एक हजार वर्ष पुराना है लेकिन शहर घूमने पर ऐसा नहीं लगता   हां, यहां के म्यूजियमों में प्राचीनकाल के चिन्ह अवश्य मिल जाते हैं   वाईकिंगों की पोशाक, हथियार और नावें रखी हुई हैं   शहर में पुराने जमाने के दोएक गढ या किले भी हैं

यह अपने ही नाम के फियर्ड पर बसा है   पांच लाख की आबादी वाला यह शहर नार्वे का प्रमुख बंदरगाह है   जहाज यहां साल भर आयाजाया करते हैं उत्तरी यूरोप के बड़े बंदरगाहों में इस की मान्यता है

यदि नार्विक में मध्यरात्रि का सूर्य देखने न जाता तो शायद यहां आता भी नहीं   बस, केवल अपनी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति ने मुझे इस उत्तरी ध्रुवाचलीय स्थान को देखने के लिए प्रेरित कर दिया   इस यात्रा में प्रभुदयालजी साथ नहीं थे भोजन की असुविधा साधारणतया मुझे हुई नहीं क्योंकि स्कैंडिनेविया के देशों में दूध, मक्खन, रोटी और पनीर बहुतायत से मिल जाते हैं

ओसलो के लिए मैं ने होटल में पहले से बुकिंग नहीं कराई थी   गरमी के इन दिनों में मेरी तरह दूसरे बहुत से यात्री ध्रुवाचलीय स्थानों से घूमते हुए यहां आ जाते हैं   इसी लिए होटलों में जगह की कमी हो जाती है   मैं ने तीनचार होटलों में कोशिश की पर सफल न हो सका   एक बार तो यहां तक भ्रम हुआ कि रंगभेद की भावना के कारण शायद मुझे स्थान नहीं दिया जा रहा है पर देखा, मेरी तरह अन्य गैर यूरोपीय लोग उन्हीं होटलों में हैं तो यह भ्रम मिट गया

कुछ पसोपेश में पड़ गया   रात के दस बज चुके थे   सोचने लगा कि आवास की व्यवस्था तो होनी ही चाहिए   खैर, कुछ और कोशिश करने पर जगह

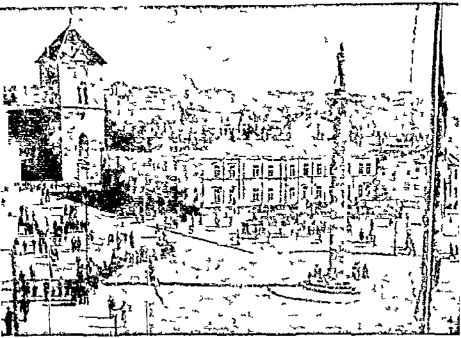

नार्वे का एक गाव आधुनिक जीवन की सब सुविधाए और चहलपहल भरी जिंदगी

मिली एक छोटी सी सराय (पेंसन) में अवकाशप्राप्त व्यक्ति अपने मकान में तीनचार कमरे किराए पर उठाने के लिए रख छोडते हैं इन के यहा किराएदारो के लिए चाय, नाश्ते, भोजन आदि की भी व्यवस्था रहती है अधिकतर इन पेंसनो की मालकिन महिलाए होती हैं कमरे में गया, एक अजीब सी सीलन की गध मिली वह गध अब तक याद है बहरहाल, मैं खुश था कि चलो जगह तो मिल गई वरना अनजान शहर में सारी रात भटकता ही रह जाता

सामान रख कर बैठा ही था कि मालकिन की लडकी दूधरोटी ले कर आई देखता हू कि उस के साथ एक अन्य लडकी हाथ में बैग ले कर आई है पहली के चले जाने पर दूसरी लडकी बैग खोल कर उस में से कई तरह की सिगरेटें निकाल कर दिखाने लगी मैं ने कई बार उसे समझाया कि मैं सिगरेट नहीं पीता पर वह तो मानो छोडने को तैयार ही नहीं थी टूटीफूटी अगरेजी में बेतरह मनुहार करने लगी कि कुछ न कुछ पसद कर ही लू सट कर इस प्रकार बेतकल्लुफी से बैठ गई जैसे बहुत पुरानी जानपहचान हो लाचार हो कर मुझे आवाज में कुछ बेरुखी ला कर उसे जाने के लिए कहना पडा

दूसरे दिन सवेरे मैं ने सराय की मालकिन से रात की घटना का जिक्र किया वह मुसकरा कर कहने लगी कि आप ने बडेबडे होटलों को छोड कर मेरी सराय में रहना पसद किया, इस से हमारे समझने में कुछ भूल हो गई क्या वह आप ने पसद ही नहीं की, नहीं तो वह आप की ओसलो यात्रा को बहुत ही मधुर बना देती अपने देश में पजाब, अन्य पहाडी इलाको के होटलों के बारे में इस ढग की बातें सुनी

थीं पर इन सभ्य और उन्नत देशों में भी यात्रियों के लिए इस प्रकार की व्यवस्था रहती है, यह तो यहां आ कर ही जान पाया.

मालकिन क्याक्या कह गई, ठीक समझ नहीं पाया पर शायद उस का आशय था कि जो आत्मीयता और सुखसुविधा उस की इस सराय में मिल सकती है, वह बड़े होटलों में नहीं मिलेगी. उस ने यह भी कहा, 'यूरोप और अमरीका के अलावा दूसरे देशों के भी विशिष्ट व्यक्ति इस सराय में ठहरा करते हैं और हफ्तों के लिए बुकिंग करा लेते हैं. आप का तो महज दो ही दिनों का प्रोग्राम है चाहे तो गाइड के रूप में किसी सहायक को साथ कर दूं. चार्ज टूरिस्ट प्रतिष्ठानों से बहुत ही कम लगेगा."

ओसलो में मैं किसी को जानता नहीं था, न मुझे इन सरायों के बारे में ही कुछ पता था/ इसलिए विदेश में अप्रत्याशित झंझटों से बचने की प्रेरणा और मितव्ययी होने की आदत के कारण उस के दोनों सुझावों के लिए मैं ने धन्यवाद दिया और गाइड न ले कर गाइडबुक लेना स्वीकार किया.

गाइडबुक पढ़ कर मैं ने मोटे तौर पर शहर घूमने का एक कार्यक्रम बना लिया. पूरे दिन के लिए तीन रुपए में ट्राम की टिकट ले ली.

सब से पहले मैं जहाज बनाने के कारखाने देखने गया. नार्वे उन दिनों जहाजरानी के उद्योग में विश्व में द्वितीय स्थान पर था. अब तो जापान सब से आगे बढ़ गया है इसलिए इस का स्थान तृतीय माना जाता है. जो भी हो, नार्वे का यह उद्योग उस की आर्थिक स्थिति को सभालने में बहुत महत्वपूर्ण रहा है. केवल जहाजों के किराए से ही नार्वे की वार्षिक आय १६० करोड रुपए है यानी इस देश की आबादी के अनुसार प्रति व्यक्ति ४५० रुपए. यह आय हमारे भारतवर्ष की कुल आय से भी कुछ अधिक है

यहां के जहाज के कारखाने और इस उद्योग के विकास को देख कर नार्वेवासियों के प्रति मन में आदर का भाव उठना स्वाभाविक है दैनिक जीवन के लिए आवश्यक अन्नवस्त्र और उद्योगों के लिए प्रयोजनीय धातु और कोयले के अभाव को इन्होंने केवल श्रम और अध्यवसाय से दूर किया है. १४५ लाख टन के जहाज तो केवल यहां के प्रतिष्ठानों के पास हैं इस के अलावा ५० लाख टन के जहाज इन के कारखानों में प्रति वर्ष बनाए जाते हैं. आठ मील लंबी गोदी में सूखे डौक, तैरते डौक और पानी के डौक पर बने बीसियों कारखाने हैं जिन में जहाजों के वृहदाकार ढांचे खड़े रहते हैं. देख कर तब आश्चर्य होता है जब कि थोड़े समय में ही लोहे के इन पिंजरों को सुंदर जहाजों में बदल दिया जाता है. तब ये महासागरों की ऊंचीऊंची लहरों को लांघते हुए दुनिया के कोनेकोने में माल और यात्री पहुंचाते हैं, अपने देश के लिए धन बटोरते हैं और उस धन से अन्नवस्त्र तथा अपने उद्योगों के लिए कच्चे माल खरीदते हैं.

देखा, मजदूर काफी स्वस्थ थे. लगन और मेहनत से काम पर जुटे हुए थे. एक कारखाने के निरीक्षक से पूछने पर पता चला कि इन के मुकाबले में केवल पश्चिमी जरमनी के मजदूर ही कार्य कुशलता और परिश्रम में ठहर पाते हैं.

मजदूरों की कैंटीन में गया. काफी और रोटी ली. कीमत को देखते हुए बुरी न थी. इन लोगों के मीनू को देखा, मांसाहार प्रधान है. यह स्वाभाविक भी

नार्वे का भविष्य इन के हाथो में है • एक स्कूल में सुबह के समय

है क्योकि अत्यत शीतप्रधान अचल में होने तथा अन्न की कमी के कारण यहा मासाहार आवश्यक हो जाता है इन लोगो से बातें भी कीं रूसी मज्दूरो से ये कहीं अधिक जानकारी रखते हैं इस का कारण शायद यह है कि रूस में निर्धारित काम और सरकार द्वारा नियत्रित जीवन है परिणाम यह होता है कि व्यक्तित्व कुठित रहता है और व्यक्ति केवल यह सोचता है कि वह बडी मशीन का एक पुर्जा मात्र है इसलिए वहा व्यक्ति केवल सौंपे गए काम, भोजन और भोग तक ही सीमित रहने का अभ्यस्त होता है वहा न उस के पास अतीत है और न भविष्य, वह केवल वर्तमान देख सकता है नार्वे के मजदूरो में ऐसी बात नहीं है वे घरपरिवार, देशविदेश के बारे में सोचते है और एक स्वर्णिम भविष्य की कल्पना कर कदम बढाते चलते हैं उन का जीवन जड नहीं, चेतनापूर्ण है फुरसत के समय वे इब्सन के साहित्य के बारे में भी चर्चा करते है

जहाज के कारखानो को देख कर शहर वापस आ गया यहा की सब से बडी सडक है कार्ल जीनूस गेट इसी पर ओसलो की प्रसिद्ध इमारतें हैं राजप्रासाद, ससद भवन, बडेबडे दफ्तर, दुकानें और सब्जी के बाजार तक इसी एक सडक की दोनो पटरियो पर मिल जाएगे ट्राम का पास सारे दिन के लिए था इसलिए इधर से उधर, रात के नौ बजे तक चक्कर लगाता रहा सर्वेतगडे स्वस्थ चेहरो और खुशहाली को देख कर बारबार मन में विचार उठता था कि यदि इन देशों के लोग, जहां प्रकृति तक अनुदार है, मेहनत कर के खुशहाली ला सकते हैं तो हम अपने देश को, जहा खेतो पर नाज की बालियां मस्ती से झूमती है और

धरती अपनी कोख से शिल्पोद्योग के लिए भातिभाति का कच्चा माल देती है, क्यो नहीं सपन्न बना पा रहे हैं?

रात दस बजे अपनी सराय में लौटा बाजार से कुछ फल और सब्जिया लेता आया था देखा, मावेटी राह देख रही थी उन्हें सब्जिया दे दीं और अगले आधे दिन के लिए एक गाइड की व्यवस्था कर देने को कहा मैं चाहता था कि वाईकिंग म्यूजियम, ससद भवन, ग्रामीण म्यूजियम के अलावा विश्व के महान नाट्यकार इब्सन का निवासस्थान भी देख लू गाइड के लिए आधे दिन का चार्ज देना पडा ३० रुपया लच का खर्च और यातायात का किराया ऊपर से सराय में ठहरने की वजह से किराए में जो बचत हुई थी, वह सभी रकम गाइड के खर्च में लग गई

मईजून में स्कैंडिनेविया में रात के बारहएक बजे तक दिवालोक रहता है सोते समय अधेरा करने के लिए दरवाजे और खिडकियों पर काले परदे गिरा दिए जाते हैं रात को मालकिन की लडकी आई और परदे गिरा कर चली गई जाते समय उस ने शुभरात्रि का अभिवादन करते हुए सुखद निद्रा की कामना की पश्चिमी देशों में बतौर पेइगगेस्ट ठहरने पर मालकिन या परिवार के लोगो का ध्यान अतिथि की सुखसुविधा पर बहुत रहता है कम खर्च और आत्मीयता के कारण बहुत से लोग इस व्यवस्था को होटलों से ज्यादा पसद करते हैं

दूसरे दिन सुबह आठ बजे नाश्ता कर के उठा तो देखता हू कि गाइड के रूप में वही सिगरेट वाली लडकी हाजिर है देखा, किसी प्रकार का सकोच या झेंप अथवा रोष की झलक उस के चेहरे पर न थी ऐसी दिखती थी मानो पहले-पहल मिल रही हो मालकिन ने उस का परिचय कराया, नाम था डोरोथी हम दोनों घूमने निकल पडे

सब से पहले विदोय प्रायद्वीप में यहा के म्यूजियम देखने थे रास्ते में हम ने देखा ओसलो फियड में इतनी बडी सख्या में छोटेबडे बोट तेजी से आजा रहे थे कि किसी भी समय आपस में टकरा जाने की सभावना थी पर नावों के मल्लाह इतने कुशल हैं कि इस सकरे फियर्ड में बडी तत्परता और सफाई से बोट निकाल ले जाते हैं

बाहर से देखने पर यहा के म्यूजियम लदन और पेरिस के म्यूजियमों के मुकाबले में नहीं ठहरते पर अदर जाने पर सग्रह बेजोड लगते हैं एक कक्ष में देखा नानसेन का 'फ्राम' जहाज रखा है वे सारी वस्तुए भी रखी हैं जिन्हें वह उत्तरी ध्रुव की यात्रा में ले गया था इस छोटे से जहाज को देख कर आश्चर्य होता है कि आज से ७० वर्ष पहले, जब विज्ञान न तो इतना उन्नत था और न आज के से साधन थे, उत्तरी ध्रुव की खतरनाक यात्रा इस छोटे से बोट में करने का साहस उस ने कैसे किया! उस की लिखी हुई पुस्तक 'उत्तरी कोहरा' पढने पर पता चलता है कि उसे अपनी इन यात्राओ में कितने कष्ट झेलने पडे थे

पास ही देखा 'कोनटिकी' नाम का जहाज भी था इसे बोट कहना ही अधिक उपयुक्त होगा हाइडूल नाम के नार्वे के एक युवक ने इसी पर पेरु से पोलिनेशिया तक की समुद्र यात्रा की लगभग पाच सौ मील की लबी और कष्टों से भरी यात्रा, ऊपर से प्रशात की ऊची लहरें फिर भी साहसपूर्वक यह दुस्साहसिक

राष्ट्रीय रंगमंच   नार्वे के मजदूर भी इब्सन के बारे में बातें करते हैं

कार्य उस ने पूरा कर ही लिया 'कोनटिकी' पुस्तक में इस यात्रा के कष्ट और अनुभवों का वर्णन पढ़ कर ऐसे नौजवानों के प्रति आदर के भाव जाग उठते हैं जिन्होंने इस प्रकार के खतरे उठा कर अपने देश के गौरव को बढ़ाया

ग्यारह सौ वर्ष पहले के तीन वाईकिंग युद्धपोत देखे   इन्हीं पर बैठ कर नार्व के योद्धा अबाध रूप से यूरोप के देशों पर उमड पडते थे इन के बारे में जो पढ़ने को मिलता है, उस से रोंगटे खड़े हो जाते हैं   इस प्रकार की बर्बरता की तुलना रोम के वहशी सम्राट नीरो के कारनामे, अरब, या तुर्कों द्वारा जेहाद अथवा नादिरशाह की खूरेजी से की जा सकती है   आज के युग में नाजी फौजों और साम्यवादियों ने भी कम अत्याचार नहीं किए हैं * फिर भी सभ्यता का एक परदा इन लोगों ने जरूर रखा था   लोगों की नजरों से दूर नाजी कन्सट्रेशन कैंपों और साइबेरिया की वीरान जेलों में हजारों की तादाद में घुटाघुटा कर लोगों के दम तोड़े गए जब कि प्राचीन काल में सरेआम आगजनी और कत्लेआम किया जाता था   सुसभ्य अंगरेज और डच भी किसी से कम नहीं थे   हां, इन का तरीका जरूर कुछ भिन्न रहा है   ये जोंक या चीते की तरह खून पीते रहे   जब देश मृतप्राय हो गया तब उसे आजाद कर इन लोगों ने इंसानियत का डंका पिटवा दिया   शायद मनुष्य की पाशविक प्रवृत्ति उस की चिर सहचरी है

डोरोथी से बीचबीच में आवश्यक जानकारी मिलती जा रही थी   मैं ने उसे बताया कि हमारा देश भी किसी समय सामुद्रिक व्यापार और यात्राओं में अद्वितीय था पर हम ने यूरोप वालों की तरह कभी बर्बरता नहीं की   विदेशों को हम ने लूटा नहीं, उन्हें दिया ही, और जो दिया वह आज भी उन की सभ्यता

और संस्कृति में हैं   बर्मा, मलाया, स्याम और इंडोनेशिया से ले कर सुदूर दक्षिण अमरीका तक के देश इस की साक्षी दे रहे हैं

वाईकिंगो के आक्रमण योजनाबद्ध और सुसंगठित होते थे   वे पहले पास के किसी टापू पर जहाज और सामान इकट्ठा कर लेते, फिर वहां से सैकड़ों नावों में सवार हो कर धावा बोल देते थे   गांवों में आग लगाना और मारतेकाटते ध्वंस करते निकल जाना उन का पूर्व नियोजित कार्यक्रम होता था   सिवा जवान औरतों के, शेष सभी को वे आग में ढकेल देते थे   युवतियों से मनमानी करने के बाद वे उन्हें वहीं रोतायलपता छोड देते, साथ ले जाने की उन्हें फुरसत कहां थी! ले भी जाते तो अपने देश में उन्हें खिलाते क्या? वहां तो पहले ही से खाद्य सामग्री का अभाव था   अपार क्षति पहुचा कर अट्टहास करते हुए अन्न और संपदा से लदे जलयानों और युद्धपोतों को ले कर वे फिर अपने देश को वापस आ जाते थे   जब कोई बडा योद्धा मर जाता तो उस के जलयान को उस की लूट की संपत्ति के साथ दफना देते थे   ऐसी ही तीन नौकाएं मिली हैं जिन्हें यहां म्यूजियम में रखा गया है

ग्यारह सौ वर्ष बाद इन्हीं वाईकिंगो की आसुरी प्रवृत्ति उभर आई नाजी जरमनों में   उन्हीं वाईकिंगो की तरह वे उमड पडे नार्वे पर   नार्वे श्रीहत हुआ, अपार धन की हानि हुई, नाजियों ने हजारों की संख्या में लोगों को गोली से उडा दिया   क्विसलिंग नामक एक राष्ट्रघाती नार्वेवासी को हिटलर ने यहां के लिए अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया   सन १९४० से १९४५ तक नार्वे पर जरमनों का अधिकार रहा   छ लाख जरमन फौजों ने इस देश को उत्तर से दक्षिण तक बुरी तरह रौंदा

इन वर्षों में नार्वेवासियों ने धैर्य, संयम और साहस का जो परिचय प्रस्तुत किया है, उस की मिसाल बेजोड है   सारा राष्ट्र मानो एक नियोजित रूप से संगठित हो कष्टसहिष्णु बन उठा और विदेशियों से असहयोग करने लगा   नार्वे के राजा ने लंदन में अपनी सरकार संगठित कर ली   जहाज पहले ही बच निकले थे   वे मित्र राष्ट्रों के युद्ध के सामान, तेल, सेना और हथियारों को ढोने में लगे रहे   इन में से बहुतों को जरमन पनडुब्बियों ने नष्ट कर दिया, फिर भी, वे नार्वे वालों को पस्तहिम्मत न कर सके   नार्वे के लोग, जो विदेशों में थे, वहीं से संगठित हो कर जरमनों को परेशान करने में जुट पडे

जरमनी हारा और क्विसलिंग को गोली मार दी गई   जहां वह मारा गया था, वहीं पास में सैनिकों का एक स्मारक बनाया गया   शायद, याद दिलाने की इस भावना से कि नार्वे में एक क्विसलिंग पैदा जरूर हुआ मगर हजारों ऐसे भी हुए जिन्होंने देश की प्रतिष्ठा और मर्यादा के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी

वाईकिंगो की नौकाओं के संग्रहालय के निकट ही विगत एक हजार वर्षों में बने नार्वे के मकानों की प्रदर्शनी है   पुराने जमाने के मकान देखें   लकडी के मोटे लट्ठों को ऊपर नीचे खडा कर घरनुमा बनाया गया है   उसी रंग की बेडौल टेबल, कुरसियां और दूसरी चीजें देखने को मिलीं   खानेपीने के बरतन भी लकडी के थे   इन्हें देख कर मैं अपने यहां के हजार वर्ष से भी पहले के मकानों और लकडी के सामानों के बारे में सोचने लगता था   कितनी कारीगरी, खूब-

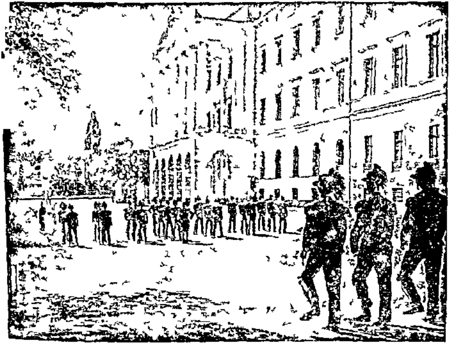

ओसलो का राज भवन   इतिहास का गवाह

सूरतें और नफासत हमारे यहां थीं! कितने संपन्न, सभ्य और सुसंस्कृत थे हम! लेकिन आज?   ऐसा क्यों?

दोपहर हो गई थी   हम विदोय से यहां की नेशनल लाइब्रेरी में गए डोरोथी का कार्यक्रम मेरे साथ केवल आधे दिन का था   मैं ने उसे छुट्टी दे दी   मैं पुस्तकालय में रुक गया ताकि नार्वे के बारे में कुछ आंकड़े और आवश्यक जानकारी ले सकूं

नार्वे में शायद ही कोई निरक्षर मिले   यही नहीं, अनेक भाषाएं जानने वाले लोग भी यहां मिल जाएंगे   अंगरेजी का जितना प्रचलन यहां है, उतना पड़ोसी देश फ्रांस या जरमनी में नहीं है   पचास करोड़ लोगों के देश भारत की नेशनल लाइब्रेरी से छत्तीसलाख की आबादी वाले इस देश की लाइब्रेरी में पुस्तकें अधिक हैं   इस के अलावा यहां और भी बड़ेबड़े पुस्तकालय हैं   जहां कहीं भी जाइए, स्त्री, बच्चे, बूढ़े जवान, कुछ न कुछ पढ़ते मिल जाएंगे

जानता था, यहां भी हिंदी में पुस्तकें नहीं मिलेंगी   हम ने आज तक इस का प्रयास ही नहीं किया कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पचास करोड़ की राजभाषा को सुपरिचित कराया जाए   फिर भी, हिंदी कोई भाषा है, इसे ध्यान में लाने के लिए मैं ने कुछ पुस्तकें हिंदी में देने का अनुरोध किया   पुस्तकालय का सहायक चीनी, जापानी, तुर्की, अरबी, फारसी का नाम तो जानता था, रवींद्र के कारण बंगला का नाम भी उस ने सुना था, पर हिंदी हिंदुस्तान की राजभाषा है, इस की उसे जानकारी नहीं थी   मैं मुसकरा उठा लेकिन उस पर नहीं, स्वयं पर, अपने

देशवासियों पर, अपने दूतावासों पर जो विदेशों में अपने देश की राजभाषा का प्रयोग तक करने में सकोच अनुभव करते हैं

बहरहाल, उस ने हिंदी के लिए विवशता बताई और कहा कि अगरेजी पुस्तके मिल सकती हैं मैं ने विषय बता दिए, थोडी ही देर में मेरी टेबल पर पुस्तको का अबार लग गया मुझे जो जानकारी लेनी थी, आसानी से मिल गई प्राप्त आंकडा से मुझे यह विचार बदल देना पडा कि नार्वे सपन्न देश नहीं हैं हा स्वीडन, स्विटजरलैंड, पश्चिमी जरमनी और अमरीका की अपेक्षा यह गरीब जरूर है

द्वितीय महायुद्ध में जरमनों ने यहां के सारे कारखाने नष्ट कर दिए थे युद्ध के बाद देश में न तो उद्योगधधे बचे और न खाने के लिए अनाज बची थी केवल एकता की भावना कि राष्ट्र को किस प्रकार पुनर्जीवित किया जाए अमरीका ने इन्हें आठ वर्षों में २,५०० करोड रुपए की मदद पहुचाई इस राशि को सुनियोजित ढग से काम में लगा कर नार्वे की जनता ने अपने शिल्पोद्योग का विकास किया और उत्पादन क्षमता पहले से ड्योढ़ी कर ली बहुत कुछ ऐसी ही परिस्थिति हमारे देश की भी रही है बल्कि हमारे पास कच्चा माल था, शिल्पोद्योग नष्ट नहीं हुए थे, अमरीका और अन्य देशों से आर्थिक सहायता भी काफी मिली, हमारे रुपए इगलैंड पर पावने भी थे, मगर सर्वस्व स्वाहा कर दिया हम ने हम आज भूखे हैं और कर्जदार भी अभाव का कारण केवल एक है राष्ट्र और राष्ट्रीयता का बोध न मालिकों में है और न मजदूरों में, न शिक्षको में है और न विद्यार्थियो में

नार्वे में प्रति वष दस लाख यात्री विदेशो से आते हैं इस से इन्हें लगभग बाइस करोड रुपए की आमदनी हो जाती है जीवन में आगे बढना इन्होंने अच्छी तरह जान लिया है उत्साह और जिज्ञासा यहा के लोगों में पर्याप्त है यही कारण है कि पिछले पचास वर्षों में अकेले नार्वे में सात ऐसे व्यक्ति पैदा हुए जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला है ध्यान देने की बात है कि नार्वे से लगभग डेढ सौ गुनी बडी आबादी वाले हमारे देश में अब तक केवल दो ही व्यक्ति इस गौरव से विभूषित हो सके हैं

वैसे नार्वे के पास केवल ३३,००० जवानो की जल, थल और नभ सेना है पर यहा १६ से १८ वर्ष तक के प्रत्येक युवक को सैनिक शिक्षा प्राप्त करनी पडती है स से जरूरत पडने पर इन्हें प्रशिक्षित सैनिको का अभाव नहीं रहता

मैं चकित रह गया कि महज छत्तीस लाख की आबादी है यहां की और टेलीफोन हैं सात लाख पांच लाख मोटरें और ट्रक इन के पास हैं इसी से अदाज लगाया जा सकता है कि इन के जीवन का स्तर कैसा होगा वृद्धावस्था, बीमारी और बेकारी के लिए यहा बीमे की व्यवस्था है ऐसी परिस्थिति में सरकार पेंशन देती है १४०० करोड रुपयों का वार्षिक आयात और ९२० करोड का निर्यात नार्वे करता है इस विषमता की पूर्ति होती है इन के मालवाही जहाजों के किराए से और कभीकभी विदेशी सहायता से देश का वार्षिक बजट १,१०० करोड रुपए का है

लाइब्रेरी में काफी समय लग गया थियेटर की बुकिंग पहले से करा ली

थी. इब्सन का 'जनता शत्रु' नाटक स्थानीय नेशनल थियेटर में चल रहा था. इसे मैं देखना चाहता था. कलकत्ता में मैं ने शंभु मित्र और तृप्ति मित्र द्वारा प्रस्तुत यह नाटक बंगला में देखा था. भाषा न जानने पर भी अधिक दिक्कत नहीं हुई क्योंकि अनुवाद पढ़ा हुआ था. अभिनय में स्वाभाविकता और दक्षता थी, फिर भी मुझे कलकत्ते के 'बहुरूपी ग्रुप' की टेकनिक इन से ज्यादा मंजी हुई लगी.

यूरोप के सभी देशों में बड़ीबड़ी नाट्यशालाएं होती हैं. लोकप्रिय होने के सायसाथ इन्हें राष्ट्रीय महत्त्व का भी माना जाता है. यहां का नेशनल थियेटर भी इसी कोटि का है. पेरिस का 'आपेरा' इस से पूर्व देख चुका था. उस की तुलना में यह बहुत छोटा है. फिर भी इस छोटे से देश के लिए तो यह गौरव-स्वरूप है ही.

थियेटर से वापस जब सराय पहुंचा, रात का एक बजा था. देखा, मालकिन की लड़की जगी हुई है. मैं झेंप सा गया मन ही मन. मेरे लिए सारी व्यवस्था कर दी गई थी.

औपचारिकता के नाते मैं ने खेद प्रकट किया. थकान थी ही, बिस्तर पर जाते ही आंखों पर नींद का परदा गिरने लगा.

स्वीडन

निशा सूर्य के देश में

बहुत दिनों से सुन रखा था कि हमारी धरती पर उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव नामक ऐसे स्थान भी हैं जहा छ महीने का दिन और छ महीने की रात होती है पिछली बार स्वीडन गया तो सोचा कि उत्तर के ध्रुवाचलीय प्रदेशो के इतने निकट जब पहुच ही गया हू तो क्यो न इस अवसर का लाभ उठा कर निशासूर्य के भी दर्शन कर लू! इसी इरादे से नक्शे पर निगाह डाली तो देखा कि उत्तरी ध्रुव को आइसलैंड, स्कैंडिनेविया (नार्वे और स्वीडन), फिनलैंड, साइबेरिया और अलास्का एक दायरे मे घेरे हुए हैं स्कैंडिनेविया यूरोप के उत्तर में एक प्रायद्वीप है जिस का आकार मुह खोले हुए शेर की तरह है उस में दो राज्य या देश हैं उत्तर पश्चिम में नार्वे है और दक्षिणपूर्व में स्वीडन

स्केंडिनेविया जाने का कार्यक्रम मेरे यूरोप पर्यटन में था, इसलिए मैं ने सब से पहले वहीं जाना ठीक समझा तय किया कि पहले स्टाकहोम पहुचा जाए, फिर वहा से उत्तर की ओर ध्रुवाचलीय प्रदेश लैपलैंड से होते हुए, नारविक के रास्ते, नारवे में प्रवेश कर उस की राजधानी ओसलो लौटा जाए, क्योंकि इस प्रकार स्वीडन और नारवे दोनों को उत्तर से दक्षिण तक देख लूगा और निशासूर्य के दर्शन भी कर सकूगा

स्टाकहोम पहुचा यह स्वीडन की राजधानी है इस में चारो ओर छोटी-छोटी पहाडियो के साथ झीलो की कतार इस प्रकार गुथी हुई है कि सारा वातावरण बहुत ही आकर्षक और दर्शनीय हो गया है शहर के चारो ओर घने वन है, जो शहर के इतने निकट है कि शहर के मध्य भाग से बीसपचीस मिनट में ही वनो में पहुचा जा सकता है

स्टाकहोम की स्थिति सामरिक दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है सच पूछा जाए तो इस की स्थापना ही बाल्टिक सागर के रास्ते पर स्वीडन पर होने वाले आक्रमणो के विरुद्ध एक गढ के रूप में हुई थी बाल्टिक सागर से आने वाले शत्रुओं की सेनाए मालार झील के रास्ते स्वीडन में काफी अदर तक पहुच जाती थीं उन को मालार झील के मुहाने पर ही रोकने के लिए उस के मुहाने पर स्थित कई द्वीपों पर मोर्चाबदी की गई थी और केंद्रीय स्थिति वाले द्वीप पर ग्यारहवीं शताब्दी में एक विशाल दुर्ग बनाया गया था कालातर में उस दुर्ग के आसपास बस्तियां बसती गई उन का ही विकसित रूप आधुनिक स्टाकहोम है

लैपलैंड की आर्थिक और सामाजिक स्थिति रेंडियर के सहारे ही टिकी हुई है

नगर का उत्तरी भाग व्यापार और खरीदफरोख्त का केंद्र है यहा आधुनिक ढग की दुकानें और कार्यालय ह दक्षिणी भाग में, जो नदी के दूसरी ओर है, स्टाकहोम द्वीप है इसी पर स्वीडन का ससद भवन है और उस से आगे प्राचीन ढग के स्थान पर, एक बहुत ही भव्य राजप्रासाद खडा है इस का नाम है रायल पैलेस जिन दिनों रायल पैलेस में स्वीडन के नरेश नहीं रहते उन दिनो कुछ कक्ष आम जनता के लिए खोल दिए जाते है इस पैलेस में एक सग्रहालय भी है, जिस में भूतपूर्व राजारानियो के इस्तेमाल की वस्तुए और अस्त्रशस्त्रादि सग्रहीत है

स्टाडेन स्टाकहोम का सब से पुराना भाग है उस की कई गलिया बडी घुमावदार ह और कोईकोई तो इतनी सकरी है कि ऊपर की मजिलो में आमनेसामने रहने वाले लोग खिडकियो से आपस में हाथ मिला सकते है इन गलियो को देख कर काशी की गलियों की याद ताजा हो उठी यहा के लोगों का मुख्य धधा नावो पर माल चढानेउतारने का है नदी के किनारे हर कहीं मालअसबाब से लदी नावें दिखाई पडती है

किनारे पर ही खुले में बाजार लगे मिलेंगे भड़कीले रंगो की रंगबिरंगी छतरियों के नीचे सजी दुकानें बड़ी विचित्र और आकर्षक नजर आती हैं यहां एक और विचित्रता देखी कुछ दुकानों पर कांच की बड़ीबड़ी पेटियों में मछलियां तैरती रहती हैं और खरीदफरोख्त के लिए आई स्त्रियां जिंदा मछलियों में से ही अपनी रसोई के लिए मछलियां चुनती हैं

इस द्वीप का मध्य भाग कुछ ऊंचा है यहीं स्टाकहोम का सब से पुराना कैथेड्रल है चर्च में काठ पर जड़ी हुई 'संत जार्ज और अजगर' की एक प्राचीन मूर्ति भी देखी

स्टाकहोम में नीले रंग की ट्रामें ही आवागमन का मुख्य साधन हैं ये ट्रामें काफी तेज रफ्तार में चलती हैं

जनता के रहनसहन के स्तर की दृष्टि से स्वीडन और स्विट्जरलैंड की गिनती संसार के सब से अधिक अमीर देशों में की जाती है स्टाकहोम में मैं ने रेडियो से लैस बहुत सी मर्सीडीज और हवर जैसी महंगी मोटरगाड़ियां टैक्सियों की तरह चलती हुई देखीं।

शहर के बीच से होते हुए ट्राम से डियर पार्क पहुंचा यहीं स्कानसन देखा यह एक बड़ा अजीबोगरीब संग्रहालय है इस में स्वीडन के विभिन्न प्रदेशों के विभिन्न वास्तु शैलियों में बने पुराने मकान ला कर रखे गए हैं यहां सदियों पुरानी पवनचक्कियां, लकड़ी के बने गिरजे, लैप लोगों की झोंपड़ियां और विभिन्न इमारतें मौजूद हैं अधिकांश मकानों में उन के निर्माण काल की ही मेजें पलंग, कुरसियां आदि रखी हैं विभिन्न प्रदेशों की तरहतरह की पोशाकें भी यहां रखी गई हैं

इस संग्रहालय में एक चिड़ियाघर भी है जिस में केवल स्वीडन से बाहर के पशुपक्षी रखे गए हैं पूरा संग्रहालय इस प्रकार बनाया गया है कि प्राकृतिक शोभा के साथ वह एकरूप हो गया है कहीं भी कृत्रिमता नहीं आ पाई है

स्टाकहोम की सब से सुंदर इमारत है टाउन हाल यह आधुनिक वास्तुकला का एक बहुत ही अच्छा नमूना है और संसार भर में प्रसिद्ध है। कहते हैं कि इस के निर्माण में बारह वर्ष लगे थे यह इमारत मालार झील के किनारे एक तिकोने प्लाट पर बनाई गई है काले पत्थर से बने इस के खंभों और मेहराबों का प्रतिबिंब झील के जल में देखते ही बनता है इस की छत पर खड़े हो कर उत्तरी यूरोप के वेनिस—स्टाकहोम—को देखा जा सकता है देखते समय घुमावदार गलियों, चमकती नहरों, हरभरे पार्कों, नीली ट्रामों, रंगबिरंगी छतरियों वाली दुकानों और नौकाओं का दृश्य बड़ा ही अद्भुत लगता है

नारविक जाने के लिए मैं ने पूर्वी तटीय मार्ग चुना मतलब यह कि स्टाकहोम से बोदेन होते हुए किरूना के रास्ते नारविक जाने का मार्ग अपनाया तीसरे दर्जे का टिकट ले कर २३ अप्रैल को दिन के चार बजे ट्रेन में सवार हुआ यहां के तीसरे दर्जे का किराया हमारे यहां के पहले दर्जे के किराए के बराबर है पर उस में आराम और सुविधाएं हमारे यहां के पहले दर्जे के मुकाबले कहीं ज्यादा हैं

पूरी ट्रेन में गैस के नलों द्वारा ताप को नियंत्रित करने की व्यवस्था है घंटी बजाते ही ट्रेन का एक कर्मचारी हाजिर हो जाता है रात को सोने के लिए

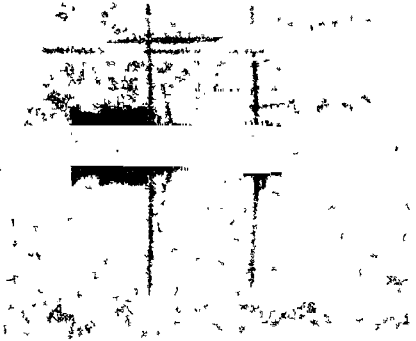

जहा आधीरात को भी सूय चमकता है

बिस्तर तैयार मिलता हं और साथ ही तौलिया तथा पानी का गिलास भी मिलता है पश्चिमी देशों में कहीं भी बिस्तर ढोने की मुसीबत नहीं उठानी पडती क्योकि जहाज, हवाई जहाज, रेल आदि की यात्रा में या होटल में, जहा भी ठहरिए, साफसुथरा बिस्तर तैयार मिलता है

ट्रेन में भोजन आदि की व्यवस्था भी थी   निरामिष होने के बावजूद मुझे असुविधा नहीं हुई   दूध, पावरोटी और मक्खन पर्याप्त मात्रा में मिल गया ट्रेन पूर्वी तट के समानातर बोदेन तक जाती थी

स्वीडन के इस भाग में बहुत सुदर प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते हं   इस प्रदश में घने जगल हं   वनो की उपज तथा शिल्पोद्योग से यह सपन्न बन गया है इस अचल में नदिया और बदरगाह भी हं

पश्चिम में नारवे के पर्वतो से नदिया निकल कर स्वीडन के आरपार पूर्व में बोथानिया की खाडी में गिरती ह   इन नदियो में काटछाट कर लट्ठे बहा दिए जाते हे जो बहते हुए कारखानो में पहुचते ह   यहा इन्हें काट कर और इन का सामान बना कर निर्यात के लिए बदरगाहो में भेज दिया जाता है

लकडी का उपयोग कागज बनान में भी होता हं   स्वीडन का कागज ससार भर में प्रसिद्ध हं—यहा नदियो के प्रवाह को रोक कर विद्युतशक्ति का भी उत्पादन किया जाता है, जिस से बडेबडे कारखाने चलत हं

स्वीडन वासियों पर प्रकृति की बडी कृपा हं स्वीडिश भी प्रकृति के प्रति अनुदार नहीं हे   वे जगल में पेडो पर आरे चलाते ह लेकिन साथसाथ उन के विकास को भी व्यवस्था करते हं   वे नदियो के प्रवाह को बाध बना कर रोकत हं पर इस बात का भी खयाल रखते ह कि बाध के कारण आगे चल कर खेती या जमीन पर प्रतिकूल

प्रभाव न पडे. यही कारण है कि आज स्वीडन कागज और लकड़ी के उद्योग में ससार के अग्रणी देशो में गिना जाता है. साथ ही यह कृषि के क्षेत्र में भी उन्नति की ओर बढ़ रहा है.

स्वीडन को प्रकृति से एक और वरदान मिला है यह वरदान है बहुत अच्छे किस्म के लोहे का. यूरोप में सब से अधिक लोहा इसी देश में होता है. यहा लोहे की खानें मुख्यतः दो स्थानों में है—मध्यभाग में तथा उत्तर के लैपलैंड में स्वीडन प्राचीन काल से ही लोहे के उद्योग में अन्य देशों से बढ़ कर रहा है. आज भी अच्छे इस्पात के लिए स्वीडन का लोहा प्रसिद्ध है. स्वीडन को समृद्ध बनाने और विदेशों से धन बटोर कर देने में, कागज और लकड़ी की भांति, लोहा भी मदद कर रहा है.

यात्रा काफी आरामदेह थी. शीशे की खिड़कियों पर काले परदे बाहर की रोशनी से बचाव कर रहे थे इसलिए नींद में बाधा नहीं पडी सुबह आठ बजे नींद खुली.

रात भर में लगभग ७०० मील उत्तर की ओर आ गया था याद आया, स्वीडन की ट्रेनें अपनी तेजरफ्तारी के लिए प्रसिद्ध हैं. सुबह की ठडी हवा में ताजगी थी एक अपूर्व स्फूर्ति का अनुभव हुआ झटपट तैयार हो गया शीशे से काले परदे को हटा कर बाहर का दृश्य देखने लगा

बाहर तेज धूप छिटक रही थी और धरती अप्रैल के उस अतिम सप्ताह में भी बरफीली चादर से ढकी नजर आ रही थी. कभीकभी छोटछोटे गाव आखों के सामने आ कर तुरत ओझल हो जाते थे

ट्रेन नौ बजे बोदेन पहुची उत्तरी स्वीडन का यह बड़ा रेलवे जकशन है साथ ही सैनिक केद्र और एक औद्योगिक नगर भी है. स्टाकहोम से यहा तक यह ट्रेन एक्सप्रेस रहती है पर इस से आगे पैसेंजर हो जाती है क्योंकि उत्तर के इस प्रदेश में यात्रियों का आनाजाना कम हो जाता है. यहा से उत्तरपश्चिम की ओर किरूना होते हुए नारविक तथा दक्षिणपूर्व की ओर लुएला के बदरगाह पर पहुचा जा सकता है

बोदेन से ट्रेन लगभग साठ मील ही चली होगी कि सफेद पत्थरो की बनी एक सीमारेखा दिखाई पडी मन में प्रश्न उठा, 'स्वीडन की सीमा का अत यहा तो नहीं होना चाहिए, फिर यह सीमारेखा यहा कैसे?' इतने में ही एक बोर्ड आखों के सामने से गुजरा अगरेजी तथा अन्य दोतीन भाषाओं में उस पर लिखा था—उत्तरी वृत्त. मुझे खुशी हुई कि मैं अब ध्रुवाचलीय प्रदेश लैपलैंड में पहुच गया हू, जहा दो महीने सूर्यास्त होता ही नहीं

किरूना में लैपों की एक अच्छी सराय है, जहा वे काफी और शराब के प्यालो पर जुटते हैं मैं भी घूमताघामता वहीं पहुचा बड़ी इच्छा थी इन्हें पास से देखनेसमझने की वहीं एक शिक्षित लैप से भेंट हो गई वह थोडीबहुत अगरेजी जानता था इसी के माध्यम से बातें कर के लैपों के बारे में काफी जानकारी हासिल की.

लैप एक आदिम जाति है. लैपों की अपनी एक सभ्यता है साधारणत

रेगिस्तान में जैसे ऊंट, बरफानी प्रदेश में वैसे ही रेंडियर

प्रत्येक लैंप तीन या कम से कम दो भाषाएं तो जानता ही है. लैंपो में कई ऐसे हैं जो डाक्टर हैं, स्कूल-कालिजो और विश्व-विद्यालयो में अध्यापक हैं. स्वीडन की सरकार ने लैंपो को समान नागरिक अधिकार दिया है. उन की शिक्षा-दीक्षा की समुचित व्यवस्था है. अपनी बात और अपने लोगों के प्रति जिस प्रकार का लगाव हम लोगो में रहता है उसी प्रकार का लैंपो में भी है. भले ही कोई लैंप डाक्टर, इंजीनियर या प्रोफेसर बन जाए, स्वजनो का मोह उसे बराबर खींचता रहता है. बहुत से ऐसे लैंप भी हैं जो आधुनिकता से पिंड छुड़ा कर अपने उसी कठोर जीवन में चले आए हैं और सचमुच उस में वे सुखशांति और आराम का अनुभव करते हैं.

रेगिस्तान में जैसे ऊंट सब से बड़ी संपत्ति और जहाज है, वैसे ही बरफानी प्रदेश में रेंडियर है. यह हमारे देश के बारहसिंगे जैसा होता है. प्राचीन काल में जिस प्रकार गाय की महत्ता हमारे जीवन के विविध अंगो में थी, ठीक उसी प्रकार रेंडियर की महत्ता लैंप जीवन में है. इन की आर्थिक और सामाजिक स्थिति इसी के सहारे टिकी हुई है.

बरफानी प्रदेश का यह पशु बरफ के बीच जमने वाली काई जैसी घास खा कर ही जीवित रहता है. लैंपो को इस से अपना आहार और दूध प्राप्त होता है. लैंप इस का मांस तो खाते ही हैं, इस की हड्डियो, चर्बी, मज्जा, तंतु, रोएं और चमड़े तक को काम में ले आते हैं. इस के सींग और हड्डियो से हथियार, औजार और दस्तकारी की कलापूर्ण वस्तुएं बनाई जाती हैं. मछली मारने के लिए इस की खाल का उपयोग नाव बनाने में किया जाता है अपने तंबू सीने के लिए लैंप इस की अंतड़ियो तक का धागे के रूप में उपयोग करते हैं. तंबुओ को रेंडियर ढोते हैं.

बाजार से रात के भोजन के लिए मुझे दालचावल, सब्जियां लेनी थीं. सौदा खरीदते समय मैं ने देखा कि शहर में सभी सुविधाएं अन्य आधुनिक शहरो की तरह उपलब्ध हैं. वैसे तो अंगरेजी समझने वाले मिल ही जाते हैं पर मुझे कहींकहीं दिक्कत भी महसूस हुई. ऐसे वक्त सोचने लगा कि स्वेड और अंगरेजी भाषा का

स्रोत तो एक ही भाषा से है आपस में बोल भले ही न सके पर इन में क्या इतना अन्तर है कि परस्पर समझना भी कठिन है? संस्कृत से निकली हमारी हिंदी तो अपनी बहनों गुजराती, बंगला, मराठी, असमी वगैरह से इतनी मिलतीजुलती है कि इन के बोलने वाले की भाषा हम बोल चाहे न सके पर समझ तो लेते ही हैं

मैं नारविक जाने वाली ट्रेन में बैठा था किरूना पीछे छूटता जा रहा था सोच रहा था, 'अच्छा हुआ कि यहां के लोग गुटबंदी के चक्कर में नहीं फंसे फंस जाते तो क्या पता आज अन्य देशों की भांति इन्हें भी अमरीका या रूस का मुंह ताकना पड़ता'

१० बजे रात को नारविक पहुंचा नारवे के उत्तरी भाग में यह व्यापार का प्रमुख केंद्र तथा बंदरगाह है ध्रुवाचलीय प्रदेश में होने पर भी यह बंदरगाह बारहों महीने जहाजों के आनेजाने के लिए खुला रहता है इस का कारण एटलांटिक महासागर के बीच से बहती हुई वह उष्ण धारा है जिसे 'गल्फ स्ट्रीम' कहते हैं वह यहां बरफ जमने नहीं देती—नारविक बंदरगाह से नारवे अपने यहां तथा स्वीडन का लोहे का सामान और लकड़ी विदेशों को निर्यात करता है

इस नगर को पिछले महायुद्ध में जर्मनों ने बुरी तरह तहसनहस कर दिया था लेकिन अब नारवे के लोगों के धैर्य और अध्यवसाय के कारण यह फिर से उठ खड़ा हुआ है यही वजह है कि अच्छेअच्छे होटल तथा यातायात की सारी सुविधाएं यहां बड़ी आसानी से हासिल हो जाती हैं

निशासूर्य के दर्शन कराने के लिए स्वीडन तथा नारवे दोनों ही देशों की ट्रेनें, हवाई जहाज, बस आदि नियमित रूप से राजधानी से ध्रुवाचल तक आयाजाया करती हैं हवाई जहाज से तो ६ घंटे में ही वापस लौटा जा सकता है स्टाकहोम के हवाई अड्डे से १० बजे रात को हवाई जहाज रवाना होता है उत्तर की ओर बढ़ने पर रात के समय आप को अंधेरा मिलने के बजाए उजाला मिलता जाएगा ध्रुवाचल में आप को निशासूर्य के दर्शन करा कर यह साढ़े तीन बजे स्टाकहोम वापस ले जाता है

मैं रात के समय नारविक पहुंचा था लेकिन वहां दिन की तरह प्रकाश था

दूसरे दिन सुबह की ट्रेन से नारवे की राजधानी ओसलो के लिए रवाना हो गया जितना मनोहर दृश्य मुझे किरूना और नारविक के बीच सफर में देखने को मिला था, उतना विदेशों में और कहीं नहीं मिला रास्ते में तोरनेत्रास्क झील का पानी जम कर चट्टान सा बन गया था लैप मछुए इस पर खेमे डाल कर रह रहे थे यहीं जीवन में पहली बार निशासूर्य का आलोक देखा सूर्य यहां मई से जुलाई तक अस्त नहीं होता अपने यहां सूर्यास्त के घंटे भर पहले सूर्य में जैसी आभा रहती है वैसी ही आभा रात को १२ बजे मुझे दिखाई पड़ी

क्षितिज से कुछ ऊपर को उठा हुआ वह मुसकरा रहा था उस के दर्शन से ही मेरा शरीर पुलकित हो उठा मैं समझ न पाया कि उस प्रकाशपुंज को क्या कहूं—दिवाकर, निशाकर या प्रभाकर!

डेनमार्क

जहां राजा के साए में वास्तविक जनतंत्र पनप रहा है...

डेनमार्क स्कंडिनेविया के देशों में सब से छोटा है. कुछ वर्ष पहले तक इस की प्रसिद्धि 'दूधमक्खन का देश' के नाम से थी. आज भी यह दूध, मक्खन, पनीर, अंडे, मांस इत्यादि के उत्पादन के लिए संसार के अग्रणी देशों में माना जाता है. इस के अलावा पिछले महायुद्ध के बाद जब से इस ने औद्योगीकरण की ओर ध्यान दिया है, यहां उद्योगधंधों का विकास भी द्रुत गति से हो रहा है. डीजल इंजन के बड़ेबड़े कारखाने, सीमेंट, केमिकल और कागज की मिलें भी पूरी सफलता के साथ उत्पादन कर रही हैं.

डेनमार्क का क्षेत्रफल १६,००० वर्ग मील है और आबादी सिर्फ ४६,००,०००. कृषि और पशुपालन यहां का मुख्य व्यवसाय सदियों से रहा है. यूरोप के इतिहास में डेनमार्क का विशेष स्थान रहा है. डेन और स्कंडिनेविया के 'वाइकिंग' प्रसिद्ध योद्धा माने जाते थे. चंगेजी और तैमूरी आंधियां स्थल पर चलती थीं तो डेन और वाइकिंगों का तूफानी हमला सागर से उठता हुआ उत्तरी यूरोप के तटों से टकराता था. बड़ेबड़े जहाजों पर हजारों की संख्या में ये हमला करते थे. इंगलैंड पर इन का आधिपत्य रहा है. उत्तरी यूरोप इन के नाम से कांप उठता था. अब युद्ध के तौरतरीके बदल गए हैं—न समुद्री जहाजी योद्धा रहे हैं, और न प्यादे और घुड़सवार ही. उन की जगह राकेट, एटम बम और हाइड्रोजन बमों ने ले ली है. डेनमार्क के लिए इस होड़ में हिस्सा लेना संभव नहीं था, इसलिए उस ने अपना ध्यान दूसरी तरफ लगाया और फलस्वरूप इस के कृषिजात द्रव्य विदेशों के बाजार पर छाए रहते हैं और इस से करोड़ों की आमदनी होती है.

डेनमार्क की अपनी प्रथम यात्रा में मैं अकेला ही गया था. उसी समय स्वीडन के उत्तरी भाग से हो कर फिनलैंड और नारविक भी गया था. विदेशों में चाहे जितने ही आकर्षक और दर्शनीय स्थान क्यों न हों, किंतु बिना साथी के मन नहीं लगता, जल्दी ही स्वदेश लौटने की इच्छा प्रबल हो उठती है. डेनिश अच्छे मेजबान होते हैं. अतिथियों के सत्कार के लिए सदैव तत्पर रहते हैं. अकेला या अनमना देखने पर पूछपूछ कर प्रेरणा देते हैं, प्रसन्न करना चाहते हैं. इन्हें बड़ा ख्याल रहता है कि विदेशी उन के देश के प्रति उदासीनता की भावना न रखें, क्योंकि इस का प्रभाव अन्य यात्रियों पर पड़ सकता है. अकेलापन अखर गया था. दो ही दिन रहा था वहां, पर लौटते समय 'फिर कभी' की भावना ले कर आया. इसी कारण

यूरोप भ्रमण के अवसर पर दूसरी बार यहां प्रभुदयालजी के साथ गया.

यूरोप भोगवादी है. यहां के देश अपनी स्थिति या अवस्था से संतुष्ट नहीं रहते पार्थिव लाभ के लिए सदैव यूरोपीय राष्ट्रों में होड़ सी लगी रहती है. ४६,००,००० की आबादी के इस छोटे से देश का निर्यात हमारे देश के निर्यात से ज्यादा है, जिस में अधिकांशतः मांस, मछली, अंडे और दूध की बनी चीजें हैं. चकित रह गया यह जान कर कि यहां औसत विदेशी व्यापार प्रति व्यक्ति ६,००० रुपए का है, जब कि हमारे देश का केवल ७० रुपए. इतने पर भी डेनमार्क को अपने पड़ोसी स्वीडन के समकक्ष होने की धुन है. इसी लिए कृषि और पशुपालन के अलावा आधुनिक उद्योगधंधों का भी वह विकास कर रहा है, साथसाथ पर्यटन उद्योग को भी बढ़ाना शुरू कर दिया है. सरकारी प्रोत्साहन से सुसज्जित नाइट क्लब और कैबरे खुलने लगे यही नहीं, मई से अगस्त तक टिवोली नाम का एक स्थायी कार्निवल भी बनाया गया सारे विश्व में इस की प्रसिद्धि हो गई है इस आकर्षण से दूरदूर से यात्री आया करते हैं.

सन १९६० में डेनमार्क में यात्रियों की संख्या १५,००,००० थी. इस प्रकार केवल पर्यटन उद्योग से उन्हें वार्षिक आय एक अरब दस करोड़ की हुई अर्थात हमारे यहा के प्रति व्यक्ति की आय से ४०० गुनी अधिक

दूसरी यात्रा में यहां आया तो पहले से होटल की बुकिंग नहीं थी, क्योंकि इस के बाद हमारा प्रोग्राम पूर्वी यूरोपीय देशो में जाने का था. लेकिन हमारे साथियो ने कहा कि गरीबी और अभाव तो भारत में ही नित्य देखते है, फिर क्यो नहीं कुछ दिन सुखी और समृद्ध देशो में रहे. अतः वहा की यात्रा रद्द कर हम यहा आ गए जून का महीना था. फिर होटल खाली कहा? किसी प्रकार बिना बाथरूम वाली एक छोटी सी कोठरी मिल गई, जिस में पलग की जगह दो सोफे थे. यात्रियो की भीड इतनी थी कि होटलो के किराए भी बढ़ा दिए गए थे. हमारे यहा मेले के दिनो में मरियल टट्टू के तागे भी महगे हो जाते हैं, वही हालत यहा होटलो की थी

फिनलैंड और स्वीडन में भी हम ने दूधमक्खन की प्रचुरता देखी थी, पर यहा की तो बात ही निराली थी कहा जाता है कि हमारे देश में कभी दूध की नदिया बहती थीं. मगर महाभारत में यह भी मिलता है कि बालक अश्वत्थामा को दूध की जगह आटे का घोल पिला कर भुलावा दिया गया था. गरीब मा दूध नहीं दे सकी थी प्रचुरता या अभाव—किसे सही माना जाए?

जो भी हो, डेनमार्क में हम ने दूध की नदी या नाले तो बहते नहीं देखे, हा, यह जरूर देखने में आया कि अधिकाश दुकानो में दूध, मक्खन, पनीर और बडेबडे अडे बिकने के लिए रखे हैं, चाहे वह दवा की दुकान हो या किरानेगल्ले की नानाप्रकार और आकार के मास भी सजा कर रखे गए थे. शीत प्रधान देश होने के कारण इन में बदबू नहीं आती थी.

हम इन्हे देख कर यह सोचते थे कि किसी समय हमारे देश के किसानो के पास सैकडोहजारो गाए रहती थीं. आज भी हमारे देश में साढ़े नौ करोड से भी अधिक दुधारू गाए और भैसे हैं. अधिकाश प्रातो में गोवध बद है, फिर भी न तो गोरक्षा हो पा रही है और न गोसवर्धन दूध का अभाव दिन प्रति दिन बढ़ता जा

कोपनहेगन के व्यस्त बाजार वस्टर ब्रोगेड रात को न्योन साइन में चमचमाता हुआ

रहा है. गोवंश का ह्रास हो रहा है. हमारे यहां प्रति व्यक्ति की औसत चार औंस दूध प्रति दिन है. इस की तुलना में डेनमार्क में १४८ औंस दूध का दैनिक औसत है. हम अपने बच्चो को ताजा दूध नहीं दे पाते. अमरीका और स्वीडन से सहायतास्वरूप आए हुए मिल्क पाउडर स्कूलो और अस्पतालो में थोडी बहुत मात्रा में देते हैं. आज २० वर्षों की स्वतन्त्रता के बाद भी हमारी भारत माता लाखो अश्वत्थामाओ को दूध की तो बात दूर रही आटे का घोल भी पर्याप्त मात्रा में देने में असमर्थ है. कैसी विडंबना है!

हमारी गायो की औसत दूध देने की क्षमता प्रति व्यक्ति केवल ४५० पौंड है, जब कि इन देशो में जहा गाय माता स्वरूप नहीं है बल्कि उसे जानवर समझा जाता है, दूध की उपज औसत ६००० से ७,००० पौंड प्रति व्यक्ति है. पश्चिम के इन देशो में गोवध पर प्रतिबंध नहीं है बल्कि यहा से अरबो रुपयो का गोमास निर्यात किया जाता है, फिर भी दूध की धारा क्षीण नहीं होती स्पष्ट है कि हमारी गोभक्ति में सेवाभाव कम है, दिखावा ज्यादा

एक स्टोर से दो बोतल ठंडा दूध लिया. शायद एक किलो था. दो क्रोनर (लगभग दो रुपए) दिए. मैं ने सोचा 'जब भारत में सवा रुपए किलो है तो इस धनी देश में ज्यादा ही दाम होगा' हमें ताज्जुब हुआ जब डेढ क्रोनर वापस मिले यानी आधा रुपया एक किलो के दाम लगे. बाद में यह पता चला कि यह तो खुदरा का भाव था, थोक में तो इस का आधा तक नहीं है. हमें बताया गया कि इस छोटे से देश में, जिस का क्षेत्रफल हमारे राजस्थान का केवल १२ प्रति शत है, ३५,००,००० गाएं और ७५,००,००० सुअर हैं. सन १९६३ में १४,२५,००,००० मन दूध ७५,००,००० मन मक्खन तथा पनीर और २,८०,००,००० मन मास का उत्पादन डेनमार्क में हुआ. यही हाल सेब, अंगूर और प्लम्स जैसे फलों का था. मैंने प्रभुदयालजी से कहा कि यहा चावल और रोटी खाएं ही क्यों, जब कि ऐसी उत्तम और उपादेय वस्तुएं इतनी सस्ती मिलती हैं. वह हस कर कहने लगे कि एकदो दिन

में ही फल और दूध से मन ऊब जाएगा   आखिर पेट तो अन्न से ही भरेगा

कोपनहेगन डेनमार्क की राजधानी है   यहा समूचे देश की लगभग चौथाई आबादी रहती है—यानी, यहां की जनसख्या करीब दस लाख है और गरमी के दिनो में तो राजधानी में लाखों की सख्या में बाहर से विदेशों के यात्री आ जाते हैं इसलिए हम जब यहां पहुचे तो सडको पर चहलपहल खूब बढी हुई थी   अमरीका के अलावा दक्षिणी यूरोप के देशों से आए हुए लोग काफी सख्या में दिखाई पडे अरब के शेख भी अमामे-चोग पहने हुए बडी शानशौकत से घूम रहे थे   इन के आसपास गोरी स्त्रियो का मजमा लगा रहता था

आजकल सभी देशो में टूरिस्ट आफिस हैं   इन कार्यालयों में शहर के दर्शनीय स्थानों के विवरण की पुस्तिका, नक्शे के साथ बिना कीमत में मिल जाती है   हम जहा भी गए, इसे जरूर ले लिया करते थे   फिर भी, बिना गाइड के अथवा किसी यात्री मित्र के बहुत सी जिज्ञासा की पूर्ति नहीं हो पाती   रूस में हम सरकारी मेहमान थे इसलिए वहां हमें निशुल्क गाइड मिल गए थे, लेकिन अन्य देशो में ये महगे पडते हैं   इसलिए हम अगरेजी जानने वाले किसी यात्री से दोस्ती कर लेते थे जो हर तरह की जानकारी और मदद देने को हमेशा उत्सुक रहते थे   विदेशो में सिवा अगरेजों के अन्य देशों के यात्री आपस में मित्रता करने के लिए इच्छुक रहते हैं

अपने होटल लौट कर हम ने एक डच दपति से मित्रता की   यद्यपि हालैंड भी ठडा देश है फिर भी इन में भ्रमण करने का चाव है   अवकाश मिलने पर ये दूसरे देशो की यात्रा पर निकल जाते हैं   इन से पता चला कि अमरीका भले ही विश्व का सब से धनी देश है लेकिन ईराकी और अरब देशों के मुकाबले में अमरीकी धनिक पैसे लुटाने में शायद ही टिक सकें   ये लाखो रुपए एक यात्रा में खर्च कर देते हैं   वेनिस या पेरिस में कुछ दिन के लिए रह कर वहीं से पाचसात प्रसिद्ध नर्तकी या माडल गर्ल्स को साथ ले आते हैं   डीलक्स होटलो में बडेबडे फ्लैट किराए पर ले लेते हैं, क्योंकि इन के मुसाफिरों और साथी लडकियों की सख्या बीसतीस तक पहुच जाती है   उन्होंने हसते हुए कहा कि सच पूछिए तो इन्हीं लोगो के कारण हम जैसो को होटलो में कमरे मिलने मुश्किल हो जाते हैं

मैंने पेरिस की अपनी पिछली यात्रा में इन की शाहखर्ची को एक नाइटक्लब में देखा था   इन वर्षों में तेल की रायल्टी के नए एग्रीमेंटों से इन की आमदनी प्रति वर्ष अरबों रुपए ज्यादा हो गई है, इसलिए ऐयाशी और मौजमस्ती में उस बिन मेहनत की कमाई के रुपयों में से अगर कुछ हिस्सा खर्च भी कर डालें तो ताज्जुब ही क्या!   हमारे राजा और नवाब भी तो यही करते थे   इन अरबो में शारीरिक क्षमता कुछ विशेष ढग की होती है जो यूरोप तथा अमरीका के लोगो में साधारण तया नहीं रहती   यह भी एक आकर्षण रहता है, जिस कारण सभ्रात एव धनी घरो की शौकीन यूरोपीय स्त्रिया भी इन के साथ दूसर देशो की यात्रा पर चली जाती हैं   पश्चिम के समाज की वह स्वच्छदता हमारे भारतीय आचारविचार से तो अनैतिक और निम्नस्तरीय रुचि की कही जाएगी   पता नहीं इन देशो के विचारक इस ओर कुछ सोचते हैं, या नहीं

शहर की सडको पर या सार्वजनिक पार्कों में हम ने घूमते हुए लक्ष्य किया कि

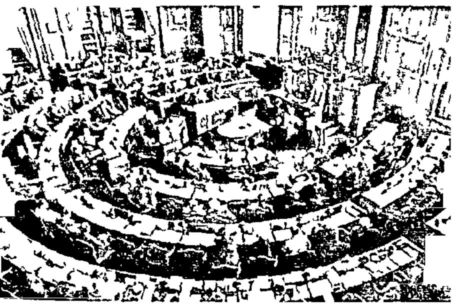

पब्लिक गैलरी से फोकेटिंग की झांकी

यहा की स्त्रिया लबी और मजबूत होती है. डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन और फिनलंड में सभी जगह हम ने लबी और तगडी स्त्रियां देखीं. रग गोरा जरूर है पर रूखापन लिए और इन के चेहरे और होठों पर हलके रोए भी होते हैं दक्षिण यरोप, इटली, ग्रीस, टर्की आदि की स्त्रियों के चेहरे पर इतना गोरापन नहीं रहता लेकिन इन में लावण्य अधिक होता है छरहरे बदन की होने के कारण ये उत्तरी स्त्रियो से अधिक सुंदर और आकर्षक लगती है

फिनलंड और स्वीडन हो कर हम डेनमार्क आए थे इसलिए यहा का वातावरण भी एक जैसा ही लग रहा था. हमारे यहा कलकत्ता से बनारस की यात्रा की दूरी या समय में फिनलंड, स्वीडन और डेनमार्क तीनों आ जाते है अर्थात्, हमारे प्रातों से भी इन का क्षेत्रफल छोटा है फिर भी है तो ये अलगअलग देश—भाषा भी इन की अपनीअपनी है.

होटलों में पहले से कह देने पर निरामिष (भोजन) तैयार कर देते है फिर भी हमारे भारतीय व्यंजनों में जो स्वाद मिलता है और चन-से-जो तृप्ति होती है, वह हमें विदेशों के अच्छे से अच्छे या बडे से बडे रेस्तोरा या होटलों में नहीं हुई भारत से हम कई प्रकार के अचार, चिवड़े और मिठाइया साथ ले आए थे, इसलिए स्वाद बदलने के लिए बीचबीच में इन्हें खा लिया करते थे.

डेनमार्क का कुछ भाग हालंड की तरह समुद्र से नीचा है इसलिए समुद्री पानी रोकने के लिए बडेबडे डाइक (बाध) बनाए गए है इस में सदेह नहीं कि यूरोपीय लोगो में उद्यम के प्रति विशेष उत्साह रहता है जहां हम प्रकृति के प्रकोप के आगे विवश हो जाते है, बाढ़ से हमारी लाखो एकड़ जमीन प्रति वर्ष परती रह जाती है वहा वे उस से जूझते है और उस की सीमा बाध देते है हमें हमारे कच्छ के रन का ख्याल आ गया. यदि हम सागर के खारे पानी को यहा आने से रोक पाते तो शायद इस बहुत बडे भूमि भाग को उपयोग में ले आते पर अभी तो राजस्थान के बजर अचल को ही नहीं सभाल पाए है

द्वितीय महायुद्ध में दूसरे देशों की तरह डेनमार्क भी चार वर्ष तक जरमनो के नाजी शासन के अधीन रहा जैसा प्रत्येक विदेशी शासक का रवैया रहता है, वैसा ही जरमनों ने किया यहा से दूध, मक्खन, पनीर और मास जरमनी भेजते रहे और बेचारे डेन आधे पेट रहते जरमनी की हार के बाद फिर यहां के राजा के तत्वावधान में जनतत्रीय शासन हो गया, जो अब तक है साम्यवादी दल का तो यहा अस्तित्व ही नहीं है यहा की ससद के १७९ सदस्यों में केवल ११ ऐसे हैं जिन के विचार कम्युनिस्टों से कुछ मिलते-जुलते हैं सैनिक शिक्षा प्रत्येक के लिए अनिवार्य है १८ वर्ष की उमर होने पर हरेक नागरिक को १६ महीने के लिए फौज में शामिल होना जरूरी है

छोटा सा देश है, पर आबादी के अनुपात से पैदावार कई गुनी है इसलिए तैयार माल के लिए इसे बाहर बाजार ढूढ़ना पडता है, लेकिन वहा भी पहले से जमे हुए मिलते हैं अमरीका, पश्चिम जरमनी और फ्रास उन के सामने इस की क्या गिनती? फिर भी यह देश अपने यहा उद्योगधधों को बढावा देने के लिए कच्चे माल का आयात और उस के बदले में कृषिजात वस्तुओ का निर्यात कर के आर्थिक स्थिति का सतुलन ठीक रखता है इस कारण इस का सिक्का विदेशों के खुले बाजारो में भी निर्धारित दर में चलता है हमारा देश इस से सौ गुना बडा है हमारा आयातनिर्यात भी काफी है, पर हमारी आर्थिक दशा असतुलित है और व्यवस्था सुदृढ़ नहीं इस कारण से हमारी मुद्रा निर्धारित दर से नीचे मूल्य पर चलती है हम ने स्विस बैंक में भारतीय सिक्का भुनाया तो एक रुपए के सात आने ही मिले हमारे लिए यह कम ग्लानि की बात नहीं सन १९५६ से १९६१ तक के पाच वर्षों में डेनमार्क की आय की वृद्धि ९ ४ प्रति शत प्रति वर्ष बढ़ी जब कि हमारी लगभग तीन प्रति शत ही वहा प्रति व्यक्ति की औसत वार्षिक आमदनी है करीब ग्यारह हजार रुपयो की, जब कि हमारे यहा तीन सौ से साढ़े तीन सौ रुपयो तक की वहा पशुजात वस्तुओ के अलावा कृषि की उपज भी बहुत है सन १९६३ में इस छोटे से देश में अनाज का उत्पादन ५५,००,००० टन था, यानी प्रति व्यक्ति ३५ मन चीनी का उत्पादन हुआ २६ लाख टन मैं मन ही मन इन आकडो की तुलना में अपने देश की स्थिति रख रहा था मेरे सामने बिहार, उडीसा, पूर्वी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के सूखे बजर खेत और मरियल पशुओ के चित्र खिच जाते थे

सहकारी व्यवस्था में डेनमार्क बेजोड़ है प्रत्येक किसान यहा किसी न किसी सहकारी समिति का सदस्य है वह अपना यहा का दूध, पनीर, मक्खन, अडे और मास इन्हीं सहकारी समितियों के माध्यम से बचता है इस नन्हे से देश में इस ढग की २,००० समितियां है, जिन के ५,००,००० सदस्य हैं इन की वार्षिक बिक्री की राशि है करीब एक अरब पैंतीस करोड रुपए हमारे यहां भी स्वाधीनता के बाद सहकारी समितियों की बाढ सी आई थी लेकिन अधिकांश में बेईमानी हुई और गरीब किसानों का रुपया सचालकों की जेबो में चला गया

हमें यह जान कर आश्चर्य हुआ कि यहां करीब एक सौ दैनिक या साप्ताहिक पत्रपत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं इन के पाठकों की सख्या २५,००,००० है—यानी, प्रत्येक घर में औसतन दो पत्रपत्रिकाएं जाती हैं इन के अधिकार में

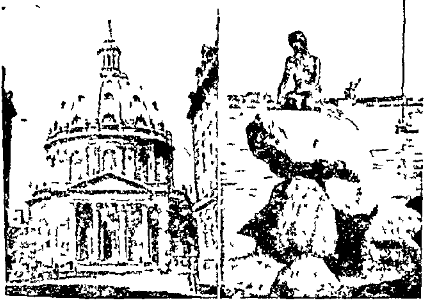

बाएं डेनमार्क का मार्बल का बना चर्च दाएं लिटल मेरमेड मूर्ति
जिसका हाल ही में सिर काट कर चोरी कर लिया गया था

अपने से पचास गुना बड़ा विश्व का सब से बृहद् द्वीप ग्रीनलैंड है, जहां की आबादी है केवल चालीस हजार—अर्थात् यहां २० मील पर एक व्यक्ति रहता है

हम अब तक यह समझते थे कि शारीरिक क्षमता को कायम रखने के लिए मिलाजुला भोजन आवश्यक है, लेकिन यहां पता चला कि ग्रीनलैंड के निवासी केवल मछली और रेंडियर (हिरण की एक जाति) के मांस पर जीवित रहते हैं यहां अन्न और सब्जी उपजती ही नहीं पिछले कुछ वर्षों से स्विस हवाई जहाज कंपनी ने ग्रीनलैंड की यात्रा की सुविधा कर दी है इसलिए, कुछ समय के लिए ही सही, यहां आ कर एक नई दुनिया देखने के लिए यात्री आया करते हैं सर्दी यहां इतनी है कि थूक और मूत्र जमीन पर गिरने के पहले ही बर्फ में बदल जाता है

कोपनहेगन के टिवोली गार्डन में सैकड़ों की संख्या में अमरीकी यात्रियों का समूह देखने में आया इन में अधिकांश बूढ़ी औरतें थीं बच्चों की तरह आग्रह से कार्निवल घूमघूम कर देख रही थीं इन के साथ के अधिकांश मर्द ग्रीनलैंड घूमने गए थे या कैबरे में नाच रहे थे हमारे डच मित्र ने बताया कि अमरीका में सैकड़ों यात्री क्लब हैं, जिन को यूरोप या विश्व भ्रमण का मौका मिल जाता है ये एक साथ बड़ी संख्या में आते हैं, इसलिए हवाई जहाज के किराए और होटलों के चार्ज में भी सुविधा रहती है

दूसरे देशों की तरह कोपनहेगन में भी नाइट क्लब और कैबरे बहुत हैं, लेकिन प्रमुख आकर्षण है टिवोली गार्डन यहां तबियत इतनी बहल जाती है कि इसे 'उत्तरी यूरोप का पेरिस' कहते हैं, लेकिन डेनिश इसे सुन कर यात्रियों से बनावटी गुस्से में कहते हैं, 'पेरिस दक्षिणी यूरोप का कोपनहेगेन है'

डेनमार्क में हमें दो ही दिन ठहरना था, इसलिए हम ने रात्रि में टिवोली गार्डन देखने का कार्यक्रम बना लिया था रात का भोजन जल्दी कर के

टिवोली चले गए और आधी रात तक वहां घूमते रहे टिवोली कार्निवल के सचालन का खर्च इतना बडा है कि केवल १ मई से १५ सितबर अर्थात साढे चार महीने ही यह खुला रहता है, और यात्रियो की भीड इतनी हो जाती है कि इस समय कोपेनहेगन की आबादी सवाई से भी अधिक हो जाती है टिवोली के नाम की नकल में दूसरे देशो ने भी कार्निवल बनाए पर ऐसी साजसज्जा, आकर्षण और खेलतमाशे वे न जुटा सके और न उन्हें इतनी प्रसिद्धि ही मिल पाई टिवोली का क्षेत्रफल करीब साढ़ेआठ लाख वर्ग फुट है इतने खेलतमाशे और मनोरजन यहां एक जगह मिल जाते हैं कि न तो मन ऊबता है और न दूसरी जगह जाने की तबियत होती है

सब से पहले तो हम ने यहां पटाखो और फुलझडियों के खेल देखे यू तो भारत में भी दिवाली पर तरहतरह की रोशनी और पटाखो से खेल करते हैं कलकत्ते में छातू बाबू के बाजार में दिवाली पर होने वाली मशहूर पटाखेबाजी और आतिशबाजी देखी थी लेकिन यहां इन का कुछ और ही समा था पाचछ फुट लबे पटाखे देखे बत्ती भी उसी अनुपात से लबी बडी सावधानी से आग लगा दी गई पहले तो बडे जोरों का धमाका हुआ फिर आसमान में जा कर रगबिरगी रोशनी के बीच से छोटेछोटे अनेक पक्षी निकलते दिखाई पडे ये इतने स्वाभाविक बने थे कि पता नहीं चलता था कि ये कागज के बने हैं कारीगरी देख कर तबियत खुश हो गई देखतेदेखते कहीं हवाई जहाज निकला तो कहीं पैराशूट से उतरते नकली आदमी, कई तरह की चीजें इन आतिशबाजियो से निकलती रहती हैं

हम ने सुना था कि लखनऊ के अतिम नवाब वाजिदअली शाह खासखास त्योहारो पर लाखो रुपए आतिशबाजी पर लुटाते थे पर यहा तो डेनिश रोज ही त्योहार और पर्व मनाते हैं

हम ने अपने यहा की नौटकी जैसा रूपक भी यहा देखा यहा इसे पेंटोमाइम कहते हैं वैसे यूरोप और अमरीका के रगमच की उन्नति इन वर्षों में काफी हुई है क्योकि स्टेज और प्रकाश की व्यवस्था में वैज्ञानिक साधनो का उपयोग किया जाता है, फिर भी बहुत से लोगों की रुचि पुराने ढग के रगमच और रूपकों के प्रति है हम ने देखा, यहा भी पुराने ढग की पोशाक पहने जोरजोर से बोलना और तलवार और भाले घुमाना बहुत बडा आकर्षण है

बीचबीच में विदूषको की उछलकूद देख कर लोग हसी से लोटपोट हो रहे थे खुले मैदान का थियेटर भी चल रहा था शायद शेक्सपियर के 'किंग लियर' का अभिनय हो रहा था सब से ज्यादा भीड 'फन फातर' में थी बच्चे तो यहा से हटने का नाम ही नहीं लेते थे तरहतरह की झाकिया, कुरसिया लगी बडीबडी चर्खिया बिजली से स्वत सचालित होती थीं आपस में जोरों की होड चल रही थी कि कौन ऊपर आया, कौन नीचे हमारे यहा भी मेले और प्रदर्शनिया लगती हैं पर उन में इतनी सजावट नहीं होती और न इतनी विविधता नाच, जुआ और शराब ही टिवोली गार्डन की एक खास विशेषता है

एक स्थान पर जो हम गए तो एक राक्षस मुह बाए खडा था हम ने भी पाच रुपए की १५ गेंदे लीं और राक्षस के खुले मुह का निशाना बनाया, पर हम एक भी गेंद उस में न फेंक सके बहुत से कीमती इनाम सजा कर रखे हुए थे जो

सफल होने पर मिलते. हमें तो एक पेंसिल भी हाथ न लगी.

बहुत से लोग सैंकड़ो रुपए विविध प्रकार के खेलों में दांव पर लगा रहे थे. कोई बंदूक का निशाना लगा रहा था तो कोई तीरकमान का. मगर निशाना बहुत कम सही बैठता था. फिर से दूने जोश से दांव लगते थे. ऐसे खेलो से सरकार को प्रति दिन लाखो रुपयों की आय होती रहती है.

रात के १२ बजे हम टियोली से लौटे. हजारो दर्शक वहां मिले. एक नौजवान भारतीय दंपति से भी भेंट हो गई—ये हनीमून मनाने आए थे, थोड़े दिनो पहले उन की शादी हुई थी. ये दिल खोल कर खर्च कर रहे थे. पता नहीं, उन्हें इतनी विदेशी मुद्रा कैसे मिली! नवयुवक भारत की किसी निर्यात कंपनी का डाइरेक्टर था और पत्नी शायद बीमारी का सर्टीफिकेट ले कर इलाज के बहाने से आई होगी. बड़े उत्साह से उन्होंने कहा, "ग्रीनलैंड अगले दिन जाएंगे." हम सोचने लगे, गरीब भारत का धन विदेशों में इस तरह लुटाने की अवैध या अनुचित सुविधा के कारण हमें विदेशी मुद्रा का कितना हिस्सा खोना पड़ता है!

अगले दिन सुबह का जलपान कर के हम वहां का प्राचीन राजप्रासाद देखने गए. प्राचीन कालीन पोशाक, अस्त्रशस्त्र, चित्र और कुछ जवाहरात देखने में आए. लंदन म्यूजियम या पेरिस के लुव्रे के मुकाबले में ये जंचे नहीं. जो भी हो, इतना जरूर है कि इन से पता चलता है कि यहां का राजवंश प्राचीन है और उत्तरी यूरोप में काफी प्रतिष्ठित.

११ बजे हमें लंदन के लिए रवाना होना था. होटल लौट कर अपना सामान लिया और एयरपोर्ट पहुचे. प्रभुदयालजी ने कहा, "किसी देश की समृद्धि उस के विस्तार पर नहीं, व्यवस्था पर निर्भर है. डेनमार्क, स्वीडन और स्विट्जरलैंड इस के अच्छे दृष्टांत हैं."

वियना

दो विश्वयुद्धों की लपटों से झुलसे हुए यूरोप का शांति केंद्र

वर्षों पहले मैं कलकत्ता की हैरिसन रोड पर जिस मकान में रहता था, उस के सामने ही एक राजवैद्य की बडी दुकान थी उन्होंने एक ही व्यक्ति की दो तरह की आदमकद तसवीर लगा रखी थी एक थी उस व्यक्ति की दवा खाने के पहले की तसवीर जिस में वह दुबलापतला ढाचा मात्र दिखाई देता था और दूसरी थी दवा खाने के बाद की जिस में वही व्यक्ति हट्टाकट्टा और गठीला पहलवान सा दिखाया गया था सैकडों व्यक्ति इस विज्ञापन से प्रभावित हो कर वैद्यजी से दवा खरीदते थे मैं ने खुद भी खरीदी और दूध सेवन भी किया लेकिन औरों का तो पता नहीं पर मैं पहलवान सा बन नहीं पाया

विज्ञापन की बहुत बडी महत्ता है इस की शक्ति को सब से ज्यादा अमरीका और यूरोप ने पहचाना है वहा के व्यावसायिक और औद्योगिक प्रतिष्ठानो के साथसाथ सरकार भी अरबों रुपए प्रति वर्ष विज्ञापन पर खर्च करती है पाश्चात्य डाक्टरो और वैज्ञानिकों के बारे में चर्चा सुना करता था वियना के डाक्टरों की तारीफ तो बहुत वर्षों से सुनता आ रहा था

हमारे यहां के राजेमहाराजे इलाज के लिए वहां जाते रहते थे हजारो-लाखो रुपए खर्च कर आते थे और तारीफ करते थकते नहीं थ पता नहीं इस में अपनी शान दिखाने की कामना अधिक थी या वहा के डाक्टरो की सुदक्षता शायद डाक्टर तो उतने योग्य लदन और ज्यूरिख में भी थ, मगर आस्ट्रिया की यह खूबी जरूर थी कि वहा गरम पानी के श्रोत थे जिन के बारे में आस्ट्रिया वालो ने प्रचार कर रखा था कि चर्म रोग या गठियावात के रोगी के लिए इन झरनो में नहाना अचूक इलाज है परिणामस्वरूप दुनिया के हर कोने से लोग वहा पहुचते और इस से आस्ट्रिया को विदेशी धन की आय होती हमारे यहां भी राजगृह के झरनो के बारे में लोगों की इसी प्रकार की धारणा ह किंतु हम ने आस्ट्रिया की भांति व्यापक प्रचार करने का प्रयास शायद ही कभी किया हो इसलिए विदेशी तो दूर अपने देशवासी भी बहुत कम वहा जाते ह

हम शाम के बाद वियना पहुचे थ होटल पहुचतेपहुचते रात के बारह बज गए मध्य यूरोप में होने पर भी यहा ठडक रहती ह, क्योंकि यह आल्पस पर्वत के अचल का देश है जुलाई के महीने में कलकत्ते की जनवरीफरवरी की सी सर्दी थी रात काफी हो चुकी थी भोजन की समस्या हल करने के लिए

तय किया कि साथ के चिवडे और खजूर काम में लाए जाए. मगर गरम दूध की जरूरत थी जिस से कि चिवडे की खीर बना सके. प्रभुदयालजी के मना करने पर भी मैं ओवरकोट पहन कर दूध की खोज में निकल पडा बाजार पहुचा. भाषा यहां जरमन बोली जाती है. विभिन्न देशो में सैर करते रहने के कारण सभी भाषाओ के आवश्यक शब्द याद हो गए थे. फिर अंतर्राष्ट्रीय भाषा सकेत से तो काम ले ही सकता था. बाजार में उस समय तक भी रेस्तरा खुले हुए थे. दूध की दोतीन बोतलें लीं. फलो के रस की भी दोएक बोतलें ले आया.

अचानक होटल और उस के रास्ते का नाम भूल गया. प्रात के दो ढाई बजे तक भटकता रहा. अपनी जल्दबाजी और जिद पर पछता रहा था. दोनो हाथो में बोतले, बरफानी सर्द हवा, अनजान शहर और बढती हुई रात का सूनापन. एक टैक्सी वाले को रोका. उसे किसी तरह समझाया कि यहा दो मील के इर्दगिर्द में जितने भी बडे होटल हैं, उन में चलो. इत्तफाक कुछ ऐसा हुआ कि पहले ही जिस होटल के सामने टैक्सी रुकी, वही हमारा होटल था भाग कर कमरे में पहुचा. भुवालकाजी और हिम्मतसिहकाजी काफी चिंतित हो उठे थे. सभ्य और सस्कृत शहर था इसलिए उचक्कों का डर नहीं था. कहीं ईस्ट लदन या वेनिस होता तो शायद मेरे बारे में ये दोनो साथी उस समय तक पुलिस को खबर दे देते. दोनों की कडवीमीठी सुननी पडी मुझे अपने ऊपर इतना अधिक आत्मविश्वास था कि उसे घमड कहा जा सकता है. ताशकद और मास्को के ग्रामीण अचल की सैर के बारे में अपनी बडाई कई बार उन से कर चुका था. अब वे मुझे आडे हाथो लेने लगे बहरहाल खीर और खजूर का प्रोग्राम रह गया हम तीनो सिर्फ दूध पी कर सो गए. बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई.

पिछली रात भटकते रहने के कारण थकावट आ गई थी. सोया भी देर से था. आखें खुलीं तो नौ बज चुके थे दोनो साथी कब के उठ चुके थे और तैयार थे. अपने प्रमाद और आलस्य पर झेंप गया जल्दी से तैयार हो कर हम तीनो ने नाश्ता किया और बाहर सडक पर आ गए.

वियना के लिए हम ने दो दिनो का समय निकाला था. यूरोप के इस ऐतिहासिक और सास्कृतिक नगर के लिए इतना समय कम था. मगर हमारे पास इस के सिवाय अन्य विकल्प भी नहीं था यहा केवल घूमना नहीं था बल्कि स्टेट बैंक के गवर्नर से मिल कर देश की आर्थिक और औद्योगिक स्थिति की जानकारी भी करनी थी.

सुबह का समय हाथ से निकल चुका था. टूरिस्ट बस साढ़ेआठ बजे सुबह आ कर चली जाती है. इसलिए अब हम ने स्वतत्र माध्यम से शहर घूमने का निश्चय किया.

थोडी दूर पर हमें बहुत ऊचा सा एक गुबद दिखाई पडा. कुतुबमीनार से इस की ऊचाई लगभग दूनी लगी गाइड बुक में देखा तो पता चला कि इसे सेंट स्टीफन का गिरजा कहते हैं. रोम के सेंट पीटर के गिरजे के बाद यूरोप का यह सब से मशहूर और बड़ा गिरजा माना जाता है. सोचा, 'पास ही तो है, अभी पहुच जाते हैं.'

मारिया थेरेस्सा के सपनों से भी ऊंचा
सेंट स्टीफन का गिरजाघर

हम उस ओर बढ़े दूर चलने पर भी जब वहां नहीं पहुंचे तब गलती महसूस हुई ऊंचाई के कारण पास लगने वाला यह गिरजा लगभग डेढ़दो मील की दूरी पर था गाइडबुक से पता चला कि चार लाख वर्ग फीट के क्षेत्रफल में बना हुआ है इस का शिखर ४५८ फीट ऊंचा है सन ११३७ में बनना शुरू हुआ और तैयार होने में लगभग साढ़े चार सौ वर्ष लगे सन १७११ में तुर्कों से युद्ध में जीती गई तोपों को गला कर इस का पीतल का विशाल घंटा बनाया गया जिस का वज़न ५५० मन है आस्ट्रिया की साम्राज्ञी मारिया थेरेस्सा की इच्छा थी कि इस गिरजे को विश्व का सब से बड़ा धर्मस्थान होने का गौरव प्राप्त हो इस के लिए उस ने इसे भव्य और विशाल बनाने के अनेकानेक प्रयास किए एक बार तो यहां तक इरादा कर लिया कि इसे तोड़ कर फिर से बनाया जाए लेकिन सेंट पीटर के गिरजे से बड़ा गिरजा बनाना करोड़ों व्यक्तियों का सहयोग, अपरिमित धन और साधन मांगता था यह बड़े से बड़े सम्राट के बूते के बाहर की बात थी

सेंट स्टीफन के गिरजे में बहुत से भित्ति चित्र हैं कुछेक तो अत्यंत कलापूर्ण हैं मगर वेटिकन में सिस्टिनचर्च के विश्व विख्यात चित्रकारों की कलाकृतियों के समक्ष यहां के चित्रों में मुझे कोई मौलिकता नज़र नहीं आई

पिछले दो महायुद्धों की विनाशकारी लपटों में वियना को भी झुलसना पड़ा है गनीमत है कि यहां की बेहतरीन इमारतें और खूबसूरत बुलंद गिरजे काफी हद तक बच गए यूरोप के अन्य शहरों में मध्यकालीन इमारतों की बड़ी हानि इन महायुद्धों की बमबारी से हुई है किंतु वियना के गिरजे और मध्ययुगीन

इमारत किसी तरह बच गए. इसलिए आज पर्यटकों के लिए इस शहर का एक विशेष आकर्षण है. आज भी यहां साठसत्तर फीट ऊंचे दोमंजिले बड़ेबड़े मकान देखने को मिल जाते हैं. न्यूयार्क या शिकागो में इन पुराने मकानों के जितनी जमीन पर पचाससाठ गुने आवास भवनों का निर्माण करना स्वाभाविक है.

जो भी हो, इन पुराने ढंग की इमारतों की अपनी शान है और उन की बुलंदी गुजरे हुए जमाने का एहसास आज भी जाहिर करती है. हमारे यहां कलकत्ता में आसमान को छूने की होड़ लगाने वाले मकान पिछले दो दशकों में तेजी से बने और बनते जा रहे हैं. फिर भी पुराने ढंग के भव्य और विशाल दोमंजिले मकानों की शान का ये नए आलमारीनुमा मकान मुकाबला नहीं कर पाते. चोरबगान की बड़ेबड़े खंभों वाली संगमरमर की राजेंद्र मल्लिक की कोठी आज भी उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के वास्तुशिल्प की याद दिलाती है.

जिस प्रकार आगरा और दिल्ली को सम्राट शाहजहां ने संवारासजाया, उसी तरह साम्राज्ञी मारिया थेरेसा ने वियना की महत्ता चढ़ाई, इसे सजाया और संवारा. उस ने हाप्सबर्ग प्रासाद को जी भर के सुसज्जित कर अपने शौक की पूर्ति की. गिरजा देख कर हम हाप्सबर्ग महल देखने गए. इसे शीशमहल भी कहते हैं. यूरोप के मध्ययुगीन इतिहास में आस्ट्रियाहंगरी साम्राज्य के प्रभाव, शक्ति और ऐश्वर्य का गौरवपूर्ण परिचय मिलता है. इस शक्तिशाली साम्राज्य के सामने फ्रांस और ब्रिटेन दोनों को सिर उठाने की हिम्मत नहीं होती थी.

तुर्कों की असंख्य तीखी तलवारें जब एशिया से ले कर अटलांटिक महासागर तट के राष्ट्रों के छक्के छुड़ा रही थीं, आस्ट्रिया ने उन की नोक को तोड़ डाला था. तुर्कों का हौसला पस्त हुआ और उन्हें वापस लौटना पड़ा.

वियना को मध्ययुग में कला, विज्ञान और संस्कृति का संगमस्थल माना जाता रहा है. आस्ट्रियाहंगरी के सम्राटों की राजधानी सदैव वियना ही रही. हाप्सबर्ग राजप्रासाद इन सम्राटों का निवास स्थान था और इसी में उन्होंने अपना दफ्तर भी रखा. हालांकि आज आस्ट्रियाहंगरी का साम्राज्य नहीं रहा और न वह प्राचीन राजतंत्र ही, फिर भी इस शीशमहल की भव्यता में अंतर नहीं आया है. इस समय इस के बड़ेबड़े कक्षों में भांतिभांति प्रकार के संग्रहालय, बीस लाख ग्रंथों की नेशनल लाइब्रेरी और सरकारी दफ्तर हैं.

दरअसल इसे महल न कह कर एक शहर कहना ज्यादा सही होगा. इस के विभिन्न कक्ष एक ही समय में नहीं बने, बल्कि तेरहवीं शताब्दी से ले कर उन्नीसवीं शताब्दी तक यानी लगभग छः सौ वर्षों तक बनते रहे. फ्रांस में मैं ने पेरिस का लूव्रे और वर्साई के राजप्रासाद देखे थे. दोनों अपनी विशालता और भव्यता के लिए विश्वविख्यात हैं. किंतु मुझे हाप्सबर्ग का यह प्रासाद इन से अधिक सुंदर, सौम्य और भव्य लगा.

प्रासाद में घूमते हुए एक मसजिद दिखाई पड़ी. ईसाई राजमहल में मसजिद! ठीक वैसे ही जैसे मुगल हरम में मंदिर मिल जाए. पूछने पर पता चला कि सन १५२९ में तुर्की फौजें वियना में घुस आई थीं और यहां कुछ समय तक उन का कब्जा रहा. उसी समय में यह मसजिद बनी थी. शहर को उन्होंने मनमाने

ढग से लूटा और बरबाद किया औरतें, बच्चे और बूडे तल्वार की प्यास बुझान के लिए कत्ल किए गए अनगिनत स्त्रियो और बच्चा को गुलाम बना तया अथाह दौलत लूट कर वे यहा से अपनी राजधानी कुस्तुनतुनिया ले गए

तुर्कों ने कई बार आधी की तरह वियना पर आक्रमण किए सन १६९३ में उन की एक बडी फौज ने जबरदस्त हमला किया वियना के दरवाने तक वे आ धमके इस बार ऐसा लगता था कि आस्ट्रियाहगरी पर सदैव के लिए चांद-तारे का हरा झडा फहरा उठेगा आस्ट्रिया के लिए यह जीवनमरण का प्रश्न बन गया उस के हारेयके सोलह हजार सिपाही दीवार की तरह तुर्कों के सामन अड गए वियना के हर घर की स्त्रियों और बच्चो ने जीजान से उन की मदद की इस प्रकार ६० दिनो तक नाकेबदी चलती रही इस बीच यूरोप में ईसाई राष्ट्रो ने सघबद्ध हो कर तुर्कों की इसलामी खूरेजी को नष्ट करने का निश्चय किया चार्ल्स आफ लारेन के नेतृत्व में एक बडी ईसाई फौज ने तुर्कों पर आक्रमण कर दिया और उन्हें छिन्नभिन्न कर डाला इस के बाद फिर कभी तुर्कों न मध्य यूरोप की ओर आख उठान का साहस नहीं किया

महल के बडे कक्ष में हम ने आस्ट्रिया के सम्राटों के खजाने को देखा नाना प्रकार के जवाहरात, जेवर, सिहासन, चादीसोने के खूबसूरत बरतन और फरनीचर सजेसजाए रखे थे वैसे लेनिनग्राद के म्यूजियम में हम ने रूस के सम्राटा की इस से कहीं अधिक सामग्री देखी थी इसी प्रकार वर्साई के राजप्रासाद में फ्रास के सम्राटो की भी चीजें यहा से कहीं अधिक देखने में आईं लदन के टावर के सग्रहालय में ब्रिटिश सम्राटों के मुकुट और जवाहरात तो अरबोखरबो की कीमत के होगे जो भी हो, यूरोप में प्राचीन दुर्लभ वस्तुओ के रखने के प्रति एक विशेष आग्रह राष्ट्रीय गुण के रूप में सर्वत्र है जिस का अभाव हमारे यहा है पेरिस के लूव्रे सग्रहालय में सग्रहीत चित्रों का मूल्य ही एक अरब पचास करोड रुपए के बराबर कूता गया ह

हापसबग का सग्रह फ्रास, रूस, और ब्रिटन के मुकाबले अधिक प्रभावित न कर सका, फिर भी इतना तो मानना ही होगा कि इसे अच्छी तरह सजा कर रखा गया है हमारे पास समय था इसलिए हम न यहा का हिस्ट्री म्यूजियम देखना भी तय किया किसी भी देश की सभ्यता, सस्कृति और उस के इतिहास क उतारचढाव का परिचय इस ढग के सग्राहालयो को देखन पर सरलता से मिल जाता है जिज्ञासु विद्यार्थी और लेखक तो इन जगहा में महीनों बठ कर जानकारी प्राप्त करते ह

यहा के हिस्ट्री म्यूजियम में सम्राटों के हथियार, युद्ध की पोशाके और उन क काम में आन वाली चीजा का सग्रह है युद्ध के घोडों के जिरह बख्तर, और सिपाहियो के लोह के आवरण भी देखे एसे भी यत्र देखे जिन के जरिए किलो पर स पत्थर और लोहे के गोले बरसाए जाते थे नाना प्रकार क बडौल और क्रूर कार्यों में इस्तेमाल किए जान वाले हथियार और उपकरण देख कर चित्त क्षुब्ध सा हो उठा था सोचन लगा कि आदमी इनसान होन का दावा तो करता ह असलियत में हवानियत का साथ नहीं छोडता इन्हीं विचारों में उलझा हुआ था कि प्रभुदयाल-

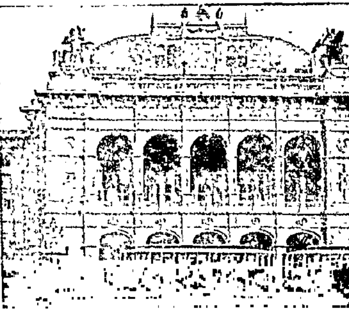

ओपेरा हाउस : आस्ट्रियाई लोगों की संगीतप्रियता का सजीव इतिहास

जी ने कहा, "फिर भी मौत बरसाने वाले ये साधन आज की अपेक्षा कहीं अधिक मानवोचित हैं. इन का प्रभाव युद्ध क्षेत्र तक ही रहता था, जब कि आज के उन्नत वैज्ञानिक अस्त्रशस्त्र पूरे शहर को नेस्तनाबूद कर के लाखों निरीह नागरिकों का संहार कर देते हैं."

चार बजे भारतीय दूतावास के सचिव के साथ यहां स्टेट बैंक के गवर्नर से मिलने गए. हमें बातचीत में कठिनाई महसूस नहीं हुई. वह अंगरेजी साफ बोल लेते थे, फिर भी उन्होंने हम से अपनी ही भाषा में बात की. हमारे बीच दुभाषिया था. उन्होंने बताया, "यूरोपीय देशों में फ्रांस को छोड़ कर आस्ट्रिया को दोनों महायुद्धों के कारण दूसरे सब देशों से कहीं अधिक जनधन की हानि उठानी पड़ी. जरमनी का साथ देने के कारण युद्ध के हर्जाने की बहुत बड़ी रकम अदा करनी पड़ी. फिर भी जनता के सहयोग से हम राष्ट्र का नवनिर्माण कर सके हैं. जनता ने खुद भी अभाव को सहर्ष स्वीकार किया और निर्यात बढ़ा कर विदेशी धन पैदा किया. इस प्रकार आस्ट्रिया में पुराने उद्योगधंधे संगठित रहे और नएनए शिल्पोद्योगों की स्थापना होती रही.

"सन १९६३ में निर्यात १,१०० करोड़ रुपयों का था और आयात १,६०० करोड़ का, अर्थात सत्तर गुने बड़े हमारे देश से कहीं अधिक. राष्ट्रीय आय थी पांच हजार करोड़ के लगभग यानी प्रति व्यक्ति ८०० रुपए वार्षिक और बजट था १,००० करोड़ का. विदेशी यात्रियों की संख्या उस वर्ष करीब ६० लाख थी. इन से देश को ३९० करोड़ रुपयों की आमदनी हुई."

हमें जान कर आश्चर्य हुआ कि उन के देश की यात्रिक आय स्विट्जरलैंड से भी अधिक है. विश्व में केवल इटली ही एक ऐसा देश है जिस की यात्रिक आय

आस्ट्रिया से ज्यादा है

हम ने उन के देश के प्रति विदेशी यात्रियो की इतनी रुचि का कारण जानना चाहा हम ने लक्ष्य किया कि हमारे प्रश्न से उन्हे प्रसन्नता हुई मुसकराते हुए सगर्व उन्होने कहा, 'वियना के सेट स्टीफन के पवित्र गिरजे, हापसबर्ग के नायाब राजप्रासाद और शीशमहल जैसी ऐतिहासिक इमारतें अन्यत्र कहा देखने को मिलेगी! इस के अलावा आस्ट्रिया में आल्प्स पर्वत पर जितने बडे पैमाने पर बरफ के तरहतरह के खेल होते रहते है, उतने और कहीं नहीं स्पा (झरने) हमारे लिए वरदान है इन के जल में अमृत का सा गुण है पेरिस, वेनिस, शिकागो, लदन और दुनिया के सभी बडे-बडे शहरो से नाना प्रकार के दुर्व्यसनो के कारण शारीरिक क्षमता को खो कर लोग यहां आते है हमारे यहा के पहाडो पर जा कर वे एक नई स्फूर्ति और जीवन पा जाते है

"कई विदेशी यात्रियो का यह जरूर उलाहना रहता है कि आस्ट्रिया के जीवन में वह मौज, गति और गरमी नहीं है जो पेरिस, वेनिस या लदन में है सही है, मगर उद्दाम लालसा ही तो जीवन का चरम लक्ष्य नहीं प्यास बुझाने की कोशिश में मनुष्य की प्यास बढ़ती जाती है और तब एक दिन वह अपने को इतना आसक्त पाता है कि बरबस गढ़े में गिरता चला जाता है"

हमें यह जान कर आश्चर्य हुआ कि युद्ध से जर्जर हुए इस छोटे से देश में हर दसवें व्यक्ति के पास एक मोटरकार है और हर तीसरे व्यक्ति के पास एक रेडियो अनपढ तो कोई है ही नहीं युद्ध का कर्ज इन लोगों ने कभी का चुका दिया और अब दूसरे देशो को रिण दे रहे है कृषि की दशा भी अच्छी है बाइस लाख टन सब प्रकार के अनाज यहा वर्ष में हो जाते है यानी नौ मन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष पशुधन भी अच्छी हालत में है प्रति तीन व्यक्तियों के पीछे दो पशु है आस्ट्रिया की धरती में लोहा और तेल है उत्तम किस्म का ग्रेफाइट भी यहा काफी मात्रा में है युद्ध के बाद अपनी सारी उपज उन्हें रिण चुकाने में खपानी पडी साठ लाख टन तेल तो अकेले रूस को आठ वर्षों तक क्षतिपूर्ति के रूप में दिया

फिर भी यहा अर्थव्यवस्था असतुलित नहीं हुई आज इन के सिक्के की प्रतिष्ठा विश्व के मजबूत सिक्को की तरह है अब तो कागज, रसायन और अल्युमीनियम का निर्यात कर के आस्ट्रिया अपने को धनी बनाता जा रहा है इस सारी सफलता के पीछे यहां की जनता की कर्मठता को श्रेय दिया जा सकता है युद्ध के बाद सब प्रकार के सुखो को तिलांजलि दे कर यहां के मजदूरो ने अपने भविष्य को सुखमय बनाया यह हमारे लिए अनुकरणीय है

स्टेट बैंक में हमारे लिए ४५ मिनट का समय था किंतु पूछताछ और बातचीत में लगभग सवा घटे का समय लग गया हमें सहर्ष हर तरह की जानकारी उन्होने दी

रात में, यहा का विश्व प्रसिद्ध ओपेरा देखने गए नाजी आक्रमण से इस को बडी क्षति पहुची थी आस्ट्रिया के लोग सगीतकला के प्रेमी है भाषा इन की जरमन जरूर है पर स्वभाव जरमनों से कहीं अधिक मृदु होता है अपने राष्ट्रीय महत्त्व की रगशाला के पुनर्निर्माण के लिए जनता ने विपुल धनराशि एकत्र करनी

शुरू कर दी और सन १९५५ में इसे पहले से भी कहीं अधिक सुंदर और सुसज्जित बना लिया.

संगीत का स्वर मधुर था, हालांकि भाषा जरमन होने के कारण हम समझ नहीं पाए. ओपेरा की साजसज्जा बड़ी शानदार थी, किसी सम्राट के राजमहल से कम नहीं. संगीत लहरी में सभी झूम रहे थे. हम ने देखा कि यहां पेरिस और हबर्ग की तरह स्त्रियों में उच्छृंखलता और नग्नता के प्रदर्शन की होड़ नहीं थी.

ओपेरा के विशाल कक्ष में लोग अनुशासन से शांतिपूर्वक बैठे स्वर लहरों में तन्मय हो रहे थे. आस्ट्रियन मध्ययुगीन आर्केस्ट्रा आज भी सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं. इन का दावा है कि दुनिया में संगीत के मामले में इन के समकक्ष नहीं.

अगले दिन सुबह नाश्ता कर हम बस से शोनब्रर्न प्रासाद देखने गए. वियना का यह दर्शनीय स्थल है. इसे 'ग्रीष्म प्रासाद' भी कहते हैं. फ्रांस के सुप्रसिद्ध वार्साई राजप्रासाद के नक्शे पर इसे बनाया गया है. महल के चारों ओर उद्यान और नहर है. आस्ट्रियाहंगरी के सम्राट ग्रीष्मकाल में इस प्रासाद में आ जाते थे. १४० कक्षों का यह महल बाग और नहर के बीच बड़ा सुंदर लगा. यों तो इस में कई सम्राटों के कक्ष हैं पर हमें सम्राज्ञी मेरिया थेरेस्सा के कक्ष और संग्रहालय बहुत आकर्षक लगे.

साम्राज्ञी थेरेस्सा की गणना अट्ठारहवीं शताब्दी के विश्व प्रसिद्ध व्यक्तियों में होती है. साधारण लोगों के स्वभाव और गुणदोष की चर्चा या टीकाटिप्पणी कम होती है, किंतु राष्ट्रीय मान के लोगों का छोटा सा दोषगुण बहुत व्यापक चर्चा का विषय बन जाता है और युगों तक जनता की जबान पर और साहित्य के पृष्ठों पर अंकित हो जाता है. समाज और राष्ट्र के सर्वमान्य और सर्वोच्च प्रतिष्ठित आसन पर जब कोई महिला होती है तब तो स्थिति और भी अधिक संयम की अपेक्षा करती है.

इगलैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम, फ्रांस की मेरी अतोनिता, रूस की जारीना और भारत की रजिया बेगम का उल्लेख इस संदर्भ में किया जा सकता है. आस्ट्रिया की साम्राज्ञी मेरिया थेरेस्सा भी इसी कोटि में आती हैं. वह १७४० में आस्ट्रियाहंगरी के विस्तृत साम्राज्य के सिंहासन पर बैठीं और लगभग चालीस वर्ष की सुदीर्घ अवधि तक उस ने शासन किया. हम ने देखा, उस के १६ पुत्र-पुत्रियों के लिए महल में अलगअलग कक्ष थे और सब के लिए पृथक व्यवस्था थी. महारानी के स्वय के बीसियों कक्ष हैं जिन में आज भी बेहतरीन चीजें सजी हुई हैं. ऐशोइशरत की बहुमूल्य वस्तुएं महारानी की पसंद का परिचय देती हैं.

चीन और मिस्र के कक्ष को देखते हुए हम भारतीय कक्ष में आए. पलंग, साज और सामान, फरनीचर सभी भारतीय. हाथ के बने सैकड़ों कलापूर्ण चित्र. बड़ा आश्चर्य हुआ कि कांगड़ा, राजपूत, मुगल और दक्षिणी शैली की विशुद्ध भारतीय कलाकृतियों का दुर्लभ संग्रह महारानी मारिया ने किस प्रकार हासिल किया होगा? राधाकृष्ण की लीला, रागमाला और पशुपक्षियों आदि के चित्रों के रंगों की ताजगी बता रही थी कि इन की देखभाल सावधानी से की जाती है. अलमारियों में

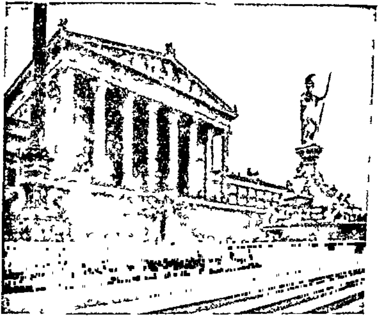

गोथिक शैली म बना आस्ट्रिया का विशाल ससद भवन जहा राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं

दखा, विभिन्न प्रकार की भारतीय पोशाकें सजी हुई थीं म सोचने लगा कि आस्ट्रिया में इन भारतीय वस्तुआ के आने का क्या स्रोत रहा होगा? ब्रिटेन ने तो लूटखसोट कर इक्टठा किया, पर यहा कैसे? शायद उपहारस्वरूप मिली होगी या खरीद कर सग्रह की गई हो

एक कक्ष में देखा, नपोलियन के किशोर पुत्र की प्रतिमा रखी थी नेपो लियन न आस्ट्रिया को जीत कर फ्रास में मिला लिया था एक बार सपरिवार कुछ दिनो के लिए वह वियना भी आया किंतु यहा अचानक उस के प्रिय पुत्र की मृत्यु हो गई इस शोक से वह इतना विचलित हुआ कि अविलब वियना छोड कर वापस चला गया, स्मारक के रूप में यह प्रतिमा यहा रख दी गई वह अपन इस पुत्र को आस्ट्रियाहगरी का सम्राट बनाना चाहता था

ग्रीष्म प्रासाद का उद्यान बहुत ही सवारा हुआ है नहर की सफाई देख कर तबीयत प्रसन्न हो जाती है

अगले दिन हमें आस्ट्रिया से जाना था हम ने शाम को ससद भवन देख लेना तय किया भारतीय दूतावास के सचिव हमारे साथ थे क्योकि हम तीनो ही अपन देश के ससद सदस्य थ, इसलिए हमारे लिए विशेष सुविधा दी गई अन्यथा ससद भवन देखना सभव नहीं होता क्यो कि उन दिनो सत्र चालू नहीं था

आस्ट्रिया का ससद भवन गोथिक शली पर बना ह राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के राजनीतिज्ञो की प्रस्तर मूर्तियां भवन के चारा ओर सजी रखी ह

ससदीय कार्यों के सपादन के लिए अनक कक्ष ह मुख्य कक्ष, जहां ससद

की बैठकें होती हैं, बहुत ही बडा है हमें बताया गया कि आस्ट्रियाहगरी के विशाल साम्राज्य के पाच करोड व्यक्तियो के प्रतिनिधियो के लिए इसे बनाया गया था लेकिन पहले महायुद्ध के बाद वह साम्राज्य ढह गया, आस्ट्रिया एक छोटा सा राज्य रह गया और हगरी स्वतत्र बन गया वहा से चलते समय ससद भवन के अधिकारी ने हमें आस्ट्रिया के ससदीय कानून की पुस्तके और स्मृतिस्वरूप अन्य चीजें दीं उन्होने हम से कहा, "केवल वियना को ही आस्ट्रिया न समझें जब तक साल्जबर्ग और इजबर्ग की यात्रा नही की जाती, आस्ट्रिया देखना पूरा नहीं होता वियना में सिर्फ आस्ट्रियन लोग मिलेंगे किंतु उक्त दोनो स्थानो पर हमारी प्रकृति का निखार और उस की खूबसूरती मिलेगी विभिन्न देशो से आए लोग वहा आमोदप्रमोद में व्यस्त मिलेंगे विदेशी यात्रियो के लिए होटल, क्लब और रेलवे की टिकटो में विशेष छूट दी जाती है"

हमारी इच्छा तो हुई पर विदेशी मुद्रा की कमी के कारण गए नहीं

वियना में केवल दो दिन रहा किंतु आस्ट्रिया देखने की इच्छा बनी ही रही मध्य यूरोप के देशो में स्विट्जरलैंड को छोड कर शायद सब से सुदर शिष्ट और शात वातावरण यहा का है आज भी इच्छा होती है कि साल्जबर्ग और आल्प्स हो आऊ

दूसरे दिन सुबह हम लोग वियना से ४० मील की दूरी पर गरम पानी के झरने देखने गए वहा जा कर तीन कोठरिया किराए पर लीं करीब तीस मिनट तक सारे बदन पर एक खुरदरी घास से मालिश की गई इस के बाद झरने के उबलते पानी में स्नान किया वास्तव में स्फूर्ति का अनुभव हुआ राजगृह के झरनो में भी ऐसा ही लगता है बहती हुई गरम जलधारा में स्नान करने से रक्त सचालन में तेजी आती है और पेशियो में ताजगी आ जाती है वैसे यह सब हर जगह या हर देश में एक सा ही है किंतु वियना में इसे अधिक आकर्षक और उपयोगी बनाया गया है स्नान से पहले और बाद में विद्युत उपकरणो से शरीर के समस्त अगों की मालिश की जाती है इस के लिए अलगअलग सुसज्जित कोठरिया हैं स्वस्थ व्यक्ति भी इस ढग की मालिश से थकावट से शीघ्र ही मुक्ति पा जाते हैं

एक बार के स्नान तथा अन्य उपकरणो के लिए कुल मिला कर करीब पचास रुपए लिए जाते हैं इस के अलावा वहा आनेजाने के और दूसरे खर्च अलग मैं ने देखा, विदेशो से आए हुए हजारो यात्री विभिन्न प्रकार से घटो तक स्नान कर रहे हैं अनेक रगो के शीशो से छन कर आती हुई रोशनी महीन ताप से वातग्रस्त या रोगग्रस्त शरीर के अग को सेक रहे हैं भूख लग जाती है तो पास के रेस्तरां में जा कर फलो का रस, दूध, मट्ठा, छाछ या लस्सी पी लेते हैं शराब यहा देखने में नहीं आई शायद यहा भी प्राकृतिक चिकित्सा के विशेषज्ञों ने इस की मनाही कर रखी है

एक जगह पाचछ युवतिया बिकनी पहने धूप में बैठी थीं वे बारबार मेरे गेहुए शरीर की तरफ देख कर आपस में बातें कर रही थीं ऐसा लगा कि मेरा रग शायद उन के कौतूहल का कारण है इधरउधर घूमता हुआ उन की ओर चला गया कई बार पश्चिमी देशों की सैर कर चुका था, इसलिए झेंप

मिट चुकी थी अभिवादन के बाद बातचीत शुरू हो गई पता चला कि वे सब इगलैंड से आई हैं उन का आश्चर्य मेरे शरीर का वर्ण था वे यहा गरम पानी में स्नान कर के और धूप सेंक कर अपने श्वेत वर्ण को सावला बनाने की कोशिश में थीं मैं सोचने लगा, 'हमारे यहा सावली लडकी का विवाह होना मुश्किल हो जाता है और एक ये हैं जो अपने दूध से सफेद रग को सावला बनाने के लिए इतना धन व्यय कर रही हैं!' झरनों में स्नान कर के कुछ नाश्ता किया और टूरिस्ट बस से हम वापस वियना लौट आए

वियना के एक महल्ले में जब हमारी बस पहुची तो देखा कि रास्ते में हजारों स्त्रीपुरुष खडे हैं सिपाही उन्हें दूर ढकेलने का प्रयत्न कर रहे थे पूछने पर पता चला कि सामने के होटल में दो फिल्मस्टार ठहरे हुए हैं और उन्हें देखने के लिए ये सब खडे हैं

मैं ने प्रभुदयालजी से कहा कि यह रोग केवल हमारे यहा ही नहीं है अपितु इन सभ्य देशों में भी उसी तरह है

लच के बाद हमें वियना से रवाना होना था इसलिए वहा ज्यादा देर न ठहर कर होटल लौट आए

जरमनी

लोहे की दीवार के इस पार . . . और उस पार

बचपन में जरमनी के बारे में बहुत कुछ सुना था. घर में पंडितपुरोहित आते थे और बडों से वेदशास्त्र की चर्चा करते हुए भारत के पतन का कारण बताते थे, "शास्त्र सब यहां से जरमनी वाले ले गए इसलिए वहां तो उन्नति हो रही है और हमारे देश में अविद्याअज्ञान फैल रहा है."

जरमनी का इतना ही परिचय उन दिनों जिज्ञासा को जगाने के लिए काफी था.

ब्रिटेन का कट्टर प्रतिद्वंद्वी था जरमनी. हर क्षेत्र में ब्रिटेन से उस ने टक्कर ली. मजबूती और टिकाऊपन के लिए बाजारों में जरमन माल मशहूर था. लोगों से सुनते थे और अखबारों में भी पढने को मिलता था कि जरमनी ने विज्ञान व शिल्प उद्योग में बडी तरक्की कर ली. अनजाने ही खुशी होती थी, वह इसलिए कि दुश्मन के दुश्मन से सहानुभूति होनी स्वाभाविक है. घुमक्कड मन में उसी समय से जरमनी देखने की इच्छा का अंकुर पैदा हो गया.

१९१४ में प्रथम महायुद्ध हुआ. देश में उस समय स्वराज्य आंदोलन की लहर चल पडी थी. लेकिन गांधीजी ने उस संकट के समय ब्रिटेन को बिना किसी शर्त के सब प्रकार से सहायता दिलाई. ब्रिटेन ने युद्ध के बाद भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य कायम करने का वादा किया बहुत बडी संख्या में भारतीय जवान फ्रांस के मोर्चे पर जान की बाजी लगा कर बहादुरी से लडे. जरमनी हारा जरूर मगर उन्हीं जवानों के मुंह से जरमनों के साहस और बहादुरी की कहानी घरघर में छा गई. ब्रिटेन वादे से मुकर गया, औपनिवेशिक स्वराज्य की जगह मिला जलियांवाले बाग का नृशंस हत्याकांड. भारत पराधीन ही बना रहा लेकिन थकेहारे जरमनी ने हिंदुस्तानी दिल में अपनी दिलेरी की खूबसूरत तसवीर बना ली.

पराजित राष्ट्र को हार का महंगा मूल्य चुकाना पडता है. प्रथम महायुद्ध के बाद वर्साई की संधि में जरमनी को अनेक क्षेत्रों से हट जाने के लिए बाध्य किया गया, जुर्माने और हरजाने के रूप में भी उस से बडी रकम वसूल की गई. अफ्रीका और एशिया से उस का कब्जा हट गया.

विख्यात राजनीतिज्ञ चर्चिल ने भी स्वीकार किया था कि इस संधि की आर्थिक शर्तें प्रतिहिंसा की भावना से ओतप्रोत थीं.

जो भी हो, जरमन लोग अपमान को भूले नहीं प्रतिहिंसा की प्रतिक्रिया ने हिटलर को पैदा किया लगभग अठारह वर्षों में फिर से जरमनी उठ खड़ा हुआ किंतु इस बार आसुरी शक्ति और दुर्भावना के साथ यदि जरमन लोगों को यह विश्वास रहता कि उन की आर्थिक अवस्था मध्यम मार्ग से सुधर सकती है तो वे गणतांत्रिक व्यवस्था को छोड़ते नहीं और शायद नाजियों के हाथ अपने भविष्य को भी नहीं सौंपते

नाजियों का उत्थान राष्ट्रीय समाजवाद के नारे पर ठीक उसी तरह हुआ जिस तरह रूस में समाजवाद के नाम पर कम्युनिज्म का उदय नाजियों ने दिशाहारा जरमनों को सब्जबाग दिखाए, जरमन जाति को दैवी शक्ति वाला बताया, जरमन लोगों को बरगलाया कि दुनिया पर शासन करने का एकमात्र अधिकार केवल उन्हें ही है क्योंकि उन का रक्त विशुद्ध आर्य रक्त है नाजियों की गोटी मथनी गई जरमन सैनिक जो निराशा और ग्लानि में भरे हुए बैठे थे उन के फौजी दस्तों में शामिल होने लगे सन १९३७ तक हिटलर की नाजी पार्टी जरमनी के राजनीतिक अखाड़े में बाजी जीत ले गई उस के हाथ में सर्वोच्च सत्ता आ गई

जर्जर जरमनी की आर्थिक अवस्था को हिटलर ने सुधारा, इसे मानना पड़ेगा उस ने उद्योगधंधे बढ़ाए, बेकारी दूर की, सेना मजबूत की और विदेश नीति में सफलता प्राप्त की इस से जरमनी की प्रतिष्ठा और सत्ता दोनों बढ़ती चली गईं

हिटलर की सफलताओं के कारण जरमन जनता ने उसे युगावतार समझ लिया, विदेशनीति की सफलता और सेना के पुनर्गठन ने संस्कारहीन हिटलर में मद भर दिया उस में क्रूरता, दमन, धोखेबाजी और दूसरे देशों के प्रति लोलुपता बढ़ती गई भस्मासुर की तरह उस की सफलताएं ही उस के विनाश और जरमनी के पराभव का कारण बनीं

सन १९३७ में हिटलर ने खोए हुए क्षेत्र राइनलैंड पर अधिकार कर लिया सन १९३८ में उस ने आस्ट्रिया पर कब्जा कर के उसे जरमनी में मिला लिया इसी वर्ष उस ने चेकोस्लोवाकिया का सुडेटन प्रदेश दखल कर लिया दलील यह थी कि वह जरमन भाषी अंचल है आगे चल कर १९३९ में जरमन का पूरे चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार हो गया इस समय तक आधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित जरमन सेना विश्व में बेजोड़ हो गई थी अगस्त की शुरुआत के साथ ही जरमनों ने पोलैंड पर धावा बोल दिया

बस, इस घटना ने यूरोपीय राष्ट्रों को जगा दिया दूसरे महायुद्ध का सूत्रपात हो गया

मानवता के इतिहास में शायद ही कभी ऐसा भयानक युद्ध हुआ हो इस लड़ाई में यूरोप प्रमुख रूप में रणांगन बना जरमन सेना ने आंधी की तरह यूरोप के छोटछोटे देशों को उखाड़ फेंका पोलैंड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, डेनमार्क, नारवे नादरलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, बुल्गारिया सभी पर नाजी झंडे लहरा उठे यूरोप में इटली ने जरमनी का साथ दिया और एशिया में जापान ने तीनों राष्ट्रों का यह गुट 'धुरीराष्ट्र' ब्रिटेन, फ्रांस, रूस व अमरीका का गुट

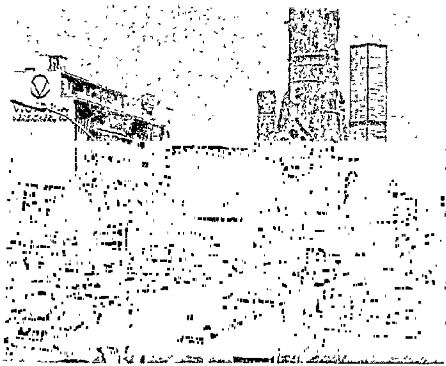

'मित्र-राष्ट्र' कहलाया.

युद्ध के प्रारंभिक काल में जरमनी ने फ्रांस की अजेय सैन्यशक्ति का बुरी तरह ध्वंस कर दिया. ब्रिटेन घबरा उठा, उस के जीवनमरण का प्रश्न आ खड़ा हुआ. जून १९४१ में हिटलर ने रूस पर धावा किया. बस, यहीं से हिटलर के पीछे पराजय की छाया मंडराने लगी.

वह भूल गया था कि यूरोप को रौंदने वाले नैपोलियन की शक्ति भी रूस में ही कुचली गई थी. रूस की लाल सेना ने जरमनी की नाजी सेना को बढ़ने से रोका. स्तालिनग्राद में एकएक गज जमीन पर जो लड़ाई हुई, उस की कल्पना शायद हिटलर ने नहीं की थी. एक ओर अमरीकी साजसामान से लैस रूसी सेना के धैर्य और साहस तथा दूसरी ओर जानलेवा बरफीली हवा के सामने हिटलर की सेना की हिम्मत पस्त हो गई. लाल सेना ने नाजियों को पीछे ही नहीं धकेला बल्कि वह जरमनी की राजधानी बर्लिन तक पहुंच गई. रास्ते में पड़ने वाले देश हंगरी, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया आदि नाजी अधिकार से मुक्त हो गए. उधर पश्चिम और दक्षिण से ब्रिटेन व अमरीका की मिलीजुली फौजें भी बर्लिन की ओर बढ़ीं. फ्रांस की सेना भी मुक्त हो कर बर्लिन में जा घुसी.

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के साथसाथ जरमनी के वैभव और प्रतिष्ठा का भी अंत हो गया. जरमन राष्ट्र का अस्तित्व खंडित हो गया.

उसे अपार जनधन की हानि उठानी पड़ी. अनाथ बच्चों और बेवा स्त्रियों के रुदन से जरमन राष्ट्र कराह उठा.

युद्ध के बाद ब्रिटेन, फ्रांस, रूस आदि विजेता राष्ट्र भी पस्त हो चुके थे. स्वीडन, स्पेन और स्विट्जरलैंड को छोड़ कर यूरोप के सभी राष्ट्रों को आर्थिक

स्थिति बिगड गई इटली तो पहले से ही कमजोर था, जरमनी को इस युद्ध ने विनाश के दरवाजे पर घायल कर के पटक दिया

जरमनी की तब की हालत देख कर यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह निकट भविष्य में कभी उठ सकेगा लेकिन सोचने या न सोचने से क्या होता है! जरमनी ने देखतेदेखते फिर करवटें लेनी शुरू कर दीं, उस में फिर चेतना आने लगी

सन १९५० में जब यूरोप गया था तो युद्ध समाप्ति के पाच वर्ष बीत चुके थे जरमनी जाने का भी अवसर मिला उस समय केवल ब्रिमेन और हबर्ग देख पाया था इतना जरूर अनुभव हुआ कि जरमन लोग लगन के पक्के और कष्टसहिष्णु हैं समय कम था इसलिए बर्लिन न जा सका बमबारी से गिरे मकानो के मलवे, उजडेटूटे कारखाने, भीड में विकलाग नागरिको और वहां के लोगो के सघर्षमय जीवन को देख मन खिन्न हो गया था

बर्लिन पहली बार १९६१ में गया और दूसरी बार १९६४ में द्वितीय महायुद्ध के दौरान बर्लिन के बारे में तरहतरह की बातें सुनने और पढ़ने का मौका मिलता था, 'फाल आफ बर्लिन' और 'लागेस्ट डे' आदि फिल्में भी देखी थीं, इसलिए अनजान शहर नहीं लगा १९६१ में बर्लिन की सडकों पर पाव रखते ही मुझे ग्यारह वर्ष पूर्व हबर्ग के अपने एक मित्र मिस्टर जिगलर की बात याद आ गई उन्होंने कहा था, "आज आप जरमनी की यह दयनीय दशा देख रहे हैं लेकिन दस वर्ष बाद हमें ऐसा नहीं पाएगे"

बात सच निकली इस एक दशक में जरमनी के कलकारखाने फिर से चालू हो गए और उस ने अपने सारे कर्ज भी चुका दिए यही नहीं, अविकसित देशो को वह आर्थिक, औद्योगिक और तकनीकी मदद भी देने लगा

जुलाई १९६४ में कोपेनहेगन से हवाई जहाज से शाम के समय हम बर्लिन पहुचे हवाई अड्डे आम तौर से शहर के किनारे या उस से कुछ दूर हुआ करते हैं लेकिन बर्लिन का एयरपोर्ट शहर के बीच में है और यह हमारे लिए ताज्जुब की बात थी चारों ओर ऊचीऊची अट्टालिकाए और बीच में बहुत बडा हवाई अड्डा हम ने ठहरने की व्यवस्था पहले से करा रखी थी दस मिनट में हम अपने होटल में पहुंच गए

बर्लिन के लिए हमारे पास तीन दिन का समय था इसी अवधि में पश्चिमी और पूर्वी बर्लिन देखना था जलपान कर के हम ने होटल के काउटर से शहर का नक्शा और गाइडबुक ले ली कोपेनहेगन में ही बर्लिन के निरामिष रेस्तोरांओं का पता लिख लिया था डोरेस्वामी के रेस्तोरां की सडक वगैरह के बारे में रिसेप्शन से आवश्यक जानकारी ले ली

गाइड यूरोप में बहुत महगे हैं वैसे पर्यटकों की सुविधा के लिए हर बडेबडे होटलों की अथवा यात्री सस्थाओं की बसें चलती हैं

अगरेजी फ्रेंच और स्थानीय भाषाओ में दर्शनीय या ऐतिहासिक स्थलो का परिचय देने के लिए इन बसों में गाइड रहते हैं यह सुविधाजनक और सस्ता माध्यम है हम ने अपने लिए बर्लिन देखने का यही उपाय चुना

आम तौर से अगरेजी का प्रचलन यूरोप में अब भी कम ही है हां, प्रथम

ड्राइंगरूम में फूलों की उन्मुक्त हंसी और पलकों में बंद सुनहरे स्वाब

महायुद्ध के बाद अमरीकी पर्यटकों के कारण अंगरेजी को कुछ महत्त्व जरूर मिल गया है. होटलों, क्लबों और दुकानों में अंगरेजी से काम चल जाता है.

हमारा होटल यहां के प्रसिद्ध राजपथ 'कुर्फर स्टेंडम' के पास ही था. इसे पश्चिम बर्लिन का प्रमुख केंद्र कहा जा सकता है क्योंकि बड़ीबड़ी दुकानें, शानदार होटल और रेस्तोरां इसी राजपथ पर हैं.

बर्लिन को आधुनिक योजनाबद्ध नगर नहीं कहा जा सकता. हवाई जहाज

से देखते ही इस का आभास मिल जाता है

मूलत यह स्प्री नदी के निकट एक टापू पर बसाया गया था यही छोटी सी बस्ती आज का विकासमान बर्लिन है अब तो यह नदी के दोनो किनारो पर बस गया है, जैसे टेम्स के दोनो ओर भव्य व आकर्षक लदन नगर बसा हुआ है

बर्लिन घूमते समय मुझे बारबार जरमनो के देशप्रेम और अध्यवसाय का खयाल आ जाता था द्वितीय महायुद्ध के दौरान इस ऐतिहासिक शहर का लगभग तीन चौथाई भाग भीषण बमबारी से नष्ट हो गया था क्योकि लाखों टन बम इस पर गिराए गए थे उसी ध्वसावशेष पर आज का बर्लिन फिर से मुसकरा रहा है

लगता है जरमन हार कर भी हिम्मत नहीं हारते इसी लिए यह जाति अजेय है, हमारे मध्ययुग के राजपूतो की तरह

अपनी बाहो में हरियाली लिए प्रशस्त राजमार्ग, भव्य भवन और रग बिरगे फूलो से सजे उद्यानो को देख कर कल्पना भी नहीं होती कि जरमन अभी कुछ वर्ष पूर्व विनाश के गहरे गड्ढे में जा गिरे थे

१९५० में जब जरमनी आया था तो ब्रिमेन और हबर्ग की सडकों पर बहुत से विकलाग लोग दिखाई पडते थे युद्ध की यह स्वाभाविक परिणति थी आज लगभग चौदह वर्ष बाद उसी जरमनी में दिखाई दिए स्वस्थ पुरुष व स्त्रिया और सुर्ख गालों वाले हसते हुए बच्चे लगता था जरमनो ने दुख दारिद्रय को जीत लिया है, एक मजबूत नई पीढ़ी नई स्फूर्ति, उत्साह के साथ उठ खडी हुई है

हम पैदल ही सैर करने निकले कुर्फर स्टेंडम के उत्तरपूर्व से तूरगार्टेन नामक एक सुदर उद्यान है जो लगभग छ सौ तीस एकड जमीन पर फैला हुआ है उद्यान के बीच में बर्लिन काग्रेस का भव्य हाल है पास ही हम ने नए बर्लिन का हसा क्वार्टर देखा यह स्थल बर्लिन का सामाजिक केंद्र बिंदु है १४ राष्ट्रो के श्रेष्ठ स्थापत्य शिल्पियों न इस का निर्माण किया है इस अचल में सुदर भवन, स्कूल और गिरजो का फिर से निर्माण किया गया है

बाजार में घूमते हुए देखा, एक से एक उम्दा और नायाब चीजें दुकानों में सजी हैं ग्राहको की सख्या भी कम नहीं थी हम न खरीदारी भले ही नहीं की पर विभिन्न दुकानों पर जा कर कई प्रकार की चीजें जरूर देखीं इटली या अन्य दक्षिण यूरोपीय देशों की तरह चीजें न खरीदने पर यहां के दुकानदार झुझलाते नहीं और न मुह बनाते ह बाजार में घूमने पर साफ पता चल जाता है कि युद्ध से जर्जरित और खडित जरमनी ने पिछले बीस वर्षों में उद्योग और शिल्प के क्षेत्र में न केवल युद्धजनित हानि को ही पूरा किया है बल्कि आशातीत उन्नति और सफलता भी प्राप्त की है

शायद दो घटे घूमे होंगे, कुछ थकान सी महसूस होने लगी मैं ने प्रभुदयालजी से कहा "नजदीक के किसी रेस्तोरा में चलना चाहिए" मगर वह तो कम से कम खाने के पक्षपाती रहे है इसलिए उन के आदेश के अनुसार केवल एक स्वच्छ पी कर इतालवी रेस्तोरा की खोज में चल पड़े रात के नौ बजे जब हम वहां पहुचे तो देखते है कि एक छोटी सी दुकान में रेस्तोरा है रेस्तोरा में कुछ भारतीय

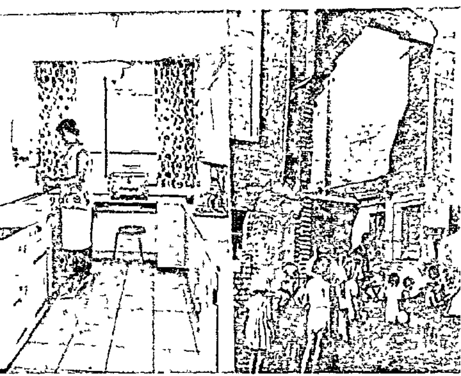

आधुनिक रसोईघर जरमन लोगों के खानपान और रहनसहन के उच्चस्तर का प्रतीक दाएं: युद्ध के बाद पूरा देश खंडहर बन गया ऐसे नाजुक दौर में भी आने वाली पीढ़ी के पोषण की जिम्मेदारी निभाई,

थे और थोड़ेबहुत यूरोपीय भी थे.

दक्षिण भारतीय इडली दोसे और सांभर के दर्शन हुए, फलों का सलाद भी मिला, पर चार्ज बहुत अधिक था. गहरे श्याम वर्ण के स्थूलकाय मद्रासी बंधु मिस्टर स्वामी से हम ने इस का जिक्र किया लेकिन दाम कम करना तो दूर रहा वह तो यह भी मानने को राजी न हुए कि चार्ज ज्यादा है उन की दलील थी कि निरामिषभोजी यहां बहुत कम हैं, इसलिए ग्राहक कम और बिक्री भी कम. उन का तर्क था कि कम बिक्री को देखते हुए जो कुछ चार्ज किया जा रहा है, वह सर्वथा उचित है. एक और भी जोरदार दलील उन्होंने यह पेश की कि छ. हजार मील दूर पर छोड़ कर वह परदेश में रहते हैं और मद्रास से रसम तथा सांभर के मसाले मंगवाते हैं. ऐसी दशा में यदि स्वदेश के ही बंधु दामों की कटौती के लिए कहेंगे तो मद्रास लौट जाना ही उन के लिए अच्छा रहेगा. उन की गरदन हिलाहिला कर मद्रासी अंगरेजी में दी गई दलील ने हमें निरुत्तर कर दिया. हम ने उन्हें आश्वासन दिया कि जब तक बर्लिन में रहेंगे, उन के रेस्तोरां में भोजन करने अवश्य आएंगे.

रात में काफी देर से होटल लौटे. सड़कें नियोन के रंगबिरंगे प्रकाश में चमक रही थीं ... और ... बेफि ...

विकसित शक्ति का सहज अनुमान लग जाता था

जुलाई का महीना था हम क्योंकि उत्तरी यूरोप से आ रहे थे इसलिए यहा कुछ गरमी सी लग रही थी वैसे तापमान केवल ९० फारेनहाइट था जब कि इन दिनो हमारे यहा तापमान ११२–११५ फारेनहाइट हो जाया करता है

दूसरे दिन सवेरे हमारे होटल में प्रभुदयालजी के मित्र श्री डिटमार सपत्नीक मिलने आए यहा के बारे में हमें उन से बहुत कुछ जानकारी मिली उन्होंने बताया कि बर्लिन शीतयुद्ध का शहर है यह एक प्रयोगशाला है जहा आमनेसामने पूजीवादी और साम्यवादी व्यवस्था को कसौटी पर कसा जा रहा है जहा गणतत्र का परीक्षण बर्लिन के पश्चिमी भाग पर चल रहा है, वहीं पूर्वी बर्लिन में साम्यवादी एकनायकत्व और शासन के अनुशासन के नाम पर फौजीतत्र है उन्होंने संकेत किया कि हमें दोनों भागों में जा कर खुद देख कर निर्णय लेना चाहिए कि जनता किसे चाहती है और दोनों में कौन सा प्रयोग सफल हुआ है' महायुद्ध से पूर्व लदन और पेरिस के बाद बर्लिन का स्थान था जरमनी की राजधानी का गौरव तो इसे प्राप्त ही था हिटलर का हेडक्वाटर भी यही था आज भी आम जरमन व्यक्ति चाहे वह पश्चिमी अचल का हो या पूर्वी, अपनी इस राजधानी को खंडित देखना नहीं पसद करता उस की मान्यता है कि जरमनी का और जरमनी के साथ ही बर्लिन का भी एकीकरण अवश्य होगा, भले ही शीतयुद्ध के कारण कुछ विलब हो जाए

हम ने उन से प्रश्न किया जरमनी के इस विकास या पुनरुत्थान के पीछे कौन सा चमत्कार है?

बड़े ही सहज भाव से उन्होंने कहा "आत्मसम्मान की भावना हमारी जाति का नैसर्गिक गुण है इस के कारण हम में राष्ट्र के प्रति चेतना है और इसी ने हमें कष्टसहिष्णु बना दिया है यही मूल कारण है जिस ने हमें फिर से जीवित कर दिया"

पश्चिम जरमनी ने जो अर्थनीति अपनाई, वह अनुशीलन के योग्य है उस ने अमरीकी सहायता पा कर हमारी तरह अधाधुध बडीबडी योजनाएं नहीं बनाई बल्कि मध्यमार्गी नीति को अपनाया इस प्रकार की नीति को 'सोशल मार्केट इकोनामी' कहते है इस की विशेषता यह है कि आर्थिक उन्नति के लिए कृषि शिल्प और उद्योग का विकास इस प्रकार किया जाता है कि व्यक्ति और समाज दोनों का हित हो रूस का साम्यवादी तत्र भी अब इस समझने लगा है भले ही स्वीकार करने में सकोच करे मध्यम मार्ग की अर्थनीति के अनुसार निजी सपत्ति और निजी प्रयासों के लिए हर क्षेत्र में पूरी छूट है लेकिन यदि राष्ट्र का हित किसी विशेष व्यवसाय या व्यापार में हो तो उस का राष्ट्रीयकरण तो किया जाता है पर फिर भी व्यक्ति और समाज के हितों की अवहेलना नहीं की जाती

विषय को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया "युद्ध के कारण जरमनी में मकान बुरी तरह ध्वस्त हुए और आवास की विकट समस्या पैदा हो गई सोशल इकोनामी के अनुसार मकानों पर नियत्रण लग गया किराया बढ़ने नहीं दिया गया सरकार ने आवास के लिए खुद मकान बनवाए और लोगों को मकान बनाने के लिए रिण भी दिए समस्या का बहुत कुछ

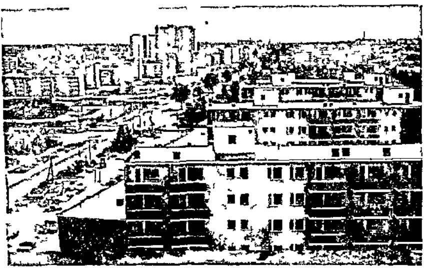

जहा कभी खडहर थे, वहा आज शानदार इमारतें बनाई जा रही हैं पश्चिम बर्लिन के एक निर्माणाधीन उपनगर का भव्य दृश्य

समाधान हो गया आज नगरो में गदी बस्तिया नहीं मिलेंगी वैसे क्योंकि आबादी तेजी से बढ़ी है इसलिए कुछ दिक्कत अब भी है"

१९४६ में यहा की आबादी साढ़े चार करोड थी, जो १८ वर्षों में बढ कर लगभग पौने छ करोड हो गई है युद्ध के बाद पश्चिम जरमनी में साठ लाख मकानों की जरूरत थी इन वर्षों में वहा करीब पचपन लाख मकान बन चुके हैं

जरमनी के आर्थिक विकास में यहा के मजदूर सगठनो का सहयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है इन श्रमिक सघो ने देश की नाजुक स्थिति को देखते हुए तय कर लिया था कि औद्योगिक प्रगति के लिए वे विवाद सुलझाने के लिए हडताल या 'सुस्त काम' के घातक तरीके नहीं अपनाएगे यही नहीं शुरूशुरू में तो केवल थोडी सी मजदूरी ले कर उन्होंने अथक परिश्रम कर के नष्ट हो चुके कारखानों को नया जीवन प्रदान कर दिया

मैं ने मिस्टर डिटमार से कहा, "जरमनी के विकास के लिए सब से बडी सहूलियत यह मिली कि १९५५ तक सेना पर कुछ भी व्यय करना नहीं पडा और इस समय भी आप का सेना पर खर्च दूसरे बहुत से देशो की अपेक्षा बहुत कम है इसलिए आप ने सारे धन और साधन को देश के नए सिरे से निर्माण में लगा दिया"

मुसकराते हुए उन्होंने कहा, "बहुधा विदेशो के लोग हमारे बारे में ऐसा कहते हैं जब कि स्पष्ट है कि हार के बाद न तो हमारे पास धन बचा, न साधन जिस रूर क्षेत्र ने जरमनी को दो महायुद्धों के लिए धन और साधन दिए, उसे युद्ध के दौरान भीषण क्षति उठानी पडी शत्रु के विमानो ने रूर का विनाश कर दिया, कलकारखाने और बस्तिया उजाड दी

"लोग कोसों चल कर चुकदर या आलू लाते और किसी तरह परिवार की गुजर करते थे हालत यह हुई कि फ्रास रूर की खानो से कोयला निकालता और

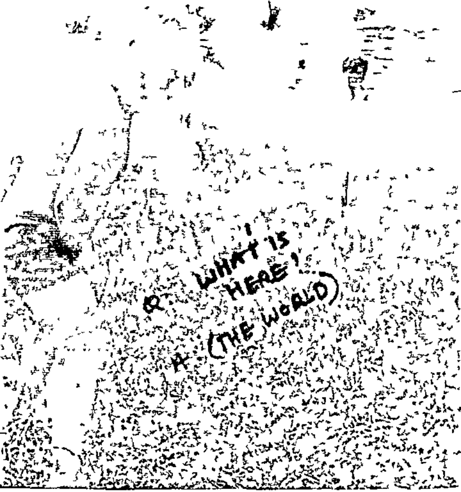

पश्चिमी जरमनी का एक प्रशिक्षित मजदूर छुट्टियो के दिना में अपनी पत्नी

यूरोप के बाजारो में बेचा जाता था हमारे मजदूर कम मजदूरी पर टिके रहे हमें इस से लाभ हुआ क्योंकि हमारी खानें बंद नहीं हुई हमें मित्रराष्ट्रो को युद्ध के हरजाने की बडी रकम चुकानी थी उस के बदले हम ने कोयला और खनिज पदार्थ दिए तनाव कम होता गया

"उद्योगो से विदेशी पाबंदी हटी और औद्योगिक प्रगति तेजी से हुई इस का बहुत बडा श्रेय है हमारे अर्थ मंत्री लुडविग एरहर्ड को उन्होने उद्योगो को बढ़ाने के लिए हर प्रकार की सरकारी सहायता दी पारस्परिक सहयोग से जरमन नागरिक छोटेछोटे शिल्पोद्योग शुरू करने लगे कल तक बरतनभांडे बेच कर जहां पेट पालना दूभर था, आज हमारा जीवनस्तर यूरोप में स्वीडन के सिवा सब से ऊंचा है हमारी राष्ट्रीय आय १९५० की तुलना में १३ वर्षों में ९० प्रति शत बढ़ी है मजदूरों को भी इतनी बचत हो जाती है कि वे टेलीविजन सेट खरीद सकते हैं और छुट्टियों में सैर करने निकल जाते है अब तो वे मोटरें भी रखने लगे हैं"

और दो बच्चों के साथ एक झील के किनारे आमोदप्रमोद में मग्न

हम ने लक्ष्य किया कि यहां प्रत्येक व्यक्ति डट कर काम में लगा हुआ है, बेकारी नहीं है जरमन व्यवसायी महत्त्वाकांक्षी है और यही उन का सब से बड़ा गुण है

मिस्टर डिटमार से बातें कर के हमें बड़ा संतोष हुआ अंगरेजों में भी हम ने स्पष्टवादिता देखी पर कुछ अहमन्यता के साथ जरमनों की स्पष्टवादिता कुछ नम्रता भरी थी शायद दो महायुद्धों में हार के कारण यह परिवर्तन हुआ हो शाम के भोजन का निमंत्रण दे कर दोनों ने विदा ली

हम ने टूरिस्ट बस से शहर देखने के लिए टिकट ले रखी थी बस से जाने वाले हम पचीसतीस यात्री थे यात्रा से पूर्व गाइड ने सब को होटल के लाउंज में एक साथ बैठा कर बर्लिन का एक संक्षिप्त परिचय दिया ताकि शहर देखते समय समझनेबूझने में सुविधा रहे उस ने जरमन, फ्रेंच और अंगरेजी तीनों भाषाओं में यात्रियों को समझाया पहले भी हम ने बर्लिन के बारे में पढ़ रखा था उस की बातों में विशेषता यह जरूर थी कि अपने शहर की तारीफ वह इस ढंग और

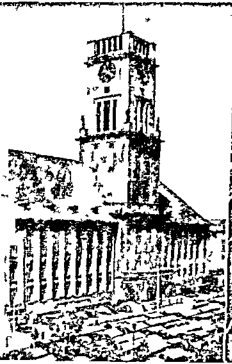

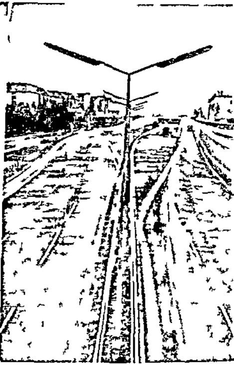

बर्लिन का प्रसिद्ध टाउनहाल दाए यातायात की सुविधाओ को बढाने के *लिए पश्चिमी बर्लिन म बनाया गया राज माग*

इस लहजे में कर रहा था जैसे कोई रिकाड बज रहा हो एक फ्रेंच यात्री बोल उठा "मोशिए, अब हमें अधिक मत ललचाइए, चलिए अपनी स्वगपुरी के दर्शन करा दीजिए"

लगभग नौ बजे रवाना हुए बस की छत और चारो तरफ की खिडकिया शीशे की थीं जिस से सभी दृश्य साफसाफ दिखाई देते थे गाइड के बैठने के लिए एक ओर ऊची सीट लगी थी माइक से वह हमें सब जानकारी देता जा रहा था लदन और पेरिस की तरह यहां भी बडेबड बागबगीचे ह यूरोप के देशों में अपनी राजधानी को सजीली और सुदर बनाने की होड सी मध्ययुग में रहती थी बिसमाक और सम्राट विलियम केजर ने बर्लिन को अय राजधानियों से अधिक भव्य बनाने का प्रयास किया था लेकिन भला इद्रपुरी पेरिस के वैभव और सुदरता के समकक्ष पहुच पाना कहा सभव था! हिटलर ने भी इसे बढाया किंतु उस की प्रेरणा से बने मकान पार्टी और युद्ध के खयाल से बनाए गए थ बडेबडे ह जरूर, पर कलात्मक अभिरुचि का इन में स्पष्ट अभाव है

टायर गार्टन नामक बडे उद्यान से हमारी बस धीरेधीरे जा रही थी इस बगीचे के बीच में '१७ जनवरी' नाम की एक सडक जाती है उद्यान के पश्चिमी किनारे पर १२५ वष पुरानी एक पशुशाला है १९४४ ४५ में यहां के बहुत स पशुपक्षी बमबारी में मारे गए बहुत बडी राशि व्यय कर दुलभ पशुपक्षियों को

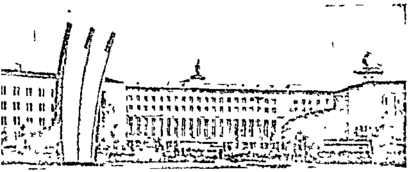

आधुनिकता की होड में निरंतर आगे बढ़ते हुए बर्लिन की एक शानदार इमारत

संसार के विभिन्न देशों से मंगा कर इसे फिर से सजाया गया है.

यहां थोडी देर हम रुके. छोटेछोटे बच्चे मातापिता की उंगलियां पकड़े गौर से हाथी, गेंडे, भालू आदि देख रहे थे. उन की भाषा भले ही समझ में न आ रही थी पर भाव स्पष्ट थे. कोई पूछता था, "कितना खाता होगा?" कोई अपनी नाक दिखा कर कहता था, "इस के जैसी बना दो!" हमारे साथ भी बच्चे थे. समय हो गया था इसलिए माताएं पकडधकड कर उन्हें बस में ले जाना चाहती थीं और वे इधरउधर बच निकलते थे. आखिर हम लोगों को मदद करनी पड़ी. सभी देशों के बच्चे एक सरीखे चपल होते हैं- चाहे काले हों- पीले हों या गोरे.

इस के बाद हम हंसा क्वार्टर आए. पिछली रात पैदल यहां घूम चुके थे. डलहम म्यूजियम हमें हंसा क्वार्टर के बाद दिखाया गया. यह संग्रहालय युद्ध के पहले विश्व का एक बेहतरीन म्यूजियम माना जाता था बमबारी में इसे बहुत क्षति उठानी पड़ी. फिर भी रेंब्रा के २६ दुर्लभ चित्र किसी प्रकार बच गए. इन में तीन दुर्लभ चित्र 'स्वर्ण बख्तर मनुष्य' 'डेनियल का स्वप्न' तथा 'सेम्सन' और 'दलाइला' भी हैं. रूबेन के भी १४ चित्र यहां हैं. ये सब कैजर के निजी से संग्रहालय लाए गए हैं.

केवल इन्हीं अद्वितीय कृतियों के कारण यह संग्रहालय आज अपने गौरव को बचा पाया है. इस के अलावा यहां की एक अमूल्य निधि है. प्राचीन मिस्र की महारानी नेफ्रोनीनी के मस्तक की प्रतिमूर्ति. तीनसाढ़ेतीन हजार वर्ष पूर्व मिस्र में यह कलापूर्ण प्रतिमा बनाई गई थी. वैसे पत्थर की मूर्तियां भी मिली हैं पर वास्तविक चेहरे से एकदम मिलतीजुलती इतनी पुरानी प्रस्तरमूर्ति यहीं मिली है. हमारे यहां बाइसतेइस सौ वर्ष पहले की बनी गौतम बुद्ध की अनेक मूर्तियां मिल जाती हैं पर वे वास्तविक प्रतिमूर्ति हैं या नहीं, इस का निर्णय नहीं हो सका है.

हवेल नदी के किनारेकिनारे ग्रेनवाल के राजपथ से गुजरती हुई हमारी बस ओलंपिक स्टेडियम पहुंच गई. १९३६ के विश्व की क्रीडा प्रतियोगिता के लिए इस का निर्माण हुआ था. १६ मंजिलों की ऊंचाई के इस विशाल स्टेडियम में एक लाख से भी अधिक दर्शकों के बैठने के लिए स्थान है. रेस्तोरां, विश्रामकक्ष, पुस्तकालय, वाचनालय तथा अन्य सुविधाएं भी यहां उपलब्ध हैं.

स्टेडियम से थोडी दूरी पर हम एक कृत्रिम पहाडी पर पहुंचे. मन में एक

कुतूहल सा हुआ कि राजस्थान की तरह यह धूल का टिब्बा इस हरियाली के बीच कैसे बना? गाइड ने बताया, "१९४० के अगस्त से १९४५ के अप्रैल तक मित्र-राष्ट्रों ने बर्लिन पर साढे बाइस लाख मन बम गिराए इस के अलावा १९४५ अप्रैल के सिर्फ दस दिनो में जब नाजी विमानभेदी तोपें ठंडी हो चुकी थीं, सोवियत रूस ने ग्यारह लाख मन बम बरसा कर सारे शहर को तहसनहस कर दिया रूस ने स्टालिनग्राद के युद्ध का बदला इस ढग से चुकाया इस में बेगुनाह नागरिको की जानें गई और अस्पताल, स्कूल, पवित्र गिरजे तथा ऐतिहासिक स्मारक नष्ट हो गए पता नहीं कम्युनिस्ट तत्र का यह कौन सा मानवतावादी तरीका था!"

गाइड की आवाज में व्यग्य तीखा था उस ने कहा कि गिरजों, मकानो, अस्पतालो आदि के नष्ट होने पर जो मलवा बचा, उस में से कुछ को यहा इकट्ठा कर के रख दिया गया है युद्ध की विभीषिका और अभिशाप का यह प्रत्यक्ष नमूना है यह द्वेष, घृणा और स्वार्थ की मानव निर्मित पहाडी है जिसे देख कर खुद मानवता कराह उठती है फ्रैंच यात्री ने कहा, "पोलैंड और स्टालिनग्राद में जरमनो ने कौन सी कमी रखी!"

दोपहर हो गई थी लच के लिए हमें फिर अपने होटल वापस आना पडा

भोजन और कुछ देर विश्राम के बाद फिर उसी बस से घूमते हुए करीब तीन बजे हम यहा का विजयस्तभ देखने पहुचे २१० फुट ऊचा यह स्तभ १८७० में फ्रास पर जरमनी की विजय की स्मृति में बनाया गया था हम इस के ऊपर चढे लगभग सारा बर्लिन यहा से दिखाई देता है १९३३ में हिटलर द्वारा जलाई गई राइख चासलरी भी दिखाई पडी पूर्वी बर्लिन की हलकी सी झाकी भी यहा से देखने को मिल जाती है

हम जुलाई के दूसरे सप्ताह में यहा आए थे उस समय तक ग्रीन वीक समाप्त हो चुका था जून में यहा ग्रीन वीक यानी 'हरित सप्ताह' का मेला लगता है इस मेले में जरमन किसान अपनी उपज के बेहतरीन नमूने पेश करते है कृषि की उन्नति कैसे की जाए, इस के लिए विभिन्न यत्र और साधनो की प्रदर्शनी लगती है गाइड ने हमें जरमनी की कृषि योजना का परिचय दिया, जो तथ्यों पर आधारित था उस ने बताया कि यहा चलाई गई योजना के अनुसार छोटे छोटे रकबों को मिला कर बडा किया गया है इस से यात्रिक कृषि में अधिक सुविधा हो गई है और उपज भी बढाई जा सकी है आज पश्चिम जरमनी अपने खाद्यान्नो के लिए आत्मनिर्भर है अब तो अन्न और कृषि की अन्य वस्तुओ का निर्यात भी यहा से हो रहा है फलो की खेती भी खूब बढी है

उत्सवो का ब्योरा देते हुए उस ने बताया कि कला उत्सव सितबर में मनाया जाता है इस अवसर पर नाना प्रकार के वाद्ययत्रो का वादन, गीत और नाट्य रूपको का आयोजन होता है विदेशों से लाखो की सख्या में लोग आते हैं

गाइड विश्वप्रसिद्ध सगीतकार मोजर्ट और वेगनर की खूबिया बता रहा था उस की बातो में रस जरूर रहा होगा पर हम इस विषय में कोरे थे एक सहयात्री ने, जो शायद अमरीकी था, स्टेट लाइब्रेरी और राइख चासलरी दिखाने के लिए कहा लाइब्रेरी प्रोग्राम में थी नहीं इसलिए हम केवल चासलरी देखने गए

गाइड ने बताया कि ससार के इतिहास में जघन्य अपराध का शायद ही ऐसा

ुद्ध के बाद सन १९४५ के वसत में बर्लिन की एक उजाड गली का चित्र

कोई दूसरा दृष्टात मिले कि देश का सर्वोच्च शासक खुद अपने ही सचिवालय को भस्मसात करा दे जनवरी सन १९३३ में हिटलर चासलर चुना गया और ठीक एक महीने बाद यानी २७ फरवरी को उस ने अपने नाजी गुप्तचरो के जरिए चांसलरी के भव्य प्रासाद को खाक में मिलवा दिया, ऊपर से ढिढोरा पीटा कि साम्यवादियो की साजिश से यह दुष्कर्म हुआ है इस प्रकार उस ने जरमनी की साम्यवादी पार्टी को अवैध करार दे दिया और नाजी पार्टी के प्रति जरमन जनता का मन जीतने का प्रयास किया

चासलरी को देखने पर लगता है कि यह कार्यालय दिल्ली के हमारे सचिवालय से भी बड़ा रहा होगा इस की कराहती हुई टूटीफूटी अधजली दीवारें आज भी अपने अतीत की गरिमा बताती है शायद स्मृति बनाए रखने के लिए ही इसे इसी हालत में छोड रखा गया है

शाम को हम लोग होटल वापस लौटे लाउज तक पहुचा कर गाइड ने शिष्टतापूर्वक विदा ली हम ने देखा कि हमारे कुछ साथी गाइड को स्वेच्छा से कुछ भेंट कर रहे है हम ने भी एकएक मार्क (दो रुपए) दिया

थकान मिटाने के लिए काफी मिली आम तौर से यहा बिना-दूध और चीनी के काफी पीते है हम ने भी कोशिश की मगर गले में जलन और मुह में कडवाहट भर गई काफी से भी ज्यादा यहा बीयर पीने का प्रचलन है दरअसल बीयर को तो लोग पानी की तरह पीते हैं करीब एक रुपए में एक बोतल अच्छी बीयर मिल जाती है पुरुष, स्त्रियां, छात्र, मजदूर सभी पीते है – दूसरे देशो की अपेक्षा बीयर की खपत प्रति व्यक्ति यहा कहीं अधिक है

रात्रि में मिस्टर डिटमार के साथ रेस्तोरा में भोजन करने गए पतिपत्नी दोनो अगरेजी जानते थे इसलिए बातचीत और विचारो के आदानप्रदान में कठिनाई नहीं हुई इन देशो में निमत्रण पर भोजन का अर्थ है दोढाई घटे का कार्यक्रम मीनू के अनुसार एक के बाद एक तश्तरी आती है और साथ में नाना प्रकार के पेय भी चलते रहते हैं खाने की टेबल पर ही व्यापारव्यवसाय, राजनीति, प्रमविवाह आदि के महत्वपूर्ण मसले तय हो जाते है

हम जरमनी के बारे में और भी जानना चाहते थे मैं ने श्रीमती डिटमार से जानना चाहा कि महायुद्ध का परिणाम यहा की जनसख्या पर अवश्य पडा होगा, स्त्रियो की सख्या पुरुषो से बढ गई होगी

उन्होंने बताया कि यह युद्धों की स्वाभाविक प्रक्रिया होती है १९४६ में प्रति हजार पुरुषों पर ११६ स्त्रिया अधिक थीं पर इन अठारह वर्षों में जनसख्या बढी है और असतुलन अब कम हो गया है उन से जानकारी मिली कि वे लोग अब परिवार नियोजन पर भी ध्यान देने लगे हैं पिछली शताब्दी में औसत जरमन परिवार में पाच सदस्य होते थे, जब कि आज औसत केवल साढे तीन सदस्यों का है

जरमनी में हमारे यहा की तरह स्त्रीपुरुषो के पारस्परिक मेल पर सामाजिक प्रतिबध नहीं है बल्कि युद्ध के बाद कुछ समय तक तो उसे प्रोत्साहन दिया जाता रहा वहा विवाह योग्य अवस्था पुरुषो के लिए चौबीसपचीस वर्ष है और स्त्रियों के लिए बाईसतेईस वर्ष स्वेच्छा से विवाह होते हैं और तलाक की सुविधा है फिर भी जरमनी में पारिवारिक व्यवस्था सुगठित है हाल में जो सर्वे हुआ उस के अनुसार दस हजार व्यक्तियो में से केवल पैतालीसपचास तलाक के लिए न्यायालयो में आए

जरमनो का दैनिक जीवन नियमित है सुबह आठ बजे तक लोग घर से काम पर चले जाते हैं इस से पूर्व गृहिणी नाश्ता तैयार कर लेती है नाश्ता साथ ले जाते हैं बच्चो का स्कूल या किंडरगार्टन यदि रास्ते में पडा तो पिता या माता स्कूल में छोडते जाते हैं शाम को पाच बजे काम से लौटने पर साथ ले आते हैं

दसग्यारह वर्ष तक के छोटे बच्चों को रात के सातआठ बजे तक सुला दिया जाता है बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह परपरा अच्छी लगी इतवार या छुट्टी का दिन त्यौहार की तरह आमोदप्रमोद, सैरसपाटे में बीतता है वृद्ध मातापिता अलग रहते हैं उन्हें सरकारी पेंशन मिलती है आठदस दिन में वे एक बार अपने परिवार के लोगों से मिलने चले जाते हैं बहुत वृद्ध हो जाने पर वृद्धालयों में चले जाते हैं

जरमन मुद्रा के बारे में पता चला कि विश्व के किसी भी देश के मुकाबले में मार्क की साख कम नहीं है कारण यह कि जरमनी का बजट सतुलित है आयात से निर्यात अधिक है उद्योगधधे इतने अधिक हैं कि उन के लिए जरमन श्रमिक पूरे नहीं पडते लगभग ढाई लाख विदेशी मजदूर जरमनी के कारखानों में काम पर लगे हुए हैं अलगअलग कामों के लिए मजदूरी में फर्क जरूर है फिर भी प्रत्येक को लगभग पदरह सौ रुपए से अठारह सौ रुपए तक प्रति मास मिल जाते हैं खाद्य सामग्री और देशों की अपेक्षा सस्ती है फलदूध, मांसमछली की बहुतायत है हम ने आकडों के अनुसार देखा कि जरमनी में प्रत्येक व्यक्ति को लगभग सवा सेर दूध, आठ औंस मास या मछली, चार औंस चीनी प्रति दिन मिल जाती है हम अपने देश में तो इन सारी सुविधाओं की कल्पना भी नहीं कर सकते रात साढे ग्यारह बजे तक डिनर चलता रहा इस के बाद वे अपनी गाडी में हमें होटल पहुचा गए

बर्लिन

दो विरोधी शक्तियों के राजनीतिक दांवपेच की कसौटी . . .

अगले दिन सुबह नाश्ता कर के हम लोग पूर्व बर्लिन के लिए रवाना हुए. पश्चिम जरमनी के नागरिकों के प्रवेश पर यहां कड़ा प्रतिबंध है पर अन्य देशवासियों के लिए नहीं. पासपोर्ट और वीसा दिखाने पर अनुमति मिल जाती है. भारत और सोवियत रूस के आपसी संबंध अच्छे रहे हैं इसलिए हमारे लिए अड़चन का सवाल ही नहीं था, फिर भी पश्चिम बर्लिन से आने वाले शाम के ८ बजे तक ही रुक सकते हैं, उस के बाद उन्हें वापस चला जाना पड़ता है.

मेरे मन में एक कुतूहल था, आज की बहुप्रचलित दो प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं—साम्यवाद और पूंजीवाद—की सफलता और परिणाम को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिल रहा था. बर्लिन के अलावा ऐसा अवसर विश्व में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है.

बर्लिन वास्तव में पूर्व जरमनी की ही राजधानी है, जब कि पश्चिम जरमनी की राजधानी है बोन. यह पूर्व जरमनी के मध्य भाग में है. पश्चिम जरमनी की सरहद से लगभग सौ मील दूर. सन १९४८ में रूस ने बर्लिन में बाहर से माल आने पर रोक लगा दी थी.

उस समय एक बार तो वहां निराशा और घबराहट फैल गई क्योंकि बीस लाख व्यक्तियों के जीवनमरण का सवाल था पर उन करीब ग्यारह महीनों में अमरीका तथा मित्र राष्ट्र सोलह लाख टन खाद्यान्न तथा दूसरे जरूरी सामान हवाई जहाज द्वारा यहां लाए. उस समय अनेक प्रकार की कठिनाइयां बर्लिनवासियों ने सहीं. पर केवल चार प्रति शत लोगों ने पूर्व बर्लिन से राशन लिया.

उस एक वर्ष में अमरीका को १३० करोड़ रुपए सामान लाने के लिए खर्च करने पड़े. जब किसी प्रकार समझौता संभव नहीं हुआ तब मित्र शक्तियों ने सोवियत गुट के देशों के माल के आवागमन पर प्रतिबंध लगा दिया. तब जा कर संयुक्त राष्ट्रसंघ के बीचबचाव से घेरा उठाया गया पर फिर भी छुटपुट झंझट चलते ही रहे. राजनीति के इन दावपेचों ने बर्लिन को कसौटी बना दिया है. हम ने देखा कि गणतंत्रीय व संसदीय व्यवस्था शहर के पश्चिम भाग का इन २० वर्षों में बहुमुखी विकास करने में सफल रही है.

दूसरी ओर जो साम्यवादी यह दावा करते हुए नहीं थकते कि उन की व्यवस्था ही मानव के कल्याण का एकमात्र निदान है, तो आज तक वहां बारह लाख नागरिकों

के जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते इसी लिए जान जोखिम में डाल कर भी वर्षों तक पूर्व बर्लिन से भाग कर पश्चिम में आते रहे हैं बर्लिन के सीने पर दोनों के निशान उभर रहे हैं प्रत्यक्ष देखने पर खरेपन का खुद ही अदाज हो जाता है

दोनों बर्लिन के बीच की दीवार के पास हम पहुंचे ही होंगे कि हमें कुछ तनाव का सा वातावरण मिला लोगों की शक्ल पर चिंता दिखाई पड़ी कइयों ने यह भी बताया कि उस पार जाना आज शायद न हो

मेरे मन में एक सरसराहट सी हुई प्रभुदयालजी के मना करने पर भी मैं ने दलील दी कि हमारे लिए भय की कोई बात नहीं है लोगों के कामकाज ठीक हैं सभी चल फिर रहे हैं ऐसी स्थिति में खतरे का अदेशा नहीं है फिर हम तो भारतीय नागरिक है, जिन्हें कई बार पूर्वी यूरोपीय देश विभिन्न जलसों में बुलाते रहते ह

हम फीड्रिश स्ट्रेशों से दीवार की ओर बढ़े दीवार के करीब आने पर हमें पश्चिम बर्लिन के प्रहरियों ने रोका एक पुलिस वाले ने बताया कि पिछली रात दीवार का एक हिस्सा पूर्व बर्लिन से भागने की कोशिश करने वाले किसी व्यक्ति ने बम से उड़ा दिया है रूसी सैनिक अधिकारियो का आरोप है कि पश्चिम बर्लिन के अधिकारी वर्ग की साजिश है कि इसी तरह समूची दीवार गिरा दी जाए यह जरमन साम्यवादी सरकार के सार्वभौम अधिकार पर गहरी चोट है जिसे बरदाश्त नहीं किया जा सकता इस का प्रतिकार होगा, हरजाना लगेगा जो व्यक्ति बम के धड़ाके से मरा है उस के लिए क्षतिपूर्ति करनी होगी आदिआदि इस के पहले ख्रुश्चेव ने अमरीका तथा दूसरे राष्ट्रों को कई बार कड़ी चेतावनी भी दी थी और यहा तक प्रचार किया गया था कि पूर्व बर्लिन से जाने वाले पुरुषों से तो गुलामों की तरह काम लिया जाता है और महिलाओं को वेश्यालयों में भज दिया जाता है

मेरी समझ में माया नहीं आ रही थी पर लोग खाराग मना देते थे प्रभुदयालजी कोट का पल्ला बारबार खींच कर वहा से हटने के लिए इशारा कर रहे थे, मगर मुझे छोड़ कर खुद हटना भी नहीं चाहते थे मैं सोचने लगा कि पश्चिम जरमनी से इतनी दूर बर्लिन के पश्चिम भाग के इन मुट्ठी भर सैनिकों का तो मिनटों में सफाया हो सकता है भागने की गुजाइश भी कहा? भागेंगे भी तो साम्यवादी इलाका ही चारो ओर है इतने में देखा एक अमरीकी अफसर खाली हाथ अकेले ही दीवार की ओर बढ़ रहा है वह ठीक वहीं पहुचा जहां उस पार मचान पर से रूसी अफसर माइक से गरज रहा था उस ने क्याक्या बातें कीं, सुन नहीं पाया लेकिन हावभाव से पता चला कि बड़ी सजीदगी से वह कुछ समझा रहा था थोड़ी देर बाद देखा रूसी सगीनें झुक गईं वह अफसर मुसकराता हुआ लौट रहा था नाटो संधि के कारण पश्चिम जरमनी अमरीकी गुट में है सोवियत रूस ने पूर्व जरमनी और बर्लिन से अपनी सेना नहीं हटाई है, इसलिए बर्लिन की सुरक्षा और जरमन सघीय सरकार (पश्चिम जरमनी) के सहयोग के लिए अमरीकी फौजी दस्ता इस समय तक भी यहां रखा गया है

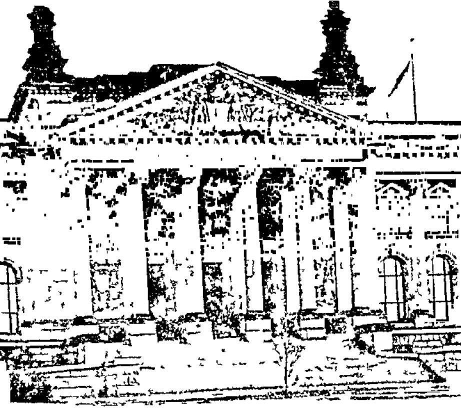

आवागमन पूर्ववत चलने लगा मैं सोचने लगा कि सचमुच ही बर्लिन शीत-युद्ध के बारूद के एक ऐसे अबार पर बैठा है, जो जरा सी चिनगारी से भडक उठेगा और तब तृतीय विश्वयुद्ध हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं अमरीका और रूस दोनो ही यहा हर घडी टकरा सकते हैं दोनो की प्रतिष्ठा और मर्यादा बर्लिन के मसले में दाव पर लगी है, कोई झुकने या हटने वाला नहीं लगता

हम ने देखा कि दीवार की पश्चिमी ओर चौडी, उजडी और वीरान पट्टी है इस में झाडिया उगी है बीचबीच में सलीबें (क्रास) भी हैं ये उन लोगो की यादगार हैं, जिन को पूर्वीय भाग से भागने की कोशिश करते समय रूसी प्रहरियो ने गोली से उडा दिया था दीवार के करीब जगहजगह रेस्तोरा और छोटी-छोटी दुकानें भी देखने में आई हमारे यहा मदिरो के आसपास काशी, प्रयाग, हरिद्वार में जैसे महात्म्य की सचित्र पुस्तकें मिलती हैं उसी तरह की किताबें यहा भी मिलती हैं, जिन में इस दीवार का इतिहास रहता है और तसवीरें भी

बर्लिन की दीवार को देख कर लगता है कि आज का सभ्य कहलाने वाला मनुष्य कितना जगली और बर्बर है! इस के बनाते समय आसपास की खूबसूरत इमारतें या उन के हिस्से गिरा दिए गए और वहा भोडे आकार के भूरे पत्थर चिन दिए गए कहींकहीं तो मकानो के दरवाजों और खिडकियो में पत्थर लगा दिए गए हैं ऊचे मचान जगहजगह बने हैं इन पर रातदिन मशीनगन साधे सोवियत प्रहरी डटे रहते हैं दूरबीन, सर्चलाइट, लाउडस्पीकर इस ढग से फिट हैं कि कोई चिडिया भी यदि पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़े तो पता चल जाता है—आदमी की

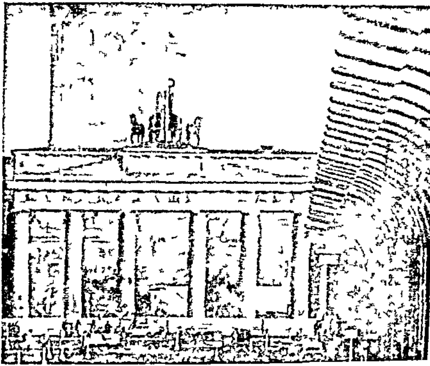

पूर्व और पश्चिम बर्लिन के बीच स्थित ब्रेडनबर्ग द्वार शहर को दो हिस्सों में बांटने वाली दीवार का एक अंग भी दिखाई दे रहा है

तो बात ही क्या! फिर भी मुक्तिकामी प्राणों की बाजी लगा कर दीवार फांदने की चेष्टा करते हैं दीवार के पास कहीं टैंक हैं और कहीं सैनिकों की टुकड़ियां कानून इतना कड़ा है कि बढ़ता हुआ व्यक्ति यदि 'हाल्ट' कहने पर रुक न जाए तो उसे वहीं गोली से उड़ा दिया जाता है फिर भी पिछले १० वर्षों में लगभग बीस लाख व्यक्ति दीवार फांद कर पश्चिम हिस्से में आ गए हैं

युद्ध के बाद जरमनी की बंदरबांट हुई इस का लगभग एकतिहाई भाग सोवियत रूस ने दबा लिया, जिस में १०८ लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल और डेढ़ करोड़ की आबादी थी पश्चिम जरमनी के २४८ लाख किलोमीटर क्षेत्रफल और पांच करोड़ की आबादी के दोतिहाई भाग के हिस्सेदार बने अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस इसी तरह जरमनी की राजधानी—बर्लिन के टुकड़े हुए मित्र राज्य तो अब हट चुके हैं किंतु रूसी अभी तक जमे हैं उन्हें भय है कि साम्राज्यवादी शक्तियां पूर्व जरमनी को हड़प न जाएं

जो भी हो जरमनी और खास कर के बर्लिन के इस बटवारे से बड़ी समस्याएं पैदा हो गईं आपस में एक ओर तो बेटेबेटी दूसरी ओर दोस्तमित्र, प्रेमीप्रमिका सभी बिछुड़े आज यह एक ऐसा शहर है जिस में परिवार बंटे हैं पानी और बिजली बंटी है, होटल रेस्तोरां थिएटर, सिनेमा बंटे हैं, प्रशासन भी बंटे हैं खड़ी है बीच में भद्दी, मोटी, पत्थर की कांटों वाली दीवार पार करना तो दूर,

पश्चिम बर्लिन में स्थित सतरहवी शताब्दी का एक राजमहल अब यह एक शानदार अजायबघर है दाए बर्लिन के हसा उपनगर में आधुनिक ढग मे बनाया गया एक गगनचुबी भवन

पास जाने में भी भय लगता है

युद्ध के बाद जरमनी के दोनो भागों में ठीक उसी तरह तनाव है जैसा भारत और पाकिस्तान में पश्चिमी भाग की प्रगति तीव्र रही उस की आर्थिक समस्याए सुधरती गई किंतु पूर्व भाग में विकास का क्रम मद रहा है रूस उन वर्षों में स्वय युद्ध जर्जरित था इसलिए उस ने इस की उपज से उचितअनुचित तरीकों से लाभ उठाया सभवत· यह भी एक कारण हो सकता है

पश्चिम जरमनी के शिल्पोद्योग की प्रगति आर्थिक सुदृढ़ता और जीवन ने साम्यवादी व्यवस्था में रहते हुए लोगों को स्वाभाविक रूप से आकर्षित किया परिणाम यह हुआ कि पूर्व जरमनी से प्रति दिन हजारो की सख्या में लोग पश्चिम बर्लिन पहुचने लगे फलत पूर्व जरमनी में कारीगर, मजदूर और विज्ञानविदों का अभाव हो गया उस के कलकारखाने ठप्प होने पर आ गए इसलिए इस बाढ को रोकने के लिए सोवियत रूस ने शहर के बीचोबीच खडी कर दी बर्लिन की दीवार

सन १९६२ के आरभ में सोवियत नियंत्रित पूर्व जरमन अधिकारियों ने योजना बनाई कि विभाजन के अनुसार सरहद पर ३३८ मील लबी एक दीवार बना दी जाए ताकि लोग भाग कर पश्चिमी हिस्से में न जा सके सन १९६२ के अत तक दीवार बनी औसत ऊचाई सात फुट है, कहींकहीं इस से भी ऊची बीचबीच में लगभग सोलह फुट खुली जगहे भी है, जिन में काटो के तार लगे है पश्चिम बर्लिन के आसपास जहा तालाब और झीले है उन में नावो पर खूट लगा

कर कटीले तार लगा दिए गए हैं और इन पर मशीनगनें बैठा दी गई हैं

जरमनी के शरणार्थियों के बारे में जो आकडे मिले हैं उस के अनुसार सन १९६१ तक २३ १० लाख शरणार्थी पश्चिम जरमनी में भाग आए थे इन में विद्यार्थी, डाक्टर, इंजीनियर और प्रोफेसर तो थे ही पर आश्चर्य हुआ यह जान कर कि हजारों साम्यवादी सैनिक भी भाग कर पश्चिम जरमनी में आ गए यह सिलसिला अब भी जारी है

औद्योगिक या आर्थिक प्रगति का अदाज इसी से चल जाता है कि पश्चिम जरमनी का वार्षिक आयातनिर्यात है २०,५०० करोड रुपयों का, प्रति व्यक्ति वार्षिक आय है लगभग दस हजार रुपए, जब कि पूर्व जरमनी का है, ३,७४० करोड का और प्रति व्यक्ति वार्षिक आय है तीन हजार रुपए के लगभग भारत में प्रति व्यक्ति की आय है ३४० रुपए वार्षिक

पूर्व बर्लिन में प्रवेश करते समय हम ने देखा कि हमारी तरह साठसत्तर अन्य लोग भी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं इन में अमरीकी, फ्रांसीसी, चीनी, अफ्रीकी, अरब आदि भी थे

जाच की रस्म बडी कडी थी यूरोपीय विशेषत जरमनो के पासपोर्ट की जाच बारीकी से की जा रही थी इस के लिए खुर्दबीन तक काम में लाया जाता था चौकी से आगे बढ़कर हम दीवार के पार आ गए अब जरमन साम्यवादी भूमि में हमारे कदम थे घुसते ही लगता था कि हम किसी और दुनिया में आए हैं कई प्रकार की प्रचार सामग्री हमें दी गई, जिस में साम्यवादी सरकार की प्रगति का ब्योरा था इन पर विदेशी अतिथियों की सम्मति भी दे दी गई थी

शाम को आठ बजे तक का समय था अतएव शहर को बस से व पैदल घूम कर देखने का निश्चय किया यहा के प्रसिद्ध राजमार्ग अडेनडेन लिंडेन को देखा कहा जाता है कि युद्ध के पूर्व यह बहुत ही शानदार था, दोनों ओर बडेबडे मकान थे और छायादार वृक्षों की कतारें थीं बमबारी से ध्वस हो गया था जिस तेजी से पश्चिम बर्लिन ने स्वय को खडहर से निकाल दिया है, वैसा यह भाग नहीं कर पाया है सडकों को सवारने की चेष्टा जरूर की गई है पर कसर अब भी काफी है बर्लिन की प्रसिद्ध सस्थाए इसी अचल में रह गई हैं स्टेट लाइब्रेरी, आपेरा हिटलर का दफ्तर, हमबोल्ट विश्वविद्यालय इत्यादि

यहां घूमते समय लगता है कि पश्चिम बर्लिन की तरह गति, कहकहे, आनद और उल्लास की झलक लोगों की शक्लों पर नहीं दिखती ऐसे वातावरण में पर्यटक का उत्साह ठडा पड जाता है

विलहेल्म स्ट्रासे पर चासलरी देखने गए हिटलर के समय में यह उस का हेडक्वाटर था उस ने इसी तहखान में आत्महत्या की थी बमबारी और गोलियों की बौछार, के चिह्न और मलबे के ढेरों को देख कर मन में स्वत एक भावना उठ जाती है कि हजारों वर्ष जीवित रहने की महत्वाकाक्षा वाला तृतीय राइश हिटलर ने जरमनी को शक्ति, वैभव और गौरव के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ा दिया, और फिर उसे ऐसा सोंचा कि वह गहरे गड्ढे में आ गिरा—लज्जित और श्रीहीन

दूसरे महायुद्ध ने बर्लिन को तहसनहस कर दिया था लेकिन वहा के लोगो ने हिम्मत नही हारी और दुगुने उत्साह से पुनर्निर्माण कार्य में जुट गए

हिटलर के बारे में युद्ध के दिनो में हमारे यहा बडी भ्रात धारणाए फैली थीं यह बाल ब्रह्मचारी है, निरामिष भोजी है, उस में तप और तेज है इत्यादि बाद में पता चला कि परले सिरे का भोगी और क्रोधी था वह पढ़ालिखा बहुत साधारण था इसी राइख के तहखाने में उस ने आत्महत्या के एक घंटा पहले अपनी प्रेयसी इवा ब्राउन से विवाह किया उस समय बाहर रूसी तोपें लोहे की मोटी चद्दरों से मढी, इस की दीवारो पर मौत के नगाडे बजा रही थीं इसी में अलग तहखाने में उस का अनन्य भक्त गोयबल्स विष की गोलिया खा कर सदा के लिए सो चुका था रूसी सैनिक राइख के तहखाने में घुसे तब आग में हिटलर की लाश जल चुकी थी

राइख के पास ही मार्क एंजेल्स प्लाजा है यहा बडेबडे प्रदर्शन और रैली के आयोजन हुआ करते हैं ऐतिहासिक स्थान, लाइब्रेरी, विश्वविद्यालय सडक—सबों के नाम यहा बहुत कुछ मार्क्स, एंजेल्स, लेनिन और स्टालिन पर हो गए है मगर स्टालिन के मरते ही ख्रुश्चेव द्वारा उठाई गई विरोध की लहर में उस का नाम सोवियत भूमि और उस के अधिकृत देशो में मिटाया जाने लगा पूर्व जरमनी और पूर्व बर्लिन में भी यही चल रहा था

फ्रांक फुर्टर एली, लगभग तीन मील लंबी सडक है यही एकमात्र राजपथ है, जिस पर सोवियत अधिकारियो की नजर गई है चौडी सडक के दोनो ओर वृक्षो

पश्चिम बर्लिन में स्थित एक उद्यान इसे उद्यान कला की आधुनिकतम शैलियों से सजाया गया है

की कतारें हैं. हलके पीले रंग के बड़ेबड़े मकान रूस के युद्धोत्तर वास्तुशिल्प का परिचय देते हैं. इस का नाम बदल कर स्तालिन एली रखा गया था, पर सन १९६१ में कार्लमार्क्स एली कर दिया गया है.

घूमतेफिरते एक रेस्तोरां में हम कुछ जलपान के लिए पहुंचे. काफी और सैंडविच ली. दाम पश्चिम से ज्यादा थे. अगर अनधिकृत तरीके से सिक्के बदल लेते तो किफायत हो जाती, पर साम्यवादी देशों में इस प्रकार का खतरा मोल लेना बहुत महंगा पड़ता है. यहां पर जरमन, रूसी, फ्रांसीसी और दोएर

चीनी भी दिखाई पड़े. घूमते समय हमें स्थानीय किसी भी व्यक्ति से चर्चा करने का सुयोग नहीं मिला. संभव भी नहीं था, क्योंकि इस पार की दुनिया लोह दीवार का देश है. मन में उत्सुकता थी कि इस पार रहने वाला जरमन मिल जाता.

एक आकर्षक लड़की ने बड़ी संजीदगी से पास की खाली कुरसी पर बैठने की अनुमति मांगी. मैं ने कहा, 'खुशी से.'

एक ने बियर के लिए आर्डर दिया फिर बदल कर कहा, "अच्छा, काफ़ी ले आओ."

"शायद आप दोनों भारतीय या पाकिस्तानी हैं," उस ने साफ़ अंगरेजी में कहा. बातचीत का सिलसिला चल पड़ा. उस ने जानना चाहा कि कैसा लगा पूर्व बर्लिन.

मैं ने अपने मन की प्रतिक्रिया बता दी कि उतना आकर्षक और उल्लासपूर्ण नहीं जितना कि पश्चिम बर्लिन है. मैं ने उसे यह भी बताया कि हमारी धारणा है कि पूर्व जरमनी की शासन सत्ता पूर्णतः सोवियत रूस के हाथ में है, इसी लिए यहां की सरकार में केवल साम्यवादी हैं.

फ्राउ (युवती) ने हमें जानकारी दी, "यहां साम्यवादियों का प्रभाव अवश्य अधिक है, पर कई सरकारी पदों पर गैर साम्यवादी भी हैं. रूस की तरह दल का सदस्य होना यहां आवश्यक नहीं."

"पूर्व जरमनी को जरमन भाषा में 'डोइशे डेमोक्रातिशे रीपब्लिक' अर्थात 'जरमन गणतंत्र राज्य' कहते हैं. इस के संविधान के अनुसार देश के शासन का अधिकार श्रमिक, कृषक एवं बुद्धिजीवियों के हाथ में है. यहां की सब से बड़ी पार्टी है समाजवादी एकता पार्टी. कम्युनिस्ट और समाजवादी गणतन्त्री (सोशल डेमोक्रेट) इन दोनों दलों को मिला कर अब एकता पार्टी बनाई गई है. यह अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट दल का एक अंग है जिस का केंद्र रूस की राजधानी मास्को में है. देश के शासन में अन्य पार्टियां भी हैं, जैसे कृषक दल, क्रिश्चियन, डेमोक्रेटिक पार्टी इत्यादि. पूर्व जरमनी में संसद के लिए प्रत्येक पांच वर्ष पर चुनाव किया जाता है. शासन और शासकों की निष्ठा के कारण देश में ऐसा वर्ग ही नहीं रह गया है कि विरोध की गुंजाइश हो."

इस अंतिम वाक्य ने मुझे चौकन्ना कर दिया. समझते देर नहीं लगी कि फ्राउ सरकारी जासूस या प्रचारक है. मैं ने कहा, "इतना होने पर १७ जून १९५३ के बर्लिन विद्रोह के लिए तो कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए थी." प्रभुदयालजी ने टेबल के नीचे से मुझे सावधान किया.

फ्राउ घबराई नहीं. उस ने दलील पेश की कि यह बुर्जुआ लोगों की साजिश थी. आलसी और निकम्मों को रोटी और पैसे दिखा कर भड़काया गया था ताकि किसान और मजदूरों का शासन जम न जाए और वे पूर्ववत शोषण करते रहें.

मैं पूछना चाहता था कि फिर क्या ये निकम्मे व आलसी अपनी जान पर खेल कर पश्चिम चले गए, और अब वहां खेत, खलिहान और कारखानों में काम कर के पैसे कमा रहे हैं. जो न जा सके उन में बहुत से गोलों से उड़ा दिए गए और

शेष अब भी पूर्व जरमनी की जेलो में या रूस के कारखानो में बलात काम पर लगाए गए हैं उन के बारे में फोटो छाप कर प्रचार यह किया जाता है कि रूस में विदेशी मजदूरो को भी काम मिलता है पर यह सोच कर कि साम्यवादी देशो में इस प्रकार की आलोचना खतरे से खाली नहीं होती, चुप रह गया

बातचीत का सिलसिला बदल देना पडा मैं ने पूछा, "आप भी क्या पश्चिम जरमनी से घूमने आई हैं?"

"नहीं, मैं यहीं रहती हू, सास्कृतिक रिसर्च कर रही हू हा मेरा छोटा भाई मा और पिता वहीं हैं मैं ने लक्ष्य किया कि फ्राउ अब हमारे पास से दूसरे यात्री के पास जाना चाहती है

रेस्तरा से निकल कर हम बाजार देखने चले गए तरहतरह के फल, मेवे, सब्जिया, मास और अडे बहुतायत में थे किंतु अन्य सामान उतने नहीं थे जितने कि पश्चिम में चित्रशाला और म्यूजियम भी बडे थे मगर समय कम बचा था इसलिए इन्हें ठीक तरह से देखना सभव नहीं था

घूमता हुआ दीवार तक पहुचा सोचता जा रहा था, राजनीति के दावपेंचों में भी कैसी विडबना होती है! भारत बटा, कोरिया विभक्त हुआ, वियतनाम खडित है एक देश, एक भाषा, एक इतिहास और एक ही सस्कृति, मगर खडी कर दी जाती है राजनीति की दीवार! जनता को विभक्त करने के लिए पहले धर्म और सप्रदाय का नारा बुलद किया जाता रहा है, अब बीसवीं सदी में पूजीवाद, गणतत्र, साम्यवाद आदि की दुहाई दी जाती है! सदिया बीतीं, विज्ञान बढा, मगर क्या मनुष्य अपना हृदय बदल सका?

हम दीवार के फाटक पर आ गए हमारी तरह और लोग भी बर्लिन के पश्चिमी भाग में जाने के लिए क्यू लगाए हुए थे उन से पूर्व बर्लिन के बारे में राय लिखने के लिए कहा जा रहा था मैं ने लिखा, 'पूर्व बर्लिन में जीवन का जो रूप देखा, वह सोचनेसमझने की काफी खुराक देता है'

चौथे दिन सुबह हमें वियना के लिए रवाना होना था बर्लिन के पश्चिम भाग में हलहम म्यूजियम, टावर गार्डन, हसा क्वार्टर, विजय स्तभ और पशुशाला आदि दर्शनीय स्थल हम देख चुके थे फिर भी अभी बहुत कुछ देखना बाकी था हमें जरमनी के औद्योगिक एव आर्थिक विकास की जानकारी भी करनी थी बोन स्थित हमारे भारतीय दूतावास के माध्यम से यहां के लडसजनट्राल बैंक (रिजर्व बैंक) के जनरल मनेजर मिस्टर फ्राज सुसान से दिन के तीन बजे मिलने का समय निश्चित था

मिस्टर हिटमार आज फिर अपनी कार ले कर आए उन्होंने पूरे दिन का समय हमें दिया उन की सहायता के बिना बर्लिन जैसे एतिहासिक महानगर को दो दिनों के अल्प समय में देख पाना सभव न हो पाता

इस बार की यात्रा में हमारी धारणा से कम ही खर्च हुआ, क्योंकि कुछ देशों में हम अपने मित्रों के घर अतिथि के रूप में रहे, भारतीय दूतावास की कारें भी मिलती रहीं, ज्यादातर हम दूसरे दरजे के होटलों में ठहरते रहे, इसलिए बचत हो गई बचे हुए रुपयो से हम कुछ खरीदारी करना चाहते थे

बर्लिन के अतीत की शानदार यादगार एक प्राचीन ऐतिहासिक भवन

बाजार में देखा, नाना प्रकार की बेहतरीन वस्तुओ की भरमार है जरमन कैमरा, दूरबीन, टेपरिकार्डर और बिजली के सामान तो दुनिया में मशहूर हैं हागकाग में इन्हीं सब चीजो के दाम हम पचीसतीस प्रतिशत कम देख आए थे इसी लिए इच्छा रहते हुए भी हम ने कुछ नहीं खरीदा

कैजर-मेमोरियल चर्च देखने गए १९४३-४४ की बमबारी में इस का अधिकाश भाग टूट गया था अब फिर से पुर्ननिर्माण किया गया है कुछ भाग इस समय भी टूटाफूटा था, शायद युद्ध की यादगारो के लिए छोड रखा गया है

शहर का बोटेनिकल गार्डन देखा काफी प्रसिद्ध है और बडा भी, पर मुझे हमारे कलकत्ते के बोटेनिकल गार्डन जैसा नहीं जचा,

यहा का ओलम्पिक स्टेडियम हम ने बस से देखा था आज घूमते हुए उसे फिर देखा बहुत ही भव्य और विशाल है वैसे टोकियो में भी एक लाख दर्शको के लिए बना स्टेडियम हम पहले देख चुके थे पर बर्लिन के स्टेडियम में बैठने की सीटो की व्यवस्था और साजसज्जा उस से कहीं अच्छी लगी दुनिया के हर देश से चोटी के खिलाडी विश्व की ओलपिक प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं विशिष्ट दर्शक भी विदेशो से बडी सख्या में आते हैं इसलिए स्टेडियम की व्यवस्था भी उसी के अनुरूप की जाती है

हम ने देखा था कि फिनलड जैसे छोटे से देश ने भी अपने स्टेडियम बनाने में करोडो रुपए खर्च कर दिए थे इस से देश को लाभ भी पहुचता है क्योंकि विदेशी यात्रियो से अच्छे पमाने पर आय हो जाती है और पर्यटन व्यवसाय का प्रचार भी

हो जाता है

मिस्टर डिटमार हमें और भी बहुत से दर्शनीय स्थल दिखाना चाहते थे पर समय काफी हो गया था इसलिए रेडियो टावर देख कर होटल लौट जाना तय किया रेडियो टावर की ऊचाई ५०० फुट है ऊपर तक लिफ्ट से जाने की व्यवस्था है बर्लिन के दोनों हिस्से यहा से साफ देखे जा सकते हैं मोटरों और चलनेफिरने वालो की सख्या देखने से बर्लिन के दोनो भागो की सुखसमृद्धि के फर्क का अनुमान लग जाता है

होटल में लच ले कर लैंडसजनट्राल बैंक में जब मिस्टर फ्राज के कक्ष में पहुचे तो देखा कि और भी तीनचार व्यक्ति बैठे हैं पारस्परिक परिचय हुआ वे सभी बैंक के विभिन्न विभागो के विशेषज्ञ थे उन्हें हमारी बातचीत में हिस्सा लेने के लिए आमत्रित किया गया था इस से काफी सुविधा रही क्योंकि सूचनाए साथसाथ मिलती जाती थीं हमारे वार्तालाप को अगरेजी में बदलने के लिए एक अतर्भाषी भी था और एक स्टेनो भी सारी बाता की टिप्पणिया लिखती जा रही थी

हम ने उन्हें अपनी यात्रा का उद्देश्य बताया हमें बडा आश्चर्य हुआ कि भारतीय बैंकिंग व अर्थनीति और उद्योग विकास के बारे में भी उन की जानकारी है, वे आकडे तक सही बता रहे थे

उन्होंने कहा, "भारत और पश्चिम जरमनी अच्छे मित्र हैं हम स्वय भी बहुत सकट से गुजरे हैं, फिर भी अपनी शक्ति के अनुसार भारत की आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रति वर्ष करते जा रहे हैं हमारा विश्वास है कि विश्वशाति और एशिया के देशों को चीन के खूनी पजे से बचाने के लिए भारत को समृद्ध और सशक्त होना नितात आवश्यक है"

जरमनी के औद्योगिक, आर्थिक और कृषि उत्पादन के सबध में उन्होंने जो आकडे बताए, उन्हें सुन कर ऐसा लगा कि हम किसी जादूई करिश्मे की बातें सुन रहे हैं आकडे सभी १९६३ के दिए गए थ

'जनसख्या ५ ७० करोड, बडे शहरो में बर्लिन, हमबर्ग, कोलोन, एसन और फ्राकफुर्ट खाद्यान्न का उत्पादन १ ५५ करोड टन, बीट सुगर १ २५ करोड टन दूध २ ०८ करोड टन, मक्खनपनीर ६ ३० लाख टन, अडे १,००० करोड, मछली ५६ लाख टन, कोयला और कोक १७ ७३ करोड टन, लिटनाइट १२ २५ करोड और सीमेंट ३ करोड टन मोटरें और ट्रक २७ लाख, रेडियो और टलीविजन सेट ५४ लाख

'दैनिक अखबार निकलते ह १३७५, जिन की बिक्री है २ ३० करोड साप्ताहिक और मासिक पत्रों की सख्या ६,५०० और बिक्री १५ २० करोड

'आप का बजट ९ ५०० करोड राष्ट्रीय आय ६४,००० करोड, यात्रियों की सख्या ६०,००,००० होटलों में शयन की व्यवस्था १२,००,०००, प्रति व्यक्ति वार्षिक आय १०,००० रुपए'

हम मत्रमुग्ध से यह सब सुनते जा रहे थ और नोट कर रहे थे बातचीत का सिलसिला समाप्त हुआ उन्हें धन्यवाद दे कर हम अपने होटल वापस आ गए

बर्लिन के सबसे ऊंचे प्राकृतिक सौंदर्य स्थल—कदयवर्ग दाएं पश्चिम जरमनी के राष्ट्रपति का भव्य निवासस्थान

हालांकि दुनिया में अमरीका और दोएक यूरोपियन देश पश्चिम जरमनी से अधिक समृद्ध हैं किंतु हम तुलना कर रहे थे भारत से हमारा देश इससे नौ गुना बडा है पर राष्ट्रीय आय केवल २०,००० करोड और प्रति व्यक्ति आय ३९१ रुपए मोटर और ट्रकों का उत्पादन अब तक हम केवल पचपन हजार तक ही कर पाए हैं हमारे पास कृषि योग्य बहुत बडा भू भाग है आबादी भी बावन करोड की है, प्रचुर खनिज पदार्थ हैं, फिर भी विश्व में हम सब से गरीब देशों में से हैं जरमनी १९ वर्ष पहले मटियामेट हो चुका था आज वह सपन्न और समृद्ध है और हम इन १९ वर्षों में दरिद्रतर होते गए

हम कारणों का विश्लेषण कर रहे थे प्रभुदयालजी का कहना था कि हमारी सरकार ने मध्यम श्रेणी के कारखाने स्थापित करने के बजाए अधिक महत्व दिया बडीबडी योजनाओं को राजनीतिक दलबदी और पार्टियों के प्रभाव में पड कर देश की जनसख्या, श्रमशक्ति, खनिज पदार्थ व उपलब्ध साधनों के आधार पर योजनाएं न बन पाईं फल यह हुआ कि हम बहुत सी आवश्यक वस्तुओं में पिछडे रह गए सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था भी हमारे यहां नहीं हो पाई अच्छा होता यदि हमारे कृषि प्रधान देश में सब से पहले सिंचाई और खाद पर ध्यान दे कर खाद्यान्न के उत्पादन को बढा कर भारतीय अर्थनीति की बुनियाद मजबूत करते

जरमनी औद्योगिक देश था, फिर भी इस ने पहले छोटे और मध्यम श्रेणी के कारखानों को प्रश्रय और प्रोत्साहन दे कर चालू किया तब कहीं क्रुप जैसे विशाल उद्योग प्रतिष्ठानों को पुनर्जीवित किया जा सका कृषि को भी इन लोगों ने सब से पहले सभाला राष्ट्रीय एकता और चेतना इन में शुरू से ही जागरित रही है इसलिए यहां के मजदूर नेताओं ने भी देश को पुनर्जीवित करने में पूरा सहयोग दिया

हमारे यहा ठीक इस के विपरीत हुआ छोटेछोटे कारखाने और राष्ट्रीय महत्त्व के उद्योगो की परवा किए बिना मजदूर दलो का उद्देश्य रहा—कम काम करो, हडताल करो, अधिक मजदूरी की माग के लिए काम ठप्प कर दो साम्यवादी मजदूर-दलो का तो उद्देश्य ही है अराजकता फैलाना और दलगत स्वार्थ की पूर्ति करना अपने देश और राष्ट्र के हितो से ज्यादा इन की दृष्टि रहती है साम्यवादी राष्ट्रों के अनुकरण पर

हमारी काग्रेस पार्टी और सरकार में कुछ प्रच्छन्न साम्यवादी घुस आए इन में दोएक तो नेहरूजी के मंत्रीमडल में भी थे इन्हीं के प्रयत्नो से सरकारी कारखानों में साम्यवादी मजदूर यूनियनो को मान्यता मिली इस का भीषण दुष्परिणाम भुगतना पडा चीन ने सन १९६२ में आक्रमण किया, उस समय पता चला कि हमारे कारखानो में हथियार नहीं, काफी पकुलेटर और सिगरेट लाइटर बनते हैं

श्रमिकों के नियम कानून भी यहा इस ढग के बने कि काम कम करने पर भी किसी को बरखास्त करना या हटाना सभव नहीं इतना ही नहीं उत्पादन कम भले ही हो, घाटा बढता जाए, पर बोनस देना ही होगा सहकारी सस्थाओं ने भी यूरोपीय देशों में बड़ा ठोस काम किया है, जब कि हमारे देश की ऐसी अधिकाश सस्थाओं ने जनता के पैसे को बरबाद किया आवश्यकता व योग्यता से अधिक स्थानीय राजनीतिक परिस्थितियो को महत्त्व दिया जाता रहा है अतएव जरमनी के साथ अपने देश की तुलना करते समय इन बातों का ध्यान रखना अपेक्षित है

बर्लिन के आपेरा और थिएटर यूरोप में प्रसिद्ध हैं बाख, मोजार्ट वैग्नर और स्ट्राउस पाश्चात्य सगीत के चमकते सितारे हैं ये सभी जरमनी के थे आज भी उपासनालयो में इन महान सगीतकारों द्वारा रचित शात, गभीर व मधुर स्वरलहरी सुनने को मिल जाती है केवल यूरोप में ही नहीं, सुदूर अमरीका और आस्ट्रेलिया तक में भी मुरझाए मन में नई जान आ जाती है इन की सगीत-लहरियो को सुन कर

मिस्टर हिरमार ने हम लोगो के लिए प्रसिद्ध सीलर थिएटर में एक बाक्स रिजर्व करा लिया था रात नौ बजे हम वहां गए छ मजिलो की ऊचाई का यह बहुत ही शानदार थिएटर हाल था कुरसिया बेहतरीन और आरामदेह, मच की सजावट भी बहुत सुरुचिपूर्ण थी उन दिनो वहां केवल कसर्ट (वाद्य सगीत) का प्रोग्राम चल रहा था विभिन्न प्रकार के छोटेबडे वाद्य यत्रों की मानो एक प्रदर्शनी सी लगी हो कलाकारों की सख्या ही सैकडो में रही होगी

जब सगीत का एक पद खत्म होता तो लोग बारबार ताली बजा कर प्रशसा व्यक्त करते थे हमें पश्चिमी सगीत की जानकारी नहीं है स्वरलहरी अच्छी जरूर लगी पर बारीकी समझ में नहीं आती थी अनजान या अरसिक न माने जाए इसलिए हम भी ताली बजा कर दूसरे श्रोताओं की तरह दाद दे रहे थे व्यक्तिगत रूप से मुझे तो अपने यहां की वीणा और सारगी की स्वरलहरी इन वाद्यों से कहीं ज्यादा मधुर लगती है

आम तौर से जरमनो के बारे में लोगों की धारणा यही रही है कि ये बड़े व्यावहारिक, मितव्ययी और कुछ रूखे से होते हैं. पर इस हाल की भीड़, उनकी तन्मयता आदि को देख कर ऐसा लगा कि श्रम और विश्राम दोनों का सही उपयोग जरमन समझते हैं.

थिएटर और आपेरा की टिकटें यहां बहुत पहले से रिजर्व हो जाती हैं इस के लिए एजेंसियां हैं जो अपनी जोखिम पर सैकड़ो सीटें विभिन्न हालों की बुक करा लेती हैं. इन के बंधे ग्राहक होते हैं रुचि के अनुसार टिकटें उन्हें भेज देते हैं.

कसर्ट करीब ग्यारह बजे समाप्त हुआ. मिस्टर डिटमार हमें अपनी कार से होटल पहुंचा गए. हम ने आभार मानते हुए उन्हें धन्यवाद दिया.

उन्होंने हंस कर कहा, "इसे कल सुबह तक हवाई अड्डे के लिए अपने पास सुरक्षित रखिए"

ब्रिमेन हंबर्ग

मलबे के ढेर . . . पुनर्निर्माण के प्रतीक

सन १९५० में अपनी पहली यूरोप यात्रा में जरमनी के दो ही शहर देख पाया था ब्रिमेन और हंबर्ग १९६४ में यूरोप की यात्रा का तीसरा अवसर मिला इस बार फिर से मैं हंबर्ग तो गया पर ब्रिमेन नहीं जा सका

अपनी पहली यात्रा में ब्रुसेल्स से ट्रेन द्वारा ब्रिमेन आया था युद्ध समाप्त हुए लगभग पाच वर्ष हो चुके थे पर उस समय तक शहर की हालत सुधर नहीं पाई थी टूटे हुए मकान, अस्पताल, गिरजे, बाजार, चारो ओर मलबे के ढेर, खाली-खाली सी उजडी दुकानें, सूनी सडकें और विकलाग लोग, कलकारखाने ठप्प, बेरोजगारी के कारण भटकते उदास चेहरे और अनाथ बच्चे—यही थी उस समय जरमनी की तसवीर, जिस पर मित्र राष्ट्रो की बमवर्षा और तोपो की गोलाबारी के निशान अब भी अंकित थे हंबर्ग के बाद ब्रिमेन जरमनी का सब से बडा *बदरगाह माना जाता था यहा आते ही मैं ने युद्धोत्तर जरमनी की दुर्दशा देखी,* जिस की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी

युद्ध के पहले ब्रिमेन का यूरोप के वाणिज्यव्यवसाय में महत्त्वपूर्ण स्थान था केवल जरमनी ही नहीं बल्कि पासपडोस के अन्य राज्यों के भी माल का आयात-निर्यात यहा के बदरगाह से होता था यह लगभग चार लाख की आबादी का घना बसा हुआ शहर था, किंतु मुझे ऐसा लग रहा था जैसे किसी खडहर में आ पहुचा हू अजीब सुनसान और भयानक सा कसबा हो गया था

युद्ध के कारण जरमनी के जहाज, कारखाने और बदरगाह बुरी तरह बरबाद हो गए थे पराजित जरमनी की अर्थव्यवस्था अस्तव्यस्त थी और व्यापार बद सा पडा था, इसलिए चहलपहल न रहना स्वाभाविक था ब्रिमेन में न तो व्यापारियों का आनाजाना होता था और न यात्रियों का हा, कभीकभी अमरीकी पर्यटक मिल जाते थे क्योंकि इन पाच वर्षों में अमरीका युद्ध की थकान मिटा चुका था और वहां के कुछ पर्यटक जरमनी के टूटेफूटे शहर देखने भी आ जाते थे होटलों की दशा बुरी थी वे मरम्मत से पडे थे और उन में खानेपीने के सामान का अभाव था सुखसुविधा के आधुनिक साधन भी वे नहीं जुटा पा रहे थे

यहां आने के बाद मन में एक दुख सा छा गया सोचने लगा, 'न आता तो अच्छा था' आज का सभ्य यूरोप अपने इतिहास में चगेजखा और नादिरशाह को बर्बर और लुटेरे कहता है, ठीक है बेरहमी से उन्होंने शहरों को उजाड़ा और

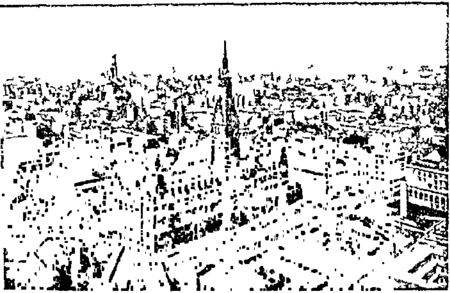

बारहवी शताब्दी के सुदर गिरजा घर   हबर्ग के अतीत के गवाह

कत्लेआम किया किंतु इस बरबादी को देख कर तो ऐसा लगता है कि चगेज और नादिर आज के इन लोगो से कहीं अधिक दयालु और सभ्य रहे होगे उन्होने और जो कुछ भी किया पर मसजिदो को नहीं तोडा, जब कि सभ्य ईसाइयो ने तो खुदा के अवतार ईसा के प्रार्थनाघरो तक को नेस्तनाबूद कर दिया अपने होटल के मैनेजर से मै ने पूछा, "क्या कारण है कि पाच वर्ष हो गए, मलबे का ढेर हटाया नहीं जा रहा, मरम्मत का क्रम शुरू नहीं किया जा रहा?"

उस ने टूटीफूटी अगरेजी में कहा, पहले शिल्प उद्योग, कृषि, अस्पताल, स्कूलकालिज ठीक होने है और तब इन के बाद दूसरी चीजो की मरम्मत या सुधार का प्रोग्राम है जब तक बाहर से यथेष्ट सहायता नहीं मिल जाती तब तक हमें अपने ही साधनो और शक्ति पर भरोसा करना होगा अफसोस है कि युद्ध के हरजाने में हमें अपने अधिकाश साधन देने पड गए है, हमारी राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग युद्ध के कर्ज चुकाने में चला जाता है मगर हमारा विश्वास है कि जरमन जाति टूटगी नहीं, वह फिर उठ खडी होगी"

होटल मैनेजर की बातो में साधारण जरमन नागरिक की कष्ट सहने की शक्ति और दृढ विश्वास का पहला परिचय मिला मुझे पेरिस, ब्रुसेल्स और कोपेनहेगन के नाइट क्लब और कैबरे के दृश्य, वहा की सडको की चहलपहल के नजारे याद आ गए यद्यपि पडोस के ही देश है पर वे है विजेता जरमनी से युद्ध का हर्जाना वे अब तक करीबकरीब पूरा पा चुके थे उनमें अब युद्ध की थकान भी नहीं रह गई थी वहा जिंदगी में बहारें लहरा रही थीं

हमारे यहा शास्त्रकारो ने कहा है कि भूख और काम की आग दबाई नहीं जा सकती हालाकि भारत ने लूटखसोट और युद्ध की बरबादी देखी है एक बार नहीं अनेक बार, किंतु कभी भी सपूर्ण भारत इस चपेट में शायद ही आया हो

इसलिए भूख और काम के बारे में जो लिखा गया है उस की वास्तविकता और गहराई व्यापक तौर पर प्रत्येक भारतीय समझ सकेगा, इस में संदेह है लेकिन युद्ध से जर्जर हो गए जरमनी में हम ने इसे प्रत्यक्ष रूप से देखा

युद्ध में १८ से ५० वय तक के पुरुष बड़ी सख्या में मारे गए कुछ बचे किंतु वे विकलाग हो गए इसलिए देश में युवा स्त्री और पुरुषो की सख्या में विषमता अत्यत उग्र रूप में आ गई

क्लबों, रेस्तोराओ और बारों में अधिकाश प्रौढ़ाए और युवतिया साहचर्य के लिए लोगों को ढूढ़ती रहती थीं अमरीका के नीग्रो फौजियों के कई दस्ते इटली से यहा आ गए थे वे भी स्वदेश और स्वजनों से बहुत अरसे से अलग थे युद्ध से फुरसत मिल ही चुकी थी अब उन के लिए शेष रह गया केवल खाना और मौज करना यहा उन्हें इस का भरपूर मौका मिला

मैं यही सोचता था, कहा गया नाजियों के आर्य रक्त का वह दभ, जिस के चलते लाखों बेगुनाह जरमन यहूदियों को जो सैकड़ों वर्षों से उसी देश में रहते आए थे, आपस में एकदूसरे से हिलमिल कर रहते रहे थे—अमानुषिक यातनाए दे कर बेघरबार कर दिया गया, जहरीली गैस की कोठरियों में भूखाप्यासा मार दिया गया! आइस्टीन जैसे विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक और स्टिफेनज्विग जैसे चोटी के लेखक को स्वदेश छोड कर खुद ही देश निकाला लेना पडा आज उसी विशुद्ध जरमन आर्य रक्त में नीग्रो रक्त का मिश्रण स्वेच्छा से हो रहा है

हमारे धर्मग्रथ 'महाभारत' में उल्लेख है कि युद्ध का दुष्परिणाम केवल जनधन और भूमि की हानि तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि इस का प्रभाव भावी सतानों पर भी पडता है क्योंकि वर्णसकर सतति की वृद्धि युद्ध के बाद सहज स्वाभाविक है इस से राष्ट्रीय गुण और विशिष्टता में अतर आ जाना भी स्वाभाविक है

यूरोप के पराजित देशों में ऐसा हुआ कि विजेता राष्ट्रों के अज्ञात कुलशील नाविक और सैनिक आए उन्होंने भरपूर मौज की और कुछ दिनों बाद अपने अपने देश को चले गए भोगना पडा उन बेचारी माताओं को जिन्हें अपने तरहतरह के सांवले, पीले चेहरो वाले बच्चों को पालनापोसना पड रहा है पिता का नाम भी किस का कहें, गनीमत यही है कि पश्चिम देशों में ऐसी बातों के लिए अड़चनें नहीं आतीं फिर जरमनी को तो उस समय किसी न किसी सूरत से अपनी आबादी बढ़ानी थी इसलिए सरकार भी ऐसे सबधों के प्रति उदासीन थी

शाम को ब्रिमेन पहुचा था बाजार में थोडाबहुत घूमा तबीयत लगी नहीं जो कुछ देखा था, वुल पैदा करने के लिए काफी था शीघ्र ही अपने होटल वापस आ गया भोजन की इच्छा नहीं हुई होटल के रेस्तोरां में एक कप काफी पी कर ऊपर अपने कमरे में सोने चला गया

दूसरे दिन सुबह उठ कर ब्रिमेन शहर का एक चक्कर लगा आया शहर अच्छा रहा होगा और पुराना भी पर अधिकांश मकान बमबारी से टूट चुके थे पश्चिम की तरफ से इसी नगर से मित्र राष्ट्रों की सेनाओं ने जरमनी में प्रवेश किया था, इसलिए यहां बड़ी मोर्चेबदी हुई थी और बमबारी भी

यहां का प्रसिद्ध टाउनहाल देखा, जो बच गया था. लगभग साढ़े पांच सौ वर्ष पहले की बनी हुई गोथिक शैली की यह इमारत बहुत शानदार है. इस के भीतर भित्तिचित्र और नक्काशी के काम सचमुच बेमिसाल हैं. लगभग सभी चित्र कलापूर्ण थे और उन में भाव भी अत्यंत स्वाभाविक ढंग से व्यक्त हुए थे. करीब चार सौ वर्ष पहले का बुमन द्वारा बनाया गया प्रसिद्ध चित्र 'सोलोमन का न्याय' देखा. युद्ध के बीच यह अमूल्य कृति सहीसलामत बच गई, गनीमत है!

ब्रिमेन के गिरजे प्रसिद्ध रहे हैं. बेलजियम में ब्रुजे के गिरजों की तरह ये भी कलापूर्ण माने जाते हैं. इन में सेंट अंसजारिस के एक गिरजे का बुर्ज तो लगभग तीनसौ दस फुट ऊंचा था किंतु अप्रैल १९४५ में, जबकि जरमनी एक प्रकार से हार चुका था, मित्र राष्ट्रों की धुंआधार बमबारी से यह नष्ट हो गया.

मुझे आश्चर्य हो रहा था कि ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस करोड़ोअरबों रुपए एशिया और अफ्रीका में व्यय करते हैं पर उसी धर्म के पवित्र स्मारकों को, जिन में ईसा और माता मरियम की मूर्तियों तथा अमूल्य धार्मिक चित्र हैं, वे अंधाधुंध बम गिरा कर और तोपों की मार से नष्ट कर देते हैं. यहां के दोतीन गिरजों के खंडहरों में गया, प्रार्थनाघर टूटे हुए थे. मलबे के ढेर के बीच दीवार के जो भी हिस्से खड़े रह गए थे, उन पर अंकित देखा कि सूली पर ईसा के शरीर से खून बह रहा है. मुझे उनकी आंखों में इस प्रकार की करुणा भरी झलक दिखाई दी मानो वह अपने धर्मानुयायियों के कुकृत्यों पर आंसू बहा रहे हैं.

बंदरगाह भी देखने गया. गोदियां टूटी पड़ी थीं. कुछ जहाज माल उतार रहे थे. जरमनी से ले जा रहे थे कोयला, तेल और लोहा. बंदरगाह की मरम्मत का काम जिस तेजी से चल रहा था उस से लगता था, सरकार का विशेष ध्यान इस ओर है.

तीन दिन पहले बेलजियम के प्रसिद्ध नगर एंटेनबर्ग में था वह भी जरमन विमानों की बमवर्षा से ध्वस्त हो गया था लेकिन अब वहां का दृश्य भिन्न था क्योंकि बेलजियम मित्र राष्ट्रों का साथी था इसलिए विजेता भी. पराजित जरमनी के हरजाने की रकम से वहां तेजी से नवनिर्माण हुआ और शहर में फिर से चहलपहल और उल्लास का वातावरण नजर आने लगा. नए मकान, सजी दुकानें, हंसती शकलें. . लेकिन यहां ब्रिमेन में ठीक इस के विपरीत वातावरण था. सोचने लगा, 'वास्तव में पराजय किसी भी राष्ट्र के लिए अक्षम्य अपराध है.'

दिन भर शहर का चक्कर लगा कर रात में अपने होटल वापस आया. कमरे में आ कर गरम पानी से हाथपैर धो कर थकान दूर की और भोजन के लिए नीचे रेस्तोरां में चला गया अपनी टेबल पर अकेला ही था चालीसपैंतालीस की उमर की एक भद्र महिला अपनी अठारह बीस साल की लड़की के साथ मुझ से अनुमति ले कर पास ही बैठ गई. व्यवहार शिष्टतापूर्ण था और बातों में शालीनता थी

पारस्परिक परिचय से पता चला कि साथ वाली लड़की उन की पुत्री है. पति युद्ध में गया था, लौटा नहीं, मरने की खबर भी नहीं आई. युद्ध के दौरान पूर्वी पोलैंड में बंदी बनाया गया था, उस के बाद से कोई सूचना नहीं. रेडक्रास की

मारफत कोशिशें की जा रही हैं पर सोवियत सरकार सहयोग नहीं देती पाच साल का एक लडका भी है

बातचीत का सिलसिला युद्ध की विभीषिका से शुरू हुआ था आर्थिक कठिनाई और पारिवारिक समस्या से गुजरते हुए व्यक्तिगत रुचि पर जिस प्रकार की चर्चा उन्होंने शुरू की, उस से मैं थोडा चौकन्ना हो गया शिष्टाचार के नाते मैं ने उन्हें खाने के लिए पूछा, थोडे सकोच के साथ वह राजी हो गईं देख कर ऐसा लगा शायद दोनो ही भूखी थीं

उन्हें भोजन में साथ देने के लिए धन्यवाद दे कर अपने कमरे में चला आया एक अजीब सी घुटन से जूझता हुआ सो गया

दूसरे दिन नाश्ता कर के ट्रेन से हबर्ग के लिए रवाना हो गया यहा हमारे पटसन के व्यापारिक सपर्क की एक फर्म थी, जिसे मैं ने आने की पूर्व सूचना दे रखी थी प्लेटफार्म पर देखा फर्म के मालिक मिस्टर जिगलर उपस्थित नहीं थे, पर स्टेशन के बाहर पोर्टिको में वह मेरी प्रतीक्षा में खडे मिल गए

अभिवादन के बाद उन्होंने सकोच के साथ बताया कि जरमन नागरिको को स्टेशन, एयरपोर्ट और अन्य महत्त्वपूर्ण स्थानो पर जाने के लिए पूर्वाज्ञा लेनी पडती है अपनी छोटी सी वाक्सवागन कार वह साथ लाए थे होटल जाते समय उन्होंने बताया कि खेद है, वह मुझे अपने घर न ठहरा सकेंगे कारण यह कि उन का मकान बमबारी में ध्वस्त हो चुका है एक हिस्सा जो बचा है वह बहुत ही छोटा है छत और दीवारें भी कहींकहीं से टूटी हुई हैं उन्होंने अपनी असमर्थता और मेरी असुविधा के लिए क्षमा मागी मैं ने देखा, उन की आखें गीली थीं

दूसरे दिन सुबह वह होटल आए और मुझे अपने घर ले गए घर में शरणार्थियों के डेरे की सी हालत थी छोटे से बरामदे में डाइनिगरूम बना रखा था डबलरोटी, काफी और कुछ फल मुझे खाने के लिए पेश किए गए

परिवार में उन की पत्नी दो बच्चे, बूढी मा और छोटे भाई की विधवा पत्नी थी मिस्टर जिगलर के दोनो छोटे भाई युद्ध में मारे गए थे उन की मा ने भरे गले से बताया कि उन का एक पुत्र अल अलामीन में भारतीय सिपाहो द्वारा मारा गया उन्होंने कहा, "वह इतना तगडा था कि चारपाच अगरेजों के लिए अकेला ही काफी था यदि भारत और अमरीका युद्ध में अगरेजो का साथ नहीं देते तो हम हारते नहीं" वृद्धा की बातों का भाषातर मिस्टर जिगलर कर रहे थे

मैं ने खेद प्रकट करते हुए कहा, "पराधीन होने के कारण भारत विवश था सच मानिए, हमारा मन कभी भी अगरेजो के साथ नहीं रहा आप के दो जवान बेटे देश के लिए कुरबान हुए, कम स कम यह गौरव तो आप को मिला जरा हमारी भारत की उन माताओ के बारे म भी तो सोचिए, जिन के बेटे उस देश को बचाने के लिए मारे गए जिस न उनके अपन देश को सकडों वर्षों से गुलाम बना रखा था" म न देखा, मेरी बात से वृद्धा को सात्वना मिली

जिगलर महोदय का कारखाना नष्ट हो चुका था, कारोबार भी अस्तव्यस्त था उन्होंने बताया कि एक बार तो उन की हिम्मत पस्त हो गई थी सहारा मिला अपने ही बचेखुचे मजदूरों का चौथाई मजदूरी ले कर वे काम पर डट

'जगली आदमी' जरमनी का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य

गए उन्होंने टूटी मशीनो पर रातदिन काम किया अब भी बहुत सी मशीनें ऐसी हैं कि उन्हें बदलना निहायत जरूरी है

वहा की मजदूर यूनियनो का कहना है कि सब से पहले जरमनी के उद्योगधधे व व्यापार को सगठित किया जाए, जिस से कि वे अपने माल का निर्यात जारी कर सके, जहा तक अच्छी मजदूरी का सवाल है, राष्ट्र की आर्थिक दशा के सभलते ही वह अपनेआप बढ जाएगी

उन से यह भी पता चला कि केवल हबर्ग में ही नहीं बल्कि सारे जरमनी में हर व्यक्ति राष्ट्रीय पुनर्निर्माण चाहता है, और इस के लिए वह अपने बडे से बडे स्वार्थ को त्यागने के लिए तैयार है

सारे दिन मिस्टर जिगलर के साथ शहर में घमता रहा ब्रिमेन का सा वातावरण यहां भी देखा एक बहुत बडे अस्पताल के अधटूटे हाल में हम खडे थे अस्पताल उजड चुका था थकान मिटाने के लिए हम मलबे के ढेर पर बैठ गए

जिगलर ने कहा, "दस वर्ष पहले हमारा यह नगर यूरोप के शिल्पोद्योग जहाजरानी, व्यापारवाणिज्य के प्रमुख केंद्रो में गिना जाता था एटवर्प

राटरडाम और मार्सेलीज तो इस के मुकाबले क्या टिक्ते, लदन तक पिछड रहा था हजारों कारखाने इस के इर्दगिर्द थे सारे यूरोप के देशों में यहीं से माल जाता था १९४३–४४ की भीषण बमबारी से इस का दोतिहाई हिस्सा बिल्कुल नष्ट हो गया अकेले १९४३ के जुलाईअगस्त महीनें में ही हवाई हमलो में यहा कोई साठ हजार नागरिक मारे गए किस प्रकार का मृत्यु का नृत्य हुआ होगा, यह आप ही सोच ले।

"यहां ४७० स्कूल थे, जिन में से किसी तरह २५० बच गए हैं इन में से ५० में तो पढाई का सिलसिला शुरू किया गया है, शेष में गृहविहीन नागरिकों के लिए आवास की व्यवस्था की गई है बमवर्षा से ७० रेलवे पुल उडा दिए गए और बदरगाह तो एक प्रकार से बेकार ही हो चुका है कारखानो की हालत आप देख चुके हैं टूटे कारखानो में भी यदि काम करें तो भी कच्चा माल और पूजी चाहिए कच्चा माल मित्र राष्ट्र हरजाने में ले जाते हैं और पूजी है नहीं"

मैं ने देखा उन की आखें भर आई थीं खडे हो कर उन्होने कहा, "मिस्टर टाटिया फिर भी एक जरमन होने के नाते विश्वास के साथ कह सकता हू कि आज से दस वर्ष बाद यदि आप यहा आएगे तो हमें ऐसी हालत में नहीं पाएगे हम उठ खडे होगे आज हमारे मजदूर और कारीगर वेतन के लिए नहीं, देश के नवनिर्माण के लिए अथक परिश्रम कर रहे हैं जरमनी झुक भले ही गया है, पराजय की व्याधि उसे लगी जरूर है, पर वह टूटेगा नहीं जरमन हमेशा से राष्ट्रीय मर्यादा को समझते रहे हैं वे मर नहीं सकते उन्हें उठना पडेगा, वे उठेंगे!"

उन की आवाज में दृढ निश्चय की गूज थी

भोजन के लिए उन्होने बहुत आग्रह किया पर मैं ने स्वीकार नहीं किया मैं जानता था, उन के परिवार के लिए ही पूरा राशन उपलब्ध नहीं है वह मुझे होटल तक पहुचा गए उन से विदा लेते समय मैं ने उन्हें भारत से लाए हुए तीन रेशमी स्कार्फ उन की वृद्धा माता, पत्नी और भ्रातृवधू के लिए दिए उन्होने कुछ सकोच के साथ स्कार्फों को स्वीकार कर लिया

दूसरे दिन जिगलर महोदय अपनी छोटी सी कार ले कर आए और मुझे हवाई अड्डे तक पहुचा कर उन्होने विदा ली पहले दिन खींची हुई दो तसवीरें वह मुझे दे गए जो आज भी मेरे पास यादगार के रूप में सुरक्षित हैं हवाई अड्डे में भी भीतर जाने की उन्हें मनाही थी मुझे १९२०-२५ के कलक्ते के ईडन गार्डन में हर रविवार के बैंडवादन की याद आ गई, जहां भारतीय दूर खडे हो कर ही देख सुन सकते थे और यहां रखी हुई कुरसियां व बेंचें केवल विदेशी गोरो के लिए सुरक्षित थीं

सन १९६४ में जब दोबारा हबर्ग आया तो देखा कि यह सवथा बदला हुआ था टूटे हुए मकान और ध्वस्त गिरजे, स्कूल, कालिज तथा अस्पताल नहीं दिखाई पडे अब उन की जगह खडी थीं आलीशान इमारतें कई मजिलों वाले ये नए भव्य प्रासाद नीले आकाश में सिर ऊचा किए जरमनी के पुनरुत्थान की कहानी कह रहे थे

बदरगाह देखा विशाल दैत्याकार क्रेन बडेबडे मचों पर हाथ फैलाए आसानी से ढेर का ढेर माल गोदियों में लगे बडेबडे जहाजों से उठानेरखने में व्यस्त थे

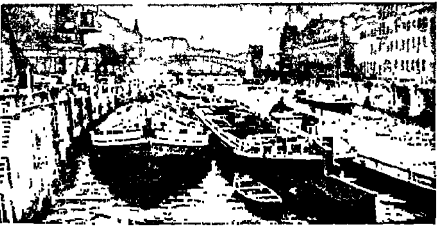

जहाजरानी व व्यापारवाणिज्य का प्रमुख केंद्र हवग का एक दूसरा पहलू

बूढों और विकलागो की जगह दिखाई पडे स्वस्थ और सुपुष्ट नागरिक उन के चेहरो पर स्वतत्रता की आभा और समृद्धि की मुसकराहट थी सुदर और स्वस्थ बच्चे पार्को व स्कूलो में खेलकूद रहे थे सहज ही विश्वास नहीं होता था कि उसी नगर में आया हू जहा लगभग चौदह वर्ष पहले आया था

लदन में अपने मित्र जिगलर को पहुचने की सूचना भेज दी थी स्टेशन पर वह दिखाई नहीं पडे वहा के टूरिस्ट आफिस से ठहरने के लिए प्रयत्न किए किंतु सफलता नहीं मिली उन दिनो वहा एक औद्योगिक प्रदर्शनी लगी थी, देशविदेश से अनेक दर्शक आए हुए थे इसलिए अच्छे होटलो में जगह नहीं मिल सकी काफी कोशिश के बाद स्टेशन के सामने एक पेंशन आवास में एक छोटी सी कोठरी मिली इसी में मैं और प्रभुदयालजी दोनो ठहरे कोठरी के साथ में बाथरूम भी नहीं था

अब तक जिस किसी होटल में हम गए, भले ही वह द्वितीय श्रेणी का होटल रहा हो, हमेशा यह खयाल रखते थे कि बाथरूम कमरे के साथ लगा हो बिना इस सुविधा के इन ठडे देशो में शौच, स्नानादि के लिए क्यू में खडा रहने के साथसाथ एक झेंप होती है सामान रख कर किसी एक अच्छे होटल की तलाश में निकले

सयोग से पहले दरजे के एक होटल में कलकत्ता के हमारे मित्र श्री झाझाडिया मिल गए वह उसी दिन वापस जा रहे थे उन्होने हमारे लिए अपने होटल मैनेजर से बातचीत की किंतु उन का कमरा तो पहले हो से दूसरे यात्रियो के लिए सुरक्षित किया जा चुका था श्री झाझाडिया के जरमन मित्र ने भी कई होटलों में जगह के लिए फोन किया लेकिन व्यवस्था न हो सकी लाचार हो कर हम फिर अपने उसी पेंशन आवास में वापस आ गए

पिछली यात्रा में मैं अकेला था विदेश यात्रा का अनुभव भी नहीं था पर इस बार साथ थे प्रभुदयालजी और कार्यक्रम भी पूर्वनियोजित था जिन शहरों में भारतीय दूतावास और कौंसिल थे, वहाँ हमें यथासभव सब प्रकार की

सुविधाएं मिल जाती थीं हमारे विदेश मंत्रालय ने हमारे कार्यक्रमो की पूर्व सूचना दूतावासों और कौंसिलों में भेज दी थी

पश्चिम जरमनी से हमारा व्यापारिक संबंध अच्छे पैमाने पर है किंतु यहा की राजधानी बोन है और व्यापारिक व औद्योगिक केंद्र पश्चिम बर्लिन इसलिए हबर्ग में भारत सरकार की ओर से स्थायी प्रतिनिधि नियुक्त नहीं है मेरा खयाल है कि हबर्ग के आयातनिर्यात और जहाज रानी के व्यापार की दृष्टि से इस शहर में हमारे देश का एक व्यापार कौंसिल होना चाहिए इस से भारतीयो को काफी सुविधा मिल सकती है

टेलीफोन डायरेक्टरी से नबर देख कर जिगलर महोदय को फोन किया घर पर उन की पत्नी मिली फोन पर हम उन के जरमन लहजे की अगरेजी ठीक से समझ नहीं पा रहे थे, फिर भी किसी तरह अदाज लगा लिया कि मिस्टर जिगलर व्यापारिक कार्य से अमरीका गए हुए हैं १४ वर्ष पहले की मेरी मुलाकात की और रेशमी स्कार्फ की याद उन्हें आ गई हमारे आवास का पता पूछ कर उन्होंने शाम को छ बजे मिलने का वादा किया

हमें हबर्ग में केवल दो दिन रुकना था हम जहा ठहरे थे, उस स्तर के आवासगृह में निरामिष भोजन की सुविधा नहीं मिल पाती है इसलिए दोपहर का भोजन बाहर ले कर शहर देखने का प्रोग्राम बनाया

कलकत्ते की तरह हबर्ग भी कई छोटेछोटे गावों को मिला कर बसा हुआ है यहा बारहवीं शताब्दी से पदरहवीं शताब्दी तक के बहुत ही सुदर गिरजे हैं जिन की दीवारो पर अमूल्य धार्मिक चित्र अंकित थे द्वितीय महायुद्ध में बमवर्षा से अधिकांश नष्ट हो गए अब फिर से उसी प्राचीन शैली पर उन्हीं के अनुरूप चित्र बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं पर उन दुर्लभ कृतियों के चित्रकार तो फिर से मिलने से रहे और न उन की बारीकिया ही अंकित की जा सकती हैं इन प्राचीन चित्रों में से कुछ अधजले टूटेफूटे जिस अवस्था में भी बच गए, उन्हें बहुत ही सभाल कर रखा गया है हम ने माता व शिशु तथा क्रुसेड के चित्र देखे

यहां की कुनस्थल आर्ट गैलरी को जरमनी का सब से बडा सग्रहालय माना जाता है हम ने सैकडो छोटेबडे चित्र और मूर्तियां यहां देखीं हमें लदन की नेशनल आर्ट गैलरी के क्युरेटर ने बताया था कि विश्व में दुर्लभ चित्र केवल पचीस या तीस होंगे और ये सब पेरिस के लूव्रे, पोप के वेटिकन, लेनिनग्राद और वाशिंगटन के म्यूजियमों में सगृहीत हैं अपने सग्रहालय में भी दोएक का होना उन्होंने बताया ये चित्र अपनी जगह से हटने के नहीं, चाहे प्रत्येक के करोड दो करोड रुपए ही क्यों न मिलें!

दूसरे देशों के म्यूजियमो को चित्रों के अलावा अन्य दुलभ वस्तुओं के सग्रह के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहना पडता है इस में बहुत बडी धनराशि व्यय की जाती है हबर्ग के इस सग्रहालय को भी युद्ध के कारण काफी नुकसान उठाना पडा था फिर भी अब यहां के सग्रह को देख कर ऐसा लगता है कि बहुत परिश्रम और धन लगा कर सग्रहालय को फिर से अलभ्य और दुर्लभ वस्तुओं से सुसज्जित किया गया है

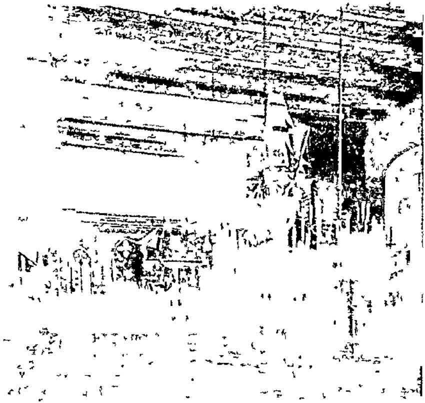

ब्रिमेन में सिटी हाल   सजावटो के बीच

यहा का बंदरगाह तो मित्र राष्ट्रो के हवाई हमले से एक प्रकार से नष्ट ही हो गया था. हमें बताया गया कि पिछले दस वर्षों में साठ करोड रुपए लगा कर इसे फिर से बनाया गया है हम एक मोटरबोट से बंदरगाह देखने गए. एल्ब नदी के मुहाने पर बंदरगाह स्थित है. दोनो किनारो पर सैकडो कारखानों की चिमनियो से निकलता धुआ वहाँ के व्यस्त औद्योगिक जीवन का परिचय दे रहा था. नावो से माल उतारा और लादा जा रहा था

ऐसा लगता था, जैसे उद्योगो के किसी महासागर से हम गुजर रहे हो. हम ने इस तरह का दृश्य या वातावरण केवल न्यूयार्क और शिकागो में ही देखा था. हंबर्ग के बंदरगाह में देखा, विश्व के हर देश के जहाज अपनेअपने झंडे फहराते हुए गोदियों में खडे थे. मोटेतगडे तरहतरह के रूपरग के नाविक उन पर काम करने में व्यस्त थे.

शाम को श्रीमती जिगलर अपनी पुत्री के साथ मिलने के लिए निश्चित समय पर आई. १४ वर्ष पूर्व उन से केवल कुछ घटे के लिए ही मिला था. लडकी तो उस समय शायद पाचछ वर्ष की रही होगी. यदि पहले से बात न कर ली होती तो उन्हें शायद ही पहचान पाता.

अपने इस आवास में उन की विशेष खातिरदारी करना सभव नहीं था. फिर भी हम ने काफी और कुछ हलके नाश्ते के लिए प्रबंध कर रखा था. हमें जान कर खुशी हुई कि जिगलर परिवार का कारखाना न केवल फिर से चालू हो गया

बल्कि अब वह बहुत बडा हो गया है वहा नाना प्रकार की मशीनें बनने लगी है उन का निर्यात विदेशो में हो रहा है. सुदूर ब्राजील और मेक्सिको तक में उन की मशीनों की माग है

श्रीमती जिगलर को अपने उद्योगव्यापार की पूरी जानकारी थी वह अपनी कपनी की सयुक्त मैनेजिंग डायरेक्टर है उन्होंने बताया कि फैक्टरी का कुल उत्पादन लगभग पाच करोड रुपए वार्षिक का है मजदूरो की सख्या ६०० और आफिस स्टाफ की ३० है इजीनियर और सेल्समैन के रूप में पति काम सभालते है हिसाबकिताब, उत्पादन और व्यवस्था की जिम्मेदारी उन पर है कालिज की शिक्षा समाप्त कर के अब पुत्री ने भी कुछ अशो में कारखाने की जिम्मेदारी समालनी शुरू कर दी है

मैं ने उन से मजदूरों की समस्या को ध्यान में रखते हुए कुछ प्रश्न पूछे उन की बातो से पता चला मानो श्रमिक-मालिक सघर्ष अतीत के किसी बर्बर देश की बात हो १९४७ के बाद इन १७ वर्षों में एक बार भी काम रोको, सुस्त काम या हडताल की कोई घटना उन के यहा नहीं हुई, अन्यत्र भी नहीं इस के विपरीत मजदूर क्षमता से अधिक उत्पादन में जुटे रहे हैं नतीजा यह हुआ कि उन्हें कारखाने की क्षमता को बढाने के लिए विस्तार करते रहना पडा है

हम उन की बातों को सुनते जा रहे थे और अपने देश की स्थिति से तुलना करते जा रहे थे कलकत्ते में मेरी जानकारी में एक इसी प्रकार का कारखाना है, जिस का कुल उत्पादन डेढ करोड रुपए वार्षिक का है इस में मजदूरो की सख्या करीब एक हजार है इस के अलावा अन्य स्टाफ डेढ सौ के करीब है मतलब यह कि जिगलर के कारखाने से इस में मजदूरो और स्टाफ की सख्या कहीं अधिक है, जब कि उत्पादन बहुत कम है

कारण स्पष्ट है, साम्यवादी मजदूर यूनियनें आए दिन झगडझमेले खडे किए रहती हैं इस से आलस्य और दीर्घसूत्रता को प्रोत्साहन मिलता है सरकारी नियत्रण है नहीं, इसलिए माल का निर्यात विदेशों में हो नहीं पाता कच्चा माल हमारे देश में बडी तादाद में है, किंतु विवशता यही है कि श्रमिक और उन की यूनियनें उत्पादन के राष्ट्रीय महत्त्व को समझने की कोशिश नहीं करते

हम यहा की प्रगति से बहुत प्रभावित हुए हम ने पिछली बार और इस बार जो कुछ देखा उस की चर्चा श्रीमती जिगलर से की वह मुसकरा कर कहने लगीं, "यह सब तो आप दूसरे देशो में भी देखते हुए आ रहे हैं यदि समय हो तो हमारे यहा के पहाडी अचलों और गांवों को भी देख लीजिए"

शायद उन के कहने का आशय था कि गरमी के मौसम में गावों की खुली हवा और पहाडी अचलों में बर्फ पर तरहतरह के खेलों में शहरो की घुटन से हमें कुछ राहत मिल जाएगी

बातचीत में काफी समय हो गया हम ने बहुत इनकार किया किंतु मिसेज जिगलर के आग्रह को नहीं टाल सके अगले दिन सुबह उन के घर नाश्ते का निमत्रण हमें स्वीकार करना ही पडा

रात के भोजन के बाद प्रभुदयालजी सोने चले गए मैं ने टूरिस्ट बस से

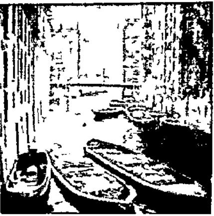

एल्व नदी के किनारे वर्तमान की खामोशी

शहर घूमने की छुट्टी ले ली थी शायद सौ रुपए लगे होंगे इसी में चार नाइट क्लबों और दो फ्री डिक्स का कार्यक्रम शमिल था. यदि अलग से जाए तो बहुत ज्यादा खर्च पड जाता है.

एल्व नदी के नीचे से हमारी बस गुजरी ऊपर वेगवती नदी और नीचे जगमगाती रोशनी, बहुत चौडा रास्ता जिस के दोनो तरफ बसो, करो और यात्रियो का आवागमन था . मं सोच रहा था कि इतनी ज्यादा ट्रैफिक है पर रुकावट का कहीं नाम नहीं हमारे कलकत्ते में हावडा पुल पर आफिस के समय की भीड के कारण भरोसा नहीं रहता है कि समय पर ट्रेन पकड भी सकेंगे! यदि हम भी इन की तरह हुगली नदी के नीचे हावडा और कलकत्ता को मिलाने वाली सडक तैयार कर सके तो आवागमन सुविधाजनक हो जाएगा जिस से हावडा अंचल भी कलकत्ते की तरह ही उन्नत और समृद्ध हो जाएगा

रात्रि क्लब सर्वत्र एक से हैं. अन्य लेखों में इन की चर्चा कर चुका हू. जिस प्रकार नशा सेवन करने वाले धीरेधीरे नशीली चीजो की मात्रा बढ़ाते जाते हैं उसी तरह का रवैया रहता है इन क्लबों में भी पहले कैबरे और बार रहे होंगे, फिर पेरिस के फाली बुर्जे की तरह भडकाने वाले दृश्य और नृत्य दिखाए जाने लगे उन के बाद आए नग्न नृत्यों के क्लब. इन सब में कोशिश यही रहती है कि कामोद्दीपन के लिए दृश्य, वातावरण और तरीकों में नयापन रहे ताकि ग्राहक जुटते रहें, ऊबें नहीं

उस दिन जिन क्लबो में हम गए, उन में दो तो बहुत साधारण थे और एक 'अतला' नाम का विशिष्ट साजसज्जा का क्लब था इस में केवल प्रवेश शुल्क ३० रुपए हैं यहां ज्यादातर राजनीतिक नेता या अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति ही तफरीह के लिए जाते हैं.

चौथा नाइट क्लब, जहा हम ले जाए गए, 'रीपरबान' नाम का था यह 'सेंट पाली' नामक मल्लाहो के बदनाम महल्ले में है और यह प्रमुख रूप से मल्लाहो तथा सैनिकों का क्लब है यदि अकेला जा पहुचता तो भयभीत हो जाना कोई बडी बात न होती यो भी जिस वक्त हम इस में पहुचे उस महल्ले में मारधाड, शोर-शराबा हो रहा था सभी देशो के स्त्रीपुरुष दिखाई पडे भारतीय नाविक भी थे यूरोप की लडकियो के अलावा चीनी, मिस्री व नीग्रो लडकिया बडी निर्लज्जता से नाविकों की छेडछाड को प्रोत्साहन दे रही थीं

इन क्लबों में रोशनी धीमी रहती है, शायद इसलिए कि लिहाज या शर्म भी उसी के अनुसार कम है हम सब लगभग २५ यात्री थे, साथ में दो गाइड थे हर रात यह टूरिस्ट एजेंसी यात्रियों को यहा लाती है गाइड क्लब वाला के परिचित थे इसलिए यात्रियो के साथ किसी प्रकार के दुर्व्यवहार की सभावना नहीं थी

हम क्लब में दाखिल हुए तो जिन्हें पीना था, उन्होंने हल्की या कडी शराब अपनी रुचि के अनुसार ले ली पहला कार्यक्रम हुआ नाच का इस में यात्री भी शामिल हो गए ज्योंज्यों नशा गहरा होता गया, नाच भी तेज होता गया फिर बाजे और सगीत तो सहायक थे ही नाच व उछलकूद शोरचीख की सीमा पर पहुच कर समाप्त हुआ थकावट दूर कर के उद्दीपन या उत्तेजना को कायम रखने के लिए शराब का एक दौर और चला

दर्शक पी कर मतवाले हो रहे थे अब स्टेज का शो शुरू हो गया कथानक और दृश्य, हमारे यहा की मर्यादा के अनुसार बहुत ही अश्लील थे हम भाषा जानते नहीं थे किंतु हावभाव से समझ रहे थे दिखाया गया कि दो मल्लाह, दो लडकियों के यहा गए चारो ने एकसाथ बैठ कर खूब शराब पी उस के बाद एकएक कर कपडे उतारने शुरू कर दिए जब सभी नगे हो गए तो किसी बात पर आपस में झगडा हो गया

झगडा होने पर लडकियो ने उन की जो पिटाई की उसे देख कर मुझे तो सिहरन सी हो आई ऐसा लगा कि मैं अपने यहा की फ्रीस्टाइल कुश्ती का दगल देख रहा हू लात और घूसो की मार तो थी ही, वे दांतों से भी काट रही थीं हालत यह हो गई कि चारों के शरीर पर से जगहजगह से खून बहने लगा

हाल में रोशनी कम थी पर स्टेज पर फ्लैश लाइट से तेज प्रकाश किया गया था मल्लाह भी वापसी वार करते थे पर हर बार लडकियो की चोटें तगडी बैठती थीं आखिर जब वे दोनों मार खातेखाते बेहोश हो गए तो लडकियो ने उन्हें कधे पर उठा कर भीतर की ओर फेंक दिया उन्होंने एक हाथ पर छोटा सा रूमाल बाध रखा था मैं ने गाइड से पूछा, "सारा शरीर तो बिलकुल नगा है, फिर बांह पर रूमाल क्यो?"

उस ने बताया, "हमारे यहां बिल्कुल निवस्त्र होना कानूनी तौर पर अपराध है कानून की पाबदी के इस नए तरीके को सुन कर मुझे हंसी आ गई दर्शकों में जो स्त्रियां थीं वे लडकियों की जीत देख कर तालियां बजा रही थीं और आवाजें कस रही थीं मैं यह सोचने लगा कि अफ्रीका के जगली तो सभ्य बनने जा रहे हैं कपडे पहनने लगे हैं और जहा कपडे नहीं हैं वहां पत्तों का आवरण बना लेते हैं

मगर यूरोप के ये सभ्य कहलाने वाले लोग नंगे हो कर इस प्रकार से उछलकूद मचाते हैं.

जिस समय हम होटल पहुचे, रात के दो बज चुके थे. मैं ने इन चार घंटो में जो कुछ देखा, उस से मन में एक प्रकार की अशाति सी अनुभव होने लगी. दूसरे दिन मिसेज जिगलर से नाइटक्लब का जिक्र किया. वह सहज भाव से हंस कर कहने लगीं, "हमारे यहा इस प्रकार की मान्यता है कि मारपीट से प्रेमीप्रेमिका में उत्तेजना और पारस्परिक प्रेम बढ़ता है. ये सारे दृश्य उसी पर आधारित होते हैं."

मैं ने कहा, "हमारे यहा भी ऐसा मानते हैं. हजारो वर्ष पहले वात्स्यायन ने अपनी पुस्तक 'कामसूत्र' में आपस में दात और नख से प्रहार करने का उल्लेख किया है. पर वह सब एकात में होता था, इस तरह सैकडो दर्शको के सामने नहीं."

मैं १९५० में जब इन के घर आया था, वही मकान अब भी था पर आज वह खडहर एक सुदर बंगला बन गया था. चारो तरफ छोटा सा बगीचा भी था बेहतरीन फर्नीचर था और पोर्टिको में खडी थीं दो 'मर्सिडीज' कारें. श्रीमती जिगलर ने अपने मृत देवर की पत्नी को भी बुला लिया था. पहले मैं ने उसे विधवा देखा था पर अब उस ने फिर से विवाह कर लिया है. पति विज्ञान के प्रोफेसर हैं, वह भी साथ आए थे.

नाश्ते के समय तरहतरह के विषयो पर चर्चा होती रही. कामधधे के बाद जरमन साहित्य, इतिहास और कला पर भी बातचीत हुई हमें प्रोफेसर से कई बातो की जानकारी मिली विज्ञान के आचार्य होने के साथसाथ उन्हे इतिहास और साहित्य का भी अच्छा ज्ञान था

बातचीत के सिलसिले में समय का अंदाज न लगा घडी पर नजर गई तो देखा, दस बज रहे थे. हम ने उन से विदा मागी उन्होने अपनी गाडी में हमें हमारे आवास तक पहुचा दिया

समय कम रह गया था, फिर भी हमारी इच्छा थी कि जरमनी के भीष्म पितामह बिस्मार्क का निवास और स्मारक देख लिया जाए बिस्मार्क ने जरमनी के एकीकरण में प्रमुख भाग लिया था वह लौह पुरुष माने जाते थे यूरोप की राजनीति में अपने जमाने में उन की बडी प्रतिष्ठा थी टैक्सी द्वारा हम सैसनवाल्ड नामक उपाचल में गए. बहुत ही सुदर बगीचे के बीच बिस्मार्क का महल है. उन के काम आने वाली सारी चीजें यहा के सग्रहालय में रखी हुई हैं. ऐतिहासिक दस्तावेज भी सुरक्षित हैं.

पास ही में बिस्मार्क की कब्र भी हम ने देखी. देखते समय उन्नीसवीं शताब्दी के जरमनी का इतिहास स्मरण हो जाता है. किस प्रकार इस अद्भुत क्षमतासपन्न व्यक्ति ने ४३ वर्षों तक अथक परिश्रम कर के अपनी सूझबूझ से जरमनी को यूरोप के देशो में शक्तिशाली और शीर्ष स्थान का अधिकारी बनाया मुझे भारत के लौह पुरुष वल्लभभाई पटेल की याद हो आई. इस प्रकार के महान पुरुष ही राष्ट्र की मर्यादा, प्रतिष्ठा और शक्ति बढ़ा सकते हैं.

तुर्की

जो पाचसौ वर्षों से चैन से नहीं बैठ सका

स्वराज्य आदोलन के दिनों में खिलाफत का नाम अक्सर हम सुना करते थे इस के पक्षविपक्ष में उन दिनों बडेबूढ़ो में बहस भी जोरो से होती थी खिलाफत के सिलसिले में महात्मा गाधी, मौलाना शौकत अली और मुहम्मद अली की भी चर्चा हो जाती थी उन दिनो हम बच्चे थे और इन बातों को समझते नहीं थे बस इतना ही समझते थे कि अगरेजो ने तुर्कों के साथ अन्याय किया है

आगे चल कर जब हम स्कूल से निकले तो कमाल पाशा तुर्कों का बेताज का बादशाह हो गया था लोग उसे अतातुर्क यानी तुर्कों का पिता कहने लगे थे उस की बहादुरी और सुधारो की बात सुनने में आई तुर्की को यूरोप का मरीज मुल्क कहा जाता था अब लोग कहने लगे, नवजीवन और नई चेतना ले कर तुर्की उठ रहा है

तुर्की और भारत का उन तीनचार वर्षों का इतिहास बहुत कुछ साम्य रखता है वहा का सुलतान हमारे देशी राजामहाराजाओ अथवा नवाबो की तरह अपने स्वार्थ के लिए विदेशी अगरेजों और ग्रीको से मिल गया था हम महात्मा गाधी के नेतृत्व में अगरेजो से राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए अहिंसात्मक सग्राम कर रहे थे जब कि मुस्तफा कमाल पाशा अपने चुने हुए बहादुर सैनिको और साथियों के साथ अपने देश की स्वतत्रता के लिए दो बडे दुश्मनो से एक ही साथ टक्कर ले रहा था •

निष्ठा निष्फल नहीं जाती आखिरकार १९२२ की जुलाई में अजय अगरेजो को तुर्की से बोरियाबिस्तर बाधना पडा और अगले एक महीने के अदर ही तुर्क सैनिको ने स्मर्ना के युद्ध में ग्रीक सेना को भी तहसनहस कर डाला किसी प्रकार जान बचा कर बहुत ही थोडे ग्रीक सिपाही भाग सके तुर्कों के बदलते रंग को देख कर उन के सुलतान मुहम्मद उसी वर्ष नवबर में देश छोड कर भाग निकले और माल्टा द्वीप में अगरेजों के शरणापन्न हुए सुलतान मुहम्मद के इस पलायन के साथसाथ ४७५ वर्ष की ओटोमन सल्तनत का भी विश्व के रगमच पर से पटाक्षेप हो गया

शत्रु का शत्रु भले ही अपरिचित हो उस के लिए मैत्री की भावना जाग उठती है हमारे देश पर अगरेजों का दमनचक्र जोरों से चल रहा था वे भारत

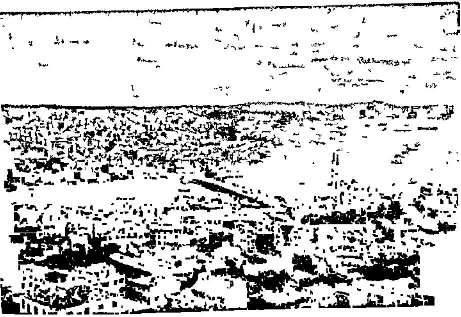

बोसफोरस जलप्रणाली के दोना ओर बसा हुआ इस्तबल

चार और उत्पीडन करते जा रहे थे जलियावाला बाग के घाव ताजा थ, रौलट एक्ट बन चुका था लिहाजा कमाल पाशा न केवल तुर्की का ही आदश नेता था बल्कि भारत में भी लोकप्रिय हो गया राष्ट्र सुधार के उस के तौरतरीको को भारतीय जनता बड़े चाव से लक्ष्य करन लगी

तुर्की इसलामी राष्ट्र रहा है मुल्लामौलवियों का रोब और दबदबा सदियों से वहा के जनजीवन को प्रभावित करता रहा है सुलतान भाग चुका था पर मुल्लामौलवी अभी वहा थे ऐसी स्थिति में प्रारभ में तो कमाल पाशा ने इसलाम को राज्यधर्म के रूप में मान्यता दी किंतु अपनी शक्ति और प्रभुता के बढ़ते ही एक वष के अदर तुर्की को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित कर दिया

उस की दृष्टि में इसलाम विदेशी धर्म था इसे वह तुर्की के लिए विदेशी सस्कार समझता था इसलाम का जन्म अरब में हुआ और वहीं से प्रसारित होता हुआ तुर्की में आया था अरबो ने अगरेजों की मदद से तुर्की को काफी परेशान किया था इसलिए अपने शासन संगठन को व्यवस्थित करते ही उस ने इसलामी मदरसे बद करा दिए और कड़े कानून बना कर परदे की प्रथा पर प्रतिबध लगा दिया यहां तक कि मस्जिदो में अजान तक अरबी में देना निषिद्ध कर दिया अपन चौदह वष के शासनकाल में उस ने तुर्की को यूरोपीय ढग से काफी हद तक सस्कारित किया और यूरोपीय राष्ट्रों की पंक्ति में उसे ला खड़ा किया

उन वर्षों में सारे विश्व में मदी का जोर था ससार के व्यवसायी और औद्योगिक राष्ट्र आर्थिक असतुलन से परेशान थे पर कमाल पाशा का तुर्की अपनी आर्थिक, सामाजिक और सामरिक उन्नति की दिशा में अग्रसर होता जा रहा था

वास्तव में ही कमाल अतातुर्क, तुर्कों का पिता, चरितार्थ हुआ तुर्क उस के नाम पर जान को बाजी लगाने को तयार रहते उन्होंने उसे सुलतान और खलीफा दोनो का सम्मिलित पद देना चाहा किंतु कमाल ने इनकार कर दिया उसे न अपनी फिकर थी, न अपने परिवार की नि स्वार्थ भाव से उस ने राष्ट्र की सेवा आजीवन की

भारत से यूरोप जाने पर तुर्की रास्ते में पडता है बिना अतिरिक्त किराए के इस की राजधानी अकारा और प्रसिद्ध नगर इस्तबूल को देखा जा सकता है पर अधिकतर यात्री इस सुविधा का लाभ नहीं उठाते सभवत तुर्की के बारे में जानकारी न होने के कारण वे इसे छोड देते हैं यूरोप के लदन, पेरिस, रोम, बर्लिन के नाम पहले स सुने रहते हैं, इन्हें देखने की उत्सुकता भी रहती है इसलिए वे सीधे वहीं पहुच जाते हैं

सन १९५० में यूरोप की प्रथम यात्रा में वहा के विभिन्न देशो को देखने का अवसर मिला वापसी में इटली के नेपल्स से सीधे काहिरा को देखता हुआ स्वदेश आ गया था दूसरी बार सन १९६० में रूस के अतिरिक्त यूरोप के कुछ और नए देशो में गया तुर्की देखने का आग्रह मन में था पर अत में समयाभाव के कारण इस बार भी वह छूट गया १९६४ में विश्वभ्रमण का प्रोग्राम बना उस में मैं ने सावधानी के साथ तुर्की भ्रमण का कार्यक्रम निश्चित किया और इस बार चूकि हमें विभिन्न राष्ट्रो की आर्थिक स्थिति और व्यवस्था का अध्ययन करना था इसलिए तुर्की को अपने प्रोग्राम में शामिल करना जरूरी भी था

देश छोडे ४५ दिन हो गए थे भारत से बर्मा, दक्षिण पूर्वी एशियाई देश, जापान, अमरीका और यूरोप के अधिकाश देश अपने कार्यक्रम के अनुसार हम न देख लिए ग्रीस की राजधानी एथेंस जब पहुचे तो गरमी सताने लगी ठडे देशों से आने के कारण यहा का मौसम गरम लगा इधर घर की याद भी आ रही थी हम तीनो साथी विचारविमर्श के लिए बठे तय हुआ कि तुर्की और लेबनान तो देख लिया जाए, पाकिस्तान की यात्रा स्थगित कर दी जाए

ग्रीस और तुर्की पडोसी देश हैं दोना की राजधानी की दूरी केवल ४०० मील है इसलिए जेट विमान से एथेंस से इस्तबूल केवल ४५ मिनट में ही पहुच गए एयरपोर्ट देख कर ही पता चल गया कि तुर्की पश्चिमी देशों से भिन्न है अब भी यहा मेंहदी से रगी दाढिया नजर आ जाती ह लब अमामे चोगा पहने मौलवी और मुल्ला दिखाई पडे महिलाए बुरके में तो न थीं किंतु वह स्वच्छदता नहीं थी जो पश्चिमी देशों में दिखाई पडती है अब भी वे सहमी सी रहती ह धर्मनिरपेक्ष तुर्की पर आज भी कट्टर इसलामी सस्कार ह भले ही बुरके हट गए ह और मरदा न कोटपतलून पहन लिए ह हवाई अडडे में इतजाम भी वैसा चुस्त न था जैसा कि जापान, यूरोप और अमरीका में देखन में आया सफाई और सजावट भी कम थी

यहा भारतीय राजदूत श्री मेहता राजस्थान के उदयपुर अचल के ह उन से पहले से जानपहचान थी उन्होंने हमारे दो दिन के प्रवास के कार्यक्रम की बहुत ही सुदर व्यवस्था कर दी सपूर्ण तुर्की देखना इतने कम समय में सभव नहीं था इसलिए हम न विशेष रूप से इस्तबूल को देखने का निश्चय किया व्यापार व

उद्योग का यह केंद्र है और ऐतिहासिक नगरी भी है प्राचीन और आधुनिक तुर्की की झाकी यहा एक साथ मिल जाती है हमारे कार्यक्रम में प्रमुख लोगों से मिलने के साथसाथ नगर के विख्यात राजमहल, म्यूजियम और मसजिदो का देखना भी शामिल था

तुर्की एशिया और यूरोप दोनो महाद्वीपो में है किंतु इस का अधिकाश भाग एशिया में है बोसफोरस की सकरी जलप्रणाली दोनो महादेशो को पृथक करती है इसी के दोनो ओर इस्तबूल बसा हुआ है आबादी है १५ लाख यही यहा का प्रमुख बदरगाह और नगर है दिल्ली की तरह यहा भी २५०० वर्ष पुराने स्मारक सुदूर गौरवमय अतीत की साक्षी देते हैं तो सामने खडा कई मजिलो का आधुनिक हिल्टन होटल उसे देख हसता सा दिखाई देता है ससार के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरो में इस्तबूल की गणना होती है समय के साथ नाम भी इस के बदले—कास्टेनटाइनोपल, कुस्तुनतुनिया और अब इस्तंबूल नाम भले ही बदलते रहे पर आज भी इसे यूरोप और एशिया का सगम माना जाता है

चार दिन पहले हम आस्ट्रिया के विश्वप्रसिद्ध नगर विएना में थे वहा की स्वच्छता, शुद्ध और ठडी हवा के बाद यहा के पुराने मुहल्लो का गदा वातावरण घुटन सी पैदा कर रहा था विदेश भ्रमण पर जाने वाले भारतीय बधुओ को मैं राय देना चाहूगा कि जाते समय ही उन्हें अरब के देश, मिस्र, तुर्की और ग्रीस देख लेने चाहिए ताकि गरमी और उमस की तकलीफ महसूस न हो

बहुत दिनो बाद बर्फ डाले हुए तरबूज के ठडे शरबत को पी कर धोतीकुर्ते में शहर घूमने निकले शहर के बीच में बहती हुई गोल्डन हौर्न-नदी को स्टीमर से पार कर दूसरे हिस्से में जा पहुचे हमें सेंत सोफिया की ऐतिहासिक मसजिद देखनी थी

एक भव्य एव विशाल गिरजे के कुछ भाग में थोडा सा हेरफेर कर मसजिद का रूप देने के लिए बाहर चारो कोनो पर चार मीनारें खडी कर दी गई हैं भीतरी हिस्सा अब भी पहले की तरह है नीले मुआएक से कुरान की आयतें अरबी अक्षरो में खूबसूरती से लिख दी गई है हमारे लिए एसे परिवर्तन बहुत आश्चर्यजनक नहीं हैं क्योंकि काशी, मथुरा और दिल्ली में इस ढग की बहुत सी इमारतें हैं गाइड ने हमें बताया कि सन ३३५ में सम्राट कास्टेनटाइन ने इसे बनवाया था और अपने समय के बेजोड गिरजो में इस की मान्यता थी सगमरमर और मुजाएक की तरह तरह की टालियो पर कुमारी मरियम की बहुत ही सुदर और विशाल मूर्ति खडी हुई है जिस के सामने सम्राट कास्टेनटाइन घुटने टेक नतमस्तक हुआ पवित्र गिरजे को उसे भेंट कर रहा है सजीदगी के साथ पवित्रता की साफ झलक उस के चेहरे पर है यहा का वातावरण बहुत ही शात था

गाइड ने इस गिरजे के निर्माण का इतिहास बताया तो हम विचारों में डूब गए हेलियोपोलिस का प्रसिद्ध सूर्य मदिर और लैकोनिया के कई प्रसिद्ध मदिरों को तोड कर उन के सामान से इस गिरजे का निर्माण किया गया गाइड ने हमें पत्थरो पर उत्कीर्ण उन प्राचीन प्रतीको और चिन्हो को दिखाया मन खो सा गया कुछ ऐसा ही कुतुबमीनार देखते समय मुझे लगा था गाइड बताता जा

रहा था, हजारो निरीह व्यक्तियों की हत्या और अग्निकाड भी इसी के लिए हुए. कास्टेनटाइन इतिहास में अमर बनना चाहता था इस प्रसिद्ध गिरजे का निर्माण कर अपने को ईसाई धर्म का सर्वोच्च सरक्षक कहलाने की उस की उत्कट आकाक्षा थी

लगभग ११२० वर्ष बाद जब सम्राट कास्टेनटाइन का बाइज टाइन साम्राज्य इतिहास के पृष्ठो में सिमट चुका था तब एक दिन इस गिरजे के सामने सुलतान फतह मुहम्मद आ खडे हुए इसलाम की फतह की निशानी के बतौर उन्होंने इसे मसजिद बना देने का हुक्म जारी किया सूर्य मदिर के पत्थरों से बना हुआ सोफिया का गिरजा अब मसजिद बन गया माता मरियम की प्रार्थना की जगह कलमे पढे जाने लगे मैं सोच रहा था कि प्रत्येक धर्म की मा यता रही है, शाति और लोक कल्याण पर इन के अनुयाइयो ने ज्यादातर विपरीत कर्म ही किए धर्म के नाम पर निरीह स्त्रियों और बच्चो की हत्या की धर्म स्थानो को नष्ट किया चाहे वह भारत की काशी या मथुरा हो या फिर तुर्की का कुस्तुनतुनिया, आखिर ऐसा क्यों? क्या तलवार की धार पर ही बहिश्त का दरवाजा खुलता है?

यो तो ओटोमन तुर्क सम्राट क्रूर और दुर्धर्ष थे फिर भी जहा तक सोफिया के गिरजे का प्रश्न है उन्होंने इसे तोडा नहीं बल्कि अपने मूलरूप में ही रखा, यह एक आश्चर्य का विषय है मैं एक पत्थर की बेंच पर बैठ गया वातावरण में एक प्रकार की घुटन सी थी सूर्य मदिर ढह गया— हमारा सोमनाथ भी तो ढहा है धर्म के नाम पर इतना अत्याचार! प्रसिद्ध लेखक इरफान ओर्गो ने लिखा है, 'सोफ़िया की मसजिद में इतने विभिन्न धर्मों के देवता इकट्ठे हो गए हैं कि शायद वे स्वय एक प्रकार की घुटन महसूस कर रहे हैं'

कमाल अतातुर्क की दूरदर्शिता से आज वह न सूर्य मदिर है, न गिरजा और न मसजिद, बल्कि एक राष्ट्रीय सग्रहालय है, जहा हजारो यात्री प्रति दिन विदेशों से इसे देखने आया करते हैं

यहा से हम ओटोमन सुलतानो के महल देखने गए समुद्रतट पर थोडी ऊचाई पर एक बहुत बडे घेरे के अदर ये बने हुए हैं सन १९२३ के बाद जब अतिम सुलतान भाग गया, तब से इसे राष्ट्रीय सग्रहालय बना दिया गया गाइड से हमें जानकारी मिली कि सुलतान भागते समय अपने साथ अधिकाश कीमती सामान, जेवर और जवाहरात ले गए फिर भी जो बचा, उन्हीं को यहा सजा कर रखा गया है बची हुई चीजें भी कम नहीं हैं इन्हें देख कर एक साथ ही भय और विस्मय होता है यह भी अदाज होता है कि उस समय के तुर्की सम्राट कितने बली और कामुक हुआ करते थे

आश्चर्य तो यह है कि लबे अरसे तक इन्हें जनता अपना प्रतिनिधि, अपने राष्ट्र का प्रतीक कैसे मानती रही है? पाक इसलाम के य खलीफा थे प्राचीन ग्रीक और रोमन सम्राटों की तरह युद्धों में इन्हें स्वय जाना पडता था इन के नेतृत्व में युद्ध सचालित होते थे अतएव बडेबडे हथियारों के सचालन की क्षमता इन के लिए आवश्यक थी इसलिए बचपन से ही इन के खानपान और तालीम की निगरानी रखी जाती थी अच्छे पहलवान और अनुभवी युद्ध विशारदों की

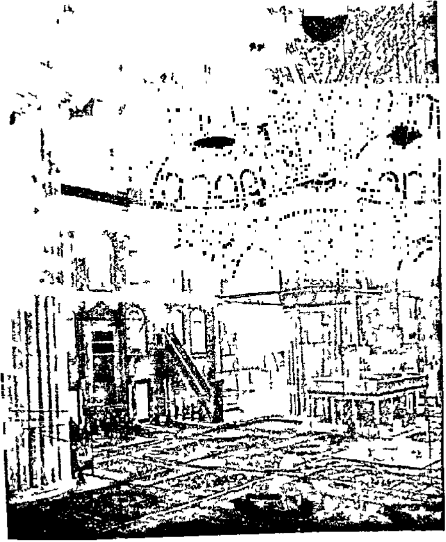

इस्तबूल की एक मसजिद का भीतरी भाग •

देखरेख में तुर्की शाहजादे प्रति दिन वर्जिश करते थे सुलतान स्वय युद्ध सचालन करते हुए इसलामी जोश के साथ जूझते थे

जहा युद्ध के समय की इन की अदभुत वीरता की कथाएँ ह, वहीं शातिकाल में इन की भोगलिप्सा एव कामपिपासा की चर्चाएं भी बेजोड ही ह सुलतानो के दरबार में सकडों तजुर्बेकार हकीम रहते थे, इन का काम यही था कि इन की ताकत और कुव्वत कायम रख जवाहरात और धातुओं के कुश्ते तैयार होते रहते थे बूढ़े सुलतानों में जवानी का जोश पैदा कराने की हरचद कोशिशें चलती रहती थीं

इस के पूर्व हम न वर्साई और वियना के प्रसिद्ध राजप्रासाद देखे थे किंतु उन में और तुर्की सुलतानो के महलों में एक स्पष्ट अतर हैं उन महलों में भव्यता

थी, कला और सौंदर्य के निखार के साथ, जब कि तुर्की सुलतानो के महल बेशुमार दौलत, हथियार और एय्याशी के साजोसामान की एक बेतुकी बडी प्रदर्शनी रहे ये कारण स्पष्ट हैं साम्राजी मेरी अनोनिता और मारिया थेरेसा सुसस्कृत पूर्वजो की सतान थीं जब कि ओटोमन सुलतान बर्बर और उद्दड तुर्क सेनापतियों के वशज थे वास्तव में ही सस्कार बहुत बडा प्रभाव उत्पन्न करते हैं

म्यूजियम के प्रथम कक्ष में पिछले छ सात सौ वर्ष में काम में लाए गए हथियार रखे थे मध्ययुग में दुश्मनो और बागियों को सजा देने के लिए उपयोग किए गए औजार और हथियारो को देख कर कपकपी आ जाती है कहीं सिर फोडने के लिए मनो वजन के हथौडे तो कहीं तीखे काटे लगी गोल अलमारिया इन में मनुष्य को खडा कर नीचे से ज्योंज्यों चक्का घुमाया जाता था, घेरा छोटा होता जाता और पूरे शरीर को छेद डालता था उन दिनों में फासी या गोलियों से मौत के घाट उतारना हल्का दड समझा जाता था इस के अलावा उद्देश्य यह भी रहता था कि दूसरे देशो के लोग इन कठोर यातनाओ को देखसुन कर भयभीत रहें और सिर न उठा सकें

युद्ध के समय पहनने के लिए जिरहबख्तर भी यहा नाना प्रकार के देखे घोडे और हाथियो के जिरहबख्तर भी थे

अन्य हथियारों के साथ हमने यहा भीम की सी गदा भी देखी जिस के गोले पर नुकीली कीलें जडी थीं नाना प्रकार के धनुषबाण देखे तुर्की तीरदाजी में मशहूर रहे हैं पुराने ढग की बदूकें रखी थीं, पाचछह फुट लबी, भद्दी और बेडौल किंतु तलवारें, किच, भाले और नेजे बडे शानदार थे इन की मूठो पर चादी और सोने की खूबसूरत नक्काशी थी कइयों में बेशकीमती जवाहरात जडे थे

दूसरे कक्ष में सुलतान और बेगमों की सैकडा प्रकार की पोशाकें थीं इन पर जरी और गोटे का काम किया हुआ था प्राय सब पर हीरे, पन्ने, मोती और माणिक जडे थे गाइड ने बताया कि तुर्की सुलतानों के हरम भोगों के खजाने थे दुनिया के हर देश से लडकिया खरीद कर, भगा कर, लूट कर यहा दाखिल की जाती थीं—एक से एक कमसिन और हसीन हजारों की सख्या में बेगमों की जमात होती थी इस के अलावा खूबसूरत लडके भी सैकडो की तादाद में रखे जाते थे इन्हें गिल्मे कहा जाता था बादियों और हिजडों की तो गिनती ही नहीं आज भी तुर्कों में यह शौक कुछ न कुछ मात्रा में है

१ इसी कक्ष में जवाहरात जडे सोनेचादी के लगोट से देखने में आए इन में सामने की ओर छोटा सा सुराख था और ऊपर की ओर एक छोटा सा ताला लगा हुआ था हमारे लिए यह बिलकुल नई चीज थी पूछने पर पता चला कि सुलतान किसी यात्रा पर अथवा लडाई पर बाहर जाते तो कुछ बेगमों और बादियों को तो अपने साथ ले जाते थे, बची हुई बेगमों के गुप्तागों पर ये तालाबद लगोट लगा दिए जाते थे बहुत दिनों पहले पढे हुए एक लेख की याद आ गई उस में इन्हें 'चास्टिटी बेल्ट' कहा गया था सोचने लगा, 'स्वय अनेक प्रकार के भोगों में लिप्त रहते हुए निरीह बेगमों पर इस प्रकार के अत्याचार कहा तक वाजिब थे?' लगोटों के आकारप्रकार को देख कर बडी ग्लानि हो रही थी इन्हें पहन कर कितनी शारीरिक और मानसिक यत्रणा और यातना सहनी होगी मातृजाति का जघन्य

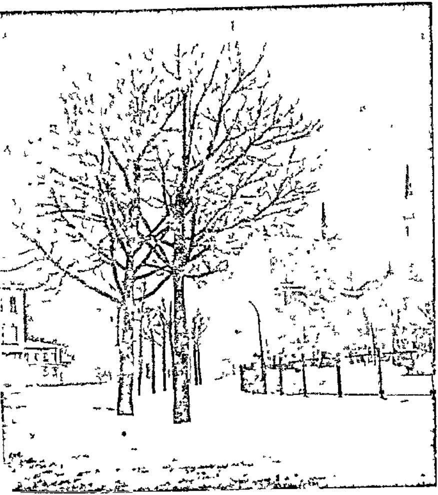

रात की वाहा में सेंट सोफिया स्क्वायर

अपमान ही तो था हमारी सस्कृति में तो ऐसी कल्पना तक भी किसी ने न की

हम ने अरब देशो के इतिहास में पढ़ा था कि उन देशो में नारियों के प्रति आदर की भावना सदव कम रही है पैर की जूतियों से उन की तुलना की गई है

हम तीसरे कक्ष में आ गए आभूषण, हीरे, पन्ना नाना प्रकार के रत्न तथा सोने, चादी के सामान सजे हुए थे सैकडो सोने के दीवट (दीपक रखने की ऊची स्टूल) देखे इन में से प्रत्येक का वजन लगभग पदरह सेर था आज के सोने के भाव से इन में से एकएक का मूल्य दो लाख रुपये से ऊपर ही होगा उन दिनो बिजली थी नहीं महल के कक्षो में बडेबडे दीपक जलाए जाते थे इन की मोटीमोटी बत्तियो के लिए तेल, घी मोम या चर्बी का उपयोग किया जाता था सोने के बडेबडे हुक्के भी दिखाई पडे तरहतरह की नक्काशी और मानाकारी

इन पर थी किसीकिसी की नली तो पदरहबीस फुट से भी ज्यादा लबी ठोस सोने ये जवर भी सजे थे बेहतरीन हीरेपन्ने और मोती जड़े विभिन्न देशों की कारीगरी के एसे जडाऊ गहना की प्रथा हमारे देश में भी रही है मगर यहा के गहनो की बनावट हमारे यहा से कुछ भिन्न थी दो बेशकीमती पन्ने देखे छोटे का वजन था तीन पाव और बडे का पौन दो सेर हम ने आज तक हीरेपन्ने या नगीना का वजन माशारत्ती में सुना था पर सेर दो सेर के तौल के भी ये हो सकते है, इस का अनुभव यहीं हुआ

कीमत के बारे में मैं ने पूछा, तो उत्तर मिला, 'कीमत दे कर तो शायद ही कोई इन्हें खरीद सके क्योकि एक प्रकार से ये अमूल्य है दुनिया में कहीं भी इस प्रकार के बडे पन्ने उपलब्ध नहीं है आप के यहा कोहेनूर का अपना इतिहास रहा है उसी ढग का इन पन्नो का भी है'

बात सही थी कोहेनूर की कीमत भी नहीं आकी जा सकी महाराजा रणजीतसिंह को याद आ गई, उन्होने इस की कीमत दो जूतिया बताई थी स्पष्ट है, उन का इशारा था बलवान की शक्ति

इन पन्नो के अलावा हम ने यहा, अडो के आकार के आबदार मोती देखे वैभव, विलास की विचित्र वीथियों के बीच यही विचार उठ रहे थे कि ये सारी की सारी चीजें धरी रह गई जिन्हो ने इन्हें बटोरा वे स्वय मिट गए आज उन के नामो निशान नहीं फिर लूटखसोट, वासना, लिप्सा की क्या उपलब्धि रही? शायद भोगों की क्षणभगुरता को समझ कर ही हमारे सम्राट भरथरी और सिद्धार्थ ने राज्य और गृह त्याग किया था रघु, कर्ण और हर्ष के सर्वस्व दान की चर्चाए भी भारतीय इतिहास में भरी पडी है

गाइड ने हस कर कहा, "जनाब, इन्हीं को देख कर आप हैरत में आ गए? चलिए बेगमात के हरम अब आप को दिखा दू"

हरम में छोटछोटे सैकडों कमरे थे पहले ही तीन कक्षो में हमारा काफी समय लग चुका था गरमी महसूस हो रही थी थकावट आने लगी बेगमों और गिल्मो के कक्षों को हम ने सरसरी तौर से देखा लिया हमें ऐसा लगा कि सुदर और सजेसजाए रंदखाने हैं ऊची ऊची दीवारो के बीच बडी उदासी का वातावरण था शायद यहा उन की उदासी भरी आहों का असर अब भी है दीवार और दरवाजे दहशत पैदा करने के लिए काफी है इन पर तगडे ख्वाजासराओ (हिजडो) का पहरा रहता था हमें बताया गया कि इन हिजडों को इकट्ठा करने के लिए दुनिया के हर कोने में सुल्तान अपने विश्वस्त अनुचर भेजते थे युद्ध में याद की जीत की शर्तों में धनदौलत और स्त्रियों के साथ इन की मांग भी की जाती थी

दोपहर का समय हो चला था भूख भी लग आई थी होटल वापस आ गए श्री महता ने लच का निमत्रण दिया था तुर्की के कुछ विशिष्ट व्यक्ति भी आमत्रित थे अब तक हम विदेशो में बिना मसाले के शाकभाजी खाते आ रहे थे यहां मसालेदार सब्जियां मिलीं हमारे देश से भी ज्यादा मसाले डालने का यहां रिवाज है बीसियों प्रकार के आमिष व्यजन बने थे हमारे लिए खासतौर से चावल का पुलाव, नान और कई तरह के अच्छे स्वादिष्ट फलो के

परपरागत वेशभूषा में तीन तुर्की युवतिया

रस थे. साथ में दही और फल भी थे. तुर्की कई तरह के अच्छे स्वादिष्ट फलों के लिए मशहूर हैं.

हम सब आठ या दस व्यक्ति थे. एक ही टेबल पर बैठे. वैसे यूरोप में और आजकल तो भारत में भी होटलों में सामिष और निरामिषभोजी एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं यहा एक विचित्र प्रथा है. सम्मानित व्यक्तियो के लिए विविध प्रकार की छोटीबड़ी मछलिया पानी के टबो में रखी जाती हैं. भोजन के समय उन्हें पसद के लिए लाया जाता है और उस के बाद तल कर तश्तरियो में सजा कर पेश किया जाता है. मेरे लिए तो यह दृश्य बडा वीभत्स सा था, उबकाई

आने लगी. बड़ी मुश्किल से अपने को रोक पाया मुसलिम देशों में भोज चीनियों की तरह काफी समय तक चलता रहता है नाना प्रकार की चीजें तैयार होती रहती है, फरमाइशें और विभिन्न विषयों पर आलापआलोचना का क्रम चलता रहता है. श्री मेहता ने हमारा परिचय यहा के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हमीद बे से कराया. वे पहले ससद के सदस्य थे श्री मेहता के अच्छे मित्रों में है मेहताजी को उसी दिन किसी जरूरी काम से अकारा जाना था इसलिए उन को हमारी देखभाल की जिम्मेदारी सौंप गए

भोजन के उपरात श्री बे के साथ हम उन के फ्लैट में गए जो समुद्र तट पर था. तबियत ताजा हो गई. खूब खुले दिल से बातें हुईं. तुर्की को वर्तमान शासन व्यवस्था और विदेशों से सबध की चर्चा हुई. तुर्की के इतिहास के सबध में उन्होंने कहा कि आश्चर्य है कि लोग मिस्र की सभ्यता को सब से प्राचीन बताते हैं. हमारे देश के खडहर स्पष्ट कह रहे हैं कि आज से छ सात हजार वर्ष पूर्व हम मिट्टी के बरतन और पत्तों के घरों के युग से आगे बढ़े हुए थे. यह बात जरूर है कि मिस्र के पिरामिड करोड़ों मन के ठोस पत्थरों के बने हैं जिन पर आग, पानी या मौसम का असर नहीं और हमारे आप के प्राचीन स्मारक जमीन में दब गए और मौसम के थपेड़ों की चपेट में आ गए

मैं ने कहा, "मेरी कुछ ऐसी धारणा यहा आने पर बनी कि भारत के साथ आप के देश का सपर्क और सबध बड़ा प्राचीन रहा होगा. सूर्य मंदिर के ध्वंसावशेष सुमेरियन सभ्यता के प्रभाव का सकेत करते हैं. सुमेरु का उल्लेख बहुत बार हमारे यहां आया है आप के यहा के प्राचीन राजा असुरबानी माल का नाम बडा परिचित सा लगा." हसते हुए मैं ने यह भी कहा, "हमारे पुराण इतिहास में देवअसुर सग्राम के बहुत से उदाहरण मिलते हैं. शायद बहुचर्चित असुर आप के यहां हुए थे!"

तुर्की के इतिहास के विभिन्न पक्षों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया, "आज का तुर्की वस्तुत ओटोमन सुलतानों की ठोस बुनियाद का नतीजा है सन १४५३ में ओटोमन (उस्मान) सुलतान मुहम्मद ने डेढ़ लाख फौज के साथ आक्रमण किया और कौस्टैनो को पराजित कर यहा मजबूत मुसलिम-साम्राज्य-स्थापित किया उन्हीं के वंशज सन १९२२ तक राज्य करते रहे ४७५ वर्षों के सुदीर्घ काल तक एक ही वश का शासन विश्व के इतिहास में बहुत ही कम मिलता है. सोलहवीं शताब्दी तक तुर्की सुलतानों ने मिस्र और सीरिया के अतिरिक्त पूर्वी यूरोप के बहुत से देशों को जीत लिया उन की फौजें मध्य यूरोप के आस्ट्रिया की राजधानी वियना तक पहुच गईं तुर्की सेना के वीरों की कथाएं आज भी न केवल तुर्की में बल्कि यूरोप में भी चर्चित होती हैं

"म्यूजियम में रखे इन के हथियारों और जिरहबख्तरों को देख कर आप को इन की शारीरिक क्षमता का अदाज हो गया होगा आप यूनान से आ रहे हैं वहां तुर्कों के बारे में कहा जाता है कि हम बड़े क्रूर और नृशस थे हजारों बांदियां, गिलमें और बेगमों की जमात हरमों में होती थी हम जबरन मुसलमान बना लेते थे. यह सब कुछ अशों में रहा होगा मगर यह भी नहीं भूल जाना चाहिए

कि उस युग में ईसाइयों ने भी इसलाम को उखाड़ने के लिए कम जुल्म नहीं किए. पिछले पांच सौ वर्षों में यूरोप के ईसाई मुल्कों के साथ हमारे कई जंग हुए. हमें अमनचैन से बैठने का मौका ही नहीं मिला. मगर तुर्क हार कर फिर बीसतीस वर्षों बाद बदला लेते थे. दोगुने जोश से हमला करते थे और अपनी खोई जमीन और इज्जत ही नहीं बल्कि गुलाम और बेशुमार दौलत और हथियार हासिल करते थे. यही रवैया था और यही रिवाज रहा है.

"हमारे यहां के सुलतान मुल्क के बादशाह थे और कौम के खलीफा (धर्मगुरु). इसलिए जितनी भी लड़ाइयां लड़ी गईं, उन्हें तुर्कों ने जिहाद (धर्मयुद्ध) माना. जंग में जीतने पर जांनिसार सिपाहियों को लूट के माल के अलावा बांदियां और गिल्में बतौर इनाम के दिए जाते थे. लड़ाई में मरने का खौफ था नहीं, क्योंकि जिहाद में जन्नत मिलती और जन्नत में भी तो हूर और गिल्में हैं."

बड़ी साफ अंगरेजी में हमीद साहब भावपूर्ण वर्णन कर रहे थे. कहने लगे, "तुर्क किसी भी कीमत पर आजादी का सौदा नहीं पसंद करता. हम पिछड़ गए थे. कुछ दकियानूसी भी हो गए, जमाने के साथ कदम नहीं रहा. शुक्र है कमाल अतातुर्क का, उन्होंने नयी जिंदगी दी. हम अमरीका के प्रति भी कृतज्ञ हैं. उन्होंने हमें बेशुमार दौलत, फौजी मदद के साथ उद्योगधंधे और शिक्षा की सहायता दी. अमरीका ने महसूस किया कि तुर्क एक बहादुर कौम है जो आन के लिए खुशी से मौत को चूम लेती है. दुनिया के इस भाग में साम्यवाद को रोकने के लिए उसे एक बहादुर साथी चाहिए था. हम से बढ़ कर था कौन?

"हम से अमरीका को कभी शिकायत का मौका नहीं मिला. साम्यवाद की हवा में एक जहरीला नशा होता है. कुछ असर कभीकभी यहां के कालेज के लड़कों पर भी हो जाता है. वे साम्यवादियों के बहकावे में आ कर कभीकभी अमरीकी दूतावास के सामने प्रदर्शन भी करते रहते हैं. मगर यह जुनून कायम नहीं रहता, क्योंकि तुर्कियों का विश्वास जनतंत्र में है."

शाम होने लगी. विदा करते समय श्री बे ने मेरे दोनों हाथ मिला कर अपने सीने पर रख लिए. तुर्की में विदाई के अभिवादन का यही तरीका है. कहने लगे, "इस्तंबूल तुर्की नहीं है, देहात को भी देख लीजिए. चारपांच दिन और रुक जाइए. हमारे ऐतिहासिक स्थान और खंडहर, कृषि और उद्योगधंधों से आप को हमारे देश का सही परिचय मिलेगा." हमें स्नेह के साथ विदा किया.

शाम हो गई थी फिर भी प्रकाश था. दूतावास के सचिव के साथ हम इस्तंबूल का नया हिस्सा देखने गए. इस अंचल में पूर्वी यूरोप के शरणार्थी बड़ी संख्या में बसे हुए हैं. जैसेजैसे रूसी साम्यवाद के प्रभाव में पड़ोसी राष्ट्र आते गए, उन देशों के बहुत से लोग, जो उस विचारधारा की चपेट को नहीं सभाल पाए, देश त्याग कर यहां आ गए. इन में से कुछ, जो सम्पन्न थे, उन्होंने व्यापार, व्यवसाय यहां आ कर शुरू कर दिया. बाकी जो गरीब थे उन की हालत कलकत्ते के आसपास बसे शरणार्थियों की तरह है.

मुझे अपने यहां के सन १९४७ की याद आ गई. पाकिस्तान के जुल्मों ने कितनों को बेघरबार कर दिया. बिना मुआवजा दिए कितनों की संपत्ति हड़प ली गई. साम्यवादी देश धर्म के नाम पर न सही पर अपने सिद्धांत के नाम पर भी तो

यही करते हैं धर्म और सिद्धांत में अंतर ही क्या है?

तुर्की में अगस्त में फलों की बहुतायत लगी सेव के आकार के पीच (आड़ू) केवल दोदो पैसों में हम ने खरीदे बड़े सुस्वादु थे छोटेछोटे बच्चों ने फलों की टोकरिया लिए हमें घेर लिया सभी अपने फल दिखा कर खरीदने के लिए कहने लगे शायद सुबह फल भरी टोकरियों का बोझ सिर पर लाद कर चले थे अब रात हो रही थी इसलिए घर वापस जाने की फिक्र में थे इन में कुछ तो आठदस वर्ष के हो थे सुदर गौर वर्ण और स्वस्थ थे मगर कपडे फटे थे प्रभुदयालजी ने बिना जरूरत बहुत से फल खरीद लिए मैं सोच रहा था, 'जीवन की विषमताए सभी जगह हैं चाहे वह धनी देश हो या गरीब, स्वीडन हो या तुर्की

नए इस्तबूल में कोई खास आकर्षण लगा नहीं कलकत्ते या बबई की तरह सडके, बसें और स्टोर थे बाजार और दुकानें देखते हुए होटल वापस आ गए फल इतने खा लिए थे कि भोजन भी नहीं किया

दूसरे दिन सुबह बेरूत के लिए रवाना हुए हवाई जहाज एयरपोर्ट का चक्कर लगाता हुआ उत्तरपूर्व की ओर बढ़ा नीचे इस्तबूल ओझल सा हो रहा था किंतु तुर्की मन में बैठा था

बेरुत

अरबी संस्कृति का प्रतीक

अपनी सन १९६१ की यात्रा में बेरुत हो कर स्वदेश लौटने का प्रोग्राम था लेकिन कुछ तो सफर की थकान और कुछ देश लौटने की प्रबल इच्छा के कारण हम सीधे काहिरा से भारत आ गए यहा आने पर मित्रो ने उलाहने दिए कि बिना अतिरिक्त व्यय के लेबनान न देख कर हम ने एक सपन्न और सुदर देश को देखने का मौका खो दिया, दोतीन दिन और लग जाते, मगर अरब और अरबी सस्कृति को नजदीक से तो देख लेते।

खैर, १९६४ में फिर अवसर मिला हम विश्वयात्रा समाप्त कर के इस्ताबूल से भारत वापस आ रहे थे रास्ते में लेबनान की राजधानी बेरुत में ठहरने का निश्चय किया

बेरुत फ्रीपोर्ट है फस्टम की जाच यहा कडाई से नहीं होती हमें भारतीय दूतावास के सचिव लेने आए थे इसलिए दोएक बात पूछ कर ही औपचारिकता के घेरे से छुट्टी मिल गई होटल की बुकिंग हम ने पहले से ही करा रखी थी क्योंकि हबर्ग और वेनिस में ऐसा न करने का कटु अनुभव हो चुका था

हम जिन देशों से होते आ रहे थे, उस के मुकाबले में रोम, एथेंस और इस्ताबूल के होटलो का स्तर घटिया था हमारी धारणा थी कि कुछ इसी प्रकार बेरुत के होटल भी होगे, किंतु जैसे ही हम होटल में गए, वहा की साजसज्जा, व्यवस्था और खिदमतदारी देख कर तबीयत खुश हो गई ऐसा लगा कि एशिया के देशो में भी पर्यटन व्यवसाय पर अब समुचित ध्यान दिया जाने लगा है बहुत ही सुदर कमरे, रेडियो और बेहतरीन फर्नीचर मेजो पर लेबनान के दर्शनीय स्थानों, वहा के इतिहास, भूगोल और पर्यटकों के लिए आवश्यक जानकारी की पुस्तके रखी थीं। इन्हें पढकर यात्रियों को काफी सुविधा रहती है क्योंकि उन्हें अपनी-अपनी रुचि के अनुसार क्याक्या देखना है, सिक्के की कीमत क्या है, होटल, मनोरजन के स्थान, रात्रि क्लब, थियेटर, सिनेमा, ट्रेन, बस और आवागमन के अन्य साधनों तथा इसी प्रकार की अन्य बातों आदि की आवश्यक जानकारी मिल जाती है

स्थानीय भाषा के आवश्यक शब्दों का अनुवाद भी अगरेजी और फ्रेंच में इन पुस्तको में रहता है इस के अलावा सुदर जिल्द की एक बाइबिल भी हमें मेज पर रखी दिखाई पडी पता चला कि स्थानीय बाइबिल एसोसिएशन धर्म-प्रचार में करोडो रुपए प्रति वर्ष खर्च करती है सोचने लगा कि हमारे देश में

भी धार्मिक सस्थाए और मठ हैं, जिन के पास बहुत बडी सपत्ति है, पर उन के माध्यम से विदेशो में हिंदू धर्म के प्रचार के लिए शायद ही कुछ काम होता है हा रामकृष्ण मिशन जरूर अपवाद है जिस समय हम होटल पहुचे, रात हो गई थी इसलिए उस दिन कहीं जा न पाए भोजन कर के अगले दिन का कार्यक्रम बनाने और लेबनान के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के बारे में चर्चा करने लगे

लेबनान अरब के लेवांत अचल में है भूमध्य सागर के पूर्वी छोर का यह छोटा सा अरब राष्ट्र है इस के दक्षिण में इजराइल है और उत्तर तथा पूर्व में सीरिया इस छोटे से राष्ट्र की स्थापना तुर्क साम्राज्य के पाच जिलो को मिला कर हुई थी १९२० में यह स्वाधीन हुआ पर १९४० तक इस पर फ्रास का सरक्षण रहा अब यहा का शासन जनता द्वारा निर्वाचित सरकार करती है ससद द्वारा छ वर्ष की अवधि के लिए राष्ट्रपति चुना जाता है

हमें बताया गया कि यह सब से छोटा अरब राष्ट्र है आबादी है इक्कीस लाख पाच लाख लोग अकेले बेरुत में ही रहते हैं आबादी में से आधे मुसलमान हैं और आधे ईसाई मैं सोच रहा था कि यह भी एक देश है जिस का कुल क्षेत्रफल चार हजार वर्ग मील है,—इतना तो हमारे एक जिले का होगा और जनसख्या कलकत्ता की एक तिहाई मात्र है फिर भी इस की अपनी सरकार है, शासन है, सेना है और यह सार्वभौम स्वतत्र राष्ट्र है

लेबनान में खाद्यान्न का उत्पादन यहा की जनसख्या के लिए पर्याप्त नहीं है क्योकि अधिकाश भूभाग बस केवल जगल और पहाड है केवल २३ प्रतिशत भूमि पर खेती होती है पेट्रोल का उत्पादन भी नगण्य है, केवल सोलह लाख टन प्रति वर्ष जब कि इस से भी छोटे देश कुवैत का वार्षिक उत्पादन साढे ग्यारह करोड टन और इस के पडोसी देश सऊदी अरब का वार्षिक उत्पादन दस करोड टन है

यहां फलों की पैदावार अच्छी होती है सवा पाच लाख टन अगूर, सेब और माल्टा यहा होते हैं लेबनान को प्रकृति ने धनी नहीं बनाया है फिर भी यह चौपराने से अच्छी आय पैदा कर लेता है विश्व में पेट्रोल की आय के कारण सब से अधिक अमीर देश कुवैत और सऊदी अरब का विदेशी व्यापार लेबनान के माध्यम से होता है 'ईराक आयल कपनी' के किरकुक आयल फील्ड से त्रिपोली तक पाइप लाइन है इसी प्रकार 'ट्रांसअरब आयल कपनी' की पाइपलाइन भी सऊदी अरब से यहां के बदरगाह सईदा तक है इन देशो का तेल लेबनान के बदरगाहों से ही विदेशों में निर्यात किया जाता है आज की दुनिया में पेट्रोल को 'तरल सोना' माना जाता है कुवैत, सऊदी अरब, ईराक आदि को पेट्रोल से बेशुमार आमदनी होती है लेबनान अपने बदरगाहों के उपयोग का किराया तो पाता ही है, अन्याय डिस्काउट वगैरह भी पाता है बीसवीं शताब्दी के शुरू में लदन जिस प्रकार यूरोप के व्यापार का माध्यम था उसी प्रकार इस समय अरब देशो के लिए लेबनान की राजधानी बेरुत है

यात्रिक व्यवसाय यहा की आमदनी का दूसरा बड़ा स्रोत है भौगोलिक दृष्टि से लेबनान पूर्व और पश्चिम के देशो को जोडने वाली कडी है इसी लिए

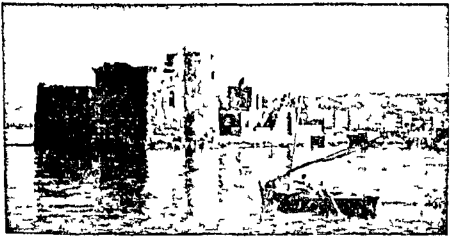

बेरुत हवाई जहाजों के आनेजाने का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव बन गया है यात्रियों के लिए यहां क्लब, होटल और मनोरंजन के तरहतरह के आकर्षक साधनों को प्रचुर प्रश्रय दिया गया है दोनों ओर के यात्री दोचार दिन का समय यहां के लिए निकाल ही लेते हैं आंकड़ों को देख कर पता चलता है कि १९६४ में यहां लगभग पांच लाख पर्यटक आए जिन से इन्हें करीब अस्सी करोड़ रुपयों की आमदनी हुई मतलब यह कि यहां की जनसंख्या के हिसाब से प्रति व्यक्ति ४०० रुपए की आय हुई जो कि कुल मिला कर हमारी वार्षिक प्रति व्यक्ति आय के लगभग है

अन्य यूरोपीय व एशिया के पूर्वी देशों की तरह इन्होंने भी रात्रि क्लबों को काफी तड़कभड़क वाला बना रखा है ज्यों ही हम होटल पहुंचे, साफ अंगरेजी बोलने वाले दोतीन व्यक्ति बारीबारी से आ कर मिले ये यहां के रात्रि क्लबों के एजेंट थे इन्होंने लच्छेदार शब्दों में इजिप्शियन ब्यूटी, न्यूड क्लब, न्यूड नृत्य आदि के बारे में बड़ेबड़े प्रलोभन दिए हांगकांग, होनोलूलू, पेरिस और हैंबर्ग जैसे विलासिता के लिए मशहूर शहरों के रात्रि क्लब हम देखते आ रहे थे इन जगहों में न्यूड नाइट क्लब तो दिखाई पड़े थे पर नंगे स्त्रीपुरुषों के नृत्य आयोजित करने वाले क्लबों के बारे में यहीं आ कर सुना यों तो फ्रांस, जरमनी और आस्ट्रिया में न्यूड क्लब वर्षों से हैं, साल में दसपंद्रह दिन के इन के कैंप भी लगते हैं पर इन में नग्न नृत्य का प्रोग्राम नहीं रहता

दरअसल इन का उद्देश्य भिन्न होता है प्रकृति से अधिकाधिक संपर्क को प्रोत्साहन देना इन के शिविरों में सभी सदस्य नंगे घूमते फिरते हैं पर इन में कामुकता भड़काने को प्रश्रय न दे कर वासनाओं को रोकने की ओर प्रयास रहता है मुझे इन क्लबों में जाने का मौका तो नहीं लगा लेकिन परिचितों से यही जानकारी मिली हमारे यहां भी हजारों वर्षों से नागा संप्रदाय के लोग ऐसे ही रहते आ रहे हैं हमारे यहां जैन साधुमुनि भी दिगंबर ही रहते हैं हां, विदेशों के दिगंबर क्लबों में स्त्रियां रहती हैं, हमारे यहां नहीं, यह एक भिन्नता अवश्य है इस के अलावा हमारे यहां आध्यात्मिक दृष्टिकोण को महत्त्व दिया गया है, उन के यहां नहीं

एजेंटों को हमारे पास से निराश हो कर लौटना पड़ा उन्होंने समझा कि या तो हम परले सिरे के अरसिक हैं या कजूस कम से कम उन की शक्ल से यही जाहिर हो रहा था, भले ही उन्होंने हमें मौखिक धन्यवाद दे दिया इन अरब देशों के रात्रि क्लबों के आसपास मारपीट और लूटखसोट की वारदातों के बारे में हम ने काफी सुन रखा था इस लिए रुचि न होने पर भी महज अनुभव के लिए भी इतना बड़ा जोखिम उठाना हम ने वाजिब नहीं समझा

अगले दिन सुबह नाश्ता कर के हम अपने दूतावास गए बेरुत में हमारे कौंसल एक पजाबी सज्जन थे अरब देशों के बारे में उन का अध्ययन अच्छा था भारत के साथ अरब देशों के वाणिज्य, व्यापार, आयातनिर्यात आदि के बारे में उन से बातें हुईं उन्होंने स्पष्ट तो नहीं कहा क्योंकि सरकारी पदाधिकारी थे, फिर भी उन की बातों से हमें अदाज मिला कि हमारे मत्री प्रति वर्ष अमरीका, ब्रिटेन, रूस और जरमनी तो जाते रहते हैं, पर हमारी सरकार अरब देशों को तृतीय श्रेणी का मानती है और इन की तरफ अपेक्षित ध्यान भी नहीं देती जापान, फ्रांस और इटली जैसे उन्नत देश भी अपने विशिष्ट मत्रियों को समयसमय पर इन देशों में भेजते रहते ह ज्व कि हमारे देश से सचिव या उन से नीचे के अफसर ही यहा आते हैं

प्रतिक्रिया यह होती है कि भारत के ऐसे रवैए को यहा वाले एक प्रकार से अपना अपमान समझते हैं यदि हम उपेक्षा की नीति बदल कर अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपना लें तो अरब देशों में हमारी चीजों का निर्यात बड़े पैमाने पर हो सकना सभव है

कौंसल महोदय ने यह भी बताया कि रौकफलर, फोर्ड, रथचाइल्ड और निजाम हैदराबाद के वैभव और दौलत को इन देशों के शेखों ने मात दे दी है क्योंकि 'तरल सोने' की धारा इन की धरती में बह रही है उन की बातें तथ्यपूर्ण थीं क्योंकि हम ने खुद भी होनोलूलू, लदन, कोपेनहेगन और वेनिस में इन्हें पानी की तरह रुपए बहाते देखा था

इन देशों में हमारे माल की खपत में बाधा पहुचाने वाले जिस दूसरे कारण का उल्लेख उन्होंने किया उसे सुन कर हमारा सिर लज्जा से झुक जाना स्वाभाविक था क्योंकि हम खुद व्यापारी समाज के थे उन्होंने बताया कि हमारे शिल्पोद्योग की जो वस्तुएं यहा पहुचती ह उन की क्वालिटी और माप दोनों के बारे में अक्सर शिकायतें आती ह भारत में जब वह इन चीजों के निर्माताओं को पत्र लिखते हैं तो या तो जवाब ही नहीं आता और बारबार लिखने पर यदि आ भी गया तो सतोष जनक नहीं होता यहा तक कि चीजों की किस्म भविष्य में सुधारने का आश्वासन तक नहीं मिलता ऐसी स्थिति में स्थानीय व्यापारियों को भारतीय वस्तुओं से सतुष्टि नहीं मिल पाती नतीजा यह हो रहा है कि इन देशों में भारतीय माल की साख घट गई है

अरब देशों के ग्राहकों की धारणा है कि सिवा चीन और पाकिस्तान के दुनिया के सभी देश अपने निर्यात की वस्तुओं की पूर्णता के बारे में भारत से कहीं अधिक ईमानदार और सावधान रहते हैं

लगभग दो घटे तक हम अपने कौंसल के साथ रहे ऐसा लगा कि यह हमें

समझाना चाहते थे कि हमारे उद्योगपतियों को व्यवसाय के लाभ के साथसाथ राष्ट्रीय सम्मान और साख का भी ध्यान रखना चाहिए. इस दिशा में सरकार को भी ऐसी नीति अपनानी चाहिए कि स्टेंडर्ड से हलके माल निर्यात करने वालों को दंड मिले.

हम ने दिल्ली आ कर अपनी जो रिपोर्ट व्यापार मंत्री को दी उस में इन सब बातों का उल्लेख कर दिया गया था.

लेबनान की आर्थिक और औद्योगिक व्यवस्था के बारे में हमें जानकारी लेनी थी. हमारे दूतावास ने यहां के व्यापार मंत्री से उसी दिन संध्या का समय मुलाकात के लिए तय कर रखा था. हम ने दूतावास के लोगों को सहयोग के लिए धन्यवाद दिया और विदा ली.

रोम, एथेंस और इस्तांबूल से ही गरमी महसूस होने लगी थी पर यहां तो यह एक प्रकार से सताने ही लगी. बाजार में अधिक न घूम कर हम सीधे होटल वापस आ गए.

तीन बजे दूतावास के सचिव कार ले कर आए. हम उन के साथ मिस्टर अफजलबेग के दफ्तर में गए. अपने मुख्य सचिव और अन्य सहायकों को भी उन्होंने बुला रखा था. औपचारिक रूप से पारस्परिक परिचय हुआ. भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व पर बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ. गांधीजी और नेहरूजी के बारे में वह कहने लगे कि कई शताब्दियों बाद ही इस प्रकार के अमर्न के पैगंबर पैदा होते हैं. इन दोनों महान विभूतियों को विश्व अभी समझ नहीं पाया है. सत्य, अहिंसा और पंचशील के सिद्धांतों को अमल में लाने के तरीके जो गांधीजी और नेहरूजी ने बताए हैं, वे गिरते हुए मानव समाज की राहत के लिए एक मात्र उपाय हैं. दुनिया चांद तक पहुंचने का प्रयत्न कर रही है मगर वह यह नहीं समझती कि अपने नामोनिशान को मिटाने के लिए उस ने हाइड्रोजन बम और राकेट इस के पहले खुद ही तैयार कर रखे हैं.

'इंशा अल्लाह!' कह कर इस चर्चा को समाप्त कर वह अपने विषय पर आए कहने लगे कि लेबनान और हिंदुस्तान के ताल्लुकात कदीमी हैं क्योंकि दोनों की तहजीब पुरानी है. जुबल (बिबलोस) पोर्ट शायद दुनिया में सब से प्राचीन है. भारत की बड़ीबड़ी समुद्रगामी नौकाओं से बेहतरीन सामान हमारे यहां हमेशा से आते रहे हैं और इसी रास्ते यूरोप को भेजे जाते रहे हैं. 'सिर्फ यही नहीं, अरबों ने भारत से ही गिनती सीखी और आज भी हम अंकों को हिंदसा कहते हैं

गणित, ज्योतिष और दर्शन के सिद्धांत हिंदुस्तान से बराबर हमारे यहां आते रहे हैं जिन्हें हम से यूनान ने सीखा और उन से यूरोप ने. हंस कर कहने लगे, "आज हम उन मुल्कों से पिछड़े हैं मगर खैर है कि हम महसूस करते हैं कि जमाने के साथ हमें कदम रखने हैं इसलिए कुछ पुराने तरीके जो आज के जमाने में बेकार और दकियानूसी साबित हो रहे हैं, हम छोड़ रहे हैं. लेबनान इस ओर दूसरे अरब मुल्कों से ज्यादा खयाल रखता है, इस का आप ने अंदाज किया होगा."

हम ने बताया, "सिवा मिस्र के हम अन्य किसी अरब मुल्क में अब तक नहीं गए हैं फिर भी इतना हम जरूर कहेंगे कि आप के मुल्क में आधुनिकता के प्रति

लोगों में झुकाव अधिक है और साम्प्रदायिक संकीर्णता भी कम है"

कुछ देर चुप रह कर वह कहने लगे, "लेबनान ने इतिहास के इशारे को समझा है हमें फख्र है कि हम अपने कदीमी इखलाख को हासिल करने की तरफ बढ़ रहे हैं खेती की पैदावार को आधुनिक तरीके से बढ़ा रहे हैं हमें उम्मीद है कि आने वाले दोतीन वर्षों में हम इस मामले में आत्मनिर्भर हो सकेंगे"

उन्होंने लेबनान की राष्ट्रीय आय ५०० करोड़ रुपयों की बताई इस का मतलब है २,५०० रुपए प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष हालांकि लेबनान केवल ५० करोड़ रुपयों के माल का निर्यात करता है लेकिन क्योंकि कुवैत और सऊदी अरब का माल यहां के बंदरगाहों से आताजाता है इसलिए इन्हें ३६० करोड़ रुपयों की अतिरिक्त प्राप्ति हो जाती है

शिक्षा की प्रगति के बारे में जो सुना, उस से आश्चर्य होना स्वाभाविक था अरब देशों में इजराइल को छोड़ कर सभी देश मुसलमानों के हैं हमारी धारणा थी कि पाकिस्तान के मुसलमानों की तरह यहां भी धर्मांधता होगी और हर मामले में कुरान और हदीस के बाहर की चीजों को ये भी कुफ्र मानते होंगे मिस्र में कुछ हद तक भ्रम का निवारण हुआ था पर उसे मैं ने आधुनिकता का थोड़ा सा प्रभाव मात्र समझा था लेकिन लेबनान में जीवन की गतिविधि और शिक्षा के प्रचारप्रसार के आंकड़ों को जान कर अपनी धारणा में संशोधन करना पड़ा

इस छोटे देश में आधुनिक सुविधाओं और सामग्री से लैस चार विश्वविद्यालय हैं यहां हजारों स्कूल चल रहे हैं जिन में लगभग तीन लाख पैंसठ हजार विद्यार्थी और दस हजार अध्यापक हैं इन के अलावा मुल्लामौलवियों के कुछ पुराने ढंग के मदरसे भी हैं

बातचीत के सिलसिले में हमें बड़े साइस्ता ढंग से इशारा दे दिया गया कि यदि हिंदुस्तान अपनी चीजों का स्टैंडर्ड अच्छा रखे तो लेबनान की मारफत मध्य पूर्व में भारतीय सामग्री की अच्छी खपत हो सकती है हम पहले से ही अपने उद्योगों के स्टैंडर्ड के बारे में सुन चुके थे प्रभुदयालजी मुसकरा कर कहने लगे, "शुरू में दिक्कतें कुछ हो जाती हैं मगर हमें उम्मीद है कि हमारे माल के बारे में शिकायत का मौका नहीं मिलेगा"

चाय के साथ उन्होंने अपने देश के बेहतरीन अंगूर और माल्टा भी आग्रह पूर्वक खिलाए बचपन में देखा था, काबुल से बहुत मीठे अंगूर आते थे, काठ के गोल डब्बों में रुई में लिपटे हुए यहां के अंगूरों ने उस मधुरता की याद ताजा कर दी

विदा करने के लिए वह नीचे गाड़ी तक आए उन का अनुरोध था कि हम लोग लेबनान की पहाड़ियों में रमणीक जगहों को जरूर देख लें

बाजार से गुजरते हुए हम ने देखा कि जगहजगह भारतीय फिल्मों के इश्तहार लगे हुए हैं हमें अपने दूतावास के सचिव से पता चला कि भारतीय फिल्मों की यहां अच्छी मांग रहती है, लोग उन्हें पसंद भी करते हैं इस कारण बहुत से स्थानीय लोग हिंदी समझ लेते हैं प्रभुदयालजी ने धीरे से कहा, 'जो काम 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' और 'नागरी प्रचारिणी सभा' न कर पाईं और हमारी सरकार भी जिस के लिए अब तक स्पष्ट दिशा नहीं अपना सकी, उसे हमारे सिनेमा

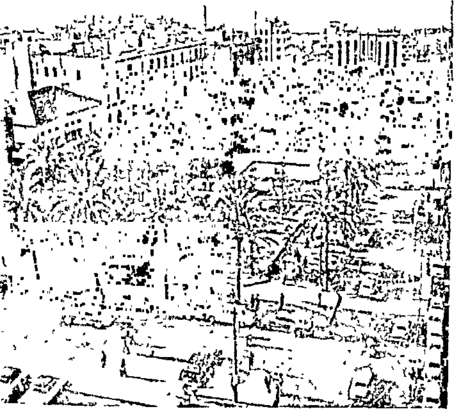

लेबनान की राजधानी बेरूत   इतिहास की भव्यता और आधुनिकता के बीच

वालो ने कर दिखाया"

बेरूत, फ्रीपोर्ट और यात्रियो के आकर्षण का नगर होने के कारण दुकानो में हर तरह के सामान खूबसूरती से सजे थे दाम भी वाजिब थे चीजों को देखने और दाम की जानकारी के लिए हम कई स्टोरों में गए. वहा सभी देशो की चीजें थीं.

यहा एक और विशेषता देखी. अवैध व्यापार यानी तस्करी का धधा यहा बडे पैमाने पर होता है. शायद लेबनान सरकार को इस से अच्छी आमदनी होती है क्योंकि पडोसी देश में आयात पर सरकारी नियत्रण और प्रतिबध है जब कि यहा पूरी छूट है. यही कारण है कि यहा से विदेशी माल पडोसी देशों में जाता है यहा के बाजार में आसानी से सभी देशो के सिक्के बदले जा सकते है.

हम ने इस ढग की एकदो दुकानो में जा कर सिक्को के भाव पूछे. अमरीकी डालर, स्वीडिश क्रोनर और स्विस फ्राक की दर अधिकृत दरों से ऊंची थी. ब्रिटेन के पाउड, पश्चिम जरमनी के मार्क और जापानी येन के भाव अधिकृत दरो के आसपास थे. भारतीय मुद्रा का मूल्य केवल ६० प्रतिशत था और पाकिस्तानी रु ५० तथा बर्मा का सिर्फ ३० प्रतिशत.

हमारे दूतावास के सचिव का विशेष आग्रह था कि यहा का विश्वविद्यालय जरूर देखना चाहिए. वहां जा कर उन के वार्षिक बजट, अध्ययन की विविध

सुविधाए और व्यवस्था देख कर पता चला कि अमरीकी ईसाई सस्थाए इन देशो में ईसाईयत के प्रचारप्रसार के लिए बेशुमार धन खर्च करती रहती हैं हो सकता है कि इस के पीछे उन का कुछ दूसरा उद्देश्य भी हो, फिर भी यह तो मानना ही पडेगा कि वे भूखों को अन्न, नगो को वस्त्र और गरीबो को शिक्षा दे कर रोजी और रोजगार के काबिल तो बना ही देती हैं हमारे देश में भी ईसाई मिशनरिया ऐसा करती हैं हम बहुत शोर मचाते हैं कि धर्म लूटा जा रहा है, हिंदुओ को प्रलोभन दे कर ईसाई बनाया जा रहा है आदि पर जब हम अपने यहा के शौकीन मठाधीशों और महतों की जगलों और पहाडो में कष्ट सहते हुए ईसाई पादरियो से तुलना करते हैं तो शका का समाधान अपनेआप हो जाता है

अमरीकी विश्वविद्यालय में हम ने देखा कि हर देश और हर रग के विद्यार्थी वहा हैं सगीत, कला, शिल्प, इजीनियरिंग, नर्सिंग, चिकित्सा आदि सभी प्रकार के स्कूल और कालेज इस के अतर्गत हैं अधिकांश अध्यापक लेबनानी हैं छात्रों के अनुशासन, रुचि और अध्यवसाय से सचालको को पूर्ण सतोष है पिछले वर्ष इस विश्वविद्यालय की शताब्दी जयती मनाई गई थी

लौटते समय बाजार से ऊटगाडी गुजरती देखी जो एक प्रकार से हमारे राजस्थान जैसी ही थी उसी तरह सामान लादे बेफिक्री से नकेल थामे गाडी वाला मोटर और ट्रको की उपेक्षा करता चला जा रहा था अच्छा लगा कि दौडभाग की दुनिया में कहींकहीं मस्ती की चाल अब भी दिखाई दे जाती है

बाजार में ऐसे ही घूमते रहे, खरीदारी कुछ करनी थी नहीं अगले दिन के लिए एक गाइड और कार तय कर ली, हालांकि देखने के लिए कुछ विशेष था नहीं सफर के आरभ और अत में तबीयत में शाहखर्ची आ ही जाती है

दूसरे दिन गाइड के साथ घूमने निकले गाइड का नाम था इस्माइल वह तनिक मोटा जरूर था मगर था बडा खुशमिजाज अगरेजी साफ जानता था और हिंदी के भी दोचार शब्द बोल लेता था शुरू में 'गाइडधर्म' के अनुसार करीब आधे घटे तक उस ने लेबनान और बेरुत के इतिहास के बारे में बताया लेबनान के इतिहास के सिलसिले में उस ने ईसाइयों और मुसलमानों के बीच मध्ययुग की लडाइयों और तनाव की जो बातें बताईं, वे सही जरूर रही होंगी, पर हमें ऐसा लगा कि मुसलमान होने के नाते उस ने कुछ पक्षपात से काम लिया उस ने बताया कि लेबनान का क्षेत्र मानव सभ्यता के प्रारभिक काल के प्रथम और द्वितीय चरण का है खुदाई करने पर इस के प्रमाण मिले हैं और मिलते जा रहे हैं

गाइड ने बताया, "नवीं ईसवी में यहां मुसलमान और ईसाइयो में कई बार लडाइयां हुईं अब भी होती हैं क्योंकि ईसाई मुसलमानों को बहका कर कुफ्र की राह ले जाने की अपनी आदत से बाज नहीं आते लेकिन इतना जरूर है कि अब तलवारों की जगह अक्ल और हिकमत से लडाई होती है इसलाम को खतरे में डाले रखने के लिए ईसाइयो ने अरब क्षेत्र में यहूदियों को बसा कर इजराइल कायम किया है यहां से इजराइल सिर्फ १५० मील और यरुशलम २०० मील की दूरी पर है इजराइल को चारों ओर से अरब मुल्क घेरे हुए हैं दुनिया के अमन के लिए इजराइल एक कायमी खतरा है पिछले कई हजार वर्षों में जितना खून हमारी

इस जमीन पर बहाया गया है, उस की मिसाल शायद ही और कहीं मिलेगी.

मुसलमानों और ईसाइयों, मुसलमानों और मुसलमानों, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकों, यहूदियों और मुसलमानों में यहां आपस में एक नहीं अनेक बार युद्ध हुए हैं. यही नहीं, तुर्की के सुल्तानों ने भी जब चाहा, यहां लूटमार मचाई. काफी समय तक यह इलाका उन के अधीन रहा है. तुर्की सुल्तानों के हरमों में सदियों तक यहां से हूरें और गिलमें जबरदस्ती से लाई गईं."

इस्माइल ने अपनी तकरीर जारी रखी, "अठारहवीं शताब्दी में हिंदुस्तान से पैर उखड़ने के बाद फ्रांस ने यहां अपना प्रभुत्व जमा लिया. १९४० तक यहां उस का प्रभुत्व कायम रहा. वे शायद फिर भी यहां से जाते नहीं मगर कभी तो न्याय की जीत होती ही है. उन के खुद के मुल्क पर जून १९४० में जरमन नाजी फौज चढ़ आई. वे खुद गुलाम हो गए और हमारा लेबनान आजाद हो गया. सन १९४३ में यहां पहला चुनाव हुआ. लेबनान अरब लीग का सदस्य जरूर बना मगर इजराइल से कभी भी हम ने वैर नहीं रखा."

मैं ने बात काट कर कहा, "मगर तुम तो इजराइल से नाराज हो, अभी तुम्हारी बातों से पता चला है."

इस्माइल जरा गंभीर हो गया. उस ने कहा, "वह मेरी अपनी राय थी." अपने विषय पर लौटते हुए उस ने बताया, "क्योंकि इजराइल से लेबनान ने द्वेष नहीं रखा इसलिए लेबनान पर प्रेसिडेंट नासिर की नाराजगी स्वाभाविक थी. १९४९ में जब ईराक में फौजी बलवा हुआ, उस समय यहां भी शायद वही हालत होती, मगर यहां के प्रेसिडेंट कमाल सामन ने बुद्धिमानी से काम लिया और अमरीका से सहायता की प्रार्थना की. समय पर अमरीकी फौजें आ गईं. लेबनान अमन के वीरान में तरक्की करता जा रहा है. बेरुत की आबादी १९२६ में सिर्फ ८०,००० थी, अब पांच लाख हैं. दुनिया के बड़े और खूबसूरत शहरों में इस की गिनती है."

मैं ने कहा, "इस्माइल साहब, कलकत्ता की आबादी साठ लाख है कुछ पता है?"

मुसकरा कर उस ने कहा, "सुना है, मगर दौलत का बौर बेरुत में है. इसलिए यह बड़ा है और खूबसूरत भी. कुवैत और सऊदी अरब के शेखों के महल यहां हैं, उन के हरम भी हैं. वे यहां बराबर आते रहते हैं." उस ने यह भी बताया कि नवाब जूनागढ़ और हैदराबाद के शाहजादे भी यहां तबीयत बहलाने के लिए आया करते थे.

गाइड की बातों में आकर्षण था. उस की अंगरेजी यूरोप के गाइडों की तरह नहीं थी. भारतीयों की तरह उस में स्पष्टता थी और बीचबीच में वह मजहब, हरम, हुस्न, तवारीख, मुश्किल, वक्त, जमाना, जंग, हिकमत और न जाने कितने ऐसे परिचित शब्द बोलता था इसलिए अपनापन भी लगता था.

उस ने बताया कि यहां की क्रिश्चियन संस्थाओं के पास खर्च करने के लिए अथाह दौलत है इसलिए उन का रोबदाब भी है. मैं ने कहा, "ईसाई तो आप के देश के गरीबों की सेवा करते हैं, फिर विरोध किस बात का?"

से सीधे दिल्ली के लिए चले गए मैं थोड़ा सा खतरा ले कर भी पाकिस्तान देखना चाहता था इसलिए विसा की कोशिश के लिए रुक गया

काफी दिक्कत और हमारे दूतावास की कोशिश के बाद मुझे केवल दो दिनों के लिए कराची का विसा मिला लाहौर के लिए फिर से कराची में पूछने के लिए कहा गया .

इस्ताबूल से मेरे साथ एक पाकिस्तानी युवक बेरुत आया था हवाई जहाज में परिचय हुआ अपने कारोबार के सिलसिले में यूरोपीय देशों से होता हुआ वह पाकिस्तान लौट रहा था उस ने भी बेरुत में मेरे विसा के लिए काफी कोशिश की वह खुद पाकिस्तानी दूतावास में हमारे दूतावास के सचिव के साथ गया वह मन ही मन अपने देश के दूतावास के व्यवहार के प्रति खिन्न भी था किंतु झेंप मिटाने के लिए उस ने कहा, "पाकिस्तानी नागरिकों को भी भारतीय विसा मिलने में दिक्कत होती है"

हमारे दूतावास के सचिव ने मुसकरा कर नम्रतापूर्वक इस का खडन किया और बताया कि लगभग हर रोज पाकिस्तानी नागरिकों को भारतीय विसा यहा से दिए जाते हैं

युवक का नाम याद नहीं है उस की बात से पता चला कि उस के कारोबार का हेड आफिस कराची में है आयातनिर्यात का व्यवसाय है उस का पिता और बड़े भाई वहा काम देखते हैं और वह विदेशों से व्यापार और सपर्क बढ़ाने के लिए घूमता रहता है

उस का सुझाव था कि मक्का और मदीना भी देख लिए जाए पास ही हैं हवाई जहाज से सिर्फ दो घटे लगते हैं यदि विदेशी मुद्रा की कमी हो तो सारे खर्च की जिम्मेदारी वह खुद लेने को तैयार था

मैं ने सुन रखा था कि केवल मुसलमान ही उन स्थानों में जा सकते हैं किंतु उस ने बताया कि ऐसी कोई खास पाबदी नहीं है, कभीकभी यूरोपीय और अमरीकी यात्री भी वहा जाया करते हैं

सैलानी मन में एक बार तो इच्छा जगी कि क्यों न इसलामी तीर्थों की यात्रा कर ली जाए, शायद ही जीवन में ऐसा मौका हाथ लगे, मगर उसी समय मन में एक शका और हो आई कि वहा जा कर कहीं किसी सकट में न पड जाऊ. अकेला था, हमारी यात्रा के सचालक प्रभुदयालजी सुबह ही वायुयान से चले गए थे यदि वह होते तो भी शायद ही स्वीकृति देते मैं ने अपने दूतावास को अपनी इच्छा बताई मगर उन्होंने भी इस हज यात्रा के लिए प्रोत्साहन नहीं दिया मन को समझा कर रह गया शाम को 'पाक' एयरवेज के जहाज से कराची जाना पूर्ववत निश्चित कर लिया

हवाई जहाज तक पहुचाने के लिए कराची का युवक अपनी कार के साथ आया उस ने अपना फोन नबर दिया और एक परिचयपत्र भी कराची में अपने घर पर ठहरने के लिए अनुरोध भी किया मैं ने देखा कि पाकिस्तानी और हिंदुस्तानी इसानों का जितना तनाव अपने देशों में है, उतना दूसर देशों में नहीं रहता ऐसा लगता है कि अगर व्यक्ति अपने निहित स्वार्थों से जरा हट कर एक-

दूसरे से मिलें तो मन का द्वेष धुल जाता है. हिंदुस्तानी और पाकिस्तानी इतिहास, भाषा, पहनावे और रंग की एकता का अनुभव तभी होता है जब कि इन दोनों देशों की भौगोलिक सीमाओं से बाहर हम परस्पर मिलते हैं.

हवाई जहाज में जाते समय मुड़ कर देखा, इस्माइल दौड़ता आ रहा है. हाथों में ताजे अंगूर का एक पैकेट उस ने जल्दी से थमा दिया. मैं सिर्फ 'धन्यवाद' दे पाया, मगर बेशक उस लेबनानी गाइड ने एक हिंदुस्तानी दिल को हमेशा के लिए बांध लिया. यद्यपि ये सब बातें देखनेसुनने में बहुत साधारण सी लगती हैं, पर इन का प्रभाव स्थायी रह जाता है.

इस्माइल ने कहा, "वैसे मजहबी आजादी का हक सभी को है, मगर दिक्कत यह है कि विदेशियों की मदद और कोशिश से जब किसी मजहब को फैलने का सहारा मिलता है तो उस के मानने वालों का झुकाव भी अपने मुल्क की ओर न हो कर गैर मुल्क पर होता है हम लेबनान में ऐसा होना बर्दाश्त नहीं करेंगे और माफ करें, शायद आप भी अपने मुल्क के लिए ऐसा बर्दाश्त नहीं करेंगे"

इस्माइल के तर्क और युक्ति ने मुझे सोचने के लिए काफी मसाला दे दिया हमारे नागा और मिजो लोगों की समस्या के पीछे भी तो ईसाई पादरियों का हाथ बताया जाता है शायद वह समझ गया उस ने विषय को मोड़ते हुए बताया, 'लेबनान की भाषा लेबनिन है इसे अरब की एक उपभाषा कह सकते हैं मगर इस में मिठास है और सरलता भी विदेशी भाषाओं में फ्रेंच यहां अधिक प्रचलित है क्योंकि फ्रांस के साथ हमारा संपर्क अधिक रहा है अब कुछ वर्षों से अमरीकी ढंग की अंगरेजी का भी प्रचार हो रहा है"

गाइड की बातें बड़ी रोचक और तथ्यपूर्ण लगीं उस ने बताया, "यहां एक कालिज है जहां गाइडशिप की शिक्षा दी जाती है देश के इतिहास भूगोल, अर्थ नीति आदि के अलावा कई विदेशी भाषाएं भी इन्हें सीखनी पड़ती हैं"

पिछले ५० दिनों से विश्व के सुंदर और समृद्ध शहरों को हम देखते रहे थे इसलिए बेरुत में हमारे देखने लायक विशेष कुछ था नहीं फिर भी इस्माइल के साथ शहर के पुराने भाग के खंडहरों को देखने के लिए कार से गए हमारे कुतुब मीनार के पास महरौली या राजगृह और नालंदा के खंडहरों की सी इन की हालत थी कुछ खुदाई भी यहां हुई है प्राचीन काल के बरतन, मूर्तियां और गहने मिले हैं असीरियन सभ्यता का यहां प्रभाव था जो शायद आसुरी सभ्यता रही हो हमारे पुराणों में देवासुर के संघर्ष का जिक्र आता है '

ईरान का मध्य और पूर्वी क्षेत्र भारत से संबंधित रहा है इसलिए इन की सभ्यता और मूल संस्कृति से हमारा सामंजस्य है असीरियन सभ्यता और संस्कृति ने अरब और यूनान को प्रभावित किया है शायद यही कारण है कि इसलाम, ईसाइयों और यहूदियों के धर्म में कुछ हद तक सामंजस्य मिलता है खंडहरों के बीच इन्हीं बातों पर सोचने लगा शायद यही आसुरी सभ्यता और संस्कृति इसलाम के रूप में भारत में फिर से आई थी

पास के संग्रहालय में भी कुछ चीजें रखी देखीं वेशभूषा, पहनावा, रथ, पशुपालन सभी तो जैसे जानेपहचाने से लगे, महाभारत रामायण और पुराणों में वर्णित से

ध्यान टूटा इस्माइल कह रहा था, "हमारी बदकिस्मती है कि यहां से काफी चीजें अमरीका और फ्रांस के म्यूजियमों में चली गईं"

मैं ने ब्रिटिश म्यूजियम में औरंगजेब की लिखी कुरानशरीफ देखी थी और लंदन टावर में कोहेनूर हीरा सोचने लगा, 'पराधीन देशों के साथ व्यवहार एक सा ही होता है, चाहे फ्रांस करे या ब्रिटेन'

पुराने शहर से बंदरगाह पर आए यह बंदरगाह काफी बड़ा और आधुनिक साधनों से सुसज्जित है यहां १७ बड़ेबड़े जहाज एक साथ ठहर

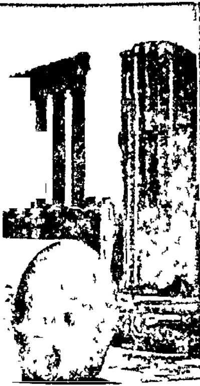

ईसा से तीन सदी पहले का जुपिटर मंदिर लेकिन अब खंडहर ही शेष हैं
दाएं पहाड़ियों में बीच जाने वाला एक यूनानी वर्तमान से अलग नहीं

सकते हैं और उन पर माल चढ़ाया या उन से उतारा जा सकता है संसार के सभी देशों के जहाज यहां आते हैं सन १९६३ में ३,१०० जहाज इस बंदरगाह पर आए थे इसी से यहां के कारोबार का सहज अनुमान लगाया जा सकता है

वापस जाते समय इस्माइल हमें यहां की बड़ी मसजिद में ले गया तो भीतर से हमें यह इस्तांबूल की मसजिद की तरह लगी यानी पुराने गिरजे के ढंग की हम ने इस बारे में गाइड से पूछा तो उस ने कुछ झिझक के साथ स्वीकार किया, "बारहवीं शताब्दी में क्रुसेडरों (ईसाई धर्म के नाम पर युद्ध करते हुए बलिदान होने वाले वीर) ने इसे बनाया था इस का नाम 'संट जौन बैप्टिस्ट' चर्च था बाद में इसे मसजिद बना लिया गया" इस्माइल की झिझक से लगा कि धर्म के नाम पर उपासना गृहों को खंडित करना मुसलमान होने पर भी वह अन्याय समझता है

इस्माइल से हम ने विदा ली मैं तो उस के व्यवहार से बहुत ही प्रभावित और खुश था मुझे वह गाइड नहीं बल्कि एक अच्छा साथी लगा 'खुदा हाफिज' कह कर जब उस ने विदा ली तो मैं ने दोनों हाथ अपने सीने से लगा लिए उस की मुसकराती शक्ल आज भी याद आती है

बेरुत से हमें पाकिस्तान जाने की व्यवस्था करनी थी हमारे दूतावास ने इस के प्रति उत्साह नहीं दिखाया इसलिए मेरे दोनों साथी दूसरे दिन सुबह वहां

पाकिस्तान

जो कभी भारत का ही एक अंग था

स्वदेश में रहने पर अपने देश के आकर्षण का अनुमान नहीं होता लेकिन विदेशों में ज्यादा समय रह जाने पर स्वदेश के प्रति कितना प्यार, कितना खिंचाव होता है, इस का अंदाज तो व्यक्तिगत अनुभव से ही हो पाता है

इस बार की विदेश यात्रा में घर की याद जरा जल्दी अनुभव होने लगी हम सुदूरपूर्व जापान से अमरीका गए और फिर यूरोप से तुर्की होते हुए मध्य पूर्व लेबनान की राजधानी बेरूत पहुंचे अब तक की यात्रा बड़ी मनोरंजक रही

पृथ्वी की परिक्रमा में ५० दिन लगे पर अब ५१ वां दिन न तो मुझे अच्छा लगा और न मेरे साथियों को ही हमारे कार्यक्रम में अभी पाकिस्तान की यात्रा बाकी थी लेकिन दोनों साथी श्री प्रभुदयाल हिम्मत सिंह का और श्री रामकुमार भुवाल का सीधे कलकत्ते की ओर उड चले मैं अपने कार्यक्रम में रद्दोबदल नहीं करना चाहता था, इसलिए ३० अगस्त १९६४ को रात्रि के ११ बजे कराची के लिए रवाना हो गया

बेरूत से कराची मुश्किल से ढाई घंटे की उडान है खिड़की से बाहर झांक कर देखा, दूर पर बेरूत की रोशनियां कांपतीकांपती तेजी से गायब हो गईं. मन नहीं लग रहा था सोचा, 'पास बैठे सहयात्री से कुछ बातें करूं' देखा तो उन की नाक नींद से बातें कर रही थी होस्टेस ने मुझे परेशान सा देख कर स्नेह भरी मुसकान से पूछा, "चाय या काफी?"

"कुछ नहीं, धन्यवाद!" मेरा उत्तर था और मैं आंखें बंद कर के सोने की चेष्टा करने लगा

जेट हवाई जहाज की गति तेज थी पर मेरा दिमाग उस से भी तेजी से दौड़ रहा था—*भारत और पाकिस्तान दिल्ली और रावलपिंडी . . हिंदू और मुसलमान इंगलैंड और हिंदुस्तान सत्याग्रह . . खिलाफत . दमन और शोषण की आंधियां गांधीजी जिन्ना . दंगे . . फसाद . चीखपुकार . . !*

"हम कराची पहुंच रहे हैं, कमरबंद लगा लें," निर्देश सुनाई पड़ा ध्यान भंग हुआ कुछ ही क्षणों में विमान के चक्के धरती छू गए घड़ी देखी रात के डेढ़ बजे थे

कराची हवाई अड्डे पर भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव तथा एक अन्य

तानाशाही की काली परछाइयों से घिरी पाकिस्तान की निरीह जनता

पदाधिकारी लेने के लिए आए थे इन की सहायता से कराची के कस्टम की जाच से निकल पाया और सीधे होटल एयर फ्रास में जा कर डेरा डाला जिन देशो से मैं आ रहा था, वहां के होटलों की तुलना में इस का स्तर नीचा था फिर भी, यह काफी व्यवस्थित था पलग पर लेटते ही गहरी नींद में खो गया

सुबह देर से नींद खुली अगस्त का महीना था और धूप बादलो से खेल रही थी ठडे देशो की यात्रा करने के बाद यहा गरमी महसूस हो रही थी तैयार होने के बाद नाश्ता किया और दस बजे भारतीय दूतावास पहुच गया विदेश मत्रालय ने मेरे कार्यक्रम की सूचना पहले से ही उन के पास भेज दी थी तथा आवश्यक निर्देश भी दे दिया था इस सबध में निर्धारित कार्यक्रम तय था होटल इपीरियल में एक बजे लच था जिस में दूतावास वालो ने पाकिस्तान के कुछ विशिष्ट व्यक्तियो को पहले से ही आमत्रित कर रखा था'

कुछ समय बाकी था मैं चाहता था कि पाकिस्तान के प्रतिष्ठाता कायदे आजम का मकबरा देख लू. अधिकाश विदेशी ऐसा ही करते हैं एक प्रथा सी चल निकली है. हमारे यहा भी राजघाट पर गाधीजी की समाधि पर विदेशी पर्यटक और राजदूत वर्ग के लोग श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं कायदे आजम का मकबरा ज्यादा अच्छा नहीं लगा कुछकुछ पीर के मजार जैसा वातावरण था पास ही वजीरे आजम मरहूम लियाकतअली खा का मकबरा भी था

हमारे दूतावास ने मुझे पहले ही सकेत कर दिया था कि पाकिस्तान में बदिशें काफी हैं, विशेष रूप से भारतीयो के लिए, इसलिए जो अच्छा लगे उस की ही चर्चा की जाए और जो न रुचे उस का जिक्र न करें

शहर के जिस हिस्से से गुजर रहा था उस में कोई नयापन नहीं था ऐसा लगता था कि कलकत्ता के सकस एवेन्यू या बेग बगान से गुजर रहा हू विदेशों में भारतीय शक्ल देख कर लोग नजर उठाते हैं पर यहा हमशक्ल होने की वजह से ऐसा कुछ नहीं था

लच के लिए होटल पहुचा बहुत दिनों बाद भारतीय भोजन का स्वाद मिला यों तो विदेशो में कभीकभी दूतावासों में यह मौका मिल जाता था, फिर भी ठेठ हिंदुस्तानी खाना नहीं बन पाता था भोजन के समय आमन्त्रित पाकिस्तानी मेहमानों से केवल औपचारिक बातें ही होती रहीं, क्योंकि हमारे दूतावास ने पहले ही बता दिया था कि राजनीतिक चर्चा यहा की सरकार पसद नहीं करती थोडी देर में ही वातावरण में दम कुछ घुटाघुटा सा लगने लगा

भोजन के बाद पाकिस्तान के योजना आयोग के अध्यक्ष से मिलने गया दरअसल हमारी यात्रा का उद्देश्य था—विभिन्न राष्ट्रों की आर्थिक अवस्था, व्यवस्था और उन्नति का अध्ययन यहा का वातावरण कुछ भिन्न था योजना आयोग के अध्यक्ष अली साहब ने पाकिस्तान की अथ सबधी योजना, विकास तथा सफलताओं की जानकारी दी उन की सज्जनता और उत्साह ने अब तक दिल में जमे हुए भारीपन को मिटा दिया हमारी बातचीत के समय वहा अन्य कई विभागों के अफसर भी थे सभी दिलचस्पी ले रहे थे बातचीत के सिलसिले में पता चला कि सभी लोग अविभक्त भारत में विभिन्न सरकारी पदों पर रह चुके हैं और अब भी उन के नातेरिश्तेदार भारत में हैं

पाकिस्तान में आर्थिक विकास अभी अधिक नहीं हुआ है इस में सदेह नहीं कि पाकिस्तान के औद्योगीकरण के लिए अमरीका और विश्व बैंक ज्यादा उदार रहे हैं सीटो के सदस्य होने के कारण अरबों रुपयों के अच्छी किस्म के हथियार (टैंक, विमान आदि) पाकिस्तानी शासकों को कम्युनिस्टों से लडने के नाम पर अमरीका से मुफ्त मिल गए, जब कि हमें खरीदने पडे

विभाजन के समय पाकिस्तान के पास एक भी जूट मिल नहीं थी लेकिन विदेशी मुद्रा के सहारे पाकिस्तान ने जूट उद्योग में अच्छी उन्नति की है रुई भी पश्चिमी पाकिस्तान में अच्छे किस्म की होती है इस बात को मद्देनजर रखते हुए पाकिस्तान में कपडे की मिलें भी स्थापित कर ली गई हैं नए बडेबडे उद्योगों में कागज की मिलें और सीमेंट के कारखाने हैं

पाकिस्तान ने विशेष रूप से पश्चिमी भाग में, औद्योगीकरण तथा कृषि के विकास पर ध्यान रखा है और पूर्वी पाकिस्तान हर प्रकार से उपेक्षित रहा है मुझ ऐसा लगा कि खाद्यान्न के मामले में हमारी तरह पाकिस्तान को भी विदेशों पर निर्भर रहना पड रहा है विदेशी मुद्रा का अभाव हमारी तरह पाकिस्तान में भी है लेकिन अब तक भी वहां दैनिक आवश्यक चीजों के कारखानों की कमी है इसी लिए विदेशों से आयात के प्रति वहां की सरकार ने कड़ा प्रतिबध नहीं लगा रखा है जो भी हो, हम ने यह अनुभव किया कि पाकिस्तान को अपनी योजनाओं में खास सफलता नहीं मिली है और न वहां खुशहाली हो है

वार्तालाप के कायक्रम के बाद उन लोगो न हमें शहर की कुछ नई इमारतें

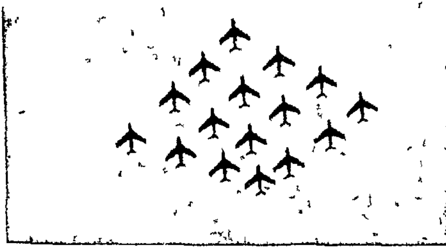

हवा में कलाबाजिया करते हुए सेबरजेट

दिखाई इन में यहा के रिजर्व बैंक की इमारत बहुत बडी और शानदार थी वास्तव में सरकार ने इसे दर्शनीय स्थान बनाने के दृष्टिकोण से रखा है विदेशों से आए प्रमुख पर्यटकों को यह अवश्य दिखाया जाता है इस भवन के पुस्तकालय में मैं ने देखा कि भारतवर्ष के बहुत से समाचार पत्र और पत्रिकाए उपलब्ध हैं बैंक के कर्मचारियों में से अधिकाश किसी न किसी समय भारत में काम कर चुके थे एक बुजुर्ग तो मेरे जिले सीकर के ही मिले देश के विभाजन के बाद वह करांची आ कर बस गए थे जरा एकात सा पा कर धीरे से उन्होंने मुझ से अनुरोध किया, "जनाब को थोडी सी तकलीफ दे सकता हू?"

"शौक से," मेरा उत्तर था

चट २० रुपए मेरे हाथों में दबा कर कहने लगे, "फला गांव में मेरी लडकी और नाती है" उन की आखें डबडबा रही थीं कहने लगे, "जमाना हो गया देखे हुए नाती की तो सिर्फ तसवीर ही देखी है आप को जब भी उस तरफ जाने का मौका लगे, एक बेकस बाप और नाना की तरफ से इन रुपयों के फल और मिठाइया उन्हें देने की गुजारिश है"

और उन का गला भर आया मैं ने रुपए लिए नहीं, ले भी कैसे सकता था वादा किया कि राजस्थान पहुच कर उन की सौगात तो पहुचा ही दूगा और मौका लगा तो उन की पुत्री और नाती से मिल भी लूगा

एक कौतूहल मन में बहुत ही जोर मार रहा था कि देखा जाए यहा पर हिंदुओं की क्या दशा है क्योंकि राह चलते या सरकारी दफ्तरों में कहीं भी हिंदू दिखाई नहीं पडे थे पता चला कि शहर में कुछ हिंदू अभी भी हैं जिन का एक अलग महल्ला है हमारे दूतावास ने एक ड्राइवर को कार दे कर मेरे साथ कर दिया दूतावास के अधिकारी खुद उस महल्ले में जाना नहीं चाहते थे पाकिस्तान सरकार को यह पसद नहीं था खैर, मैं हिंदुओं के महल्ले में गया वहा के वयोवृद्ध सिंधी श्री हीराचद से मिला बातचीत के सिलसिले में उन्होंने बताया कि उन के सारे के सारे सबधी घरबार और कारोबार छोड कर भारत

चले गए मैं ने उन से पूछा, "इतना खतरा और तकलीफ सह कर आप यहां क्यों रह रहे हैं?"

उत्तर मिला कि उन की वृद्धा माताजी कुल और परंपरा से स्थापित मंदिर के ठाकुरजी को छोड़ना नहीं चाहतीं इसलिए उन्हें भी बरबस रुकना पड़ रहा है

वहां के कुछ और लोगों से बातचीत करने से पता चला कि हिंदुओं पर बहुत ही सख्त निगरानी रहती है सरकारी नौकरियां तथा सुविधाओं से वे वंचित हैं और तृतीय श्रेणी की नागरिकता की सुविधा भी उन्हें हासिल नहीं इस महल्ले के लोग शाम होने के बाद आम तौर पर अपने दायरे में ही रहते हैं कहीं बाहर निकलने का साहस नहीं करते

मन खिन्न हो गया था सोचा 'कराची के बाजारों में जरा घूम लूं' दुकानों में कलकत्ता दिल्ली जैसी रौनक नहीं लगी विदेशी वस्तुएं काफी दिखाई पड़ीं कराची अभी हाल तक पाकिस्तान की राजधानी थी, लेकिन अब प्रेसीडेंट अयूब खां ने इस्लामाबाद (रावलपिंडी) को यह सेहरा पहनाया है फिर भी कराची एक अच्छा बंदरगाह और व्यापार की मंडी होने के कारण पाकिस्तान का बड़ा शहर है बल्कि यह कहा जा सकता है कि इस का महत्त्व हमारे कलकत्ता और बंबई शहरों जैसा है

हमारे राजदूत इस समय कराची में नहीं थे इसलिए रात में दूतावास के प्रथम सचिव के निवास पर भोज का आयोजन था कुछेक हिंदू नागरिक भी आमंत्रित थे अपने ही लोगों के बीच बातचीत का दायरा मुक्त था चर्चा पाकिस्तान की राजनीति तथा शासनतंत्र की चल निकली उन्होंने बताया कि तानाशाही तथा फौजी हुकूमत जोर और जबरदस्ती पर ही कायम रहती है पाकिस्तान सरकार ने इस दशा में शिथिलता नहीं आने दी है कश्मीर के प्रश्न को चालू रखना पाकिस्तानी शासकों के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि इस से वहां की जनता की मुसलिम सांप्रदायिक भावना को उभार कर नागरिक अधिकार की मांग से दूर रखने में जहां आसानी रहती है वहीं विदेशों से भारत के विरोध में सहानुभूति भी सहज ही प्राप्त होती है

अब मेरी समझ में आया कि पाकिस्तान सरकार हमें पर्यटन के लिए वीसा देने में क्यों हिचकती है! . बेरूत में भारतीय दूतावास की कड़ी कोशिश के बावजूद केवल कराची का वीसा मिल पाया था लाहौर के लिए जब कराची में आज्ञा मांगी तो पाकिस्तानी सरकार ने साफ इनकार कर दिया मगर मेरा मन नहीं मान रहा था लाहौर का वैभव विभाजन के पूर्व देख चुका था और अब इतने लंबे समय के बाद वर्तमान लाहौर को देखने की मन में तीव्र इच्छा थी एड़ी चोटी का जोर लगाने पर हमारे दूतावास को मेरे लिए एक दिन का वीसा मिल सका मैं उसी दिन चल पड़ा

हवाई जहाज में बैठा उड़ा जा रहा था नीचे हरियाली नदी और नाले खिड़की से दिखाई दे रहे थे बिलकुल हमारे देश का सा दृश्य था प्रकृति मानो हिंदुस्तान और पाकिस्तान बनाने को तैयार नहीं हरेभरे खेत बागबगीचे सभी तो इन्हीं नदियों की देन हैं जो भारत से बहती हुई आती हैं

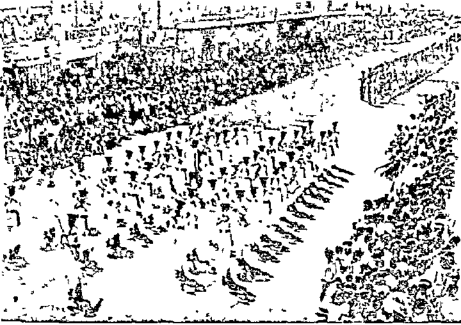

फौजी तानाशाही ने पाकिस्तान का पूरा वातावरण ही बदल दिया है

पाकिस्तान भले ही अरबो और ईरानी संस्कृति को ज्यादा गौरवपूर्ण मानता हो पर उस की खुद की बुनियाद तो सनातन भारतीय संस्कृति पर ही है. अफगानिस्तान इसलामी राष्ट्र है पर वहा भी आज अतीत वैदिक आर्य सभ्यता और संस्कृति के लिए आग्रह उठ रहा है फिर क्या पाकिस्तान अपनी संस्कृति के मूल स्रोत को काट सकेगा? शायद नहीं

सफर लंबा नहीं था. लगभग सवा घंटा में हो लाहौर पहुच गया एयरपोर्ट से पी आई ए. के शहरी दफ्तर में गया यहा के आई. ए. सी. के इंचार्ज श्री जोसेफ के पास उसी समय कराची से हमारे दूतावास का फोन मेरी व्यवस्था के संबंध में पहुचा था उन्होने हर प्रकार से मेरी मदद की और मेरे लिए एक होटल में ठहरने का प्रबंध कर दिया

लाहौर पहले कई बार आ चुका था. इस की निराली ही शानशौकत रही है. यह भारत का पेरिस कहलाता था. नित नएनए फैशनो की शुरुआत यहीं से होती थी बेहतरीन बागबगीचे इस की रौनक में चार चांद लगाते थे व्यापार, उद्योग तथा शिक्षा, तीनो ही प्रचुर मात्रा में थे. यहा के अधिकाश शिक्षाशास्त्री, वकील, बैरिस्टर, व्यापारी और छोटेबड़े उद्योगपति हिंदू ही थे.

सिर्फ एक दिन का वीसा मिला था जो किसी भी बड़े शहर के लिए बहुत ही कम था फिर, लाहौर के लिए तो बहुत ही कम, क्योंकि इस शहर के साथ हमारे इतिहास की अनेक परतें लिपटी हुई हैं सोचा, 'कार के बजाए बस से ही शहर घूम लू ताकि लोगो की बातचीत सुनने का मौका मिल सके'

बस लाहौर की सड़कों से गुजर रही थी. यात्रियो का चढ़ना, उतरना, बातचीत का लहजा सभी अपने देश का सा था. बसो में भीड़ तो हमारी दिल्ली और कलकत्ता जैसी ही थी लेकिन उन की हालत ज्यादा गईगुजरी थी इधर-

उधर देख ही रहा था कि अचानक देखा—दो साहबान मेरी ओर बड़े गौर से देख रहे हैं पता नहीं वे कब बस में आ कर बैठे नजर मिलते ही करीब आए और सवालों की झड़ी लगा दी, "कब आए, कहा जाएंगे? शहर में किसकिस से मिले?"

कुछ झल्लाहट सी हुई मैं ने उन्हें बताया कि विभिन्न देशों की आर्थिक समस्या का अध्ययन करता हुआ करांची से यहा आया हू और कल ही दिल्ली चला जाऊंगा

एक साथ दोनों की आवाज गूंजी, "पासपोर्ट वीसा?"

कहना न होगा, दोनों गुप्तचर थे

पासपोर्ट और वीसा साथ ले कर नहीं चला था म ने समझाने की कोशिश की कि 'पेलिटी होटल' में ठहरा हू, वहीं पासपोर्ट और वीसा दिखा दू गा लौट कर मिलने का समय भी बता दिया मगर सब बेकार दोनो साथ ही रहे

बस दौड़ती जा रही थी मजा किरकिरा हो गया था उदास मन से खिडकी के बाहर भागते हुए मकानों और दुकानो को देख रहा था गवर्नमेंट कालिज के टावर की वही पुरानी घड़ी, जामा मसजिद का वही आलीशान गुबज, गोल बाग, गुरु अर्जुन की समाधि और लाहौर का किला सभी तो वैसे ही हैं *आखिर बदला क्या?*

बस कचहरी रोड पर एक तांगे वाले के पीछे जरा धीमी चाल में बढ़ रही थी 'दयानंद एंग्लो कालिज' का फाटक आया पहले देवनागरी लिपि में कालिज का नाम भवन की मेहराब पर था पर अब 'इसलामिया कालिज' अंगरेजी और उर्दू में लिखा हुआ है इसी प्रकार कई मकानो और मंदिरों की हालत देखने में आई आर्य समाज, सनातनधर्म, सिख समाज की बड़ीबड़ी शिक्षण संस्थाएं और सर गंगाराम ट्रस्ट जैसी दातव्य संस्थाओं पर लाहौर को गर्व था पर पाकिस्तान ने इन का नामोनिशान मिटा दिया है हुकूमतें पाकिस्तान तवारीख भी मिटाने की कोशिश कर रही है क्या वह मिटा सकेगी? कहते हैं कि श्री राम के पुत्र लव ने ही लवकोट यानी लाहौर को बसाया था कहते यह भी है कि विजयोन्माद में भरे सिकंदर को इसी के पास रावी तट पर, *एक आर्य संन्यासी द्वारा कड़ी, पर स्पष्ट* भविष्यवाणी सुन कर वापस लौट जाना पड़ा था महाराजा रणजीतसिंह की स्मृति और वीर भगतसिंह का बलिदान क्या लाहौर के जर्रेजर्रे से कभी हट सकेगा? शायद नहीं

शाम हो चली थी मैं अपने होटल लौटा दोनों सी आई डी छाया की तरह साथ थे मैं ने उन्हें अपना पासपोर्ट और वीसा दिखलाया और कहने से न चूका कि आप यदि कभी भारत में तशरीफ लाएगें तो आप के साथ ऐसा बर्ताव वहा कभी भी न होगा हमारे यहां तो अभी भी करोड़ों मुसलमानों को वही अधिकार प्राप्त हैं जो हिंदुओं को हैं

उन में से एक जरा झेंप गया और कहने लगा, "जनाब, ड्यूटी का तकाजा है! हम तो हुक्म के बंदे हैं आप को हमारी वजह से परेशानी हुई पर क्या किया जाए!"

कुछ देर आराम करने के बाद सोचा कि अभी रात का वक्त हाथ में है

सन १९४० में लाहौर की, शाम के बाद की रौनक देखी थी. देखूं अब कैसा लगता है? खाना खा कर अनारकली बाजार चला गया. वही दुकानें, वही सड़क, सब कुछ वही, पर न तो वहां पहले की सी चहलपहल ही थी और न महाशय राजपाल या आत्माराम एंड संस के साइनबोर्ड ही. ऐसा लगा जैसे अनारकली कह रही हो :

"न किसी के आंख का नूर हूं,
न किसी के दिल का करार हूं.
जो किसी के काम न आ सके,
मैं तो एक मुश्तेगुबार हूं."

बहुत खोजने पर भी न तो कोई हिंदू ही नजर आया, न कोई सिख. सुना है कि शहर में एक गुरुद्वारा अभी भी बचा हुआ है जहां एक पुजारी अवश्य है, पर उसे बाहर के लोगों से मिलनेजुलने की मनाही है.

दिल्ली में पाकिस्तानी दूतावास पाकिस्तानी हिंदू और सिखों के संबंध में जो प्रचार सामग्री प्रसारित करता है, वह बिलकुल झूठी और बेबुनियाद है.

विचित्र सी मानसिक स्थिति में रात दस बजे होटल लौटा. बेचैनी और थकावट के मारे बिस्तर पर पड़ गया. उस रात नींद बड़ी ही मुश्किल से सिर्फ दो घंटे के लिए आई. नींद में भी बारबार लगता था कि पुलिस के सिपाही आ रहे हैं.

दूसरे दिन प्रातः इंडियन एयर लाइंस के मिस्टर जोजेफ आए. उन से पिछले दिन के अपने अनुभव बताए. उन्होंने कहा, "इसी खयाल से मैं कल दिन में दो बार आप से मिलने आया था पर मुलाकात न हो सकी. आप का यहां घूमना व्यक्तिगत सुरक्षा की दृष्टि से मुनासिब नहीं था." हालांकि मिस्टर जोजेफ एंग्लो इंडियन थे फिर भी उन्हें कई प्रकार की दिक्कतें यहां उठानी पड़ रही थीं. हवाई जहाज पर बैठने के पूर्व एयरपोर्ट पर विदा देते समय उन्होंने बड़ी आजिजी से कहा, "यदि आप भारत में कहीं भी मेरी बदली करवा दें तो मैं आप का बड़ा उपकार मानूंगा."

हवाई जहाज में बैठा सोचने लगा, 'कैसा रहस्यमय बन गया है पाकिस्तान! कोई भी दिल की बात खुल कर नहीं कह सकता.' लाहौर के मुसलमान होटल के कर्मचारी ने चलते वक्त चुपके से कहा था कि उस की बहन दिल्ली में रहती है, उसे टेलीफोन पर कह दूं कि उस के भाई से मिल आया हू, वह राजीखुशी है.

प्लेन में बैठा विचारों को समेट रहा था. कई मुसलमानी मुल्कों से हो आया हूं—तुर्की, मिस्र, लेबनान—पर कहीं भी भारतवासियों के प्रति इस ढंग का द्वेष और संदेह का वातावरण नहीं मिला. फिर इस जगह ही क्यों? यह भी भारत का अंग था, क्या इसलाम के नाम पर भोलेभाले लोगों को गुमराह कर और पाकिस्तान बना कर भी उस के शासकों की हवस पूरी न हो सकी?

दूर पर कुतुबमीनार दिखाई पड़ने लगा. मन ने कहा, "जमाना करवटें बदलता रहता है. पाकिस्तान भी जमाने की एक करवट ही तो है. क्या पता, शायद फिर बदल जाए!"

में भी एक बार जब वे कलकत्ते आए तो भारत सरकार के अनुरोध के बावजूद मेरे साथ ही ठहरे

उन का मुझ से सदैव आग्रह रहता था कि मैं नेपाल जा कर कुछ समय उन के साथ रहूं संयोगवश नेपाल की मेरी यात्राएं ऐसे समय हुईं जब वह मंत्री पद पर नहीं रहे वैसे नेपाल में जब भी उन से मिला, उन में वही स्नेह, वही सादगी, देश के प्रति उतना ही प्रेम पाया कोईराला परिवार का अवदान आधुनिक नेपाल के इतिहास में बेजोड है सामतशाही का अत करने के लिए जनता को जागृत कर गणतंत्र की स्थापना का अधिकाश श्रेय कोईराला बधुओ को है राजनीति की लहरें विचित्र होती हैं आज उन्हीं कोईरालाओं में श्री बी पी और उन के अनुज बदी हैं

पहली बार १९५४ में काठमाडू गया था उस समय महाराज त्रिभुवन नेपाल के वास्तविक शासक प्रतिष्ठित हो चुके थे यह सहज सभव नहीं था इस की भी एक अनोखी कहानी है

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथमार्ध में नेपाल के राजवश में नाना प्रकार के षड्यत्र हो रहे थे १८४६ ई तक तो स्थिति कुछ इस तरह बनी कि राजघराने का प्रत्येक सदस्य एकदूसरे का शत्रु बन गया सिंहासन और इस के लिए हत्या करना एक साधारण सी बात थी. हत्याएं नित्य प्रति होने लगीं महारानी के प्रेमी गगनसिंह की हत्या के बाद युवक जगबहादुर को प्रधान मंत्री एव सेनापति दोनो पद दिए गए इसी बीच महाराजा जब कोट (राजमहल) वापस आए तो उन्होंने अपने को सर्वथा बदी पाया

इस के बाद प्रधान मत्रियों के हाथों में सत्ता रही इस दीर्घ काल में जगबहादुर के वशज ही प्रधान मंत्री बनते आए पेशवाओ की तरह यह पद उन का पैतृक अधिकार बन गया

नेपाल नरेश नाम मात्र के 'पाच सरकार' रह गए प्रधान मत्री भी महाराज कहलाते थे सविधान था नहीं शासन के लिए निश्चित कानूनकायदे भी नहीं थे इन जगबहादुरो का हुक्म ही कानून था प्रजा भूख, गरीबी, ठड और रोग की चपेट में पिसती जा रही थी धन और वैभव राणाओ के घरो में बढ़ता जा रहा था भोगविलास तो उन के दैवी अधिकार थे सुदर लड़की देखी कि प्रधान मंत्री के भाईभतीजों के महलों में कैदी बना कर रख ली गई इन राजाओ में कुछ के पास तो अवकाश ग्रहण के समय पचाससाठ करोड रुपए तक इकट्ठे हो जाते थे अनेक के रुपए तो आज भी विदेशी बकों में हैं

सन १९४० के बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की गति में तीव्रता आन लगी इस का प्रभाव नेपाल पर भी पडा इस का प्रमुख कारण थे उत्तर भारत के विभिन्न कालिजों में पढ़ने वाले अनेक नेपाली नवयुवक दोनों ही देशों की आर्य सस्कृति ने उन्हें एक सूत्र में पिरो रखा था भारत में अगरेजो के विरोध में उस आदोलन में ये भी हमारे साथ शामिल थे यहां तक कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यकर्ता की हैसियत से अगरेजी सरकार द्वारा नाना प्रकार की यातना भी सहते थे इन्हीं लोगों ने आगे चल कर नेपाली कांग्रेस की स्थापना की

शासक सजग थे नेपाल में उन्होंने इसे पनपने नहीं दिया वे कठोरता

नदी इस तरह पार की जाती है...

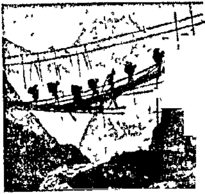

...और इस तरह भी!

के साथ नेपाली कांग्रेस के गणतांत्रिक आंदोलन को कुचलते गए. नेताओं को बंदीगृह में ठेल दिया. अंधविश्वास, कुसंस्कार और गरीबी के भवर में पड़ी वहा की जनता जुबान तक हिलाने की हिम्मत न कर सकी. फिर भी नेपाली कांग्रेस के कार्यकर्ता राणाशाही की तानाशाही को खत्म करने के लिए भारत में पटना, फारबिसगंज आदि शहरों में रह कर संगठन करते रहे. आंदोलन रुका नहीं.

सन १९४७ में भारत स्वतंत्र हुआ. नेपाली कार्यकर्ताओं की हिम्मत बढ़ी क्योंकि अब राणाओं के मित्र अंगरेजों का उन्हें भय नहीं रहा. उन्हें उन भारतीय नेताओं के सहयोग का भी भरोसा था जिन के साथ सन १९४२ के आंदोलन में उन्होंने कंधे से कंधा मिला कर अंगरेजों से टक्कर ली थी.

सन १९४९-५० का समय नेपाल के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा. एरिका नाम की एक जरमन महिला डाक्टर महारानी की चिकित्सा के लिए भारत से बुलाई गई. इस प्रकार नेपाल नरेश के महल में सर्वप्रथम किसी विदेशी महिला का प्रवेश हुआ.

महल में रहते हुए इस का राज-परिवार के सदस्यों से घनिष्ठ परिचय होता गया. कुछ दिनों बाद तो वह एक अभिन्न अंग ही बन गई. उस ने देखा कि यहां सभी सुखसाधन उपलब्ध हैं, वैभव और विलास का अभाव नहीं. फिर भी नेपाल नरेश उदास रहते हैं. उसे समझते देर न लगी कि वह वस्तुतः मुक्त नहीं हैं. यहां तक कि उन का या उन के परिवार के किसी सदस्य का महल से बाहर निकलना, पत्राचार आदि सभी कुछ राणाओं की स्वीकृति पर निर्भर है. सोने का पिंजरा जरूर है, पर पंछी कैद है.

इसी बीच महाराज के विचारों में राणाओं को गणतांत्रिक विचारों का रंग दिखाई पड़ा. अधिकार और सत्ता तो उन के हाथों में थी ही, नरेश पर मुकदमा चला कर उन्होंने उन्हें राज्यच्युत करना चाहा. जनता कुसंस्कार और अंधविश्वास में थी जरूर, किंतु नरेश को वह पांच सरकार ही समझती थी, जब कि राणा थे तीन सरकार.

मौके से लाभ उठा कर नेपाली कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने पांच सरकार

नेपाल

हमारा उपेक्षित पड़ोसी?

कई बार मुझे नेपाल जाने का अवसर मिला ये यात्राए अधिकतर व्यापार के उद्देश्य से थीं. भ्रमण और पर्यटन का लक्ष्य कम था. फिर भी यात्रिक रुचि के कारण प्रत्येक बार नगराज हिमालय के इस हिमकिरीट को देख कर मन में नवीन उल्लास की प्राप्ति होती रही है.

नेपाल भिन्न देश है. किंतु उस का हमारे देश के साथ काफी सामजस्य है। संस्कृति, सभ्यता, भाषा, रहनसहन, पोशाक, मकानदुकान सभी हमारी ही तरह विराटनगर, जनकपुर, वीरगज आदि क्षेत्रो में तो आभास तक नहीं होता कि हम भारत के बाहर विदेश में है क्योकि भौगोलिक समरूपता इन स्थानों की हमारी तराई जैसी ही है

नेपाल एक छोटा सा देश है हिमालय के ऊचे शिखरों के बीच बसा हुआ वह ऐसा लगता है मानो नगराज ने बडे प्यार से इसे अपनी गोद में बैठा रखा हो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण वह अब तक बहुत ही सुरक्षित रहा है उत्तर में दुर्गम हिमालय के दुर्जेय शिखर, पूरब, पश्चिम और दक्षिण में भारत—उस की संस्कृति का स्रोत, उस का अनन्य उदार मित्र

यही कारण है कि नेपाल की स्वतंत्रता कायम रही है भारतीय संस्कृति मुगलों, पठानों और तातारो के हमलो और राजनीतिक करवटो के कारण विपन्न होती रही, किंतु नेपाल में उसका अत्यत स्वस्थ निखार हुआ नेपाल निस्संदेह इस दिशा में भारत से कहीं आगे रहा है

नेपाल की जनसंख्या लगभग एक करोड है. यह हमारे बिहार प्रदेश के लगभग पाचवें भाग के बराबर है लबाई है ५२५ मील और चौड़ाई सिर्फ १२५ मील जीवन सघर्षमय है और आय का मुख्य साधन है—कृषि चावल, पाट, मडुआ, गन्ना आदि की खेती होती है भेड-बकरियां पाली जाती है दुधारू गौए भारत जैसी नहीं होती जगलो से जडी-बूटिया इकट्ठी की जाती है और लकड़ियां काटी जाती हैं. अधिकाश उद्योगधधे अब भी गृहशिल्प की अवस्था में ही हैं नए शासन में आधुनिक, उन्नत एव बृहद स्तर पर उद्योगधधो को विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है. खनिज पदार्थों की खोज की जा रही है तांबा मिला है और सीमेंट के उद्योग में भी सफलता मिलने की सभावना है.

इस की भौगोलिक स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि भारत, अमरीका, रूस,

फ्रांस, ब्रिटेन, चीन आदि सभी करोड़ों रुपयों की आर्थिक सहायता देते रहते हैं. इन में सब से अधिक सहयोग भारत का है और इस के बाद अमरीका का है.

मुझे ऐसा लगा कि कुछ वर्षों पहले तक भारत की नेपाल के प्रति उपेक्षा और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भारतीय दुर्बलता ने भारत के प्रति नेपाल के विश्वास को हिला दिया है. यही कारण है कि वर्तमान भारतीय राजनीतिज्ञों के प्रति नेपाल में वह आदर नहीं रहा जो युगों से रहता आया है. उस के पड़ोसी देश तिब्बत को चीन द्वारा उदरस्थ किए जाने पर भी भारत चुप्पी साधे रहा, इसलिए नेपाल को सुरक्षा और स्वरक्षा के लिए बाध्य हो कर चीन से हाथ मिलाना पड़ा. नेपाल की यात्रा में इस विषय पर मेरे कई एक नेपाली मित्रों ने यह राय व्यक्त की. इसी तरह भारत की विदेश नीति की असफलता के कारण नेपाल को पाकिस्तान से भी संपर्क बढ़ाने के लिए विवश होना पड़ा.

मैं ने पूछा, "क्या चीन की साम्राज्यवादी भूख से नेपाल अपने को बचा सकेगा?"

उन्होंने जवाब दिया, "इसी लिए तो हम अमरीका और ब्रिटेन से मित्रता रखते हैं."

मेरा प्रश्न था, "नेपाल सदैव एकमात्र स्वतंत्र हिंदू राज्य रहा है. पाकिस्तान कट्टर मुसलमानी देश है. इसलाम ने सदियों तक भारत में हिंदुओं का उन्मूलन किया. इस समय भी पाकिस्तान में उन्हें हर प्रकार से सताया जा रहा है तो क्या वह नेपाल को अछूता छोड़ देगा?"

उन्होंने गंभीरता से कहा, "नेपाल का राज्यधर्म है—हिंदुत्व. सांस्कृतिक और धार्मिक महत्ता का अशिक्षित जनता पर कितना अधिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, इसे नेपाली सदैव जानते रहे हैं. इसी लिए विदेशी ईसाई या इसलामी संस्कृति को हमारे देश में प्रश्रय नहीं दिया जाता है."

मैं ने हंस कर कहा, "बौद्ध होने के नाते चीन को तो सुविधा है."

"सुविधा थी, पर अब नहीं है. क्योंकि इसी नारे पर तिब्बत को चीन निगल गया. हम सजग हो गए. बुद्धवाद और चीनवाद में अंतर है." हंसते हुए उन्होंने कहा, "देखिए, रूसवाद और चीनवाद के धक्के से साम्यवाद कितने विवाद में पड़ गया है!"

आमतौर से नेपाल के लोगों में यह धारणा दृढ़ होती जा रही है कि चीन ने अपने स्वभाव के अनुसार नेपाल को सहायता के नाम पर धोखा दिया. कागज की मिल और खनिज पदार्थों की खोजों के बहाने सारे नेपाल के पहाड़ और जंगलों की जानकारी हासिल कर ली. जब कि खदान या कारखाने बनाने का काम कतई शुरू नहीं किया गया. हां, नेपालतिब्बत का मार्ग तेजी के साथ अवश्य पूरा कर दिया गया. भारत ने नई योजनाएं बनाने में सहयोग दिया है, उन्हें क्रियान्वित भी कर रहा है और उस के द्वारा बनाए गए त्रिभुवन राज पथ पर आज भारत से सीधे काठमांडू तक पहुंचा जा सकता है. अमरीका ने भी अस्पताल, स्कूल, कालिज तथा उद्योगों में आर्थिक तथा तकनीकी सहायता पहुंचाई है.

नेपाल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मातृकाप्रसाद कोईराला मेरे मित्र हैं. कलकत्ते के अपने प्रवास में वे मेरे साथ ठहरते रहे हैं. अपने प्रधान मंत्रित्वकाल

(नेपाल नरेश) के नाम पर जनतन्त्र की स्थापना कर राणाशाही से नेपाल को मुक्त करने की आवाज बुलंद की

एरिका के माध्यम से महाराज ने तत्कालीन भारतीय राजदूत श्री सिंह द्वारा भारतीय प्रधान मंत्री श्री नेहरू से सहयोग मांगा श्री सिंह नेहरूजी से मिलने दिल्ली आए नेपाल नरेश के लिए नेहरूजी का व्यक्तिगत संदेश ले कर वह काठमाडू लौट गए सारी बातें गुप्त रखी गई बस उपयुक्त अवसर की खोज थी

६ नवंबर १९५० की सुबह को महाराजा त्रिभुवन अपने ज्येष्ठ पुत्र (वर्तमान नरेश) महेंद्र के साथ शिकार खेलने के बहाने महल से बाहर निकले राणा के विश्वस्त सिपाही उन की निगरानी के लिए साथ थे भारतीय दूतावास के सामने से वह गुजर ही रहे थे कि दूतावास का फाटक खुला बिजली की तेजी से राजकुमार महेंद्र ने गाडी को भारतीय दूतावास में दाखिल कर दिया योजना सफल हुई सिपाहियों को राणाओं के पास लौटा दिया गया

उस समय प्रधान मंत्री राणा मोहन शमशेर थे उन्होंने प्रतिवाद किया, गर्जना की और धमकी भी दी कि दूतावास पर हमला किया जाएगा भारतीय पक्ष ने स्पष्ट किया कि अंतर्राष्ट्रीय विधिनियम के अनुसार इसे भारत पर आक्रमण माना जाएगा नेपाली जनता के रुख, भारतीय शक्ति और अंतर्राष्ट्रीय मान्यताओं के सामने राणा को झुकना पडा

महाराज त्रिभुवन वीरविक्रमशाह देव सर्व शक्तिमान नरेश बन कर राजमहल में वापस आए सारे नेपाल में हर्षोल्लास की लहर दौड गई महाराजा ने नए सिरे से मंत्रिमंडल का गठन किया उन का उद्देश्य था कि ब्रिटेन की तरह गणतांत्रिक शासन पद्धति नेपाल के लिए अपनाई जाए श्री कोईराला प्रधान मंत्री बने

सन १९५५ में महाराज का हृदय की गति रुक जाने के कारण स्विट्जरलैंड में देहांत हुआ युवराज महेंद्र ने शासन की बागडोर संभाली उन्होंने नेपाली कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ता श्री कोईराला को प्रधान मंत्री मनोनीत किया

कोईराला बंधुओं के आपसी मतभेद और नेपाली कांग्रेस के कार्यकर्ताओं में पद के लिए होड ने बडी समस्या खडी कर दी इस का कुप्रभाव जनता पर भी पडा सभी एक दूसरे के प्रति दलबंदी करने लगे वातावरण विषाक्त हो गया जनता के विचारों की दिशा भी बदलने लगी श्री कोईराला और उन के भाई बंदी बनाए गए प्रजातंत्र एक प्रकार से फिर समाप्त हो गया

महाराज महेंद्र के निर्देशन में नेपाल का नया संविधान बना नेपाली संसद की स्थापना राष्ट्रीय पंचायत के नाम से हुई पर सार्वभौम अधिकार उन के हाथ में ही रहे

पिछले कुछ वर्षों से नेपाल ने विदेश की राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया है आज चीन और पाकिस्तान दोनों ही उस की मित्रता का दम भरते हैं हितैषी होने का दावा रखते हैं पर यह किसी से छिपा नहीं कि नेपाल को राणाओं की दासता से किस ने मुक्ति दिलाई?

१९६४ में भारतनेपाल के पारस्परिक संबंधों में पाकिस्तान और चीन के

झूठे प्रचारों के कारण कुछ कटुता आने लगी थी किंतु श्रीमन्नारायणजी के राजदूत बनने के बाद भ्रांतियां दूर हुई और अब आपसी संबंध मैत्रीपूर्ण और दृढ़तर हो रहे हैं पिछले वर्ष प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी का नेपाली जनता ने काठमाडू में अभूतपूर्व स्वागत किया था भारत ने भी अपनी नाना प्रकार की जटिल आर्थिक समस्याओं के बावजूद नेपाल को बड़े पैमाने पर आर्थिक और तकनीकी सहायता दी है और आगे भी देते रहने का आश्वासन दिया है भारत की सहायता से वहां बड़ेबड़े बांध बनाए गए हैं जिस से कृषि का विकास हो और जनता समृद्ध हो बाहर की दुनिया से संपर्क की सुविधा के लिए त्रिभुवन राजपथ का निर्माण भी भारत के सहयोग से हुआ है इस के अलावा नेपाल के एक भाग से दूसरे भाग तक आवागमन के लिए सड़कें भी बनाई जा रही हैं

मैं विराटनगर और वीरगंज तो कई बार गया किंतु काठमाडू जाने का मौका १३ वर्षों के लंबे अर्से बाद अगस्त १९६१ में लगा देखा, इन वर्षों में काठमाडू की कायापलट ही हो गई है होटल, मकान, दूकान, सड़कें, सभी एक नई सजधज के साथ नजर आईं पहले वहां 'पारस' और शायद दोएक छोटे होटल थे और अब तो राजकुमारों द्वारा संचालित 'सेलिटी' और 'अन्नपूर्णा' नामक तापनियंत्रित डीलक्स महंगे होटल भी देखने में आए सड़कों पर विश्व के विभिन्न देशों के बहुत से पर्यटक भी घूमते हुए दिखाई दिए

१९५० तक जो नेपाल सदियों से विदेशियों के लिए बंद था, आज वही करोड़ों रुपए 'यात्रिक व्यवसाय' से पैदा कर रहा है

काठमाडू की कुल आबादी लगभग तीन लाख है इस में पाटण और भक्तपुर भी शामिल हैं समुद्र से यहां की ऊंचाई करीब साढ़े चार हजार फीट है श्रीनगर की तरह यह भी हिमालय के ऊंचे पहाड़ों के बीच एक खूबसूरत वादी (घाटी) है गरीबी और अमीरी का यहां जैसा फर्क शायद ही कहीं होगा एक ओर तो ऊंची मजबूत दीवारों के पीछे राणाओं के सुंदर विलास महल खड़े हैं और उन्हीं दीवारों की दूसरी ओर सड़ी, गंदी गलियां जहां शायद ही कभी सूर्य के दर्शन होते होंगे सड़ांध भरी तंग कोठरियों में बिलबिलातीबिलखती जनता की ९८ प्रतिशत मानवता कैद है सदियों तक यह क्रम चलता रहा है, आज भी इसे पूरी तरह से हटाया नहीं जा सका है

अपने मेजबान के साथ मैं बाजार के एक मकान में गया तंग और गंदी गलियां पार करता हुआ जैसे ही मकान की सीढ़ियों पर चढ़ा कि सड़ांध की भभक आई सिर चकरा गया साथी ने मुझे परेशान देखा तो मुसकरा कर कहा, "संडास पीछे की तरफ है इसी लिए दुर्गंध है यहां वाले तो अभ्यस्त हैं सदियों से जमी आदत स्वभाव का अंग बन चुकी है"

एक मित्र से मिला पहचान नहीं सका वज्र शरीर जर्जर बन चुका था पर आंखों में प्यार था पर वह जोश नहीं जो हम ने सन ४२ में देखा था कुछ कहने से पहले ही प्रश्नभरी दृष्टि का संक्षिप्त उत्तर मिला, "समय का भाग है" मैंने साथ भारत चलने का अनुरोध किया किंतु उन्होंने यह कह कर टाल दिया, "यहां अभी बहुत काम बाकी है कितनों को आप भारत ले जाएंगे?" सुन कर मुझे दधीचि की याद हो आयी

बाजार में देखा व्यापार और उद्योग में राजस्थानी अच्छी सख्या में हैं थोक व्यापार तो एक प्रकार से इन के ही हाथ में है वर्षों से यहा बसे हैं बहुत से तो नेपाली नागरिक बन गए हैं

दुकानें विभिन्न देशो की चीजो से भरी हुई हैं फाउटेन पेन, कैमरे, रेडियो, ट्राजिस्टर, घडिया, टेपरिकार्डर, ब्लेड तथा एक से एक उम्दा चीजें, रेशमी और ऊनी कपडे भारत की तरह यहा आयात पर कडा प्रतिबध नहीं है नेपाल की जनता की अभी तक क्रय शक्ति इतनी नहीं है कि कीमती और शौक की चीजो को खरीद सके मुझे अपने एक व्यापारी मित्र से जानकारी मिली कि इन कीमती चीजों के ग्राहक या तो केवल सपन्न नेपाली हैं या फिर भारत या विदेश से आए लोग अधिकाश विदेशी माल चोरी से सीमा पार कर भारत में आता है इस कार्य में कुछ भारतीय व्यापारी भी हैं मुझे बडी ग्लानि का अनुभव हुआ सदियो की विदेशी दासता ने हमारा नैतिक पतन किस हद तक कर दिया है चीन ने भारत के साथ विश्वासघात किया आज भी वह सर्वनाश करने को तैयार है फिर भी हमारे यहा चीनी फाउटेन पेन और रेशमी कपडे के लिए चोरबाजारो में होड लगी है जब कि हमारे अपने देश में अच्छे से अच्छे पेन और कपडा बनता है

बाजार घूमता हुआ नेपाल के सचिवालय की ओर चला गया पहले काठमाडू एक साधारण सा शहर था पुराने ढंग के मकान, राणाओं के महल और मदिरो के अलावा १९वीं शताब्दी में बना सिंह दरबार—बस यही दर्शनीय स्थल थे पिछली यात्रा में सिंह दरबार देख नहीं पाया था इस बार देखा पहले यह राजमहल था किंतु पचाससाठ वर्षों से नेपाल राज्य का सचिवालय है इस में १८०० कक्ष हैं, इसी से इस की विशालता का अनुमान लगाया जा सकता है

नया नेपाल बहुत कुछ बदल चुका है और बदल रहा है विश्वविद्यालय, कालिज, हाईस्कूल, ला कालिज, मेडिकल कालिज आदि शिक्षण सस्थाए शिक्षा के प्रचारप्रसार में लगी हैं इन की इमारतें आधुनिक ढग की हैं नेपाल में साक्षरता बहुत ही कम है कुल आबादी का केवल आठ प्रति शत ही साक्षर है पुरुषों में १२ प्रति शत और स्त्रियो में चार प्रति शत ही साधारण रूप से शिक्षित कहे जा सकते हैं इसी कारण वर्तमान सरकार राष्ट्रीय शिक्षण योजना आयोग का गठन कर देश से अशिक्षा को दूर करने में प्रयत्नशील है मैं ने देखा, लडको के अलावा अब काफी सख्या में लडकियां भी स्कूलकालिजों में शिक्षा पा रही हैं

बाजार के बीचोबीच महारानी के नाम पर एक बहुत ही सुदर उद्यान बनाया गया है पिछली बार बालाजू में बाइस धारा देखने गया था पर इस तरह यथा के पश्चात वह स्थान पहचानने में भी नहीं आता धाराओं के चारो तरफ बहुत ही सुदर कुज बना दिए गए हैं तैरने के लिए एक सरोवर भी बनाया गया है इस के पास ही छोटेबडे कलकारखाने बन रहे हैं लगा उद्योगधंधे भी नेपाल में अकुरित हो रहे हैं

पुराने महल और मदिर जितने यहां सुरक्षित रह पाए हैं उतने भारत में नहीं इस का एक बहुत ही स्वस्थ परिणाम यह भी रहा कि भारतीय सस्कृति अथवा धर्म की विभिन्न धाराओं का सफल प्रयोग और समन्वय यहां सभव हो सका बौद्ध, वैष्णव और शैव या शाक्त सभी एक हैं इन के अलगअलग मदिरों में भी एकदूसरे

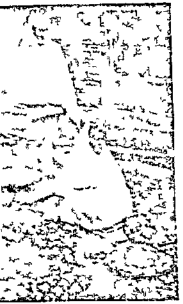
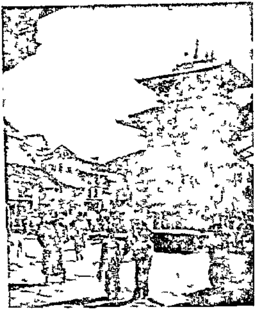

चेहरो पर ताज फूलो जैसी मुसकान! दाए बौद्ध और हिंदू संस्कृति
का सगम पैगोडा शैली का एक हिंदू मदिर

के प्रतीक रहते हैं और पूज भी जाते हैं

सारे नेपाल में मदिर, स्तूप और मठ भरे पड़े ह राजधानी के आसपास पिछली दस शताब्दियो में बन बहुत से मदिर ह इन में विशेष रूप से पशुपतिनाथ, स्वयभनाथ, गुह्येश्वरी, मजुश्री और हनुमान ढोका हैं

पशुपतिनाथ का मदिर १३वीं शताब्दी में बना था काशी के विश्वनाथ और पाटण के सोमनाथ के मदिर का जितना महत्त्व है, उतना ही पशुपतिनाथ का है वाग्मति के तट पर बना यह तीर्थ सुदूर दक्षिण भारत और विदेशो से हिंदुओ को युगो से आकर्षित करता रहा है पशुपतिनाथ के मदिर की एक और भी विशेषता है विश्वनाथ और सोमनाथ के मदिरो को ध्वस किया गया काशी का मूल मदिर आज मस्जिद है इसी प्रकार सोमनाथ का आदि मदिर ध्वसावशेष है दोनो के नए मदिर बन किंतु पशुपतिनाथ यथावत है इस के ऊपर का कलश ठोस सोने का है आगन में नदी की विशाल मूर्ति है

दर्शन करते समय पुजारी ने 'अस्ति जम्बूद्वीपे भरतखडे आर्यावर्ते ' का मत्रोच्चार कर चरणामृत दे कर आशीर्वाद दिया मैं सोचने लगा हिमालय की दुर्गम श्रेणिया और राजनीति के कृत्रिम व्यवधान हमारी सास्कृतिक एकता को जोड़ने में भले ही बाधक रहे पर नेपाल और भारत का हजारो वर्ष का सबध सदा रहा है और रहेगा

स्वयभूनाथ का मदिर देखा मैं ने समझा था यह शैव मदिर होगा पर है यह बौद्ध एक पहाड़ी के ऊपर बना यह मदिर लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन है इस पर पहुचने के लिए ५०० सीढ़ियां हैं मुख्य मदिर के आसपास १३ और भी

छोटेछोटे मदिर हैं बीच में छ फीट ऊचा और साढे तीन फीट मोटा एक चक्र है, जिस पर जप के मत्र अकित हैं इसे घुमा कर भक्तजन मत्रजाप का फल प्राप्त करते हैं

मजुश्री का चैत्य स्वयभूनाथ मदिर के पश्चिम में है माघ पचमी को यहा बहुत बडा मेला लगता है हजारो की सख्या में बौद्ध, शैव, शाक्त और वैष्णव मजुश्री के पूजन के निमित्त आते हैं

गुह्येश्वरी का मदिर विशेष रूप से बौद्धों की तात्रिक शाखा की प्रसिद्ध तीर्थस्थली है

हनुमान ढोका में महावीर हनुमानजी की विशाल मूर्ति है इस की प्रतिष्ठा राजा जयप्रतापमल ने करीब तीन सौ वर्ष पर्व की थी पास ही में दरबार चौक है और प्राचीन राजप्रासाद राजमहल भव्य है इस का सात मजिला सिहद्वार लकडी का बना है इस पर खुदाई का काम इतनी बारीकी का है कि आखें उन पर टिकी ही रह जाती हैं

अभी तक मैं बुद्ध के जन्मस्थान लुबिनी वन नहीं जा पाया था किंतु काठ-माडू के पास ही स्थित बोधीनाथ के स्तूप को देखने का अवसर मिला यहा तथागत के 'अस्थि अवशेष' हैं कहा जाता है कि विश्व के विशाल स्तूपों में यह अन्यतम है यह आसपास धान और मक्के के हरेभरे खेतों के बीच बडा ही आकर्षक लगता है तिब्बत, बरमा, जापान, भारत तथा अन्य देशो से हजारों दर्शनार्थी आते रहते हैं इस के पास ही तिब्बती लामाओ का एक विहार भी है अब तक विश्व के बहुत से बडेबडे गिरजे और मसजिदो को देख चुका था किंतु यहा जो शाति और आनद मिला, वह स्वय के अनुभव से ही समझा जा सकता है मैं तथागत बुद्ध की मूर्ति देख रहा था, निर्विकार भाव थे—क्षमा, दया, प्रेम, तेजोमय मुखमडल से मानो आभा निकल कर सासारिक विकारो की कालिमा को दूर कर रही थी

ललितपुर, जिसे पाटन भी कहते हैं, मुझे बहुत अच्छी जगह लगी किसी समय यह नेपाल की राजधानी थी आज भी विशुद्ध नेपाली सस्कृति की छाप यहां स्पष्ट दिखाई देती है मल्लराजाओ के द्वारा बनवाया गया यहां का कृष्ण मदिर देखने लायक है इस के पत्थरो पर उत्कीर्ण कारीगरी मथुरा के मदिरों के समान है

यहां के लोग काठमाडू से अधिक सुदर लगे यहा के पुरुष और स्त्रियां तो सचमुच बहुत खूबसूरत हैं लबा नुकीली नाक, चपटा ललाट, छोटीछोटी तिर्छी आंखो को देख कर इन्हें नेपाली मानने में दुविधा हो सकती है

नेपाल में विभिन्न जातियों का सम्मिश्रण हुआ है भारत, तिब्बत और मध्य एशिया से आ कर लोग यहां बसते गए किरात, नेवारी और पर्वती— ये तीन नस्ल यहा प्रमुख हैं किरातों और नेवारो तो यहां के मूल निवासी माने जाते हैं

मुझ मेरे एक नेवारी मित्र ने बताया कि नेपाल में भारत के जौनसार अचल से किरातो ने प्रवेश किया बात सही लगी क्योंकि नेपाली रीतिरिवाज में मगोलीय और भारतीय दोनो प्रथाओं का सम्मिश्रण स्पष्ट है किरातों का उल्लेख वेद और

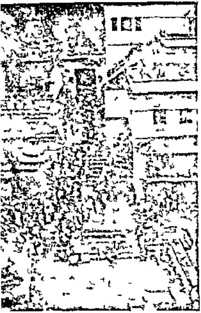

बाए पशुपतिनाथ के मदिर मे शिवरात्रि के अवसर पर महिलाओ की भीड
ऊपर: हिमालय की गोद में बसी नेपाल की राजधानी काठमाड

महाभारत में मिलता है   इस के बाद मजुश्री (मचूरिया) से लोग यहा आ कर बसते गए.   क्योंकि मध्य एशिया से भारत में प्रवेश के लिए यह मार्ग यद्यपि दुर्गम था फिर भी समय की बचत करा देता था   भारतीय किरात और मचूरियन लोगो के सम्मिश्रण से नेवारी जाति की उत्पत्ति हुई   यही कारण है कि इन में दोनो के रीतिरिवाजो का समन्वय मिलता है   नेपाल का मौलिक साहित्य, उस की कला और कौशल की श्रीवृद्धि में इन्हीं नेवारियों का असीम योगदान है. व्यापार के क्षेत्र में भी ये अन्य नेपाली जातियों की अपेक्षा सब से आगे बढे हुए हैं कलकत्ते में भी इन की कुछ फर्मे हैं जो कस्तूरी आदि का धधा करती हैं

भारत से समयसमय पर नेपाल में लोग जा कर बसते रहे हैं   मुसलिम शासकों के अत्याचार और उत्पीडन से परेशान हो कर सुदूर राजस्थान से राजपूत भी यहा जा कर बसते गए जो आगे चल कर पर्वतीय कहलाने लगे   नेपाल की सैनिक जाति के ठकुरी, खस और गुरुग की सतान हैं जिन्हें हम गोरखा कहते हैं इन की भाषा पर भारतीय प्रभाव है   बल्कि यो कहना चाहिए कि अन्य भारतीय भाषाओ की तरह गोरखाली की जननी भी सस्कृत ही है

कृष्ण मदिर से बाहर निकल कर एक खुली जगह में बैठ गया   सामने छोटेछोटे सुदरसलोने बच्चे खेल रहे थे   गरीबी ने नेपाल को बेहाल कर रखा है फिर भी लोग मस्त रहते हैं   नाचगाना, तीजत्योहार बडे शौक से मनाते हैं   बच्चे जमीन पर लकीरें खींच कर हमारे यहा की तरह कबड्डी खेल रहे थे   छोटी लडकियां घेरे में बाहर बैठी देख रही थीं और किसी खिलाडी के पिट जाने पर हस-हस कर तालियां बजा रही थीं

मैं इन्हे देख रहा था और बरबस यही खयाल हो आता था कि आठदस वर्षों में इन में से बहुत से विभिन्न शहरो की गदी गलियों में रहते मिलेंगे   कुछ सेना में

छोटेछोटे मंदिर हैं बीच में छ फीट ऊंचा और साढ़े तीन फीट मोटा एक चक्र है, जिस पर जप के मंत्र अंकित हैं इसे घुमा कर भक्तजन मंत्रजाप का फल प्राप्त करते हैं

मंजुश्री का चैत्य स्वयम्भूनाथ मंदिर के पश्चिम में है माघ श्रीपंचमी को यहां बहुत बड़ा मेला लगता है हजारों की संख्या में बौद्ध शैव शाक्त और वैष्णव मंजुश्री के पूजन के निमित्त आते हैं

गुह्येश्वरी का मंदिर विशेष रूप से बौद्धों की तांत्रिक शाखा की प्रसिद्ध तीर्थस्थली है

हनुमान ढोका में महावीर हनुमानजी की विशाल मूर्ति है इस की प्रतिष्ठा राजा ज्यप्रतापमल ने करीब तीन सौ वर्ष पूर्व की थी पास हो में दरबार चौक है और प्राचीन राजप्रासाद राजमहल भव्य है इस का सात मंजिला सिंहद्वार लकड़ी का बना है इस पर खुदाई का काम इतनी बारीकी का है कि आंखें उन पर टिकी ही रह जाती हैं

अभी तक मैं बुद्ध के जन्मस्थान लुम्बिनी वन नहीं जा पाया था किंतु काठमाडू के पास ही स्थित बोधीनाथ के स्तूप को देखने का अवसर मिला यहां तथागत के 'अस्थि अवशेष' हैं कहा जाता है कि विश्व के विशाल स्तूपों में यह अन्यतम है यह आसपास धान और मक्के के हरेभरे खेतों के बीच बड़ा ही आकर्षक लगता है तिब्बत बरमा जापान, भारत तथा अन्य देशों से हजारों दर्शनार्थी आते रहते हैं इस के पास ही तिब्बती लामाओं का एक विहार भी है अब तक विश्व के बहुत से बड़ेबड़े गिरजे और मसजिदों को देख चुका था किंतु यहां जो शांति और आनंद मिला, वह स्वयं के अनुभव से ही समझा जा सकता है मैं तथागत बुद्ध की मूर्ति देख रहा था निर्विकार भाव से—क्षमा, दया, प्रेम, तेजोमय मुखमंडल से मानो आभा निकल कर सांसारिक विकारों की कालिमा को दूर कर रही थी

ललितपुर, जिसे पाटन भी कहते हैं, मुझे बहुत अच्छी जगह लगा किसी समय यह नेपाल की राजधानी थी आज भी विशुद्ध नेपाली संस्कृति की छाप यहां स्पष्ट दिखाई देती है मल्लराजाओं के द्वारा बनवाया गया यहां का कृष्ण मंदिर देखने लायक है इस के पत्थरों पर उत्कीर्ण कारीगरी मथुरा के मंदिरों के समान है

यहां के लोग काठमाडू से अधिक सुंदर लगे यहां के पुरुष और स्त्रियां तो सचमुच बहुत खूबसूरत हैं लंबी नुकीली नाक, उन्नत ललाट, बड़ीबड़ी खिंचा आंखों को देख कर इन्हें नेपाली मानने में दुविधा हो सकती है

नेपाल में विभिन्न जातियों का सम्मिश्रण हुआ है भारत, तिब्बत और मध्य एशिया से आ कर लोग यहां बसते गए किरात', नेवारी और पर्वती—ये तीन नस्ल यहां प्रमुख हैं किराती और नेवारी तो यहां के मूल निवासी माने जाते हैं

मुझे मेरे एक नेवारी मित्र ने बताया कि नेपाल में भारत के जौनसार अंचल से किरातों ने प्रवेश किया था यही लगी क्योंकि नेपाली रीतिरिवाज में मंगोलीय और भारतीय दोनों प्रथाओं का सम्मिश्रण स्पष्ट है किरातों का उल्लेख वेद और

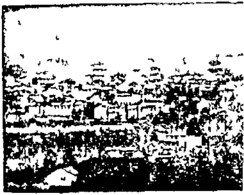

बाए पशुपतिनाथ के मदिर म शिवरात्रि के अवसर पर महिलाओ की भीड
ऊपर हिमालय की गोद में बसी नेपाल की राजधानी काठमाड

महाभारत में मिलता है इस के बाद मजुश्री (मचूरिया) से लोग यहा आ कर बसते गए क्योंकि मध्य एशिया से भारत में प्रवेश के लिए यह मार्ग यद्यपि दुर्गम था फिर भी समय को बचत करा देता था भारतीय किरात और मचूरियन लोगो के सम्मिश्रण से नेवारी जाति की उत्पत्ति हुई यही कारण है कि इन में दोनो के रीतिरिवाजो का समन्वय मिलता है नेपाल का मौलिक साहित्य, उस की कला और कौशल की श्रीवृद्धि में इन्हा नेवारियो का असीम योगदान है व्यापार के क्षेत्र में भी ये अन्य नेपाली जातियो की अपेक्षा सब से आगे बढे हुए है कलकत्ते में भी इन की कुछ फर्म है जो कस्तूरी आदि का धधा करती है

भारत से समयसमय पर नेपाल में लोग जा कर बसते रहे है मुसलिम शासको के अत्याचार और उत्पीडन से परेशान हो कर सुदूर राजस्थान से राजपूत भी यहा जा कर बसते गए जो आगे चल कर पर्वतीय कहलाने लगे नेपाल की सैनिक जाति के ठकुरी, खस और गुरुग की सतान है जिन्हे हम गोरखा कहते है इन की भाषा पर भारतीय प्रभाव है बल्कि यो कहना चाहिए कि अन्य भारतीय भाषाओ की तरह गोरखाली की जननी भी सस्कृत ही है

कृष्ण मदिर से बाहर निकल कर एक खुली जगह में बैठ गया सामने छोटेछोटे सुदरसलोने बच्चे खेल रहे थे गरीबी ने नेपाल को बेहाल कर रखा है फिर भी लोग मस्त रहते है नाचगाना, तीजत्यौहार बडे शौक से मनाते है बच्चे जमीन पर लकीरें खींच कर हमारे यहा की तरह कबड्डी खेल रहे थे छोटी लडकिया घरो के बाहर बैठी देख रही थीं और किसी खिलाडी के पिट जाने पर हस-हस कर तालिया बजा रही थीं

मैं इन्हें देख रहा था और बरबस यही खयाल हो आता था कि आठदस वर्षों में इन में से बहुत से विभिन्न शहरो की गदी गलियो में रहते मिलेंगे कुछ सेना में

भी भर्ती हो जाएंगे. ब्रिटेन के साथ नेपाल की शायद शर्तबंदी भी है जो भी हो, अपने देश के स्वजनों से दूर, बहुत दूर ब्रिटिश हितों की रक्षा के लिए उस के उपनिवेशों में थोड़े से रुपयों पर अपनी जान हथेली पर ले कर खेलेंगे कैसी विडंबना है! क्या यही इन के साहस और सीधेपन की कीमत है?

नया नेपाल यह जानता और समझता है. वह अभावों से जूझने में लगा है जाग्रत नेपाल का एशिया की राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान होगा क्योंकि भारत और चीन जैसे दो बड़े राष्ट्रों की शक्ति का संतुलन उस के सहयोग पर निर्भर करता है

पाटन से लौट रहा था. साथ में कालेज का एक छात्र था. बातचीत के सिलसिले में उस ने बड़े गर्व से शुद्ध हिंदी में कहा, "हमारा देश केवल हिंदू अथवा बौद्ध संस्कृति के लिए ही आकर्षण का केंद्र नहीं है. सैलानियों को अपनी ओर खींचने के लिए यहां का नैसर्गिक सौंदर्य कश्मीर अथवा स्विट्जरलैण्ड से कम नहीं यह सही है कि यहां आधुनिक साधनों का अभाव है जिस से विदेशियों को कुछ असुविधा होती है फिर भी वे आते है

"पृथ्वी के ऊंचे से ऊंचे हिमाच्छादित शिखर आप यहीं पाएंगे सागर माथा (माउंट- एवरेस्ट), कांचन माला, मकालू, लोहासे, धवलागिरि, अन्नपूर्णा, गौरीशंकर—सभी २३ हजार से २९ हजार फीट की ऊंचाई तक के हैं. शताब्दियों से इन से हम धैर्य, साहस, कर्मठता की प्रेरणा पाते रहे हैं."

उस ने बताया कि उस के कालिज से एक टोली गौरीशंकर चोटी पर २३ हजार फीट की चढ़ाई करने जा रही है उस ने मुझे भी साथ देने के लिए निमंत्रण दिया

मैं ने हंस कर कहा, "शायद बीस वर्ष पहले आप के इस निमंत्रण को मैं स्वीकार कर लेता परंतु अब तो गौरीशंकर पर जा कर मेरा श्रद्धापूर्ण प्रणाम अखिल विश्व के कल्याण पुंज शिव को यदि आप निवेदन कर सके तो मैं अपने को धन्य मानूंगा."